दिव्य नियम प्रतिपादन

Hindi Exposition of Divine Principle

रेवरंड सन मियंग मुन

Holy Spirit Association for the Unification of World Christianity
विश्वीय ईसाई धर्म एकीकरण हेतु पवित्र आत्मा संघ

संक्षिप्त विवरण

		पृष्ठ
प्राक्कथन		३
भूमिका		५
अध्याय १.	सृष्टि का नियम	१९
अध्याय २.	मनुष्य का पतन	५८
अध्याय ३.	मनुष्य का इतिहास और अंतिम दिन संबंधी उपदेश	८९
रेखा-चित्र १	विश्व की सृष्टि में और पुनरुद्धार की दैवी योजना में परमेश्वर के वचन की अभिव्यक्ति	१२०
अध्याय ४.	मसीह: उसका आगमन और उसके दूसरे आगमन का उद्देश्य	१२४
अध्याय ५.	पुनरुत्थान	१४४
अध्याय ६.	पूर्वनियति	१६८
अध्याय ७.	ख्रीस्त-बोध	१८०
भाग २		
पुनरुद्धार का परिचय		१९३
अध्याय १.	पुनरुद्धार की नींव डालने की दैवी योजना	२०७
अध्याय २.	पुनरुद्धार की योजना में मूसा और यीशु	२४३
अध्याय ३.	दैवी योजना के इतिहास की कालावधि और उनकी लंबाई का निर्धारण	३१०
रेखा-चित्र २	दैवी योजनाओं में समानांतर काल	३३३
अध्याय ४.	पुनरुद्धार की दैवी योजना के दो युगों के मध्य समानांतर	३३४
रेखा-चित्र ३	पुनरुद्धार की दैवी योजना के मार्गदर्शन में इतिहास की प्रगति	३६८
अध्याय ५.	मसीह के दूसरे आगम की तैयारी की अवधि	३६९
अध्याय ६.	दूसरा आगमन	४०६
यूनिफिकेशन पारिभाषिक शब्दावली Unification Terminology Word List		४०७

प्राक्कथन

यह मूलग्रंथ जो आप के हाथ में है इस में रेवरंड मुन की शिक्षा, दिव्य नियम क़लमबंद है। पूर्वतम हस्तलिपि कोरिया के युद्ध के समय उत्तरी कोरिया में खो गई थी। शरणार्थी बन कर फूसन में पहुँचने पर रेवरंड मुन ने *वौल्ली वौनबौन* नामक (दिव्य नियम का प्रारंभिक मूलपाठ) लिखा और लिखवाया। फिर उन्होंने कोरिया के यूनिफिकेशन चर्च के प्रथम सभापति हियो वौन यू का मार्गदर्शन किया कि वह बाईबल, ऐतिहासिक और वैज्ञानिक उदाहरण देकर व्यवस्थित ढंग से उन की शिक्षा का प्रस्तुतिकरण करें। रेवरंड मुन ने सभापति यू को इन व्याख्यानों की विषय-वस्तु के बारे में विशेष तौर पर निर्देशन दिया और फिर उनके किए हुए कार्य की ध्यानपूर्वक जाँच की। इन प्रयासों का प्रतिफल १९५७ में *वौल्ली हियेसुल* (दिव्य नियम स्पष्टीकरण) के प्रकाशन में हुआ और *वौल्ली कानग्रोन* (दिव्य नियम प्रतिपादन) १९६६ में प्रकाशित हुआ। पिछले ५४ वर्ष से (१९६६-२०२०) *वौल्ली कानग्रोन* (*दिव्य नियम प्रतिपादन)* रेवरंड मुन की मूल शिक्षा रही है।

एक्सपोज़िशन ओफ डिवाईन प्रिंसिपल (दिव्य नियम प्रतिपादन), *वौल्ली कानग्रोन का* इन्गलिश भाषा में नया प्राधिकृत अनुवाद है। *दिव्य नियम* का प्रथम अंग्रेज़ी अनुवाद १९७३ में डा. वौन पोक चोए ने किया। डा. वौन पोक चोए ने कठिन परिश्रम और पांडित्य के साथ जटिल विचारों को उचित पारिभाषिक शब्दों में ढाल कर इस मूलग्रंथ में अभिव्यक्त किया है। इसके पवित्र अंतर्भाव को समझते हुए उन्होंने इसका यथाशब्द अनुवाद किया है। इस कार्य से उन्होंने पाश्चात्य देशों में दिव्य नियम की शिक्षा की नींव डाली है। डा. चोए को उनके इस अग्रगामी कार्य के निमित्त सम्मान देने के लिये, जब रेवरंड मुन ने इस नए अनुवाद की नियुक्ति की तो उन्होंने अनुवादकों से अनुरोध किया की वे इसके लिये उन्हीं से परामर्श लें। उन्होंने रचनात्मक अगवाई के साथ अनुवाद को उत्तमतर बनाने के लिये सक्रिय योगदान किया। सच पूछो तो इस परियोजना में उनकी अगवाई का विशेष अंशदान है।

इस संस्करण के लिये, अनुवादकों ने कोरिया की भाषा के व्याख्यान को स्पष्ट अंग्रेज़ी में यथातथ्य अनुवाद करने का प्रयत्न किया है। उस पीढ़ी के कोरिया के व्याख्यान की शैली को, जिसके लम्बे जटिल वाक्यों को, जिनमें बहुत से अंतःस्थापित परिच्छेद हैं, उनके उलझे संबंधों का ठीक-ठीक अर्थ लिखने का विद्वत्तापूर्ण प्रयास किया है। इसके प्रत्येक अति सूक्ष्म अंतर को आधुनिक सुगठित अंग्रेज़ी भाषा की सीधी संरचना में सरलता से स्पष्ट करना असंभव है। जबकि आधुनिक अंग्रेज़ी भाषा की मांग के अनुसार हर विचार को सुबोध कथन में व्यक्त करना अनिवार्य है, उस समय की कोरिया की भाषा अव्यवस्थित किंतु जोशीले भाव में लक्षण और संदर्भ के साथ अर्थ व्यक्त करती है। जहाँ कहीं यथाशब्द अनुवाद पर्याप्त रूप से विचारों और विवाद का अर्थ व्यक्त नहीं कर सके वहाँ हम ने विचारों के क्रम को पाश्चात्य देशों के लोगों की सुविधा के लिये पुनः व्यवस्थित किया है। समय-समय पर हमने स्पष्ट बूझ और सांस्कृतिक भावनाओं को व्यक्त करने के लिये तुलनीय शब्दकोश की परिभाषा के बदले रचनात्मक शब्दावली का उपयोग किया है।

इसके अतिरिक्त, दिव्य नियम तकनीकी शब्दावली का भी उपयोग करता है जो साधारण शब्दों को विशेष मायने देता है। इस अनुवाद के लिये जहाँ तक हो सकता था हमने नए आध्यात्मिक शब्दों का

आविष्कार करने के बजाये साधारण अंग्रेज़ी शब्द-संग्रह का उपयोग किया है। इसलिये, साधारण शब्दों को विशिष्ट भावार्थ के साथ व्यक्त किया जा सकता है, उदाहरण की तौर पर "क्षतिपूर्ति, शर्त और नींव।" इन शब्दों के उचित अर्थ को समझने के लिये मूलपाठ में इनके विशेष प्रयोग पर ध्यान देना आवश्यक है।

इस पुस्तक का समय और सांस्कृतिक संदर्भ अनुवादकों के लिए अलग मुद्दा था। यह १९६० के दौरान में लिखी गई थी, उस समय साम्यवाद का विश्वव्यापी ख़तरा था और ईसाई धर्म का आत्मविश्वास उसकी अपनी सांस्कृतिक उच्चता में बरक़रार था और उसका विस्तार लगातार बढ़ रहा था। यद्यपि, उस समय की ऐसी और अन्य परिस्थितियाँ मध्यवर्ती दशाब्दी में बदल गईं हों, फिर भी हमने मूलपाठ का मूल दृष्टिकोण सुरक्षित रखा है। परमेश्वर की दैवी योजना जिस प्रकार अग्रसर होती है, उसका वर्णन ठीक उसी शैली से दिव्य नियम में अंकित है।

एक अर्थ में, यह नया संस्करण औपचारिक अनुवाद की तुलना में और अधिक साधने का प्रयास करता है। जब कोरिया १९६० दशाब्दी के वर्षों में युद्ध के विनाश से संभल रहा था, उस समय अध्ययन हेतु ऐतिहासिक और वैज्ञानिक पाठ्य पुस्तकों का अभाव था। यह सभापति यू के लिए ऐतिहासिक और वैज्ञानिक उदाहरणों को सटीक रूप से परिभाषित करने के प्रयासों में बाधा बनी, जिन्हें वे प्रकृति और इतिहास में दैवी नियम के संचालन को चित्रित करने के लिए प्रयुक्त करना चाहते थे। रेवरंड मुन के द्वारा अधिकृत, और डाक. चोए के मार्गदर्शन के अधीन अनुवादकों ने विभिन्न क्षेत्रों में विद्वानों के पांडित्य का सहारा लेकर वैज्ञानिक, ऐतिहासिक और बाईबल के उदाहरणों में कम से कम बदलाव किया है। तथापि, हमने रेवरंड मुन की ठीक इच्छानुसार संपूर्ण अनुवाद में मूलग्रंथ की शुद्धता बरक़रार रखने का प्रयास किया है। अंत में इस नए अनुवाद की समीक्षा चर्च के वरिष्ठ व्यक्ति रेवरंड यंग वी खिम और रेवरंड चंग हुअन क्वाक के द्वारा ध्यानपूर्वक और बहुत विस्तृत रूप से की गई और उनका आशीर्वाद प्राप्त हुआ।

इस विशिष्ट रंगीन संस्करण के रंग, कोरियाई भाषा के ३९वें संस्करण *वौल्ली कानग्रोन* के आलेख के रंगों के आधार पर श्रीमति जिल जा सा यू ने तैयार किए हैं। मुख्य भाव लाल रंग में हैं, दूसरे स्तर के विषय नीले रंग में हैं और तीसरे स्तर के विषय पीले रंग में हैं। पाठक दिव्य नियम की शिक्षा की मुख्य कड़ियाँ जो लाल रंग में लिखित हैं थोड़े ही समय में पढ़कर समझ सकते हैं। लाल और नीले रंगों में अंकित पाठ्य भाग एक साथ पढ़ने से वह और अच्छी रूपरेखा प्रदान करती है, और तीनों रंगों को बहुत से उदाहरणों सहित पढ़ने से हम शिक्षा का संपूर्ण भावार्थ समझ सकते हैं। सकल भावार्थ समझने के लिये इस मूलग्रंथ को पूर्णतया पढ़ना आवश्यक है। संपूर्ण मूलग्रंथ पढ़ने के समय यदि लाल रंग के परिच्छेदों पर ध्यान दिया जाये तो भावार्थ समझने में और सहायता मिलती है।

दिव्य नियम प्रतिपादन सार्वभौमिक सत्य को दर्शाता है। यह पूर्व देश के गहन ज्ञान को परमेश्वर द्वारा प्रकाशित यहूदी और ईसाई शास्त्र बाईबल के मूलभूत सत्य के साथ सम्मिलित करके और विकसित करता है। इस अनुवाद से हमारी आशा है कि *दिव्य नियम* का मार्मिक संदेश पाश्चात्य देशों में सरलता से समझा जा सकेगा।

दिव्य नियम के अनुवाद की समिति मार्च १९९६

भूमिका

प्रत्येक मनुष्य आनन्द और सुख प्राप्त करने के लिये संघर्ष करता है और दुःख और अभाग्य से किनारा करता है। मामूली काम-काज से लेकर बड़ी-बड़ी घटनाएं जो इतिहास के मार्ग को तराशतीं हैं, वास्तव में, प्रत्येक वृत्तांत मनुष्य के सदैव सुख और आनन्द प्राप्त करने की महत्वाकांक्षाओं की अभिव्यंजना है। तो फिर आनन्द किस प्रकार उत्पन्न होता है?

जब लोगों की इच्छा पूर्ण हो जाती है तब वे आनन्द अनुभव करते हैं। हालांकि, लोग प्रायः इस शब्द "इच्छा" का मूल भाव समझने में भूल करते हैं, क्योंकि विद्यमान परिस्थितियों में हमारी अभिलाषा भले की बजाए बुराई का पीछा करती है। जिन अभिलाषाओं का परिणाम अधर्म होता है वह मनुष्य के मौलिक मन से उदित नहीं होती हैं। मौलिक मन यह भली भाँति जानता है कि ऐसी इच्छाएं हमें दुर्भाग्य की ओर ले जातीं हैं। इसलिये, वह अधर्मी इच्छाओं का प्रतिरोध करता है और धर्म की ओर चलने की चेष्टा करता है। लोग अपनी जान पर खेल कर भी ऐसे आनन्द को ढूंढते हैं जो मौलिक मन को निहाल कर सके। यह मनुष्य की दशा है: हम मौत के छाए से दूर होने के लिए ऐसे थका देने वाले मार्गों पर चलकर जीवन के प्रकाश की खोज करते हैं।

क्या कभी किसी ने बुरी अभिलाषाओं के पीछे भाग कर वह आनन्द प्राप्त किया है जो मौलिक मन को भाता है? जब कभी ऐसी आकांक्षा संतुष्ट की जाती है हम अपने अंतःकरण में व्याकुलता और हृदय में दुःख अनुभव करते हैं। क्या कोई माता-पिता अपनी संतान को अधर्म की शिक्षा दे सकता है? क्या कोई शिक्षक जान बूझ कर अपने शिष्य को बुराई सिखा सकता है? मौलिक मन की प्रेरणा, जो हर किसी के पास होती है, वह अधर्म से घृणा करती है और धर्म को ऊँचा उठाती है।

धर्म के मार्ग पर चलने वाले लोगों के जीवन में हम एक गहन संघर्ष देखते हैं जो मौलिक मन की आकांक्षा को एकचित्त हो कर पूरी करना चाहते हैं। फिर भी आदि से अब तक कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं हुआ है जो पूरी तरह से मौलिक मन पर आश्रित होकर चला हो। संत पौलूस लिखता है, "कोई भी धर्मी नहीं है, एक भी नहीं। कोई भी समझदार नहीं है, कोई भी परमेश्वर की खोज नहीं करता है।"[१] फिर मनुष्य की स्थिति पर दृष्टि करते हुए उसने कहा, "क्योंकि भीतरी मनुष्यत्व से तो मैं परमेश्वर की व्यवस्था से बहुत प्रसन्न हूँ, परन्तु मुझे अपने अंगों में दूसरे प्रकार की व्यवस्था दिखाई पड़ती है जो मेरी बुद्धि की व्यवस्था से लड़ती है और मुझे पाप की व्यवस्था के बन्धन में डाल देती है जो मेरे अंगों में है। मैं कैसा अभागा मनुष्य हूँ।"[२]

हम प्रत्येक व्यक्ति में अत्यंत अंतर्विरोध की भावना देखते हैं। एक ही व्यक्ति में दो विरोधी झुकाव होते हैं: एक मौलिक मन का है जो धर्म की इच्छा करता है और दूसरा बुरा मन जो अधर्म की चाह करता है। इन दोनों में घोर संघर्ष जारी रहता है जो दो प्रकार के परस्पर-विरोधी उद्देश्यों को प्राप्त करने का प्रयास करते हैं। कोई भी व्यक्ति जिसमें दो प्रकार की परस्पर-विरोधी प्रवृत्तियाँ हों, वह अवश्य नाश हो जाएगा। क्योंकि, मानवता ने ऐसी दो विरोधाभासी दशा अधिगृहीत की है इसलिए वे विनाश के तट पर रहते हैं।

---

[१] रोमियों ३:१०-११

[२] रोमियों ७:२२-२४

क्या यह संभव है कि मनुष्य के जीवन का आरंभ ऐसे प्रतिवाद के साथ हुआ हो? मनुष्य कैसे आत्म-विरोधाभासी स्वभाव के साथ अस्तित्व में आ सकता है? यदि मनुष्य का जीवन ऐसे प्रतिवाद का भार लेकर आरम्भ हुआ होता तो वह उदित ही ना हो पाता। अतएव, यह प्रतिवाद मानव जाति के जन्म के उपरांत विकसित हुआ होगा। ईसाई मत इस विनाश की दशा को मनुष्य के पतन का परिणाम मानता है।

क्या कोई मनुष्य के पतन की दशा के बारे में विवाद कर सकता है? जब हम इस तथ्य को स्वीकार कर लेते हैं कि पतन के कारण ही हम इस विनाश के तट पर खड़े हैं तो हम हताशापूर्ण इस आंतरिक विरोधाभास का समाधान करने की चेष्टा करते हैं। हम बुरी इच्छाओं का जो अधर्मी मन से निकलतीं हैं प्रतिरोध करते हैं और अच्छी इच्छाओं का जो मौलिक मन से उदित होती हैं आलिंगन करते हैं।

तथापि, हमें इस प्रश्न का अंतिम उत्तर अभी तक नहीं मिला है: अच्छे और भले की प्रकृति क्या है? हमारे पास अब तक पूर्ण और निश्चित सत्य नहीं है जो हमें इसका अंतर बता सके, उदाहरण की तौर पर ईश्वरवाद और निरीश्वरवाद, इन दोनों में से कौन सा शुभ है और कौन सा अशुभ है। इसके अतिरिक्त, हम इन प्रश्नों के उत्तर से भी बिलकुल अपरिचित हैं: मौलिक मन जो अच्छी भावनाओं का सोता है वह क्या है? और अधर्मी मन का आदि कारण क्या है जो मौलिक मन के विरुद्ध बुराई को उत्तेजित करता है? इस प्रतिवाद का मूल कारण क्या है जो लोगों को विनाश की ओर ले जाता है? बुरी मनोकामनाओं को रोकने और अच्छी मनोकामना पर चलने के लिये हमें इस अज्ञानता पर विजय पानी है ताकि हम भले बुरे में फर्क करने की योग्यता प्राप्त कर सकें। तब हम अच्छे जीवन के मार्ग पर जो मौलिक मन ढूँढता है चल सकते हैं।

ज्ञान के दृष्टिकोण से इस पर ध्यान दिया जाए तो मनुष्य का पतन मानवता का अज्ञानता में गिरना दर्शाता करता है। मनुष्य के दो पहलू होते हैं आंतरिक और बाह्य, मन और शरीर; उसी प्रकार ज्ञान भी दो पहलुओं में होता है: आंतरिक और बाह्य। इसी तरह अज्ञानता भी दो भाँति की होती है: आंतरिक अनभिज्ञता और बाह्य अनभिज्ञता।

आंतरिक अनभिज्ञता, धार्मिक रूप से देखा जाए तो आत्मिक अज्ञानता होती है। यह अनभिज्ञता ऐसे प्रश्नों से की है: मनुष्य का आदि कारण क्या है? जीवन का उद्देश्य क्या है? मृत्यु के पश्चात क्या होता है? मृत्यु के पश्चात क्या परमेश्वर और अगली दुनिया का अस्तित्व है? धर्म और अधर्म की क्या प्रकृति है? बाह्य अनभिज्ञता प्राकृतिक दुनिया का वर्णन करती है, जिसमें मनुष्य का शरीर भी शामिल है। यह अज्ञानता इन विषयों से संबंधित है: भौतिक विश्व का उद्गम कैसे हुआ? वह प्राकृतिक नियम जो हर वस्तु का नियंत्रण करते हैं वे क्या हैं?

इतिहास के आरम्भ से अब तक, मनुष्य लगातार उस सत्य की खोज में रहा है जिससे इन दोनों प्रकार की अनभिज्ञताओं पर विजय पाकर ज्ञान प्राप्त किया जा सके। मनुष्य धर्म के द्वारा आंतरिक सत्य की खोज करता है, और विज्ञान के द्वारा बाह्य सत्य की खोज करता है। अनभिज्ञता पर विजयी होने और ज्ञान प्राप्त करने के लिये, धर्म और विज्ञान अपने-अपने क्षेत्र में सत्य की खोज का ज़रिया रहे हैं। अंत में

धर्म के मार्ग और विज्ञान के मार्ग दोनों को संकलित होकर संगठित उपक्रम से इस समस्या का समाधान करना चाहिये; सत्य के दोनों, आंतरिक और बाह्य, पहलुओं को पूर्ण तालमेल के साथ विकसित होना चाहिये। तब ही हम पूर्ण रूप से अनभिज्ञता से विमुक्त होकर मौलिक मन की इच्छाओं के अनुसार जीने का नित्य आनंद प्राप्त कर सकेंगे।

मनुष्य के जीवन का मूल कारण समझने के लिये हम दो खुले सुझावों का उपयोग कर सकते हैं। पहला, लोगों ने अब तक परिणामी, भौतिक संसार के मध्य ही खोज की है। जो लोग यह जान कर इस पथ पर चले हैं, कि यही एक सर्वोत्कृष्ट मार्ग है, वे अति प्रगतिशील विज्ञान के वैभव के समक्ष झुक गये हैं। वे इसकी सर्वसमर्थकता और इससे उपलब्ध भौतिक सुख और आराम में गर्व करते हैं। फिर भी, क्या हम बाह्य सुविधाओं के द्वारा जो हमारे शरीर ही को तृप्त करतीं है पूर्ण आनन्द प्राप्त कर सकते हैं? विज्ञान की प्रगति सुविधापूर्ण वातावरण का निर्माण तो कर सकती है जिससे हम धन-संपत्ति और समृद्धि प्राप्त कर सकते हैं, पर क्या यह हमारी आंतरिक आत्मिक तृष्णा को भी संतुष्ट कर सकती है?

जो लोग शरीर के क्षणिक आमोद-प्रमोद से प्रसन्न रहते हैं उनकी तुलना प्रबोधन के पथ पर चलने वालों के परमानंद के अनुभवों से नहीं की जा सकती, ऐसा आनंद जो वे साधारण कविता से प्राप्त कर लेते हैं। गौतम बुध महलों के सुख साधन भोग-विलास का त्याग कर के एक विशेष मार्ग की खोज में तल्लीन हो गया था, वह एक अकेला ही नहीं था जो अपने हृदय का विश्रामकक्ष ढूँढता हुआ बेघर घूमता फिरता था। जिस प्रकार एक स्वस्थ शरीर समर्थ मन पर निर्भर होता है, उसी तरह जब मन तृप्त होता है तब शरीर का आनन्द पूर्ण होता है ।

वह नाविक जो भौतिक संसार के सागर में विज्ञान की पाल लगाकर शारीरिक आराम की खोज में जलयात्रा करता है उसका अंत क्या हो सकता है? वह जिस किनारे पर पहुँचने की वांछा रखता है पहुँच तो जाता है, परन्तु अंत में वह अपने आप यह समझ जाएगा कि वह केवल उसका कब्रिस्तान था, जहाँ पर वह दफ्न होने वाला है, इससे बढ़ कर और कुछ नहीं था।

विज्ञान किस दिशा में जा रहा है? अब तक वैज्ञानिक अनुसंधान ने कारण की आंतरिक दुनिया को गले नहीं लगाया है; वह केवल बाह्य संसार तक ही सीमित रहा है। उसने अब तक तात्विक संसार का आलिंगन नहीं किया है, पर अपने आप को वस्तुगत संसार तक ही सीमित रखा है। फिर भी, विज्ञान आज एक नए पहलू में प्रवेश कर रहा है। उसे आज विवश होकर बाह्य और परिणामी वस्तुगत संसार से अपनी दृष्टि उठा कर आंतरिक, करणीय और तात्विक संसार की ओर करनी पड़ रही है। विज्ञान की दुनिया ने मान लिया है कि वह कारणात्मक, पारलौकिक संसार के सैद्धांतिक स्पष्टीकरण के बिना अपने लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सकते हैं।

जब एक नाविक विज्ञान की पाल लगाकर बाहरी सत्य की खोज में अपनी यात्रा पूरी कर लेता है, तो वह एक और पाल, धर्म की पाल, लगाकर आंतरिक सत्य की तलाश में एक नई यात्रा शुरू करता है, अंततः, वह अपने मूल मन के वांछित गंतव्य की ओर चल पड़ता है।

मानव प्रयास का दूसरा दौर परिणामी वस्तुगत संसार से परे तात्विक संसार में मानव जीवन के

मौलिक प्रश्नों का समाधान ढूंढने की चेष्टा है। इस बात का खंडन नहीं किया जा सकता कि दर्शन और धर्मों ने जो इस पथ पर चले हैं कई योगदान किए हैं। दार्शनिक, संतों और ऋषि मुनियों ने अपने समय में लोगों के लिए भलाई का मार्ग प्रशस्त किया। फिर भी उनकी कई उपलब्धियां आज के लोगों के लिए आध्यात्मिक बोझ बन गई हैं।

इस पर निष्पक्षता से विचार करें। क्या कभी किसी दार्शनिक ने ऐसा ज्ञान प्राप्त किया है जो मनुष्य की गहरी वेदनाओं को हल कर सके? क्या कभी किसी ऋषि-मुनि ने मनुष्य और विश्व के मूल प्रश्नों का समाधान करके इस पथ को प्रकाशित किया है? क्या उनकी शिक्षा और तत्वज्ञान ने और अधिक अस्तव्यस्त प्रश्न नहीं उठाए, और इस प्रकार संदेहवाद को बढ़ावा दिया है?

साथ ही साथ, पुनर्जागरण का प्रकाश जो धर्मों ने हर युग में अंधकार में भटकती हुई मनुष्य की आत्मा पर डाला है आगे बढ़ते हुए इतिहास में फीका पड़ जाता है। और बढ़ते हुए अंधकार में धीमी सी, फड़फड़ाती हुई बत्तियाँ छोड़ जाता है।

ईसाई मत के इतिहास की जाँच करें। मानवता के उद्धार का दावा करके, दो हज़ार वर्ष के उथल-पुथल इतिहास में ईसाइयत ने सारी दुनिया में फैल कर इस युग में अपना बोलबाला किया। तो भी, ईसाइयत के उस जोश की आत्मा का क्या हुआ जिसके जीवन की ज्योति कभी इतनी उज्ज्वल थी कि रोमी साम्राज्य के कठोर अत्याचार के बावजूद भी रोमी नागरिक सूली पर चढ़े हुए यीशु के सामने झुक गये। मध्यकालीन सामंतवादी समाज ने ईसाइयत को जीवित दफना दिया था। यद्यपि, ईसाई संप्रदाय के धर्म-शोधन आंदोलन ने जीवन की ज्योति को बहुत ऊँचा किया फिर भी वह अंधकार के बढ़ते हुए प्रवाह को रोक न सका।

जब ईसाई प्रेम कम होने लगा और सारे ईसाई यूरोप में पूंजीवाद का लोभ तेज़ी से बढ़ने लगा, जब गंदी बस्तियों के भूखे आम लोगों का कड़वा कोलाहल ज़ोर करने लगा, तब उनके उद्धार का वायदा स्वर्ग से नहीं वरन पृथ्वी से आया। उसका नाम साम्यवाद था। यद्यपि ईसाई मत ने परमेश्वर का प्रेम घोषित किया, तथापि वह पादरी लोगों के ख़ाली नारों के साथ विकृत हो गया। तब स्वभावतः विद्रोह का परचम लहराने लगा, और यह विवाद खड़ा हुआ कि ऐसा दयाहीन परमेश्वर जो इस प्रकार के कष्ट को घटने देता है, वह अस्तित्व में नहीं हो सकता है। इस प्रकार आधुनिक भौतिकवाद का जन्म हुआ। पाश्चात्य समाज भौतिकवाद का अड्डा बन गया और यह एक उपजाऊ भूमि थी जिसमें साम्यवाद पनपा।

ईसाई मत इस योग्य नहीं रहा कि वह साम्यवाद और भौतिकवाद की सफलताओं में उनकी बराबरी करे और ऐसे सत्य को प्रकाशित नहीं कर सका जिससे वह उन के सिद्धांतों पर विजय पा सके। ईसाई लोग विवश होकर इन विचारधाराओं को अपने मध्य में फूलते बढ़ते और उनका प्रभाव सारी दुनिया में फैलते हुए देखते रह गए। यह कितने दुख की बात है। इसके अतिरिक्त, यद्यपि ईसाई सिद्धांत की शिक्षा के अनुसार सारी मानवता एक ही माता-पिता की संतान हैं, किंतु विभिन्न देशों के नागरिक जो इस सिद्धांत का दावा करते हैं वे असमान रंग के लोगों के साथ भाई-बहनों की तरह एक साथ बैठना गवारा नहीं करते। यह आज की ईसाइयत की वास्तविक दशा की चर्चा करती है, जिसने यीशु के वचनों को व्यवहार में लाने की शक्ति खो दी है और एक सफेदी किए हुए मकबरे और बेजान संस्कारों का धर बनकर रह गई है।

एक दिन ऐसा भी समय आ सकता है जब मनुष्य के प्रयास से ऐसे सामाजिक अधर्म का अंत हो जाए, परंतु एक ऐसा सामाजिक दुराचार है जो मनुष्य के प्रयास से मिटाया नहीं जा सकता। वह कामुक व्यभिचारिता है। ईसाई मत के सिद्धांत के अनुसार यह बुनियादी पाप है। यह कितने दु:ख की बात है कि आज का ईसाई समाज इस विनाश के मार्ग को बंद नहीं कर सका, जिसमें बहुत से लोग आँखें बंद करके चलते जा रहे हैं। ईसाइयत इस खलल और विभाजन का शिकार बन गई है, और आज वह विवश होकर सैकड़ों जीवनों को इस अनैतिकता के भँवर में खिंचते जाते देख रही है। यह साक्ष्य है कि इस युग में औपचारिक ईसाइयत मानवता को बचाने की दैवी योजना का कार्य करने में असमर्थ है।

क्या कारण है कि धार्मिक लोग, जबकि वे बड़े मन से आंतरिक सत्य की खोज करते हैं फिर भी परमेश्वर के दिये हुए मिशन को कार्याविन्त करने में असफल रहते हैं। तात्विक संसार और वस्तुगत संसार के संबंध की तुलना मन और शरीर के संबंध के साथ की जा सकती है। यह संबंध कारण और प्रतिफल, आंतरिक और बाह्य, कर्ता साझी और पात्र साझी के बीच होते हैं।[३] जिस प्रकार मनुष्य, पूर्णता उस समय प्राप्त कर पाते हैं, जब उनका मन और शरीर पूर्ण रूप से संगठित हो जाता है, उसी प्रकार तात्विक संसार और वस्तुगत संसार, जबतक दोनों पूर्ण रूप से संयुक्त नहीं हो जाते तब तक आदर्श संसार साकार नहीं किया जा सकता। जिस प्रकार मन और शरीर का अटूट संबंध है उसी प्रकार तात्विक संसार, वस्तुगत संसार से अलग नहीं रह सकता। तदनुकूल, मृत्यु के उपरांत का जीवन, पृथ्वी के जीवन के साथ अभिन्नता से जुड़ा है। आत्मिक उल्लास यथार्थ शारीरिक आनंद के बिना अपूर्ण है।

अनंत जीवन की खोज में धर्मों ने संसार में अपने जीवन को नकारने का अत्यधिक प्रयास किया है। उन्होंने आत्मिक उल्लास प्राप्त करने के लिये शारीरिक विहार का तिरस्कार किया है। तथापि, लोग चाहे जितना कठिन प्रयास क्यों ना कर लें फिर भी वे इस संसार की वास्तविकता से अलग नहीं हो सकते या शारीरिक आमोद-प्रमोद की कामनाओं को मार नहीं सकते, जो परछाई की तरह उनके साथ, साथ चलती रहती है, वह झटक के दूर नहीं की जा सकती। यह संसार और इसकी कामना धार्मिक लोगों को ज़ोर से पकड़ कर रखती है और उन्हें वेदना की गहरी खाई में ढकेलती है। इस प्रकार का विरोधाभास उनके धार्मिक जीवन में रोग की तरह लगा रहता है। बहुत से प्रबुद्ध आध्यात्मिक अगुवे इस विरोधाभास से हार कर मिट गये हैं। आजकल के धर्मों की निर्बलता और असफलता का यह मुख्य कारण है, वे अब तक इस आत्म-विरोधाभास पर विजय प्राप्त नहीं कर सके हैं।

धर्मों की निश्चित अवनति का एक और दूसरा कारण भी है। विज्ञान की वृद्धि के साथ कदम से कदम मिला कर चलने से मनुष्य का विवेक बौद्धिक रूप से अत्यंत व्यावहारिक हो गया है, जिसको अब वास्तविकता समझने के लिये वैज्ञानिक पहुँच की आवश्यकता पड़ रही है। दूसरी तरफ, धर्मों के परंपरागत सिद्धाँत वैज्ञानिक स्पष्टीकरण से विहीन हैं। कहने का अर्थ यह हुआ आज के आंतरिक सत्य और बाह्य सत्य की प्रचलित व्याख्या एक दूसरे से सम्मत नहीं हैं।

धर्म का अंतिम लक्ष्य उसी समय प्राप्त हो सकता है जब कोई पहले अपने हृदय में विश्वास करे

---

[३] प्रति-संदर्भ—सृष्टि १.१

और फिर उस पर अमल करे। तथापि, समझने से पहले विश्वास अवस्थित नहीं होता। उदाहरण की तौर पर, सत्य को समझने के लिये और उससे अपने विश्वास को दृढ़ करने के लिये ही हम पवित्र शास्त्र का अध्ययन करते हैं। यीशु ने आश्चर्य कर्म इसी लिये किए ताकि लोग यह देख कर उस पर विश्वास करें कि वह मसीह है। समझ ज्ञान का आरंभ बिन्दु है। परन्तु आज जिस वस्तु से विज्ञान का तर्क प्रमाणित नहीं किया जा सकता उसे लोग स्वीकार नहीं करते। चूँकि धर्म, विश्वास को तो छोड़ो, समझ के स्तर तक भी लोगों का मार्गदर्शन करने में असफल है, इसलिए लोग आज अपना लक्ष्य साकार नहीं कर पाते हैं। आंतरिक सत्य भी विश्वसनीय व्याख्या की मांग करता है। यथार्थतः, इतिहास के लम्बे दौरान में, धर्म भी इस हद तक आगे बढ़ गए हैं, कि अब धार्मिक शिक्षा वैज्ञानिक दृष्टि से भी स्पष्ट की जा सकती है।

धर्म और विज्ञान, जिनका लक्ष्य मनुष्य की अनभिज्ञता के दोनों पहलुओं को दूर करना है, अपने विकास के दौरान में, ऐसा प्रतीत होता है कि उन्होंने परस्पर-विरोधी स्थान अपना लिए हों जो एक दूसरे से मेल नहीं खाते। तथापि, मनुष्य को अपने दोनों पहलुओं पर पूर्णतः विजयी होने के लिये और अच्छाई को जो मौलिक मन चाहता है पूर्ण रूप से साधित करने के लिये, इतिहास के किसी मोड़ पर एक नया सत्य अवश्य उदित होना चाहिए जो विज्ञान और धर्म का मेल करे और उनकी समस्या संकलित उपक्रम के द्वारा हल करे।

हो सकता है कि यह बात धर्म के अनुचरों को, विशेषकर ईसाइयों को यह जान कर कि सत्य की एक नई अभिव्यंजना प्रकट होने वाली है, ग्रहणीय न हो। उनका विश्वास है कि जो धर्मशास्त्र उनके पास हैं वे त्रुटिहीन और पूर्ण हैं। निस्संदेह, सत्य अपने आप में स्वयं अद्वितीय, अनंत, अपरिवर्तनशील और पूर्ण है। हालाँकि, धर्मशास्त्र स्वयं अपने आप में सत्य नहीं हैं, परन्तु वे सत्य की शिक्षा की पाठ्य पुस्तक हैं। सत्य, इतिहास के विभिन्न समय में, जैसे-जैसे मनुष्य का आत्मिक और बौद्धिक रूप से विकास होता रहा, दिया गया है। शिक्षा की गहराई, विस्तार और सत्य को स्पष्ट करने की रीति हर युग के अनुसार स्वभावतः बदलती रही है। इसलिये हम ऐसी पाठ्य पुस्तकों को हर प्रकार से पूर्ण नहीं मान सकते।[४]

अंतिम सत्य की खोज के लिये लोगों को धर्म की आवश्यकता है ताकि वे अपने मौलिक मन की इच्छा के अनुसार अच्छाई साकार कर सकें। इस प्रकार प्रत्येक धर्म का उद्देश्य अभिन्न है। तथापि, धर्म जिन संस्कृतियों से उदित हुए हैं, विशेष अभियानों के अनुसार अपने ऐतिहासिक युग में अनेक रूपों में प्रकट हुए हैं। इसी कारण उनके धर्मग्रंथों ने भी विभिन्न रूप धारण किए हैं। प्रत्येक धर्मग्रंथ का उद्देश्य एक ही है: यह कि अपने चारों ओर का स्थान अपनी ज्योति से रोशन करें। तो भी जब कोई अधिक उज्ज्वल ज्योति अलंकृत होती है तब उसके सामने पुरानी बत्ती धीमी पड़ जाती है और उसका नियोग समाप्त हो जाता है। चूँकि धर्मों में आधुनिक मनुष्य को मृत्यु के अंधकार से निकाल कर जीवन के पूर्ण प्रकाश में लाने की शक्ति का अभाव है, इसलिये सत्य के एक नए पहलू का प्रकट होना आवश्यक है ताकि वह एक नई और अधिक उज्ज्वल ज्योति प्रकाशित करे। यीशु मसीह ने यह संकेत किया था कि परमेश्वर एक दिन नया सत्य प्रकट करेगा, "मैंने यह बातें तुम से दृष्टान्तों में कहीं हैं, परन्तु वह समय आता है कि

---

[४] प्रलयोत्तर विज्ञान ५

मैं तुम से फिर दृष्टान्तों में नहीं कहूँगा, परन्तु खोल कर तुम्हें पिता के विषय में बताऊँगा।"[५]

नए सत्य का मिशन क्या होगा जो उसे पूर्ण करना चाहिये? नए सत्य को, आंतरिक सत्य जिसकी खोज धर्म करता है, और बाह्य सत्य जिसकी खोज विज्ञान करता है, दोनों में सामंजस्य स्थापित करना चाहिए। फलस्वरूप, यह लोगों की दोनों प्रकार की अनभिज्ञता, आंतरिक और बाह्य, पर पूर्ण रूप से विजय पाने में सहायता कर सकेगा, ताकि वे पूर्ण रूप से दोनों प्रकार के ज्ञान को समझ सकें।

आगे, नया सत्य अधर्मी मन के मार्गों का अवरोध करने में उनकी पतित लोगों की अगवाई करेगा और मौलिक मन के लक्ष्यों को प्राप्त करने और भलाई को हस्तगत करने में सहायक होगा। यह लोगों के मन की दोहरी प्रवृत्ति को, जो कभी धर्म और कभी अधर्म के पीछे भागती है, दूर करने में उनका मार्गदर्शन करेगा। यह धार्मिक लोगों को, जो सच्चाई के मार्ग पर चलने के कारण संघर्ष अनुभव करते हैं, उनके इस विरोधाभास पर विजयी होने के लिए, उन्हें समर्थ करेगा। पतित लोगों के लिये, ज्ञान जीवन की ज्योति है जो पुनर्जागरण की क्षमता रखता है, और अनभिज्ञता मृत्यु की परछाईं है जो विनाश का कारण है। अनभिज्ञता सच्ची भावुकता को जन्म नहीं दे सकती, और ज्ञान और भाव की अनुपस्थिति इच्छा-शक्ति को कार्य करने का मनोबल नहीं दे सकती। बुद्धि, भाव और इच्छा-शक्ति के यथायोग्य कृत्य के बिना मनुष्य सच्चे मानव का जीवन नहीं जी सकता।

यदि हमारी सृष्टि इस प्रकार हुई है कि हम परमेश्वर से अलग होकर नहीं जी सकते, तो अवश्य ही परमेश्वर की अनभिज्ञता हमें दुःख के मार्ग के हवाले करेगी। यद्यपि हम बड़े यत्न से बाईबल का अध्ययन करें, तो भी क्या हम कह सकते हैं कि हम परमेश्वर की वास्तविकता के बारे में स्पष्टता से जानकारी रखते हैं? क्या हम *परमेश्वर के हृदय* को समझ सकते हैं? सत्य की नई अभिव्यक्ति परमेश्वर के हृदय को प्रकट करने में सक्षम होनी चाहिए: सृष्टि की रचना के समय उसका हर्षपूर्ण हृदय; उसके टूटे हुए दिल का अनुभव जब मनुष्य उसके बच्चों ने जिन्हें वह त्याग नहीं सकता था उसके ख़िलाफ विद्रोह किया, और इतिहास के लम्बे दौरान में उन्हें बचाने का प्रयत्न करते रहने पर उसका दुखित हृदय।

मानव इतिहास, उन लोगों के जीवन से बुना हुआ है जो भले और बुरे दोनों की ओर झुके हैं, संघर्ष से भरा हुआ है। आज, बाह्य संघर्ष—संपत्ति और भूमि क्षेत्र आदि पर झगड़ा—अब धीरे, धीरे समाप्त होता जा रहा है। लोग आपस के जाति मतभेद पर जयंत होकर ताल-मेल कर रहे हैं। द्वितीय विश्वयुद्ध के विजेता देशों ने अपने उपनिवेशों को स्वतंत्र कर दिया है, और बड़े शक्तिमान देशों के साथ बराबरी का स्थान देकर उन्हें संयुक्त राष्ट्र संघ के सदस्यों में सहभागी बना दिया था और अब वे सब मिलकर विश्व व्यवस्था के लिये कार्य कर रहे हैं। आर्थिक विषयक चिंतन के आगे अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में शत्रुता और आपसी मतभेद कम हो रहे हैं और अनेक देशों ने मिलकर साझा बाज़ार का निर्माण किया है। संस्कृतियाँ स्वतंत्रता से फैल रहीं हैं, राष्ट्रों का पारंपरिक पृथक्करण मिटाया जा रहा है और पूर्व और पश्चिम देशों के बीच की दूरी पर पुल बांधा जा रहा है।

फिर भी, एक अंतिम और अनिवार्य संघर्ष हमारे सामने खड़ा है, प्रजातंत्र और साम्यवाद के बीच

---

[५] यूहन्ना १६:२५

का युद्ध। यद्यपि प्रत्येक पक्ष ने भयंकर शस्त्र धारण कर लिये हैं और युद्ध के लिये तैयार बैठे हैं, इनके संघर्ष का मूल कारण आंतरिक और वैचारिक है।

इस वैचारिक युद्ध में कौन से पक्ष की विजय होगी? जो कोई परमेश्वर की वास्तविकता पर विश्वास करता है वह अवश्य ही कहेगा कि प्रजातंत्र की ही जीत होगी। तो भी प्रजातंत्र के पास कोई ऐसा सिद्धाँत नहीं है जो साम्यवाद पर विजय पा सके, और ना ही उसमें ऐसी शक्ति है। इसलिये, परमेश्वर के उद्धार की दैवी योजना के परिपूर्ण होने के लिये, इस नए सत्य को पहले प्रजातंत्र दुनिया के आदर्श को ऊँचा उठा कर नए स्तर पर लाना चाहिये, तब उसे भौतिकवाद को आत्मसात् करने के लिये प्रयोग करना होगा, इस प्रकार अंत में वह मानवता को एक नई दुनिया में लाएगा। इस सत्य को इतिहास के प्रत्येक धर्म, विचारधारा और दर्शनशास्त्र के बीच पूर्ण एकता लानी चाहिये।

कुछ लोग सचमुच, धर्म में विश्वास करने से इनकार करते हैं। वे इसलिये विश्वास नहीं करते हैं क्योंकि वे परमेश्वर की वास्तविकता और मृत्यु के पश्चात जीवन के बारे में नहीं जानते। चाहे इस वास्तविकता को वह कितना ही अस्वीकार क्यों न करें, तो भी मनुष्य का स्वभाव ऐसा है कि यदि यह वैज्ञानिक दृष्टि से सिद्ध हो जाये तो वे अवश्य स्वीकार कर लेंगे और विश्वास भी करेंगे। इसके अतिरिक्त, परमेश्वर ने मनुष्य को एक ऐसा स्वभाव दिया है कि जो लोग जीवन का चरम लक्ष्य भौतिक संसार में ही रखते हैं, वे अंततः अपने हृदय में शून्यता और खालीपन का अनुभव करते हैं। जब इस नए सत्य के द्वारा वे परमेश्वर को जानने लगेंगे और आत्मा लोक की वास्तविकता का सामना करेंगे, तो वे यह जान जाएंगे कि उन्हें अपना चरम लक्ष्य भौतिक संसार पर नहीं रखना चाहिये, परन्तु उन्हें अनन्त जीवन की ओर देखना चाहिये। वे विश्वास के मार्ग पर चलेंगे, और जब वह अपने अंतिम गंतव्य पर पहुँच जाएंगे, तब वे भाई और बहनों की तरह आपस में मिलेंगे।

यदि सब लोग इस सत्य के बल पर इस प्रकार से भाई बंधु की भाँति मिलें, तो फिर वह कैसा संसार होगा? इस नए सत्य के प्रकाश में वे सब, जिन्होंने इस लंबे इतिहास के दौरान अनभिज्ञता के अंधकार को दूर करने के लिए संघर्ष किया है, साथ इकट्ठे होंगे। वे सब मिलकर एक बड़ा परिवार बनाएंगे। चूँकि सत्य का उद्देश्य भलाई को साकार करना है, और चूँकि परमेश्वर अच्छाई का आदि कारण है, वह इस सत्य पर संस्थापित दुनिया का मध्य बिंदु होगा। हर कोई परमेश्वर को अपना माता-पिता मान कर पूजेगा और उसकी सेवा करेगा और एक दूसरे के साथ भाई-बंधु की तरह ताल-मेल से रहेगा। यह मनुष्य का स्वभाव है कि जब लोग अपने पड़ोसी के साथ अपने स्वार्थ के कारण बुरा करते हैं तो वे उसके अनुचित लाभ से जितना आनन्द उठाते हैं उससे कहीं अधिक वे अपनी अंतरात्मा में कष्ट और पछतावा अनुभव करते हैं। जो कोई इस बात को समझेगा वह अपने पड़ोसी को दुःख पहुँचाने से अपने आप को रोकेगा। जब सच्चा भाई-बंधुओं का प्रेम लोगों के हृदयों की गहराइयों से उमढ़ेगा तब उन्हें अपने पड़ोसी को कष्ट पहुँचाने की इच्छा तक नहीं होगी। ऐसे समाज में यह और कितना वास्तविक होगा, जहाँ लोग यथार्थतः अनुभव करते हों कि परमेश्वर, जो समय और अंतरिक्ष से परे है और उनके हर कार्य पर नज़र रखता है, यह चाहता है कि लोग एक दूसरे से प्रेम रखें। अतएव, जब मनुष्य के पतित इतिहास का अंत

होगा तब एक नया ऐतिहासिक युग आरम्भ होगा जहाँ लोग पाप बिलकुल नहीं करेंगे।

जो लोग परमेश्वर पर विश्वास करने के बावजूद भी पाप करते हैं उसका कारण यह है कि परमेश्वर पर उनका विश्वास केवल काल्पनिक होता है। उनका विश्वास उनकी आंतरिक अनुभूति को स्पर्श नहीं कर पाया है। जिन्होंने परमेश्वर का अनुभव दिल की गहराइयों में किया हो उनमें से कौन इस प्रकार पाप करने का साहस करेगा? यदि उन्होंने परमेश्वर के नियम की वास्तविकता को महसूस किया है तो क्या वे यह सोच कर कांपेंगे नहीं कि जो अपराध करता है वह नरक से नहीं बच सकता?

वह दुनिया जिस में पाप नहीं हो, जिसका वर्णन अभी किया है, ऐसी दुनिया मानवता की लंबी खोज का लक्ष्य है, वह स्वर्ग का राज्य कहा जा सकता है। ऐसी दुनिया जब पृथ्वी पर स्थापित की जाएगी तो वह दुनिया पृथ्वी पर स्वर्ग का राज्य कहलाएगी।

इस प्रकार हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि परमेश्वर के उद्धार के कार्य का अंतिम अभिप्राय पृथ्वी पर स्वर्ग का राज्य स्थापित करना है। ऊपर यह बात स्पष्ट की गई है कि मनुष्य का पतन हुआ है, और यह पतन मनुष्य की सृष्टि के पश्चात हुआ था। यदि हम परमेश्वर के अस्तित्व को स्वीकार करते हैं, तो यह स्पष्ट है कि आरम्भ में, हमारे पहले पूर्वजों के पतन से पहले, परमेश्वर किस प्रकार की दुनिया बनाना चाहता था। तो यह कहना यथेष्ट होगा कि ऐसी दुनिया को पृथ्वी पर स्वर्ग का राज्य होना चाहिए था, जहाँ परमेश्वर की सृष्टि का उद्देश्य पूर्ण होता है।[६]

पतन के कारण, मानवता यह दुनिया बनाने में असफल रही। इसके बजाए वे अज्ञानता में पड़ गये और पतित दुनिया बना बैठे। तब से मनुष्य पृथ्वी पर स्वर्ग का राज्य, वह दुनिया जिसकी परमेश्वर को आरंभ में आशा थी, पुनःस्थापित करने के लिए लगातार संघर्ष करता आया है। इतिहास के इस लम्बे अरसे में वे आंतरिक और बाह्य दोनों प्रकार के सत्य की खोज करते आये हैं, और भलाई का अनुसरण करने की चेष्टा करते आये हैं। यथा, मानव इतिहास की आड़ में परमेश्वर की दैवी योजना जिससे परमेश्वर पृथ्वी पर स्वर्ग के राज्य की, जहाँ उसकी सृष्टि का उद्देश्य पूर्ण होता है, पुनःस्थापना का कार्य करता है। इस प्रकार नया सत्य मानवता का उनकी मूल अवस्था में लौटने के लिये मार्गदर्शन करेगा। यह कार्य करने के लिये नए सत्य को मनुष्य और विश्व की सृष्टि की रचना करने का परमेश्वर का क्या अभिप्राय था प्रगट करना होगा और पुनरुद्धार की प्रक्रिया और उसका अंतिम लक्ष्य क्या है सिखाना होगा।

क्या मनुष्य का पतन जैसा बाईबल में लिखा है, यथाशब्द भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल खाने से हुआ? यदि नहीं, तो फिर पतन का और क्या कारण हो सकता है? नए सत्य को इन प्रश्नों के साथ और बहुत से प्रश्नों का उत्तर देना चाहिये, ऐसे प्रश्न जिनसे गम्भीर विचारक युगों से विस्मित रहे हैं और उनको दुःख पहुँचा है। परमेश्वर ने, जो पूर्णता और सौन्दर्य का ईश्वर है, मनुष्य की सृष्टि पतन की संभावना होने के बावजूद क्यों की? सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने पतन को क्यों नहीं रोका, जबकि वह यह जानता था कि उनका पतन हो रहा है? परमेश्वर ने पतित मनुष्य को अपनी सर्वशक्तिमानता से तत्क्षण क्यों नहीं बचाया?

---

[६] प्रति-संदर्भ—सृष्टि ३:१

प्राकृतिक दुनिया में छिपे हुए वैज्ञानिक नियमों को देख कर हम उन पर आश्चर्य करते हैं, इससे हम यह परिणाम निकाल सकते हैं कि परमेश्वर ही उसका सृष्टिकर्ता है, और सचमुच वही विज्ञान का आदि कारण है। यदि मानव इतिहास परमेश्वर के पुनरुद्धार की दैवी योजना है, जहाँ उसकी सृष्टि की रचना का उद्देश्य पूर्ण होता है, तो परमेश्वर, जो सब नियमों का प्रभु है, उसने किसी विशेष व्यवस्थित परियोजना के अनुसार ही अपनी इस लम्बी दैवी योजना को निश्चित किया होगा। यह समझना हमारा अत्यंत महत्वपूर्ण कार्य है कि मनुष्य का पतित इतिहास किस प्रकार से आरंभ हुआ, पुनरुद्धार के वे कौन से सूत्र और नियम हैं जो दैवी योजना की कार्यवाही का नियंत्रण करते हैं, इतिहास कैसे समाप्त होगा, और अंत में मानवता किस प्रकार के संसार में प्रवेश करेगी। नए सत्य को जीवन के इन सब गूढ़ प्रश्नों का उत्तर देना होगा। जब सब उत्तरों का स्पष्टीकरण हो जाएगा तब परमेश्वर, वह अधिपति जो इतिहास का मार्गदर्शन करता है, उसके अस्तित्व को नकारा नहीं जा सकेगा। हम प्रत्येक ऐतिहासिक घटनाओं में परमेश्वर के हृदय के निशान पहचान सकेंगे, कि उसने किस प्रकार पतित मानवता के उद्धार के लिये संघर्ष किया है।

इसके अतिरिक्त, नया सत्य, ईसाई मत के बहुत से कठिन उलझनों का, जिसको अपनी संस्कृति का दायरा समस्त विश्व में स्थापित करने का मिशन प्राप्त है, स्पष्टीकरण करेगा। शिक्षित लोग इस साधारण दावे से कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है संतुष्ट नहीं हैं। ईसाई मत के सिद्धांतों की गहरी महता को समझने की कोशिश में उन्होंने बहुत से आध्यात्मिक वाद-विवाद किए हैं। नया सत्य परमेश्वर, यीशु और मनुष्य के बीच क्या रिश्ता है, स्पष्ट करेगा; यह सब सृष्टि के नियम के प्रकाश में स्पष्ट किया जायेगा। साथ ही साथ, उसे पवित्र ट्रिनिटी (पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा) के गूढ़ रहस्य को स्पष्ट करना होगा। उसे यह भी दिखाना होगा कि मनुष्य का उद्धार परमेश्वर के इकलौते पुत्र का सूली पर रक्त बहाने के द्वारा ही किस प्रकार संभव था।

इसके बाद भी और अधिक कठिन प्रश्न अवशेष रहते हैं। ईसाई लोगों का ऐसा विश्वास है कि सूली के प्रायश्चित द्वारा उद्धार मिलता है। फिर भी, आज तक किसी ने ऐसे निष्पाप बच्चे को जन्म नहीं दिया है जिसे मुक्तिदाता से उद्धार की आवश्यकता ना हो। इससे यह स्पष्ट होता है कि मसीह के द्वारा नया जन्म प्राप्त करने के पश्चात भी लोग मूल पाप अपनी संतान को पारित करते हैं। यह एक अत्यंत महत्वपूर्ण प्रश्न खड़ा करता है: सूली के द्वारा किस हद तक मुक्ति मिलती है? दो हज़ार वर्ष के ईसाइयों के इतिहास में करोड़ों ईसाई लोगों ने शेख़ी के साथ यह बात कही है कि क्रूस पर बहाये गये रक्त के द्वारा हमें हमारे सारे पापों से क्षमा प्राप्त हुई है। फिर भी वास्तव में, निष्पाप लोग, परिवार और समाज अब तक देखने में नहीं आए हैं। इसके अतिरिक्त यह देखने में आया है कि ईसाइयत का उत्साह धीरे, धीरे कम होता जा रहा है। पारंपरिक विश्वास कि क्रूस के द्वारा पूर्ण मोचन प्राप्त होता है और वर्तमान वास्तविकता के बीच असंगति का हम किस प्रकार समाधान कर सकते हैं। अनेक धर्म संकटों में से यहाँ केवल कुछ ही का वर्णन किया गया है। नया सत्य जिसकी हमें बड़ी लालसा है, वह इसके सरल उत्तर प्रस्तुत करेगा।

बाईबल में बहुत से कठिन रहस्य पाए जाते हैं, जो कि प्रतीकात्मक और लाक्षणिक हैं, जैसे कि:

मसीह को दूसरी बार क्यों आना चाहिए? वह कब और कहाँ वापस आएगा? मसीह के दूसरे आगमन पर पतित लोगों का पुनरुत्थान किस प्रकार से होगा? बाईबल की ऐसी भविष्यवाणियाँ कि अग्नि और दूसरे क्लेशों के द्वारा स्वर्ग और पृथ्वी का विनाश होगा, इनका क्या अर्थ है? नया सत्य इन रहस्यों का स्पष्टीकरण करेगा, गोपनीय भाषा में नहीं परन्तु, जैसे यीशु मसीह ने वायदा किया था, सरल भाषा में जो हर कोई समझ सके[७]। बाईबल की ऐसी प्रतीकात्मक और लाक्षणिक आयतों के विभिन्न अनुवादों के कारण ईसाई मत के अनेक संप्रदाय बन गए हैं। नए सत्य के स्पष्टीकरण की सहायता से ही हम ईसाई मत का एकीकरण कर सकते हैं।

यह चरम जीवनदायी सत्य, तथापि, न तो शास्त्रों की विस्तारपूर्ण जाँच-पड़ताल से या विद्वत्तापूर्ण मूलपाठ से और ना ही मनुष्य की बुद्धि के द्वारा समझा जा सकता है। जैसे कि प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में लिखा है, "तुझे बहुत से लोगों, और जातियों, और भाषाओं और राजाओं के विषय में फिर भविष्यवाणी करनी होगी"।[८] इस सत्य को परमेश्वर के दैवी प्रकटीकरण के द्वारा प्रकट होना चाहिये।

समय के पूरे होने के साथ, परमेश्वर ने एक व्यक्ति को इस दुनिया में विश्व की और मनुष्य की मूलभूत समस्याओं का समाधान करने के लिये भेजा है। उस का नाम सन मियंग मुन है। कई दशाब्दियों तक वह आत्मालोक में जो इतना विशाल है कि जिसका अनुमान नहीं लगाया जा सकता है परिभ्रमण करते रहे। सत्य की खोज में वे क्लेश से भरे रक्तरंजित पथ पर चले, वह ऐसे क्लेश से होकर गुज़रे जो केवल परमेश्वर ही जानता है। चूँकि वे जानते थे कि मानवता को बचाने के लिये कोई भी उस चरम सत्य को अति कटु पीड़ादायक परीक्षण के बिना प्राप्त नहीं कर सकता। आत्मालोक में और भौतिक संसार में वे करोड़ों शैतानों से लड़े, और सब के ऊपर जयंत हुए। परमेश्वर की आंतरिक सहभागिता और प्रभु यीशु मसीह और परलोक में बहुत से संतों से मिलकर, उन्होंने स्वर्ग के रहस्य को प्रकाशित किया है।

इन पन्नों पर जो वचन अंकित हैं वह तो केवल इस सत्य का एक भाग ही है। यह पुस्तक तो केवल उनके अनुयायियों ने जो सुना और देखा है उसका संग्रह है। हमें विश्वास है कि आगे चलकर ठीक समय में सत्य के और अधिक गम्भीर अंश प्रकाशित किए जाएंगे।

दुनिया के हर कोने में, अनगिनत लोग जो अंधकार में सत्य की खोज करते हैं वह आज इस नए सत्य के प्रकाश को ग्रहण कर रहे हैं और उनका पुनरुत्थान हो रहा है। हम जो इस के साक्षी हैं, गहरी प्रेरणा के आँसू बहाये बिना नहीं रह सकते। हमारे हृदय की आकांक्षा है कि इसका प्रकाश समस्त संसार में शीघ्र ही भर जाए।

---

[७] यूहन्ना १६:२५

[८] प्रकाशितवाक्य १०:११

दिव्य नियम प्रतिपादन

भाग १

अध्याय १

सृष्टि का नियम

विषय सूची

अध्याय १ पृष्ठ

सृष्टि का नियम १९

संभाग १

परमेश्वर और सृजित विश्व के द्वैत अभिलक्षण २०

१.१ परमेश्वर के द्वैत अभिलक्षण २०

१.२ परमेश्वर और विश्व के बीच संबंध २३

संभाग २

सर्वव्यापी मूल ऊर्जा, आदान-प्रदान क्रिया और चार-दशा-आधार २६

२.१ सर्वव्यापी मूल ऊर्जा २६

२.२ आदान-प्रदान क्रिया २६

२.३ चार-दशा-आधार जो आदि-विभाजन-संयोजन क्रिया के द्वारा तीन-कर्म-प्रयोजन साकार करता है २८

२.३.१ आदि-विभाजन-संयोजन २८

२.३.२ तीन-कर्म-प्रयोजन २९

२.३.३ चार-दशा-आधार २९

२.३.४ चार-दशा-आधार के अस्तित्व की विधि २९

२.४ परमेश्वर की सर्वविद्यमानता ३४

२.५ जीवन का प्रजनन ३४

२.६. कारण कि हर प्राणी द्वैत अभिलक्षणों से बने हैं ३५

संभाग ३

सृष्टि का उद्देश्य ३६

३.१ विश्व की सृष्टि का उद्देश्य ३६

३.२ परमेश्वर को आनन्द देने के लिये अच्छा पात्र साझी ३७

संभाग ४

मौलिक मूल्य ४०

४.१ मौलिक मूल्य निर्धारण करने की प्रक्रिया और मानदण्ड ४०

४.२ मूल मनोभाव, बुद्धि और इच्छा शक्ति, और मौलिक सौन्दर्य, सच्चाई और अच्छाई ४१

४.३ प्रेम और सौन्दर्य, धर्म और अधर्म, सदाचारिता और दुराचारिता ४१

४.३.१ प्रेम और सौन्दर्य ४१

४.३.२ अच्छाई और बुराई ४२

४.३.३ सदाचारिता और दुराचारिता ४३

संभाग ५
विश्व की रचना की प्रक्रिया और उसका विकास काल ४४
५.१ विश्व की रचना की प्रक्रिया ४४
५.२ सृष्टि का विकास काल ४४
५.२.१ विकास काल के तीन क्रमवार चरण ४५
५.२.२ अप्रत्यक्ष प्रभुत्व का क्षेत्र ४६
५.२.३ प्रत्यक्ष प्रभुत्व का क्षेत्र ४८

संभाग ६ ४९
मूर्त दुनिया और अमूर्त दुनिया जिसका केन्द्र मनुष्य है ४९
६.१ मूर्त और अमूर्त दुनिया ठोस वास्तविकताएं ४९
६.२ विश्व में मनुष्य का स्थान ५१
६.३ भौतिक और आत्मिक शरीर के बीच पारस्परिक संबंध ५१
६.३.१ भौतिक शरीर की संरचना और कार्य ५१
६.३.२ आत्मिक शरीर की संरचना और कार्य ५१
६.३.३ आत्मिक मन, शारीरिक मन और मनुष्य के मन से उनका संबंध ५३

सृष्टि का नियम

संपूर्ण इतिहास में लोग, मनुष्य के जीवन और विश्व के मूल प्रश्नों और उनके संतोषजनक उत्तर के प्रति अधीर रहे हैं। इसका कारण यह है कि उन बुनियादी नियमों को, जिनके द्वारा आरम्भ में मानवता और विश्व की सृष्टि की गई थी, आज तक कोई भी नहीं समझ सका। इस विषय को सुलझाने के लिये केवल परिणामी वास्तविकता की ही जाँच करना पर्याप्त नहीं है। मूल प्रश्न तो करणीय वास्तविकता का है। मानवता और विश्व संबंधी मसले का समाधान परमेश्वर की प्रकृति को समझने के बिना नहीं हो सकता। इस अध्याय में इन प्रश्नों पर बहुत विस्तृत रूप से चर्चा की गई है।

संभाग १

परमेश्वर और रचित विश्व के द्वैत अभिलक्षण

१.१ परमेश्वर के द्वैत अभिलक्षण

हम अदृष्ट परमेश्वर की दिव्य प्रकृति को किस प्रकार समझ सकते हैं? एक उपाय है, यदि हम उसकी बनाई हुई सृष्टि का परीक्षण करें तो हम उसकी दिव्यता को समझ सकते हैं।
संत पौलुस ने इस प्रकार कहा है:

> उसके अनदेखे गुण, अर्थात उसकी सनातन सामर्थ्य और परमेश्वरत्व, जगत की सृष्टि के समय से उसके कामों के द्वारा देखने में आते हैं, यहाँ तक कि वे निरुत्तर हैं।—रोमियों १:२०

जिस प्रकार एक कलाकृति उसके निर्माता की अदृष्ट प्रकृति को ठोस रूप में प्रदर्शित करती है, निर्मित विश्व की हर वस्तु भी उसके निर्माता की प्रकृति के कुछ अदृश्य दिव्य गुणों का भौतिक प्रत्यक्षीकरण है। इस प्रकार हर वस्तु परमेश्वर से संबंधित है। जिस तरह हम किसी कलाकार के स्वभाव को उसकी कलाकृति के द्वारा समझ सकते हैं, उसी प्रकार हम परमेश्वर की प्रकृति को भी उस की बनाई हुई सृष्टि की सभी वस्तुओं के द्वारा समझ सकते हैं।

आइए हम प्राकृतिक जगत के सामान्य पदार्थों पर जो सर्वत्र पाये जाते हैं दृष्टि करें। प्रत्येक सत्व में *यांग* (पुरुषत्व) और *यिन* (नारीत्व) के द्वैत अभिलक्षण पाये जाते हैं, और यह दोनों जब आपस में एक दूसरे के साथ और एक दूसरे के बीच, और दूसरे तत्वों के साथ मिलकर पारस्परिक संबंध स्थापित करते हैं तब ही अस्तित्व में आते हैं।

उदाहरण के तौर पर, सूक्ष्माणु, जो सभी पदार्थों का मूलभूत अंग होता है, उसमें या तो धनात्मक प्रभार होता है या ऋणात्मक प्रभार होता है और या निष्प्रभावी प्रभार होता है, जो धनात्मक और ऋणात्मक अंशभूत के निष्प्रभावीकरण से अस्तित्व में आता है। जब एक कण अपने द्वैत अभिलक्षण से एक दूसरे के साथ पारस्परिक संबंध से जुड़ जाते हैं तब वह परमाणु बनते हैं। परमाणु भी या तो धनात्मक या ऋणात्मक संयोजन क्षमता प्रदर्शित करते हैं। जब एक परमाणु के द्वैत अभिलक्षण दूसरे परमाणु के द्वैत अभिलक्षणों के साथ पारस्परिक संबंध बनाते हैं तब अणुकणिका का जनन होता है। इस प्रकार से बनी हुई अणुकणिका भी आगे चलकर अपने द्वैत अभिलक्षणों के बीच पारस्परिक संबंध करके पौधों और पशुओं के खाने के पौष्टिक पदार्थ बन जाते हैं।

पौधे अपने पुंकेसर और गर्भ केसर के द्वारा प्रजनन करते हैं। नर और मादा पशु एक दूसरे के साथ प्रसंग करके अपनी उपजाति बनाए रखते हैं। बाईबल के अनुसार, आदम की सृष्टि के पश्चात परमेश्वर ने यह देखा कि उसका अकेले रहना अच्छा नहीं है।[९] आदम का प्रतिरूप नारी, हव्वा की सृष्टि के पश्चात ही परमेश्वर ने कहा कि उसकी सृष्टि “बहुत अच्छी है”।[१०]

---

[९] उत्पत्ति २:१८

[१०] उत्पत्ति १:३१

यद्यपि, परमाणु धनात्मक और ऋणात्मक आयनीकरण के पश्चात आयन बन जाते हैं तब भी प्रत्येक दृढ़ योग में धनात्मक केन्द्रक (nucleus) और ऋणावेश सूक्ष्माणु (electron) होते हैं। इसी प्रकार हर एक पशु, चाहे वह नर हो या मादा, अपना जीवन अपने आंतरिक यांग (पुरुषत्व) और यिन (नारीत्व) के पारस्परिक संबंध के द्वारा बनाए रखते हैं। और ऐसा ही पौधों के में भी होता है। यही लोगों में होता है, पुरुषों में अदृश्य स्त्रीवाची स्वभाव निहित होते हैं और स्त्रियों में अदृश्य पौरुष स्वभाव निहित होते हैं।

इसके अतिरिक्त, प्रत्येक सृष्टि सहसम्बद्ध पहलू में विद्यमान रहती है: अंदर और बाहर, आंतरिक और बाह्य, आगे और पीछे, दायें और बायें, ऊपर और नीचे, ऊँचा और नीचा, उठता हुआ और गिरता हुआ, लम्बा और छोटा, चौड़ा और पतला, पूर्व और पश्चिम, उत्तर और दक्षिण, आदि। इसका कारण यह है कि प्रत्येक वस्तु का अस्तित्व होने के लिए उसकी रचना द्वैत-लाक्षणिक पारस्परिक संबंध के माध्यम से की गई है। इस प्रकार, हम यह समझ सकते हैं कि प्रत्येक वस्तु को अपने अस्तित्व के लिये यांग और यिन अभिलक्षण के पारस्परिक संबंध की आवश्यकता है।

हालाँकि, द्वैत अभिलक्षण के पारस्परिक संबंध का एक और भी जोड़ा है जो यांग और यिन के द्वैत लाक्षणिक पारस्परिक संबंध से और भी अधिक महत्वपूर्ण है। प्रत्येक सत्व के पास बाह्य आकृति और अंदरूनी विशिष्ट गुण होता है। बाहरी दृष्ट आकृति अंदरूनी अदृश्य लक्षण के सदृश्य होती है। अंदरूनी लक्षण, गोकि अदृष्ट होते हैं, उनका एक विशेष आकार होता है जो बाहरी रूप में व्यक्त होता है। अंदरूनी लक्षण *आंतरिक प्रकृति* कहलाता है, और बाहरी आकृति *बाह्य रूप* कहलाता है। चूँकि आंतरिक प्रकृति और बाह्य रूप एक ही सत्व के आंतरिक और बाहरी पहलुओं से संबंधित हैं, बाह्य रूप को दूसरी आंतरिक प्रकृति के रूप में भी समझा जा सकता है। इसलिये, आंतरिक प्रकृति और बाह्य रूप दोनों एक साथ द्वैत अभिलक्षण कहलाते हैं।

उदाहरण की तौर पर यदि हम मनुष्यों को देखें, मनुष्यों का बाहरी रूप शरीर होता है और आंतरिक प्रकृति मन होता है। शरीर अदृष्ट मन का दृष्ट प्रतिबिंब है। चूँकि मन का एक विशेष रूप होता है, शरीर जो उसे प्रतिबिंबित करता है वह भी वही विशेष रुप धारण करता है। इसके पीछे यह सिद्धांत जिसे मुखाकृति या हस्तरेखा विद्या कहते हैं जिससे किसी व्यक्ति की शारीरिक बनावट देखकर उसका स्वभाव और नियति मालूम की जाती है। यहाँ मन आंतरिक प्रकृति है और शरीर बाह्य रूप है। मन और शरीर मनुष्य के दो सहसम्बद्ध पहलू हैं, इस प्रकार शरीर दूसरा मन कहा जा सकता है। दोनों साथ मिलकर मनुष्य के द्वैत अभिलक्षण होते हैं। इसी प्रकार प्रत्येक प्राणी अपने द्वैत अभिलक्षणों के बीच पारस्परिक संबंध रखने से अस्तित्व में रहते हैं।

आंतरिक प्रकृति और बाह्य रूप के बीच किस प्रकार का संबंध है? आंतरिक प्रकृति अमूर्त और कारणात्मक है, और बाह्य रूप के लिए कर्ता साझी के स्थान पर होती है; बाह्य रूप मूर्त, परिणामी और आंतरिक प्रकृति के पात्र साझी के स्थान पर होता है। किसी भी सत्व के इन दोनों पहलुओं के बीच का आपसी संबंध: आंतरिक और बाह्य, करणीय और परिणामी, कर्ता साझी और पात्र साझी, लंब और क्षैतिज होता है। हम फिर मनुष्य को उदाहरण की तौर पर लेते हैं, जिनका मन और शरीर क्रमानुसार उसकी आंतरिक प्रकृति और बाह्य रूप होता है। शरीर मन का प्रतिबिंब होता है और मन के आदेशों को

इस प्रकार मानता है जिससे शरीर जीवित रहता है और मन के उद्देश्यों से प्रभावित रहता है। मन और शरीर का आपसी संबंध आंतरिक और बाह्य, कारणात्मक और परिणामी, कर्ता साझी और पात्र साझी, लंब और क्षैतिज होता है।

इसी प्रकार, सभी रचित प्राणियों में, चाहे वह कितने ही जटिल वर्ग के क्यों ना हों, अमूर्त आंतरिक प्रकृति होती है जो मनुष्य के मन के अनुरूप होती है, और मूर्त बाह्य रूप होता है जो मनुष्य के शरीर के अनुरूप होता है। प्रत्येक प्राणी की आंतरिक प्रकृति जो कारणात्मक और कर्ता होती है बाह्य रूप को निर्देशित करती है। यह संबंध मनुष्य और प्राणियों को परमेश्वर की सृष्टि के रूप में उद्देश्यपूर्ण ढंग से कार्य करने के लिए जीवित रखता है। पशु जीवित रहते और चलते फिरते हैं क्योंकि उनका आंतरिक संकाय, जो मनुष्य के मन के अनुरूप होता है और उन्हें विशेष उद्देश्य प्रदान करता है, उनकी देह को निर्देशित करता है। पौधे भी अपना कायिक कार्य अपनी आंतरिक प्रकृति के आधार पर करते हैं, वह भी कुछ हद तक मनुष्य के मन की तरह कार्य करता है।

मनुष्य का मन प्रत्येक व्यक्ति को एक स्वाभाविक झुकाव प्रदान करता है जिससे कि वह दूसरों के साथ तालमेल से जुड़ सके। इसी प्रकार धनात्मक आयन और ऋणात्मक आयन एक साथ मिल कर परमाणु बनातीं हैं, क्योंकि उनमें से हर एक के पास मूलभूत आंतरिक प्रकृति होती है जो उनके अंतिम लक्ष्य की ओर उनका मार्गदर्शन करती हैं। ऋणावेश सूक्ष्माणु केन्द्रक (न्यूक्ली) के चारों ओर इकट्ठी होकर अणु बनातीं हैं, क्योंकि उनमें आंतरिक प्रकृति के गुण होते हैं जो उन्हें उस लक्ष्य की ओर नियत करते हैं। आधुनिक विज्ञान के अनुसार, प्रत्येक कण जो अणु बनाते हैं ऊर्जा से बने होते हैं। ऊर्जा को अणु बनाने के लिए उसमें भी आंतरिक प्रकृति होनी चाहिए जो उसे किसी भी ख़ास आकार अपनाने में मार्ग दर्शन कर सके।

इस विषय पर और गहराई में खोज करने से हम उस अंतिम कारण तक पहुँचते हैं जिससे यह ऊर्जा निकलती है और जिसके अस्तित्व में यह आंतरिक प्रकृति और बाह्य रूप के तत्व पाये जाते हैं। यह सत्ता विश्व की समस्त वस्तुओं का प्रथम कारण है। प्रथम कारण होने के नाते उसमें भी वही आंतरिक प्रकृति और बाह्य रूप के द्वैत अभिलक्षण होने चाहिये, जो सारे प्राणियों के आंतरिक प्रकृति और बाह्य रूप का कर्ता साझी है। हम विश्व के इस प्रथम कारण को परमेश्वर कहते हैं, और हम परमेश्वर की आंतरिक प्रकृति और बाह्य रूप को *मूल आंतरिक प्रकृति* और *मूल बाह्य रूप* कहते हैं। संत पौलुस ने बताया कि हम सृष्टि की नाना प्रकार की वस्तुओं में पाए जाने वाले अभिलक्षणों की जाँच करके परमेश्वर की प्रकृति को समझ सकते हैं: परमेश्वर अखिल विश्व का प्रथम कारण, और कर्ता साझी है, जिसमें सामंजस्यपूर्ण मूल आंतरिक प्रकृति और मूल बाह्य रूप के द्वैत अभिलक्षण निहित हैं।

हमने पहले ही इस बात को उल्लिखित किया है कि प्रत्येक सत्व को अपना अस्तित्व बनाए रखने के लिये उनके यांग और यिन के द्वैत अभिलक्षणों के बीच पारस्परिक संबंध की आवश्यकता होती है। इस प्रकार यह बात स्वभावतः समझी जा सकती है कि परमेश्वर जो प्रथम कारण है, उसका अस्तित्व भी उसके अपने द्वैत अभिलक्षणों के बीच के पारस्परिक संबंध के आधार पर होना चाहिये। बाईबल का यह

अनुवाक्य, "तब परमेश्वर ने अपने स्वरूप के अनुसार मनुष्य को उत्पन्न किया, अपने ही स्वरूप के अनुसार उसको नर और नारी करके सृजा"[११], इस बात का समर्थन करता है कि कर्ता साझी के रूप में परमेश्वर के पास यांग और यिन के द्वैत अभिलक्षण हैं जो आपस में पूर्णतः सामंजस्यपूर्ण हैं।

द्वैत अभिलक्षणों की आंतरिक प्रकृति और बाह्य रूप और यांग और यिन के द्वैत अभिलक्षणों के बीच क्या संबंध है? परमेश्वर की मूल आंतरिक प्रकृति और मूल बाह्य रूप प्रत्येक में मूल यांग और मूल यिन का पारस्परिक संबंध होता है। इसलिये मूल यांग और मूल यिन मूल आंतरिक प्रकृति और मूल बाह्य रूप के गुण हैं। यांग और यिन के बीच का संबंध, आंतरिक प्रकृति और बाह्य रूप के बीच के संबंध के अनुरूप होता है। यांग और यिन के बीच का पारस्परिक संबंध इस प्रकार से है: आंतरिक और बाह्य, करणीय और परिणामी, कर्ता साझी और पात्र साझी, लंब और क्षैतिज। इसी कारण बाईबल की उत्पत्ति की पुस्तक में वर्णित है कि परमेश्वर ने आदम की पसली से स्त्री हव्वा की रचना की, ताकि वह उसकी सहायक बने।[१२] इस रीति से, परमेश्वर के यांग और यिन, पुरुषत्व और नारीत्व में प्रकट हुए।

मनुष्य जब अपने जीवन का केन्द्र अपने मन पर निर्धारित करता है तब वह पूर्णता प्राप्त करता है; इसी प्रकार, जब परमेश्वर सृष्टि का केन्द्र होता है तब ही सृष्टि सम्पूर्ण होती है। उसी तरह, विश्व एक पूर्ण कायिक देह है जो केवल परमेश्वर के प्रयोजन के अनुसार ही गतिशील रहता है। इसलिए, एक कार्बनिक शरीर के रूप में, विश्व को आंतरिक प्रकृति और बाह्य रूप के संबंध के द्वारा विद्यमान रहना चाहिए, परमेश्वर उसकी आंतरिक प्रकृति के रूप में और निर्मित विश्व बाहरी रूप में। इसी कारण बाईबल में लिखा है कि मनुष्य जो विश्व का केन्द्र है, परमेश्वर के स्वरूप में सृजा गया है।[१३] चूँकि परमेश्वर कर्ता साझी के रूप में विद्यमान है और उसमें आंतरिक प्रकृति और पुरुषत्व के गुण हैं, उसने विश्व को बाह्य आकार में नारीत्व के गुणों के साथ संवार कर अपने पात्र साझी के रूप में रचा। यह सब बाईबल का यह अनुवाक्य इस प्रकार पुष्टि करता है, "क्योंकि पुरुष...परमेश्वर का स्वरूप और महिमा है।"[१४] हम परमेश्वर को आंतरिक और पौरुष कर्ता साझी होने के नाते, "हमारा पिता" बुला कर मान्यता देते हैं।

संक्षिप्त में, परमेश्वर कर्ता है जिसके मूल आंतरिक प्रकृति और मूल बाह्य रूप के द्वैत अभिलक्षण सामंजस्य में हैं। और उसी समय परमेश्वर पुरुषत्व और स्त्रीत्व का सामंजस्यपूर्ण मिलन भी है, जो क्रमशः, मूल आंतरिक प्रकृति और मूल बाह्य रूप के गुण व्यक्त करता है। विश्व के संबंध में, परमेश्वर कर्ता साझी है जिसमें आंतरिक प्रकृति और पुरुषत्व के गुण हैं।

१.२ परमेश्वर और विश्व के बीच संबंध

हमने यह सीखा है कि सृष्टि की प्रत्येक रचना परमेश्वर की वस्तुगत पात्र साझी है, जो उसकी समानता में उसके द्वैत अभिलक्षणों के विभिन्न प्रक्षेपण के रूप में रची गई है। परमेश्वर सभी सत्वों के

---

[११] उत्पत्ति १:२७

[१२] उत्पत्ति २:२२

[१३] उत्पत्ति १:२७

[१४] १ कुरिन्थियों ११:७

अमूर्त कर्ता साझी के रूप में विद्यमान है। मनुष्य *छवि* के स्तर पर गृहीत पात्र साझी हैं, और शेष सृष्टि चिह्न के स्तर पर गृहीत पात्र साझी हैं। ये पात्र साझी, छवि और प्रतीक में *सत्य की व्यक्तिगत अभिव्यक्ति* हैं।

सत्य के व्यक्तिगत मूर्तरूप परमेश्वर के द्वैत अभिलक्षणों की विभिन्न अभिव्यक्तियाँ हैं। इसलिये बड़े पैमाने पर यह दो वर्गों में पहचाने जा सकते हैं: यांग विशेषताएं, जो परमेश्वर की मूल आंतरिक प्रकृति और पौरुषत्व के सदृश्य हैं, और यिन विशेषताएं जो परमेश्वर के बाह्य रूप और नारीत्व के सदृश्य हैं। यद्यपि सत्य के व्यक्तिगत मूर्तरूप इन दोनों वर्गों में है, चूँकि सभी परमेश्वर के भौतिक पात्र साझी हैं—और उसकी आंतरिक प्रकृति और बाह्य रूप के सदृश्य होते हैं—उनमें प्रत्येक के पास अपने आप में दोनों आंतरिक प्रकृति और बाह्य रूप होते हैं, और उसी प्रकार दोनों यांग और यिन भी होते हैं।

इन द्वैत अभिलक्षणों के बारे में हमारी समझ के प्रकाश में, परमेश्वर और विश्व के बीच के संबंधों को सारांश में इस तरह से कहा जा सकता है: संपूर्ण विश्व परमेश्वर का भौतिक पात्र साझी है। यह सत्य के व्यक्तिगत मूर्तरूपों से बना है, प्रत्येक प्रकृति के नियम से नियंत्रित, या तो छवि के स्तर पर या प्रतीक के स्तर पर परमेश्वर के द्वैत अभिलक्षणों की अद्वितीय अभिव्यक्तियाँ हैं। परमेश्वर के असंख्य गुण, जो अपनी द्विविधता में विभिन्न मनुष्यों को बाटें गए हैं, प्रत्येक छवि के स्तर पर साक्षात् पात्र साझी हैं। यह विशेषताएं समस्त प्रकृति की विभिन्न वस्तुओं में भी विभाजित की गईं हैं, प्रत्येक प्रतीक के स्तर पर मूर्तरूप पात्र साझी हैं। परमेश्वर और विश्व के बीच का संबंध, आंतरिक प्रकृति और बाह्य रूप के संबंध के समान है। यह पारस्परिक संबंध हैं, जिस प्रकार आंतरिक प्रकृति और बाह्य रूप, कारण और परिणाम, लंब और क्षैतिज, कर्ता साझी और पात्र साझी इत्यादि, के बीच में होता है।

अंततः आयें हम, प्रकृति के नियम के दृष्टिकोण से, पूर्वी एशिया की आध्यात्मिक धारणा की, जो *परिवर्तन की पुस्तक (आई चिंग)* के आधार पर है, जांच करें। यहाँ, विश्व का आदि कारण सर्वश्रेष्ठ (परम शून्य) है। सर्वश्रेष्ठ से यांग और यिन निकले, यांग और यिन से पाँच तत्व निकले—धातु, लकड़ी, पानी, अग्नि, भूमि—और इन पाँच तत्वों में से शेष समस्त वस्तुएं अस्तित्व में आईं।[१५] यांग और यिन दोनों साथ में 'पथ' *(टाओ)* कहलाते हैं,[१६] या जैसे *परिवर्तन की पुस्तक* कहती है, एक यांग और एक यिन ही पथ हैं। प्रथानुकूल पथ का पारिभाषिक शब्द वचन है। इन सब को मिला कर देखें तो, महान-सर्वश्रेष्ठ से यांग और यिन निकले यानी वचन निकला, और वचन पर आधारित समस्त वस्तुएं अस्तित्व में आईं। तदनुसार, महान-सर्वश्रेष्ठ सब वस्तुओं का प्रथम कारण है, यांग और यिन का केन्द्रक और सामंजस्यपूर्ण कर्ता साझी है। बाईबल में यूहन्ना की पुस्तक में लिखा है, "वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था,[१७] और सब कुछ वचन के द्वारा बनाया गया"। इसकी तुलना यदि हम *परिवर्तन की पुस्तक* पर आधारित तत्त्वविज्ञान से करें, तो महान-सर्वश्रेष्ठ, जो यांग और यिन या वचन का स्रोत है, वह और कोई नहीं वरण परमेश्वर ही है और जैसा कि हमने देखा है कि वह द्वैत अभिलाक्षणिक सामंजस्यपूर्ण कर्ता

---

[१५] यह महान-सर्वश्रेष्ठ के रेखा-चित्र के स्पष्टीकरण की प्राथमिक पंक्तियों की संक्षिप्त व्याख्या है (टाई-चि-टीउ-शोऊ) चोउ टुन-इ के द्वारा मुद्रित

[१६] बुक ऑफ चेंजस, (परिवर्तन की पुस्तक) संबद्ध आलोचना ४.

[१७] यूहन्ना १:१-३

साझी है। प्रकृति के नियम के अनुसार, यह तथ्य कि सब कुछ जो वचन के द्वारा बनाया गया है उनमें द्वैत अभिलक्षण हैं इस बात को स्पष्ट करता है कि स्वयं वचन में भी द्वैत अभिलक्षण हैं। अतेव, *परिवर्तन की पुस्तक* का दावा कि यांग और यिन दोनों एक साथ वचन हैं, ठीक है।

हालांकि, यह पूर्वी एशियाई तत्त्वविज्ञान विश्व को केवल यांग और यिन के दृष्टिकोण ही से देखता है, पर यह जानने में विफल रहा है कि प्रत्येक वस्तु में आंतरिक प्रकृति और बाह्य रूप भी होता है। इसलिये, यद्यपि यह दिखाता है कि महान-सर्वश्रेष्ठ सामंजस्यपूर्ण यांग और यिन का कर्ता साझी है, वह यह दिखाने में विफल रहा है कि महान-सर्वश्रेष्ठ सामंजस्यपूर्ण मूल आंतरिक प्रकृति और मूल बाह्य रूप का कर्ता साझी भी है। अतः वह यह बूझ नहीं सका कि महान-सर्वश्रेष्ठ व्यक्तित्वशाली परमेश्वर है।

हमने यह सीखा है कि इस पूर्वी एशियाई दर्शनशास्त्र की मूल धारणा जो *परिवर्तन की पुस्तक* पर आधारित है वह पूरी तरह से केवल 'प्रकृति के नियम' के द्वारा ही स्पष्ट की जा सकती है। अभी हाल ही की बात है कि पूर्वी औषधियों को सारी दुनिया में मान्यता दी जाने लगी है। इसकी सफलता इसके बुनियादी सिद्धांतों के कारण है, जो 'प्रकृति के नियम' के अनुसार यांग और यिन की धारणा पर केन्द्रित है।

भाग २

सार्वभौमिक मूल ऊर्जा, आदान-प्रदान क्रिया और चार-दशा-आधार

२.१ सार्वभौमिक मूल ऊर्जा

परमेश्वर, सारी सृष्टि का सृजनहार, पूर्ण वास्तविकता, अनन्त, स्वयंभूत और समय और अंतरिक्ष की सब सीमाओं से बाहर है। परमेश्वर की मूल ऊर्जा भी अनंत, स्वयंभूत और पूर्ण है। वह सब ऊर्जाओं और शक्तियों का, जो सृजित प्राणियों को जीवित रखतीं है, उद्गम है। इस मूलभूत ऊर्जा को हम *सार्वभौमिक मूल ऊर्जा* कहते हैं।

२.२ आदान-प्रदान क्रिया

सार्वभौमिक मूल ऊर्जा की क्रिया के माध्यम से सभी वस्तुओं के कर्ता और पात्र मूल तत्व *सामान्य आधार* बनाते हैं और पारस्परिक क्रिया आरंभ करते हैं। यह अंतःक्रिया, परिणाम स्वरूप, वह सारी शक्तियाँ उत्पन्न करती है जो सभी प्राणियों के प्रजनन, क्रिया और अस्तित्व के लिये आवश्यक हैं। इस प्रक्रिया के माध्यम से, जो अंतःक्रिया इन शक्तियों को उत्पन्न करती है, वह आदान-प्रदान क्रिया कहलाती है। सार्वभौमिक मूल ऊर्जा और आदान-प्रदान क्रिया से उत्पादित बल के बीच, कारण और प्रतिफल, आंतरिक और बाह्य, और कर्ता साझी और पात्र साझी के पारस्परिक संबंध होते हैं। सार्वभौमिक मूल ऊर्जा लंब बल है, और जो शक्तियाँ आदान-प्रदान क्रिया से उत्पन्न होती हैं वे क्षैतिज शक्तियाँ हैं।

आइये हम सार्वभौमिक मूल ऊर्जा के संबंध में परमेश्वर और उसकी सृष्टि और आदान-प्रदान क्रिया की सविस्तार जाँच करें। परमेश्वर की सार्वभौमिक मूल ऊर्जा उसके अनन्त द्वैत अभिलक्षणों को पारस्परिक संबंध के लिए सामान्य आधार बनाने का आदेश देती है। फिर वह आदान-प्रदान क्रिया में संबद्ध हो जाते हैं। इस आदान-प्रदान क्रिया से उत्पन्न हुई शक्तियों के आधार पर द्वैत अभिलक्षण उनके अनंत आदान-प्रदान के लिये नींव डालते हैं। यह परमेश्वर के अस्तित्व का आधार है, इस आधार पर परमेश्वर नित्य जीवित रहता है और विश्व को रचने और बनाए रखने के लिये आवश्यक शक्तियाँ उत्पन्न करता है।

निर्मित विश्व की हर वस्तु के द्वैत अभिलक्षण जो हर एक प्राणी को बनाए रखते हैं, सामान्य आधार स्थापित करने के लिये सार्वभौमिक मूल ऊर्जा के द्वारा सशक्त होते हैं। तब वे आदान-प्रदान क्रिया में संबद्ध होते हैं। आदान-प्रदान क्रिया के आधार पर जो शक्तियाँ उत्पन्न होतीं हैं, वह द्वैत अभिलक्षणों के निरंतर पारस्परिक संबंध के लिये नींव डालतीं हैं। यह नींव प्रत्येक प्राणी के अस्तित्व के लिये आधार बन जाती है जिसके सहारे प्राणी परमेश्वर के पात्र साझी बन जाते हैं और अपने सतत अस्तित्व के लिये आवश्यक शक्तियाँ पैदा सकते हैं।

उदाहरण के तौर पर, जब ऋणावेश सूक्ष्माणु नाभिक के गिर्द जमा होते हैं और विद्युत चुम्बकीय

अंत:क्रिया में संबद्ध होते हैं, जो कि एक प्रकार की आदान-प्रदान क्रिया है, तब परमाणु अस्तित्व में आते हैं। जब धनात्मक आयन और ऋणात्मक आयन आपस में आदान-प्रदान क्रिया में संबद्ध होते हैं वे अणुकणिका बनाते हैं और रासायनिक प्रतिक्रिया उत्पन्न करते हैं। धनात्मक और ऋणात्मक विद्युत भार के बीच आदान-प्रदान क्रिया के आधार पर ही बिजली का सारा माजरा घटित होता है।

पौधों में जाईलम और पोषवाह के बीच पोषक तत्वों का संचलन एक प्रकार की आदान-प्रदान क्रिया है जो उनके जीवन की क्रिया को सक्रिय रखती है, और वृद्धि को बढ़ावा देती है। पौधों में पुंकेसर और गर्भकेसर के बीच आदान-प्रदान क्रिया पुनरुत्पादन का विशेष साधन है। पशु, नर और मादा के बीच आदान-प्रदान के द्वारा प्रजनन करते हैं और अपनी उपजाति बरकरार रखते हैं। पौधे और पशु आक्सीजन और कार्बन डायऔक्सईड के आदान-प्रदान क्रिया के द्वारा, और पुष्पों और मधुमक्खियों के बीच सहयोग से आपस में मिल जुल कर रहते हैं।

जहाँ तक खगोलीय पिंड का सवाल है, सूर्य और नक्षत्रों के आदान-प्रदान क्रिया के आधार पर सौर-मंडल का अस्तित्व है। उनके विभिन्न चलन विश्व को आकार देते हैं। पृथ्वी और चंद्रमा भी अपने परिक्रमण और परिभ्रमण के आदान-प्रदान क्रिया के द्वारा अपना ग्रहपथ निश्चित करते हैं।

मनुष्य का शरीर रक्तवाहिनी और नाड़ी, साँस लेना और साँस छोड़ना, अनुकंपी तन्त्रिका तंत्र और परानुकंपी तन्त्रिका तंत्र के बीच आदान-प्रदान क्रिया के द्वारा अपना जीवन बनाए रखता है। मन और शरीर के बीच आदान-प्रदान क्रिया के द्वारा मनुष्य कार्य करता है जिससे वह अपने जीवन के उद्देश्य को आगे बढ़ाता है। आदान-प्रदान क्रिया परिवार में पति और पत्नी के बीच, समाज में लोगों के बीच, देश में सरकार और नागरिकों के बीच और विशेष तौर पर दुनिया के देशों के बीच शांति और मेल मिलाप बनाए रखने के लिये आवश्यक है।

कोई भी व्यक्ति चाहे कितना अधर्मी क्यों ना हो, उसके विवेक की शक्तियाँ, जो उसे भलाई के जीवन की ओर खींचती, उसकी अंतरात्मा में हमेशा क्रियाशील रहती हैं। यह सब मनुष्यों के लिये, हर उम्र के और हर जगह के लोगों के लिये सच है। विवेक की शक्तियों को कोई भी दबा नहीं सकता, जो बड़े ज़ोर से सचेत मन की जानकारी के बिना कार्य करतीं हैं। जैसे ही कोई अधर्म का काम करता है, उसे तुरन्त विवेक के कष्ट का भान होता है। यदि पतित लोगों में विवेक का कार्य नहीं होता तो परमेश्वर की पुनरुद्धार की योजना का कार्य असंभव होता। विवेक की यह शक्ति किस प्रकार उत्पन्न होती है? चूँकि सब शक्तियाँ आदान-प्रदान क्रिया के द्वारा उत्पन्न होतीं हैं, विवेक अपने आप वह सब शक्तियाँ उत्पन्न नहीं कर सकता जो उसके क्रियाशील होने के लिये आवश्यक हैं। कहने का मतलब यह हुआ कि विवेक उसी समय क्रियात्मक होता है जब वह किसी कर्ता साझी के साथ सामान आधार बना लेता है और फिर उसके साथ आदान-प्रदान क्रिया शुरू करता है। हमारे विवेक का सर्वश्रेष्ठ कर्ता साझी परमेश्वर है।

मनुष्य के पतन ने, तथ्यत:, परमेश्वर से हमारा संबंध काट दिया है। परमेश्वर के साथ एकात्मकता प्राप्त करने के बजाए हमारे पूर्वजों ने शैतान से पारस्परिक संबंध जोड़ लिया और उसके साथ एकजुट हो गए। यीशु मसीह परमेश्वर का इकलौता पुत्र था; उसने परमेश्वर के साथ अचूक आदान-प्रदान क्रिया

निभा कर एकात्मकता प्राप्त की थी। जब हम यीशु के साथ उचित पारस्परिक संबंध बनाकर एक हो जाते हैं तब हम परमेश्वर की दी हुई मूल प्रकृति वापस प्राप्त कर सकते हैं, और परमेश्वर के साथ आदान-प्रदान क्रिया स्थापित करके उस के साथ एक हो सकते हैं। इस प्रकार यीशु पतित लोगों का बिचवई बनकर काम करता है, वह हमारा मार्ग, सत्य और जीवन है। यीशु प्रेम और बलिदान के साथ आया था और अपना सब कुछ मनुष्यों को देने के लिये आया था, यहाँ तक कि उसने अपना जीवन भी अर्पण कर दिया। यदि हम उसकी तरफ विश्वास के साथ मुड़ें तो हम नष्ट नहीं होंगे परन्तु अनंत जीवन पाएंगे।[१८]

ईसाई मत प्रेम का धर्म है। वह प्रेम और बलिदान के द्वारा लोगों के बीच आदान-प्रदान क्रिया का क्षैतिज संबंध पुनःस्थापित करने के लिए पुनरुद्धार का मार्ग खोलता है। प्रेम की इस क्षैतिज नींव पर परमेश्वर के साथ आदान-प्रदान क्रिया का लंब संबंध बहाल करने का मार्ग खुलता है। वास्तव में यह यीशु मसीह के कार्य और शिक्षा का मुख्य उद्देश्य था। उदाहरण की तौर पर यीशु ने कहा:

> दोष मत लगाओ कि तुम पर भी दोष न लगाया जाए। क्योंकि जिस प्रकार तुम दोष लगाते हो उसी प्रकार तुम पर भी दोष लगाया जाएगा; और जिस नाप से तुम नाते हो उसी नाप से तुम्हारे लिये भी नापा जाएगा।—मत्ती ६:१७
>
> इस कारण जो कुछ तुम चाहते हो कि मनुष्य तुम्हारे साथ करें, तुम भी उनके साथ वैसा ही करो; क्योंकि व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं की शिक्षा यही थी।—मत्ती ७:१२
>
> जो मनुष्यों के सामने मुझे मान लेगा, उसे मैं स्वर्गीय पिता के सामने मान लूँगा।—मत्ती १०:३२
>
> जो भविष्यद्वक्ता को भविष्यद्वक्ता जानकर ग्रहण करे, वह भविष्यद्वक्ता का बदला पाएगा, और जो धर्मी को धर्मी जानकर ग्रहण करे वह धर्मी का बदला पाएगा।—मत्ती १०:४१
>
> जो कोई इन छोटों में से एक को मेरा चेला जान कर केवल एक कटोरा ठंडा पानी पिलाएगा, मैं तुम से सच कहता हूँ वह किसी रीति से अपना प्रतिफल न खोएगा।—मत्ती १०:४२

२.३ चार-दशा-आधार जो आदि-विभाजन-संयोजन क्रिया के द्वारा तीन-पात्र-प्रयोजन साधित करता है

२.३.१ आदि-विभाजन-संयोजन क्रिया

परमेश्वर की सृजन की प्रक्रिया उस समय शुरू होती है जब परमेश्वर के अंदरूनी द्वैत अभिलक्षण सार्वभौमिक मूल ऊर्जा से प्रेरित होकर सामान्य आधार बनाते हैं। फिर जैसे ही वे आदान-प्रदान क्रिया शुरू करते हैं, वे एक बल उत्पन्न करते हैं जो प्रजनन का कार्य करता है। यह बल द्वैत अभिलक्षणों को विभिन्न वास्तविक पात्र साझियों के रूप में व्यक्त करता है, प्रत्येक परमेश्वर को अपना केन्द्र बना कर

[१८] यूहन्ना ३:१६

उससे संबंध करते हैं। परमेश्वर के यह पात्र साझी, एक दूसरे के लिए कर्ता साझी और पात्र साझी का रूप धारण करते हैं, तब वे सार्वभौमिक मूल ऊर्जा से प्रेरित होकर सामान्य आधार बनाते हैं और आदान-प्रदान क्रिया में व्यस्त हो जाते हैं। तत्पश्चात, वे आपस में एक दूसरे के साथ सामंजस्यपूर्ण संयोजन से जुड़ जाते हैं, परिणाम स्वरूप वे परमेश्वर के लिये एक नए पात्र साझी को जन्म देते हैं। इस सम्पूर्ण प्रक्रिया—जिसमें परमेश्वर से, जो आदि है, दो सत्व अलग, अलग-अलग अभिव्यक्त होते हैं और फिर जुड़ कर एक हो जाते हैं—यह *आदि-विभाजन-संयोजन क्रिया* कहलाती है।

२.३.२ तीन-पात्र-प्रयोजन

आदि-विभाजन-संयोजन क्रिया के फल स्वरूप, चार स्थान तैयार होते हैं: आदि जो केन्द्र में है, कर्ता साझी और पात्र साझी (दो पृथक वास्तविक वस्तुएं जो आदि के द्वैत अभिलक्षणों के रूप में पात्र साझी हैं), और उनका संयोजन। इन चारों स्थानों में से कोई भी कर्ता साझी का स्थान अपना सकता है और बाकी तीन स्थान उसके पात्र साझी के स्थान पर हो जाते हैं, इस प्रकार तीन पात्र साझियों की सहभागिता बनती है। जब चारों में से प्रत्येक कर्ता साझी के रूप में होकर कार्य करते हैं और दूसरों के साथ आदान-प्रदान क्रिया में तीन एक के चारों ओर घूमते हैं तो वे *तीन-पात्र-प्रयोजन* परिपूर्ण करते हैं।

२.३.३ चार-दशा-आधार

जब आदि-विभाजन-संयोजन क्रिया के द्वारा, आदि, कर्ता साझी और पात्र साझी जो आदि से निकलते हैं, और उनका संयोजन, सब मिलकर तीन-पात्र-प्रयोजन पूरा करते हैं तब *चार-दशा-आधार* स्थापित होती है।

चार दशा आधार संख्या चार की जड़ है। यह संख्या तीन की भी जड़ है, क्योंकि वह तीन-पात्र-प्रयोजन की पूर्ति है। चार-दशा-आधार परमेश्वर, पति, पत्नी, और बच्चों के द्वारा साधित की जाती है; यह सब आदि-विभाजन-संयोजन क्रिया के तीन चरणों को पूरा करते हैं। इस प्रकार, चार-दशा आधार तीन-चरण सिद्धांत की जड़ है। इसके अतिरिक्त, चार-दशा-आधार के चार स्थानों में से प्रत्येक स्थान तीन-पात्र-प्रयोजन को पूरा करने के लिए, तीन पात्र साझी लेते हैं। कुल मिला कर बारह पात्र साझी होते हैं; इस तरह यह संख्या बारह की भी जड़ है। चार-दशा-आधार अच्छाई की मूलभूत नींव है। यह परमेश्वर की सृष्टि के उद्देश्य की पूर्ति है। यह सभी प्राणियों के जीवन की मूलभूत नींव है, उनके अस्तित्व के लिये सारी शक्तियाँ प्रदान करती हैं और उनमें परमेश्वर का निवास संभव करतीं हैं। इसलिये, चार-दशा-आधार परमेश्वर की सृष्टि का अनंत लक्ष्य है।

२.३.४ चार-दशा-आधार के अस्तित्व की विधि

सारे सत्व जिन्होंने आदि-विभाजन-मिलन के द्वारा तीन-पात्र-प्रयोजन कार्याविन्त किया है वे चार-दशा-आधार साकार करते हैं, और वृत्तीय (अंडाकार) या गोलाकार पथ पर घूमते हैं। फलस्वरूप वे तीन

आयामों में रहते हैं। आइये हम इस बात की जाँच करें कि इस का कारण क्या है।

आदि-विभाजन-संयोजन क्रिया के द्वारा परमेश्वर के द्वैत अभिलक्षण प्रक्षेपित होते हैं, जिनसे दो विभिन्न वास्तविक पात्र साझी बनते हैं, जो एक दूसरे को कर्ता साझी और पात्र साझी के रूप में प्रभावित करते हैं। पात्र साझी, कर्ता साझी के साथ सामान्य आधार बनाने के लिए प्रतिक्रिया दिखाता है और कर्ता साझी के गिर्द घूम कर आदान-प्रदान-क्रिया आरम्भ करता है। इस प्रकार वे देने वाली शक्ति (अपकेन्द्रीय बल) और लेने वाली शक्ति (केन्द्राभिमुख शक्ति) के द्वारा आपस में संतुलन बनाए रखते हैं, पात्र साझी, कर्ता साझी के गिर्द गोल गति में घूमता है, इस तरह वे एक साथ मिल कर सामंजस्य स्थापित करते हैं और एक जुट हो जाते हैं। उसी प्रकार, कर्ता साझी परमेश्वर का पात्र साझी बनता है और परमेश्वर के गिर्द घूमकर परमेश्वर के साथ एकात्मकता प्राप्त करता है। जब पात्र साझी, कर्ता साझी के साथ बिलकुल एक हो जाता है तब उनका संयोजन परमेश्वर के सामने एक नए पात्र साझी का रूप लेता है जो परमेश्वर के द्वैत अभिलक्षण के सदृश्य होता है। इसके अतिरिक्त, किसी भी पात्र साझी को परमेश्वर के सामने पात्र साझी के रूप में खड़ा होने के लिए अपने कर्ता साझी के साथ एकात्म होना चाहिए।

कर्ता साझी और पात्र साझी के इस संयोजन में, चूँकि कर्ता साझी और पात्र साझी दोनों के अपने आप में द्वैत अभिलक्षण होते हैं, यह उसी आदान-प्रदान क्रिया के सिद्धांत के अनुसार अपनी वृत्ताकार गति में रहते हैं। इस प्रकार हम आदान-प्रदान क्रिया की वृत्ताकार गति कर्ता साझी और पात्र साझी दोनों के अंदर भी देखते हैं, जो अपने संयोजन के अन्दर एक साथ एक और बड़ी वृत्ताकार गति में संबद्ध होते हैं। यद्यपि, कभी, कभी ऐसा भी होता है जब कर्ता साझी और पात्र साझी के बीच दो स्तरों पर वृत्ताकार गति के एक ही क्षेत्र में परिक्रमा होती है, वह इसलिये क्योंकि आम तौर पर कर्ता साझी के गिर्द के भ्रमण का कोण निरंतर बदलता रहता है और यह वृत्तीय गति अंडाकार गति बन जाती है। संक्षिप्त में, सभी सत्व जिन्होंने चार-दशा-आधार पूरा कर लिया हो वह वृत्तीय और अंडाकार गति से चलते हैं, और इस प्रकार उनके अस्तित्व का रूप तीन आयामों वाला बन जाता है।

आइये हम उदाहरण की तौर पर सौर मण्डल को लेते हैं। वह ग्रह, जो सूर्य के पात्र साझी के स्थान पर होते हैं, प्रत्येक सामान्य आधार बना कर सूर्य के साथ अपकेन्द्रीय बल और केन्द्राभिमुख शक्ति के द्वारा आदान-प्रदान क्रिया करते हैं। सूर्य के चारों ओर गोलीय गति में गर्दिश करने से सूर्य और ग्रह मण्डल एक साथ सामंजस्य और एका प्राप्त करते हैं और इस प्रकार वे सौर मण्डल बनाते हैं। उसी समय ग्रह पृथ्वी, द्वैत अभिलक्षण के संयुक्त पिंड के रूप में, अपनी धुरी पर घूमती है। यह बात सूर्य और शेष सभी ग्रहों के लिये भी सच है, वे सब सतत अपनी धुरी पर घूमते रहते हैं, क्योंकि वे भी द्वैत अभिलक्षणों के संयुक्त पिंड हैं। सौर मण्डल में यह परिक्रमा जो आदान-प्रदान क्रिया के कारण होती है वे ठीक एक ही क्षेत्र को घेर कर नहीं रखतीं। अथवा, ग्रह पथ भ्रमण के विभिन्न कोण होने के कारण सौर मण्डल अपनी गोलीय गति तीन आयाम में प्रदर्शित करता है। उसी प्रकार सारे खगोलीय पिंडों का अस्तित्व, अपने गोलाकार और अंडाकार गति के बल पर, तीन आयामों में होता है। जब अनगिनत खगोलीय पिंड एक दूसरे के साथ आदान-प्रदान क्रिया में व्यस्त होते हैं तो वह विश्व को आकार देते हैं। इसी नियम के आधार पर विश्व तीन आयामों में विद्यमान है और उसके सभी तत्व वृत्तीय गति में व्यस्त रहते हैं।

सृष्टि २.३.४

जब एक ऋणावेश सूक्ष्माणु (इलेक्ट्रोन) धनावेश प्राणु (प्रोटोन) के साथ सामान्य आधार बना लेती है और वे आदान-प्रदान क्रिया में व्यस्त हो जाते हैं, तो वह धनावेश प्राणु के चारों ओर वृत्तीय गति में चक्कर लगाती है। इस प्रकार, वे आपस में मिल जाते हैं और अणु जल-जनक वायु (हाइड्रोजन) का निर्माण करते हैं। ऋणावेश सूक्ष्माणु और धनावेश प्राणु प्रत्येक में अपने द्वैत अभिलक्षण होते हैं जो उन्हें सतत चक्कर लगाने में व्यस्त रखते हैं। इस प्रकार ऋणावेश सूक्ष्माणु और धनावेश प्राणु के बीच आदान-प्रदान क्रिया के कारण जो वृत्तीय गति निकलती है वह एक ही क्षेत्र में चक्कर लगाने के लिये सीमित नहीं रहती, परन्तु वह निरन्तर अपने चक्कर का कोण बदलती रहतीं हैं। उसी तरीके से, धनात्मक और ऋणात्मक ध्रुव के बीच चुंबकीय बल के कारण बिजली से प्रभारित कण (पार्टिकल) गोलीय गति में घूमते हैं।

उदाहरण की तौर पर आइये हम मनुष्य पर ग़ौर करते हैं। मन का पात्र साझी होने के नाते देह, मन के साथ सामान्य आधार बनाती है और उसके साथ आदान-प्रदान क्रिया में व्यस्त रहती है। आलंकारिक रूप से देखने से, शरीर मन के गिर्द चक्कर लगाता है और उसके साथ पूरी तरह से एक होकर रहता है। यदि और जब मन परमेश्वर का पात्र साझी बन कर उसके गिर्द चक्कर लगाने लगे और परमेश्वर के साथ एकात्म हो जाए, जैसे शरीर मन के साथ एक होता है, तब वह व्यक्ति परमेश्वर के द्वैत अभिलक्षणों के सदृश्य हो जाता है और इस प्रकार वह परमेश्वर का मूर्त रूप में पात्र साझी बन जाता है। और तभी वह व्यक्ति सृष्टि का उद्देश्य पूर्ण करता है। मन और शरीर दोनों के अपने-अपने भी द्वैत अभिलक्षण होते हैं, इसलिये वे भी अपने अंदर निरंतर गतिशील रहते हैं। इस प्रकार जो वृत्तीय गति मन और शरीर के आदान-प्रदान से उत्पन्न होती है वह परमेश्वर के गिर्द चक्कर का कोण लगातार बदलती रहती है और गोलीय गति बन जाती है। जो लोग सृष्टि का उद्देश्य पूर्ण कर लेते हैं वह तीन आयामों में रहते हैं और अपना जीवन परमेश्वर पर केन्द्रित गोलीय-संबंध में व्यतीत करते हैं। इसी कारण वे अमूर्त संसार पर भी प्रभुत्व प्राप्त करते हैं।[१९]

जब एक ही क्षेत्र में कर्ता साझी और पात्र साझी की वृत्तीय गति तीन आयामी कक्षा में गोलाकार गति बन जाती है, तब विश्व की गतिशीलता और रचनात्मकता प्रगट होती है। विविध रूप में हर एक कक्षा की दूरी में घटबढ़, उसकी बनावट, स्थिति, दिशा, कोण, बल और रफ़्तार, अपार विविधता में सृष्टि का सौन्दर्य प्रगट करती है।

जिस प्रकार हर सत्व में आंतरिक प्रकृति और बाह्य रूप होता है, वैसे ही एक प्रकार की गोलीय गति होती है जो आंतरिक स्वभाव से संबद्ध रहती है, और एक प्रकार की गोलीय गति होती है जो बाह्य रूप से संबद्ध रहती है। उसी प्रकार, गति का एक केन्द्र होता है जो आंतरिक स्वभाव से संबद्ध होता और एक जो बाह्य रूप से संबद्ध होता है। इन दोनों केन्द्रों के बीच वैसा ही संबंध होता है जैसा आंतरिक प्रकृति और बाह्य रूप के बीच होता है।

इन सब गोलीय गतियों का अंतिम केन्द्र क्या है? मनुष्य सभी सृष्ट वस्तुओं का केन्द्र है, जो

[१९] सृष्टि ६.२

परमेश्वर के द्वैत अभिलक्षण की प्रतीकात्मक आकृति में उसके पात्र साझी हैं। परमेश्वर मनुष्य का केन्द्र है, जो छवि में परमेश्वर के पात्र साझी होने के लिए उसके स्वरूप में रचे गए हैं। फलतः, विश्व की सारी गोलीय गति का अंतिम केन्द्र परमेश्वर ही है।

इस पर आगे थोड़ा और ध्यान दें। परमेश्वर के हर एक पात्र साझी में एक कर्ता साझी और एक पात्र साझी होता है। उनके संबंध का केन्द्र कर्ता साझी होता है, इस प्रकार कर्ता साझी और पात्र साझी के संयोजन के बीच का केन्द्र भी कर्ता साझी होता है। चूँकि परमेश्वर कर्ता साझी का केन्द्र है, तो वह इस संयोजन का भी अंतिम केन्द्र है। जैसा कि ऊपर यह चर्चा की गई है कि परमेश्वर के तीन वास्तविक पात्र साझी (कर्ता साझी, पात्र साझी और इन का संयोजन) आपस में भी एक दूसरे के साथ सामान्य आधार बनाते हैं। जब तीनों में से प्रत्येक केन्द्रीय स्थान ग्रहण करते हैं, और परमेश्वर के साथ, जो उनका अंतिम केन्द्र है, और एक दूसरे के साथ आदान-प्रदान क्रिया के द्वारा एक हो जाते हैं, तब वे तीन-पात्र-प्रयोजन पूरा करते हैं और चार-दशा-आधार की नींव डालते हैं। इस प्रकार, परमेश्वर ही चार-दशा-आधार का अंतिम केन्द्र है।

हर वस्तु जिसने इस प्रकार से चार-दशा-आधार स्थापित की है वह सत्य के व्यक्तिगत मूर्त रूप हैं। जैसे कि पहले कहा गया है कि सत्य के व्यक्तिगत मूर्त रूप, मोटे तौर पर (मनुष्य) सत्य के छवि मूर्त रूप में और (शेष सारी सृष्टि) सत्य के प्रतीक मूर्त रूप में विभाजित किए गए हैं। विश्व में अनगिनत सत्य के व्यक्तिगत मूर्त रूप हैं, जो यथाक्रम, सब से नीचे के स्तर से लेकर सबसे ऊपर के स्तर तक, एक दूसरे के साथ परस्पर संबंधित हैं। उनके बीच मनुष्य सर्वश्रेष्ठ स्तर पर है।

सत्य के व्यक्तिगत मूर्त रूप एक दूसरे के गिर्द गोलीय आकार में घूमते हैं, जो नीचे के स्तर पर हैं वे पात्र साझी के रूप में ऊँचे स्तर वालों के गिर्द घूमते हैं। इस प्रकार किसी भी गोलीय गति का केन्द्र ऊँचे स्तर वाला सत्य का व्यक्तिगत मूर्त रूप होता है जो कर्ता साझी के रूप में कार्य करता है। सत्य के अनगिनत प्रतीकात्मक व्यक्तिगत मूर्त रूप नीचे स्तर से ऊँचे स्तर तक परस्पर संबद्ध होते हैं। सर्वोच्च केन्द्र मनुष्य हैं, जो छवि के रूप में सत्य के व्यक्तिगत मूर्त रूप हैं।

अब आईये हम मनुष्य की केन्द्रीयता पर ध्यान देते हैं। विज्ञान के अनुसार बुनियादी द्रव्य के मूलभूत अंग मूल कण होते हैं, और यह कि वे ऊर्जा से बने होते हैं। यदि हम सत्य के व्यक्तिगत मूर्त रूप के अस्तित्व के उद्देश्य पर ध्यान देते हैं, जिनसे विभिन्न स्तर पर भौतिक जगत का निर्माण होता है, तो हम अनुमान लगा सकते हैं: कि ऊर्जा का अस्तित्व इसलिये है कि वह कण का निर्माण करे, कण का अस्तित्व परमाणु बनाने के लिये, परमाणु का अणु बनाने के लिये, अणु का द्रव्य और द्रव्य का अस्तित्व विश्व में सृष्टि के समस्त व्यक्तिगत सत्व के निर्माण के लिये है। उसी प्रकार, ऊर्जा का कार्य कण बनाने के लिये है। कण का कार्य परमाणु, परमाणु का कार्य अणु, अणु का कार्य द्रव्य और द्रव्य का उद्देश्य विश्व का निर्माण करने के लिये है।

विश्व का उद्देश्य क्या है? उसका केन्द्र क्या है? इन दोनों प्रश्नों का उत्तर मनुष्य के अतिरिक्त और कुछ नहीं हो सकता। इसी लिये, मनुष्य की सृष्टि करने के पश्चात परमेश्वर ने उन्हें आदेश दिया कि वे

पृथ्वी पर प्रभुता करें।[२०] यदि विश्व की क़दर करने वाला मनुष्य ना होता, तो वह दर्शकों के बिना एक अजायबघर की तरह होता। जो वस्तुएं अजायबघर में प्रदर्शन के लिये रखी जातीं हैं उनका यथार्थ ऐतिहासिक मूल्य तब ही माना जाता है जब लोग उसकी कदर करें और उसे संजोए। मनुष्य से उनका संबंध ही उन्हें उनके अस्तित्व को महत्व देता है। यदि उन्हें पूछने वाला कोई ना हो तो उनके अस्तित्व का क्या अर्थ है? यही विश्व के लिये भी कहा जा सकता है, मनुष्य जिसका स्वामी है।

जब मनुष्य, प्रकृति के स्रोत और द्रव्य के लक्षण की खोज निकाल लेते हैं, और जल, धरती, वायु के पौधों, पशुओं और आकाश के सितारों को पहचान कर उनका वर्गीकरण करते हैं तो वे यह जान जाते हैं कि सृष्टि की विभिन्न वस्तुएं सामान्य उद्देश्य से परस्पर संबंध बनातीं हैं। जब वे मनुष्य के शारीरिक प्रकार्य को बनाए रखने के लिए उन आवश्यक तत्वों को पचा कर उसके शरीर में आत्मसात हो जातीं हैं, और जब वे लोगों के लिये सुखद वातावरण बनाने में भाग लेतीं हैं तब उनका सामान्य उद्देश्य पूर्ण हो जाता है। इन सब और दूसरे और भी अर्थोपाय में, मनुष्य सृष्ट विश्व का बाह्य आकार होने के नाते, उसका केन्द्र है।

इसके अतिरिक्त, लोग विश्व से उसका आंतरिक केन्द्र होने की हैसियत से संबंध रखते हैं। यह संबंध जिसकी चर्चा ऊपर की गई है, जबकि भौतिक संबंध हैं, हम इसे मानसिक या आत्मिक संबंध समझ सकते हैं। मनुष्य का शरीर जबकि पूरा का पूरा द्रव्य है फिर भी पूर्ण रूप से भावना, बुद्धि और मनोबल से दैहिक प्रतिक्रिया करता है। यह तथ्य इस बात को सिद्ध करता है कि द्रव्य के अंदर कुछ ऐसे तत्व हैं जो भाव, बुद्धि और मनोबल को जानते-बूझते हैं—यह, तत्व पदार्थ का आंतरिक स्वभाव होता है। यही कारण है कि विश्व की हर वस्तु भिन्न, भिन्न कोटि में, मनुष्य की भावना, बुद्धि और मनोबल से प्रतिक्रिया करती है। हम प्रकृति के सौन्दर्य को देख कर मगन-मुग्ध हो जाते हैं, और उसके रहस्यमय आनन्द में खो जाने का अनुभव करते हैं। हम ऐसा अनुभव इसलिए करते हैं, क्योंकि हम प्राकृतिक संसार में सारी वस्तुओं के आंतरिक स्वभाव का केन्द्र हैं। इस प्रकार, मनुष्य विश्व का केन्द्र होकर सृजित किया गया है, और वह स्थान जहाँ परमेश्वर और मनुष्य बिल्कुल एक हो जाते हैं वह जगत का केन्द्र है।

आइये हम एक दूसरे दृष्टिकोण से देखें कि मनुष्य किस प्रकार जगत का, जिसमें दोनों भौतिक और आत्मिक दुनिया हैं, केन्द्र है। प्रत्येक मनुष्य जगत के समस्त तत्वों का मूर्त रूप है। तथापि, जैसे कि पहले चर्चा की गई है, जगत की हर वस्तु बड़े पैमाने पर दो भागों में, कर्ता साझी और पात्र साझी के रूप में बाँटी जा सकती है। यदि आदम, हमारा पहला पूर्वज, सिद्धि प्राप्त कर लेता तो वह सृष्टि के समस्त कर्ता तत्वों का मूर्त रूप बन जाता। यदि हव्वा सिद्धि प्राप्त कर लेती तो वह सृष्टि की सभी पात्र तत्वों की मूर्त रूप बन जाती। परमेश्वर ने आदम और हव्वा की सृष्टि प्राकृतिक दुनिया पर प्रभुता करने के लिए की। पूर्णता की ओर दोनों के एक साथ आगे बढ़ने के बाद, आदम प्रत्येक कर्ता तत्वों का राजा बन जाता और हव्वा समस्त पात्र तत्वों की रानी बन जाती। तब, यदि वह पति और पत्नी बनते तो वह केन्द्र बनकर अखिल विश्व पर, जिसमें कर्ता साझी और पात्र साझी हैं, राज्य कर सकते थे।

---

[२०] उत्पत्ति १:२८

मनुष्य की सृष्टि अखिल जगत के सामंजस्य का केन्द्र बनने के लिए की गई है। यदि आदम और हव्वा ने पूर्णता प्राप्त कर ली होती और पति और पत्नी बन कर एक हो जाते तो, इसका अर्थ यह होता कि सभी प्राणियों के द्वैत अभिलक्षणों के दो केन्द्र आपस में एक हो जाते। यदि आदम और हव्वा सुमेल से चलते और एकता प्राप्त कर लेते तो सारा जगत अपने द्वैत अभिलक्षणों के साथ तालमेल के साथ नाचता। वह स्थान जहाँ आदम और हव्वा पति और पत्नी के रूप में शरीर और हृदय में पूर्णतः एक होते हैं, उस स्थान में परमेश्वर जो प्रेम देनेवाला कर्ता साझी है, और मनुष्य जो उसका सौंदर्य लौटाने वाला पात्र साझी है दोनों एक हो जाते। यह अच्छाई का केन्द्र है जहाँ सृष्टि का उद्देश्य परिपूर्ण होता है। यहाँ हमारा पिता परमेश्वर करीब आकर अपने सिद्ध बच्चों के अंदर रहता, और अनन्त काल तक शांति से आराम करता। अच्छाई का यह केन्द्र परमेश्वर के अनन्त प्रेम का पात्र साझी है, जहाँ परमेश्वर अनन्त काल तक आनन्द का अनुभव करने के लिये प्रेरित हो सकता। यह वह स्थान है जहाँ परमेश्वर का वचन मूर्त रूप धारण करता और परिपूर्ण होता। यह सत्य और मूल मन का केन्द्र है जो हमें सृष्टि के उद्देश्य का अनुसरण करने के लिये मार्गदर्शन करता है।

जब, पूर्ण पुरुष और स्त्री परमेश्वर पर केन्द्रित होकर पति और पत्नी बनते हैं और चार-दशा-आधार स्थापित करते हैं, परिणाम स्वरूप, अखिल जगत संगठित उद्देश्य के साथ वृत्तीय गति पर चलता है। मनुष्य के पतन के कारण, दुर्भाग्यवश, जगत अपना केन्द्र खो बैठा। इसी कारण, संत पौल ने लिखा है, कि सारी सृष्टि परमेश्वर की संतानों के लिये पीड़ा से कराहती और तड़पती है।[२१] सृष्टि ऐसे लोगों की प्रतीक्षा करती है जिन्होंने अपना मौलिक आचरण सुधार लिया है, ताकि वे उसका केन्द्र बन सकें।

२.४ परमेश्वर की सर्वविद्यमानता

हमने यह सीखा है कि चार-दशा-आधार, जो आदि-विभाजन-संयोजन के द्वारा तीन-कर्म-प्रयोजन के आधार पर बनता है, गोलाकार गति से निकल कर परमेश्वर के गिर्द घूमता हुआ परमेश्वर के साथ मिलकर एक हो जाता है। यह सभी वस्तुओं का मूल आधार है जिस पर वे परमेश्वर के शासन से वह सारी शक्तियाँ प्राप्त करते हैं जो जीवन के लिये आवश्यक है। वह संसार जहाँ परमेश्वर का सृष्टि का उद्देश्य पूर्ण हो गया है, प्रत्येक व्यक्ति परमेश्वर की आंतरिक प्रकृति और बाह्य रूप का मूर्त रूप बनकर परमेश्वर के शासन की नींव डालने के लिए वृत्तीय गति आरंभ करता है। इस प्रकार परमेश्वर सर्वव्यापी होता है।

२.५ जीवन का प्रजनन

जीवित वस्तुओं को उनके अपने वर्ग को बढ़ाने के लिये प्रजनन करना आवश्यक है, और यह प्रजनन आदि-विभाजन-संयोजन द्वारा अच्छी अंत:क्रिया के आधार पर होता है। उदाहरण की तौर पर पौधे, बीज पुंकेसर और गर्भकेसर के साथ फूल बन कर विकसित होते हैं; सेचन द्वारा वे फिर अपने बीज

[२१] रोमियों ८:१९-२२

उत्पन्न करते हैं और अपने वर्ग के पौधे पैदा करते हैं। नर और मादा पशु परिपक्व हो कर संगत करते हैं और बच्चे पैदा करते हैं। पौधों और पशुओं में सभी कोशिकाएं (सेल) आदान-प्रदान क्रिया के द्वारा विभाजित होतीं हैं।

जब मन और शरीर आपस में आदान-प्रदान क्रिया करते हैं और शरीर मन की इच्छानुसार कार्य करता है, वह व्यक्ति उद्देश्य पूर्ण जीवन जीता है। यह व्यक्ति तब अपने मन चाहे लोगों को आकर्षित करता है। और जब यह सब एक साथ मिलकर लाभकारी ढंग से कार्य करते हैं तब उनका गुट बढ़ता है। यह भी कहा जा सकता है कि सृष्टि का उद्देश्य पूरा करने के लिए विश्व का निर्माण, परमेश्वर की मूल आंतरिक प्रकृति और बाह्य रूप की असंख्य अभिव्यक्तियों के आदान-प्रदान क्रिया के गुणन द्वारा हुआ है।

२.६ कारण कि सब प्राणी द्वैत अभिलक्षणों से बने हैं

किसी भी प्राणी के अस्तित्व के लिये, ऊर्जा का होना आवश्यक है, और ऊर्जा केवल आदान-प्रदान क्रिया के द्वारा ही उत्पन्न होती है। तथापि, साझी के बिना आदान-प्रदान संभव नहीं है। जीवित रहने की आवश्यक शक्ति के उत्पादन के लिये किसी भी प्राणी में द्वैत अभिलक्षण होना ही चाहिये, एक कर्ता साझी और एक पात्र साझी, जो आदान-प्रदान क्रिया में व्यस्त हो सकें।

कोई गति सीधी रेखा में सदा के लिये स्थिर नहीं रह सकती। किसी भी वस्तु की प्रकृति को अनन्त होने के लिये उसे गोलाकार गति में चलना पड़ता है, और कर्ता साझी और पात्र साझी को गोल गति में घूमने के लिये आदान-प्रदान क्रिया करना आवश्यक है। यह परमेश्वर के लिये भी यथार्थ है; द्वैत अभिलक्षणिक होने के कारण ही वह नित्य रह सकता है। परमेश्वर की सृष्टि को भी, उसके नित्य स्वभाव के सदृश्य और उसका अनन्त पात्र साझी होने के लिये, उसी तरह से द्वैत अभिलक्षणिक होना चाहिये। इसी प्रकार समय को भी अनन्त कालीन होने के लिये अपने कालचक्र से गुजरना होता है।

संभाग ३

सृष्टि का उद्देश्य

३.१. विश्व की सृष्टि का उद्देश्य

बाईबल में यह अभिलिखित है कि सृष्टि की रचना करने के पश्चात, प्रत्येक दिन परमेश्वर ने कहा कि वह अच्छी है।[२२] इस का अर्थ यह हुआ कि परमेश्वर चाहता था कि उसकी सृष्टि उसके अच्छे पात्र साझी का मूर्त रूप हो ताकि वह उनसे आनन्द प्राप्त कर सके।

सृष्टि, परमेश्वर को कैसे बहुत आनन्द दे सकती है?

परमेश्वर ने मनुष्य की रचना विश्व की सृष्टि के अंतिम चरण में की। उसने उन्हें अपने स्वरूप में अपनी आंतरिक प्रकृति और बाह्य रूप के अनुरूप रचा, और उन्हें हर प्रकार की संवेदना और भावनाओं की अनुभूति दी, क्योंकि वह उनके साथ आनन्द मनाना चाहता था। उनकी रचना करने के बाद परमेश्वर ने आदम और हव्वा को आशीर्वाद दिया:

> “फूलो-फलो और पृथ्वी में भर जाओ, और उसको अपने वश में कर लो; और समुद्र की मछलियों, तथा आकाश के पक्षियों और पृथ्वी पर रेंगने वाले सब जन्तुओं पर अधिकार रखो।”—उत्पत्ति १:२८

यह तीन महान आशीर्वाद हैं: फूलो-फलो (व्यक्तिगत चरित्र में पूर्णता प्राप्त करना), प्रजनन करो और सृष्टि के अधिकारी बनो। यदि आदम और हव्वा ने इस दिव्य आदेश का पालन किया होता और परमेश्वर का राज्य स्थापित किया होता, तो इस में कोई संदेह नहीं है कि इस बात से परमेश्वर को बहुत आनन्द मिलता और वह अपने पुत्र और पुत्री के साथ अपने आदर्श की दुनिया में आनन्द करता।

परमेश्वर के यह तीन आशीर्वाद किस प्रकार पूरे हो सकते हैं? वह उस समय पूरे होते हैं जब चार-दशा-आधार जो सृष्टि का मूल आधार है साधित किया जाता है। यह तीन महान आशीर्वाद उस समय पूरे हो सकते हैं जब सारी सृष्टि, मनुष्यों के साथ, चार-दशा-आधार, जिसका केन्द्र परमेश्वर है, पूरा करती है। यह स्वर्ग का राज्य है, जहाँ सर्वश्रेष्ठ अच्छाई साधित की गई है, इससे परमेश्वर को बहुत बड़ा आनन्द मिलता है। वास्तव में, परमेश्वर का सृष्टि की रचना करने का उद्देश्य यही है।

विश्व की रचना का सर्वश्रेष्ठ उद्देश्य, जब मनुष्य उसका केन्द्र हो, परमेश्वर को आनन्द देना है। हर एक सत्व में द्वैत अभिलक्षण होते हैं। जैसा कि पहले बताया गया है, हर सत्व में गति के दो केन्द्र होते हैं, एक आंतरिक प्रकृति और दूसरा बाह्य रूप। इन केन्द्रों के समरूपी प्रयोजन होते हैं—सार्वजनिक और आत्महित—जिनका संबंध वैसा ही होता है जैसे आंतरिक प्रकृति और बाह्य रूप के बीच होता है। इन द्वैत प्रयोजनों के बीच, कारण और परिणाम, आंतरिक और बाह्य, कर्ता साझी और पात्र साझी का संबंध होता है। परमेश्वर के आदर्श में कोई भी ऐसा आत्महित प्रयोजन नहीं होता है जो सार्वजनिक प्रयोजन का

[२२] उत्पत्ति १:४-३१

समर्थन नहीं करता हो, और ना ही कोई ऐसा सार्वजनिक प्रयोजन होता है जो व्यक्तिगत सुविधाओं की चिन्ता ना करे। विश्व अनगिनत प्रकार के सत्वों के द्वैत प्रयोजनों से गुथी हुई एक विशाल कायिक देह बनाते हैं।

३.२ परमेश्वर को आनन्द देने के लिये अच्छा पात्र साझी

परमेश्वर की सृष्टि के उद्देश्य के बारे में जो प्रश्न खड़े होते हैं उनको और गहराई से समझने के लिये, आएं हम पहले यह देखें कि आनन्द किस प्रकार पैदा होता है। एक व्यक्ति अकेला आनंद पैदा नहीं कर सकता है। आनंद तब आता है जब हमारे पास कोई पात्र साझी हो जिस में हमारी आंतरिक प्रकृति और बाह्य रूप प्रतिबिंबित हो और व्यक्त हो सके। हमारा पात्र साझी प्रोत्साहन के द्वारा हमें अपनी आंतरिक प्रकृति और बाह्य रूप का अनुभव करने में हमारी सहायता करता है। पात्र साझी अमूर्त हो सकता है या मूर्त हो सकता है। उदाहरण के तौर पर, एक चित्रकार का पात्र साझी उस के मन की कोई कल्पना हो सकती है, या फिर उसका बनाया हुआ चित्र या खुदी हुई मूर्ति हो सकती है, जो उस कल्पना को साकार करती है। जब वह अपने विचार को या अपने बनाए हुए चित्र को देखता है, वह अपनी आंतरिक प्रकृति और बाह्य रूप को उस वस्तु में प्रतिबिंबित देख कर प्रोत्साहित होता है और आनंद और संतोष महसूस करता है। जब केवल कल्पना ही पात्र साझी हो तो वह मन को उतना उत्तेजित नहीं करती और ना ही वह उतना गहन आनन्द दे सकती है जितनी कि तैयार वस्तु देती है। मनुष्य का यह स्वभाव परमेश्वर में आरंभ होता है। उसी प्रकार, परमेश्वर भी अपने वास्तविक पात्र साझी द्वारा उत्तेजित होता है और उसके द्वारा अपनी आंतरिक प्रकृति और बाह्य रूप महसूस करता है।

यह पहले बताया गया है कि जब तीन महान आशीर्वादों के पूरित होने और चार-दशा-आधार के स्थापित हो जाने के द्वारा स्वर्ग का राज्य साधित हो जाता है—तो वह परमेश्वर के लिये अच्छा पात्र साझी बन जाता है और परमेश्वर को आनंद देता है। आइये हम इस बात का पता लगाएं कि राज्य किस प्रकार परमेश्वर के लिये अच्छा पात्र साझी बनता है।

पहले आशीर्वाद की कुंजी व्यक्तिगत चरित्र का पूर्ण होना है। किसी भी व्यक्ति का मन और शरीर परमेश्वर से निकले हुए असतत द्वैत अभिलक्षण का बहिर्गत भाग और पात्र साझी है। किसी भी व्यक्ति को अपना चरित्र पूर्ण करने के लिये उसे अपने अंदर चार-दशा-आधार बनाना आवश्यक है, जिससे उसका मन और शरीर परमेश्वर पर केन्द्रित आदान-प्रदान क्रिया द्वारा एक हो सके। ऐसे लोग परमेश्वर का मंदिर बन जाते हैं[२३], उसके साथ पूरी तरह से एक हो जाते हैं,[२४] और दिव्य स्वभाव अर्जित करते हैं। उन्हें परमेश्वर के हृदय की अनुभूति इस प्रकार से होती है जैसे कि वह उनका अपना हो। इस प्रकार वे परमेश्वर की इच्छा को समझते हैं और उसके अनुकूल अपना जीवन व्यतीत करते हैं। जब कोई व्यक्ति व्यक्तिगत पूर्णता की अवस्था में रहता है, तो वह अपने मन का दैहिक पात्र साझी हो जाता है। चूँकि उसके

---

[२३] १ कुरिंथियों ३:१६

[२४] यूहन्ना ४:२०

मन का केन्द्र परमेश्वर होता है, वह भी परमेश्वर का शारीरिक पात्र साझी बन जाता है। फिर परमेश्वर और मन दोनों आनंदित होते हैं जब वे अपने पात्र साझी से प्रोत्साहन पाकर अपनी आंतरिक प्रकृति और बाह्य रूप का अनुभव करते हैं। तदनुसार, जब लोग परमेश्वर के पहले आशीर्वाद को साधित कर लेते हैं, वे परमेश्वर के प्रिय बन जाते हैं जो उसे ख़ुशी से प्रेरित करते हैं। परमेश्वर की हर संवेदना को वह इस तरह महसूस करते हैं जैसे कि उनकी अपनी हों, वह कभी पाप नहीं करेंगे जो परमेश्वर को दुःख दे। इसका अर्थ यह हुआ कि उनका पतन कभी नहीं हो सकता।

व्यक्तिगत पूर्णता प्राप्त करने के बाद आदम और हव्वा, प्रत्येक परमेश्वर के द्वैत अभिलक्षणों के एक पहलू को व्यक्त करते और परमेश्वर के पात्र साझी के रूप में दूसरा आशीर्वाद परिपूर्ण कर लेते। अपने परिवार में चार-दशा-आधार स्थापित करने के लिये आदम और हव्वा को चाहिये था कि वह पति-पत्नी के प्रेम से भर कर एक हो जाएं और बच्चे पैदा करें। यह दूसरे आशीर्वाद की पूर्ण संतुष्टि होती। एक परिवार या समाज जिसने परमेश्वर के आदर्श के अनुसार चार-दशा-आधार स्थापित कर लिया हो वह एक पूर्ण व्यक्ति की प्रतिमा के नमूने पर बना होता है। वह उस व्यक्ति का वास्तविक पात्र साझी बन जाता है जो परमेश्वर के साथ एक होकर रहता है, परिणामस्वरूप, वह परमेश्वर का भी वास्तविक पात्र साझी बन जाता है। जब हर एक अपने परिवार या अपनी बिरादरी में स्वयं अपने आंतरिक स्वभाव और वाह्य रूप को प्रदर्शित होता देखता है, तो वह व्यक्ति आनंद करता है और उसी तरह परमेश्वर भी आनंदित होता है। जब परमेश्वर का दूसरा आशीर्वाद पूरा होता है, तो यह परिवार या समुदाय अच्छा पात्र साझी बन जाता है और इससे परमेश्वर आनंदित होता है।

इससे पहले कि हम यह देखें, कि तीसरे आशीर्वाद को प्राप्त करने पर एक व्यक्ति किस प्रकार परमेश्वर का अच्छा पात्र साझी बन कर उसे आनंद देता है, हमें पहले आंतरिक प्रकृति और बाह्य रूप के दृष्टिकोण से मनुष्य और सृष्टि के आपसी संबंध के बारे में खोज करनी है।

मनुष्य की सृष्टि करने से पहले, परमेश्वर ने मनुष्य की काल्पनिक प्रतिमा के आधार पर, उसकी आंतरिक प्रकृति और बाह्य रूप के केवल आंशिक प्रतिबिंबों को व्यक्त करते हुए प्राकृतिक दुनिया बनाई थी। परिणाम स्वरूप, मनुष्य में सभी वस्तुओं के कुल तत्वों का सार निहित है। इसी कारण उसे जगत का लघु रूप सूक्ष्म-जगत कहा जाता है।

जब परमेश्वर ने प्राणियों की रचना की, तो पहले उसने छोटी श्रेणी के जंतुओं को रचना आरंभ किया। कुछ समय पश्चात उसने ऊँचे वर्ग के और जटिल जैविक प्रकार्य वाले पशुओं को बनाया, फिर अंत में मनुष्यों को सब से ऊँचे स्तर पर बनाया। इसी करण मनुष्य में वह सब तत्व, आकार और गुण हैं जो पशुओं में पाए जाते हैं। उदाहरण की तौर पर, मनुष्य की स्वरतन्त्री इतनी प्रतिभाशाली है कि वह वस्तुतः सब पशुओं के स्वरों की नकल उतार सकता है। क्योंकि मनुष्य के शरीर में सृष्टि की सब प्रकार की सुंदर रेखाएं और वक्र रेखाएं हैं, इसलिये एक चित्रकार नग्न मॉडल का चित्र बनाकर अपनी कला को निपुण बनाते हैं।

यद्यपि मनुष्य और पौधों की संरचना और प्रकार्य भिन्न होते हैं, फिर भी क्योंकि वे दोनों कोशाणु से बने होते हैं एक से होते है। पौधों के समस्त तत्व, आकार और लक्षण भी मनुष्य में पाए जाते हैं।

उदाहरण की तौर पर, पौधों की पत्तियाँ दिखने में और कार्य में मनुष्य के फेफड़ों के समान होतीं हैं। जैसे पत्तियाँ वायुमंडल से कार्बन-डायऑक्साईड सोखतीं हैं, मनुष्य के फेफड़े आक्सीजन लेते हैं। पौधों की डालियाँ और डंडियाँ मनुष्य के रक्तवह-तन्त्र के समान होतीं हैं, जो समस्त शरीर का पोषण करती हैं, काष्ठ-ऊतक और पोषवाह मनुष्य की रक्तवाहिनी और नसों के समान होतीं हैं। पेड़ों की जड़ें मनुष्य के पेट और अंतड़ी के समान होतीं हैं जो पुष्टिकर खाना सोखतीं हैं।

मनुष्य का निर्माण मिट्टी, पानी और वायु से हुआ है, फलस्वरूप उनके शरीर में यह सारे खनिज पदार्थ मौजूद हैं। इसके अतिरिक्त पृथ्वी भी मनुष्य के शरीर के आकार की समानता दिखाती है; पृथ्वी की सतह पेड़-पौधों से भरी है, भूमि के नीचे जलमार्ग अधःस्तर में विद्यमान हैं, और उसके नीचे चट्टानों की पपड़ी से घिरा पिघला हुआ लावे का क्रोड़ है। यह मनुष्य के शरीर के आकार के समान है, जिस पर बालों से भरी चमड़ी, नीचे मास में रक्तवाहिनियाँ और उससे भी नीचे हड्डियों में गूदा।

परमेश्वर के तीसरे आशीर्वाद का अर्थ है, प्राकृतिक दुनिया पर मनुष्य की प्रभुता की पराकाष्ठा। और इस आशीर्वाद को परिपूर्ण करने के लिये, परमेश्वर पर केन्द्रित प्रभुता का चार-दशा-आधार स्थापित करना आवश्यक है। मनुष्य और प्राकृतिक दुनिया को, जो परमेश्वर के छवि और प्रतीकात्मक स्तर पर वास्तविक पात्र साझी हैं, बिल्कुल एक होने के लिये आपस में प्रेम और सौन्दर्य आदान-प्रदान करना आवश्यक है।

प्राकृतिक दुनिया मनुष्य की पात्र साझी है जो उसकी आंतरिक प्रकृति और बाह्य रूप को अनेक प्रकार से दर्शाती है। इस कारण, आदर्श मनुष्य प्राकृतिक दुनिया से प्रोत्साहित होते हैं। अपनी आंतरिक प्रकृति और बाह्य रूप को सारी सृष्टि में प्रदर्शित देख कर वे अत्यधिक आनंद अनुभव करते हैं। परमेश्वर भी विश्व में अपनी मूल आंतरिक प्रकृति और मूल बाह्य रूप की झलक देख कर प्रोत्साहित होता है और आनंद महसूस करता है; और यह उस समय संभव होता है जब मनुष्य और प्राकृतिक दुनिया एक साथ ताल-मेल के द्वारा परमेश्वर के तीसरे पात्र साझी बन जाते हैं। इसलिये जब मनुष्य परमेश्वर का तीसरा आशीर्वाद साधित कर लेते हैं, तब सम्पूर्ण जगत भी परमेश्वर का अच्छा पात्र साझी बन जाता है और परमेश्वर को आनंद देता है। यदि, परमेश्वर का सृष्टि का आदर्श इस प्रकार से साधित हो जाता तो एक पापहीन आदर्श दुनिया स्थापित हो जाती। हम ऐसी दुनिया को पृथ्वी पर स्वर्ग का राज्य कहते हैं। जब पृथ्वी पर स्वर्ग के राज्य में मनुष्य के जीवन का अंत होता तब लोग आत्मिक दुनिया में प्रवेश करते और स्वाभाविक रूप से स्वर्ग के राज्य में अनंत जीवन का मज़ा लेते।

अब तक की चर्चा के आधार पर हम यह समझ सकते हैं कि स्वर्ग का राज्य उस व्यक्ति के समान है जिस ने परमेश्वर की मूल आंतरिक प्रकृति और बाह्य रूप का अनुकरण करके व्यक्तिगत पूर्णता प्राप्त कर ली हो। एक व्यक्ति में मन का आदेश तंत्रिका तंत्र के द्वारा उसके सारे शरीर में जाता है, जिस की वजह से शरीर एक उद्देश्य से कार्य करता है। इसी प्रकार स्वर्ग के राज्य में परमेश्वर का आदेश, मानवता के सद्-वृत्त माता-पिता के द्वारा उसके सारे बच्चों को एक साथ मिल जुल कर रहने का मार्गदर्शन करेगा।

संभाग ४

मौलिक मूल्य

४.१ मौलिक मूल्य का निर्धारण करने की प्रक्रिया और मानदण्ड

किसी सत्व का मौलिक मूल्य किस प्रकार निश्चित किया जा सकता है? किसी सत्व का मूल्य उसके अस्तित्व के उद्देश्य और उसके लिये मनुष्य की चाह के बीच के संबंध से निश्चित किया जा सकता है। इसे और स्पष्ट रूप से इस प्रकार कहा जा सकता है, किसी सत्व का आकांक्षित मूल्य उसकी रचना के समय उसके अंतर्निहित लक्षण के बल पर तय नहीं किया जा सकता। अथवा, यह परमेश्वर की सृष्टि के उद्देश्य के अनुसार, उस सत्व के अभिप्राय और उसके लिए लोगों की मौलिक आकांक्षा के बीच के पारस्परिक संबंध के द्वारा, यानी जो उसे संजोते हैं और उसके वास्तविक मूल्य को महत्व देते हैं, निश्चित होता है। वह अपना यथार्थ महत्व उस समय प्राप्त करता है जब वह पात्र साझी के रूप में किसी व्यक्ति के साथ परमेश्वर पर केन्द्रित आदान-प्रदान क्रिया और उनके संयोग के द्वारा चार-दशा-आधार में भाग लेता है और परमेश्वर का तीसरा पात्र साझी बनता है।

वह मानदण्ड जिसके द्वारा किसी सत्व का असली मूल्य ठहराया जाता है, किस प्रकार निर्मित होता है? उसका मौलिक मूल्य उस समय निर्मित होता है जब वह चार-दशा-आधार में भाग लेता है, और चूँकि इस चार-दशा-आधार का केन्द्र परमेश्वर है, इसलिये परमेश्वर उसके मूल्य का मानदण्ड निश्चित करता है। चूँकि परमेश्वर पूर्ण है, इसलिये किसी पात्र साझी का मौलिक मूल्य भी, जो इस मानदण्ड के अनुसार परमेश्वर के द्वारा निश्चित किया गया है, पूर्ण होना चाहिये।

गुलाब के फूल पर विचार करें; इसकी मूल सुंदरता कैसे निर्धारित की जाती है? यह, जिस उद्देश्य से परमेश्वर ने फूल बनाए हैं, और परमेश्वर की दी हुई मनुष्य की इच्छा से जो सौन्दर्य की कदर करता है और उसे अभिव्यक्त करता है, जब यह दोनों साथ में संतुष्ट होते हैं, तब निर्धारित की जाती है। इसे एक और तरीके से भी देखा जा सकता है, किसी आदर्श व्यक्ति को उस समय पूर्ण खुशी महसूस होती है जब फूल अपने सौंदर्य से उसे प्रेरित करके उसकी भावनात्मक इच्छा को तृप्त करता है। उस पल में, फूल अपनी असली सुंदरता व्यक्त करता है। फूल की सुंदरता उस समय पूर्ण हो जाती है जब वह अपने अंतर्निहित उद्देश्य को प्राप्त करता है, जो कि अपने कर्ता साझी को पूर्ण आनंद प्रदान करना है। फूल की सुंदरता को आँकने की मानव प्रवृत्ति, किसी पात्र साझी के माध्यम से अपने ही आंतरिक प्रकृति और बाह्य रूप के पहलुओं को महसूस करने के मनोरथ का यह एक उदाहरण है। जिस क्षण जिस उद्देश्य से फूल रचा गया था, और उसका मूल्य आँकने की मानव इच्छा पूरी होती हैं, कर्ता-साझी और पात्र-साझी सौहार्दपूर्ण एकता की स्थिति में प्रवेश करते हैं।

एक सत्व अपना असली मूल्य उस समय प्राप्त करता है जब वह मनुष्य के साथ, जो उसका कर्ता साझी है, सामंजस्यपूर्ण ऐक्य स्थापित करके परमेश्वर के लिये चार-दशा-आधार में एक तीसरा पात्र साझी बन जाता है। इस प्रक्रिया के द्वारा सभी वस्तुओं का असली मूल्य, परमेश्वर द्वारा निश्चित पूर्ण मानक के साथ उनके संबंध के आधार पर निर्धारित किया जाता है। आज तक किसी भी पात्र साझी का मूल्य पूर्ण

नहीं हो सका है; यह अब तक आपेक्षिक ही रहा है, क्योंकि पतित लोगों के साथ उसका संबंध परमेश्वर की सृष्टि के आदर्श के आधार पर नहीं, वरन् शैतान के उद्देश्य और इच्छा पर आधारित है रहा है।

४.२ मूल भावना, बुद्धि और इच्छा-शक्ति, मौलिक सौन्दर्य, सच्चाई और अच्छाई

मनुष्य के मन के तीन संकाय होते हैं: भावना, बुद्धि और इच्छा-शक्ति। मनुष्य का शरीर मन के आदेश पर चलता है। जब शरीर मन के भाव, बुद्धि और इच्छा-शक्ति पर चलता है, तब क्रमवार, उसके कार्य सौन्दर्य, सच्चाई और अच्छाई का अनुकरण करते हैं। परमेश्वर मनुष्य के मन का कर्ता साझी है; इसलिये वह मनुष्य के भाव, बुद्धि और इच्छा शक्ति का भी कर्ता साझी है। अपने मूल मूल्य को साकार करने की चाह में, एक व्यक्ति अपने मन से परमेश्वर के पूर्ण भाव, पूर्ण बुद्धि और पूर्ण इच्छा-शक्ति की पुष्टि करता है, और फिर उसी के अनुकूल वह अपने शरीर से कार्य करता है। इस प्रकार वह मूल सौन्दर्य, मौलिक सच्चाई और मौलिक अच्छाई व्यक्त करता है।

४.३ प्रेम और सौन्दर्य, अच्छाई और बुराई सदाचारिता और दुराचारिता

४.३.१ प्रेम और सौन्दर्य

जब दो सत्व, परमेश्वर के द्वैत अभिलक्षणों की विभिन्न अभिव्यंजना, सामान्य आधार बनाते हैं और परमेश्वर के लिये तीसरा पात्र साझी बनने के लिए चार-दशा-आधार स्थापित करना चाहते हैं, तब वे आदान-प्रदान क्रिया आरंभ करते हैं। इसे पूरा करने के लिये भावुक शक्ति जो कर्ता साझी अपने पात्र साझी को देता है वह *प्रेम* कहलाता है, और भावुक शक्ति जो पात्र साझी कर्ता साझी को लौटाता है वह *सौन्दर्य* कहलाता है। प्रेम की शक्ति सक्रिय होती है और सौन्दर्य की तरंग निष्क्रिय होती है।

परमेश्वर और मनुष्य के संबंध के बीच, परमेश्वर कर्ता साझी की हैसियत से प्रेम देता है और मनुष्य पात्र साझी होकर सौन्दर्य लौटाता है। पुरुष और स्त्री के बीच के संबंध में, पुरुष कर्ता साझी है जो प्रेम देता है और स्त्री पात्र साझी है जो सौन्दर्य लौटाती है। विश्व में, लोग कर्ता साझी होते हैं जो प्रकृति को प्रेम देते हैं और प्राकृतिक दुनिया पात्र साझी होती है जो सौन्दर्य लौटाती है। तथापि, जब कर्ता साझी और पात्र साझी एक साथ घुल मिलकर बिल्कुल एक हो जाते हैं तो प्रेम सौन्दर्य में पाया जाता है और सौन्दर्य प्रेम में पाया जाता है। यह इसलिये कि जब कर्ता-साझी और पात्र-साझी मिल कर गोलाकार गति में एक हो जाते हैं, तब कभी, कभी कर्ता साझी पात्र साझी का कार्य करता है और कभी, कभी पात्र-साझी कर्ता साझी का कार्य करता है।

अंतर्वैयक्तिक रिश्तों में, छोटे पद का व्यक्ति जो सौंदर्य बड़े पद के व्यक्ति के प्रेम के बदले वापस देता है वह स्वामीभक्ति कहलाती है, और जो सौन्दर्य, बच्चे अपने माता-पिता के प्रेम के बदले देते हैं वह संतानीय-भक्ति कहलाती है। जो सौन्दर्य एक पत्नी अपने पति के प्रेम के बदले वापस देती है वह अनुराग

कहलाता है। प्रेम और सौन्दर्य का उद्देश्य, दो स्वस्थ लोगों का जो परमेश्वर से निकलते हैं, चार-दशा-आधार स्थापित करके सृष्टि का उद्देश्य साधित करना है। आपस में प्रेम और सौन्दर्य निभा कर वे एक दूसरे में धुल मिल कर एक हो जाते हैं और इस प्रकार वे परमेश्वर के तीसरे पात्र साझी बन जाते हैं।

आइये हम और आगे बढ़ते हैं और परमेश्वर के प्रेम के बारे में विचार करते हैं। यदि आदम और हव्वा ने सिद्धता प्राप्त कर ली होती, और परमेश्वर के वास्तविक पात्र साझी बन गए होते तो वे दोनों अलग-अलग उसके द्वैत अभिलक्षणों में से एक के सदृश्य बन जाते, पति और पत्नी बन कर बच्चे पैदा करते और एक पवित्र परिवार स्थापित कर लेते। ऐसा करने से वे अपने पवित्र परिवार में तीन पात्र साझियों के साथ तीन प्रकार के मौलिक प्रेम का अनुभव करते: माता-पिता का प्रेम, दाम्पत्य प्रेम, और बच्चों का प्रेम, (पहले पात्र साझी का प्रेम, दूसरे पात्र साझी का प्रेम, और तीसरे पात्र साझी का प्रेम)। तब ही वे तीन-कर्म-प्रयोजन पूरा कर सकते थे और चार-दशा-आधार स्थापित कर सकते थे। यह उनका सृष्टि के उद्देश्य को पूर्ण करना होता।

परमेश्वर का प्रेम चार-दशा-आधार से निकले हुए अनेक प्रकार के प्रेम का कर्ता साझी है। इसलिये परमेश्वर का प्रेम, तीन-पात्र-साझियों के अनेक प्रकार के प्रेम के द्वारा व्यक्त होता है। परमेश्वर का प्रेम अंतर्निहित शक्ति होती है जो चार-दशा-आधार में जीवन का श्वास फूँकती है। तदनुकूल, चार-दशा-आधार संपूर्ण सौन्दर्य का पात्र है जिसके द्वारा हम परमेश्वर के प्रेम की परिपूर्णता का आनंद प्राप्त करते हैं। यह पूर्ण आनंद का गृह और अच्छाई का स्रोत भी है। इस आधार पर, सृष्टि का उद्देश्य परिपूर्ण होता है।

४.३.२ अच्छाई-बुराई (धर्म-अधर्म)

किसी कर्म या किसी क्रिया का फल उस समय अच्छा कहलाता है जब वह परमेश्वर की सृष्टि के उद्देश्य को परिपूर्ण करता है। यह उस समय संभव है जब कर्ता साझी और पात्र साझी प्रफुल्लित और सामंजस्यपूर्ण प्रेम और सौन्दर्य की आदान-प्रदान क्रिया के द्वारा एक हो कर, परमेश्वर के तीसरे पात्र साझी बन जाते हैं और चार-दशा-आधार स्थापित कर लेते हैं। अपितु, किसी कर्म या उसका परिणाम जब परमेश्वर की सृष्टि के उद्देश्य को भंग करता है तो वह बुराई या पाप कहलाता है जिसके द्वारा वह शैतान के अधीन चार-दशा-आधार बनाता है।

उदाहरण की तौर पर जब एक व्यक्ति परमेश्वर के पहले आशीर्वाद को साकार कर लेता है और अपना असली उद्देश्य पूरा करता है, तो यह कर्म इस हद तक अच्छा होता है और वह व्यक्ति भी अच्छा होता है। यह कार्य मन और शरीर के बीच प्रेम और सौन्दर्य के स्वच्छंद आदान-प्रदान के द्वारा होते हैं ताकि वह परमेश्वर के नियम पर आधारित एक होकर व्यक्तिगत चार-दशा-आधार स्थापित कर सकें। जब आदम और हव्वा परिवार बनाकर परमेश्वर के उद्देश्य को साधित करते हैं, और परमेश्वर के दूसरे आशीर्वाद में सफल होते हैं, तो उनका यह कर्म इस हद तक अच्छा होता है और जो परिवार उन्होंने बनाया है वह भी अच्छा होता है। इन कर्मों में शामिल हैं, जोड़ा बनकर परमेश्वर के नियमानुसार घुल मिलकर

एक हो जाना है और एक दूसरे के साथ सामंजस्यपूर्ण भावुक प्रेम और सौन्दर्य निभा कर बच्चे पैदा करना है, और इस प्रकार चार-दशा-आधार स्थापित करना है। इसके अतिरिक्त, जब एक पूर्ण व्यक्ति तीसरे आशीर्वाद को सफलतापूर्वक निबाह लेता है, तो यह कर्म इस हद तक अच्छा होता है और जिन वस्तुओं का वह पोषण करता है वह सब अच्छी होतीं हैं। प्राकृतिक दुनिया को अपना दूसरा रूप मान कर उससे संबद्ध होकर उस में पूरी तरह से घुल मिलकर एक होने से, एक संयोजन बनता है जो परमेश्वर के लिये तीसरा पात्र साझी होता है, और इस तरह वह प्रभुता का चार-दशा-आधार स्थापित करता है। इसके विपरीत जब कोई व्यक्ति शैतान की दासता के अधीन रह कर चार-दशा-आधार स्थापित करता है और परमेश्वर के तीन आशीर्वादों के उद्देश्य के विरुद्ध कार्य करता है तो यह कर्म और उसका परिणाम अधर्म कहलाता है।

४.३.३ सदाचारिता और दुराचारिता

सदाचारिता किसी व्यक्ति के उस गुण को इंगित करती है जो उसे अच्छाई के पीछे ले जाता है और उसके उद्देश्य को बढ़ावा देता है। दुराचारिता किसी व्यक्ति के उस अवगुण को इंगित करती है जो उसे अधर्म की ओर खींचती है और शैतान के उद्देश्य को बढ़ावा देती है। अच्छाई को प्राप्त करने के लिये नैतिक जीवन अत्यंत आवश्यक है।

संभाग ५

विश्व की रचना की प्रक्रिया और उसका विकास काल

५.१ विश्व की रचना की प्रक्रिया

उत्पत्ति की पुस्तक की व्याख्या के अनुसार विश्व की रचना के विवरण में आदिकाल की अस्त-व्यस्त स्थिति में शून्य और अंधकार के मध्य, परमेश्वर ने प्रकाश का निर्माण किया। परमेश्वर ने आकाश के ऊपर के जल को आकाश के नीचे के जल से अलग किया। तब उसने समुद्र से भूमि को अलग किया, फिर उसने पेड़ पौधे, मछलियाँ, परिंदे और स्तनधारी पशुओं की रचना की और अंत में उसने मनुष्य की रचना की। यह सब करने में उसे छः दिन का समय लगा। इस विवरण के अनुसार हम यह अनुमान लगा सकते हैं कि विश्व को रचने की प्रक्रिया में कुछ अरसा लगा, इस कार्यकाल को छः दिन कह कर बताया गया है।

बाईबल में अभिलिखित सृष्टि के निर्माण की प्रक्रिया और आधुनिक विज्ञान में वर्णित विश्व के निर्माण के आदि कारण सिद्धांत, दोनों में कुछ समानता दिखाई देती है। आधुनिक विज्ञान के अनुसार, विश्व प्रसरणशील प्लाज़्मा के रूप में आरंभ हुआ। अंतरिक्ष शून्य और अव्यवस्थित दशा से निकल कर, खगोलीय पिंड का निर्माण हुआ और उनसे प्रकाश हुआ। जैसे, जैसे लावा से भरी पृथ्वी ठंडी होती गई, ज्वालामुखी के विस्फोट से आकाश जल से भर गया। भूमि उभरी, जल वर्षा बन कर गिरने लगा जिससे महाद्वीपों और महासागरों की रचना हुई। फिर छोटे पौधे और पशु अस्तित्व में आए। इसके पश्चात क्रमवार, मछलियाँ, पक्षी, स्तनधारी पशु और अंत में मनुष्य अस्तित्व में आये। पृथ्वी की आयु अनेक अरब वर्ष की गणित की गई है। यह सब बातें ध्यान में रखते हुए, हज़ारों वर्ष पहले बाईबल में अभिलिखित विश्व की सृष्टि का विवरण, आधुनिक विज्ञान की जाँच के परिणाम से मिलता जुलता है, इसलिये हमारा यह विश्वास है कि बाईबल का यह अभिलेख परमेश्वर का प्रकटीकरण है।

विश्व, कोई समय लगे बिना यकायक पूर्ण होकर अस्तित्व में नहीं आया। वास्तव में उसके आरंभ और विकास में बहुत लम्बा समय लगा। इसलिये, विश्व के पूरे तैयार होने में बाईबल में कहे गए छः दिन का काल शाब्दिक छः सूर्योदय और सूर्यास्त नहीं माना जा सकता है। यह निर्माण की प्रक्रिया के छः क्रमिक कालों को संकेत करता है।

५.२ सृष्टि के लिए विकास की अवधि

यह तथ्य कि विश्व की सृष्टि को पूरा करने के लिये छः दिन, यानी छः कालावधियों का समय लगा इस बात को संकेत करता है कि विश्व में पाए जाने वाले प्रत्येक सत्व की रचना में भी, जिन से विश्व पूरा बनता है, कुछ समय लगा होगा। इसके अतिरिक्त, उत्पत्ति में जिस प्रकार से प्रत्येक दिन की गणना की गई है यह प्रगट करता है कि किसी भी सत्व के रचने में कुछ समय का लगना आवश्यक है। इस वृत्तांत में सृष्टि के प्रत्येक दिन की गणना कुछ असाधारण ढंग से की गई है। जब पहले दिन की रचना के कार्य

समाप्त हुए, यह लिखा है, “तथा साँझ हुई फिर भोर हुआ, इस प्रकार पहला दिन हो गया।”[२५] इसका अर्थ कोई इस प्रकार से भी निकाल सकता है कि साँझ और रात का समय बीतने के बाद भोर का आना दूसरा दिन समझा जाना चाहिये, फिर भी यहाँ इसे पहला दिन माना गया है। बाईबल में जो “एक दिन” लिखा है, यह दिखाता है कि किसी भी सृजित सत्व को विकास की अवधि से गुज़रना आवश्यक है, अर्थात, भोर में पूर्ण होने से पहले, इस काल को रात कहा गया है। फिर जब वह इस भोर का अभिवादन करता है, तब वह आगे बढ़ सकता है और सृष्टि के आदर्श को साधित करता है।

विश्व में होने वाली किसी भी घटना के पश्चात उसका प्रतिफल केवल कुछ समय बीतने के बाद ही मिलता है। सब वस्तुएं इस ढंग से रची गईं हैं कि वे एक नियत *विकास-अवधि* से गुज़र कर ही पूर्ण बन कर तैयार होतीं हैं।

५.२.१ *विकास-अवधि के तीन क्रमवार चरण*

विश्व परमेश्वर की मूल आंतरिक प्रकृति और मूल बाह्य रूप को गणितीय सिद्धांत के आधार पर व्यक्त करता है। इस तरह हम यह अनुमान लगा सकते हैं कि परमेश्वर का एक पहलू गणितीय है। परमेश्वर एक पूर्ण वास्तविकता है, जिसमें द्वैत अभिलक्षण सुमेल के साथ एक दूसरे को प्रभावित करते हैं, इस प्रकार वह अंक तीन की सत्ता है। सभी सत्व परमेश्वर की समानता में सृजित किए गए हैं, इसलिये वे अपना अस्तित्व, गति और विकास तीन चरण की अवधि से व्यक्त करते हैं।

चार-दशा-आधार जो परमेश्वर की सृष्टि का उद्देश्य है, तीन-चरण प्रक्रिया के द्वारा पूर्ण होना चाहिये था: परमेश्वर से प्रारंभ होकर, आदम और हव्वा का विवाह, और बच्चों का प्रजनन। चार-दशा-आधार स्थापित करने के लिये और गोलाकार गति में चलने के लिए एक सत्व को पहले तीन-चरण, आदि-विभाजन-संयोजन क्रिया पूरा करनी चाहिये और फिर तीन-कर्म-प्रयोजन पूरा करना चाहिए, जिसमें प्रत्येक दूसरे तीनों के साथ अंतःक्रिया करते हैं। अर्थात, किसी वस्तु को दृढ़ रखने के लिये उसका कम से कम तीन बिंदुओं पर खड़ा होना आवश्यक है। तदनुसार, सब वस्तुएं विकास के तीन क्रमवार चरण: *गठन चरण, विकास चरण, निष्पत्ति चरण,* से होकर गुज़रने के बाद पूर्णता प्राप्त करतीं हैं।

प्राकृतिक दुनिया में बहुत सी वस्तुएं संख्या तीन में प्रगट होतीं हैं। इनमें तीन वर्ग होते हैं: खनिज पदार्थ, पेड़-पौधे और पशु। द्रव्य भी तीन अवस्था में पाए जाते हैं: वायुरूप द्रव्य (गैस), तरल और ठोस वस्तु। आम तौर पर पौधे तीन भागों में होते हैं: जड़, तना डालियाँ और पत्तियाँ। पशुओं के भी सिर, धड़ और टाँगे होतीं हैं।

बाईबल में भी संख्या तीन के बहुत से उदाहरण हैं। पतन के कारण मनुष्य अपने विकास के तीन काल पूरे न करने के कारण अपने अस्तित्व का उद्देश्य पूरा नहीं कर सका। इसलिये अपने अस्तित्व के उद्देश्य को पूर्ण करने के लिये मनुष्य को दुबारा कोशिश करके तीन चरण से होकर जाना आवश्यक है। पुनरुद्धार की दैवी योजना में परमेश्वर ने संख्या तीन को पुनःप्रचलन करने का कार्य किया है, यह इस

---

[२५] उत्पत्ति १:५

बात का प्रमाण है कि बाईबल में क्यों बहुत बार संख्या तीन का उपयोग किया गया है और व्यवस्थाएं संख्या तीन पर आधारित है: ट्रिनिटी (पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा); स्वर्ग के तीन स्तर, तीन प्रधान दूत, नूंह की किश्ती के तीन स्तर, बाढ़ के बाद नूंह की किश्ती से फाक्ता का तीन बार उड़ाया जाना, अब्राहम के तीन बलिदान, इज़हाक की बलि के स्थान तक जाने का तीन दिन का रास्ता। मूसा के समय तीन दिन के अंधकार की विपत्ति, निर्गमन के आरंभ से पहले तीन दिन का शुद्धिकरण, कनान की यात्रा में चालीस दिन के तीन काल और यहोशू की अगुआई में यर्दन नदी को पार करने से पहले तीन दिन का शुद्धिकरण। यीशु मसीह के जीवन में भी हम देखते हैं: तीन दशाब्दी निजी जीवन और तीन वर्ष की सार्वजनिक सेवा, पूर्व से तीन ज्योतिषी जो भेंट लेकर आए, तीन चेले, तीन प्रलोभन, गतसमनी के बाग में तीन बार प्रार्थना, पतरस का तीन बार इनकार करना, सूली पर चढ़ाये जाने के बाद तीन घंटों का अंधकार और प्रभु यीशु का तीन दिन के बाद मक़बरे से पुनरुत्थान।

मनुष्य के पहले पूर्वजों का पतन कब हुआ था? उनका पतन विकास काल में हुआ था, जब वह किशोरावस्था में थे। यदि मनुष्य का पतन उनके पूर्णता प्राप्त करने के पश्चात होता, तो परमेश्वर की सर्वशक्तिमानता पर विश्वास करने का कोई आधार नहीं होता। यदि मनुष्य का पतन, अच्छाई का पूर्ण मूर्त रूप बन जाने के बाद होता, तब स्वयं अच्छाई अपूर्ण होती। तदनुसार, हमें विवश होकर यह मानना पड़ता कि परमेश्वर जो अच्छाई का स्रोत है स्वयं अपूर्ण है।

उत्पत्ति की पुस्तक में लिखा है कि परमेश्वर ने आदम और हव्वा को यह कह कर सावधान किया, "तुम भलाई और बुराई के ज्ञान के वृक्ष का फल नहीं खाना, क्योंकि जिस दिन तुम यह फल खाओगे अवश्य मर जाओगे।"[२६] उनको चयन का अधिकार था कि यदि वे परमेश्वर की चेतावनी की अवहेलना करें तो अपना जीवन खोते हैं और यदि वे चेतावनी को माने तो जीवित रहेंगे। यह तथ्य कि उनमें अपने नैतिक-पतन या पूर्ण होने की संभाव्य योग्यता थी, यह दर्शाता है कि वे किशोरावस्था में थे। विश्व कुछ इस प्रकार से बनाया गया है कि वह किसी निश्चित विकास काल से गुज़रने के पश्चात ही परिपूर्ण होता है, यह बाईबल में छः दिन का समय बताया गया है। परमेश्वर की बनाई हुई वस्तुओं में से एक होने के कारण मनुष्य भी है भी इस नियम से बंधा हुआ है।

विकास-अवधि के किस चरण पर हमारे पहले पूर्वजों का पतन हुआ? उनका पतन विकास अवधि के ऊपरी सिरे पर हुआ। यह हमारे पहले पूर्वजों के पतन की परिस्थितियों और परमेश्वर की दैवी योजना के कार्य के इतिहास की जाँच करके प्रमाणित किया जा सकता है। यह इस खंड के पूर्ण अध्ययन से आगे और अधिक स्पष्ट किया जाएगा।

५.२.२ अप्रत्यक्ष प्रभुता का क्षेत्र

विकास की अवधि के दौरान, सृष्टि में सभी प्राणियों का विकास परमेश्वर के नियम के द्वारा दिए गए स्वायत्तता और शासन के सद् गुण के द्वारा होता है। परमेश्वर, जो सिद्धाँत का लेखक है केवल उनके

---

[२६] उत्पत्ति २:१७

विकास के फलों पर ही, जो नियम पर आधारित हैं, ध्यान देता है। इस तरह, वह सभी वस्तुओं का परोक्ष रूप से नियंत्रण करता है। इस विकास-अवधि को हम परमेश्वर के *अप्रत्यक्ष प्रभुत्व* का क्षेत्र या सिद्धाँत के द्वारा उपलब्धियों पर आधारित प्रभुत्व कहते हैं।

सब वस्तुएं परमेश्वर के नियम द्वारा दिए गए शासन और स्वायत्तता के बल पर विकास-अवधि (अप्रत्यक्ष प्रभुता के दायरे) के माध्यम से गुजरने के बाद पूर्णता प्राप्त करतीं हैं। हालांकि, मनुष्य इस प्रकार से बनाए गए हैं कि उनके विकास के लिये नियम के द्वारा प्रदान किए गए मार्गदर्शन के अतिरिक्त, उनके अपने दायित्व को पूरा करने की भी आवश्यकता होती है। विकास की अवधि के माध्यम से सफलतापूर्वक गुज़र कर पूर्णता तक पहुँचने के लिये उन्हें अपनी जिम्मेदारी निबाहनी चाहिए। आदम और हव्वा[२७] को दी गई परमेश्वर की आज्ञा से हम यह अनुमान लगा सकते हैं कि मनुष्य के पहले पूर्वज परमेश्वर के वचन पर विश्वास रखने के लिए ज़िम्मेदार थे, और उन्हें फल नहीं खाना चाहिए था। उन्होंने परमेश्वर की आज्ञा चाहे मानी या नहीं, उनका पतन परमेश्वर पर नहीं, परन्तु स्वयं उन पर निर्भर था। इसलिये, मनुष्य पूर्णता प्राप्त करे या ना करे, यह केवल परमेश्वर की सृजन शक्ति पर ही निर्भर नहीं करता, मनुष्य के उत्तरदायित्व की पूर्ति भी आवश्यक है। निर्माता के रूप में अपनी क्षमता से परमेश्वर ने मनुष्य को कुछ इस प्रकार से बनाया है कि वह अपना उत्तरदायित्व पूरा करने पर ही विकास-अवधि (अप्रत्यक्ष प्रभुता के क्षेत्र) से गुज़र कर पूर्णता प्राप्त कर सकते हैं। चूँकि परमेश्वर ने स्वयं मनुष्य को इस प्रकार रचा है, इसलिये वह मानव उत्तरदायित्व में हस्तक्षेप नहीं करता है।

परमेश्वर ने निम्न लिखित कारण से मनुष्य को अपने हिस्से की ज़िम्मेदारी का उत्तरदायी ठहराया है। अपने हिस्से का दायित्व, जिसमें परमेश्वर तक हस्तक्षेप नहीं करता, पूरा करने से मनुष्य परमेश्वर की रचनात्मक प्रकृति का वारिस बन सके और उसकी सृष्टि के महान कार्य में सहभागी हो सके। परमेश्वर यह चाहता है कि मनुष्य स्वामित्व कमाए और निर्माता के रूप में सृष्टि पर राज्य करने के योग्य बन सके।[२८] यह मनुष्य और शेष समस्त सृष्टि के बीच मुख्य अंतर है।

एक बार जब हम अपना उत्तरदायित्व पूरा कर लेते हैं, तब हम परमेश्वर की सर्जक प्रकृति के वारिस बन जाते हैं और स्वर्गदूतों सहित समस्त वस्तुओं पर प्रभुत्व प्राप्त करते हैं। परमेश्वर हमें अप्रत्यक्ष प्रभुत्व के क्षेत्र के द्वारा यह अवसर प्रदान करता है कि हम पूर्णता प्राप्त कर सकें। हम पतित लोगों को अब तक राज्य करने की योग्यता उपलब्ध नहीं है, इसलिये हमें चाहिये कि हम पुनरुद्धार के नियम के अनुसार अपनी ज़िम्मेदारी निभाएं। ऐसा करके हम अप्रत्यक्ष प्रभुत्व के दायरे के माध्यम से प्रगति कर सकते हैं और इस तरह शैतान सहित सभी वस्तुओं पर राज्य करने का अधिकार पुनः स्थापित कर सकते हैं। सृष्टि के उद्देश्य को पूरा करने के लिये यही एक रास्ता है। दैवी पुनरुद्धार का कार्य बहुत समय से प्रवर्द्धित होता आया है क्योंकि प्रमुख व्यक्तियों ने, जो पुनरुद्धार की योजना के कार्य के उत्तरदायी थे, अपने हिस्से की ज़िम्मेदारी को पूरा करने के प्रयास में बार-बार ग़लतियाँ कीं, जिसमें परमेश्वर भी हस्तक्षेप

---

[२७] उत्पत्ति २:१७

[२८] उत्पत्ति १:२८

नहीं कर सकता था।

मसीह की सूली के द्वारा मिली मुक्ति का अनुग्रह चाहे कितना ही महान क्यों न हो, मुक्ति जो हमारे द्वार पर दस्तक करती है प्रभावहीन रहेगी जब तक हम अपने विश्वास को, जो हमारे हिस्से की ज़िम्मेदारी है, दृढ़ नहीं करते। यीशु के सूली पर चढ़ाये जाने के माध्यम से पुनरुत्थान का लाभ प्रदान करना, परमेश्वर की ज़िम्मेदारी थी, परन्तु विश्वास करना या ना करना सिर्फ हमारे हिस्से की ज़िम्मेवारी है।[२९]

५.२.३ प्रत्यक्ष प्रभुता का क्षेत्र

परमेश्वर का *प्रत्यक्ष प्रभुत्व* का क्षेत्र क्या है और उसका उद्देश्य क्या है? जब एक कर्ता साझी और पात्र साझी चार-दशा-आधार पर परमेश्वर के साथ उसके प्रेम में घुल-मिल कर एक हो जाते हैं तब मनुष्य प्रत्यक्ष प्रभुता के क्षेत्र में रहता है। इस दायरे में वे स्वतंत्र रूप से और पूरी तरह से कर्ता साझी की इच्छानुसार प्रेम और सौन्दर्य में सहभागी होता हैं और इस प्रकार वे अच्छाई के उद्देश्य को साकार करते हैं। प्रत्यक्ष प्रभुता का दायरा पूर्णता का दायरा है। यह सृष्टि के उद्देश्य को पूरा करने के लिये आवश्यक है।

मनुष्य के ऊपर परमेश्वर के प्रत्यक्ष प्रभुत्व का क्या अर्थ है? यदि आदम और हव्वा एक बार परमेश्वर पर केन्द्रित व्यक्तिगत पूर्णता प्राप्त कर लेते, तो फिर वे अपने परिवार में चार-दशा-आधार बना कर एक साथ रह सकते थे। परमेश्वर के साथ एक-दिल होकर प्रेम और सौन्दर्य की परिपूर्णता की सहभागिता से वे अच्छाई का जीवन व्यतीत कर सकते थे और आदम परिवार का मुखिया होता। परमेश्वर के प्रत्यक्ष प्रभुत्व के दायरे में लोग अपने अंतःकरण में परमेश्वर के दिल का गहन अनुभव कर सकते। इस तरह, वे परमेश्वर की इच्छा जानते और अपने कार्य उसी के अनुसार करते। जिस प्रकार शरीर के हर भाग मन के सूक्ष्म निर्देशों का तुरंत पालन करके कार्य करते हैं उसी प्रकार, लोग भी स्वाभाविक रूप से परमेश्वर की इच्छा अपने दिल की गहराई से महसूस करके उसके अनुसार कार्य करते। ऐसे पूर्ण अनुनाद की दशा में सृष्टि का उद्देश्य साकार होता है।

जब प्राकृतिक दुनिया मनुष्य के प्रत्यक्ष प्रभुत्व के अधीन होगी, तो वह कैसी दुनिया होगी? जब एक पूरी तरह से पूर्ण, प्रौढ़ व्यक्ति प्रकृति की अनेक प्रकार की वस्तुओं से अपने पात्र साझी की तरह संबद्ध होता है, तब वे एक साथ मिलकर चार-दशा-आधार स्थापित करते हैं। जो लोग परमेश्वर के हृदय के साथ पूर्ण रूप से अनुनाद करते हैं वे अबाध प्रेम और सौन्दर्य के सहभाजन के साथ प्राकृतिक दुनिया का संचालन करेंगे और संपूर्ण विश्व अच्छाई अनुभव करेगा। इस प्रकार मनुष्य सब वस्तुओं पर प्रत्यक्ष राज्य करेगा।

---

[२९] उत्पत्ति १:२८

संभाग ६

अमूर्त दुनिया और मूर्त दुनिया जिसका केन्द्र मनुष्य है

६.१ अमूर्त दुनिया और मूर्त दुनिया ठोस वास्तविकताएं हैं

विश्व मनुष्य के सांचे के अनुसार रचा गया है, जो परमेश्वर के द्वैत अभिलक्षणों की प्रतिमा है। इसलिए, विश्व की और उसमें हर सत्व की संरचना इंसान के सदृश है, जिसमें मूलतः मन और शरीर होते हैं।[३०] *अमूर्त संसार* और *मूर्त संसार* मनुष्य के मन और शरीर के अनुरूप हैं, दोनों वास्तविक और ठोस हैं। इसे अमूर्त संसार इसलिये कहते हैं क्योंकि हम उसे अपनी पाँच भौतिक ज्ञानेंद्रियों के माध्यम से अनुभव नहीं कर सकते। परंतु हम उसे अपनी पाँच आत्मिक ज्ञानेंद्रियों से अनुभव कर सकते हैं। जिन लोगों को आध्यात्मिक अनुभूति होती है वह इस बात की गवाही देते हैं कि अमूर्त दुनिया, मूर्त दुनिया की तरह जिसमें हम रहते हैं, प्रतीत होती है। अमूर्त और मूर्त दुनिया दोनों एक साथ मिल कर जगत बनाते हैं।

शरीर मन से अलग रहकर कोई कार्य नहीं कर सकता; कोई व्यक्ति परमेश्वर से अलग रह कर अच्छे कार्य नहीं कर सकता। उसी तरह, मूर्त संसार अमूर्त संसार से अलग रहकर अपना यथार्थ मूल्य व्यक्त नहीं कर सकता। इसके अतिरिक्त, जिस प्रकार हम एक व्यक्ति के चरित्र के बारे में उसके मन को जाने बिना नहीं समझ सकते, और परमेश्वर को जाने बग़ैर हम मनुष्य के जीवन का मूल अर्थ पूरी तरह से नहीं समझ सकते, उसी तरह से हम मूर्त संसार की संरचना और स्वभाव, अमूर्त संसार की संरचना और स्वभाव को जाने बिना नहीं समझ सकते। अमूर्त संसार, या आत्मालोक कर्ता साझी के स्थान पर है, और मूर्त संसार, या भौतिक संसार पात्र साझी के स्थान पर है। दूसरा, पहले की छाया के समान है।[३१] जब हम अपना भौतिक शरीर त्यागते हैं, हम परलोक में आत्मा में प्रवेश करते हैं और वहाँ अनंत काल तक रहते हैं।

६.२ जगत में मनुष्य का स्थान

जगत में मनुष्य का स्थान तीन पहलुओं में अवस्थित है। पहला, परमेश्वर ने मनुष्य को विश्व का शासक होने के लिए बनाया।[३२] विश्व अपने आप में परमेश्वर की ओर आंतरिक संवेदनशीलता नहीं रखता है। इसलिए, परमेश्वर प्रत्यक्ष रूप से विश्व का शासन नहीं करता है। बल्कि, परमेश्वर ने मनुष्य को विश्व में सब वस्तुओं के लिए अनुभूति प्रदान की है और उन्हें विश्व पर प्रत्यक्ष रूप से शासन करने का जनादेश दिया है। परमेश्वर ने मानव शरीर को भौतिक दुनिया के तत्वों से बनाया है—जैसे पानी, मिट्टी और हवा—ताकि हम समझ से उस पर शासन करें। आत्मालोक का अनुभव और प्रशासन संभव करने के लिये परमेश्वर ने हमारी आत्मा उन्हीं आत्मिक तत्वों से बनाई है जिनसे आत्मालोक बना है। रूपांतर के पहाड़ पर मूसा और एलिय्याह, जिनकी मृत्यु सैकड़ों वर्ष पहले हुई थी, यीशु की सेवा में उसके सामने

[३०] सृष्टि १.२
[३१] इब्रानियों ८:५
[३२] उत्पत्ति १:२८

प्रगट हुए।[३३] यह आत्माएं वास्तव में मूसा और एलिय्याह की थीं, फिर भी यीशु उनसे बातें कर सका और उनके सामने उसकी महिमा हुई। मनुष्य, जो मांस की देह से बना है भौतिक संसार पर राज्य करता है, और आत्मा से आत्मिक दुनिया पर हावी होता है, इस प्रकार उसमें दोनों दुनिया पर राज्य करने की क्षमता है।

दूसरा, परमेश्वर ने मनुष्य को जगत का बिचवई और सामंजस्यपूर्ण केन्द्र होने के लिए बनाया। जब एक व्यक्ति का शरीर और आत्मा आदान-प्रदान क्रिया के द्वारा मिल कर एक होते हैं और वह परमेश्वर का वास्तविक पात्र साझी बन जात है, तब भौतिक संसार और आत्मिक संसार भी उस व्यक्ति पर केन्द्रित होकर उसके साथ आदान-प्रदान क्रिया आरंभ करते हैं। इस प्रकार, वे परमेश्वर के प्रति उत्तरदायी जगत बनाने के लिए सामंजस्यपूर्ण एकीकरण प्राप्त करते हैं। हवा की तरह, जो दो समस्वरण तारों को एक दूसरे के साथ गूँजने के लिए सक्षम करती है, एक सच्चा इंसान मध्यस्थ बनकर दो संसारों के बीच सामंजस्य के केंद्र के रूप में कार्य करता है। दो संसारों के बीच संवाद करने की क्षमता की तुलना रेडियो या टेलीविजन से भी की जा सकती है जो अदृश्य तरंगों को प्रत्याक्ष छवियों और ध्वनियों में रूपांतरण करते हैं। इस प्रकार, लोग आत्मिक दुनिया की वास्तविकताओं को भौतिक दुनिया के लिये ठीक-ठीक व्यक्त कर सकते हैं।

तीसरा, परमेश्वर ने मनुष्य को जगत की सब वस्तुओं के तत्वों को ठोस रूप में संपुटित करके बनाया है। ईश्वर ने मनुष्य की आंतरिक प्रकृति और बाहरी रूप को अनगिनत भौतिक रूपों में बनाए रखने और विकसित करने का अनुमान लगाकर विश्व का निर्माण किया। परमेश्वर ने जगत को, पूर्व विद्यमान मानव प्रतिमा की आंतरिक प्रकृति और बाह्य रूप को आगे प्रक्षेपित किया और उसका विकास करके अनगिनत वास्तविक रूपों में गढ़ा। क्योंकि परमेश्वर ने आत्मा की आंतरिक प्रकृति और बाह्य रूप को पसार करके आत्मालोक बनाया है इसलिये मनुष्य की आत्मा स्वर्ग में पाए जाने वाले सारे तत्वों को संपुटित करती है। क्योंकि परमेश्वर ने मनुष्य की आंतरिक प्रकृति और बाह्य रूप को फैला कर भौतिक संसार बनाया है, इसलिए मनुष्य का शरीर पृथ्वी पर पाए जाने वाले सभी तत्वों को संपुटित करता है। तदनुसार, क्योंकि मनुष्य अपने अंदर जगत की सभी वस्तुओं के तत्वों के सार को समाहित किए हुए है, प्रत्येक व्यक्ति स्वयं सूक्ष्म जगत होता है।

परंतु, मानव पतन के कारण जगत ने अपना स्वामी खो दिया है। संत पौलुस ने लिखा है, “क्योंकि सृष्टि बड़ी आशा भरी दृष्टि से परमेश्वर के पुत्रों के प्रगट होने की बाट जोह रही है”[३४]—अर्थात, ऐसे लोग जो उनकी मूल अवस्था में बहाल किए गए हैं। दु:ख की बात तो यह है कि मनुष्य को, जिसे सार्वभौमिक सामंजस्य का केंद्र होना चाहिए था, उसके पतन के कारण उसका शारीरिक और आत्मिक दुनिया के बीच आदान-प्रदान क्रिया का संबंध भी टूट गया। इस तरह दोनों दुनिया आपस में सामंजस्य और एकता प्राप्त करने में बिलकुल असमर्थ हो गईं हैं। चूंकि वे इस तरह विभाजित हो गई हैं, संत पौलुस आगे कहता है,

---

[३३] मत्ती १७.३

[३४] रोमियों ८:१९

"क्योंकि हम जानते हैं कि सारी सृष्टि अब तक मिलकर कराहती है।"[३५]

यीशु शरीर और आत्मा में पूर्ण होकर नए आदम के रूप में आया था, वह जगत का लघु रूप था। इसी लिये लिखा है, "परमेश्वर ने सब कुछ उसके पाँव तले कर दिया।[३६] यीशु हमारा उद्धारकर्ता है। वह दुनिया में पतित लोगों के पूर्ण होने का रास्ता खोलने के लिये आया, हमारे दिलों को जीत कर उसने हमें उस पर विश्वास करना सिखाया ताकि हम उसके साथ एक हो जाएं।

६.३ भौतिक और आत्मिक शरीर के बीच पारस्परिक संबंध

६.३.१ भौतिक शरीर की संरचना और प्रकार्य

हमारे भौतिक शरीर में मन (कर्ता साझी) और शारीरिक देह (पात्र साझी) के स्थान पर होते हैं और दोनों में द्वैत अभिलक्षण होते हैं। शारीरिक मन, देह को जीवित रहने के लिए आवश्यक संरक्षण और प्रजनन के कार्य करने के लिए निर्देशित करता है। उदाहरण की तौर पर, सहजज्ञान पशु के शारीरिक मन का एक पहलू होता है। भौतिक शरीर को अच्छे स्वास्थ्य में रहने के लिए, उचित पुष्टिकारक पदार्थों का पोषण करना आवश्यक है। उसे हवा और सूरज की रोशनी अवशोषित करनी चाहिये, जो कि अमूर्त यांग प्रकार के पौष्टिक पदार्थ हैं, और उसे खाना, खाना और पानी पीना चाहिये जो कि ठोस यिन प्रकार के पौष्टिक पदार्थ हैं। शरीर अपनी पाचन और संचार प्रणाली के माध्यम से इन पौष्टिक पदार्थों के साथ आदान-प्रदान क्रिया करता है।

शरीर के निजी धर्म या अधर्म के आचार-व्यवहार, आत्मा के अच्छे या बुरे बनने के मुख्य निर्धारक होते हैं। यह इसलिये कि शरीर आत्मा को एक विशेष तत्व प्रदान करता है जिसे *मार्मिक तत्व* कहते हैं। हमारे प्रतिदिन के अनुभव में हमारा शरीर जब अच्छे कर्म करता है तो मन आनंदित होता है, परन्तु हमारे बुरे आचरण से व्याकुल होता है। यह इसलिये कि मार्मिक तत्व, जो शरीर के कर्म के अनुसार अच्छे या बुरे हो सकते हैं, वह हमारी आत्मा को प्रभावित करते हैं।

६.३.२ आत्मिक शरीर की संरचना और प्रकार्य

हमारी आत्मा एक ठोस तथापि अमूर्त वास्तविकता है, जो केवल आध्यात्मिक ज्ञानेंद्रियों के माध्यम से ही अनुभव की जा सकती है। और यह हमारे शरीर की कर्ता साझी है। हमारी आत्मा प्रत्यक्षतः परमेश्वर से संपर्क रख सकती है और अमूर्त संसार का शासन करने के लिए बनी है, जिनमें स्वर्गदूत भी शामिल हैं। दिखने में हमारी आत्मा हमारे शरीर के समान है। शरीर त्यागने के पश्चात हम आत्मालोक में प्रवेश करते हैं और वहाँ अनंत काल रहते हैं। हम नित्य जीवन की लालसा इसलिये करते हैं क्योंकि हमारा अंतरतम-आत्म हमारी आत्मा है जो चिरकालिक है। हमारी आत्मा द्वैत अभिलक्षणिक है, जिस में *आत्मिक मन* (कर्ता साझी) होता है और *आत्मिक देह* (पात्र साझी) होती है। आत्मिक मन आत्मा का

---

[३५] रोमियों ८:२२

[३६] कुरिंथियों १५:२७

केन्द्र होता है, जहाँ परमेश्वर वास करता है।

आत्मा, दो प्रकार के पौष्टिक पदार्थों के बीच आदान-प्रदान के द्वारा बढ़ती है: परमेश्वर से मिले यांग प्रकार के सजीव तत्व, और यिन प्रकार के मार्मिक-तत्व जो भौतिक शरीर से मिलते हैं। आत्मा शरीर से न केवल मार्मिक-तत्व प्राप्त करती है परन्तु वह एक तत्व शरीर को वापस भी देती है जिसे हम *जीवित आत्मिक तत्व* कहते हैं। जब लोग स्वर्गीय आत्मा से अनुग्रह पाते हैं, तो वे अपने शरीर में बहुत से सकारात्मक बदलाव अनुभव करते हैं, उन्हें अनंत आनंद महसूस होता है और उनमें एक नई शक्ति भर जाती है जो बीमारियों पर भी प्रबल होती है। ऐसे माजरे इसलिये होते हैं क्योंकि शरीर आत्मा से जीवित आत्मिक तत्व प्राप्त करता है।

आत्मा केवल शरीर में रहकर ही बढ़ सकती है। तथा, शरीर और आत्मा के बीच का संबंध वैसा ही होता है जैसा कि पेड़ और उसके फल के बीच होता है। जब शारीरिक मन आत्मिक मन की आज्ञा मानता है और शरीर आत्मा के अच्छे मनभावन उद्देश्य पर चलता है तब शरीर आत्मा से जीवित आत्मिक तत्व प्राप्त करता है और स्वस्थ बन जाता है। इस तरह शरीर अच्छे मार्मिक तत्व आत्मा को वापस प्रदान करता है, जो आत्मा को अच्छाई की ओर बढ़ने के लिये शक्ति देता है।

सत्य, आत्मिक मन की अंतरतम आकांक्षाओं को जाग्रत करता है। एक व्यक्ति को पहले सत्य के द्वारा अपने आत्मिक मन की गहरी आकांक्षा को समझना चाहिये, तब इस ज्ञान को अपना उत्तरदायित्व पूरा करने के लिये काम में लगाना चाहिये। तब ही उसके अंदर जीवित आत्मिक तत्व और मार्मिक-तत्व परस्पर लेन-देन करेंगे और उसको अच्छाई की ओर बढ़ावा देंगे। जीवित आत्मिक तत्व और मार्मिक तत्व के बीच आंतरिक प्रकृति और बाह्य रूप का संबंध होता है। चूँकि सभी लोगों में जीवित आत्मिक तत्व हमेशा कार्यशील रहते हैं, इसलिये दुष्ट व्यक्ति का मूल मन भी अच्छाई की ओर झुकता है। तथापि, जब तक वह वस्तुतः अच्छाई का जीवन व्यतीत नहीं करता, तब तक जीवित आत्मिक तत्व और मार्मिक तत्व आपस में ठीक तरह से आदान-प्रदान नहीं कर सकते, और ना ही वे शरीर को स्वास्थ्यकारी बनाने के लिये शरीर में अनुप्राणित किए जा सकते हैं।

ऊपर अंकित अभिलेख से हम यह अनुमान लगा सकते हैं कि आत्मा एक व्यक्ति के केवल पार्थिव जीवन काल के दौरान में ही पूर्णता प्राप्त कर सकती है। आत्मिक मन के मार्गदर्शन से आत्मा शरीर में रह कर बढ़ती है। सृष्टि के नियम के अधीन आत्मा का पूर्णता की ओर विकास तीन नियमित चरणों के माध्यम से होता है। जीवन के गठन-चरण में आत्मा को *प्रारूप-आत्मा* कहा जाता है; विकास-चरण में, *जीव-आत्मा*, और निष्पत्ति-चरण में, *दिव्य-आत्मा* कहा जाता है।

आत्मा उसी समय पूरी तरह से परिपक्व होकर दिव्य आत्मा बनती है जब किसी व्यक्ति की आत्मा और उसका भौतिक शरीर परमेश्वर पर केन्द्रित सही आदान-प्रदान क्रिया के माध्यम से एकजुट होकर चार-दशा-आधार स्थापित करते हैं। एक दिव्य आत्मा आत्मिक दुनिया की हर वास्तविकता को सही ढंग से बूझ सकती है। यह आत्मिक वास्तविकताएं शरीर के द्वारा अनुनादित होती हैं और अपने आप को दैहिक घटना के रूप में व्यक्त कर सकती हैं और पांच भौतिक ज्ञानेंद्रियों के माध्यम से पहचानी जा सकतीं हैं। दिव्य आत्मा से भरे लोग जो इस प्रकार आत्मिक दुनिया के साथ सामंजस्य रखते हैं वे पृथ्वी

पर स्वर्ग का राज्य बनाते हैं। जब वह अपनी देह त्यागते है तो वे आत्मालोक में स्वर्ग के राज्य में आसानी से पारगमन करते हैं। इस कारण, पृथ्वी पर स्वर्ग का राज्य स्थापित होने के पश्चात ही आत्मालोक में स्वर्ग का राज्य साधित हो सकता है।

आत्मा की सभी संवेदनशीलताएं सांसारिक जीवन के दौरान शरीर के साथ परस्पर संबंध से पैदा की जाती हैं। इसलिए, जब मनुष्य पूर्णता प्राप्त कर लेता है और धरती पर रहते हुए पूरी तरह से परमेश्वर के प्रेम में विसर्जित हो जाता है तो मृत्यु के बाद उसकी आत्मा परमेश्वर के प्रेम का आनन्द लेती है। आत्मा के सारे लक्षण शरीर में रहकर ही विकसित होते हैं। संसारी जीवन में पापमय आचरण अधर्म को बढ़ावा देते हैं और पतित व्यक्ति की आत्मा को कुरूप बनाते हैं, जबकि सांसारिक जीवन के दौरान मिले हुए पापों का मोचन आत्मा को अच्छा बनने के लिए रास्ता खोलता है। यही कारण था कि यीशु को पापी मानवता को बचाने के लिए शरीर में होकर पृथ्वी पर आना पड़ा। हमें पृथ्वी पर अच्छा जीवन व्यतीत करना चाहिये। यीशु ने पतरस को पृथ्वी पर स्वर्ग के राज्य की कुंजी दी,[३७] और कहा, “और जो कुछ तू पृथ्वी पर बाँधेगा, वह स्वर्ग में बंधेगा और जो कुछ तू पृथ्वी पर खोलेगा वह स्वर्ग में खुलेगा”,[३८] क्योंकि, दैवी पुनरुद्धार के कार्य का प्राथमिक उद्देश्य पहले पृथ्वी पर पूरा किया जाना चाहिए।

मनुष्य की आत्मा मृत्यु के पश्चात स्वर्ग में जाएगी या नरक में प्रवेश करेगी, यह फैसला परमेश्वर नहीं करता है स्वयं आत्मा ही करती है। मनुष्य इस प्रकार से बनाए गए हैं कि पूर्णता तक पहुंचने के बाद ही वे पूरी तरह से परमेश्वर के प्रेम में एकप्राण हो सकते हैं। जो लोग पृथ्वी पर पाप करते हैं उनकी आत्मा अपाहज हो जाती है और वे पूरी तरह से परमेश्वर के साथ उसके प्रेम में एकात्म होने में असमर्थ रहते हैं। उनको परमेश्वर के सामने जो सच्चे प्रेम का केंद्र है खड़े होने में पीड़ा होती है। परमेश्वर के प्रेम से दूर नरक में रहने का चुनाव वे स्वयं अपने आप करते हैं।

चूँकि मनुष्य की आत्मा केवल शरीर में रहकर विकसित होती है, मानव आत्माओं का गुणन संसार में शारीरिक जीवन के दौरान, शरीर के गुणन के साथ होता है।

६.३.३ *आत्मिक मन, शारीरिक मन, और मनुष्य के मन से उनका आपसी संबंध*

मनुष्य के मस्तिष्क में आत्मिक मन और शारीरिक मन दोनों होते हैं। इन दोनों मन के बीच का संबंध आंतरिक प्रकृति और बाह्य रूप के बीच के संबंध के जैसा होता है। जब वे परमेश्वर पर केन्द्रित आदान-प्रदान क्रिया के द्वारा एक हो जाते है तो वे एक संयुक्त कार्यशील सत्व बन जाते हैं, जो आत्मा और शरीर को सामंजस्यपूर्ण बनाने में मार्गदर्शन करता है और सृष्टि के उद्देश्य की ओर प्रगति करता है। यह संयुक्त सत्व मनुष्य का मन है।

विवेक मानव मन का संकाय है, जो अपनी स्वाभाविक प्रकृति के आधार पर, हमेशा हमारा मार्गदर्शन उस ओर करता है जिसे हम अच्छा समझते हैं। लेकिन, पतन के कारण, मनुष्य परमेश्वर के

---

[३७] मत्ती १६:१९

[३८] मत्ती १८:१८

ज्ञान से अनभिज्ञ है और इसलिये अच्छाई के पूर्ण मानक से भी अनभिज्ञ हैं। यही कारण है कि हम अपने विवेक के लिए अनुकूल धारणा का मानक स्थापित करने में असमर्थ हैं। जैसे-जैसे अच्छाई का मानक बदलता है, विवेक का मानक भी डांवांडोल होता है, जो लोग शुद्ध अंतःकरण के जीवन का समर्थन करते हैं उनके लिए यह प्रायः प्रतिविरोध का कारण बन जाता है।

मूल मन मनुष्य के मन का वह संकाय है जो यथेष्ट अच्छाई की खोज करता है। यह विवेक से उसी तरह से संबंध रखता है जिस प्रकार आंतरिक प्रकृति बाह्य रूप से। अच्छाई की खोज के लिए, किसी व्यक्ति का विवेक उसके अपने मानक के अनुसार जो उसने अनभिज्ञता में रह कर निश्चित किया है, चाहे वह मूल मानक से भिन्न क्यों ना हो, उसका मार्ग दर्शन करता है। तथापि, मूल मन, उचित निर्देशन से सचेत होने के कारण, इस त्रुटिपूर्ण मानक का प्रतिरोध करता है और विवेक को सुधारने का प्रयत्न करता है।

जब तक हमारा आत्मिक मन और शारीरिक मन शैतान के बंधन के तहत हैं, वे आदान-प्रदान क्रिया के द्वारा जो क्रियाशील वास्तविकता स्थापित करते हैं वह अधर्मी मन कहलाता है। अधर्मी मन लगातार लोगों को बुराई करने के लिए उकसाता रहता है। हमारा मूल मन और विवेक हमें बुराई से प्रतिरोध करने के लिये निर्देशित करता है। वह हमें शैतान से बंधन तोड़ने के लिए बुरी इच्छाओं को त्यागने और अच्छाई से लिपट कर परमेश्वर की तरफ मुड़ने के लिये घोर प्रयत्न से हमारा मार्गदर्शन करता है।

दिव्य नियम प्रतिपादन

भाग १

अध्याय २

मनुष्य का पतन

विषय सूची

अध्याय २ पृष्ठ

मनुष्य का पतन ५८

संभाग १

पाप की जड़ ५९

१.१ जीवन का वृक्ष और भले और बुरे के ज्ञान का वृक्ष ५९

१.१.१ जीवन का वृक्ष ६०

१.१.२ भले और बुरे के ज्ञान का वृक्ष ६२

१.२ सर्प की पहचान ६२

१.३ स्वर्गदूत का पतन और मनुष्य का पतन ६३

१.३.१ स्वर्गदूत का अपराध ६३

१.३.२ मनुष्य का अपराध ६४

१.३.३ स्वर्गदूत और मनुष्य के बीच अवैध यौन संबंध ६४

१.४ भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल ६५

१.५ पाप की जड़ ६६

संभाग २

पतन का कारण और प्रक्रिया ६७

२.१ स्वर्गदूत, उनके मिशन और उनका मनुष्य से संबंध ६७

२.२ आत्मिक पतन और शारीरिक पतन ६८

२.२.१ आत्मिक पतन ६८

२.२.२ शारीरिक पतन ६९

संभाग ३

प्रेम की शक्ति और नियम की शक्ति और परमेश्वर की आज्ञा ७१

३.१ मनुष्य के पतन में प्रेम की शक्ति और नियम की शक्ति ७१

३.२ परमेश्वर ने आज्ञा को विश्वास की वस्तु बनाकर क्यों स्थापित किया ७१

३.३ वह अवधि जिसके दौरान आज्ञा का होना आवश्यक था ७२

संभाग ४

मनुष्य के पतन के परिणाम ७४

४.१ शैतान और पतित मानवता ७४

४.२ मनुष्य के समाज में शैतान की गतिविधियाँ ७४

४.३ उद्देश्य के दृष्टिकोण से भले और बुरे का अवलोकन ७५

४.४ अच्छी आत्माओं और बुरी आत्माओं के कार्य ७७
४.५ पाप ७५
४.६ पतित स्वभाव के मुख्य अभिलक्षण ७५

संभाग ५
स्वतंत्रता और मनुष्य का पतन ८१
५.१ नियम के दृष्टिकोण से स्वतंत्रता का अर्थ ८१
५.२ स्वतंत्रता और मनुष्य का पतन ८१
५.३ स्वतंत्रता, पतन और पुनरुद्धार ८२

संभाग ६
परमेश्वर का पहले मानव पूर्वजों के पतन में हस्तक्षेप ना करने का कारण ८४
६.१ सृष्टि के नियम की संपूर्णता और पूर्णता को बनाये रखना ८४
६.२ केवल परमेश्वर ही सृष्टिकर्त्ता हो ८४
६.३ मनुष्य को सृष्टि का स्वामी बनाने के लिए ८५

मनुष्य का पतन

सभी लोगों के पास मूल मन होता है जो उन्हें बुराई का त्याग करने के लिये और अच्छाई का अनुसरण करने के लिए प्रोत्साहित करता है। फिर भी, अनजाने में हम अधर्म की शक्तियों के दबाव से अच्छाई का जो हमारा मौलिक मन चाहता है परित्याग करते हैं, और बुराई करते हैं जो हम अपने अंतरतम हृदय से नहीं करना चाहते हैं। जब तक यह बुराई की शक्तियाँ हम पर हमला करती रहेंगी, मनुष्य का पापी इतिहास बिना रोक टोक जारी रहेगा। हम शैतान की शक्तियों को पूरी तरह से नष्ट करने में असमर्थ रहे हैं क्योंकि हम शैतान को पहचान नहीं पाए हैं या वह कैसे अस्तित्व में आया समझ नहीं सके हैं। बुराई को उसकी जड़ से उखाड़ने के लिये और इस प्रकार पापी इतिहास को समाप्त करके अच्छाई के युग में प्रवेश करने के लिए, हमें चाहिए कि पहले हम शैतान को बेनक़ाब करें, उसका ध्येय और उसके आदि-कारण की जानकारी करें, और जो विनाश उसने मानव जीवन में गढ़ा है पहचाने। मनुष्य के पतन की यह व्याख्या इन मुद्दों को स्पष्ट करेगी।

संभाग १

पाप की जड़

यह कोई नहीं जानता कि पाप की जड़ लोगों के दिलों की गहराइयों में निहित है और उन्हें निरंतर बुराई के रास्ते की ओर ले जाती है। बाईबल पर आधारित, ईसाई लोगों का यह एक अस्पष्ट विश्वास है कि आदम और हव्वा का अच्छाई और बुराई के ज्ञान के पेड़ का फल खाना, पाप की जड़ है। कुछ ईसाई लोगों का विश्वास कि अच्छाई और बुराई के पेड़ का फल सचमुच का फल है, दूसरों का यह विश्वास है कि फल एक प्रतीक है, जिस तरह बाईबल में बहुत सी बातें प्रतीकात्मक भाषा में लिखी हैं। इसे सफाई से समझने के लिये आयें हम बाईबल में मनुष्य के पतन के बारे में विभिन्न व्याख्याओं पर विचार करें।

१.१ जीवन का वृक्ष और भले और बुरे के ज्ञान का वृक्ष

आदम और हव्वा का पतन हुआ जब उन्होंने भले और बुरे के वृक्ष का फल खाया। अब तक बहुत से ईसाई लोग सोचते हैं कि यह फल सचमुच के वास्तविक वृक्ष का फल था। परंतु क्या परमेश्वर, जो मनुष्य का प्रेमी पिता है, ऐसा आकर्षक फल बनाएगा जिससे पतन होना संभव हो?[३९] और वह उसे ऐसे स्थान पर रखेगा जहाँ उसके बच्चे आसानी से पहुँच सकें? इसके अतिरिक्त, यीशु ने कहा, "जो मुंह में जाता है वह मनुष्य को अशुद्ध नहीं करता पर जो मुंह से निकलता है वही मनुष्य को अशुद्ध करता है।"[४०] तो फिर खाने की वस्तु जो मनुष्य खाता है पतन का कारण कैसे हो सकती है?

मानव जाति मूल पाप से पीड़ित है, यह मूल पाप हमें हमारे पहले पूर्वजों से विरासत में मिला है। तथापि, किसी चीज़ के खाने से पाप उनकी संतान को कैसे पारित हो सकता है? कोई भी वस्तु विरासत में तब ही प्राप्त की जा सकती है जब वह वंश के माध्यम से संतान में प्रसारित हो जाए, यही एकमात्र तरीका हो सकता है। किसी वस्तु के खाने से उसका हानिकारक प्रभाव थोड़े समय के लिए होता है, वंश के माध्यम से लगातार जारी नहीं रखा जा सकता।

कुछ लोगों का यह मानना है कि परमेश्वर ने भले और बुरे के ज्ञान के पेड़ का फल इसलिये बनाया ताकि वह अपने प्रति आदम और हव्वा की वफादारी को परख सके। इस पर हम यह सवाल कर सकते हैं: क्या प्रेम करने वाला परमेश्वर इतनी निर्दयता से मनुष्य की परीक्षा ले सकता है कि वह उनकी मौत का कारण बन जाए? आदम और हव्वा को मालूम था कि जिस क्षण वे फल खाएंगे वे मर जाएंगे, क्योंकि यह परमेश्वर ने उनसे कहा था, फिर भी उन्होंने खा लिया। आदम और हव्वा को खाने की कमी तो नहीं थी। या केवल किसी ज़ायकेदार खाना खाने के लिये वह अपनी जान को जोखिम में तो नहीं डाल सकते थे। इसलिए, हम यह अनुमान लगा सकते हैं कि भले और बुरे के ज्ञान के पेड़ का फल एक साधारण फल नहीं हो सकता। बल्कि, यह कुछ ऐसी असाधारण अत्यधिक उत्तेजक वस्तु हो सकती है कि मृत्यु का भय भी उन्हें उसके लोभ से रोक नहीं सका।

---

[३९] उत्पत्ति ३.६

[४०] मत्ती १५:११

यदि भले और बुरे के ज्ञान के पेड़ का फल वास्तविक फल नहीं था, तो फिर वह कोई बोधक चिह्न होना चाहिये जो किसी दूसरी ही वस्तु को दिखाता है। इसलिए हम हठ के साथ फल की शाब्दिक व्याख्या पर क्यों अड़े रहें जबकि बाईबल प्रतीकवाद और रूपकों का बहुतायत से उपयोग करती है? हमारे लिये विश्वास के साथ इस संकीर्ण और प्राचीन रवैये का परित्याग करना ही अच्छा होगा।

भले और बुरे के ज्ञान के पेड़ का फल किस वस्तु को दिखाता है, यह जानने के लिए, आयें हम सबसे पहले जीवन के पेड़ की जो अदन के बाग में भले और बुरे के ज्ञान के पेड़ के साथ खड़ा था, जाँच करें।[४१] जब हम जीवन के पेड़ का अर्थ समझ जाएंगे, उसके बाद ही हम भले और बुरे के ज्ञान के पेड़ का मतलब समझ सकेंगे।

१.१.१ जीवन का वृक्ष

बाईबल के अनुसार, जीवन के वृक्ष को प्राप्त करना या उस तक पहुँचना, यह पतित लोगों की आशा रही है: "जब आशा पूरी होने में विलम्ब होती है, तो मन शिथिल होता है, परन्तु जब लालसा पूरी होती है तो वह जीवन का वृक्ष होता है।"[४२] यह संकेत करता है कि पुराने नियम के युग में इज़राएल के लोग जीवन के पेड़ को आशा भरी दृष्टि देखते थे। उसी प्रकार, यीशु के समय से आज तक सभी ईसाइयों की आशा भी जीवन के वृक्ष तक पहुँचने और उसे प्राप्त करने के लिए रही है: "धन्य हैं वे जो अपना वस्त्र धो लेते हैं, क्योंकि उन्हें जीवन के वृक्ष के पास जाने का अधिकार मिले और वे फाटकों में से होकर नगर में प्रवेश करेंगे।"[४३] चूंकि मानव जाति की अंतिम आशा जीवन के वृक्ष की है, हम अनुमान कर सकते हैं कि आदम की आशा भी जीवन के पेड़ के लिये थी।

यह लिखा है कि जब आदम का पतन हुआ, तब परमेश्वर ने जीवन के पेड़ की ओर जाने वाला मार्ग बंद कर दिया था और मार्ग पर करूबों और ज्वालामय तलवारों के पहरे खड़े कर दिये थे।[४४] इससे हम यह अनुमान लगा सकते हैं कि आदम को पतन से पहले जीवन के पेड़ की आशा थी। उसकी यह आशा पूरी हुए बिना आदम अदन की वाटिका से बाहर निकाल दिया गया। तब से पतित लोगों की जीवन के वृक्ष की आशा अधूरी ही रही है।

जब आदम जवान हो रहा था और किशोरावस्था में था, उसकी क्या आशा थी? उसकी यह आशा हो सकती है कि वह एक ऐसा इनसान बनें जो जवान होकर पाप में गिरे बिना पूर्णता प्राप्त कर सके और परमेश्वर का सृष्टि का आदर्श साकार कर सके। वास्तव में जीवन का वृक्ष वह व्यक्ति है जो पूर्ण रूप से सृष्टि का आदर्श साकार करके पूर्ण आदम बन गया हो। आदम एक ऐसा आदर्श व्यक्ति बनने वाला था। इस तरह, जीवन का वृक्ष पूर्ण आदम का प्रतीक है।

यदि आदम का पतन न हुआ होता और उसने जीवन का वृक्ष प्राप्त कर लिया होता, तो उसका

---

[४१] उत्पत्ति २:९

[४२] नीतिवचन १३:१२

[४३] प्रकाशितवाक्य २२:१४

[४४] उत्पत्ति ३:२४

सारा वंश भी जीवन का वृक्ष प्राप्त करने में सफल होता, और पृथ्वी पर स्वर्ग का राज्य स्थापित हो जाता। लेकिन आदम ने पाप किया, इसलिए परमेश्वर ने ज्वालामय तलवार से वृक्ष की ओर जाने वाला रास्ता बंद कर दिया। तब से सृष्टि के आदर्श को बहाल करने के लिये, पतित लोगों की बहुत कोशिशों के बावजूद भी, जीवन का वृक्ष अप्राप्य स्वप्न बन कर रह गया। मूल पाप के बोझ के कारण पतित लोग सृष्टि का आदर्श पूरा नहीं कर सकते और अपने ख़ुद के प्रयासों द्वारा वे जीवन का वृक्ष नहीं बन सकते। इस आदर्श को पूरा करने के लिये एक व्यक्ति को, जिसने सृष्टि का आदर्श पूर्ण कर लिया हो, जीवन के वृक्ष के रूप में पृथ्वी पर आना चाहिए। तब सारी मानवता को उसके साथ आरोपित[४५] होना चाहिए। यीशु वह पुरुष था जो जीवन के वृक्ष के रूप में आया था। जीवन का वृक्ष, जिसकी लालसा पुराने नियम[४६] के वफादार लोग करते थे, वह सिवाय यीशु के और कोई नहीं था।

जब से परमेश्वर ने, आदम के लिए जीवन के वृक्ष का मार्ग रखवाली करने वाली ज्वालामय तलवार से बन्द किया है, तब से जब तक यह रास्ता पहले खोला नहीं जाता वृक्ष से संपर्क नहीं किया जा सकता था। पिन्तेकुस्त के दिन, आग जैसी जीभें संतों के ऊपर उतरीं, और वे सब पवित्र आत्मा से भर गए।[४७] यह घटना मार्ग का खोला जाना और ज्वालामय तलवार का हटाया जाना दर्शाती है, जो पवित्र आत्मा के ज़ोर से उतरने से पहले जीभों के रूप में प्रगट हुई थीं। इससे मानवता के लिये यीशु तक, जो जीवन का वृक्ष है, पहुँचने का रास्ता खुल गया, ताकि वे यीशु के साथ रोपे जा सकें।

फिर भी, ईसाई लोग यीशु के साथ केवल आत्मिक रूप से रोपे जाते हैं। यही कारण है कि अत्यंत धर्मनिष्ठ ईसाई माता-पिताओं के बच्चे भी मूल पाप के वारिस होते हैं, जो मुक्ति के लिये छुड़ाए जाने चाहिए। यहाँ तक कि अति श्रद्धापूर्ण संत लोग भी मूल पाप से मुक्त नहीं हैं और अपने बच्चों को इस सामर्थ्यहीनता से मूल पाप पारेषित करते हैं।[४८] यही कारण है कि मसीह को जीवन का वृक्ष बनकर फिर से पृथ्वी पर आना पड़ेगा। और फिर सारी मानवता को अपने आप में आरोपित करके मूल पाप से छुटकारा देना होगा। इसी वजह से ईसाई लोग बड़ी व्याकुलता से जीवन के वृक्ष की बाट जोहते हैं, जो कि प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में दूसरे आगमन के ख्रीस्त का प्रतीक बताया गया है।[४९]

दैवी पुनरुद्धार के कार्य का उद्देश्य, प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में वर्णित, अदन की वाटिका के जीवन के वृक्ष को प्राप्त करने की विफलता को सफलता में बदल कर जीवन के वृक्ष को फिर से साधित करना है। पतन के कारण, आदम जीवन के वृक्ष का आदर्श पूरा नहीं कर सका[५०]। पतित मानवता का पूर्ण उद्धार करने के लिये अंतिम दिनों में यीशु को "अंतिम आदम" के रूप में[५१] जीवन का वृक्ष बन कर

---

[४५] रोमियों ११:१७ जिस तरह बाईबल यीशु और विश्वासियों के बीच संबंध की तुलना अंगूर की लता और उसकी डालियों के साथ करती है (यूहन्ना १५:४-५) और यीशु को जीवन का वृक्ष कह कर दिखाती है।

[४६] नीतिवचन १३:१२

[४७] प्रेरितों २:३-४

[४८] प्रति-संदर्भ/मसीहा १

[४९] प्रकाशितवाक्य २२:१४

[५०] उत्पत्ति २:९

[५१] कुरिंथियों १५:४५

फिर से आना चाहिये।

१.१.२ भले और बुरे के ज्ञान का वृक्ष

परमेश्वर ने आदम को अकेले रहने के लिये नहीं पैदा किया था; उसने हव्वा को भी उसकी पत्नी होने के लिए बनाया। जिस तरह, अदन की वाटिका में एक वृक्ष था जो पूर्ण पुरुष का प्रतीक था, वहाँ एक दूसरा वृक्ष भी होना चाहिये जो ऐसी स्त्री को दिखाये जिसने सृष्टि का आदर्श पूर्ण रूप से साकार किया हो। जीवन के वृक्ष के पास, जो वृक्ष खड़ा था[५२], वह भले और बुरे के ज्ञान का वृक्ष था, यह एक आदर्श स्त्री का प्रतीक है जिसने अपने अच्छे उद्देश्य को साकार किया है, वह आदर्श स्त्री पूर्ण हव्वा थी।

बाईबल, यीशु के संबंध में दाखलता[५३] और डालियों[५४] के रूपकों का उपयोग करती है। उसी तरह, परमेश्वर ने पूर्ण आदम और हव्वा के लिए दो वृक्षों के प्रतीकवाद का इस्तेमाल करके मनुष्य के पतन का रहस्य खोला है।

१.२ सर्प की पहचान

बाईबल में हम पढ़ते हैं कि एक सर्प ने हव्वा को पाप करने के लिए बहकाया।[५५] यह सर्प किस वस्तु का प्रतीक हो सकता है? आइए हम उत्पत्ति के इस वृत्तांत पर आधारित इस सर्प की असली पहचान की जाँच करें। बाईबल में वर्णित यह सर्प जो मनुष्य के पतन का कारण बना, लोगों के साथ बातचीत करने में सक्षम था। इसके अतिरिक्त, यह सर्प परमेश्वर की इच्छा को जानता था कि उसने मनुष्य को भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल खाने के लिए सख़्ती से मना किया है। यह अरोक सबूत हैं कि यह प्राणी जो सर्प के नाम से पहचाना जाता है एक आत्मिक प्राणी है।

यह लिखा है:

> वह बड़ा अजगर, अर्थात वही पुराना साँप जो इबलीस और शैतान कहलाता है और सारे संसार को भरमानेवाला है, पृथ्वी पर गिरा दिया गया,...*प्रकाशितवाक्य१२:९*

यह वही पुराना सर्प है जिसने अदन की वाटिका में हव्वा को भरमाया था। जो पहले स्वर्ग में रहता था फिर पृथ्वी पर गिराया गया, यह जो इबलीस या शैतान के नाम से जाना जाता है, यही वह आत्मिक प्राणी है। वास्तव में, जब से मनुष्य का पतन हुआ है, शैतान लगातार लोगों के दिलों को बुराई की ओर भड़काता है। यही शैतान, जो सर्प के नाम से पहचाना जाता है, आत्मिक प्राणी है। बाईबल के यह सबूत इस बात की पुष्टि करते हैं कि हव्वा को जिस सर्प ने बकाया था वह जानवर नहीं था परंतु आत्मिक प्राणी शैतान था।

---

[५२] उत्पत्ति २:९

[५३] यूहन्ना १५:५

[५४] यशायाह ११.१ यिर्मयाह २३:५

[५५] उत्पत्ति ३:४-५

अब सवाल उठता है कि यह आत्मिक सत्व जो सर्प का प्रतीक है क्या यह जगत के निर्माण से पहले अस्तित्व में था या जगत के एक हिस्से के रूप में बनाया गया था। यदि यह जगत के निर्माण से पहले अस्तित्व में था और उसका उद्देश्य परमेश्वर के उद्देश्य के विपरीत था तो फिर जगत में भले और बुरे के बीच का संघर्ष अनिवार्य है और सार्वकालिक है। तो फिर परमेश्वर के पुनरुद्धार की योजना व्यर्थ होगी। इसके अतिरिक्त, एक ईश्वरवाद की धारणा कि जगत में सब कुछ एक परमेश्वर के द्वारा बनाया गया है, निराधार होगी। इस तरह हमारे पास केवल यही एक निष्कर्ष रह गया है कि वह आत्मिक सत्व जो सर्प के रूप में दर्शाया गया है वह मूल में एक अच्छे उद्देश्य से रचा गया था, परन्तु बाद में पाप में गिर गया और शैतान बन गया।

परमेश्वर की सृष्टि में ऐसा आत्मिक प्राणी जो मनुष्यों से बातचीत कर सकता था, परमेश्वर की इच्छा को समझता था और स्वर्ग में रहता था, कौन हो सकता है? वह किस प्रकार का प्राणी हो सकता है जो पतन के कारण भ्रष्ट होने के बाद भी समय और अंतराल से परे मनुष्य की जीवात्मा पर प्रभुत्व करता है? स्वर्गदूतों के अलावा कोई भी ऐसा प्राणी नहीं है जिस में ऐसी विशेषताएं पाई जातीं हैं। बाईबल का यह अनुवाक्य, "परमेश्वर ने उन स्वर्गदूतों को भी जिन्होंने पाप किया नहीं छोड़ा, पर नरक के अंधेरे कुण्डों में डाल दिया"[५६] इस निष्कर्ष का समर्थन करता है कि सर्प जिसने मनुष्य को भरमाया और पाप किया था, वह एक स्वर्गदूत है।

सर्प की जीभ दो नोकों वाली होती है। यह दर्शाता है कि जो एक जीभ से विरोधाभासी बातें करता हो और जो एक दिल, दोमुंहा जीवन जीता है। अपने शिकार को खाने से पहले सर्प अपना शरीर उसके के गिर्द घुमा कर मरोड़ता है, यह रूपक किसी ऐसे व्यक्ति के लिये उपयोग किया जाता है जो दूसरों को अपने लाभ के लिये जाल में फंसाता है। इन कारणों से, बाईबल उस स्वर्गदूत को, जिसने मनुष्य को भरमाया था, सर्प की उपमा देती है।

१.३ स्वर्गदूत का पतन और मनुष्य का पतन

यह स्पष्ट है कि जिस सर्प ने मनुष्य को पतन के लिये भरमाया था वह दूत था, और कि उसके पाप करने के कारण वह शैतान बन गया। हमें अब इस बात की जाँच करनी है कि वह पाप किस प्रकार का था जो दूत और मनुष्य ने किया।

१.३.१ स्वर्गदूत का अपराध

> फिर जिन स्वर्गदूतों ने अपने पद को स्थिर ना रखा वरन् अपने निज निवास को छोड़ दिया, उसने उनको भी उस भीषण दिन के न्याय के लिये अंधकार में, जो सदा काल के लिये है, बंधनों में रखा है। यहूदा की पत्री ६-७

इस आयत से हम यह अनुमान लगा सकते हैं कि दूत अवैध यौन संबंध के परिणामस्वरूप पाप में गिरा।

---

[५६] २ पतरस २:४

व्यभिचार एक ऐसा अपराध है जो अकेले नहीं किया जा सकता। अदन की वाटिका में दूत ने किसके साथ अवैध यौन किया था? इस रहस्य को खोलने के लिये, आएं हम इस बात की जाँच करें कि मनुष्य ने किस प्रकार का पाप किया।

१.३.२ मनुष्य का अपराध

हमने पढ़ा है कि इससे पहले कि वे पाप में गिरे, आदम और हव्वा दोनों नंगे थे, और उन्हें अपने नंगे होने की लाज नहीं थी।[५७] पतन के बाद, तथापि, उन्हें अपने नंगे होने से लाज आई और उन्होंने अपने तन के निचले भागों[५८] को ढाँकने के लिये अंजीर की पत्तियाँ सिल कर लुंगी बनाई। यदि उन्होंने भले और बुरे के ज्ञान के पेड़ का वास्तविक फल खाने का अपराध किया होता तो अवश्य ही उन्हें अपना हाथ या मुंह ढाँपना चाहिये था। ग़लतियाँ छिपाना मानव स्वभाव है। इस प्रकार, अपने निचले भागों को ढाँकने की कार्रवाई से पता चलता है कि ये भाग उनकी शर्म के स्रोत थे, उनके मुंह नहीं। अय्यूब ३१:३३ में लिखा है, "यदि मैंने आदम के समान अपना अपराध छिपाकर अपने अधर्म को ढाँप लिया हो।"[५९] पतन के बाद आदम ने अपने निचले भागों को छिपाया था; यह इंगित करता है कि उसका कलंक उसके निचले भागों में था। आदम और हव्वा के लैंगिक अंग उनकी लज्जा के कारण थे, क्योंकि वे उनके पापी कारनामों के साधन थे।

पतन से पहले की दुनिया में वह कौन सा ऐसा कर्म हो सकता है, जो कोई अपनी जान को जोखिम में डालकर कर सकता था? वह प्रेम-भोग के कृत्य के सिवाय और कुछ नहीं हो सकता। परमेश्वर का सृष्टि का उद्देश्य, जो इन आशीर्वादों में वर्णित है, "फूलो-फलो और प्रजनन करो,"[६०] केवल प्रेम के द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। तदनुसार, परमेश्वर के सृष्टि के उद्देश्य के दृष्टिकोण से, प्रेम-भोग सब से अधिक मूल्यवान और पवित्र कृत्य है। परन्तु चूँकि पतन का कारण कामुक संबंध ही था, इसलिये बहुधा लोग इसे लज्जा या घृणा से जोड़ते हैं। अंत में हम इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं, कि मनुष्य अवैध संभोग संबंध के कारण पाप में गिरा।

१.३.३ स्वर्गदूत और मनुष्य के बीच अवैध यौन संबंध

अब तक हमने यह बताया है कि एक दूत ने मनुष्यों को पाप में गिरने के लिये बहकाया था, और कि दूत और मनुष्य दोनों अवैध यौन प्रेम के कारण पाप में गिरे। जगत में केवल मनुष्य और स्वर्गदूत ही ऐसे आत्मिक प्राणी है जो प्रेम संबंध करने के लिए सक्षम हैं। इससे हम अनुमान लगा सकते हैं कि इस अवैध लैंगिक संबंध में दूत और मनुष्य दोनों शामिल थे।

यीशु ने कहा, "तुम अपने पिता शैतान से हो और अपने पिता की लालसाओं को पूरा करना चाहते

---

[५७] उत्पत्ति २:२५
[५८] उत्पत्ति ३:७
[५९] किंग जेमस संस्करण
[६०] उत्पत्ति १:२८

हो”।[६१] चूँकि शैतान[६२] दुष्ट आत्मा के रूप में पहचाना जाता है, तो हम यह दावे से कह सकते हैं कि मनुष्य शैतान के वंशज हैं, वही “प्राचीन सर्प” जिसने मनुष्य को भरमाया था। किन परिस्थितियों के कारण मानव जाति पतित दूत शैतान की सन्तान बन गये? दूत और हमारे पहले पूर्वजों के बीच अवैध यौन संबंध हुआ था। इस संबंध के फलस्वरूप सारी मानवता शैतान का वंश बन गई है। जब संत पौलूस ने लिखा, “और केवल वही नहीं पर हम भी जिनके पास आत्मा का पहला फल है आप ही अपने में कराहते हैं; और लेपालक होने की, अर्थात् अपनी देह के छुटकारे की बाट जोहते हैं,”[६३] वह यह स्वीकार कर रहा था कि हम पतित लोग शैतान के वंश से निकले है परमेश्वर के वंश से नहीं। यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने भी लोगों को झिड़का “सांप के बच्चो”, यानी उन्हें शैतान के बच्चे कहकर बुलाया।[६४] यीशु ने शास्त्रियों और फरीसियों से कहा, “हे सांप और करैतों के बच्चो, तुम नरक के दण्ड से कैसे बचोगे।”[६५] यह आयतें प्रमाणित करती हैं कि हम अवैध यौन के संबंध के वंश हैं जिसमें दूत और हमारे पहले पूर्वज शामिल थे। यथार्थ में, यह मानव पतन की वास्तविकता है।

१.४ भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल

पहले यह बताया गया है कि भले और बुरे के ज्ञान का वृक्ष हव्वा का प्रतीक था। तो इस वृक्ष का फल किस वस्तु का प्रतीक हो सकता है? यह हव्वा के प्रेम को प्रगट करता है। जैसे कि एक वृक्ष फल के द्वारा अपना गुणन करता है, हव्वा को चाहिये था कि वह अपने पवित्र प्रेम के माध्यम से अच्छे बच्चों को जन्म दे। परंतु, इसके बजाय, उसने शैतानी प्रेम के माध्यम से बुरे बच्चे पैदा किए। हव्वा अपरिपक्व अवस्था में रची गई थी; वह विकास की अवधि से गुजरने के बाद ही पूर्ण प्रौढ़ता प्राप्त कर सकती थी। इस प्रकार, उसका अच्छे या बुरे फल देना, दोनों संभव था। यही कारण है कि भले और बुरे के ज्ञान के पेड़ का फल हव्वा के प्रेम का प्रतीक है, इस तरह हव्वा को स्वयं वृक्ष का प्रतीक होना चाहिए।
भले और बुरे के ज्ञान के पेड़ का फल खाना क्या दर्शाता था? जब हम कुछ खाते हैं, तो हम उसे अपने आप का हिस्सा बना लेते हैं। हव्वा को आदम के साथ परमेश्वर पर केन्द्रित प्रेम संभोग से अच्छाई का फल खाना चाहिये था। तब उसे परमेश्वर की दिव्यता का सार प्राप्त होता है और वह एक अच्छा वंश प्रजनन कर सकती थी। लेकिन, उसने बुराई का फल खाया, यानी शैतान के साथ अपवित्र प्रेम संभोग किया। इस तरह उसने अपने अंदर शैतान की दुष्ट प्रकृति का सार प्राप्त किया और अधर्मी वंश जारी किया जिससे हमारा यह पापी समाज आरंभ हुआ है। तदनुसार, भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल खाना यह द्योतित करता है कि हव्वा ने दूत के साथ शैतानी प्रेम संबंध निर्वाह किया, जिससे वह उसके साथ रक्त बंधन में बंध गई।

---

[६१] यूहन्ना ८:४४
[६२] प्रकाशितवाक्य १२:९
[६३] रोमियों ८:२३
[६४] मत्ती ३:७
[६५] मत्ती २३:३३

परमेश्वर ने पतित दूत को श्राप दिया, “तू पेट के बल चलेगा और जीवन भर मिट्टी चाटेगा”।[६६] “तू पेट के बल चलेगा,” इसका अर्थ है कि तू एक दुखी दूत बन कर जीएगा, अच्छे कार्य करने में असमर्थ होगा और अपना मूल उद्देश्य नहीं निबाह सकेगा। “मिट्टी खाने” का अर्थ हुआ कि जब से दूत स्वर्ग से नीचे फेंक दिया गया है[६७] वह परमेश्वर की ओर से मिलने वाले जीवन तत्वों से वंचित किया गया है। इसके बजाय, उसे पापी दुनिया से दुष्ट तत्व बटोर कर उन पर निर्वाह करना पड़ता है।

१.५ पाप की जड़

हमने बाईबल की उपरोक्त व्याख्या से यह सीखा है, पाप की जड़ पहले मानव पूर्वजों का किसी फल के खाने की वजह को संकेत नहीं करती है, बल्कि उनका दूत के साथ (जो सर्प का प्रतीक है) अवैध लैंगिक संबंध को प्रगट करती है। परिणामस्वरूप, उन्होंने परमेश्वर के शुद्ध वंश का प्रजनन नहीं किया, बल्कि शैतान के अधर्मी वंश का प्रजनन किया।

हमारे पास पर्याप्त सबूत हैं जो हमें यह पहचानने में सहायता करते हैं कि मनुष्य के पाप की जड़ व्यभिचार से फूटी है। हम जानते हैं कि मूल पाप वंश के माध्यम से पीढ़ी दर पीढ़ी जारी रहा है। यह इसलिये है क्योंकि पाप की जड़ यौन संबंधों के द्वारा जारी रहती है और लोगों को रक्त के संबंध से बांधती है। इसके अलावा, जो धर्म पाप से शुद्धिकरण की आवश्यकता पर ज़ोर देते हैं और व्यभिचार को मूल पाप के रूप में देखते हैं वे इसे रोकने के लिए शुद्धता और संयम जैसे सदगुण सिखाते हैं। इज़राएली पवित्रता के लिए भुगतान की शर्त के रूप में खतने का अनुष्ठान करते थे। यह बात इंगित करती है कि पाप की जड़ वासनात्मक इच्छाओं में पायी जाती है। वे रक्त निकाल कर ख़ुद को परमेश्वर के चुने हुए लोगों के योग्य करते थे, क्योंकि पाप की जड़ अधर्मी रक्त में, जो व्यभिचार के द्वारा हमारे अस्तित्व में प्रविष्ट हुआ, पाई जाती है।

कामुक स्वच्छंद-संभोग बहुत से नायकों, देशभक्तों और देश के पतन का प्रमुख कारण है। बहुत से अति कुलीन लोगों में भी पाप की यह जड़—अवैध यौन कामना—उनकी आत्मा में निरंतर सक्रिय रहती है, और यहाँ तक कि होश के बिना अनजाने में भी क्रियाशील होती है। हम अन्य सभी बुराइयों को धर्म के माध्यम से नैतिक नियमों की स्थापना के द्वारा, विभिन्न शैक्षिक कार्यक्रमों को अच्छी तरह अनुबंध करके और सामाजिक-आर्थिक प्रणालियों में जो अपराध को बढ़ावा देतीं हैं सुधार करके मिटा सकते हैं। परन्तु लैंगिक स्वच्छंद-संभोग की महामारी की अत्यधिक प्रबलता को कोई भी रोक नहीं सकता, विशेष करके ऐसे समाज में जहाँ सभ्यता की प्रगति ने जीवन शैली को अधिक आरामदायक और आलसी बना दिया है। इसलिए, आदर्श दुनिया की आशा करना व्यर्थ सपना ही है जब तक यह बला जो सारी बुराइयों की जड़ है, जड़ से उखाड़ी नहीं जाती। दूसरे आगमन पर मसीह को इस समस्या को एक बार पूरी तरह से हल करने में सक्षम होना चाहिए।

---

[६६] उत्पत्ति ३:१४

[६७] यशायाह १४:१२ प्रकाशित वाक्य १२:९

संभाग २

पतन का कारण और प्रक्रिया

मानव पतन की अभिप्रेरणा स्वर्गदूत में पहले से थी, जैसा कि हमने देखा है कि जिसने हव्वा को भरमाया था और कि वह सर्प का प्रतीक बताया गया है। इसलिये, इससे पहले कि हम पतन के अभिप्रेरण और उसकी प्रक्रिया को समझें, हमें स्वर्गदूत के बारे में मालूमात करना आवश्यक है।

२.१ स्वर्गदूत, उनके मिशन और उनका मनुष्य से संबंध

हर प्राणी की तरह स्वर्गदूत भी परमेश्वर के द्वारा बनाए गए हैं। परमेश्वर ने उन्हें सारी सृष्टि से पहले रचा था। बाईबल में स्वर्ग और पृथ्वी की रचना के विवरण में हम देखते हैं कि परमेश्वर बहुवचन में बात करता है: "हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएंगे।"[६८] यह ऐसा इसलिये नहीं कि परमेश्वर स्वयं को ट्रिनिटी के रूप में संदर्भित कर रहा था, जैसे कि बहुत से ईसाई धर्मशास्त्री लोग इस वाक्य का अर्थ निकालते हैं। बल्कि, वह स्वर्गदूतों से बात कर रहा था, जिनको उसने मनुष्य की रचना से पहले बनाया था।

परमेश्वर ने स्वर्गदूतों को सेवकों के रूप में बनाया था, जो जगत की रचना और सेवकाई करने में उसको सहायता देनेवाले थे। बाईबल में हम स्वर्गदूतों के ऐसे बहुत से उदाहरण पाते हैं जो परमेश्वर की इच्छा के लिये कार्य करते हैं। स्वर्गदूतों ने अब्राहम को परमेश्वर के आशीर्वाद के महत्वपूर्ण वचन देकर अवगत किया;[६९] एक स्वर्गदूत ने मसीह के गर्भाधान की सूचना दी;[७०] एक स्वर्गदूत ने पतरस की बेड़ियों को खोल कर उसे जेलख़ाने से बाहर निकाल कर शहर में ले गया।[७१] वह स्वर्गदूत जिसने प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में यूहन्ना का अनुरक्षण किया और जो अपने आप को "सेवक" बताता है,[७२] और इब्रानियों की पुस्तक में स्वर्गदूतों को "सेवा टहल करने वाली आत्माएँ" बताया गया है।[७३] बाईबल अकसर स्वर्गदूतों को परमेश्वर का सम्मान और प्रशंसा करने वाले दर्शाती है।[७४]

आएँ हम सृष्टि के नियम के दृष्टिकोण से मनुष्यों और स्वर्गदूतों के बीच संबंध की जांच करें। क्योंकि परमेश्वर ने हमें अपने बच्चों के रूप में बनाया और हमें समस्त सृष्टि पर प्रभुत्व दिया,[७५] हमें स्वर्गदूतों पर भी हुकूमत करने का अधिकार है। बाईबल में लिखा है कि हमें स्वर्गदूतों का न्याय करने का अधिकार है।[७६] बहुत से लोग जो आत्मालोक की आत्माओं के साथ बातचीत कर सकते हैं वे इस बात की साक्षी देते हैं कि स्वर्गदूत वैकुंठ में संतों का अनुरक्षण करते हैं। इन अवलोकनों से यह तथ्य स्पष्ट

---

[६८] उत्पत्ति १:२६
[६९] उत्पत्ति १८:१०
[७०] मत्ती १:२०, लूका १:३१
[७१] प्रेरितों १२:७-१०
[७२] प्रकाशितवाक्य २२:९
[७३] इब्रानियों १:१४
[७४] प्रकाशितवाक्य ५:११-१२, ७:११-१२
[७५] उत्पत्ति १:२८
[७६] १ कुरिंथियों ६:३

होता है कि स्वर्गदूतों का मिशन मनुष्यों की सेवा टहल करना है।

२.२ आत्मिक पतन और शारीरिक पतन

परमेश्वर ने मनुष्य की रचना दो हिस्सों में की है: आत्मिक काया और भौतिक शरीर। इसी तरह मनुष्य का पतन भी दो आयामों में हुआ: आत्मिक और भौतिक। वह पतन जो स्वर्गदूत और हव्वा के बीच यौन संबंध से हुआ वह आत्मिक पतन था, जबकि वह पतन जो हव्वा और आदम के बीच लैंगिक संबंध से हुआ वह भौतिक पतन था।

स्वर्गदूत और मनुष्य के बीच कामुक प्रेम कैसे संभाव्य है? वह सभी भावनाएँ और संवेदनाएँ जो एक व्यक्ति और एक आत्मा के बीच होतीं हैं, वह बिल्कुल वैसी ही होतीं हैं जो दो सांसारिक व्यक्तियों के बीच संपर्क के दौरान अनुभव की जातीं हैं।

हम इसे निम्नलिखित सबूत से और अधिक स्पष्ट रूप से समझ सकते हैं। कुछ ऐसे मामले सुनने में आते हैं कि सांसारिक लोग आत्माओं के साथ विवाहित जीवन बिताते हैं। बाईबल के एक दृष्टांत के अनुसार एक स्वर्गदूत ने याकूब के साथ मल्लयुद्ध किया और उसकी जाँघ की नस को जोड़ से अलग किया।[७७] तीन स्वर्गदूत अब्राहम के परिवार से मिलने आये, और उन्होंने बछड़े के मास, दूध और दही का भोजन किया।[७८] इसके अतिरिक्त, दो स्वर्गदूत लूत के घर आये, उसने उन्हें खाने को अख़मीरी रोटी दी। जब नगरवासियों ने स्वर्गदूतों को देखा तो वे उनके लिए व्यभिचार की इच्छाओं से भर गये और लूत के घर को घेर लिया और लूत को पुकार कर कहने लगे, "जो पुरुष तेरे पास आज रात को आए हैं वे कहाँ हैं, उनको हमारे पास बाहर ले आ कि हम उन से भोग करें।"[७९]

२.२.१ *आत्मिक पतन*

परमेश्वर ने स्वर्गदूतों की दुनिया बनाई, और लूसिफर[८०] को प्रधान स्वर्गदूत के पद पर रखा। लूसिफर स्वर्गदूतों की दुनिया में स्वर्गदूतों के लिये परमेश्वर के प्रेम का माध्यम था, ठीक उसी प्रकार जैसे अब्राहम इज़राएलियों के लिये परमेश्वर की आशीष का माध्यम था। इस पद पर उसे वस्तुतः परमेश्वर के प्रेम का एकाधिकार प्राप्त था। परंतु, परमेश्वर का मनुष्य को अपने बच्चों के रूप में रचने के पश्चात, वह उन्हें लूसिफर से कई गुणा अधिक प्रेम करता था, क्योंकि लूसिफर को परमेश्वर ने अपने सेवक के रूप में रचा था। सच तो यह है कि लूसिफर के प्रति परमेश्वर का प्रेम बदला नहीं था, मनुष्य की रचना से पहले और रचना के पश्चात भी प्रेम वही था। परंतु, जब लूसिफर ने देखा कि परमेश्वर आदम और हव्वा को उससे अधिक प्रेम करता है तो उसे महसूस हुआ कि अब उसे परमेश्वर का प्रेम कम मिल रहा है। यह

---

[७७] उत्पत्ति ३२:२५

[७८] उत्पत्ति १८:८

[७९] उत्पत्ति १९:५

[८०] यशायाह १४:१२ (महादूत दिन का सितारा, प्रभात का पुत्र कहलाता है) यह रिवाईज़्ड स्टैंडर्ड वरज़न में है।

परिस्थिति बाईबल में दाख की बारी के एक दृष्टान्त में मजदूरों के समान है।[८१] यद्यपि, जिन मज़दूरों ने सुबह से काम किया था उनको ठीक मज़दूरी मिली, परन्तु जब उन्होंने देखा कि जो लोग देर से आए थे और उन्होंने कम काम किया है फिर भी उनको उतनी ही मज़दूरी मिली, तब वे सोचने लगे कि उन्हें कम मज़दूरी मिली है। लूसिफर को भी ऐसा महसूस हुआ कि जैसे उसे उसके हक से कम प्रेम मिल रहा है जबकि वह यह चाहता था कि उसे मनुष्य समाज में भी वैसा ही केंद्रीय स्थान मिले जैसा उसे स्वर्गदूतों के बीच परमेश्वर के प्रेम का माध्यम बन कर मिल रहा था। यही कारण था कि उसने हव्वा को बहकाया, यह आत्मिक पतन का अभिप्रेरण था।

जगत में सब कुछ परमेश्वर के प्रेम के माध्यम से शासित किए जाने के लिए बनाया गया है। इस प्रकार, प्रेम जीवन का स्रोत है, खुशी की कुंजी है, और ऐसे आदर्श का सार है जिसके लिए सभी प्राणी लालसा करते हैं। जितना प्रेम कोई प्राप्त करता है, उतना अधिक वह दूसरों को सुंदर लगता है। स्वर्गदूत जो सेवक के रूप में बनाया गया था, जब उसने परमेश्वर की बेटी हव्वा को देखा तो यह स्वाभाविक ही था कि वह उसकी आंखों में सुंदर लगी। इसके अतिरिक्त, जब लूसिफर ने देखा कि हव्वा उसके प्रलोभन में अभिरुचि ले रही है तो स्वर्गदूत उसके मधुर प्रेम से उत्तेजित होने लगा। ठीक इस समय, परिणाम की परवाह किए बिना, लूसिफर मन ही मन उससे संभोग करने की मंशा से उसे फुसलाने लगा। लूसिफर, ने तीव्र वासना की आग से अभिभूत होकर अपना उचित स्थान छोड़ दिया, और हव्वा ने, जो समय से पहले अपनी आँखें खोलना चाहती थी और परमेश्वर के जैसी बनना चाहती थी,[८२] स्वर्गदूत के साथ मैत्री-संबंध बना कर आदान-प्रदान क्रिया शुरू की। इस तरह उनके आदान-प्रदान क्रिया के द्वारा अनैतिक प्रेम से पैदा हुई शक्ति उन पर हावी हुई और उन्होंने आत्मिक स्तर पर संभोग किया।

सभी प्राणी नियम के आधार पर इस तरह से बनाए गए हैं कि जब वे प्रेम संभोग से एक हो जाते हैं तो वे एक दूसरे के साथ मूलतत्त्वों की अदल-बदल करते हैं। तदनुसार, हव्वा जब लूसिफर के साथ प्रेम के माध्यम से एक हो गई उसने लूसिफर से कुछ विशेष तत्व प्राप्त किए। सबसे पहले, सृष्टि के उद्देश्य का उल्लंघन करने से उसे दोषी अंतरात्मा के कष्ट से उत्पन्न होने वाली भय की भावना का अहसास हुआ। दूसरा, उसे लूसिफर से ऐसी बुद्धि प्राप्त हुई जिसने उसे यह समझने के लिये समक्ष किया कि मूल में उसका भावी पति आदम था, स्वर्गदूत नहीं। हव्वा तरुण अवस्था में होने के कारण प्रधान स्वर्गदूत से ज्ञान प्राप्त करने की स्थिति में थी, वह प्रधान स्वर्गदूत की तरह अनुभवी नहीं थी, जो पहले ही परिपक्व दूत की अवस्था में था।

२.२.२ शारीरिक पतन

पूर्ण आदम और हव्वा को परमेश्वर के प्रेम में नित्य पति-पत्नी बनना चाहिए था। परन्तु हव्वा जिसने अपनी तरुण अवस्था में प्रधान स्वर्गदूत के साथ अवैध संबंध स्थापित किया था, आदम के साथ

---

[८१] मत्ती २०:१-१५

[८२] उत्पत्ति ३:५-६

भी पति पत्नी संबंध बना कर जुड़ गई थी। इस तरह, आदम ने भी अपनी कुमार अवस्था में पाप किया। आदम और हव्वा के बीच शैतान के प्रेम पर केन्द्रित असामयिक वैवाहिक संबंध शारीरिक पतन का कारण हुआ।

जैसा कि ऊपर वर्णन किया गया है कि प्रधान स्वर्गदूत के साथ आत्मिक पतन के द्वारा हव्वा ने दोषी अंतरात्मा के कष्ट से उत्पन्न होने वाले भय को महसूस किया और उसे नई बुद्धि मिली जिससे वह यह समझ सकी कि उसका मूल भावी पति स्वर्गदूत नहीं था परन्तु आदम था। हव्वा ने तब आदम को इस आशा से लुभाया कि यदि वह अपने भावी पति के साथ एक हो जाए तो वह इस भय से छुटकारा प्राप्त कर सकेगी और एक बार फिर परमेश्वर के सामने खड़ी हो सकेगी। हव्वा की यह सोच उसके शारीरिक पतन का कारण बनी।

जिस क्षण हव्वा प्रधान स्वर्गदूत के साथ अवैध यौन संबंध से बंध गई वह आदम के सम्मुख प्रधान स्वर्गदूत की भूमिका में खड़ी दृष्टिगत हुई। इस प्रकार, आदम, जो अभी भी परमेश्वर का प्रेम प्राप्त कर रहा था उसे बहुत ही आकर्षक दिखाई दिया। आदम को देखकर उसे लगा कि परमेश्वर के पास वापस लौट कर जाने का वही एक ज़रिया है इस आशा से उसने आदम को बहकाया। इस तरह, जो भूमिका प्रधान स्वर्गदूत ने हव्वा को बहका कर खेली थी वही किरदार हव्वा ने आदम के साथ अदा किया। आदम हव्वा के बहकावे में आकर उसके साथ सहमत हो गया, इस प्रकार दोनों के बीच अनुचित आदान-प्रदान क्रिया आरंभ हुई। उनके इस संबंध के द्वारा जो अनैतिक प्रेम की शक्ति उत्पन्न हुई उसने आदम को अपना मूल स्थान छोड़ने के लिए लाचार किया और दोनों को एक साथ अवैध शारीरिक वासनात्मक प्रेम से बांध दिया।

जब आदम हव्वा के साथ एकात्म होकर जुड़ गया, तब जो तत्व हव्वा ने प्रधान स्वर्गदूत से प्राप्त किए थे वह सब उसमें भर गए। ये तत्व बिना रुकावट सभी क्रमिक पीढ़ियों में पारित होते आ रहे हैं। यदि आदम ने पतित हव्वा के प्रलोभन में पड़े बिना सिद्धता प्राप्त कर ली होती, तो क्या होता? तो हव्वा के लिये दैवी पुनरुद्धार का कार्य अपेक्षाकृत आसान हो जाता, हालांकि वह पतित अवश्य हुई थी, फिर भी आदम उसका अछूता पूर्ण कर्ता साझी के रूप में बना रहता। दुर्भाग्यवश, आदम ने भी पाप किया इस तरह शैतान का वंश स्थापित हो गया और पाप आज तक मानवता में बढ़ता आया है।

संभाग ३

प्रेम की शक्ति, नियम की शक्ति और परमेश्वर की आज्ञा

३.१ मनुष्य के पतन में प्रेम की शक्ति और नियम की शक्ति

मनुष्य नियम के माध्यम से बनाए गये हैं, इसलिये उनका नियम के पथ के अनुसार जीना अनिवार्य है। इसलिए, ऐसा नहीं हो सकता कि जो शक्ति नियम में निहित है वह किसी को नियम के पथ से विचलित होने के लिये प्रेरित करे और उसके पाप में गिरने का कारण बने। इसकी तुलना एक ट्रेन से की जा सकती है, ट्रेन या पटरी में कोई ख़राबी आने के सिवाय ट्रेन पटरी पर से नहीं उतर सकती, जबतक कोई बाहरी शक्ति जो ट्रेन की गति से अधिक बलशाली हो, उसके साथ टकरा कर उसे दूसरी तरफ धक्का ना मारे। इसी तरह, मनुष्यों के लिए भी वह शक्ति जो नियम में निहित है उनके विकास के लिए उचित दिशा में उनका मार्गदर्शन करती है। लेकिन अगर कोई और अधिक शक्तिशाली बल दूसरी दिशा से सिद्धांतहीन उद्देश्य के साथ उनसे टकराए तो वे निश्चित रूप से गिर सकते हैं। वह शक्ति जो नियम की शक्ति से अधिक प्रबल है, वह शक्ति प्रेम की शक्ति के सिवा और कुछ नहीं हो सकती। जबतक मनुष्य अपरिपक्वता की अवस्था में रहता है, यह संभव है कि अनैतिक प्रेम की शक्ति उन्हें पाप में गिरने के लिए प्रेरित कर सकती है।

प्रेम की शक्ति नियम की शक्ति से अधिक शक्तिशाली क्यों है? परमेश्वर ने उसे अधिक शक्तिशाली क्यों बनाया, जबकि ऐसी संभावना, कि विकृत प्रेम, यदि किसी व्यक्ति से उसकी अप्रौढ़ अवस्था में टकराए तो उसे भ्रष्ट कर सकता है?

सृष्टि के नियम के अनुसार, परमेश्वर का प्रेम सब प्रकार के प्रेम का, जो चार-दशा-आधार की नींव में बहते हैं, कर्ता है, और यह नींव उस समय स्थापित होती है जब उसके सदस्य एक दूसरे के लिए शक्ति-युक्त प्रेम के माध्यम से तीन-पात्र-प्रयोजन पूरा करते हैं। परमेश्वर के प्रेम के बिना सच्चा चार-दशा-आधार कदापि स्थापित नहीं किया जा सकता, परमेश्वर के प्रेम के बिना जिस उद्देश्य के लिये हमारा सृजन किया गया है वह कदापि पूर्ण नहीं किया जा सकता। वास्तव में प्रेम हमारे जीवन और सुख का स्रोत है।

यद्यपि परमेश्वर ने मनुष्य को सिद्धांत के आधार पर बनाया है, तथापि वह हमारा शासन प्रेम के द्वारा करता है। तदनुसार, प्रेम को अपनी उचित भूमिका निबाहने के लिए उसकी शक्ति सिद्धाँत की शक्ति से अधिक प्रबल होनी चाहिये। यदि प्रेम की शक्ति सिद्धांत की शक्ति से कमजोर होती तो परमेश्वर प्रेम के द्वारा मनुष्य का शासन नहीं कर पाता; बल्कि, हम परमेश्वर के प्रेम से अधिक सिद्धांत का अनुसरण करते। इसी कारण से, यीशु ने अपने चेलों को सत्य पर चलाने की कोशिश की, लेकिन उसके प्रेम से उनका उद्धार हुआ।

३.२ परमेश्वर ने आज्ञा को विश्वास की वस्तु बनाकर क्यों स्थापित किया

परमेश्वर ने आदम और हव्वा को "फल न खाने" की आज्ञा देकर उनके विश्वास को बढ़ाने की कोशिश क्यों की? अपरिपक्व अवस्था में आदम और हव्वा परमेश्वर के प्रेम के द्वारा प्रत्यक्ष रूप से शासित नहीं किए जा सकते। क्योंकि प्रेम की शक्ति सिद्धांत की शक्ति से अधिक बलशाली है, परमेश्वर को इस बात का पूर्वाभास था कि यदि वे कभी भी प्रधान स्वर्गदूत के साथ संबद्ध हों तो यह संभाव्य है कि वे विकृत, अनैतिक प्रेम का शिकार बन कर पाप में गिर सकते हैं। इसे रोकने के लिए, परमेश्वर ने आदम और हव्वा को यह आज्ञा दी ताकि वे इस प्रकार प्रधान स्वर्गदूत के संबंध न रखें। प्रधान स्वर्गदूत का सिद्धांतहीन प्रेम चाहे कितना ही शक्तिशाली क्यों ना होता, यदि आदम और हव्वा परमेश्वर की आज्ञा को मान कर केवल परमेश्वर ही के साथ संबंध कायम रख कर लेन-देन करते तो प्रधान स्वर्गदूत के अनैतिक प्रेम का उन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता, और वे पाप में कभी नहीं गिरते। दुर्भाग्य से, आदम और हव्वा ने आज्ञा पालन नहीं की, परन्तु प्रधान स्वर्गदूत के साथ अनुचित नाता जोड़ा। इसलिए, अवैध प्रेम की शक्ति ने उन्हें पटरी पर से धक्का मार कर गिरा दिया।

परमेश्वर ने अपरिपक्व मनुष्य को यह आज्ञा केवल उनके पतन को रोकने के लिए ही नहीं दी थी। परमेश्वर यह भी चाहता था कि वे उसकी रचनात्मक शक्ति भी उत्तराधिकार में पाकर—स्वर्गदूतों सहित—प्राकृतिक दुनिया पर राज्य करने का आनन्द उठाएं। इस सृजनात्मक शक्ति को विरासत में पाने के लिये मनुष्य को चाहिये था कि वे वचन पर विश्वास करके अपने हिस्से की ज़िम्मेदारी निभाएं और पूर्णता प्राप्त करें।[८३]

परमेश्वर ने प्रधान स्वर्गदूत को यह आज्ञा नहीं दी थी, परन्तु केवल मनुष्य ही को दी थी। परमेश्वर सृष्टि के नियम के द्वारा दिए गए मनुष्य के गौरव को बढ़ाना चाहता था, जो उन्हें परमेश्वर के बच्चों के रूप में खड़े होने का और स्वर्गदूतों पर भी राज्य करने का हकदार बनाती है।

३.३ वह अवधि, जिसके दौरान आज्ञा का होना आवश्यक था

क्या फल न खाने वाली परमेश्वर की आज्ञा हमेशा के लिए बाध्य थी? परमेश्वर का दूसरा वरदान उसी समय पूरा हो सकता है जब आदम और हव्वा परमेश्वर के प्रेम में सच्चे पति और पत्नी के संबंध में जुड़कर बच्चे पैदा करते और उनका पालन-पोषण करके परमेश्वर के प्रेम के प्रत्यक्ष प्रभुत्व में प्रवेश करते।[८४] निःसंदेह, नियम यह आदेश देता है कि यदि एक बार मनुष्य अपने चरित्र में पूर्ण प्रौढ़ता प्राप्त कर लें तब वे फल खा सकते हैं।

प्रेम की शक्ति नियम की शक्ति से अधिक बलशाली होती है। यदि आदम और हव्वा ने पूर्णता प्राप्त कर ली होती, वे धर्मी पति और पत्नी बन गये होते, और परमेश्वर के प्रेम की पूर्ण शक्ति के द्वारा परमेश्वर की प्रत्यक्ष सहभागिता का अनुभव करते, तो उनका दाम्पत्य प्रेम पूर्ण हो जाता। फिर उस प्रेम के बंधन को कोई भी व्यक्ति, और जगत में कोई शक्ति नहीं तोड़ सकती थी। इस स्थान पर पहुँच कर

---

[८३] प्रति-संदर्भ ५.२.२

[८४] उत्पत्ति १:२८

आदम और हव्वा पाप में कभी नहीं गिरते। प्रधान स्वर्गदूत, जो मनुष्य से निम्न है, उसका प्रेम किसी भी तरह से उन्हें उनके वैवाहिक प्रेम से जो एक बार परमेश्वर के साथ मज़बूती से स्थिर हो गया हो अलग नहीं कर सकता। तदनुसार, परमेश्वर की यह आज्ञा, “फल नहीं खाना”, आदम और हव्वा पर केवल जब तक वे किशोरावस्था में थे, बाध्य थी ।

संभाग ४

मनुष्य के पतन के परिणाम

आदम और हव्वा के आत्मिक और शारीरिक पतन के क्या परिणाम थे जिसका प्रभाव स्वर्गदूतों और मानवता सहित पूरे विश्व पर पड़ा? आएं हम इनमें से कुछ बहुत गंभीर परिणामों की चर्चा करें।

४.१ शैतान और पतित मानवता

प्रधान स्वर्गदूत को शैतान का नाम उसके पतन के पश्चात दिया गया। जब प्रथम मानव पूर्वजों का पतन हुआ तो उन्होंने अपने आप को लूसिफर के साथ रक्त संबंध में बांध लिया। वे चार-दशा-आधार के माध्यम से शैतान के साथ एक जुए में जोते गये, और इस प्रकार सारी मानवता शैतान का वंश बन गई। इसी कारण यीशु ने लोगों से कहा, “तुम अपने पिता शैतान के हो,” और उन्हें “सांप के बच्चे”[८५] कह कर बुलाया। संत पौलुस ने लिखा, “और केवल वही नहीं पर हम भी जिनके पास आत्मा का पहला फल है, आप ही अपने में कराहते हैं, और लेपालक होने अर्थात अपनी देह के छुटकारे की बाट जोहते हैं,”[८६] यह संकेत करते हुए कि कोई भी परमेश्वर के वंश का नहीं है। बल्कि, प्रथम मानव पूर्वजों के पतन के कारण सारी मानवता शैतान के वंश के हो गए हैं।

यदि आदम और हव्वा पूर्ण रूप से प्रौढ़ता प्राप्त करके परमेश्वर पर केन्द्रित चार-दशा-आधार स्थापित करते तो परमेश्वर के प्रभुत्व की दुनिया उसी समय स्थापित हो जाती। परन्तु जब वे कुमार अवस्था ही में थे वे पाप में गिर गए और शैतान पर केन्द्रित चार-दशा-आधार बनाई। परिणाम स्वरूप, यह दुनिया शैतान के प्रभुत्व के अधीन हो गई। इसी कारण, बाईबल शैतान को “संसार का सरदार” और “इस संसार का ईश्वर”[८७] कहती है।

मनुष्य सृष्टि के स्वामी के रूप में रचे गये थे, इसलिए जब वे शैतान के अधीन हो गए तो शैतान का प्रभुत्व विश्व की हर वस्तु पर हो गया। तदनुसार, यह लिखा है, “क्योंकि सृष्टि बड़ी आशा भरी दृष्टि से परमेश्वर के पुत्रों की बाट जोह रही है...हम जानते हैं कि सारी सृष्टि अब तक मिलकर कराहती और पीड़ाओं में तड़पती है।”[८८] यह आयतें शैतान की अधीनता में सृष्टि की पीड़ा का बयान करतीं हैं और ऐसे लोगों के प्रकटन की लालसा करतीं हैं, जो पतित ना हों और जिन्होंने अपने मूल स्वभाव को सिद्ध कर लिया हो; वह उस दिन के लिये तरसती है जब वे शैतान को परास्त करके इस धरती पर प्रेम से शासन करें।

४.२ मनुष्य के समाज में शैतान की गतिविधियाँ

शैतान सब लोगों को नरक में घसीटने के लिये परमेश्वर के सम्मुख उनपर आरोप लगाता है,

---

[८५] यूहन्ना ८:४४, मत्ती १२:३४, मत्ती ३:७
[८६] रोमियों ८:२३
[८७] यूहन्ना १२:३१—२कुरिंथियों ४:४
[८८] रोमियों ८:१९-२२

जैसे कि उसने अय्यूब के साथ किया।[८९] तथापि, शैतान भी कोई दुष्टता नहीं कर सकता जब तक वह पहले कोई पात्र साझी न बना ले, जिसके साथ एकचित्त होकर लेन-देन कायम करे। आत्मा लोक में शैतान के पात्र साझी दुष्ट आत्माएं होतीं हैं। इन दुष्ट आत्माओं के पात्र साझी संसार में दुष्ट लोगों की आत्माएं होतीं हैं, जिनके शरीर के माध्यम से यह दुष्ट आत्माएं कार्य करतीं हैं। तदनुसार, शैतान की शक्ति बुरी आत्माओं के द्वारा वहन की जाती है और संसार में लोगों के कार्यों में प्रकट होती है। उदाहरण की तौर पर, शैतान यहूदा में समाया।[९०] और यीशु ने पतरस को "शैतान"[९१] कहा। बाईबल में दुष्ट लोगों की आत्माएं शैतान के "दूत"[९२] बताए गए हैं।

पृथ्वी पर स्वर्ग का राज्य[९३] एक ऐसी पुनःस्थापित दुनिया दर्शाता है, जिसमें शैतान लोगों को बुराई की ओर बहकाने का कार्य नहीं कर सकता। इस दुनिया को साधित करने के लिए, यह आवश्यक है कि सारी मानवता शैतान के साथ साझेदारी का त्याग करें, और परमेश्वर के साथ दुबारा सहभागिता स्थापित करके उसी के साथ लेन-देन रखें। यह भविष्यवाणी कि अंतिम दिनों में परमेश्वर शैतान को एक अथाह गड्ढे[९४] में डाल देगा यह संकेत करती है कि शैतान अपनी गतिविधि में बिल्कुल असमर्थ हो जाएगा क्योंकि उसके सामने कोई नहीं होगा जिसके साथ वह संबंध बना सकेगा। शैतान के साथ हमारी सहचर्या खत्म करने और उसे आंकने में सक्षम होने के लिए,[९५] हमें शैतान की पहचान और उसके अपराध को समझना आवश्यक है ताकि परमेश्वर के सामने उसपर आरोप लगाया जा सके।

हालांकि, परमेश्वर ने मनुष्य और स्वर्गदूतों को स्वतंत्रता दी है; इसलिए, वह उन्हें बलपूर्वक सुधार नहीं सकता। मनुष्य को अपनी स्वतंत्र इच्छा ही से, परमेश्वर के वचन की पुष्टि करके अपना दायित्व निभा कर शैतान को स्वेच्छापूर्वक आत्मसमर्पण करने के लिये विवश करना चाहिए। केवल इसी प्रकार हम परमेश्वर की सृष्टि के मूल आदर्श का उद्देश्य पुनःस्थापित कर सकते हैं। चूँकि परमेश्वर अपना कार्य नियम के आधार पर करता है, पुनरुद्धार की योजना का इतिहास लगातार विलंबित होता आया है।[९६]

४.३ उद्देश्य के दृष्टिकोण से भले और बुरे का अवलोकन

भले और बुरे की परिभाषा पहले ही दी जा चुकी है,[९७] तो आयें हम आगे उद्देश्य की दृष्टि से अच्छाई और बुराई की प्रकृति की जाँच करें। यदि आदम और हव्वा परमेश्वर की इच्छा पर चल कर एक दूसरे से प्रेम करते और परमेश्वर पर केन्द्रित चार-दशा-आधार स्थापित कर लेते तो वे एक अच्छी दुनिया की

[८९] अय्यूब की पुस्तक १:९-११
[९०] लूक २२:३
[९१] मत्ती १६:३३
[९२] मत्ती २५:४१
[९३] प्रति-संदर्भ—प्रलयोत्तर २
[९४] प्रकाशितवाक्य २०:१-३
[९५] १ कुरिंथियों ६:३
[९६] प्रति संदर्भ—पूर्वनिर्धारण २
[९७] प्रति-संदर्भ—सृष्टि ४.३.२

स्थापना करते। लेकिन जब उन्होंने परमेश्वर के इरादों के विरुद्ध, विपरीत उद्देश्य के साथ एक दूसरे से प्रेम किया और शैतान पर केंद्रित चार-दशा-आधार की स्थापना की, तो उन्होंने दुष्ट संसार का गठन किया। यह इस बात को दर्शाता है कि यद्यपि अच्छे और बुरे तत्व या कार्य एक ही रूप ले सकते हैं, तो भी उनकी यथार्थ प्रकृति उनके फल के द्वारा समझी जा सकती है। वे अपने अलग-अलग उद्देश्यों के अनुसार ही अपना प्रतिफल देते हैं।

विभिन्न परिस्थितियों में यह देखने में आता है कि मानव स्वभाव का एक पहलू जो परंपरागत ढंग से बुरा माना जाता है, वास्तव में वह अच्छा होता है यदि उसका उद्देश्य परमेश्वर की इच्छा की ओर निदेशित किया गया हो। उदाहरण की तौर पर आएं हम किसी चाह की हुई वस्तु को लेते हैं। कोई इच्छा जिसे लोग प्रायः पापमय समझते है, वास्तव में वह ईश्वर प्रदत्त भी हो सकती है। आनंद सृष्टि का उद्देश्य है, और ख़ुशी उसी समय प्राप्त होती है जब इच्छा पूरी होती है।

यदि हमारे अंदर कोई मनोकामना ही न हो तो हम खुशी भी कभी अनुभव नहीं कर सकते हैं। यदि हमारे अंदर कोई आकांक्षा ना हो तो हम परमेश्वर का प्रेम प्राप्त करने की इच्छा, जीने की इच्छा, अच्छे कार्य करने या अपने आप में सुधार करने के लिए भी कोई इच्छा नहीं करेंगे। इसलिए, बिना किसी लालसा के ना तो परमेश्वर का सृष्टि का उद्देश्य और ना ही पुनरुद्धार की दैवी योजना का कार्य पूरा हो सकता है। एक सुव्यवस्थित, सामंजस्यपूर्ण और ख़ुशहाल मानव समाज भी असंभव होगा।

हमारी लालसाएं, ईश्वर प्रदत्त प्रकृति का हिस्सा होने के नाते अच्छी होतीं हैं, जब वे परमेश्वर की इच्छा के उद्देश्य के लिए फल देतीं हैं, या बुरी होतीं है जब शैतान की इच्छा के उद्देश्य के लिए फल देतीं हैं। इस आधार पर हम अनुमान लगा सकते हैं कि इस बुराई से भरी दुनिया में भी अच्छाई पुनःस्थापित की जा सकती है और पृथ्वी पर स्वर्ग का राज्य बन सकता है यदि हम मसीह के मार्गदर्शन के अनुसार अपने लक्ष्य और उद्देश्य बदलें।[९८] इस प्रकार, पुनरुद्धार की दैवी योजना का कार्य पतित संसार के वर्तमान शैतानी उद्देश्य को स्वर्ग के राज्य के निर्माण की ओर, यानी परमेश्वर के सृष्टि के आदर्श में बदलने की प्रक्रिया भी समझा जा सकता है।

पुनरुद्धार की दैवी योजना के कार्य के दौरान अच्छाई का कोई भी दिया गया मानक पूर्ण नहीं होता परन्तु आपेक्षिक होता है। इतिहास की किसी भी विशेष अवधि में, प्रचलित अधिकारियों द्वारा प्रतिपादित सिद्धांतों का अनुपालन करना अच्छा माना जाता है, जबकि उनका विरोध करने वाली क्रियाएँ बुरी मानी जाती हैं। परन्तु युग का परिवर्तन नए अधिकारियों और सिद्धांतों को, नए लक्ष्यों और अच्छे और बुरे के नए मानकों के साथ लाता है। किसी भी धार्मिक परंपरा या दर्शन के अनुयायियों के लिए उनके अपने सिद्धांतों या दर्शन के उपदेशों का पालन करना अच्छा है, जबकि उनका विरोध करना बुरा है। परन्तु जब भी किसी सिद्धांत या दर्शन में बदलाव आए, अच्छाई और बुराई के मानक भी उसके नए लक्ष्यों के अनुसार बदल जाते हैं। उसी प्रकार, किसी धर्म का समर्थक जब किसी अन्य मत या दर्शन को ग्रहण करता है तब स्वाभाविक रूप से, उसके अपने लक्ष्य और अच्छाई और बुराई के मानक भी तदनुसार बदल जाते हैं।

[९८] प्रति संदर्भ—प्रलयोत्तर विद्या २.२

संघर्ष और क्रांतियाँ लगातार मानव समाज को कष्ट देती आईं हैं, मुख्य रूप से लोग अच्छाई और बुराई के मानकों में निरंतर बदलाव के कारण विभिन्न उद्देश्यों को पूरा करने की तलाश करते हैं। फिर भी, मानव इतिहास में संघर्ष और क्रांति के अंतहीन चक्रों में लोग पूर्ण अच्छाई की जो उनका मूल मन चाहता है, तलाश करते रहें हैं। मानव इतिहास में संघर्ष और क्रांति अनिवार्यतः जारी रहेंगे, क्योंकि लोग लगातार इस असीम लक्ष्य की तलाश करते रहेंगे जब तक अच्छाई की दुनिया अंततः प्राप्य ना हो जाए। अच्छाई का मानक केवल उस समय तक आपेक्षिक रहेगा जब तक पुनरुद्धार का कार्यकाल जारी है।

एक बार जब शैतान की प्रभुता पृथ्वी से बहिष्कृत कर दी जाएगी, उसके बाद परमेश्वर जो अनन्त और पूर्ण सत्ता है, और समय और अंतरिक्ष से बढ़ कर है, अपनी प्रभुता और अपना सत्य स्थापित करेगा। उस दिन, परमेश्वर का सत्य पूर्ण हो जाएगा, अतः वह उद्देश्य जो वह नियत करेगा और अच्छाई का मानक जो वह स्थापित करेगा दोनों पूर्ण हो जाएंगे। यह जगत संबंधी एवं सर्व-व्यापक सत्य मसीह द्वारा उसके दूसरे आगमन में दृढ़ता से स्थापित किया जा जाएगा।

४.४ अच्छी आत्माओं और बुरी आत्माओं के कार्य

सामान्य पारिभाषिक शब्दों में हम “अच्छी आत्माएं” और अच्छे स्वर्गदूत उन आत्माओं को कहते हैं, जो परमेश्वर के पक्ष में हैं। शैतान और उसके पक्ष वाली आत्माओं के लिये सामान्य पारिभाषिक शब्द “दुष्ट आत्माएं” कहा जाता है। अच्छी आत्माओं और दुष्ट आत्माओं के कृत्य, आम तौर पर भले और बुरे कार्यों के मामले में आरम्भ में एक जैसे ही प्रतीत होते हैं लेकिन उनके उद्देश्य विपरीत होते हैं। समय के साथ, अच्छी आत्माओं के कार्य लोगों में शांति और धार्मिकता की भावना बढ़ाते हैं और उनके स्वास्थ्य में भी सुधार लाते हैं। बुरी आत्माओं के कार्य, उलटे, धीरे-धीरे उनकी व्यग्रता, भय और स्वार्थ को बढ़ाते हैं और उनके स्वास्थ्य के खराब होने का कारण बनते हैं। जिनको नियम की समझ नहीं है उन्हें आत्माओं के कार्यों को समझना कठिन होता है, परन्तु अंत में, प्रायः देर से, वे आत्माओं की प्रकृति उनके फल के द्वारा जान जाते हैं। चूँकि पतित व्यक्ति परमेश्वर और शैतान के बीच मध्यवर्ती स्थान पर होता है और दोनों से संबंध रखता है, इस तरह अच्छी आत्माओं के कार्य दुष्ट आत्माओं के हलके प्रभावों के साथ भी हो सकते हैं। अन्य मामलों में, वे घटनाएं जो दुष्ट आत्माओं के कार्यों के रूप में शुरू होतीं हैं, समय के साथ, अच्छी आत्माओं के कार्यों के साथ मिल जातीं हैं। इस प्रकार, उनके लिये आत्माओं को समझना बहुत कठिन है जो नियम को नहीं समझते हैं। यह बड़े खेद की बात है कि कई धार्मिक अधिकारी, अपनी अनभिज्ञता के कारण, अच्छी आत्माओं के कार्यों को दुष्ट आत्माओं के कार्यों के साथ जोड़ कर उन्हें दोषी ठहराते हैं। यह उन्हें असावधानीवश परमेश्वर की इच्छा के विरोध में खड़ा कर सकता है। वर्तमान युग में, आध्यात्मिक घटनाएं अत्यधिक प्रचलित होती जा रहीं हैं। जब तक धार्मिक नेता सही ढंग से अच्छी आत्माओं और बुरी आत्माओं के कार्यों में भेद करना न सीख लें तब तक वे उन लोगों का ठीक से मार्ग दर्शन नहीं कर सकते जो लोग आध्यात्मिक संयोग का अनुभव करते हैं।

४.५ पाप

पाप स्वर्गीय नियम की उल्लंघना है, जो तब किया जाता है जब कोई व्यक्ति शैतान के साथ मैत्री-पूर्ण संबंध बनाकर उसके साथ कार्य करने की शर्त स्थापित करता है। पाप चार प्रकार में वर्गीकृत किया जा सकता। पहला, मूल पाप है। यह पाप हमारे पहले पूर्वजों के शारीरिक और आत्मिक पतन से आरंभ हुआ है। यह हमारे वंश में अंतर्निहित है और सभी पापों की जड़ है। दूसरा, अनुवांशिक पाप है। यह वह पाप है जो वंश के माध्यम से पूर्वजों से विरासत में मिलता है। दस आज्ञाओं में लिखा है कि माता पिता के पाप उनके वंश भुगतते हैं।[९९]

तीसरा, सामूहिक पाप है। यह वह पाप है जिस का कोई व्यक्ति किसी समूह का सदस्य होने के कारण जिम्मेदार होता है, जबकि उसने न तो खुद यह पाप किया है और न ही उसने अपने पूर्वजों से विरासत में पाया है। यीशु का सूली पर चढ़ाया जाना, इस प्रकार के पाप का एक उदाहरण है। हालांकि केवल महायाजक और कुछ लेखक फरीसी लोगों ने यीशु को सूली पर चढ़ाने का काम किया था, परंतु यहूदी लोगों के साथ सारी मानवता को मिल कर इस पाप का बोझ अपने कंधों पर उठाना पड़ा। परिणाम स्वरूप यहूदी लोगों को अत्यंत पीड़ाजनक स्थिति से होकर गुज़रना पड़ा, और सारी मानवता को भी मसीह के दूसरे आगमन तक क्लेश की राह पर चलना पड़ा। चौथा, व्यक्तिगत पाप है, यह वह पाप है जो व्यक्ति स्वयं करता है।

मूल पाप सभी पापों की जड़ कहा जा सकता है, अनुवांशिक पाप वृक्ष के तने के समान है, सामूहिक पाप शाखाओं की तरह और व्यक्तिगत पाप पत्तियों के रूप में माने जा सकते हैं। हर पाप मूल पाप से उत्पन्न होते हैं जो उनकी जड़ है। मूल पाप को जड़ से नष्ट किए बिना, अन्य पापों को पूरी तरह से उन्मूलन करने का और कोई रास्ता नहीं है। कोई भी व्यक्ति इस पाप को जो समय की गहरी खाई में दफन है जड़ से उखाड़ कर निकाल नहीं सकता। केवल मसीह, जो मानवता की जड़ है और सच्चे पिता के रूप में आता है, उसको समझ सकता है और उसे जड़ से उखाड़ कर निकाल सकता है।

४.६ पतित स्वभाव के मुख्य अभिलक्षण

प्रधान स्वर्गदूत ने हव्वा को व्यभिचार के द्वारा अपने साथ रक्त संबंध में बांध लिया, और वह सब प्रवृत्तियाँ जो परमेश्वर के ख़िलाफ इस पाप से जुड़ी हुई थीं हव्वा ने विरासत में पाईं। आदम ने भी मुड़ कर वही सब प्रवृत्तियाँ हव्वा से पाईं, जब हव्वा ने, प्रधान स्वर्गदूत की भूमिका निभाते हुए, आदम के साथ व्यभिचार करके उसे रक्त संबंध में बांध लिया। यह प्रवृत्तियाँ सारी मानवता के पतित स्वभाव का मूल कारण बन गईं हैं। यही हमारी पतित प्रकृति के प्राथमिक लक्षण हैं।

पतित प्रकृति के इन प्राथमिक लक्षणों के जन्म का मूल कारण प्रधान स्वर्गदूत का परमेश्वर के प्रिय आदम की ओर ईर्षा की भावना में निहित है। प्रधान स्वर्गदूत में, जिसे परमेश्वर ने अच्छे उद्देश्य के

---

[99] निर्गमन २०:५

लिये रचा था, ईर्षा जैसी भावना कैसे हो सकती है? आकांक्षा और बुद्धि, प्रधान स्वर्गदूत की मूल प्रकृति का प्राकृतिक हिस्सा था। चूँकि प्रधान स्वर्गदूत के पास बुद्धि है, इसलिये वह यह तुलना कर सकता है और समझ सकता है कि मनुष्यों को परमेश्वर का प्रेम उससे अधिक मिल रहा है। और चूँकि उसके पास आकांक्षा भी थी इसलिये उसे परमेश्वर के प्रेम के लिये प्राकृतिक तड़प थी। ईर्ष्या मूल प्रकृति का अनिवार्य उपफल है जैसे प्रकाश में किसी वस्तु की छाया।

तब भी, पूर्णता प्राप्त कर लेने के पश्चात, मनुष्य आकस्मिक ईर्ष्या के कारण पाप में गिरने के लिए कभी नहीं उकसाया जा सकेगा। वे अपने दिल की गहराई में यह समझ सकेंगे कि अल्पकालिक परितोषण जो वे चाह की हुई वस्तुओं को प्राप्त करके महसूस करेंगे वह उनके आत्म-विनाश के दुःख के सामने कोई कीमत नहीं रखतीं। इसलिए, वे ऐसे अपराध कभी नहीं करेंगे।

वह दुनिया जहाँ सृष्टि का उद्देश्य पूरा हुआ है एक ऐसा समाज है जो मूलभूत अंतर-संबंधों पर बनाया गया है, और मानव शरीर की संरचना से बहुत कुछ मिलता जुलता है। यह जान कर कि किसी एक व्यक्ति का पतन सब के नाश का कारण बन सकता है, समाज अपने व्यक्तिगत सदस्यों को ऐसे विनाश से बचाएगा। इस आदर्श दुनिया में, ईर्ष्यालु लालसाएँ जो मूल प्रकृति से संयोगवश उठतीं हैं वे मानवता की प्रगति को और तेज़ी से बढ़ाने में लगाई जाएंगी। वे लोगों के पाप में पड़ने का कारण कभी नहीं बनेंगी।

पतित प्रकृति के प्राथमिक लक्षण मोटे तौर पर चार प्रकार में विभाजित किए जा सकते हैं। पहला, जब कोई परमेश्वर के दृष्टिकोण से न देखने की ग़लती करता है। प्रधान स्वर्गदूत के पतन का प्रमुख कारण यही था कि जिस दिल और दृष्टिकोण से परमेश्वर आदम से प्रेम करता था, उसने आदम को उसी रूप से नहीं अपनाया; बल्कि उसे आदम से जलन हुई। इस वजह से उसने हव्वा को भरमाया। इस पतित प्रकृति का एक उदाहरण यह है: जब कोई दरबारी राजा के कृपापात्र के लिये जलन महसूस करता है, बजाय इसके कि वह निष्कपटता से उसका आदर करे जिससे राजा प्रेम करता है।

दूसरा, यह कि जब कोई अपना उचित स्थान छोड़ देता है, और परमेश्वर के प्रेम की और अधिक मांग करना। लूसिफर इंसानों की दुनिया में भी प्रेम के उसी स्थान की लालसा करता था जो उसे स्वर्गदूतों की दुनिया में उपलब्ध था। यह अधर्मी लालसा उसके अपने स्थान को छोड़ने और पतन का कारण बनी। पतित प्रकृति के इस मुख्य लक्षण के कारण लोग बुरी आकांक्षाओं से प्रेरित होकर अधिक महत्वाकांक्षी हो जाते हैं और हक की सीमा से परे कदम उठाते हैं।

तीसरा, जब कोई प्रभुता के अधीन रहने की बजाए उलटा अधिकार जमाए। स्वर्गदूत को मनुष्यों के प्रभुत्व के नीचे होना चाहिये था, इसके बजाय उसने हव्वा पर अधिकार जमा लिया। उसके बाद हव्वा को आदम के प्रभुत्व में होना चाहिये था, पर वह आदम पर प्रभुत्व कर बैठी। इस यथोचित व्यवस्था के भंग होने का प्रतिफल कड़वा निकला। मानव समाज उन लोगों के कारण अव्यवस्थित हो गया जो अपना उचित स्थान छोड़ देते हैं और प्रभुत्व के उचित अनुक्रम को पलट देते हैं। ऐसी बार-बार होने वाली घटनाएं इस पतित प्रकृति की प्राथमिक विशेषता में निहित हैं।

चौथा, अपराध के कृत्य को बढ़ाना है। पतन के बाद, यदि हव्वा ने आदम को संभोग के लिए फुसला कर अपने पाप को दोहराया नहीं होता तो आदम पूर्ण बना रहता। इस स्थिति में अकेले हव्वा का पुनरुद्धार अपेक्षाकृत आसान होता। परन्तु, हव्वा ने आदम को फुसला कर अपने पाप को और बढ़ाया। दूसरों को अपराध के जाल में फंसाने की बुरे लोगों की रुची, पतित स्वभाव के इस प्राथमिक अभिलक्षण से निकलती है।

संभाग ५

स्वतंत्रता और मनुष्य का पतन

५.१ नियम के दृष्टिकोण से स्वतंत्रता का अर्थ

स्वतंत्रता का क्या अर्थ है? नियम के प्रकाश में स्वतंत्रता की तीन विशेषताएं सामने आतीं हैं। पहला, नियम के बाहर कोई स्वतंत्रता नहीं है। स्वतंत्रता के लिये दोनों स्वतंत्र-इच्छा और स्वतंत्र-क्रिया की आवश्यकता होती है, जो उस इच्छा के अनुकूल हो। दोनों के बीच आंतरिक प्रकृति और बाह्य रूप का संबंध है, और जब उनके बीच अच्छा ताल-मेल होता है तब पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त होती है। इसलिये, स्वतंत्र-इच्छा के बिना स्वतंत्र क्रिया नहीं हो सकती, और न ही स्वतंत्र क्रिया के बिना स्वतंत्र-इच्छा संपूर्ण हो सकती है। स्वतंत्र-इच्छा स्वतंत्र-क्रिया उत्पन्न करती है, और स्वतंत्र-इच्छा मन की अभिव्यक्ति है। क्योंकि, किसी निष्पाप व्यक्ति का मौलिक मन परमेश्वर के वचन के बाहर काम नहीं कर सकता, यानी नियम के बाहर वह अपनी स्वतंत्र-इच्छा कभी व्यक्त नहीं करेगा या नियम के बाहर कोई स्वतंत्र कार्रवाई नहीं करेगा। निस्संदेह, एक सच्चे व्यक्ति की स्वतंत्रता नियम से कभी भटक नहीं सकती।

दूसरा, दायित्व के बिना कोई स्वतंत्रता नहीं है। मनुष्य नियम के अनुसार बनाए गए हैं, और केवल अपना दायित्व पूरा करने से ही पूर्णता प्राप्त कर सकते हैं।[१००] तदनुसार, कोई व्यक्ति सृष्टि के आदर्श को पूरा करने के लिये स्वतंत्र-इच्छा के प्रोत्साहन से लगातार अपना दायित्व निबाहने का प्रयास करेगा।

तीसरा, पराकाष्ठा के बाहर कोई स्वतंत्रता नहीं है। जब मनुष्य स्वतंत्रता का प्रयोग करते हैं और अपने दायित्व का पालन करते हैं, वे ऐसे परिणाम को अंजाम देने का प्रयास करते हैं जो सृष्टि के उद्देश्य को पूरा करे और जिससे परमेश्वर को आनंद पहुँचे। स्वतंत्र-इच्छा स्वतंत्र कार्रवाइयों के द्वारा निरंतर ठोस परिणामों को प्राप्त करने की कोशिश करती है।

५.२ स्वतंत्रता और मनुष्य का पतन

संक्षेप में, स्वतंत्रता नियम के बाहर विद्यमान नहीं रह सकती। स्वतंत्रता नियम में निर्धारित है दायित्व के साथ-साथ चलती है और उपलब्धियों का अनुसरण करने में लगी रहती है, जो परमेश्वर को ख़ुशी पहुँचाते हैं। स्वतंत्र-इच्छा जो स्वतंत्र कार्यों को उत्पन्न करती है केवल अच्छे परिणाम लाती है। इसलिए, यह नहीं हो सकता कि स्वतंत्रता मानव के पतन का कारण है। यह लिखा है, “और जहाँ प्रभु का आत्मा है, वहां स्वतंत्रता है।”[१०१] यह स्वतंत्रता मौलिक मन की स्वतंत्रता है।

जबतक आदम और हव्वा अच्छे और बुरे वृक्ष का फल नहीं खाने की परमेश्वर की चेतावनी से बंधे थे, उन्हें परमेश्वर के हस्तक्षेप के बिना, स्वतंत्र-इच्छा से आज्ञा का पालन करना चाहिये था। निस्संदेह, उनके मौलिक मन की स्वतंत्रता जो अंतरनिहीत रूप से उत्तरदायी है, अच्छा करना चाहती थी और उन्हें इस आज्ञा का पालन करने के लिए संकेत कर रही थी। जब हव्वा नियम से विचलित होने वाली थी,

---

[१००] प्रति संदर्भ—सृष्टि ५.२.२

[१०१] २ कुरिंथियों ३:१७

उसके मौलिक मन की स्वतंत्रता ने उसे विचलित होने से बचाने की कोशिश में भय और पूर्वाभास को जगाया। पतन के समय से मौलिक मन की यह स्वतंत्रता लोगों को परमेश्वर के पास वापस लाने का काम करती है। स्वतंत्रता जो इस प्रकार से काम करती है, मनुष्य के पतन का कारण नहीं हो सकती। बल्कि, सिद्धांतहीन प्रेम की अधिक बलवान शक्ति मानव पतन का कारण थी, जिसने मौलिक मन की स्वतंत्रता को अभिभूत कर लिया था।

सच तो यह है कि पतन के परिणामस्वरूप मनुष्य अपनी स्वतंत्रता खो बैठा। फिर भी पतित लोगों में उनकी मूल प्रकृति का बीज बरकरार है जो स्वतंत्रता चाहता है, और यह परमेश्वर के लिये उनके पुनरुद्धार के दैवी कार्य को संभव करता है। इतिहास की प्रगति के साथ, लोग स्वतंत्रता के लिये बड़ी सरगर्मी से यहाँ तक कि अपनी जान पर खेल कर भी अभिलाषी रहे हैं। यह इस बात का सबूत है कि हमने अपनी स्वतंत्रता को, जिसे बहुत समय से शैतान के हाथों खो दिया था, बहाल करने की प्रक्रिया को जारी रखा है। स्वतंत्रता के लिए हमारी खोज का उद्देश्य, परमेश्वर के द्वारा दी हुई ज़िम्मेदारी की उपलब्धि को सुगम करना है, जो हमारे सृष्टि के उद्देश्य को पूरा करने के लिए आवश्यक है।

५.३ स्वतंत्रता, पतन और पुनरुद्धार

यह सच है कि मनुष्यों को स्वर्गदूतों के साथ, जिनको उनकी सेवा करने के लिये बनाया गया था, संबंध रखने की आज़ादी है। परन्तु चूँकि दूत ने हव्वा को, जब उसका दिल और बुद्धि तरुण अवस्था में थे बहकाया था, वह भावुक होकर बौद्धिक उलझन में पड़ गई। यद्यपि उसके मौलिक मन की स्वतंत्रता ने उसमें पूर्वाभास की भावना को जगाया, परंतु दूत और उसके बीच प्रेम की शक्ति अधिक ज़ोरावर थी, इसलिये वह सीमा को पार करके पाप में गिर गयी। हव्वा चाहे कितनी भी छूट के साथ दूत से लगाव रखती, यदि वह परमेश्वर की आज्ञा में अटूट विश्वास बनाए रखती और दूत के प्रलोभन में रुची नहीं दिखाती, तो सिद्धांतहीन प्रेम की शक्ति पैदा नहीं होती और वह पाप में नहीं गिरती। इसलिए, इस तथ्य के बावजूद कि स्वतंत्रता ने हव्वा को स्वर्गदूत के साथ संबंध रखने की छूट दी और उसे पाप में गिरने के लिये किनारे तक लाई, परंतु जिसने उसे किनारे से ढकेल दिया वह स्वतंत्रता नहीं थी, लेकिन सिद्धांतहीन प्रेम की शक्ति थी।

चूँकि हव्वा स्वर्गदूतों के साथ स्वतंत्रता से बात चीत करने के लिए बनाई गई थी, इसलिये वह स्वभावतः लूसिफर के साथ मेलजोल रखती थी। परंतु जब हव्वा और लूसिफर ने आपस में घनिष्ठ संबंध बना लिया और एक दूसरे के साथ प्रेमालिंगन में संलग्न हुए तो जो शक्ति इस सिद्धांतहीन प्रेम से पैदा हुई वह उनके पाप में गिरने का कारण बनी। विलोमतः, चूँकि पतित लोग भी परमेश्वर के साथ स्वतंत्रता से संबंध रख सकते हैं, यदि वे सत्य के वचन को मान कर उसके साथ संबंध स्थापित करके आदान-प्रदान करें, तो सैद्धांतिक प्रेम की शक्ति उनके मौलिक मन को पुनर्जीवित कर सकती है। सचमुच, मौलिक मन की स्वतंत्रता मूल प्रकृति को संवारने के लिये हमेशा लालायित रहती है। इसीलिए, हर युग में लोग स्वतंत्रता के लिए हताश रहते हैं।

पतन के कारण मनुष्य, परमेश्वर और उसके हृदय के मनोभाव से अबोध हैं। इस अनभिज्ञता ने मनुष्य की इच्छा-शक्ति को परमेश्वर को सुख देने वाले लक्ष्यों की ओर प्रयास करने में असमर्थ बना दिया है। यथा, परमेश्वर ने पतित लोगों को पुनरुद्धार की दैवी योजना में युग के अनुग्रह के अनुसार "आत्मा और सच्चाई"[१०२] (यानी, आंतरिक बोध और बाह्य बोध) दिया है, उनका हृदय जो मूल मन की स्वतंत्रता के लिये लालायित रहता है, धीरे-धीरे पुनर्जीवित किया गया है। इस प्रगति के साथ, परमेश्वर के प्रति उनका दिल भी बहाल किया गया है, और उसकी इच्छा के अनुसार जीने के लिए उनके उत्साह को पुष्ट किया गया है।

इसके अतिरिक्त, जैसे-जैसे स्वतंत्रता के लिये आकांक्षाएं बढ़ती जाएंगी लोग एक ऐसे सामाजिक वातावरण की मांग करेंगे जिसकी प्राप्ति उनके लिये परोपकारी हो। जब किसी युग की सामाजिक परिस्थितियाँ स्वतंत्रता-प्रेमी लोगों की इच्छाओं को संतुष्ट नहीं कर सकतीं, क्रांति अनिवार्य रूप से प्रस्फुटित होती है। अठारहवें सदी की फ्रांसीसी क्रांति एक उदाहरण है। क्रांतियाँ जारी रहेंगी जब तक सच्ची स्वतंत्रता पूरी तरह से पुनःस्थापित नहीं की जाएंगी।

---

[१०२] यूहन्ना ४:२३

संभाग ६

परमेश्वर का पहले मानव पूर्वजों के पतन में हस्तक्षेप ना करने का कारण

परमेश्वर सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान है, वह यह निश्चित रूप से जानता होगा कि पहले मानव पूर्वजों का यह विकृत कदम उनके पतन का कारण बनेगा, और यह भी सच है कि वह उन्हें उस काम को करने से रोकने के लिए सक्षम था। फिर भी परमेश्वर ने पतन को होने से क्यों नहीं रोका? यह युगों के सबसे महत्वपूर्ण अनसुलझे रहस्यों में से एक है। हम निम्न लिखित तीन कारण सामने रखते हैं कि परमेश्वर ने क्यों मानव पतन में हस्तक्षेप नहीं किया।

६.१ सृष्टि के नियम की संपूर्णता और पूर्णता को बनाये रखना

सृष्टि के नियम के अनुसार, परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप में, सर्जक के चरित्र और शक्ति के साथ यह सोच कर रचा है, कि जिस प्रकार वह मानव जाति पर शासन करता है उसी प्रकार वे भी सब वस्तुओं का शासन करेंगे। तथापि, मनुष्य को परमेश्वर की सृजनात्मक शक्ति उत्तराधिकार में प्राप्त करने के लिये यह आवश्यक था कि वे अपने हिस्से की जिम्मेदारी को पूरा करके पूर्णता प्राप्त करें। जैसा कि ऊपर बताया गया है, परमेश्वर उनके विकास की अवधि में उन पर अप्रत्यक्ष रूप से प्रभुता करता है यानी सिद्धांत के माध्यम से विकास की अवधि उपलब्धियों पर आधारित प्रभुत्व का क्षेत्र है। जब तक लोग इस क्षेत्र में हैं, परमेश्वर उन पर प्रत्यक्ष रूप से शासन नहीं कर सकता, क्योंकि वह उन्हें उनके हिस्से की जिम्मेदारी पूरी करने के लिए अनुमति देना चाहता है। उनका पूर्णता तक पहुँचने के बाद ही परमेश्वर उनपर प्रत्यक्ष रूप से शासन करेगा।

यदि परमेश्वर मनुष्य के विकास काल के दौरान उनके कार्यों में हस्तक्षेप करता तो वह मनुष्य के हिस्से की जिम्मेदारी की उपेक्षा करने के समान होता। उस स्थिति में, परमेश्वर स्वयं अपने सृष्टि के नियम का खंडन करता, जिसके अनुसार वह मनुष्य को अपनी रचनात्मक प्रकृति देना चाहता था और सृष्टि का स्वामी बनने के लिए उन्हें बढ़ाना चाहता था। यदि वह नियम को नजरंदाज करता, तो फिर यह उसकी संपूर्णता और पूर्णता को अवमूल्यन करने के बराबर होगा। क्योंकि परमेश्वर पूर्ण है, और निपुण सर्जक है, उसके सृष्टि के नियम को भी संपूर्ण और पूर्ण होने चाहिए। सारांश में, सृष्टि के नियम की संपूर्णता और पूर्णता को बनाए रखने के लिए परमेश्वर ने, जो कार्य मनुष्य को पतन की ओर ले गए, उनमें उसने हस्तक्षेप नहीं किया।

६.२ केवल परमेश्वर ही सृष्टिकर्त्ता हो

परमेश्वर केवल सैद्धांतिक अस्तित्व पर ही शासन करता है जो उसने बनाया है और केवल सैद्धांतिक कृत्यों की व्यवस्था को ही प्रभावित करता है। परमेश्वर कोई भी सिद्धांतहीन अस्तित्व को

नियंत्रित नहीं करता जो उसने नहीं बनाया है, जैसे कि नरक; और न ही वह अधर्मी कर्मों में हस्तक्षेप करता है, जैसे कि आपराधिक कार्य। यदि परमेश्वर ऐसे प्राणियों या कृत्यों की कार्यवाही को प्रभावित करे तो फिर उन्हें अवश्य ही परमेश्वर द्वारा रचित सृष्टि का मान और सैद्धांतिक होने की पहचान देनी पड़ेगी।

फलस्वरूप, यदि परमेश्वर पहले मानव पूर्वजों के पतन में हस्तक्षेप करता तो वह उनके उन कर्मों को अपनी सृष्टि का महत्व देता और उनको धर्मी ठहराता। यदि परमेश्वर ऐसा करता तो वस्तुतः वह एक नए सिद्धांत की रचना करता जो इन आपराधिक कृत्यों के वैध होने की पहचान बनती। चूँकि वास्तव में वह शैतान ही था जिसने चालबाज़ी से ऐसे परिणाम को अंजाम दिया, और वह शैतान ही था जिसने एक नया नियम बनाया और पतन के सारे फलों का दूसरा सर्जक बन कर खड़ा हुआ। इसलिए, परमेश्वर को एकमात्र निर्माता बने रहने के लिये, उसने मानव पतन में हस्तक्षेप नहीं किया।

६.३ मनुष्य को सृष्टि का स्वामी बनाने के लिए

परमेश्वर ने मनुष्य की रचना की और उसे सृष्टि की सारी वस्तुओं पर प्रभुता करने का आशीर्वाद दिया।[१०३] मनुष्य अन्य प्राणियों पर शासन नहीं कर सकता था यदि वे उसके साथ बराबरी के स्तर पर खड़े होते। ईश्वर-प्रदत्त शासन करने के अधिकार को प्राप्त करने के लिए उन्हें विशेष योग्यता अर्जित करनी चाहिए थी।

क्योंकि परमेश्वर मनुष्य का सर्जक है इसलिए वह उन पर शासन करने के योग्य है। इसी तरह, सब वस्तुओं पर शासन करने की योग्यता प्राप्त करने के लिए मनुष्य के पास भी निर्माता का चरित्र और शक्ति होनी चाहिए। उन्हें सृष्टिकर्ता का पद प्रदान करने के लिये और उन्हें सभी वस्तुओं पर शासन करने के योग्य बनाने के लिए परमेश्वर ने मनुष्य को उनके विकास की अवधि के अंत तक अपने हिस्से की जिम्मेदारी को पूरा करके पूर्ण होते देखना चाहा। सिद्धांत के अनुसार अपने आप को पूर्ण करने के द्वारा ही वे जगत पर राज्य करने की योग्यता कमा सकते हैं। यदि परमेश्वर प्रत्यक्षतः मनुष्यों का शासन करता और उनकी अप्रौढ़ अवस्था में उनके जीवन को नियंत्रित करता, तो वास्तव में यह एक ऐसे शासक को प्राधिकार प्रदान करना होता जो शासन करने के योग्य नहीं है। यानी, यह प्राधिकरण उनको प्रदान किया गया होता जिन्होंने अपनी जिम्मेदारी पूरी नहीं की या अभी तक परमेश्वर से सृष्टिकर्ता का पद कमा कर प्राप्त नहीं किया है। यह परमेश्वर के नियम के विरुद्ध होता, क्योंकि यह एक अप्रौढ़ व्यक्ति को प्रौढ़ का दर्जा देने के समान होता। इस तरह परमेश्वर, नियम का रचयिता, अपने ही नियम की उपेक्षा करता, जो उसी ने स्थापित किया ताकि वह मनुष्यों को सृष्टिकर्ता की प्रकृति विरासत में पाने और सृष्टि का शासन करने के लिये समक्ष कर सके। फलस्वरूप, मनुष्य को सृष्टि का स्वामी बनने की शुभाशीष देने के लिये, परमेश्वर ने अपने आप को अप्रौढ़ मनुष्यों के कार्यों में हस्तक्षेप करने से रोका, जबकि उसने कांपते हुए मनुष्य के पतन को देखा।

---

[१०३] उत्पत्ति १:२

दिव्य नियम प्रतिपादन

भाग १

अध्याय ३

अंतिम-दिनों संबंधी उपदेश और मानव इतिहास

विषय सूची

अध्याय ३		पृष्ठ
अंतिम दिनों संबंधी उपदेश और मानव इतिहास		८९
संभाग १		
परमेश्वर के सृष्टि के उद्देश्य का पूर्ण होना और मनुष्य का पतन		९०
१.१	परमेश्वर के सृष्टि के उद्देश्य का पूर्ण होना	९०
१.२	मनुष्य के पतन का परिणाम	९१
संभाग २		९२
परमेश्वर का उद्धार का कार्य		
२.१	परमेश्वर का उद्धार का कार्य, पुनरुद्धार की दैवी योजना है	९२
२.२	पुनरुद्धार की दैवी योजना का लक्ष्य	९४
२.३	मानव इतिहास, पुनरुद्धार की दैवी योजना का इतिहास है	९४
संभाग ३		
अंतिम दिन		९९
३.१	अंतिम दिनों का अर्थ	९९
	३.१.१ नूंह के दिन अंतिम दिन थे	९९
	३.१.२ यीशु के दिन अंतिम दिन थे	१००
	३.१.३ मसीह के दूसरे आगमन का दिन अंतिम दिन है	१००
३.२	अंतिम दिनों के चिह्नों के बारे में बाईबल के पद्य	१०१
	३.२.१ स्वर्ग और पृथ्वी का नाश और नया स्वर्ग और नई पृथ्वी की रचना	१०२
	३.२.२ आग के द्वारा स्वर्ग और पृथ्वी का न्याय	१०२
	३.२.३ मृतकों का क़ब्र में से उठना	१०३
	३.२.४ लोगों का प्रभु से मिलने के लिये हवा में उठाया जाना	१०४
	३.२.५ सूर्य का अंधियारा हो जाना और चंद्रमा का प्रकाश न देना और स्वर्ग से सितारों का गिरना	१०४
संभाग ४		
अंतिम दिन और वर्तमान दिन		१०७
४.१	पहले आशीर्वाद की बहाली के चिह्न	१०७
४.२	दूसरे आशीर्वाद की बहाली के चिह्न	१०९
४.३	तीसरे आशीर्वाद की बहाली के चिह्न	११२

संभाग ५
अंतिम दिन, नया सत्य और हमारा रवैया ११५
५.१ अंतिम दिन और नया सत्य ११५
५. २ अंतिम दिनों में हमारा रवैया ११८

रेखा चित्र १
सृष्टि में परमेश्वर के वचन की अभिव्यक्ति और पुनरुद्धार की दैवी योजना १२०

अंतिम दिनों संबंधी उपदेश और मानव इतिहास

हम इतिहास की सही जानकारी से अनभिज्ञ हैं, इसके उद्गम के बारे में संदेहयुक्त हैं, यह किस दिशा की ओर बढ़ रहा है और कि इसका अंतिम गंतव्य क्या होगा। अंतिम दिनों संबंधी उपदेश के विषय पर बाईबल में जैसा लिखा है बहुत से ईसाई लोग उस पर यथाशब्द विश्वास रखते हैं जैसे: "आकाश बड़ी गड़गड़ाहट के शब्द से जाता रहेगा, और तत्व बहुत ही तप्त होकर पिघल जाएंगे";[१०४] "सूर्य अंधियारा हो जाएगा और चंद्रमा का प्रकाश जाता रहेगा, और तारे आकाश से गिर पड़ेंगे";[१०५] "प्रधान स्वर्ग दूत का शब्द सुनाई देगा, और परमेश्वर की तुरही फूँकी जाएगी...और जो मसीह में मरे हैं वह पहले जी उठेंगे, तब हम जो जीवित और बचे रहेंगे उसके साथ बादलों पर उठा लिये जाएंगे कि हवा में प्रभु से मिलें।"[१०६] ईसाइयों के लिए यह उचित प्रश्न है कि क्या यह घटनाएं यथाशब्द घटेंगी या जैसे कि बाईबल के बहुत भागों से जान पड़ता है कि बाईबल के यह छंद प्रतीकात्मक हैं। इस समस्या को हल करने के लिए, हमें पहले ऐसे बुनियादी विषयों को समझना चाहिये, जैसे परमेश्वर की सृष्टि का उद्देश्य क्या है, मानव पतन का अर्थ, और पुनरुद्धार की दैवी योजना के कार्य का लक्ष्य।

---

[१०४] २ पतरस ३:१२

[१०५] मत्ती २४:२९

[१०६] थिस्सलुनिकियों ४:१६-१७

संभाग १

परमेश्वर की सृष्टि के उद्देश्य का पूर्ण होना और मनुष्य का पतन

१.१ परमेश्वर की सृष्टि के उद्देश्य का पूर्ण होना

हमने यह चर्चा की है कि मनुष्य की रचना में परमेश्वर का उद्देश्य उनके साथ ख़ुशी-ख़ुशी रहने का था।[१०७] इसलिये, हमारे अस्तित्व का उद्देश्य परमेश्वर को आनंद देना होना चाहिए। परमेश्वर को आनंद देने के लिये हमें क्या करना चाहिये और हम अपना मौलिक मूल्य किस प्रकार पूर्ण रूप से व्यक्त कर सकते हैं?

मनुष्य के अलावा शेष सारे प्राणियों को स्वाभाविक रूप से प्रौढ़ता तक बढ़ने के लिये अंतर्निहित प्रकृति प्रदान की गई है ताकि वे उसके पात्र साझी बन कर परमेश्वर को आनंद दें। मनुष्य, अपितु, केवल अपनी स्वतंत्र-इच्छा और स्वतंत्र कार्यों के द्वारा ही परमेश्वर को आनंद देने वाले सच्चे और यथार्थ पात्र साझी बन सकते हैं।[१०८] वे परमेश्वर को आनन्द से प्रेरित करने वाले पात्र साझी तब ही बन सकते जब वे परमेश्वर की इच्छा को समझकर तदनुसार जीने की कोशिश करें। इसलिए, मनुष्य को परमेश्वर के हृदय को महसूस करने की भावात्मक संवेदना प्रदान की गई है, उसकी इच्छा को समझने का अंतर्ज्ञान और तर्क-बुद्धि मिली है और इन्हें अभ्यास करने के लिए अपेक्षित योग्यता मिली है। वह व्यक्ति जो परमेश्वर के साथ इस रीति से संबद्ध होता है वह व्यक्तिगत चरित्र की पूर्णता प्राप्त करता है। पतन से पहले आदम और हव्वा, और हर युग के भविष्यद्वक्ताओं को भी परमेश्वर के साथ बातचीत करने की योग्यता थी क्योंकि उनमें प्राकृतिक ऐसे संकाय थे।

परमेश्वर और मनुष्य के बीच के संबंध के विषय में, जिस व्यक्ति ने व्यक्तिगत पूर्णता प्राप्त कर ली है, उसकी तुलना मन और शरीर के बीच के संबंध से की जा सकती है। शरीर मन का निवास स्थान है और मन के निर्देशन के अनुसार चलता है। उसी तरह परमेश्वर, पूर्ण परिपक्व व्यक्ति के मन में बसता है। ऐसा व्यक्ति परमेश्वर का मंदिर बन जाता है और अपना जीवन उसकी इच्छा के अनुसार सामंजस्य से बिताता है। पूर्ण व्यक्ति पूरी तरह से परमेश्वर के साथ एक लय में होता है, जिस प्रकार शरीर मन के साथ एक ताल होता है। इस कारण, लिखा है, "क्या तुम नहीं जानते कि तुम परमेश्वर के मंदिर हो, और परमेश्वर का आत्मा तुम में वास करता है?"[१०९] "उस दिन तुम जानोगे कि मैं अपने पिता में हूँ और तुम मुझ में, और मैं तुम में।"[११०] वह व्यक्ति जिसने अपना व्यक्तिगत चरित्र पूर्ण कर लिया है वह परमेश्वर का मंदिर बन जाता है, और पवित्र आत्मा उसमें रहता है। परमेश्वर के साथ एकात्म होकर जीने से वह व्यक्ति दिव्य प्रकृति उपार्जित करता है। यथा, उसके लिये पाप करना असंभव है।

---

[१०७] प्रति संदर्भ—सृष्टि ३

[१०८] प्रति संदर्भ—सृष्टि ५.२.२

[१०९] १ कुरिंथियों ३:१६

[११०] यूहन्ना १४:२०

वह व्यक्ति जिसने व्यक्तिगत पूर्णता प्राप्त कर ली हो और सृष्टि का उद्देश्य पूरा कर लिया हो वह पूर्ण अच्छाई का मूर्त रूप होता है। वह व्यक्ति जो पूर्ण अच्छाई का मूर्त रूप हो वह पाप नहीं कर सकता है, अन्यथा यह हमें एक ऐसे विसंगत निष्कर्ष पर लाता है कि जैसे अच्छाई में भी विनाश का बीज समाहित हो। इसके अतिरिक्त, यदि मनुष्य जो सर्वशक्तिमान परमेश्वर के द्वारा बनाए गए हैं पूर्ण होने पर भी पाप कर सकते हैं, तो यह परमेश्वर की सर्वज्ञता पर भी संदेह होने का कारण बन सकता है। परमेश्वर पूर्ण और अमर कर्ता है। उसे सच्चा आनंद देने के लिये, उसके पात्र साझी को भी अवश्य ही अमर और पूर्ण होना चाहिये। इन्हीं कारणों से जिस व्यक्ति ने अपना व्यक्तिगत चरित्र पूर्ण कर लिया हो वह पाप नहीं कर सकता।

यदि आदम और हव्वा पूर्ण हो गये होते, और पाप के प्रभाव के बाहर होते, तो वे अच्छे बच्चे पैदा करते और परमेश्वर के आशीर्वाद[१११] के अनुसार एक निष्पाप परिवार और समाज की स्थापना करते। इस तरह उन्होंने स्वर्ग का राज्य स्थापित कर लिया होता, जो एक ही माता पिता का एक महान परिवार होता। स्वर्ग के राज्य का रूप उस व्यक्ति की तरह होता है जिसने पूर्णता प्राप्त कर ली हो। जिस प्रकार शरीर के अंग क्षैतिज संबंधों में एक दूसरे के साथ समकक्ष रहते हैं और मस्तिष्क के लंब आदेशों पर चलते हैं, इस समाज में लोग, परमेश्वर से निकले हुए लंब निर्देशों को मान कर सहयोगपूर्ण क्षैतिज संबंध बनाकर एक साथ रहेंगे। कोई भी अपने पड़ोसी को हानि नहीं पहुँचाएगा, चूँकि यदि एक व्यक्ति को पीड़ा होती है तो समाज में हर कोई परमेश्वर के हृदय के दुख का अनुभव करेंगे और उस व्यक्ति के साथ पीड़ा में शामिल होंगे।

इस समाज में लोगों की पवित्रता के बावजूद भी, यदि यह लोग गुफावासियों की तरह आदिम परिस्थितियों में रहते हों तो यह स्वर्ग का राज्य कदापि नहीं कहा जा सकता, जिसे दोनों परमेश्वर और मनुष्य चाहते हैं। परमेश्वर ने हमें सब वस्तुओं पर प्रभुत्व करने के लिए जनादेश दिया है।[११२] इसलिए, सृष्टि का आदर्श साध्य करने के लिये, सिद्ध चरित्र वाले लोगों को चाहिए कि वे विज्ञान में प्रगति करें, प्राकृतिक तत्वों का उपयोग करके एक अत्यंत सुखद रहन-सहन वाला सामाजिक वातावरण बनाएं। यह पृथ्वी पर स्वर्ग का राज्य होगा। एक बार जब लोग पूर्ण रूप से परिपक्व हो जाएंगे और परमेश्वर के पार्थिव राज्य में आनंद से जीवन बिता चुकेंगे, फिर जब वे अपना भौतिक शरीर का त्याग करके आत्मालोक में प्रवेश करेंगे, तो वे स्वर्ग में स्वर्ग का राज्य स्थापित करेंगे। तदनुसार, परमेश्वर की सृष्टि का प्राथमिक उद्देश्य पृथ्वी पर स्वर्ग के राज्य का निर्माण करना है।

१.१ मनुष्य के पतन का परिणाम

मनुष्य का पतन उनके विकास काल में हुआ था जब वे अपरिपक्व अवस्था में ही थे। हम यह पहले ही स्पष्ट कर चुके हैं कि विकास काल क्यों आवश्यक था और कि हमारा इस निष्कर्ष पर पहुँचने

[१११] उत्पत्ति १:२८
[११२] उत्पत्ति १:२८

का क्या प्रमाण है कि पहले पूर्वजों का पतन उनकी अपरिपक्व अवस्था में हुआ।[११३] पतन के कारण, मनुष्य परमेश्वर का मंदिर नहीं बन सके; बजाय इसके वे शैतान के साथ एकजुट हो गये और उसका निवास स्थान बन गये। इस तरह वे दिव्य प्रकृति उपार्जित करने में विफल हुए और इसके स्थान पर उन्होंने दुष्ट प्रकृति अधिगृहीत की है। दुष्ट प्रकृति के लोगों ने अपने बच्चों के प्रजनन के माध्यम से दुनिया में बुराई का प्रसार किया है, जिनसे बुरे परिवार, बुरे समाज और एक बुरी दुनिया का गठन हुआ है। यह दुनिया पृथ्वी पर नरक है जिसमें हम रह रहे हैं। इस नरक में हम एक दूसरे के साथ मिलकर सहयोग से काम करने वाले क्षैतिज संबंध नहीं बना सकते क्योंकि परमेश्वर के साथ हमारा लंब संबंध टूट गया है। हम दूसरों के ख़िलाफ हानिकारक कार्य करते हैं क्योंकि हम अपने पड़ोसी की पीड़ा को अपना दर्द समझ कर महसूस नहीं करते है। एक बार लोग नरक में रहने के आदी हो जायें तो वे स्वाभाविक रूप से अपने भौतिक जीवन के अंत में आत्मा लोक में नरक ही में प्रवेश करते हैं। हमने परमेश्वर के राज्य का निर्माण नहीं किया है, बल्कि शैतान की राजसत्ता स्थापित की है। इस कारण शैतान "संसार का सरदार"[११४] और "संसार का ईश्वर"[११५] कहलाता है।

---

113 प्रति संदर्भ—सृष्टि ५.२.१

114 यूहन्ना १२:३१

115 २ कुरिंथियों ४:४

संभाग २

परमेश्वर का उद्धार का कार्य

२.१ परमेश्वर का उद्धार का कार्य पुनरुद्धार की दैवी योजना है

संसार पाप से भरे होने के कारण मनुष्य के लिए दु:ख और परमेश्वर के लिए शोक का कारण है।[११६] क्या परमेश्वर दुनिया को इस वर्तमान विपदा में त्याग सकता है? परमेश्वर अच्छी दुनिया बनाना चाहता था जिससे वह अतिशय आनन्द का अनुभव कर सके; तथापि, मानव पतन के कारण यह दुनिया पाप और क्लेश से भर गई। यदि यह पापी दुनिया इस वर्तमान स्थिति में हमेशा जारी रहे, तब तो परमेश्वर अशक्त और निष्प्रभावी ईश्वर कहलाएगा, जो अपनी सृष्टि में विफल हो गया है। इसलिए, परमेश्वर इस पापी दुनिया को किसी भी तरह से बचाएगा।

इस दुनिया को परमेश्वर को किस हद तक बचाना चाहिए? उसे पूरी तरह से बचाना चाहिये। परमेश्वर को पहले इस पापी दुनिया में से शैतान की दुष्ट शक्ति को निष्कासित करना होगा,[११७] इस प्रकार उसे मानव पूर्वजों के पतन से पहले की मूल स्थिति में वापस लाना होगा। जब तक, सृष्टि का उद्देश्य पूरा न हो जाए और परमेश्वर का प्रत्यक्ष प्रभुत्व स्थापित न हो जाए तब तक मुक्ति का कार्य जारी रहेगा।[११८] एक बीमार व्यक्ति को बचाने का अर्थ उसे स्वास्थ्य की उसी स्थिति में वापस बहाल करना है, जिसमें वह बीमारी से पहले था। एक डूबते हुए व्यक्ति को बचाने का अर्थ यह है कि उसे उस स्थिति में पुनर्स्थापित करना है जिसमें वह पानी में गिरने से पहले था। उसी प्रकार, एक व्यक्ति जो पाप के बोझ से दबा हो, उसको बचाना यानी उसे उसकी मूल निष्पाप स्थिति में पुनर्स्थापित करना है। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर का उद्धार का कार्य *पुनरुद्धार की दैवी योजना* है।[११९]

मानव पतन निस्संदेह मनुष्य की ग़लतियों का परिणाम था। तथापि, इस घटना से संबंधित परिणाम में परमेश्वर भी ज़िम्मेदार है क्योंकि उसने मनुष्य को रचा। इसलिए, परमेश्वर को मजबूरन इस दुखद परिणाम को सही करने के लिए और मनुष्य को उनकी सच्ची मूल स्थिति में पुनर्स्थापित करने के लिए दैवी योजना संचालित करनी पड़ी। इसके अतिरिक्त, परमेश्वर ने हमारी रचना अनंत काल तक जीने के लिये की है। यह इसलिये, क्योंकि परमेश्वर सनातन कर्ता साझी है, मनुष्य के साथ, जो उसके पात्र साझी हैं, अनंत काल तक आनंद मनाना चाहता था। मनुष्य को अनंत प्रकृति प्रदान करने के बाद, केवल इसलिये कि वे पाप में गिर गए, परमेश्वर नियम के अनुसार मनुष्य को उसके अस्तित्व से नहीं मिटा सकता था, यदि उसने ऐसा किया तो वह स्वयं अपने ही सृष्टि के नियमों का उल्लंघन करेगा। पतित लोगों को बचाने और उन्हें उनकी मूल शुद्ध स्थिति में, जिसमें उसने उन्हें शुरू में बनाया था, पुनर्स्थापित करने के सिवाय परमेश्वर के पास और कोई विकल्प नहीं है।

---

[११६] उत्पत्ति ६:६
[११७] प्रेरितों २६:१८
[११८] प्रेरितों ३:२१
[११९] प्रेरितों १:१६, मत्ती १७:११

जब परमेश्वर ने मनुष्य बनाये, उसने तीन महान आशीर्वादों को पूरा करने में हमारी मदद करने के लिए हम से वादा किया।[१२०] उसने यशायाह के द्वारा यह घोषणा की “मैंने ही यह बात कही है और उसे पूरी भी करूँगा, मैंने ही यह विचार बांधा है और उसे सफल भी करूँगा,[१२१] इसका अर्थ है कि पतन के बावजूद, अपने वादे को पूरा करने के हेतु परमेश्वर इन आशीर्वादों को पुनर्स्थापित करने के लिए दैवी योजना के माध्यम से काम करता आया है। हमें हमारे मूल आदर्श अस्तित्व में पुनर्स्थापित करने के लिये उसने यीशु मसीह को भेजा था, हम यीशु के शब्दों से जो उसने अपने चेलों से कहे समझ सकते, “इसलिये तुम सिद्ध बनो जैसा तुम्हारा स्वर्गीय पिता सिद्ध है।”[१२२] सच्चा, आदर्श व्यक्ति परमेश्वर के साथ एकात्म होता है, और उसने दिव्य प्रकृति साधित की होती है; इस तरह, सृष्टि के उद्देश्य के संदर्भ से वह सिद्ध है जैसा कि परमेश्वर सिद्ध है।

२.२ पुनरुद्धार की दैवी योजना का लक्ष्य

पुनरुद्धार की दैवी योजना का लक्ष्य क्या है? इसका लक्ष्य स्वर्ग के राज्य की स्थापना करना है, यह अपनी समग्रता में परमेश्वर के अच्छे पात्र साझी के रूप में होगा और उसकी सृष्टि के उद्देश्य की पूर्ति है। पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य का केंद्र मनुष्य होगा। हालांकि परमेश्वर ने पहले पूर्वजों को इस इरादे के साथ बनाया था, पर उनका पतन हो गया; इसलिए, पृथ्वी पर उसकी इच्छा साधित नहीं हो पाई। तब से, पुनरुद्धार की दैवी योजना का प्राथमिक लक्ष्य पृथ्वी पर स्वर्ग के राज्य को पुन:निर्माण करने के अलावा और कुछ नहीं है। यीशु मसीह जो इस लक्ष्य को पूरा करने के लिये आया था, उसने अपने चेलों से यह प्रार्थना करने के लिये कहा, “तेरा राज्य आए तेरी इच्छा जैसी स्वर्ग में पूरी होती है वैसे पृथ्वी पर भी हो।”[१२३] उसने यह भी कहा, “मन फिराओ क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आया है।”[१२४] उनके यह शब्द प्रमाणित करते हैं कि पुनरुद्धार की दैवी योजना का लक्ष्य पृथ्वी पर स्वर्ग के राज्य की स्थापना करना है।

२.३ मानव इतिहास पुनरुद्धार की दैवी योजना का इतिहास है

जैसा ऊपर स्पष्ट किया गया है, परमेश्वर का उद्धार का कार्य पुनरुद्धार की दैवी योजना है। मानव इतिहास दैवी योजना के रूप में देखा जा सकता है जिसके माध्यम से परमेश्वर पतित लोगों को बचाने की कोशिश करता आया है और उन के द्वारा काम करके सच्ची और अच्छी दुनिया बहाल करना चाहता है। आइये हम इस विचार पर विभिन्न तरीकों से जाँच करें, पहले हम सांस्कृतिक क्षेत्रों के विकास के इतिहास से इसकी शुरुआत करते हैं।

हर युग में, हर जगह सभी लोगों के पास, यहां तक कि दुष्ट लोगों के पास भी मौलिक मन होता

---

[१२०] उत्पत्ति १:२८
[१२१] यशायाह ४६:११
[१२२] मत्ती ५:४८
[१२३] मत्ती ६:१०
[१२४] मत्ती ४:१७

है जो बुराई से घृणा करता है और अच्छाई की तलाश करता है। अच्छाई क्या है और कैसे प्राप्त की जा सकती है, इस बारे में लोगों की बौद्धिक समझ समय, जगह, अलग-अलग दृष्टिकोण और मतभेदों के अनुसार भिन्न रही है; यह एक संघर्ष का स्रोत रहा है जिससे इतिहास बना है। तो भी, हर कोई अच्छाई का एक ही मौलिक लक्ष्य ढूँढता है और स्थापित करना चाहता है। मौलिक मन, हर युग के और हर जगह के लोगों को हमेशा भला करने के लिए क्यों प्रेरित करता है? परमेश्वर अच्छाई का कर्ता है, उसने मनुष्यों को अपना अच्छा और योग्य पात्र साझी के रूप में इसलिये बनाया है कि वे अच्छाई के उद्देश्य को पूरा करें। शैतान के अशक्त कर देने वाले प्रयास, जिसके कारण पतित मानव निखिल अच्छाई का जीवन निर्वाह करने में असमर्थ रहा है, इसके बावजूद भी उनके भीतर मौलिक मन बरकरार रहता है और उन्हें अच्छाई की ओर संकेत देता है। इसलिए, युगों की परम अभिलाषा अच्छाई की दुनिया प्राप्त करना रही है।

अच्छाई को प्राप्त करने के लिए मौलिक मन चाहे कितना ही संघर्ष क्यों न कर ले, बुराई के राज्य में हम सच्ची अच्छाई का उदाहरण कदाचित् ही देख पाते हैं। इसी लिये मनुष्य, समय और अंतरिक्ष की सीमा से बाहर की दुनिया में अच्छाई के स्रोत की तलाश करने के लिए मजबूर रहे हैं। इस आवश्यकता ने धर्म को जन्म दिया है। धर्म के माध्यम से, अज्ञानता में फंसे हुए पतित लोगों ने लगातार अच्छाई की ओर परमेश्वर से मिलने का प्रयास किया है। यद्यपि बहुत से लोगों और देशों ने चाहे किसी भी धर्म का समर्थन किया हो, वे लोग भले ही न रहे, पर धर्म बना रहा है।

धर्म बहुत से देशों के उत्थान और पतन के बावजूद भी इतिहास में बना रहा है। चीन के इतिहास में, चाओ राजवंश, और युद्धकारी राज्यों के बाद चिन राजवंश में एकीकरण का युग आया। इसके बाद पहला हान, हसिन और फिर दूसरा हान, छह राजवंश और फिर सुई और टैंग की अवधि में एकीकरण का युग हुआ। इन के पश्चात पाँच राजवंश हुए, उत्तरी सुंग, दक्षिणी सुंग, यूवान, मिंग, चिंग, फिर चीन का लोकतंत्र राज्य, चीन का जनता लोकतंत्र राज्य। चीन के इतिहास में कई कालचक्र हुए, राजवंशों के उत्थान और पतन और राजनीतिक सत्ता के कई तबादले हुए, फिर भी सुदूर-पूर्व के धर्म—कनफूसीवाद, बौद्ध धर्म और टाओ-वाद धर्म फलते-फूलते रहे। भारत के इतिहास में, मौरया राज्य के बाद गुप्ता, हरसा, कालूकिया, मुग़ल, मराठा, ब्रिटिश राज के बाद आज का स्वतंत्र भारत का साम्राज्य देखा गया है। कई राज्यों के उत्थान और पतन के बावजूद, हिंदू धर्म बच गया और समृद्धिशाली है। मध्य पूर्व देशों के इतिहास, में उमाय्याद कालिफेट (राज्य) के बाद अब्बासिद, शेलजुक और तुर्को का उस्मान राजवंश, उपनिवेशी काल के बाद आज के अरब राज्य। राजनीतिक प्रभुता में इन परिवर्तनों के बावजूद, इस्लाम धर्म कामयाब रहा और समृद्धिशाली है। पश्चिमी यूरोप के इतिहास में, हम देखते हैं सत्ता के केंद्र कई बार बदले हैं, रोम से लेकर कैरोलिंगियन कोर्ट, जिसके बाद इटली के पुनर्जागरण-काल के शहर हुए हैं। उसके बाद स्पेन और पुर्तगाल यूरोप की प्रमुख शक्तियों में गिनी गईं, फिर कुछ समय के लिये फ्रांस और नैदरलैंड, और बाद में इंग्लैंड। आधुनिक युग में, पश्चिम का नेतृत्व अमेरिका और सोवियत संघ के बीच विभाजित किया गया है। इन राजनीतिक परिवर्तनों के बावजूद, ईसाई धर्म पनपता रहा है। यहां तक कि सोवियत संघ का राज्य जो मार्क्सवादी भौतिकवाद के आधार पर स्थापित किया गया था उसके निरंकुश शासन के

अंतर्गत भी ईसाई धर्म एक महत्वपूर्ण कभी न बुझने वाला दिया बना रहा है।

यदि हम राष्ट्रों के उत्थान और पतन की जांच करें तो ऐसे कई उदाहरण देखने में आते हैं कि जिन देशों ने धर्म को सताया वे नाश हो गये, पर जिन्होंने धर्म को बढ़ावा दिया और सुरक्षित रखा वह देश फला-फूला है। बहुधा, वह लोग जो किसी भी देश के शासक बने वे धर्म को सम्मानित करने वाले लोगों में थे। इतिहास इस प्रकार हमें भरोसा दिलाता है कि कम्युनिस्ट दुनिया, जो धर्म को सताती है, एक दिन ऐसा आएगा कि वह अवश्य नष्ट हो जाएगी।

बहुत से धर्म इतिहास पर अपनी छाप छोड़ गये हैं। उनमें सबसे प्रभावशाली धर्मों ने सांस्कृतिक क्षेत्रों का गठन किया। प्रमुख सांस्कृतिक क्षेत्र जो विश्व इतिहास में विभिन्न कालों में रहे हैं, वह करीब इक्कीस और छब्बीस के बीच गिने जाते हैं। इतिहास के प्रवाह के साथ, अल्प सांस्कृतिक क्षेत्र अधिक उन्नत क्षेत्रों के द्वारा या तो अवशोषित किए गये या उनके साथ मिल गए। सांस्कृतिक क्षेत्रों के विकास के माध्यम से, देशों के चढ़ाव और उतराव के थपेड़ों के पश्चात चार महान सांस्कृतिक क्षेत्र आज वर्तमान काल में बचे हैं: पूर्वी एशियाई क्षेत्र, हिन्दू क्षेत्र, इस्लामी क्षेत्र, और ईसाई क्षेत्र। वर्तमान रुझान के इन चार क्षेत्रों से एक वैश्विक सांस्कृतिक क्षेत्र बना है जो ईसाई लोकाचार पर आधारित है। यह ऐतिहासिक विकास इस बात का सबूत है कि ईसाई धर्म, अपने अंतिम नियोग के रूप में सभी धर्मों के लक्ष्य की उपलब्धि है जिसने अच्छाई के आदर्श की तलाश की है। सांस्कृतिक क्षेत्रों के विकास का इतिहास, प्रत्येक अपने विस्तार, उतार और अभिसरण के साथ, अंत में एक धर्म के आधार पर एक वैश्विक सांस्कृतिक क्षेत्र बनाने के लक्ष्य की ओर संकेत करता है। यह दर्शाता है कि मानव इतिहास का सार एक संयुक्त विश्व को बहाल करना है।

दूसरा, धर्म और विज्ञान की प्रगति देख कर हम इस नतीजे पर पहुँचते हैं कि मानव इतिहास पुनरुद्धार की दैवी योजना है। यह पहले चर्चा की गई है[१२५] कि धर्म और विज्ञान का उद्देश्य पतित मानव जाति की अज्ञानता के आंतरिक और बाहरी पहलुओं को दूर करना है। तथापि, वे स्वतंत्र रूप से, एक दूसरे के साथ साधारण तौर पर संबंध रखते हुए काम कर रहे हैं, धर्म और विज्ञान को अनिवार्य रूप से एक ओर ही झुकना चाहिए। आज वे इस गंतव्य पर पहुँचने की दहलीज पर हैं, जहाँ वे एक संयुक्त आयोजन के साथ अपनी सभी समस्याओं का समाधान कर सकेंगे। यह झुकाव दिखाता है कि मानव इतिहास दुनिया को उसकी मूल अवस्था में पुनर्स्थापित करने के लिए दैवी योजना के मार्ग पर चल रहा है।

यदि पतन न हुआ होता, तो उसी समय हमारे पहले मानव पूर्वजों की बौद्धिक क्षमता का विकास उन्हें आध्यात्मिक ज्ञान के उच्चतम स्तर पर पहुँचने के लिये समक्ष होता, तो स्वाभाविक रूप से वह उनके भौतिक संसार के ज्ञान को भी उसी स्तर पर विकसित होने के लिए प्रोत्साहित करता। तब विज्ञान तेजी से समय की एक बहुत ही छोटी सी अवधि में प्रगत हो गया होता, और आज का विज्ञान और प्रौद्योगिकी स्तर उन ही दिनों में प्राप्त हो जाता। परन्तु, पतन के कारण मनुष्य अज्ञानता में पड़ गया और केवल एक

[१२५] प्रति संदर्भ—प्रस्तावना

आदिम समाज का निर्माण कर सका, जो परमेश्वर के मूल आदर्श से बहुत निम्न है। बहुत लम्बे युगों के बाद लोगों ने विज्ञान की प्रगति के माध्यम से इस अज्ञानता को वशीभूत किया है। इतनी अधिक विकसित प्रौद्योगिकी की यह आधुनिक दुनिया बाह्य रूप से आज हमें आदर्श समाज की दहलीज पर ले आई है।

तीसरा, संघर्ष के इतिहास की प्रवृत्तियों का परीक्षण करने से हम यह समझ सकते हैं कि मानव इतिहास पुनरुद्धार की दैवी योजना है। संपत्ति, क्षेत्र और लोगों के बीच लड़ाई झगड़े बिना अवरोध बरकरार रहे हैं और मानव समाज की प्रगति के साथ और अधिक बढ़ते जा रहे हैं। इन संघर्षों के पैमाने अब तक परिवार स्तर से लेकर जनजाति, समाज, राष्ट्र और विश्व के स्तर तक फैल गये हैं कि अब लोकतांत्रिक दुनिया और साम्यवादी दुनिया अंतिम संघर्ष के लिये एक दूसरे का सामना कर रहे हैं। मानव इतिहास के इन अंतिम दिनों में लोकतंत्र राज्य के नाम से दुनिया में स्वर्गीय विधान प्रगट हुआ है, जो इतिहास के एक लम्बे चरण का, जहाँ लोग दूसरों की संपत्ति और भूमि पर कब्जा करके सुख प्राप्त करते थे अंत ला रहा है। प्रथम विश्व युद्ध के समापन पर, पराजित राष्ट्रों ने अपने उपनिवेशों को छोड़ दिया। द्वितीय विश्व युद्ध के अंत में, विजेताओं ने स्वेच्छया उनकी कालोनियों को स्वतंत्र किया और उन्हें सामग्री सहायता दी। आधुनिक वर्षों में महान शक्तियों ने छोटे और कमज़ोर देशों को, कुछ तो उनके किसी शहर से भी छोटे हैं, भाईचारे के नाम पर समान अधिकार और रुतबा देकर संयुक्त राष्ट्र के सदस्य बनने के लिये आमंत्रित किया है।

लोकतंत्र और साम्यवाद के बीच यह अंतिम युद्ध क्या रूप लेगा? मुख्य रूप से यह विचारधाराओं का युद्ध है। यह संघर्ष सही मायने में उस समय तक समाप्त नहीं होगा जब तक कोई ऐसा सत्य न निकले जो पूरी तरह से मार्क्सवादी-लेलिनवादी विचारधारा को, जो आधुनिक दुनिया को धमकी दे रहा है, परास्त कर सके। साम्यवादी विचारधारा धर्म का निषेध करती है और विज्ञान की अनन्य सर्वोच्चता को बढ़ावा देती है। इसलिए, नया सत्य जो धर्म और विज्ञान का मेल कर सकता है, निकलेगा और साम्यवादी विचारधारा पर प्रबल होगा। यह साम्यवादी और लोकतांत्रिक दुनिया का एकीकरण करेगा। इस प्रकार संघर्ष के इतिहास का रुझान यह पुष्टि करता है कि मानव इतिहास दैवी योजना है जो मूल, आदर्श दुनिया को पुनर्स्थापित करने के लिये है।

चौथा, आयें हम बाईबल के शब्दों से इस समस्या की जांच करें। मानव इतिहास का उद्देश्य जीवन के पेड़ की, जो अदन की वाटिका के बीच में खड़ा है, बहाली में निहित है।[१२६] अदन की वाटिका किसी विशिष्ट भौगोलिक स्थान को, जहाँ आदम और हव्वा की सृष्टि हुई थी, उल्लेख नहीं करता, परन्तु इसमें संपूर्ण पृथ्वी शामिल है। यदि अदन की वाटिका जहाँ उनकी रचना की गई थी, एक छोटे क्षेत्र तक सीमित थी, तो यह कैसे हो सकता है कि मानवता एक ऐसी छोटी सी जगह में सीमित होकर भी परमेश्वर के इस आशीर्वाद को कि फूलो-फलो और पृथ्वी में भर जाओ, पूरा कर सकती थी?[१२७]

क्योंकि पहले मानव पूर्वजों का पतन हो गया था, इसलिये अदन की वाटिका पर शैतान ने दावा

---

[१२६] उत्पत्ति २:९, प्रति-संदर्भ—पतन १.१.१

[१२७] उत्पत्ति १:२८

कर लिया, इसलिए जीवन के वृक्ष का रास्ता जो उसके केंद्र में था, अवरोधित किया गया।[१२८] प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में लिखा है:

> मैं अलफा और ओमेगा, आदि और अंत हूँ। धन्य वे हैं, जो अपने वस्त्र धो लेते हैं, क्योंकि उन्हें जीवन के वृक्ष के पास आने का अधिकार मिलेगा, और वे फाटकों से होकर नगर में प्रवेश करेंगे।
> प्रकाशितवाक्य २२:१३-१४

मानव इतिहास अलफा के साथ आरंभ हुआ और ओमेगा के साथ समाप्त होगा। इतिहास के अंत में, पतित लोगों की आशा उनके पाप से सने हुए वस्त्रों को धोने, पुनर्स्थापित अदन की वाटिका में प्रवेश करने, और लंबे समय से खो हुए जीवन के वृक्ष के पास जाने की होगी।

आएं हम इस आयत के महत्व पर और चर्चा करें। जीवन का पेड़ मानवता के सद्-वृत्त माता-पिता (सच्चे माता-पिता) को दर्शाता है, जैसे हमने देखा है, जो आदम को होना चाहिए था यदि उसने अपना चरित्र सिद्ध कर लिया होता। पहले माता-पिता के पतन के कारण, उनका वंश मूल पाप से भ्रष्ट हो गया। सच्चे, मूल पुरुष की अवस्था में पुनरुद्धार पाने के लिये, यीशु ने लोगों से कहा, तुम्हें नए सिरे से जन्म लेना आवश्यक है।[१२९] इसलिए मानवता का इतिहास, मानवता के सच्चे-पिता की, अथवा मसीह की खोज रही है जो हमें पुनर्जन्म दे सके। इस आयत में, जीवन का वृक्ष, जिसके पास अंतिम दिनों के संत लोग जा सकते हैं वह मसीह के अतिरिक्त और कोई नहीं हो सकता। इस प्रकार, बाईबल सिखाती है कि इतिहास का लक्ष्य मसीह के साथ अदन की वाटिका को बहाल करना है, जो जीवन के पेड़ के केंद्र के रूप में आने वाला है।

बाईबल यह बताती है कि अंतिम दिनों[१३०] में नया आकाश और नई पृथ्वी प्रगट होगी, इसका मतलब यह है कि पुराना स्वर्ग और पुरानी दुनिया, जो शैतान के बंधन में थी जाती रहेगी और एक नए स्वर्ग और नई पृथ्वी के रूप में पुनर्स्थापित की जाएगी जो मसीह का ईश्वर-केन्द्रित प्रभुत्व होगा। और कि शैतान के अत्याचार के अंतर्गत सारी सृष्टि भारी कष्ट उठाते हुए कराह रही है और परमेश्वर के पुत्रों के प्रगट होने की बाट जोहती है।[१३१] सृजित प्राणी, परमेश्वर के सच्चे बच्चों की बाट इसलिये नहीं जोह रहे हैं कि वे अंतिम दिनों में आग में जल कर तबाह हो जाए, बल्कि वे नवीन बनने की प्रतीक्षा कर रहे हैं।[१३२] वे अपने मूल स्थान में, अपने यथोचित स्वामी, परमेश्वर के सच्चे पुत्र और पुत्रियों के अधीन जो उन का शासन प्रेम से करें, पुनःस्थापित किए जाएंगे।

बाईबल में मौजूद सबूतों की जाँच करके—सांस्कृतिक क्षेत्रों—धर्म और विज्ञान की क्षेत्र—इतिहास और संघर्ष के क्षेत्र जैसे विभिन्न दृष्टिकोण से देखने से यह स्पष्ट होता है कि मानव इतिहास मूल-आदर्श दुनिया को पुनःस्थापित करने का दैवी इतिहास है।

---

[१२८] उत्पत्ति ३:२४
[१२९] ख्रीस्त-जीवन-शास्त्र ४.१
[१३०] प्रकाशितवाक्य २१:१
[१३१] रोमियों ८:१९-२०
[१३२] प्रकाशितवाक्य २१:५

संभाग ३

अंतिम दिन

३.१ अंतिम दिनों का अर्थ

पतन के अपराध के कारण, परमेश्वर ने सिद्धांत पर आधारित तीन महान आशीर्वाद हमारे प्रथम पूर्वजों को प्रदान किए थे वह पूरित नहीं हो सके, इसके बजाय वह एक सिद्धांतहीन रीति से शैतान की देख-रेख के तहत कार्याविन्त हुए। तब से मानव इतिहास परमेश्वर की पुनरुद्धार की दैवी योजना का इतिहास रहा है। इसके दुष्ट आरंभ के बावजूद भी, यह दुनिया जो शैतान के प्रभुत्व के अधीन है एक दिन अवश्य ही ऐसी दुनिया में बदल जाएगी जहाँ अच्छाई राज्य करेगी, जहां परमेश्वर पर केन्द्रित तीन महान आशीर्वाद परिपूर्ण किए जाएंगे। परिवर्तन के ऐसे समय में मसीह आता है।

अंतिम दिनों का समय वह समय है जब बुराई की दुनिया जो शैतान की प्रभुता के तहत है, परमेश्वर के राज्य के अंतर्गत आदर्श दुनिया में परिवर्तित हो जाएगी। पृथ्वी पर का नरक, पृथ्वी पर स्वर्ग के राज्य में बदल जाएगा। इसलिये, यह दिन भय के दिन नहीं होंगे जैसे कि बहुत से ईसाई लोग विश्वास करते हैं कि वैश्विक प्रलय से दुनिया नाश हो जाएगी। परन्तु वास्तव में यह ख़ुशी के दिन होंगे, जब मानव जाति की अभिलषित आशाएं और युगों की लालसा साधित होंगी।

जब से मनुष्य का पतन हुआ, परमेश्वर ने बहुत बार अपनी दैवी योजना को संपूर्ण करना चाहा और पापी दुनिया का अंत करके मौलिक, अच्छी दुनिया पुनर्स्थापित करने का प्रयास किया है।[१३३] फिर भी, प्रत्येक प्रयास के दौरान मानवता अपने हिस्से की जिम्मेदारी निबाहने में विफल रही, इस तरह, परमेश्वर की अपनी इच्छा सर्वथा निराशा में बदल गई। फलतः, अंतिम दिनों की व्यवस्था कई बार दोहरायी गयी है। यह बाईबल के एक करीबी अध्ययन द्वारा पुष्टि की जा सकती है।

३.१.१ नूंह के दिन अंतिम दिन थे

परमेश्वर ने नूंह से कहा, "मैंने सब प्राणियों का अंत करना निर्धारित किया है; क्योंकि पृथ्वी हिंसा से भर गई है; देखो मैं उन्हें पृथ्वी के साथ नष्ट कर दुँगा।"[१३४] यह इंगित करता है कि नूंह के दिन अंतिम दिन थे। परमेश्वर, इस भ्रष्ट, पापी संसार को नष्ट करना चाहता था जिस पर शैतान पतन के समय से प्रभुता कर रहा था। उसने जल-प्रलय के माध्यम से, जो बाईबल के अनुसार १६,०० वर्ष के दरमियान गिना जाता है, एक बार सदा के लिये पापी इतिहास का शोधन करने का इरादा किया। उसके बाद, परमेश्वर का इरादा था कि वह नूंह के परिवार का, जो किसी अन्य की नहीं पर उसी की उपासना करता था, पोषण करके उनके विश्वास की नींव पर परमेश्वर की राजसत्ता की दुनिया को पुनर्जीवित करे। इस तरह नूंह का समय अंतिम दिन माना जा सकता है।[१३५] परन्तु, जब हैम, नूंह के दूसरे बेटे ने पाप किया, जिससे पतन

---

[१३३] प्रति-संदर्भ—नींव १

[१३४] उत्पत्ति ६:१३

[१३५] प्रति-संदर्भ—नींव २

की घटना की पुनःपुष्टि हो गई, नूंह का परिवार मानव जाति की ओर से अपने हिस्से की जिम्मेदारी पूरी नहीं कर सका, और परमेश्वर की इच्छा फिर निराशा में बदल गई।[१३६]

३.१.२ यीशु के दिन अंतिम दिन थे

परमेश्वर ने अपनी इच्छा की पूर्ति पूर्वनिश्चित की है; इसलिए, पुनरुद्धार की दैवी योजना के लक्ष्य अपरिवर्तनशील हैं और निःसंदेह पूरे किए जाएंगे।[१३७] इसलिए, भले ही नूंह के माध्यम से पुनरुद्धार की दैवी योजना संपन्न नहीं हो पाई, परमेश्वर ने अन्य भविष्यद्वक्ताओं को नए सिरे से विश्वास का आधार तैयार करने के लिए बुलाया। इस नींव पर, परमेश्वर ने यीशु को इस दुनिया में भेजा कि वह शैतान, जिसने इस दुनिया को दास बनाकर रखा है, उसके प्रभुत्व को वशीभूत करे और परमेश्वर पर केंद्रित आदर्श दुनिया की स्थापना करे। तदनुसार, यीशु के दिन भी अंतिम दिन थे। इसी लिये यीशु ने कहा कि वह न्याय करने के लिये आया है,[१३८] और मलाकी ने यीशु के आगमन के बारे में यह भविष्यवाणी की:

> क्योंकि देखो, वह धधकते हुए भट्ठे का सा दिन आता है, जब सब अभिमानी और सब दुराचारी लोग अनाज की खूँटी बन जाएंगे; और उस आने वाले दिन में वे भस्म हो जाएंगे कि उनका पता न चलेगा। मलाकी ४:१

यीशु मूल आदर्श दुनिया बहाल करने के लिये आया था। परन्तु, जब इज़राएली लोगों ने उस पर विश्वास नहीं किया, मनुष्य के हिस्से की ज़िम्मेदारी पूरी होने से रह गई। इसका अर्थ यह हुआ, परमेश्वर की इच्छा मसीह के दूसरे आगमन तक विलंबित हो गई।

३.१.३ मसीह के दूसरे आगमन का दिन अंतिम दिन है

जब चुने हुए लोगों के अविश्वास के कारण यीशु सूली पर चढ़ाया गया, तो यीशु केवल आत्मिक मुक्ति संपन्न कर सका। अब उसके लौटने पर वह दोनों आत्मिक और शारीरिक रूप से पुनरुद्धार की दैवी योजना के लक्ष्य को पूरा करेगा और पृथ्वी पर स्वर्ग का राज्य पुनर्स्थापित करेगा।[१३९] अतेव, मसीह के दूसरे आगमन के दिन भी अंतिम दिन होंगे। इसी लिये यीशु ने कहा, "जैसा नूंह के दिनों में हुआ था, वैसा ही मनुष्य के पुत्र के दिनों में भी होगा,"[१४०] और यह भविष्यवाणी की कि उसके पुनरागमन के समय कई प्राकृतिक आपदाएं आएंगी।[१४१]

---

[१३६] उत्पत्ति ९:२२
[१३७] प्रति-संदर्भ—पूर्वनिर्धारण १
[१३८] यूहन्ना ५:२२
[१३९] प्रति-संदर्भ—मसीह १.४
[१४०] लूक १७:२६
[१४१] मत्ती २४:७, २९

३.२ अंतिम दिनों के चिह्नों के बारे में बाईबल के पद्य

बहुत से ईसाई लोगों का ऐसा विश्वास है कि बाईबल में जैसा लिखा है यथाशब्द उसी तरह अंतिम दिनों में होगा, यानी प्राकृतिक आपदाएं होंगी, और आधुनिक मनुष्यों की कल्पना से बाहर मूलक परिवर्तन होंगे। परन्तु, यदि वे यह समझ सकते कि मानव इतिहास परमेश्वर की दैवी योजना का इतिहास है, जो परमेश्वर के इरादे के अनुसार दुनिया का पुनरुद्धार, उसकी मौलिक अवस्था में जिस में वह निर्माण किया गया था, कर रहा है, तब वे यह जान जाते कि अंतिम दिनों के चिह्न जिनकी बाईबल में भविष्यवाणी की गई है वे यथाशब्द घटित नहीं होंगे। आइए हम अंतिम दिनों के बारे में बाईबल की भविष्यवाणियों की जाँच करें कि वास्तव में वे क्या संकेत करतीं हैं।

३.२.१ स्वर्ग और पृथ्वी का नाश और नया स्वर्ग और नई पृथ्वी की रचना

यह लिखा है कि नूंह के समय परमेश्वर ने पृथ्वी को नष्ट करना ठान लिया था।[१४२] नूंह का समय अंतिम दिन थे, फिर भी दुनिया नष्ट नहीं की गई। पृथ्वी अनन्त है, जैसा कि निम्न लिखित आयतों से संकेत मिलता है: “एक पीढ़ी जाती है, और दूसरी पीढ़ी आती है, परन्तु पृथ्वी सदा बनी रहती है,”[१४३] “उसने अपने पवित्र स्थान को बहुत ऊँचा बना दिया, और पृथ्वी के समान स्थिर बनाया, जिसकी नींव उसने सदा के लिये डाली है।”[१४४] पृथ्वी परमेश्वर की पात्र साझी के रूप में बनायी गई थी। परमेश्वर, जो कर्ता साझी है, अनन्त है; इसी तरह, पृथ्वी भी, जो पात्र साझी है, अनन्त होनी चाहिये। सर्वशक्तिमान परमेश्वर कभी भी ख़ुश नहीं होगा यदि उसने ऐसी नाज़ुक दुनिया बनाई हो जो शैतान के कारण संभवतः नष्ट हो जाए। तो फिर, अंतिम दिनों की पृथ्वी के विनाश की भविष्यवाणी का अर्थ क्या है? उदाहरण के लिए:

> आकाश आग से पिघल जाएंगे, और आकाश के गण बहुत ही तप्त हो कर गल जाएंगे! पर उसकी प्रतिज्ञा के अनुसार हम एक नए आकाश और नई पृथ्वी की आस देखते हैं जिसमें धार्मिकता वास करेगी। २ पतरस ३:१२-१३

> फिर मैंने नए आकाश और नई पृथ्वी को देखा, क्योंकि पहला आकाश और पहली पृथ्वी जाती रही थी। प्रकाशितवाक्य ३:१२-१३, यशायाह ६६:२२

एक राष्ट्र को नष्ट करना, उसकी सत्ता को गिराना हुआ, और एक नए राष्ट्र को बनाना, नए साम्राज्य को स्थापित करना होता है। इसी तरह, वह भविष्यवाणियाँ जो बताती हैं आकाश और पृथ्वी नष्ट किए जाएंगे इसका अर्थ है कि स्वर्ग और पृथ्वी पर शैतान का निरंकुश स्वामित्व परास्त किया जाएगा। नया स्वर्ग और नई पृथ्वी का अर्थ, स्वर्ग और पृथ्वी पर मसीह के द्वारा परमेश्वर की प्रभुता पुनर्स्थापित करना है।

---

[१४२] उत्पत्ति ६:१३
[१४३] सभोपदेशक १:४
[१४४] भजन संहिता ७८:६९

३.२.२ आग के द्वारा स्वर्ग और पृथ्वी का न्याय

इस भविष्यवाणी का क्या अर्थ है कि “अंतिम दिनों में आकाश आग से पिघल जाएगा और आकाश के गण तप्त होकर गल जाएंगे?”[१४५] मलाकी ने यीशु के लिये इस तरह से भविष्यवाणी की, कि वह दिन न्याय की आग से जलते हुए दिन के जैसा होगा[१४६]। यीशु ऐसा न्याय करने के लिये दुनिया में आया था, जैसा कि उसने कहा, “मैं इस जगत में न्याय के लिये आया हूँ।”[१४७] यीशु ने यह भी कहा, “मैं पृथ्वी पर आग लगाने आया हूँ।”[१४८] “आग” यहाँ दर्शाती है, न्याय का साधन, जिसके लिये यीशु इस दुनिया में आया। तथापि, यीशु के समय का कोई भी ऐसा आलेख नहीं है कि यीशु ने अपने समय में यथाशब्द आग के साथ न्याय किया। यह आयतें जो आग की चर्चा करती हैं प्रतीकात्मक होनी चाहिए। यह लिखा है, “यहोवा का यह वचन है, क्या मेरा वचन आग सा नहीं है?”[१४९] इसलिये, आग के द्वारा न्याय करना वचन के द्वारा न्याय करना दर्शाता है।

आइये हम वचन के द्वारा न्याय के संबंध में बाईबल के कुछ उदाहरण लेते हैं: “जो मुझे तुच्छ जानता है और मेरी बातें ग्रहण नहीं करता है उसके तो दोषी ठहराने वाला तो एक है, अर्थात जो वचन मैंने कहा है, वही अंतिम दिन में उसे दोषी ठहराएगा।”[१५०] “तब वह अधर्मी प्रगट होगा, जिसे प्रभु यीशु अपने मुंह की फूँक से मार डालेगा,”[१५१] यानी वचन के द्वारा। इसके अतिरिक्त, “वह पृथ्वी को अपने मुंह के सोटे से मारेगा और अपनी फूँक के झोंके से दुष्ट को मिटा डालेगा”[१५२] “जो मेरा वचन सुन कर मेरे भेजने वाले पर विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसी का है; और उसपर दण्ड की आज्ञा नहीं होगी परन्तु वह मृत्यु से पार होकर जीवन में प्रवेश कर चुका है।”[१५३] कहने का अर्थ यह है कि यीशु जो आग से न्याय करने के लिये आया था वह न्याय वचन के द्वारा था।

यीशु का वचन के द्वारा न्याय करने का क्या करण है? मनुष्य वचन के द्वारा रचे गये हैं।[१५४] पहले मानव पूर्वजों के लिये परमेश्वर की सृष्टि का आदर्श यह था कि वे वचन का मूर्त रूप बनकर वचन के उद्देश्य को पूरा करें। फिर भी उन्होंने परमेश्वर के वचन को नहीं माना और पाप में गिरे; इस तरह वे वचन के उद्देश्य को पूरा करने में विफल हुए। तब से परमेश्वर ने पतित मानव का वचन के द्वारा पुनर्निर्माण करने के लिये, वचन के उद्देश्य को पूरा करने की चेष्टा की है। यह वचन के सत्य के आधार पर, जैसा शास्त्रों में प्रकाशित किया गया है, पुनरुद्धार की दैवी योजना है। यह लिखा है, “और वचन देहधारी हुआ

---

[१४५] २ पतरस ३:१२
[१४६] मलाकी ४:१
[१४७] यूहन्ना ९:३९, यूहन्ना ५:२२
[१४८] लूका १२:४९
[१४९] यर्मयाह २३:२९
[१५०] यूहन्ना १२.४८
[१५१] २ थिस्सलुनिकियो २:८
[१५२] यशायाह ११:४
[१५३] यूहन्ना ५:२४
[१५४] यूहन्ना १:३

और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया, और हमने उसकी महिमा देखी, जैसे पिता के इकलौते की महिमा।"[१५५] यीशु ने पूरी तरह से वचन को साधित किया। वह वचन के द्वारा न्याय का मानक बन कर फिर से आएगा और जिस हद तक मानवता ने वचन के उद्देश्य को पूरा किया है उनका न्याय करेगा। न्याय, इस संदर्भ में पुनरुद्धार के लक्ष्य की प्राप्ति में है, जो वचन के उद्देश्य को साकार करना है। इसलिए, पुनरुद्धार के दौरान, वचन को मानक के रूप में स्थापित करना अनिवार्य है जिसके माध्यम से न्याय किया जा सके। यीशु ने शोकाकुल होकर कहा, "मैं पृथ्वी पर आग लगाने आया हूँ, और चाहता हूँ कि यह आग अभी सुलग जाती।"[१५६] वह वचन का मूर्त रूप था, इसलिए वह इज़राएल के लोगों के लिये दुखी हुआ, क्योंकि जिन जीवन के वचनों की घोषणा वह कर रहा था, उन्होंने उसे ग्रहण नहीं किया।[१५७]

३.२.३ मृतकों का क़ब्र में से उठना

बाईबल में यह लिखा है कि अंतिम दिनों में मृत अपनी क़ब्र में से जी उठेंगे:

> "और प्रधान स्वर्गदूत का शब्द सुनाई देगा, और परमेश्वर की तुरही फूँकी जाएगी; और जो मसीह में मरे हैं वह पहले जी उठेंगे।" १ थिस्सलुनिकियों ४:१६

इस भविष्यवाणी का अर्थ हम, इसी तरह की एक घटना का परीक्षण करके समझ सकते हैं, यीशु की मृत्यु होने पर जब मृतक अपनी कब्रों से जी उठे थे:

> "और क़ब्रें खुल गईं और जो सोए हुए थे पवित्र लोगों के बहुत से शव जी उठे और उनके जी उठने के बाद वे क़ब्रों में से निकल कर पवित्र नगर में गए और बहुतों को दिखाई दिये।" मत्ती २७:५२-५३

इस आयत का अर्थ यह नहीं है कि संत लोगों की सड़ी हुई देह यथाशब्द क़ब्र में से जी उठीं।[१५८] पुराने नियम के संतों के भौतिक शरीर यदि वास्तव में कब्रों से जी उठे होते और यरूशलेम में कई लोगों को दिखाई दिये होते, तो वे निश्चित रूप से यीशु के बारे में लोगों को गवाही देते, चूँकि वे पहले ही से जानते थे कि वह मसीह है। ऐसी गवाही सुनने के बाद, यरूशलेम के निवासियों में से कौन सूली पर चढ़ाये गये यीशु पर विश्वास नहीं करता? इसके अतिरिक्त यदि वास्तव में संत लोग सशरीर अपनी कब्रों से जी उठे होते, तो निश्चित रूप से उनके कार्य बाईबल में दर्ज किए गए होते। तथापि, हम कोई ऐसे अभिलेख नहीं पाते हैं।

जब शास्त्र यह कहते हैं कि संतों के शव उनके मकबरे में से जी उठे, तो इसका क्या तात्पर्य है? यह अभिलेख उन लोगों ने वर्णन किया है जिन्होंने अतीत के संतों को आत्मिक रूप में पुनर्जीवित होकर

---

155 यूहन्ना १:१४

156 लूका १२:४९

157 यूहन्ना १:१४

158 प्रति-संदर्भ—पुनरुत्थान २.३

पृथ्वी पर प्रगट होते देखा था।[१५९] यह बहुत कुछ मूसा और एलिय्याह की घटना के समान है, जो आत्माओं के रूप में, थोड़े समय के लिये रूपांतरण के पहाड़ पर यीशु के साथ प्रगट हुए थे।[१६०] "कब्र" किस चीज़ का प्रतीक है? यह आत्माओं का क्षेत्र है जहाँ पुराने नियम के संतों की आत्माएं रहतीं हैं, यह क्षेत्र परलोक का वह क्षेत्र है जो यीशु ने खोला था, यह वैकुंठ के स्तर से देखने से धुँधला सा दिखाई देता है। इसलिए, यह कब्र के रूप में निर्दिष्ट किया गया है। इन सभी संतों की आत्माएं आत्मालोक के निचले क्षेत्र में रहीं थीं, इससे पहले कि वे आत्मिक रूप से पृथ्वी पर चैतन्य विश्वासियों को दिखाई दीं।

३.२.४ लोगों का प्रभु से मिलने के लिये हवा में उठाया जाना

> तब हम जो जीवित हैं और बचे रहेंगे उसके साथ बादलों पर उठा लिये जाएंगे कि हवा में प्रभु से मिलें; और इस रीति से हम सदा प्रभु के साथ रहेंगे। १ थिस्सलुनिकियों ४:१७

यह आयत "हवा में प्रभु से मिलने" के बारे में बताती है, इस का अर्थ यथाशब्द हवा में नहीं लिया जा सकता। बाईबल में "पृथ्वी" अधिकतर दुष्ट सत्ता के अधीन पतित संसार का प्रतीक माना जाता है, और "स्वर्ग" बहुधा अच्छी प्रभुता की निष्पाप दुनिया का प्रतीक है। सर्वव्यापी परमेश्वर निश्चित रूप से पृथ्वी पर हर जगह रहता है, फिर भी हम प्रार्थना करते हैं, "हमारा पिता जो स्वर्ग में है।"[१६१] यद्यपि यीशु पृथ्वी पर पैदा हुआ था, फिर भी वह स्वर्ग से उतरा हुआ मनुष्य का पुत्र,[१६२] उल्लिखित किया गया है। हवा में प्रभु से मिलने का आशय यह है कि मसीह जब दुबारा आएगा तब संत लोग मसीह को अच्छे राज्य की दुनिया में ग्रहण करेंगे और वह शैतान के राज्य को परास्त करके पृथ्वी पर स्वर्ग का राज्य बहाल करेगा।

३.२.५ सूर्य का अंधियारा हो जाना और चंद्रमा का प्रकाश न देना और स्वर्ग से सितारों का गिरना

अंतिम दिनों में, यीशु ने कहा, "उन दिनों क्लेश के तुरन्त बाद सूर्य अन्धियारा हो जाएगा और चन्द्रमा का प्रकाश जाता रहेगा और तारे आकाश से गिर पड़ेंगे।"[१६३] इस आयत को हम किस तरह समझ सकते हैं?

यह लिखा है कि यूसुफ ने, याकूब के बारह पुत्रों में से ग्यारहवें पुत्र ने स्वप्न देखा:

> फिर उसने एक और स्वप्न देखा, और अपने भाइयों से उसका यों वर्णन किया, "सुनो, मैंने एक और स्वप्न देखा, कि सूर्य और चन्द्रमा और ग्यारह सितारे मुझे दण्डवत् कर रहे हैं।" जब उसने इस स्वप्न का अपने पिता और भाइयों से वर्णन किया तब उसके पिता ने उसको डाँट कर कहा,

[१५९] प्रति-संदर्भ—पुनरुत्थान २.३
[१६०] मत्ती १७:३
[१६१] मत्ती ६:९
[१६२] यूहन्ना ३:१३
[१६३] मत्ती २४:२९

> "यह कैसा स्वप्न है जो तूने देखा है? क्या सचमुच मैं और तेरी माता और तेरे भाई सब झुक कर तेरे आगे भूमि पर गिर कर दण्डवत् करेंगे?"—उत्पत्ति ३७:९-१०

बाद में जब यूसुफ मिस्र का प्रधानमंत्री ने बन गया, जैसे स्वप्न में बताया गया था, उसके मात-पिता और भाइयों ने उसको झुक कर दण्डवत् किया। इस स्वप्न में सूर्य और चन्द्रमा उनके माता-पिता के प्रतीक थे और तारे बच्चों के प्रतीक थे। यह आगे समझाया जाएगा कि यीशु और पवित्र आत्मा सद्-वृत्त माता-पिता हैं (सच्चे माता-पिता), जो आदम और हव्वा के स्थान पर मानवता को पुनर्जन्म देने के लिए आए थे।[१६४] इसलिये, मत्ती की इस भविष्यवाणी में सूर्य और चन्द्रमा, यीशु और पवित्र आत्मा को दर्शाते हैं जबकि तारे उनके वफादार विश्वासियों को द्योतित करते हैं जो उनके बच्चों के समान हैं। दूसरे स्थानों में यीशु को सच्चा प्रकाश बताया गया है क्योंकि वह वचन का मूर्त रूप होकर आया था और उसने सत्य का प्रकाश दिया।[१६५] यहाँ, सूर्य की रोशनी का अर्थ है यीशु के वचन का प्रकाश, और चन्द्रमा के प्रकाश का तात्पर्य पवित्र आत्मा है, जो सच्चाई के प्रकाश के रूप में आए थे।[१६६]

सूर्य का अंधेरा होना और चंद्रमा का प्रकाश देना बंद हो जाने का तात्पर्य यह है कि नए नियम में यीशु और पवित्र आत्मा द्वारा दिए गए वचन अपनी आभा खो देंगे। यह कैसे संभव है कि जो वचन नए नियम में प्रकाशित किए गये हैं वे अपना प्रकाश खो देंगे? जब यीशु और पवित्र आत्मा आये और उन्होंने हमें नए नियम का वचन दिया, जो पुराने नियम के वचन की पूर्ति थी, इस तरह पुराना नियम ग्रस्त हो गया।[१६७] उसी तरह जब मसीह वापस आएगा और नए नियम के वचन को परिपूर्ण करने के लिये, और नया स्वर्ग और नई पृथ्वी[१६८] बनाने के लिए नया सत्य देगा,[१६९] तो जो वचन उसने अपने पहले आगमन में दिये थे फीके पड़ जाएंगे। यह कहा गया है कि वे अपना प्रकाश खो देंगें, क्योंकि, नए युग के आने पर पुराने सत्य की अवधि और मिशन कालातीत हो जाएगा।

यह भविष्यवाणी कि अंतिम दिनों में तारे आकाश से गिर जाएंगे द्योतित करता है कि बहुत से श्रद्धालु ईसाई विश्वासी लड़खड़ाएंगे और परमेश्वर के अनुग्रह से गिर जाएंगे। यीशु के समय में, यहूदी लोगों के नेता सभी मसीह के आने के लिए तड़प रहे थे, लेकिन जब यीशु मसीह आया तो उन्होंने ठोकर खाई, उसे पहचान नहीं सके और उसका विरोध किया। उसी तरह, ईसाई लोग भी जो यीशु की वापसी की उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहे हैं, जब वह सचमुच में वापस आएगा,[१७०] संभवतः वैसा ही ग़लत निर्णय ले कर गिर सकते हैं।

यीशु ने कहा, "तौभी, जब मनुष्य का पुत्र आएगा, तो क्या वह पृथ्वी पर विश्वास पाएगा?"[१७१] एक

---

164 प्रति-संदर्भ—ख्रीस्त विद्या शास्त्र ४
165 यूहन्ना १:९-१४
166 यूहन्ना १६:३३
167 २ कुरिंथियों ३:७-११
168 प्रकाशितवाक्य २१:१
169 प्रति-संदर्भ—अंतिम दिनों का उपदेश ५:१
170 प्रति-संदर्भ—दूसरा आगमन २.२
१७१ लूका १८:८

अन्य अवसर पर उसने कहा कि वह विश्वासी भक्तों को घोषित करेगा, "तब मैं उनसे खुल कर कह दूंगा, 'मैंने तुम्हें कभी नहीं जाना। हे कुकर्म करने वालो, मेरे पास से चले जाओ'।"[१७२] यीशु ने अंतिम दिनों के ईसाइयों के लिए यह चेतावनियाँ दीं हैं क्योंकि उसे ऐसी संभावना का पूर्वाभास था कि उसके दूसरे आगमन पर वे अविश्वास में पड़ कर उसके ख़िलाफ़ पाप करेंगे।

---

[१७२] मत्ती ७:२३

संभाग ४

अंतिम दिन और वर्तमान दिन

जब यीशु अपने भाग्य के बारे में पतरस से बात कर रहा था, तब पतरस ने यूहन्ना के भविष्य के बारे में पूछा। यीशु ने उत्तर दिया, "यदि मैं चाहूँ कि वह मेरे आने तक ठहरा रहे, तो तुझे इससे क्या?"[१७३] यह सुनकर, चेलों ने सोचा, यीशु यूहन्ना के जीवनकाल ही में लौटेगा। इसके अतिरिक्त, यीशु ने अपने चेलों से कहा, "मैं तुम से सच कहता हूँ तुम इज़राएल के सब नगरों में न फिर चुकोगे कि मनुष्य का पुत्र आ जाएगा",[१७४] और मैं तुम से सच कहता हूँ, जो यहाँ खड़े हैं, उनमें से कुछ ऐसे हैं कि वे जब तक मनुष्य के पुत्र को उसके राज्य में आते हुए न देख लेंगे, तब तक वह मृत्यु का स्वाद न चखेंगे।"[१७५] इन बातों पर आधारित, चेलों का और कई ईसाई लोगों का यह विश्वास था कि यीशु उनके जीवनकाल के दौरान वापस आएगा। वे निरंतर ऐसे विचारों से कि अंतिम दिन निकट हैं व्याकुल रहे थे। यह इसलिए, क्योंकि वे अंतिम दिनों का ठीक अर्थ नहीं समझ सके।

हम वर्तमान युग की विभिन्न परिस्थितियों का परीक्षण करके यह अनुमान लगा सकते हैं कि आज के दिन वास्तव में अंतिम दिन हैं। इन परिस्थितियों में हम तीन महान आशीर्वादों को पहचान सकते हैं, जो परमेश्वर ने पुनरुद्धार की दैवी योजना में नियत कि थे। यीशु ने कहा:

> अंजीर के पेड़ से यह दृष्टांत सीखो; जब उसकी डाली कोमल हो जाती है और पत्ते निकलने लगते हैं, तो तुम जान लेते हो कि ग्रीष्म काल निकट है। इसी रीति से, जब तुम इन सब बातों को देखो, तो जान लो कि वह निकट है वरन् द्वार पर है। मत्ती २४:३२-३३

४.१ पहले आशीर्वाद की बहाली के चिह्न

पहला आशीर्वाद जो परमेश्वर ने आदम और हव्वा को दिया था वह व्यक्तिगत चरित्र की पूर्णता था।[१७६] आधुनिक दुनिया में, अनेक विभिन्न घटनाओं का घटित होना यह संकेत करता है कि पतित लोगों को सिद्ध व्यक्तियों के रूप में यानी उनकी मूल पूर्वावस्था में बहाल करने की परमेश्वर की पुनरुद्धार की दैवी योजना अपने चरम शिखर पर है।

सबसे पहले हम देखते हैं कि पतित लोगों की आध्यात्मिकता बहाल होती जा रही है। हम पहले यह स्पष्ट कर चुके हैं कि जब कोई व्यक्ति अपनी पूर्णता तक पहुँच जाता है, वह परमेश्वर के साथ पूरी तरह से एक हो जाता है और दूसरों के साथ सच्चे संबंध बनाने के योग्य हो जाता है। आदम और हव्वा, हालांकि पूरी तरह से पूर्ण नहीं हो पाए थे, फिर भी वे परमेश्वर के साथ बातचीत करने में सक्षम थे। जब वे इस पद से पाप में नीचे गिरे, तो वे अपने वंश को भी अज्ञानता और परमेश्वर के प्रति असंवेदनशीलता में डुबो देने का कारण बने। यथाक्रम, पतित लोगों की आध्यात्मिकता पुनर्वासित की जा रही है कि अब

---

[१७३] यूहन्ना २१:२२
[१७४] मत्ती १०:२३
[१७५] मत्ती १६:२८
[१७६] प्रति-संदर्भ—सृष्टि ३:२

वे पुनरुद्धार की दैवी योजना में युग के अनुग्रह का आनन्द ले रहे हैं। इसलिए, अंतिम दिनों में, कई वफादार विश्वासी लोग परमेश्वर के साथ वार्तालाप करने की क्षमता प्राप्त करेंगे, जैसा कि बाईबल में भविष्यवाणी की गई है:

> अंतिम दिनों में...मैं अपना आत्मा मनुष्यों पर उंडेल दुँगा, और तुम्हारे बेटे बेटियाँ भविष्यवाणी करेंगे, और तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे, और तुम्हारे पुरनिए स्वप्न देखेंगे। प्रेरितों २:१७

जैसे कि हम देख रहे हैं कि आध्यात्मिक घटनाएं हमारे चारों ओर प्रचुरता से हो रही हैं, इससे हम यह समझ सकते हैं कि वर्तमान युग अंतिम दिन हैं। हम एक ऐसे युग में प्रवेश कर रहे हैं कि जब हम व्यक्तिगत पूर्णता प्राप्त कर सकते हैं और परमेश्वर का प्रथम आशीर्वाद पुनर्स्थापित कर सकते हैं।

वर्तमान युग में पहले आशीर्वाद की बहाली का दूसरा चिह्न हम ऐतिहासिक प्रचलन में, जो मूल मन की स्वतंत्रता की पुन:प्राप्ति की ओर है, देख सकते हैं। पतन के कारण, हमारा मूल मन शैतान के जुए के नीचे बंधा हुआ था, और हमने परमेश्वर के सामने आने की स्वतंत्रता खो दी थी। वर्तमान युग में स्वतंत्रता प्राप्ति का जोश अत्यधिक बढ़ गया है, लोग स्वतंत्रता के लिये अपनी जान पर खेल कर संघर्ष करते हैं। यह इस बात को संकेत करता है कि हम अब एक नए युग में प्रवेश कर रहे हैं, हम व्यक्तिगत पूर्णता, जो बहुत अरसे से शैतान ने निषेध कर दी थी, प्राप्त कर सकते है, और परमेश्वर के पास जा सकते हैं।

पहले आशीर्वाद की बहाली का तीसरा चिह्न सच्चे मानव-मूल्य की पुन:स्थापना है। क्षैतिज दृष्टिकोण से हर व्यक्ति का महत्व बराबर होता है, लेकिन यह उसकी सही कीमत नहीं दर्शाता है। स्वर्ग के लंब दृष्टिकोण से प्रत्येक व्यक्ति अति उत्कृष्ट लौकिक महत्व रखता है।[१७७] पतन के कारण, मनुष्य ने अपना मूल महत्व खो दिया है। वर्तमान युग में लोकतांत्रिक आदर्श प्रभावशाली हुए हैं, लोग, दासों की मुक्ति, उत्पीड़ित प्रजातीय अल्पसंख्य लोगों की स्वतंत्रता, और छोटे और कमजोर राष्ट्र की स्वतंत्रता को बढ़ावा दे रहे हैं। वे मानव अधिकारों, लिंगों और सब लोगों के बीच समानता का समर्थन कर रहे हैं। पहले से कहीं अधिक, लोग व्यक्तिगत महत्व को उत्साहपूर्वक उसके मूल मान की ओर उठा रहे हैं। यह दर्शाता है कि हम अंतिम दिनों की चौखट पर आ चुके हैं जब पतित लोग परमेश्वर के पहले आशीर्वाद को पुनर्स्थापित कर सकते हैं।

चौथा चिह्न यह है कि वर्तमान युग में पहले आशीर्वाद का जो नवीकरण हो रहा है वह पतित लोगों में मूल, सच्चे प्रेम की पुन:स्थापना है। वह दुनिया जहाँ परमेश्वर का आदर्श साधित हो गया है, एक सिद्ध व्यक्ति की छवि में होगी। उस दुनिया में हर व्यक्ति परमेश्वर के साथ लंब तौर पर एकजुट होगा, इस आधार पर वे स्वभावत: क्षैतिज रूप से एक दूसरे के साथ मिल-जुल कर रह सकते हैं। ऐक्यभाव और सहानुभूति केवल उसी समय प्राप्त होती है जब लोग परमेश्वर के प्रेम में एक साथ मिल जाते हैं। पतन के कारण परमेश्वर और मनुष्यों के बीच लंब प्रेम का बंधन टूट गया था, और यह उनके आपसी

---

[१७७] ख्रीस्त-जीवन-शास्त्र १

क्षैतिज प्रेम के टूटने का कारण बना। परिणाम स्वरूप, मानव इतिहास सतत संघर्ष का इतिहास बना गया। वर्तमान युग में, हालांकि, सार्वभौमिक प्रेम का फ़लसफ़ा व्यापक हो गया है, और लोग अधिकतर सच्चे, मूल प्रेम की खोज कर रहे हैं। यह एक और सबूत है कि वर्तमान समय अंतिम दिन हैं, जब हम परमेश्वर के प्रथम आशीर्वाद को पुनर्स्थापित कर सकते हैं और परमेश्वर के प्रेम में स्थापित व्यक्तिगत चरित्र की पूर्णता तक पहुँच सकते हैं।

४.२ दूसरे आशीर्वाद की बहाली के चिह्न

आदम और हव्वा के लिये परमेश्वर का दूसरा आशीर्वाद यह था कि वे सच्चा पितृत्व प्राप्त करें और अच्छे बच्चे पैदा करके उनका पालन-पोषण करें, और ऐसा परिवार, समाज और दुनिया बसाएं जहाँ अच्छाई का राज्य हो। परन्तु, आदम और हव्वा ने पाप किया, दुष्ट माता-पिता बनकर दुष्ट बच्चे पैदा किए और उनके वंश (मानवता) ने बुराई से उत्पीड़ित दुनिया बसाई। तब से परमेश्वर, अच्छाई का राज्य पुनःस्थापित करने के लिये दो प्रकार की, आंतरिक और बाह्य, दैवी योजना का निर्देशन कर रहा है।

परमेश्वर ने धर्मों की स्थापना की और उनके माध्यम से लोगों के शैतानी तत्वों को आंतरिक रूप से शुद्ध करके ऊँचा उठाने का काम किया है। उसी समय परमेश्वर, शैतान के प्रभाव को बाह्य संघर्ष और युद्धों के माध्यम से खंडित करता आया है। शैतान को दोनों आंतरिक और बाह्य रूप से अलग करके, पुनरुद्धार की दैवी योजना अच्छे बच्चों को बढ़ा रही है, जो एक दिन मसीह की, जब वह सद्-वृत्त माता-पिता बनकर आएगा, सेवा करने में सक्षम होंगे। इस प्रकार से, मानव इतिहास परमेश्वर के दूसरे आशीर्वाद के प्रत्यावर्तन के लिये रास्ता तैयार कर रहा है। तदनुसार, हम परमेश्वर के आधिपत्य की बहाली के आंतरिक और बाह्य चिह्नों की जांच करके यह अनुमान लगा सकते हैं कि वर्तमान युग अंतिम दिन हैं। इन्हें सांस्कृतिक क्षेत्रों के विकास के रुझानों के रूप में और राष्ट्रों के उत्थान और पतन के इतिहास में दिखाया गया है, दोनों धर्मों में निहित हैं।

आइये, पहले हम यह जांच करें कि वर्तमान युग में सांस्कृतिक क्षेत्रों के विकास की प्रगति किस प्रकार हमें अंतिम दिनों की दहलीज पर ले आई है। परमेश्वर भविष्यद्वक्ताओं और संतों को पतित मानवता के पास धर्म की स्थापना करने के लिए भेजता है। जो लोग अच्छाई की तलाश करते हैं उनके मूल मन के माध्यम से वह उन्हें विकसित करने के लिए काम करता है। इस तरह, परमेश्वर धर्म पर आधारित सांस्कृतिक क्षेत्रों को बनाता है। यद्यपि, इतिहास में बहुत से सांस्कृतिक क्षेत्र निकले हैं, समय के साथ उनमें से अधिकतर या तो एक साथ मिल जाते हैं या वे दूसरों के द्वारा अवशोषित किए जाते हैं। वर्तमान युग में हम ईसाई आदर्शों पर आधारित एक वैश्विक सांस्कृतिक क्षेत्र के गठन का स्पष्ट झुकाव देखते हैं। जैसे-जैसे इस प्रवृत्ति की प्रगति होती जाती है, परमेश्वर के दूसरे आशीर्वाद के प्रत्यावर्तन के लिए सभी जातियाँ और लोग अधिकतर यीशु मसीह के प्रेम के मार्गदर्शन के अंतर्गत भाई बहनों की तरह कंधे से कंधा मिलाकर खड़े हो रहे हैं।

ईसाई धर्म और अन्य धर्मों के बीच मुख्य अंतर यह है कि इसका उद्देश्य मानवता के सच्चे माता-

पिता का स्वागत करना और आदर करना है, जिनके द्वारा सभी लोगों का पवित्र बच्चों के रूप में पुनर्जन्म हो सकता है। इस तरह, ईसाई धर्म को चाहिये कि वे परमेश्वर के सृष्टि के उद्देश्य के अनुसार, जैसा आरम्भ में था, दुनिया को वैश्विक परिवार के रूप में नया करके बदलें। यह ईसाई धर्म को केन्द्रीय धर्म बनाती है जिसका मिशन पुनरुद्धार की दैवी योजना के लक्ष्य को पूरा करना है। वर्तमान युग की दुनिया में लोग ईसाई आदर्शों पर आधारित एक सांस्कृतिक क्षेत्र के रूप में संगठित होते जा रहे हैं। दुनिया मानवता के सद्-वृत्त माता-पिता[१७८] यीशु और पवित्र आत्मा की शिक्षाओं से बहुत प्रभावित है, इस तरह सभी लोगों के लिए धर्म की संतान बनने का रास्ता खुल गया है। यह रवैया इस बात का सबूत है कि परमेश्वर का दूसरा आशीर्वाद बहाल हो रहा है। इस प्रकार, हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि वर्तमान युग अंतिम दिन हैं।

आएं हम और आगे यह जांच करें कि राष्ट्र के उत्थान और पतन का इतिहास किस प्रकार अच्छाई के राज्य के प्रत्यावर्तन के लक्ष्य की ओर बढ़ रहा है और किस तरह वह हमें अंतिम दिनों की ओर ले जा रहा है। संघर्ष और युद्धों का कारण, केवल हितों की जद्दोजहद और विचारधाराओं के बीच प्रतियोगिता समझना एक भूल है, यह परमेश्वर की मूल दैवी योजनाओं की अज्ञानता की वजह से है। जब से प्रथम मानव पूर्वजों का पतन हुआ तब से मानव जाति शैतान की अधीनता के तहत पापमय इतिहास के कारण दुःख उठा रही है। तथापि, जब तक परमेश्वर का सृष्टि का उद्देश्य अटल रहेगा, तब तक इस इतिहास का उद्देश्य शैतान के संबंधों को तोड़कर परमेश्वर के राज्य को पुनर्स्थापित करना होना। यदि इस पतित दुनिया में कोई युद्ध या विभाजन ना हो तो फिर बुराई की प्रभुता हमेशा के लिए जारी रहेगी और दुनिया कभी भी बहाल नहीं की जा सकेगी। इसलिए, परमेश्वर ने अपनी दैवी योजना के द्वारा धीरे-धीरे स्वर्गीय प्रभुता को बहाल करने के लिए काम किया है। वह भविष्यद्वक्ताओं और संतों को धर्म की स्थापना करने के लिये और इस तरह नैतिकता के स्तर को बढ़ाने के लिये भेजता है। वह अच्छाई के उच्च मानकों के साथ सरकारों की स्थापना करता है जो घटिया मानकों वाली सरकारों का विरोध करतीं हैं और उन्हें नष्ट करतीं हैं। इसलिये, प्रत्यावर्तन की दैवी योजना को साधित करने के लिये संघर्ष और युद्ध अनिवार्य हैं।

इनमें से कुछ मुद्दे संक्षेप में भाग दो में और अच्छी तरह से स्पष्ट किए जाएंगे। मानव इतिहास दैवी योजना के दौरान क्षतिपूर्ति द्वारा पुनरुद्धार के माध्यम से प्रगति करता आया है। यद्यपि यह भी देखने में आया है कि कभी-कभी बुराई प्रबल होती हुई लगती है, परन्तु अंत में अपेक्षाकृत बुरी सामाजिक और राजनीतिक शक्तियाँ लुप्त हो जातीं हैं या अधिक धर्मी शक्तियों के द्वारा अवशोषित की जातीं हैं। युद्ध जो देशों के उत्थान और पतन को रूप देता है, दैवी योजना के दौरान, अच्छाई का राज्य पुनर्स्थापित करने के लिये, अनिवार्य है।

उदाहरण के लिए, बाईबल में परमेश्वर ने इज़राएल को कनान के सात कबीलों को नष्ट करने का आदेश दिया। जब शाऊल ने उसकी आज्ञा भंग की और कुछ अमालेकियों को उनके पशुओं के साथ जीवित छोड़ दिया, तब परमेश्वर ने उसे कड़ी सज़ा दी।[१७९] जबकि उस समय परमेश्वर ने इज़राएलियों को

---

[१७८] ख्रीस्त-बोध ४

[१७९] १ शमूएल १५:१८-२३

अन्य जातियों को नष्ट करने की आज्ञा दी थी, परंतु दूसरे अवसर पर, जब उत्तरी राज्य के इज़राएली बुराई की ओर फिर गए, तब परमेश्वर ने उनको अश्शूरियों के हाथों में दे दिया।[१८०] हमें यह समझना चाहिए कि इन घटनाओं के द्वारा परमेश्वर का इरादा केवल बुराई की प्रभुता को मिटा कर अच्छाई की प्रभुता को पुनःस्थापित करने के लिये था। इसलिए, अच्छी प्रभुसत्ता की तरफ के लोगों के बीच में लड़ाई झगड़ा हो तो वह बुरा है, क्योंकि वे अच्छी प्रभुता को कमजोर बनाती हैं और यहाँ तक कि वे उसके विघटन का कारण भी बन सकतीं हैं। अपितु, दुष्ट सत्ता को नष्ट करने के लिये अच्छी सत्ता के द्वारा किया गया युद्ध, पुनरुद्धार की दैवी योजना की पूर्ति को आगे बढ़ाता है।

राष्ट्रों के बीच संघर्षों का इतिहास शैतान के साथ मानवता का संबंध काटने के उद्देश्य का कार्य करता है। इतिहास ने इस हद तक प्रगति की है कि अब परमेश्वर का पक्ष सारी दुनिया के राज्य-क्षेत्र और धन को पुनः प्राप्त कर सकता है। लोगों को फिर से सुमार्ग पर लाने की दैवी योजना परमेश्वर द्वारा बुलाए हुए एकाकी व्यक्तियों से शुरू हुई। इस तरह परमेश्वर की नींव धीरे-धीरे, परिवार से समाजों और राष्ट्रों तक फैल गई और आज वह दुनिया के स्तर तक पहुँच गई है। शैतान से अलग होने की दैवी योजना, गोत्र समाज से आरंभ हुई फिर राजनीतिक और सामाजिक विकास के चरणों के माध्यम से जारी रही, उसके बाद सामंतवाद, एक राजतंत्र और आज लोकतंत्र तक पहुँची है। वर्तमान में, हमारी दुनिया दो भागों में विभाजित है: लोकतांत्रिक दुनिया, जो परमेश्वर की तरफ का समाज निर्माण करना चाहती है, और दूसरा साम्यवादी दुनिया, जो शैतान की तरफ की सरकारों की स्थापना करती चली आई है।

दूसरे शब्दों में, यद्यपि, पतित मानव इतिहास शैतान की प्रभुता के तहत आरंभ हुआ, परमेश्वर की दैवी योजना लोगों के दिलों में एक प्रगतिशील परिवर्तन लाई है और जो अच्छाई, धर्म, दर्शन और नैतिकता की तलाश करता है उनके मूल स्वभाव का पोषण करती आई है। इस आंतरिक पोषण ने बहुत से समूहों को अच्छा राज्य स्थापित करने के लिए प्रेरित किया है, जो प्रचलित बुराई से अलग एक यथार्थ आधिपत्य की तलाश करते हैं। अलगाव की इस प्रक्रिया का फल वैश्विक स्तर पर दो विरोधी शक्तियों की स्थापना में हुआ है। यह दो विपरीत उद्देश्यों के साम्राज्य किसी भी प्रकार से एक साथ शांति से नहीं रह सकते हैं। मानव इतिहास जैसे-जैसे समाप्ति की ओर बढ़ रहा है, वे निश्चित रूप से एक चौराहे पर पहुँचेंगे और विचारधारा के दायरे में आंतरिक रूप से टकराएंगे। यह आंतरिक संघर्ष उन्हें संभवतः सेना शक्तियों के साथ बाहरी युद्ध लड़ने के लिए उकसा सकता है। इस संघर्ष की समाप्ति पर, शैतान की प्रभुता हमेशा के लिए नष्ट हो जाएगी और स्वर्ग की प्रभुता, अनन्त परमेश्वर की प्रभुता के रूप में फिर से स्थापित की जाएगी। आज हम इस चौराहे के बिंदु पर हैं जब यह दोनों दुनिया एक दूसरे के साथ अंतिम लड़ाई लड़ने के लिये सामना कर रहीं हैं। यह एक और सबूत यह है कि वर्तमान युग अंतिम दिन हैं।

मानव इतिहास के प्रवाह में, जिसमें अच्छाई और बुराई धीरे-धीरे अलग होते जाते हैं, उसकी तुलना गंदे पानी से की जा सकती है। जब गंदा पानी धीरे-धीरे बहता है, मिट्टी नीचे बैठ जाती है और साफ पानी ऊपर बहने लगता है, अंततः मिट्टी और पानी बिल्कुल अलग हो जाते हैं। मानव इतिहास भी इसी

---

[१८०] २ राजाओं १७:२३

के समान है: समय के साथ बुराई की प्रभुता धीरे-धीरे नष्ट होती जाती है और अच्छाई की प्रभुता समृद्धि के रास्ते पर धीरे-धीरे ऊपर चढ़ती है। इतिहास के अंत में यह दोनों सत्ताएं परस्पर रास्ता काटेंगी, उसके बाद अच्छी प्रभुता परमेश्वर के अनंत राज्य के रूप में रह जाएगी और बुराई की प्रभुता अनन्त अंधकार में नष्ट हो जाएगी।

वह युग जब अच्छी और बुरी सत्ताएं परस्पर रास्ता काटेंगी, अंतिम दिन हैं। यह वह समय भी होगा जब आदम और हव्वा का पतन, जो संवृद्धि चरण के ऊपरी भाग में हुआ था, क्षतिपूर्ति द्वारा पूर्व अवस्था में वापस बहाल किया जाएगा। इस युग में गंभीर सैद्धांतिक भ्रांति के कारण सभी लोग दु:ख झेलेंगे, जिस प्रकार प्रथम पूर्वज परीक्षा के समय सर्वथा उलझन में पड़ गये थे और नहीं जानते थे कि वे किस के आदेश का पालन करें और कौन उनके कार्यों का मार्गदर्शन करेगा।

पुनरुद्धार की इस दैवी योजना के दौरान अंतिम दिनों में जब भी अच्छाई और बुराई की सत्ताएं इस चौरास्ते तक आईं कई घटनाएं घटीं। नूंह और यीशु का समय भी, जैसे कि पहले उल्लेख किया है, अंतिम दिन थे। इसलिए, उस समय भी दो सत्ताएं टकराईं। इस पर भी जब लोग अपने हिस्से की जिम्मेदारी को पूरा करने में विफल रहे, बुराई की प्रभुता को नष्ट करने का परमेश्वर का प्रयास कुंठित हुआ, और उसे अच्छाई को बुराई से अलग करने की दैवी योजना दुबारा चालू करनी पड़ी। यीशु की वापसी के समय में, इन दो सत्ताओं का एक बार फिर टकराव होगा। नि:संदेह दैवी योजना की प्रगति सृष्टि के उद्देश्य की खोज में घुमावदार पथ से आगे बढ़ती है, जबकि घटनाएँ समय-समय पर खुद को वृत्तीय रूप में फिर से दोहरातीं हैं। फलस्वरूप, इतिहास ने अपने आप को दोहराया है, और समानांतर अवधियों का निर्माण किया है।[१८१]

४.३ तीसरे आशीर्वाद की बहाली के चिह्न

यदि आदम और हव्वा ने एक बार पूर्णता प्राप्त कर ली होती, तो प्राकृतिक दुनिया पर प्रभुत्व प्राप्त करने के द्वारा उन्होंने परमेश्वर के तीसरे आशीर्वाद को पूरा कर लिया होता। प्राकृतिक दुनिया पर प्रभुत्व के दो पहलू हैं: आंतरिक और बाह्य। प्रभुत्व के यह दोनों पहलू मानव जाति ने पतन के कारण खो गए थे, परन्तु उनकी बहाली हम वर्तमान युग में देख रहे हैं। यह भी संकेत करता है कि वर्तमान काल अंतिम दिन हैं।

आंतरिक प्रभुता दिली प्रभुत्व को इंगित करता है। जब कोई व्यक्ति पूर्णता प्राप्त कर लेता है और परमेश्वर के दिल के साथ पूरी तरह से घुल मिलकर एक हो जाता है तो उसे परमेश्वर के दिल का अनुभव अपनी वास्तविकता सी जान पड़ती है। इसलिए, वह सृष्टि को उसी तरह से प्रेम कर सकेगा जिस तरह का प्रेम परमेश्वर के दिल से निकलता है और उसकी सुन्दरता को उसी तरह महसूस करेगा जिस प्रकार परमेश्वर उससे आनन्द लेता है। यह हृदय के प्रभुत्व का अर्थ है। परन्तु मनुष्य का पतन हुआ इसलिये वे परमेश्वर के हृदय का अनुभव ख़ुद की वास्तविकता की तरह महसूस नहीं कर सके, उसी तरह वे सृष्टि से भी प्रेम संबंध नहीं रख सके जैसा प्रेम परमेश्वर के हृदय से निकलता है। परमेश्वर के पुनरुद्धार की

[१८१] प्रति-संदर्भ—कार्यकाल १

दैवी योजना ने धीरे-धीरे धर्म, दर्शन, नैतिकता और अन्य के माध्यम से पतित लोगों की आध्यात्मिकता को ऊँचा उठाया है। आधुनिक दुनिया में, ऐसे सबूत देखने में आते हैं कि लोग सृष्टि का नियंत्रण करने की उचित योग्यता पुनः प्राप्त कर रहे हैं।

विज्ञान और प्रौद्योगिकी के माध्यम से सृष्टि पर उचित अधिकार, बाह्य प्रभुत्व का अर्थ है। यदि हमारे प्रथम पूर्वजों ने पूर्णता प्राप्त कर ली होती तो उन्होंने सृष्टि पर आंतरिक प्रभुत्व प्राप्त कर लिया होता और वे परमेश्वर की तरह सृष्टि से प्रेम कर सकते, तो सृष्टि के आध्यात्मिक पहलू के लिये उनकी संवेदनशीलता उतनी ऊँची विकसित हो जाती। यह विज्ञान की तीव्र उन्नति को बढ़ावा देती और उन्हें प्राकृतिक दुनिया में हर चीज़ पर बाह्य प्रभुत्व प्रदान करती। मानवता बहुत पहले सितारों तक पहुँच गयी होती और जगत की पूरी क्षमता का उपयोग कर सकती थी। विज्ञान और प्रौद्योगिकी की प्रगति के साथ आर्थिक विकास होता, जिससे एक सहज और सुखद रहन-सहन का वातावरण तैयार किया जाता।

परन्तु, पतन के कारण लोगों की आध्यात्मिकता क्षीण हो गई, और उन्होंने प्राकृतिक दुनिया का आंतरिक स्वामित्व खो दिया। उनकी आध्यात्मिक संवेदनशीलता जानवरों के जैसी हो गयी, और वे आदिम मनुष्य के स्तर पर उतर गये। फलस्वरूप, वे प्राकृतिक दुनिया पर बाह्य स्वामित्व भी खो बैठे। परमेश्वर के पुनरुद्धार की दैवी योजना के माध्यम से लोगों की आध्यात्मिकता ऊपर उठाई जा रही है और प्रकृति पर उनका आंतरिक स्वामित्व पुनर्स्थापित किया जा रहा है। परिणाम के स्वरूप, उनका बाह्य प्रभुत्व भी नवीकृत हो रहा है, जिससे आधुनिक विज्ञान बहुत उन्नति कर रहा है। आधुनिक युग के लोगों ने वैज्ञानिक विकास के साथ आर्थिक प्रगति के माध्यम से बेहद सहज और सुखद रहन-सहन का वातावरण बना लिया है। इस प्रकार पतित लोग जगत पर स्वामित्व पुनःस्थापित कर रहे हैं, और परमेश्वर के तीसरे आशीर्वाद की पुनः स्थापना का काम आगे बढ़ रहा है। यह देख कर हम निश्चित रूप से कह सकते हैं कि वर्तमान काल अंतिम दिन हैं।

संक्षिप्त में, दुनिया के सांस्कृतिक क्षेत्र एक धर्म पर आधारित एक वैश्विक सांस्कृतिक क्षेत्र की ओर झुक रहे हैं। आजकल राष्ट्र, अंतर्राष्ट्रीय शासन के लिए एक शासन-प्रणाली बनाने की कोशिश कर रहे हैं, राष्ट्र संघ से आगे संयुक्त राष्ट्र की ओर बढ़ गये हैं। आज, लोग एक दुनिया-सरकार की योजना की कल्पना कर हैं। अर्थशास्त्र के क्षेत्र में, दुनिया एक अंतरराष्ट्रीय बाजार की स्थापना की ओर बढ़ रही है। अत्यधिक विकसित परिवहन एवं संचार प्रौद्योगिकी समय और अंतरिक्ष की दूरी को मिटा रही है। आज लोग यात्रा करते समय एक दूसरे के साथ इस तरह संवाद कर सकते हैं जैसे कि वे एक ही गाँव में रहते हों। पूरब और पश्चिम से सभी जातियों के लोग एक दूसरे के साथ इतनी आसानी से मिल सकते हैं जैसे कि वे एक बड़े परिवार के सदस्य हों। सभी छह महाद्वीपों के लोग दोस्ती और भाईचारे के प्रेम की तलाश में महासागरों को पार कर रहे हैं। परन्तु एक परिवार उसी समय बन सकता है जहाँ एक माता-पिता हों; तभी सच्चे भाईचारे का प्रेम उत्पन्न हो सकता है। मसीह को, मानव जाति का माता-पिता के रूप में, फिर से आने पर ही सब लोग एक महान परिवार में एक साथ मिलकर वैश्विक-गांव में मेल मिलाप से रहेंगे।

इन घटनाओं के प्रकट होने पर, हम निश्चित रूप से यह जान जाएंगे कि ये अंतिम दिन हैं। लेकिन एक अंतिम उपहार बाकी है जो इतिहास मानवता को देगा: वह एक ऐसा सार्वभौमिक शिक्षण है जो वैश्विक-गाँव के सारे अजनबियों को एक साथ एक ही माता-पिता के प्रेम के मार्गदर्शन के माध्यम से बांधेगा।

संभाग ५

अंतिम दिन, नया सत्य और हमारा रवैया

५.१ अंतिम दिन और नया सत्य

पतित लोग धर्म के माध्यम से, “आत्मा और सत्य”[१८२] के द्वारा आध्यात्मिकता और बुद्धि को जाग्रत करके अपनी आंतरिक अज्ञानता को दूर कर रहे हैं। “सत्य” दो भागों में विभाजित किया जा सकता है: आंतरिक सत्य जो जो धर्म सिखाता है, और जो लोगों की आंतरिक अज्ञानता को दूर करता है, और बाह्य सत्य जो विज्ञान के द्वारा प्राप्त किया जाता है, और जो लोगों की बाह्य अज्ञानता को दूर करने में मदद करता है। तदनुसार, हम बुद्धि में दो पहलू देखते हैं: आंतरिक बुद्धि जो आंतरिक सत्य से जाग्रत होती है और बाह्य बुद्धि जो बाह्य सत्य से जाग्रत होती है। धर्म आंतरिक सत्य के रूप में विकसित होते हैं और आंतरिक सत्य का अनुसरण करते हैं, जबकि विज्ञान, बाह्य बुद्धि के रूप में आगे बढ़ता है, और बाह्य सत्य का अनुसरण करता है।

इस संदर्भ में "आत्मा" स्वर्ग की प्रेरणा को इंगित करती है। आत्मिक वास्तविकता की अनुभूति उस समय शुरू होती है जब वह आत्मा की पाँच ज्ञानेन्द्रियों के द्वारा बूझी जाती है। यह बोध पाँच शारीरिक इंद्रियों के माध्यम से प्रतिध्वनित होता है और महसूस किया जाता है। भौतिक सत्य की अनुभूति, अपितु, पार्थिव दुनिया की जानकारी से मिलती है और सीधे हमारी शारीरिक इंद्रियों के माध्यम से समझी जाती है। अनुभूति, इस प्रकार, दोनों आत्मिक और शारीरिक प्रक्रियाओं के माध्यम से होती है।

जब मनुष्य की आत्मा और शरीर एक साथ संयुक्त हो जाते हैं, तब ही वे मुकम्मल होते हैं। इस तरह, दिव्य प्रेरणा का अनुभव आत्मिक अनुभूति से प्राप्त होता है और भौतिक सत्य का ज्ञान शारीरिक बोध से प्राप्त होता है, उन दोनों में पूरी तरह से ताल-मेल होना चाहिये और उन्हें आध्यात्मिकता और ज्ञान दोनों को एक साथ जाग्रत करना चाहिये। आत्मिक और भौतिक अनुभूति के दोनों आयाम जब एक साथ दिल में प्रतिध्वनित होते हैं तब ही हम परमेश्वर और जगत को अच्छी तरह से समझ सकते हैं।

परमेश्वर इस प्रकार अबोध पतित लोगों की आध्यात्मिकता को ऊँचा उठाने में मदद करता है और सत्य की आत्मा से उनकी बुद्धि को आलोकित करता है। इन तरीकों से, परमेश्वर अपनी दिव्य योजना के द्वारा लोगों को उनकी पतन से पहले की मूल अवस्था में वापस बहाल करता है। इतिहास के दौरान, पुनरुद्धार की दैवी योजना में युग के अनुग्रह के कारण लोगों का आध्यात्मिक और बौद्धिक स्तर धीरे-धीरे ऊपर उठाया गया है। अतेव, आत्मिक अनुभव की गुणवत्ता और धार्मिक और वैज्ञानिक ज्ञान की गहराई, तदनुसार, बढ़ती आईं हैं।

आत्मा और सत्य अद्वितीय, अनंत और अपरिवर्तनीय हैं। परन्तु मानव जाति के पुनरुद्धार के दौरान उनके शिक्षण का स्तर और सीमा, और भावाभिव्यक्ति का साधन, जैसे, जैसे शिक्षण से मानवता की अतिशय अज्ञानता ज्ञान की आभा से प्रकाशित होती गई, एक युग से दूसरे युग में भिन्न रहा है उदाहरण की तौर पर, पुराने नियम से पहले के युग में, जब लोग अभी तक अशिक्षित थे और सत्य का वचन सीधे

---

[१८२] यूहन्ना ४:३

ग्रहण नहीं कर सकते थे, परमेश्वर ने उन्हें वचन के बदले बलि की भेंट चढ़ाने की आज्ञा दी।[१८३] समय के साथ, मनुष्य की आध्यात्मिकता और बुद्धि इस स्तर तक बढ़ गई थी कि मूसा के दिनों में परमेश्वर ने व्यवस्था प्रदान की, और यीशु के समय सुसमाचार दिया। यीशु ने यह स्पष्ट किया कि मेरे वचन केवल सच ही नहीं हैं; परन्तु उसने यह घोषित किया कि मैं स्वयं, "मार्ग, सत्य और जीवन" हूँ।[१८४] यीशु सत्य का देहधारी था। उसके वचन, केवल एक साधन थे जिनके द्वारा उसने स्वयं को व्यक्त किया। इस प्रकार, यीशु के वचनों का विस्तार और गहराई, और उसके शिक्षण की विधि विभिन्न लोगों के साथ जिन से वह वार्तालाप करता था पृथक थी।

इस अर्थ से, हमें समझना चाहिए कि बाईबल के छंद सत्य व्यक्त करने का केवल एक साधन हैं और कि वे स्वयं सत्य नहीं हैं। नया नियम केवल एक अंतरिम पाठ्यपुस्तक है, जो दो हजार साल पहले के लोगों को आलोकित करने के लिए दिया गया था, जिनका आध्यात्मिक और बौद्धिक स्तर आजकल से बहुत कम था। सत्य के लिये आधुनिक वैज्ञानिक प्रवृत्त के लोगों की प्यास, सत्य की उन अभिव्यक्तियों से संतुष्ट नहीं की जा सकती जो कि किसी एक दायरे तक सीमित हों और प्रतीकों और दृष्टांतों में लिपटीं हों और जो विशेष कर पिछले युग के लोगों के मार्गदर्शन के लिए दी गई थी। आधुनिक बौद्धिक लोगों के प्रबोधन के लिए, सत्य की एक दूसरी पाठ्यपुस्तक का प्रकट होना आवश्यक है जिसकी अंतर्वस्तु वैज्ञानिक विधि के साथ और अधिक उच्च और समृद्ध हो। हम इस सत्य को नया सत्य कहते हैं। यह सत्य, जिसकी हमने पहले चर्चा[१८५] की है, विज्ञान और धर्म की संधि करने में सक्षम होगा और लोगों की आंतरिक और बाहरी पहलुओं की अज्ञानता पर प्रबल होगा।

सत्य की एक नई अभिव्यक्ति प्रकट होनी चाहिये इसके लिए आइए हम और अन्य कारणों की जाँच करें। बाईबल, जैसे कि पहले कहा गया है, स्वयं अपने आप में सत्य नहीं है परंतु सत्य की एक पाठ्यपुस्तक है जो सत्य की शिक्षा देती है। यह प्रतीक और दृष्टान्तों के द्वारा सत्य के महत्वपूर्ण भागों का वर्णन करती है, जो विभिन्न व्याख्याओं में व्यक्त किए गए हैं, अतेव विश्वासियों के बीच असहमति पैदा हो गई है और उनके कई संप्रदायों में बंट जाने का कारण बन गई हैं। सांप्रदायिक विभाजन का प्राथमिक कारण लोग नहीं परन्तु बाईबल की विशेषता में निहित है। संप्रदायों के बीच विवाद और अधिक अशिष्ट होता जाएगा जब तक एक नया सत्य प्रगट ना हो, जो प्रतीकों और दृष्टांतों को और बाईबल के अनिवार्य अव्यक्त सत्य को स्पष्ट कर सके। इस नए सत्य के बिना, परमेश्वर की दैवी योजना जो ईसाई धर्म के एकीकरण के माध्यम से होनी चाहिए, कभी अपने लक्ष्य तक नहीं पहुँचेगी। इस कारण यीशु ने यह वादा किया कि अंतिम दिनों में वह हमें सत्य के नए वचन देगा:

> "मैंने ये बातें तुम से दृष्टांतों में कहीं हैं, परन्तु वह समय आता है कि मैं तुम से फिर दृष्टांतों में नहीं कहूँगा, परन्तु खोल कर तुम्हें पिता के विषय में बताऊँगा।" यूहन्ना १६:२५

---

[१८३] प्रति-संदर्भ—पुनरुद्धार ३.१

[१८४] यूहन्ना १४:६

[१८५] प्रति-संदर्भ--भूमिका

अपने समय के लोगों के अविश्वास के कारण, जो बातें यीशु के दिल में थीं उन्हें लोगों को बिना सिखाए उसकी सूली पर मृत्यु हो गई। जैसे कि उसने कहा, "जब मैंने तुमसे पृथ्वी की बातें कहीं और तुम विश्वास नहीं करते, तो यदि मैं तुम से स्वर्ग की बातें करूँ तो फिर कैसे विश्वास करोगे।"[१८६] यीशु ने फिर यह भी कहा, "मुझे तुम से और भी बहुत से बातें कहनी हैं, परन्तु अभी तुम उन्हें सह नहीं सकते।"[१८७] इससे यह प्रगट होता है कि वह अपनी इस असमर्थता के लिए कितना दुखित था कि अपने घनिष्ठ शिष्यों के साथ भी यह बातें नहीं कर सका जो वह करना चाहता था।

फिर भी, जो वचन यीशु नहीं कह सका वह हमेशा के लिए गुप्त नहीं रहेगा, परन्तु एक दिन हम पर वह सत्य की एक नई अभिव्यक्ति के रूप में पवित्र आत्मा के माध्यम से प्रकाशित होगा। यीशु ने कहा:

> "परन्तु जब वह अर्थात सत्य का आत्मा आएगा, तो तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा, क्योंकि वह अपनी ओर से न कहेगा परन्तु जो कुछ सुनेगा वही कहेगा, और आने वाली बातें तुम्हें बताएगा।" यूहन्ना १६:१३

इसके अतिरिक्त यह भी लिखा है:

> जो सिंहासन पर बैठा था, मैंने उसके दाहिने हाथ एक पुस्तक देखी जो भीतर और बाहर लिखी हुई थी और वह सात मोहर लगा कर बंद की गई थी। प्रकाशित वाक्य ५:१

जो वचन यीशु हमें देना चाहता था वह इस पुस्तक में लिखे गए हैं और मोहर लगा कर बंद किए गये हैं। जब यूहन्ना रोया क्योंकि इस पुस्तक को खोलने के योग्य कोई भी नहीं मिला जो स्वर्ग और पृथ्वी पर और पृथ्वी के नीचे, उसे खोल कर पढ़ सके, तब किसी एक प्राचीन ने कहा, "मत रो; देख, देख यहूदा के गोत्र का वह सिंह जो दाऊद का मूल है, इस पुस्तक को खोलने और इसकी सातों मोहरें तोड़ने के लिए जयवन्त हुआ है।"[१८८] यहूदा के गोत्र का वह सिंह, मसीह को वर्णन करता है। वह दिन आएगा जब मसीह आएगा और इस पुस्तक की सातों मुहरों को खोलेगा, जिसकी अंतर्वस्तु एक लंबे समय से मानव जाति के लिए रहस्य बनी हुई थी, और विश्वासियों को इस नए सत्य के वचन प्रकट करेगा। इसलिये यह लिखा है, "तुझे बहुत से लोगों, और जातियों, और भाषाओं और राजाओं के विषय में फिर भविष्यवाणी करनी होगी।"[१८९] यह भी भविष्यवाणी की गई है कि अंतिम दिनों में:

> "मैं अपना आत्मा सब मनुष्यों पर उँडलूँगा और तुम्हारे बेटे और तुम्हारी बेटियाँ भविष्यवाणी करेंगी, और तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे, और तुम्हारे पुरनिए स्वप्न देखेंगे।" प्रेरित २:१७

इन सभी कारणों से हम अंतिम दिनों में सत्य की एक नई अभिव्यक्ति के प्रकटन की अपेक्षा कर सकते हैं।

---

[१८६] यूहन्ना ३:१२

[१८७] यूहन्ना १६:१२

[१८८] प्रकाशित वाक्य ५:३-५

[१८९] प्रकाशित वाक्य १०:११.

५.२ अंतिम दिनों में हमारा रवैया

जब हम पुनरुद्धार की दैवी योजना में इतिहास की प्रगति की जांच करते हैं, तो हम यह देखते हैं कि जब पुराना विधान समाप्त होने वाला होता है, तब एक नया विधान शुरू होता है। तदनुसार, नए की शुरुआत और पुराने की समाप्ति परस्पर व्याप्त होती है; जैसे ही पुराने इतिहास पर अंधेरा छाने लगता है साथ ही साथ नए इतिहास की पहले से पौ फटने लगती है। ऐसे समय में अच्छी और बुरी सत्ताएं, जिनका आरंभ एक ही समय में हुआ था लेकिन उन्होंने विपरीत लक्ष्यों का अनुसरण किया, और प्रत्येक ने अपने फल विश्व स्तर पर दिये, वे अब चौराहे पर आ मिलते हैं। इसलिए, जो लोग इस अवधि में रहते हैं वह एक मार्गदर्शक विचारधारा या दर्शन के अभाव के कारण आंतरिक रूप से चिंता, भय और भ्रम से पीड़ित रहते हैं। वे बाह्य संघर्ष और बहु-विकट हथियारों के साथ लड़ी लड़ाइयों से पीड़ित होते हैं। जैसे यीशु ने कहा, अंतिम दिनों में, आपदाओं और तबाही बहुत होगी, "क्योंकि जाति पर जाति और राज्य पर राज्य चढ़ाई करेगा, और जगह, जगह अकाल पड़ेंगे और भूकंप होंगे।"[१९०]

अंतिम दिनों में, ऐसी तबाही का होना अनिवार्य है ताकि बुराई की शक्ति को परास्त किया जा सके और अच्छाई का राज्य स्थापित किया जा सके। ऐसे दुष्काल के बीच में, निःसंदेह परमेश्वर नए युग को आरंभ करने के लिये आने वाली अच्छी प्रभुता का केन्द्र स्थापित करेगा। नूंह, अब्राहम, मूसा और यीशु वे लोग थे जिनको परमेश्वर ने उनके अपने युगों के प्रधान व्यक्तियों के रूप में स्थापित किया। आज, इस ऐतिहासिक संक्रमण के काल में, हमें उस व्यक्ति को जिसे परमेश्वर ने नई व्यवस्था के प्रधान के रूप में नियुक्त किया है ढूँढना चाहिये, ताकि हम नए युग में भाग ले सकें और परमेश्वर की इच्छाओं को सम्मान दे सकें।

नए युग की दैवी योजना पुराने युग की राख पर शुरू नहीं होती। इसके विपरीत, पुराने युग के अंतिम चरण के बीच नया युग अंकुरित होता है और बढ़ता है, और पुराने युग के अंतिम पहलू के साथ टकराता है। तदनुसार, जो व्यक्ति पुरानी परंपरा में डूबा हुआ होता है उसके लिये नई दैवी योजना को समझना या स्वीकार करना कठिन होता है। इसी लिये, संत और साधु लोग जो नए युग की व्यवस्था के अग्रणी थे, वे बहुधा सताए जाते हैं और पुराने युग के शिकार बन कर शहीद होते हैं। उदाहरण के तौर पर, यीशु जो नए नियम का शुभारंभ करने के लिये आए थे, वे पुराने नियम के अंत में आए, जिससे मूसा के कानून के वफादार अनुयायी चकित हो गये। वह यहूदी लोगों द्वारा बहिष्कृत किया गया और अंततः सूली पर चढ़ाया गया। इसी लिये यीशु ने कहा, "परन्तु नया दाखरस नई मश्कों में भरना चाहिये।" [१९१]

यीशु नए नियम की समाप्ति पर फिर आएगा। वह हमें नया सत्य देगा जिससे नया युग स्थापित किया जाएगा, जिसका वर्णन बाईबल में नया आकाश और नई पृथ्वी की परिकल्पना से किया गया है।[१९२] जिस प्रकार यीशु के पहले आगमन में यहूदियों ने उसकी हंसी उड़ाई थी कि वह बालज़बूल के बस में है

---

[१९०] मत्ती २४:७

[१९१] लूक ५:३८

[१९२] प्रकाशित वाक्य २१:१७

उसी प्रकार जब वह दूसरी बार आयेगा तो ईसाइयों के द्वारा सताया जाएगा। इसलिये यीशु ने यह भविष्यवाणी की, "परन्तु पहले अवश्य है कि वह दु:ख उठाए और इस युग के लोग उसे तुच्छ ठहराएं।"[१९३] इस ऐतिहासिक संक्रमण की अवधि में, जो लोग आराम से पुराने युग के तौर तरीकों से बंधे हुए हैं वे निश्चित रूप से पुराने युग के साथ न्याय का सामना करेंगे।

पतित लोगों की आत्मिक संवेदनशीलता बेहद फीकी है। इसलिए, वे आम तौर पर परमेश्वर की दैवी योजना के पीछे चलने के प्रयास में सत्य का अक्षर-ब-अक्षर सख़्ती से पालन करते हैं। ऐसे लोग नए युग की नई व्यवस्था में पुनरुद्धार की दैवी योजना के आगे बढ़ने के बावजूद भी, अपने आप को सरलता से सुधार नहीं कर पाते हैं। वे आम तौर पर पुराने युग के सिद्धांतों से दिए गए पुराने दृष्टिकोण से बहुत दृढ़ता से जुड़े रहते हैं। यह बात यीशु के समय के यहूदी लोगों के उदाहरण से स्पष्ट है, जो पुराने नियम से ऐसे जुड़े हुए थे कि दैवी योजना के नए अध्याय खोलने के लिए यीशु के बुलावे को नहीं समझ सके। दूसरी ओर, वह विश्वासी जिन्होंने प्रार्थना के माध्यम से दिव्य प्रेरणा प्राप्त की थी वे आध्यात्मिक रूप से नए युग की दैवी योजना को समझ सकते थे। भले ही इस बात ने उन्हें पुराने युग के सिद्धांतों के साथ बाधाओं में डाला, फिर भी वे आत्मा के प्रोत्साहन से नई दैवी योजना के आह्वान पर चले। यीशु के चेलों के बीच, कोई भी ऐसा नहीं था जो पुराने नियम के शास्त्र से बहुत अधिक संबद्ध था। परन्तु, उन सब ने अपने आत्मिक अनुभव से जो उन्होंने अपने भीतरी मन के माध्यम से समझा, प्रत्युत्तर दिया। अंतिम दिनों में, जो लोग प्रार्थना द्वारा प्रबल जीवन जीते हैं या वे जो अपने विवेक के द्वारा चलते हैं वे अपने दिलों में गहन व्याकुलता महसूस करेंगे। यह इसलिये क्योंकि वे अपने दिलों में एक अस्पष्ट आध्यात्मिक आह्वान महसूस करते हैं और नए युग की दैवी योजना की तरफ जाना चाहते हैं, जबकि उनका अभी तक नए सत्य के साथ संपर्क नहीं हुआ है जिसके अनुसार कार्य करने के लिये वह उनका मार्गदर्शन कर सके। यह चुने हुए लोग हैं जो, यदि वे एक बार नए सत्य को सुने तो सत्य की आत्मा के द्वारा उनकी आत्मा और बुद्धि दोनों एक साथ जाग्रत हो जाएंगी। वे नए युग के विषय में परमेश्वर की दैवी योजना की ज़रूरतों को पूरी तरह से समझेंगे और महान उत्साह और खुशी के साथ स्वयंसेवक होने के लिये तैयार होंगे।

आज हम जो अंतिम दिनों में रहते है, हमें अपने दिलों को विनम्र बनाना चाहिये और प्रार्थना के द्वारा दिव्य प्रेरणा पाने के लिये अत्यंत प्रयास करना चाहिए। हमें पारंपरिक अवधारणाओं के साथ दृढ़ता से संलग्न नहीं होना चाहिए, अथवा, हमें आत्मा का अनुग्रह प्राप्त करने के लिये कोशिश करनी चाहिये ताकि हम नया सत्य प्राप्त कर सकें जो हमें नए युग की दैवी योजना की ओर मार्गदर्शन कर सकें। जब हम इस सत्य को पाएंगे तब हमें यह पता लगाना चाहिये कि क्या यह सचमुच स्वर्ग की ओर हमारा मार्गदर्शन करेगा।

हमें ख़ुद जाँच पड़ताल करके देखना चाहिये कि यह सच है कि नहीं, तब हमारी आत्मा की गहराई से स्वर्गीय आनंद बहुतायत से फूट निकलेगा। केवल इसी तरह हम जो अंतिम दिनों के जिज्ञासु हैं सच्ची मुक्ति का पथ जान सकेंगे।

---

[१९३] लूक १७:२५

रेखा चित्र १:

विश्व की सृष्टि और पुनरुद्धार की दैवी योजना के कार्य में परमेश्वर के वचन की अभिव्यक्ति

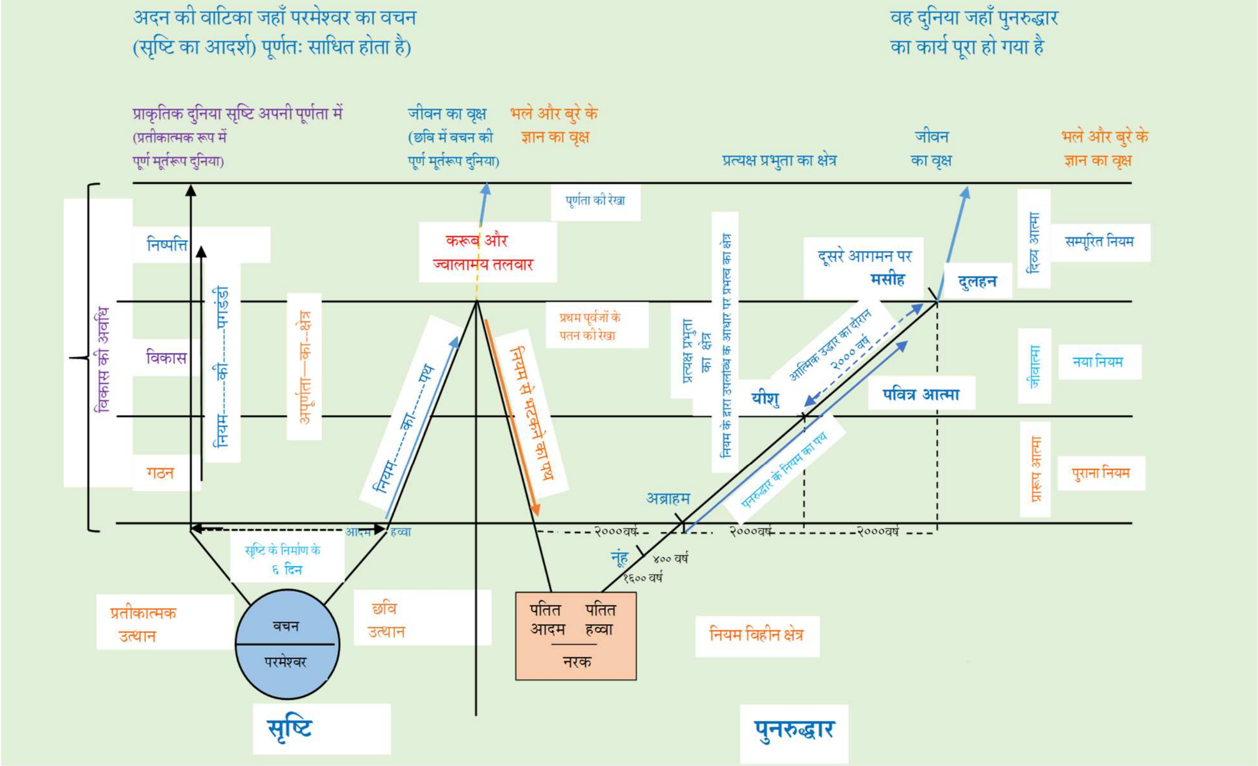

दिव्य नियम प्रतिपादन

भाग १

अध्याय ४

मसीह: उसका आगमन और उसके दूसरे आगमन का उद्देश्य

विषय सूची

		पृष्ठ
अध्याय ४		१२१
मसीह: उसका आगमन और उसके दूसरे आगमन का उद्देश्य		१२३
संभाग १	सूली के द्वारा उद्धार	१२४
१.१	यीशु का मसीह के रूप में आने का उद्देश्य	१२४
१.२	क्या सूली के द्वारा उद्धार का काम पूर्ण हुआ था?	१२४
१.३	सूली पर यीशु की मृत्यु	१२५
१.४	सूली के द्वारा उद्धार की सीमा, और यीशु का दूसरे आगमन का उद्देश्य	१२९
१.५	सूली के बारे में दो प्रकार की भविष्यवाणियाँ	१३१
१.६	सुसमाचार के कुछ भागों में यीशु ने अपने क्रूस पर चढ़ाए जाने के बारे में कहा जिससे प्रतीत होता है कि उसका क्रूस पर चढ़ाया जाना आवश्यक है	१३३
संभाग २	एलिय्याह का दूसरा आगमन और यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला	१३५
२.१	एलिय्याह के वापस आने के बारे में यहूदियों की धारणा	१३५
२.२	वह रास्ता जो यहूदी लोग चुनने वाले थे	१३६
२.३	यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की अविश्वसनीयता	१३७
२.४	यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला किस अर्थ में एलिय्याह था	१४२
२.५	बाईबल के बारे में हमारा रवैया	१४२

मसीह: उसका आगमन और उसके दूसरे आगमन का उद्देश्य

"मसीह" शब्द का यहूदी भाषा में अर्थ है "अभिषिक्त", जो राजा का वाचक है। इस्राएल के चुने हुए लोगों का विश्वास है कि भविष्यवक्ताओं के द्वारा प्रगट किया गया परमेश्वर का वचन परमेश्वर की प्रतिज्ञा है कि वह उनके लिये एक राजा और उद्धारकर्ता भेजेगा। ऐसी उनकी मसीहाई प्रत्याशा थी। परमेश्वर ने इस मसीह को यीशु मसीह के नाम से भेजा। "ख्राईस्ट" मसीह के लिए यूनानी (ग्रीक) शब्द है, और हिन्दी में "ख्रीस्त" शब्द है।

मसीह परमेश्वर के उद्धार के कार्य को पूरा करने के उद्देश्य से आता है। पतन के कारण मनुष्य को उद्धार की आवश्यकता है। इससे पहले कि हम मुक्ति का अर्थ स्पष्ट करें, हमें पहले पतन के बारे में समझना चाहिए। इसे के बाद, चूँकि पतन का अर्थ परमेश्वर के सृष्टि के उद्देश्य को पूरा करने में विफलता है, इसलिये इससे पहले कि हम पतन के अभिप्राय को स्पष्ट करें, हमें परमेश्वर का सृष्टि का उद्देश्य समझना चाहिये।

परमेश्वर का सृष्टि का उद्देश्य पृथ्वी पर स्वर्ग के राज्य की स्थापना से पूरा होना चाहिये था। तथापि, मानव पतन के कारण, हमने परमेश्वर के राज्य के स्थान पर पृथ्वी पर नरक बनाया है। पतन के बाद, परमेश्वर ने बहुत बार अपना राज्य बहाल करने की कोशिश की है। मानव इतिहास पुनरुद्धार की दैवी योजना का इतिहास होने के नाते, उसका प्राथमिक लक्ष्य धरती पर स्वर्ग का राज्य स्थापित करना है।[१९४]

---

[१९४] प्रतिसंदर्भ—प्रलयोत्तर १-२

संभाग १

सूली के द्वारा उद्धार

१.१ यीशु का मसीह के रूप आने का उद्देश्य

यीशु मसीह मानवता को पूर्ण मुक्ति देने के लिये आया था, इससे कम नहीं; उसे पुनरुद्धार की दैवी योजना के लक्ष्य को पूरा करना था। यीशु को स्वर्ग के राज्य की स्थापना पहले पृथ्वी पर करनी चाहिए थी। यीशु के स्वयं अपने चेलों को दिए हुए शिक्षण से हम यह अनुमान लगा सकते हैं। "इसलिये चाहिये के तुम सिद्ध बनो, जैसा तुम्हारा स्वर्गीय पिता सिद्ध है।"[१९५] सृष्टि के नियम के अनुसार, वह व्यक्ति जिसने सृष्टि के उद्देश्य को साधित कर लिया है वह पाप नहीं कर सकता, क्योंकि वह परमेश्वर के साथ पूर्ण सामंजस्य में है और उसकी प्रकृति दिव्य है। सृष्टि के उद्देश्य के अनुसार ऐसा व्यक्ति सिद्ध है जैसा स्वर्गीय पिता सिद्ध है। यीशु ने अपने चेलों को यह उपदेश इस आशा से दिया था कि वे फिर से जिलाए जा सकें और ऐसे लोग बन सकें जिन्होंने सृष्टि का उद्देश्य साधित कर लिया हो ताकि वे राज्य के नागरिक बन सकें। इसके अतिरिक्त, यीशु ने लोगों को यह प्रार्थना सिखाई कि परमेश्वर की इच्छा पृथ्वी पर पूरी हो जैसे कि स्वर्ग में पूरी होती है, क्योंकि वह परमेश्वर का राज्य स्थापित करने के लिये और पतित मानवता को परमेश्वर के राज्य के नागरिक के रूप में नवीन करने के लिये आया था। उसने यह प्रचार किया कि "मन फिराओ क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट है"।[१९६] यही कारण है कि यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला, जो प्रभु का मार्ग तैयार करने के लिये आया था, उसने राज्य के निकट होने की घोषणा की।[१९७]

वे लोग किस प्रकार के होंगे, जो एक बार बहाल किए जाने पर सृष्टि का उद्देश्य साधित कर लेते हैं और सिद्ध हो जाते हैं जैसा स्वर्गीय पिता सिद्ध है? ऐसे लोग परमेश्वर के साथ पूरी तरह से घुल-मिल जाते हैं और अपने अंतरतम में परमेश्वर के हृदय का अनुभव करते हैं। वे दिव्य स्वभाव के होते हैं और परमेश्वर के साथ ऐसा जीवन बिताते हैं कि वे उससे कभी अलग नहीं हो सकते। इसके अतिरिक्त, उनमें मूल पाप नहीं होता, और इसलिये उन्हें उद्धारकर्ता की आवश्यकता नहीं होती है। उन्हें बड़ी मेहनत से प्रार्थना या धर्म पालन करने की आवश्यकता नहीं होती है जिस तरह पतित लोगों को जो परमेश्वर की तलाश करते हैं, होती है। इसके अतिरिक्त, चूँकि उनमें मूल पाप नहीं होता, उनके बच्चे स्वाभाविक तौर पर अच्छे और निष्पाप पैदा होते हैं और उनको पाप के मोचन के लिये उद्धारकर्ता की आवश्यकता नहीं होती है।

१.२ क्या सूली के द्वारा उद्धार का काम पूर्ण हुआ था?

क्या यीशु, जिसने हमें हमारे पापों से मोचन दिया, उसका सूली पर चढ़ाए जाने से पुनरुद्धार की दैवी योजना का लक्ष्य पूरा हुआ था? यदि ऐसा हुआ तो हमें यीशु के वफादार विश्वासियों से यह उम्मीद करनी चाहिये कि उन्होंने अपनी मूल प्रकृति पुनः प्राप्त कर ली है और पृथ्वी पर स्वर्ग का राज्य स्थापित

---

[१९५] मत्ती ५:४८
[१९६] मत्ती ४:१७
[१९७] मत्ती ३:२

कर लिया है। परन्तु ईसाई धर्म के पूरे इतिहास में कोई भी ऐसा नहीं हुआ है, चाहे वह कितना ही बड़ा भक्त क्यों न रहा हो, जिसने परमेश्वर के साथ एक हो कर उससे कभी अलग न होने वाला जीवन बिताया हो। किसी भी व्यक्ति ने परमेश्वर के हृदय को पूर्ण गहनता से कभी अनुभव नहीं किया है और ना ही वह कभी दिव्य प्रकृति से भरपूर हुआ है। कभी कोई ऐसा आस्तिक नहीं हुआ है जिसको मुक्ति की या प्रबल प्रार्थना और भक्ति के जीवन की आवश्यकता नहीं थी। यहाँ तक कि संत पौलुस भी, जो परमेश्वर का एक महान जन था, विश्वास के साथ प्रार्थना के जीवन के बिना नहीं रह सका।[१९८] इसके अतिरिक्त, कभी किसी भी ईसाई माता-पिता ने, चाहे वे कितने ही भक्त क्यों न रहे हों, मूल पाप रहित बच्चों को जन्म नहीं दिया है, जो उद्धारकर्ता के द्वारा मोचन के अनुग्रह के बिना परमेश्वर के राज्य में प्रवेश कर सकें। ईसाई माता-पिताओं ने भी मूल पाप अपने वंश के द्वारा लगातार प्रसारित किया है।

मसीही जीवन की इस कोरी समीक्षा से क्या सीखा जा सकता है? यह हमें सिखाती है कि सूली के द्वारा मोचन के अनुग्रह से ना तो मूल पाप पूरी तरह से उखाड़ा गया है और ना ही हमारी मूल प्रकृति पूरी तरह से बहाल हुई है। यह जानते हुए कि सूली के द्वारा मोचन उसके आने के उद्देश्य को पूरा नहीं कर सकता, यीशु ने फिर से आने का वादा किया। वह यह बात जानता था कि पृथ्वी पर स्वर्ग के राज्य को पुनःस्थापित करने के बारे में परमेश्वर की इच्छा नित्य और अपरिवर्तनीय है। इस प्रकार, अपनी वापसी पर परमेश्वर की इच्छा पूरी तरह से पूरा करने के लिए यीशु ने आशा प्रगट की।

तो क्या यीशु का सूली पर बलिदान व्यर्थ था? अवश्य नहीं।[१९९] यदि ऐसा होता तो ईसाइयत का इतिहास इतना उत्कृष्ट न होता। इसके अतिरिक्त, हमारे अपने विश्वास के व्यक्तिगत अनुभवों से स्पष्ट होता है कि सूली के द्वारा मोचन का अनुग्रह कितना महान है। यह सच है कि सूली ने हमें हमारे पापों से छुटकारा दिया है; परन्तु, यह भी उतना ही सच है कि सूली ने हमारे मूल पाप का पूरी तरह से शोधन नहीं किया। उसने हमें निष्पाप अवस्था में जो सिद्धि की मूल प्रवृत्ति है, जिसमें हम कभी पाप नहीं कर सकते, बहाल नहीं किया और हमें पृथ्वी पर स्वर्ग का राज्य स्थापित करने के लिये समक्ष नहीं किया।

सूली के माध्यम से किस हद तक हमें मोक्ष मिली है इसका सही निर्धारण क्या है? जब तक इस सवाल का जवाब न मिल जाए, तब तक आधुनिक दुनिया में लोगों को अपनी आस्था का ठीक से मार्गदर्शन करना कठिन है। तथापि, पहले हमें यीशु की सलीबी मृत्यु पर फिर से विचार करना चाहिए।

१.३ सूली पर यीशु की मृत्यु

क्या परमेश्वर की सबसे वांछित इच्छा सूली पर यीशु की मृत्यु थी? आईये पहले हम यीशु के चेलों के वचनों और कामों की, जिसका बयान बाईबल में किया गया है, जाँच करें। यीशु की मृत्यु के विषय में शिष्यों के बीच एक स्पष्ट सर्वसम्मति सी लगती है: वे सब दु:ख से पीड़ित और कुपित थे। स्तिफनुस, उदाहरण के लिए, यहूदी नेताओं की अज्ञानता और अविश्वास पर क्रोध से जल कर उन्हें दोषी ठहराता

---

[१९८] रोमियों ७:१८-२५

[१९९] यूहन्ना ३:१६

है, और उन्हें हत्यारा और विद्रोही कह कर बुलाता है, और उनके कार्यों की निंदा करता है।[२००] उस समय से ईसाई लोग सामान्यतः ऐसी ही भावना रखते हैं जो यीशु के दिनों में उसके चेलों की थी। यदि यीशु की मृत्यु परमेश्वर की इच्छा की पूर्ति का पूर्वनिर्धारित परिणाम होता तो उसकी मृत्यु पर शोक करना चेलों के लिए प्राकृतिक तो होता, लेकिन वे उन पर इतना अधिक आक्रोशित नहीं होते और न ही उन यहूदी नेताओं पर रोष करते जो इसका कारण थे। हम उनकी कड़वी प्रतिक्रिया से अनुमान लगा सकते हैं कि यीशु की मृत्यु अन्यायपूर्ण और अनुचित थी।

आगे, आएं हम परमेश्वर की दैवी योजना के दृष्टिकोण से जांच करें कि यीशु का सूली पर चढ़ाया जाना क्या परमेश्वर की पूर्वनिर्धारित इच्छा के रूप में अनिवार्य था। परमेश्वर इज़राएली लोगों को चुने हुए अब्राहम के वंशज कहकर बुलाता है। उसने उन्हें संरक्षित रखा, उनका पालन-पोषण किया और कई बार उन्हें परीक्षणों और विपत्तियों के साथ अनुशासित भी किया। परमेश्वर ने उन्हें स्थिर रखने के लिये भविष्यवक्ताओं को भेजा, इस पक्के वादे के साथ कि एक दिन वह उनके लिये मसीह को भेजेगा। उन्होंने लोगों को मसीह को स्वीकार करने के लिये और यह कह कर तैयार किया कि वह उसका निवास स्थान और मंदिर का निर्माण करें। जब यीशु का जन्म हुआ, परमेश्वर ने उसके आगमन की घोषणा की।[२०१] उसके जन्म से पहले उसने पूर्व से तीन ज्योतिषियों को भेजा, और शमौन, हन्नाह और यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले को, और अन्य लोगों को हर जगह गवाही देने के लिये भेजा। यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के विषय में विशेष रूप से, बहुत लोगों को मालूम था कि उसके गर्भाधान की गवाही देने के लिये एक स्वर्गदूत प्रगट हुआ था।[२०२] उसके जन्म के समय के अलौकिक चमत्कार के कारण यहूदिया में सभी की उम्मीदें बढ़ जाने से हलचल सी मच गई थी। इसके अतिरिक्त, यूहन्ना का जंगल में तपस्वी जीवन इतना प्रभावशाली था कि कई लोगों के दिलों में सवाल उठा था कि कहीं वह स्वयं मसीह तो नहीं है।[२०३] ऐसे महान व्यक्तित्व यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले को भेजने के पीछे परमेश्वर का उद्देश्य, यीशु के लिये गवाही देने के लिये था और लोगों को प्रोत्साहित करने के लिए था ताकि यहूदी लोग यीशु पर विश्वास करें। चूंकि, परमेश्वर की इच्छा उस समय के यहूदी लोगों के लिये जो परमेश्वर की इच्छा से जीने के लिये प्रशिक्षित थे, यही थी कि वे यीशु पर विश्वास करें कि वह उनका मसीह है, इसलिये उन्हें उस पर विश्वास करना चाहिए था। यदि वे परमेश्वर की वांछा के अनुसार उस पर विश्वास कर लेते, तो क्या उनके मन में कभी उसे सूली पर चढ़ाने का विचार आता? क्या वे कभी यह चाहते कि मसीह पर, जिसके लिए वे इतने समय से और इतनी उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहे थे, कोई आँच आए? परन्तु वे परमेश्वर की इच्छा के विरुद्ध गये और यीशु पर विश्वास नहीं किया कि वह मसीह है,इसी लिये वह सूली पर चढ़ाए जाने के लिए दे दिया गया। इसलिये, हमें यह समझना चाहिये कि यीशु सूली पर मरने के लिए नहीं आया था।

आगे, आईये हम मसीह ही के शब्दों और कामों की जाँच करें और यह मालूम करें कि क्या

---

[२००] प्रेरितों ७:५१-५३
[२०१] लूक १:१३
[२०२] लूक १:६३-६६
[२०३] लूक ३:१५

वास्तव में मसीह का सूली पर चढ़ाया जाना, केवल एक ही रास्ता था जिससे वह अपना मिशन पूरी तरह से निबाह सकता था। यीशु के शब्द और कार्य इस उपलक्ष्य को प्रगट करते हैं कि लोगों में विश्वास पैदा हो और वे जान जाएं कि वह मसीह है। उदाहरण की तौर पर, जब लोगों ने उससे पूछा कि परमेश्वर के कार्य करने के लिए हम क्या करें तो यीशु ने कहा:

> परमेश्वर का कार्य यह है कि तुम उस पर विश्वास करो जिसे उसने भेजा है। यूहन्ना ६:२९

एक दिन, जब वह फरीसियों के अविश्वास के कारण दुखित था और वहाँ कोई भी ऐसा नहीं था जिसके साथ वह अपने दिल का बोझ हलका कर सके, यीशु ने बहुत मलाल के साथ नीचे यरूशलेम के शहर को देखा। वह रोया और यहूदी लोगों के भाग्य पर दुःख किया, जिनका परमेश्वर ने बड़े कठोर परिश्रम और प्रेम के साथ दो हज़ार वर्ष से मार्गदर्शन किया था। यीशु ने भविष्यवाणी की कि यह शहर पूरी तरह से बरबाद हो जाएगा यहाँ तक कि कोई पत्थर पर पत्थर नहीं छोड़ा जाएगा। उसने स्पष्ट रूप से लोगों के अज्ञान की तरफ इशारा करते हुए यह बात कही, "तूने उस अवसर को जब तुझ पर कृपा दृष्टि हुई थी न पहचाना"।[२०४] एक और अन्य अवसर पर, यीशु ने यरूशलेम के लोगों के हट और अविश्वास पर विलाप करते हुए कहा:

> "हे यरूशलेम, हे यरूशलेम! तू भविष्यद्वक्ताओं को मार डालता है, और जो तेरे पास भेजे गये उन पर पथराव करता है। कितनी ही बार मैंने चाहा कि जैसे मुर्गी अपने बच्चों को अपने पंखों के नीचे इकट्ठा करती है, वैसे ही मैं भी तेरे बालकों को इकट्ठा कर लूँ, परन्तु तुमने न चाहा।" मत्ती २३:३७

जिन लोगों ने उस पर विश्वास करने से इनकार किया, जबकि वे शास्त्रों से, जो उसकी गवाही देते हैं, परिचित थे, यीशु ने उन पर दोष लगाते हुए कहा:

> "तुम पवित्र शास्त्र में ढूँढ़ते हो क्योंकि तुम समझते हो कि उसमें तुम्हें अनन्त जीवन मिलता है, और यह वही है जो मेरी गवाई देता है, फिर भी तुम जीवन पाने के लिये मेरे पास आना नहीं चाहते।" यूहन्ना ५:३९-४०
>
> मैं अपने पिता के नाम से आया हूँ और तुम मुझे ग्रहण नहीं करते...क्योंकि यदि तुम मूसा का विश्वास करते, तो मेरा भी विश्वास करते, इसलिये कि उसने मेरे विषय में लिखा है। यूहन्ना ५:४३-४६

यीशु ने हताश होकर उन्हें कितने चमत्कार और प्रतीक चिह्न दिखा कर उनका विश्वास बढ़ाने के लिये प्रयास किया! फिर भी, यीशु के चमत्कार के काम देखते हुए भी, धर्म के अगुवा लोगों ने उसका

---

[२०४] लूक १९:४४

ठट्ठा उड़ा कर कहा, कि वह बालज़बूल से भूतग्रस्त है।[२०५] ऐसी स्थिति के बीच अत्यंत दुखी होकर यीशु ने कहा:

> तुम चाहे मेरा विश्वास न भी करो, परन्तु उन कामों का तो विश्वास करो, ताकि तुम समझो कि पिता मुझमें है और मैं पिता में हूँ। यूहन्ना १०:३८

फिर, उसने आलोचनात्मक रूप से अपने विरोधियों का सामना करके उनके पाखंड की निंदा की।[२०६] अपने शब्दों और कामों के द्वारा यीशु ने उन में अपने लिये विश्वास पैदा करने का प्रयास किया, क्योंकि यह परमेश्वर की इच्छा थी कि वे ऐसा करें। यदि वे परमेश्वर की इच्छा का पालन करते और यीशु पर विश्वास करते कि वह मसीह है, तो उनमें से कौन उसे सूली पर चढ़ाने के लिए हिम्मत करता?

ऊपर लिखे इन सभी सबूतों से हम समझ सकते हैं कि सूली पर यीशु की मृत्यु उस समय के लोगों की अज्ञानता और अविश्वास का दुर्भाग्यपूर्ण परिणाम था और वह मसीह के मिशन की पूर्ण पूर्ति के लिए आवश्यक नहीं था। यह सूली पर यीशु के अंतिम शब्दों द्वारा स्पष्टता से सचित्र है:

> हे पिता, उन्हें क्षमा कर, क्योंकि वे नहीं जानते कि वे क्या कर रहे हैं। लूक २३;३४

यदि परमेश्वर ने शुरू से यीशु का सूली पर मरना पूर्वनिर्धारित किया था, तो यीशु अवश्य उस नियत पथ पर चलने की अपेक्षा करता। तो फिर यीशु ने तीन बार ऐसी प्रार्थना क्यों की, "हे मेरे पिता, यदि हो सके तो यह कटोरा मुझ से टल जाए, तौभी जैसा मैं चाहता हूँ वैसा नहीं, परन्तु जैसा तू चाहता है वैसा ही हो।"[२०७] सच्चाई तो यह है कि यीशु ने हताश होकर यह प्रार्थना की, क्योंकि वह अच्छी तरह से जानता था कि उसकी मृत्यु से पृथ्वी पर स्वर्ग के राज्य की स्थापना की आशा मिट जाएगी। और परमेश्वर के लिये यह दुखद निराशा होगी, जिसने पतन के बाद से इतने लम्बे अरसे तक कठिन परिश्रम के द्वारा इस आशा को साधित करने के लिये काम किया था। इसके अतिरिक्त यीशु को मालूम था कि मानवता के कष्ट उसके दूसरे आगमन के समय तक जारी रहेंगे।

यीशु ने कहा, "और जिस रीति से मूसा ने जंगल में साँप को ऊँचे पर चढ़ाया था, उसी रीति से अवश्य है कि मनुष्य का पुत्र भी ऊँचे पर चढ़ाया जाए।"[२०८] जब इस्राएलियों ने कनान के रास्ते पर मूसा में विश्वास खो दिया, तब उग्र सर्प प्रगट हुए और उन्हें काटने लगे। परमेश्वर ने मूसा को एक कांसे के सर्प की प्रतिमा बनाने के लिए कहा और उसे एक खंबे पर लटका देने की आज्ञा दी, ताकि सभी जो सर्प को देखेंगे वे जी सकेंगे।[२०९] इसी तरह, चुने हुए लोगों के उस पर विश्वास न करने के कारण यीशु को पूर्वाभास था कि मानव जाति नरक में डाली जाएगी। और यह भी कि सारी मानवता को बचाने के लिये, वह कांसे

---

[२०५] मत्ती १२:२४
[२०६] मत्ती २३:१३-३६
[२०७] मत्ती २६:३९
[२०८] यूहन्ना ३:१४
[२०९] गिनती २१:४-९

के सर्प की तरह सूली पर चढ़ाया जाएगा और जो उसे देखेंगे उन्हें मुक्ति प्रदान की जाएगी। इस स्थिति का पूर्वज्ञान होने पर यीशु ने अत्यंत शोकाकुल हृदय के साथ यह भविष्यवाणी की।

सूली पर यीशु की मौत परमेश्वर की इच्छा नहीं थी इसका दूसरा संकेत यह भी है कि उसके सूली पर चढ़ाए जाने के बाद इस्राएल का नाश हो गया।[२१०] जबकि, यीशु के लिये यह भविष्यवाणी की गई थी कि वह आकर दाऊद के सिंहासन पर बैठेगा और एक अनंत राज्य स्थापित करेगा:

> क्योंकि हमारे लिये एक बालक उत्पन्न हुआ, हमें एक पुत्र दिया गया; और प्रभुता उसके कांधे पर होगी, और उसका नाम अद्भुत संचालक पराक्रमी परमेश्वर, अनंतकाल का पिता और शांति का राजकुमार रखा जाएगा। उसकी प्रभुता सर्वदा बढ़ती रहेगी, और उसकी शांति का अंत न होगा, इसलिये वह उसको दाऊद की राजगद्दी पर इस समय से लेकर सर्वदा के लिये न्याय और धर्म के द्वारा स्थिर किए और संभाले रहेगा! सेनाओं के यहोवा की धुन के द्वारा यह हो जाएगा। यशायाह ९:६-७

एक स्वर्गदूत ने भी यीशु के लिये, जो गर्भाधान से पहले दिखाई दिया था, मरियम से उसी तरह की भविष्यवाणी की:

> देख तू गर्भवती होगी, और तेरे एक पुत्र उत्पन्न होगा; तू उसका नाम यीशु रखना। वह महान होगा और परमप्रधान का पुत्र कहलाएगा; और प्रभु परमेश्वर उसके पिता दाऊद का सिंहासन उसको देगा, और वह याकूब के घराने पर सदा राज्य करेगा; और उसके राज्य का अंत न होगा। लूक १:३१-३३

चुने हुए लोगों के लिये, जिनका नेतृत्व परमेश्वर ने अब्राहम के समय से हर तरह की कठिनाईयों से होकर किया था, परमेश्वर का स्पष्ट अभिप्राय था कि वह उन्हें एक मसीह भेजेगा और पृथ्वी पर एक अनन्त राज्य का निर्माण करेगा। परन्तु, जब यहूदी नेतृत्व ने यीशु पर अत्याचार किया और उसे सूली पर चढ़ाया तो इस्राएल ने परमेश्वर के राज्य की स्थापना करने का अधिकार खो दिया। कुछ ही पीढ़ियों में इस्राएल के लोग पृथ्वी के हर कोने में बिखर गए। तब से उन्होंने दमन और उत्पीड़न सहा है। यह उनके पूर्वजों की भूल का दुखद परिणाम के रूप में देखा जा सकता है क्योंकि उन्होंने मसीह को मौत के मुंह में ढकेल दिया, जिसे उन्हें सम्मानित करना चाहिये था, इस तरह वे पुनरुद्धार की दैवी योजना को पूरा करने में रुकावट बन गए। इसके अतिरिक्त, यीशु को मारने के इल्जाम में न केवल यहूदियों को, पर बहुत से वफादार ईसाई लोगों को भी, उनके हिस्से के सामूहिक पाप के रूप में सूली का भार अपने कंधों पर उठाना पड़ा।

१.१ सूली के द्वारा उद्धार की परिसीमा, और यीशु का दूसरे आगमन का उद्देश्य

यदि यीशु सूली पर नहीं चढ़ाया गया होता तो क्या होता? यीशु ने मोक्ष के दोनों आत्मिक और

---

[२१०] लूक १९:४४

भौतिक पहलुओं को पूरा कर लिया होता। उसने निश्चित रूप से पृथ्वी पर अनन्त और अविनाशी स्वर्ग का राज्य स्थापित कर लिया होता। जबकि इसकी भविष्यवाणी यशायाह भविष्यद्वक्ता ने की थी, और स्वर्गदूत ने, जो मरियम को प्रगट हुआ था, इसकी घोषणा की थी, और स्वयं यीशु ने इसकी घोषणा की थी कि स्वर्ग का राज्य निकट है।[२११]

जब परमेश्वर ने मनुष्य की सृष्टि की, "तब यहोवा परमेश्वर ने आदम को भूमि की मिट्टी से रचा, और उसके नथनों में जीवन का श्वास फूँक दिया; और आदम जीवित प्राणी बन गया।"[२१२] इस प्रकार, मनुष्य की रचना आत्मा और शरीर दोनों में की गई। उनका पतन भी दोनों आत्मिक और शारीरिक तौर पर हुआ। चूँकि यीशु पूरी मुक्ति देने के लिये आया था, वह आत्मिक और शारीरिक दोनों के उद्धार का उत्तरदायी था। यीशु पर विश्वास करने का अर्थ उसके साथ एक हो जाना है, इसलिये यीशु ने अपनी तुलना सच्ची दाखलता से की है, और अपने शिष्यों की तुलना उसकी शाखाओं से की है।[२१३] उसने यह भी कहा, "उस दिन तुम जानोगे कि मैं अपने पिता में हूँ, और तुम मुझ में, और मैं तुम में।"[२१४] पतित लोगों को शारीरिक और आत्मिक रूप से बचाने के लिए यह आवश्यक था कि यीशु शरीर में आए। यदि लोगों ने यीशु में विश्वास किया होता और उसके साथ आत्मा और शरीर दोनों में एकजुट हो जाते तो वे दोनों आत्मिक और शारीरिक रूप से मोक्ष प्राप्त करते। परन्तु लोगों ने उस पर विश्वास नहीं किया और उसे सूली पर चढ़ा दिया। यीशु का शरीर शैतान के हमले का शिकार बना, और वह मारा गया। इसी लिये, यद्यपि श्रद्धालु ईसाई लोगों का यीशु के साथ एकजुट होने पर भी, उनका शरीर शैतान के हमले का निशाना बनता है जैसे कि यीशु के शरीर के साथ हुआ था।

फलस्वरूप, कोई भी विश्वासी चाहे कितना बड़ा भक्त क्यों ना हो, वह यीशु के सूली से प्राप्त हुए मोक्ष के माध्यम से शारीरिक मोचन नहीं प्राप्त कर सकता। उसका मूल पाप, जो आदम के वंश के माध्यम से पारित किया गया है, वह जड़ से उखड़ा नहीं जाता। यहां तक कि बड़े से बड़े ईसाई भक्तों में भी मूल पाप होता है और जब वे बच्चों को जन्म देते हैं तो वह भी मूल पाप से लदे पैदा होते हैं। हमारे व्यक्तिगत विश्वास में हमें, शैतान के हमलों को रोकने के लिये जो निरंतर हमारे शरीर को अपने जाल में फंसाने की कोशिश करता है, अपने शरीर का दमन करने की और उसको वश में करने की आवश्यकता महसूस होती है। हमें "निरंतर प्रार्थना" करना सिखाया गया है[२१५], ताकि हम उन शर्तों पर हावी हो सकें जिनसे शैतान हम पर हमला करता है; यह शर्तें मूल पाप से उत्पन्न होतीं हैं, जो सूली के द्वारा उद्धार के बावजूद भी मिटाई नहीं गईं थीं।

यीशु पूर्ण उद्धार का लक्ष्य, आत्मिक और शारीरिक, दोनों स्तर पर पूरा नहीं कर सका, क्योंकि शैतान ने उसके शरीर पर प्रहार किया। परन्तु, सूली पर यीशु ने अपने खून के द्वारा मोचन के माध्यम से

---

[२११] यशायाह ९:६७, लूक १:३१-३३, मत्ती ४:१७
[२१२] उत्पत्ति २:७
[२१३] यूहन्ना १५:५
[२१४] यूहन्ना १४.२०
[२१५] १ थिस्सलुनिकियों ५:१७

अपने जी उठने की विजयी नींव पर आत्मिक मुक्ति का आधार दृढ़ किया। परिणाम स्वरूप, उसके जी उठने के बाद से सभी विश्वासियों ने आत्मिक उद्धार का लाभ प्राप्त किया है, लेकिन उन्हें शारीरिक मुक्ति नहीं मिली। सूली के द्वारा मोचन केवल आत्मिक उद्धार प्रदान करता है। मूल पाप श्रद्धालु ईसाई लोगों के शरीर में भी सक्रिय रहता है और यह वंश के द्वारा संतानों में पारित होता रहता है। कोई विश्वासी जितना अधिक अपनी आस्था में उत्कट हो उतनी कठोरता से उसे अपने अंदर के मूल पाप के विरुद्ध लड़ाई करनी पड़ती है। यहाँ तक कि संत पौलुस जो प्रेरितों में सबसे अधिक धर्मनिष्ठ माना जाता है, अपने शरीर में पाप को रोकने की अपनी असमर्थता पर शोक करता है:

> परन्तु मुझे अपने अंगों में दूसरी प्रकार की व्यवस्था दिखाई पड़ती है, जो मेरी बुद्धि की व्यवस्था से लड़ती है और मुझे पाप की व्यवस्था के बंधन में डालती है जो मेरे अंगों में है। मैं कैसा अभागा मनुष्य हूँ। मुझे इस मृत्यु की देह से कौन छुड़ाएगा? हमारे प्रभु यीशु के द्वारा परमेश्वर का धन्यवाद हो। इसलिये मैं आप बुद्धि से तो परमेश्वर की व्यवस्था का, परन्तु शरीर से पाप की व्यवस्था का सेवन करता हूँ। रोमियों ७:२२-२५

यह कथन पौलुस के आत्मिक उद्धार प्राप्त करने के आनन्द की तुलना में फर्क था, बहुत दर्द के साथ उसने यह महसूस किया क्योंकि वह शारीरिक मुक्ति को प्राप्त करने में असमर्थ था, यूहन्ना ने भी यह स्वीकार किया:

> यदि हम कहें कि हम में कुछ भी पाप नहीं, तो हम अपने आप को धोका देते हैं, और हम में सत्य नहीं...यदि हम कहें कि हम ने पाप नहीं किया, तो उसे झूठा ठहराते हैं, और उसका वचन हम में नहीं है। १ यूहन्ना १:८-१०

हम, जिन्होंने यीशु का सूली पर आधारित मोक्ष प्राप्त किया है, अपने आप को पाप की जंजीरों से छुड़ा नहीं सकते, यह मूल पाप के कारण है जो हमारे अंदर की गहराइयों में सक्रिय है। इसलिए, मूल पाप, जिसको वह सूली के माध्यम से नहीं निकाल सका, उसे उखाड़ने के लिए और शारीरिक उद्धार का काम पूरा करने के लिए, यीशु को पृथ्वी पर दुबारा आना ही चाहिए। तभी परमेश्वर के उद्धार के कार्य का उद्देश्य दोनों आत्मिक और शारीरिक रूप से पूरा होगा।

१.५ सूली के बारे में दो प्रकार की भविष्यवाणियाँ

यदि क्रूस पर यीशु की मृत्यु मसीह के उद्देश्य की पूर्ण उपलब्धि के लिये आवश्यक रूप से पूर्वनिर्धारित नहीं की गई थी, तो फिर यशायाह की पुस्तक में यह भविष्यवाणी क्यों की गई कि वह सूली पर अग्नि परीक्षा सहने का कष्ट उठाएगा?[२१६] हमें लगता होगा कि हो सकता है कि बाईबल में यीशु के केवल दु:ख हैं, तो हम उठाने की भविष्यवाणी ही की गईं हैं। परन्तु जब हम नियम के नए ज्ञान के साथ बाईबल पढ़ते

---

२१६ यशायाह ५३

यह देख सकते हैं कि इसके विपरीत और भी भविष्यवाणी की गईं हैं। जैसे कि यशायाह ने भविष्यवाणी कीं हैं[२१७] और फिर स्वर्गदूत ने मरियम को सूचित करते हुए[२१८] यह भविष्यवाणी की, कि यीशु अपने जीवन काल में यहूदियों का राजा बनेगा और पृथ्वी पर अविनाशी राज्य स्थापित करेगा। आईये हम यह जाँच करें कि परमेश्वर ने यीशु के लिये दो अलग प्रकार की भविष्यवाणी क्यों दीं।

परमेश्वर ने मनुष्य को ऐसा रचा है कि वह केवल अपने हिस्से की जिम्मेदारी पूरी करने पर ही पूर्णता प्राप्त कर सकता है।[२१९] वास्तव में, पहले मानव पूर्वजों ने अपनी जिम्मेदारी नहीं निबाही और उनका पतन हो गया। इस प्रकार, मनुष्यों को परमेश्वर की इच्छा के अनुसार अपनी जिम्मेदारी को पूरा करने की क्षमता है, या फिर परमेश्वर की इच्छा के विपरीत वे अपनी जिम्मेदारी में विफल भी हो सकते हैं।

बाईबल से कुछ उदाहरण लेते हैं, आदम के हिस्से की जिम्मेवारी थी कि वह अच्छे और बुरे के ज्ञान के पेड़ के फल को न खाए। वह या तो इस आज्ञा का पालन करके पूर्णता प्राप्त कर सकता था, या फल खा कर अपना जीवन खो सकता था। उसने बाद वाला चुना। पुराने नियम के युग में, परमेश्वर ने दस आज्ञाएं और मूसा का कानून दिया, जो लोगों के लिये उनके उद्धार की शर्त के रूप में पालन करने के लिए था। यह उनके अपने हिस्से कि जिम्मेदारी थी, कि या तो वे कानून को बनाए रखें और मोक्ष प्राप्त करें या आज्ञा न मान कर बरबाद हो जाएं।[२२०] इज़राएलियों के लिये, जिन्होंने मिस्र को छोड़ कर कनान की ओर कूच किया, उनकी जिम्मेदारी यह थी, कि वह मूसा के निर्देशों का पालन करें। वे या तो ईमानदारी से मूसा के निर्देशों का अनुपालन करके कनान देश में प्रवेश करें या उसके खिलाफ बग़ावत करके प्रतिज्ञा के देश में प्रवेश न करें। वास्तव में, परमेश्वर ने यह पहले से कहा था कि वह इज़राएलियों का कनान देश में जाने के लिये मार्गदर्शन करेगा,[२२१] और उसने मूसा को आज्ञा दी थी कि वह उनका वहाँ जाने के लिये नेतृत्व करे। तौभी, उनके विश्वास की कमी के कारण, लोग जंगल में नाश हो गए, केवल उनका वंश अंतिम गंतव्य तक पहुँचा।

मनुष्यों के लिये उनके अपने हिस्से की जिम्मेदारी ठहराई गई है; जिसको या तो वे परमेश्वर की इच्छा के अनुसार पूरा कर सकते हैं, या वे उसकी इच्छा के विपरीत पूरा करने में विफल हो सकते हैं। उसका प्रतिफल उनके अपने हिस्से की जिम्मेदारी को पूरा करने या न करने पर निर्भर होता है। इसी कारण से, परमेश्वर ने अपनी इच्छा की उपलब्धि के विषय में दो प्रकार की भविष्यवाणी दी हैं।

मसीह को भेजने का उत्तरदायित्व परमेश्वर का है। परन्तु, मसीह पर विश्वास करने का उत्तरदायित्व मनुष्य का है। यहूदी लोग परमेश्वर की इच्छा के अनुसार या तो मसीहा पर विश्वास कर सकते थे या उसकी इच्छा के विरोध में विश्वास नहीं करें। मानव जिम्मेदारी में दोतरफ़ा संभावना को ध्यान में रखते हुए, परमेश्वर ने यीशु के द्वारा अपनी इच्छा की परिपूर्णता के लिये दो प्रकार की भविष्यवाणी दीं।

---

[२१७] यशायाह ९, ११, ६०

[२१८] लूक १:३१-३३

[२१९] प्रति संदर्भ—५.२.२

[२२०] व्यवस्थाविवरण ३०:१५-२०

[२२१] निर्गमन ३:८

एक तरह की भविष्यवाणी से यह बताया गया कि यीशु लोगों के अविश्वास के कारण मारा जाएगा[२२२] ।दूसरे प्रकार की भविष्यवाणी से यह बताया गया कि लोग उसपर विश्वास करेंगे और यीशु का मसीह के रूप में सम्मान करेंगे और परमेश्वर की इच्छा को महिमा में पूरा करने के लिए उसकी मदद करेंगे।[२२३] जब लोगों के अविश्वास के कारण यीशु की मृत्यु क्रूस पर हो गई, तो केवल पहले प्रकार की भविष्यवाणी पूरी हुई। दूसरी तरह की भविष्यवाणी मसीह के दूसरे आगमन तक अपूर्ण रही है।

१.६ सुसमाचार के कुछ भागों में प्रभु यीशु ने अपने क्रूस पर चढ़ाए जाने के बारे में कहा, जिससे ऐसा प्रतीत होता है कि उसका सूली पर चढ़ाया जाना आवश्यक है

सुसमाचार के कई भागों में प्रभु यीशु ने क्रूस पर अपने दुःख उठाने के बारे में इस प्रकार से कहा है कि जैसे उद्धार के लिये सूली आवश्यक थी। उदाहरण के लिये, जब पतरस ने यीशु को सूली के निकट होने की भविष्यवाणी करते हुए सुना और उसे इस बारे में कहने से रोकने की कोशिश की है, तो यीशु ने उसे डांटकर कहा," हे शैतान मेरे सामने से दूर हो! तू मेरे लिये ठोकर का कारण है"।[२२४] यीशु पतरस के साथ इतनी कठोरता से क्यों पेश आया? सच्चाई तो यह है कि यीशु ने यह शब्द उस समय कहे जब चुने हुए लोगों के अविश्वास के कारण उद्धार की दैवी योजना को शारीरिक और आत्मिक दोनों स्तर पर पूरा करने के लिए यीशु अपने प्रयासों में बिलकुल निराश हो गया था। उस समय तक, यीशु ने मानवता के आत्मिक उद्धार का द्वार खोलने के लिये क्रूस के भाग्य को क्षतिपूर्ति की शर्त के रूप में पूर्ण निश्चय के साथ स्वीकार कर लिया था।[२२५] पतरस का टोकना, यीशु का सूली के माध्यम से आत्मिक मुक्ति का रास्ता खोलने में रुकावट डाल सकता था। इस कारण यीशु ने उसे घुड़का।

एक दूसरा उदाहरण यीशु के सूली पर अंतिम शब्द हैं, "पूरा हुआ"।[२२६] यीशु के इन शब्दों का यह मतलब नहीं था कि सूली के द्वारा उसने उद्धार की दैवी योजना पूरी तरह परिपूर्ण कर ली है। जब उसने यह महसूस किया कि लोगों का अविश्वास अपरिवर्तनीय है, उसने सूली का रास्ता चुना ताकि वह आत्मिक उद्धार की नींव डाल सके, इस तरह शारीरिक मोक्ष का कार्य दूसरे आगमन के समय तक अधूरा रह गया। इसलिये "पूरा हुआ" शब्दों का मतलब यह है कि आत्मिक उद्धार की नींव डालने का कार्य पूरा हुआ। इस समय तक यह, दैवी योजना का वैकल्पिक लक्ष्य बन गया था।

हमारे यथोचित विश्वास के लिये यह आवश्यक है, कि पहले हम परमेश्वर से प्रार्थना में आत्मिक अनुभव के द्वारा प्रत्यक्ष सहभागिता स्थापित करें और फिर पवित्र शास्त्र को यथातथ्य पढ़ कर सत्य को समझें। यही कारण है कि यीशु ने हमें "आत्मा और सच्चाई" में उपासना करने के लिए कहा है।[२२७]

---

[२२२] यशायाह ५३
[२२३] यशायाह ९,११,६०; लूक १:३१
[२२४] मत्ती १६:२३
[२२५] लूक ९:३१
[२२६] यूहन्ना १९:३०
[२२७] यूहन्ना ४:१४

यीशु के समय से, ईसाई लोगों का ऐसा विश्वास है कि यीशु क्रूस पर मरने के लिए ही इस दुनिया में आया था। यीशु का मसीह बन कर आने के मौलिक प्रयोजन से अंजान उन्होंने आत्मिक उद्धार को ग़लत समझा और यह सोचा कि उसका मिशन केवल इतना ही था। यीशु और जीना चाहता था और अपनी नियति को पूरा करना चाहता था, परन्तु लोगों के अविश्वास के कारण निराशा पूर्ण दिल के साथ मर गया। आज, यहाँ पृथ्वी पर वफादार दुलहन, यानी शुद्ध दिल के विश्वासियों को प्रगट होना चाहिये जो यीशु के दिल के कड़वे दुःख को हलका कर सकें। इससे पहले कि यीशु दुल्हा बनकर फिर से आए, ऐसी दुल्हन को प्रगट होना चाहिये जो यीशु के दिल के मनोरथ को बढ़ाएं। परंतु यीशु ने शोकाकुल हो कर कहा, "तौभी मनुष्य का पुत्र जब आएगा, तो क्या वह पृथ्वी पर विश्वास पाएगा?" [२२८] क्योंकि उसके लौटने पर उसे लोगों के अंधेरे में होने की संभावना का पूर्वाभास हुआ।

हमने बाईबल के अध्ययन से यह स्पष्ट कर दिया है कि यीशु क्रूस पर मरने के लिए नहीं आया था। हम इस तथ्य को और भी अधिक स्पष्ट रूप से समझ सकते हैं यदि हम आध्यात्मिक रूप से यीशु के साथ संवाद करें और सीधे उसी से पूछें। यदि हम आध्यात्मिक वास्तविकताओं का अनुभव नहीं कर सकते हैं, तो हमें चाहिये कि उन लोगों की गवाही को सुनें जो ऐसे दान से संपन्न हैं, ताकि हम उसका हृदय अच्छी तरह से समझ सकें हैं और अपने विश्वास को बढ़ा सकें। तब ही हम जो अंतिम दिनों में उसका स्वागत करेंगे मसीह की दुलहन बनने के योग्य होंगे।

---

[२२८] लूक १८:८

संभाग २

एलिय्याह का दूसरा आगमन और यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला

भविष्यद्वक्ता मलाकी ने भविष्यवाणी की थी कि एलिय्याह फिर से वापस आएगा: "देखो, यहोवा के उस बड़े और भयानक दिन के आने से पहले, मैं तुम्हारे पास एलिय्याह नबी को भेजूँगा"।[२२९] यीशु ने एलिय्याह के आगमन की गवाही दी कि जो भविष्यवाणी उसके लिये की गई थी वह और किसी में नहीं पर यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले में पूरी हुई:

> "परन्तु मैं तुम से कहता हूँ कि एलिय्याह आ चका है, और तुम लोगों ने उसे नहीं पहचाना, परन्तु जैसा चाहा तुमने उसके साथ वैसा ही किया...तब चेलों ने समझा कि उसने हमसे यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के विषय में कहा।" मत्ती १७:१२-१३

फिर भी, यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने खुद को नहीं पहचाना कि वह एलिय्याह का दूसरा आगमन है,[२३०] और न ही यहूदी लोगों ने पहचाना। यीशु के बारे में यूहन्ना की अज्ञानता ने उस के दिल में संदेह भर दिया।[२३१] चूंकि बहुत से यहूदी लोग यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के दृष्टिकोण का सम्मान करते थे। यह यीशु के प्रति उनके अविश्वास का कारण बन गया। यूहन्ना की अज्ञानता, यीशु के क्रूस पर चढ़ाए जाने का प्रमुख कारक थी।

२.१ एलिय्याह के वापस आने के बारे में यहूदियों की धारणा

संयुक्त राज्य की अवधि के दौरान, उसके पवित्र मंदिर के बनाने के लिये परमेश्वर का आदर्श राजा सुलेमान के अपराधों के कारण कुंठित हो गया था।[२३२] मंदिर के पुनर्निर्माण और मसीह के, जो मंदिर का देहधारी है, आगमन का मार्ग प्रशस्त करने के लिए परमेश्वर ने इज़राएल में चार प्रमुख और बारह अप्रमुख भविष्यद्वक्ता भेजे, और उनके द्वारा इज़राएलियों के शैतानी प्रभावों को शुद्ध करने के लिए काम किया। इन के अतिरिक्त, परमेश्वर ने एलिय्याह नबी को कार्मेल पहाड़ पर बाल के भविष्यद्वक्ताओं का सामना करने के लिए भेजा; उसने उन्हें परमेश्वर की शक्ति के साथ पराजित किया और बाल की वेदियों को नीचे गिरा दिया। परन्तु, एलिय्याह अपना दिव्य मिशन पूरा करने से पहले एक बवंडर के साथ उग्र रथ में सवार होकर स्वर्ग में चढ़ गया।[२३३] शैतान की शक्ति फिर से प्रबल हो गई और परमेश्वर की दैवी योजना के लिए उत्पात बन गई। मसीह का रास्ता अब सीधा नहीं हो सकता था जब तक शैतान के प्रभाव निकाले न जाएं। इसलिए, इससे पहले कि यीशु साक्षात मंदिर का आदर्श साधित करे, दूसरे भविष्यद्वक्ता को

---

[२२९] मलाकी ४:५

[२३०] यूहन्ना १:२१

[२३१] मत्ती ११.३

[२३२] प्रति संदर्भ समान्तर ३

[२३३] २राजा २:११

एलिय्याह का अधूरा मिशन पूरा करना चाहिये, जो लोगों के शैतान के बंधन को तोड़े। इस दैवी आवश्यकता के कारण, मलाकी भविष्यद्वक्ता ने पहले ही बताया कि एलिय्याह फिर से आएगा।[२३४]

यहूदी लोग, शास्त्र की भविष्यवाणी में विश्वास रखते थे और बड़ी आशा के साथ सरगर्मी से मसीह के आगमन की बाट जोहते थे। परंतु, हमें यह मालूम होना चाहिये कि वे एलिय्याह की वापसी की भी उतनी ही उत्सुकता से लालसा करते थे। इस का कारण यह है कि परमेश्वर ने नबी मलाकी के द्वारा स्पष्टता से यह वायदा किया था कि वह मसीह के आने से पहले एलिय्याह को प्रभु के लिये रास्ता तैयार करने के लिये भेजेगा। एलिय्याह मसीह के जन्म से ८५० वर्ष पहले स्वर्ग में चढ़ गया था; उस समय से वह स्वर्ग में रहता था। हम रूपांतर की कथा से परिचित हैं, जब एलिय्याह और मूसा यीशु के चेलों के सामने प्रगट हुए थे।[२३५] कई यहूदियों का मानना था कि जब एलिय्याह आएगा तो वह जिस रीति से स्वर्ग पर चढ़ा था उसी रीति से वह स्वर्ग से उतरेगा। जिस प्रकार आज ईसाई लोग दृढ़ संकल्प से आकाश की ओर इस आशा से देखते हैं कि यीशु बादलों पर आएगा, उसी तरह यीशु के दिनों में यहूदी लोग भी बड़ी उत्सुकता से आकाश की ओर देख कर एलिय्याह की बाट जोहते थे।

फिर भी, इससे पहले कि मलाकी की भविष्यवाणी पूरी हो और एलिय्याह के दुबारा आने का कोई समाचार मिले, यीशु अचानक से प्रगट हो गया और मसीह होने का दावा करने लगा। यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि यीशु की उपस्थिति और उद्घोषणा से यरूशलेम में बड़ा हड़कंप मच गया था। यीशु के चेले जहाँ कहीं गये उनसे एलिय्याह के बारे में प्रश्न किया गया कि उसे मसीह से पहले आना चाहिये था। चेलों के पास इस प्रश्न का ठीक उत्तर न होने के कारण उन्होंने यीशु से पूछा, "फिर शास्त्री क्यों कहते हैं कि एलिय्याह का पहले आना आवश्यक है?"[२३६] यीशु ने उत्तर दिया कि यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला एलिय्याह है जिसकी लोग प्रतीक्षा कर रहे थे।[२३७] चूँकि चेले पहले ही से यीशु पर विश्वास करते थे कि वह मसीह है, उन्होंने यीशु की गवाही पर आसानी से विश्वास कर लिया कि यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला ही एलिय्याह है। परन्तु दूसरे लोग, जो यीशु को नहीं जानते थे, उसका यह विवादास्पद दावा कैसे स्वीकार कर सकते थे? यीशु यह जानता था कि वे आसानी से विश्वास नहीं करेंगे, इसलिये उसने उनसे कहा, "चाहो तो मानो कि एलिय्याह जो आने वाला था वह यही है।"[२३८] यहूदियों का यीशु की उद्घोषणा पर विश्वास करना और भी कठिन इसलिये हो गया क्योंकि यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला पहले ही इस बारे में इनकार कर चुका था। यूहन्ना ने यह ज़ोर देकर कहा कि वह एलिय्याह नहीं है। "तब उन्होंने उससे पूछा तो फिर तू कौन है? क्या तू एलिय्याह है? उसने कहा, मैं नहीं हूँ।[२३९]"

---

[२३४] मलाकी ४:५
[२३५] लूक ९:२८-३६
[२३६] मत्ती १७:१०
[२३७] मत्ती १७:१२-१३
[२३८] मत्ती ११:१४
[२३९] यूहन्ना १:२१

२.२ वह रास्ता जो यहूदी लोग चुनने वाले थे

यीशु ने स्पष्ट करके कहा, यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला वही एलिय्याह है जिसकी लोग बहुत उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहे हैं, परन्तु इसके विपरीत यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने इस बात से साफ-साफ इनकार कर किया। यहूदी लोग अब किस पर विश्वास करेंगे? यह मसला, यीशु या यूहन्ना, दोनों में से किस पर निर्भर करता था, कौन लोगों की नज़रों में अधिक विश्वास योग्य और आदरणीय मना जाता था।

आएँ हम यह जांच करें कि यीशु यहूदी लोगों की नज़रों में कैसा दिखता था। यीशु एक अशिक्षित जवान आदमी था जो एक बढ़ई के गरीब और दीन-हीन घर में पल कर बड़ा हुआ था। यह अज्ञात युवक अचानक से लोगों के सामने प्रगट होता है और खुद को "सब्त के दिन का प्रभु" कहता है, और जबकि प्रकटतः तौर पर वह सब्त के दिन को दूषित कर रहा था, जिसे यहूदी अत्यंत श्रद्धा के साथ पवित्र मानते थे।[२४०] इस तरह यीशु ने ऐसा नाम प्राप्त किया कि जैसे वह कानून को मिटाना चाहता हो, जो यहूदियों के लिए मोक्ष का आधार था।[२४१] इसलिए, यहूदी समुदाय के नेताओं ने यीशु को सताया। इस तरह यीशु ने विवश होकर मछुआरों के बीच में से अपने लिये चेले इकट्ठे किए और कर संग्राहकों, वेश्याओं और पापियों को दोस्त बनाया और जिनके साथ वह उठता-बैठता और खाता-पीता था।[२४२] यहूदी नेताओं की दृष्टि में और अधिक बुरा तो यह था कि जब यीशु ने कहा कि कर संग्राहक और वेश्याएं स्वर्ग के राज्य में उन से पहले प्रवेश करेंगे।[२४३]

एक अवसर पर, एक वेश्या रोते हुए यीशु के पास आई और उसके पैरों को चूम कर अपने आँसू से उसके पैरो को गीला करके अपने बालों से पोंछने लगी, फिर कीमती तेल कुप्पी से निकाल कर उसके पैरों पर मलने लगी।[२४४] एक वेश्या से ऐसी परिचर्या स्वीकार करना आधुनिक समाज में भी अनुचित होगा; निश्चित रूप से यह यहूदी समाज के लिये, जिसमें कट्टर कूट नीति के अंतर्गत व्यभिचारिणी को पत्थरवाह करके मौत का दंड दिया जाता था, निन्दात्मक था। फिर भी यीशु ने न केवल उसकी भव्य सेवा को स्वीकार ही किया; उसने उसकी प्रशंसा भी करी और जब उन्होंने उस महिला को रोकने की कोशिश की उसने अपने चेलों को डांटा।[२४५]

इसके अतिरिक्त, यीशु अपने आप को परमेश्वर के साथ समान स्तर पर रखता हुआ लगा[२४६] और उसने इस बात पर भी ज़ोर दे कर कहा कि उसके बिना कोई भी परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर

---

[२४०] मत्ती १२:१-८
[२४१] मत्ती ५:१७
[२४२] मत्ती ११:१९
[२४३] मत्ती २१:३१
[२४४] लूक ७:३७-३८
[२४५] लूक ७:४४-५०
[२४६] यूहन्ना १४:९

सकता।[२४७] उसने जोर देकर कहा लोगों को चाहिए कि वे उसे अपने माता-पिता, भाइयों और बहनों, जीवन साथी या बच्चों से अधिक प्यार करें।[२४८] इस प्रकार, कई लोगों को यीशु के शब्द और कार्य धर्मद्रोही से दिखाई दिए। इसलिए, यह आश्चर्य की बात नहीं है कि यहूदी नेतृत्व ने उसे झिड़का और उस पर दुष्ट आत्माओं के राजकुमार बालज़बूल से आवेशित आरोप लगाकर उसका ठट्ठा किया।[२४९] इन सभी तथ्यों से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि यीशु अपने समय के यहूदी लोगों की आँखों में विश्वासयोग्य नहीं था।

ठीक उसी समय, यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला यहूदी लोगों के सामने कैसा जान पड़ता था? यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला एक प्रमुख परिवार में पैदा हुआ था; वह ज़कर्याह, महायाजक का बेटा था। यूहन्ना के गर्भाधान के समय के चमत्कार और जन्म संकेतों से यहूदिया के आसपास के सभी पहाड़ी देशों के लोग विस्मित थे। एक दिन, जब ज़कर्याह मंदिर में धूप जला रहा था, एक स्वर्गदूत उसके सामने आ खड़ा हुआ और उसने घोषणा की कि उसकी बूढ़ी पत्नी, जो बंजर थी, उसे जल्द ही एक बेटा गर्भ धारण होगा। जब उसने स्वर्गदूत के वचन पर विश्वास नहीं किया तो वह गूँगा हो गया, और उसकी जीभ बच्चे के जन्म पर ही खुली।[२५०] इसके अतिरिक्त, यूहन्ना ने जंगल में एक आदर्श आस्था पूर्ण जीवन व्यतीत किया था और कि वह टिड्डियां और जंगली शहद खा कर रहता था। इन कारणों से, कई यहूदी लोग सोचते थे कि शायद वह मसीह तो नहीं है, और याजकों और लेवियों का एक प्रतिनिधिमंडल उसके पास आया और उससे सीधे इस बात का जवाब पूछा।[२५१] यहूदी लोग यूहन्ना का इस हद तक आदर करते थे।

यीशु के समय के यहूदी लोगों ने जब यूहन्ना और यीशु दोनों की परिस्थितियों की तुलना करके विचार किया तो उन्हें कौन अधिक विश्वसनीय दिखाई दिया? निःसंदेह यूहन्ना के बोल उन्हें अधिक भरोसेमंद लगे। इसलिये स्वभावतः उन्होंने यीशु की गवाही, कि यूहन्ना एलियाह है, से अधिक यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के वचन का विश्वास किया जब उसने स्वयं एलिय्याह होने से इनकार किया। चूँकि लोगों ने यूहन्ना पर विश्वास किया, उन्होंने यीशु के कहने को झूठ समझा, यह सोचकर कि उसने अपने मसीह होने के संदेहात्मक दावे के समर्थन के लिये मनगढ़ंत कहा है। फलस्वरूप, यीशु बहुरूपिये के रूप में अपराधी ठहराया गया।

यीशु का एक बार बहुरूपिया ठहराए जाने से लोगों में उसके लिये अविश्वास रोज़-ब-रोज़ बढ़ता गया। उन्हें उसके काम और वचन और भी अधिक अप्रिय लगने लगे। चूंकि वे यीशु के शब्दों के बजाए यूहन्ना के शब्दों पर अधिक विश्वास करते थे, इसलिये उन्हें केवल यही लगता है कि एलिय्याह अभी तक नहीं आया है। तदनुसार, वे इस बात का अनुमान ही नहीं लगा सकते थे कि मसीह आ चुका है।

जब तक यहूदी लोगों ने मलाकी की भविष्यवाणी में विश्वास रखा, उन्हें यीशु को, जिसने मसीह

---

[२४७] यूहन्ना १४:६

[२४८] मत्ती १०:३७, लूक १४:२६

[२४९] मत्ती १२:२४

[२५०] लूक १:९-६६

[२५१] लूक ३:१५, यूहन्ना १:२०

होने का दावा किया, उपेक्षित करना पड़ा, क्योंकि उनके दृष्टिकोण से एलिय्याह अभी तक नहीं आया था। दूसरी ओर, यीशु में विश्वास करने के लिए उन्हें, बाईबल की भविष्यवाणी जो कहती है कि एलिय्याह की वापसी के बाद ही यीशु आएगा, अस्वीकार करना पड़ता था। चूँकि धर्मनिष्ठ यहूदी शास्त्र की भविष्यवाणी को नकारने का विचार भी नहीं कर सकते थे, इसलिये उनके पास, यीशु पर विश्वास न करने के अलावा और अन्य कोई चारा बाकी नहीं रहा।

२.३ यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की अविश्वसनीयता

यहूदी नेताओं के बीच और यीशु के दिनों के बहुत से लोग यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला को बहुत आदर-सम्मान देते थे; कुछ लोग तो यह भी सोचते थे कि वह मसीह है। यदि यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने यह घोषित किया होता कि वह एलिय्याह है, जैसे कि यीशु ने उसके लिये गवाही दी थी, तो जो लोग मसीह के लिए बेसब्री से इंतजार कर रहे थे वह आसानी से यूहन्ना की गवाही पर विश्वास करके यीशु के पीछे हो लिए होते। परन्तु, परमेश्वर की दैवी योजना के बारे में यूहन्ना की अज्ञानता, जिसके कारण उसने ज़ोर देते हुए कहा कि वह एलिय्याह नहीं था, यहूदी नेतृत्व का यीशु के पास न आने का प्रमुख कारण बन गया।

यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने यरदन नदी पर यीशु के लिये गवाही दी:

> मैं तो पानी से तुम्हें मन फिराव का बपतिस्मा देता हूँ, परंतु जो मेरे बाद आने वाला है, वह मुझ से अधिक शक्तिशाली है, मैं उसकी जूती उठाने के योग्य नहीं हूँ, वह तुम्हें पवित्र आत्मा से बपतिस्मा देगा। मत्ती ३:११

> मैं तो उसे पहचानता नहीं था, परन्तु जिसने मुझे जल से बपतिस्मा देने को भेजा उसी ने मुझ से कहा, 'जिसपर तू पवित्र आत्मा को उतरते और ठहरते देखे, वही पवित्र आत्मा से बपतिस्मा देने वाला है'। और मैंने देखा, और गवाही दी है कि यही परमेश्वर का पुत्र है। यूहन्ना १:३३-३४

परमेश्वर ने प्रत्यक्षतः यूहन्ना को यह प्रगट किया था कि यीशु मसीह है, और यूहन्ना ने इस प्रकटीकरण की गवाही भी दी। इसके अतिरिक्त उसने कहा, "मैं जंगल में पुकारने वाले का शब्द हूँ कि तुम प्रभु का मार्ग सीधा करो"[२५२] और यह घोषित किया मैं, वही हूँ जिसे प्रभु के आने से पहले भेजा गया है।[२५३] इसलिए, यूहन्ना को स्वयं अपनी बुद्धि से यह समझना चाहिये था कि वह वापस आने वाला एलिय्याह है। भले ही यूहन्ना यह सच्चाई समझ नहीं पाया तौभी चूँकि परमेश्वर ने उसे यह प्रगट कर दिया था कि यीशु मसीह है, तो आज्ञाकारी बन कर उसे यीशु की गवाही स्वीकार कर लेनी चाहिये थी और अपने आप को एलिय्याह घोषित कर देना चाहिये था। परन्तु यूहन्ना परमेश्वर की इच्छा से अबोध था। उसने यीशु के द्वारा अपने लिये दी गई गवाही का निषेध किया; इसके अतिरिक्त वह यीशु से विलग हो गया और अलग अपने रास्ते पर चला गया। यीशु इन घटनाओं से कितना दुखित हुआ होगा यह हमारी कल्पना से बाहर है। अपने पुत्र

---

[२५२] यूहन्ना १:२३

[२५३] यूहन्ना ३:२८

को इतनी कठिन स्थिति में देख कर परमेश्वर को कैसा लगा होगा।

सच तो यह है कि यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का मिशन यीशु को बपतिस्मा देने के बाद और उसकी गवाही देने के बाद समाप्त हो गया था। इसके बाद उसका मिशन क्या होना चाहिये? यूहन्ना के जन्म के समय उसके पिता ज़कर्याह ने पवित्र आत्मा से भर कर अपने पुत्र के मिशन के लिये यह कह कर भविष्यवाणी की "ऐसी करुणा हो...उसके सामने पवित्रता और धार्मिकता से जीवन भर निडर रहकर उसकी सेवा करते रहें,"[२५४] इस प्रकाश में, यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले को यीशु के बारे में गवाही देने के बाद, दूसरों के अधिक प्रबल भक्ति के साथ अपना बाकी जीवन यीशु का शिष्य बनकर उसकी सेवा में बिताना चाहिये था। परन्तु, यूहन्ना यीशु को छोड़ कर अलग स्वतंत्र रूप से बपतिस्मा देने को चला गया। इस में कोई आश्चर्य नहीं कि यहूदी लोग इस हद तक उलझन में पड़ गये थे कि वे सोचने लगे कि हो सकता है कि यूहन्ना ही मसीह है।[२५५] उनके नेता भी असमंजस में थे।[२५६] इससे अधिक, एक घटना में, एक यहूदी जो यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला का चेला था, यीशु के पास आया और उसके चेलों से इस बात पर झगड़ने लगा कि किसका गुरु अधिक लोगों को बपतिस्मा दे रहा है।[२५७]

यूहन्ना के इस बयान से, "अवश्य है कि वह बढ़े और मैं घटूँ,"[२५८] हम यह समझ सकते हैं कि वह अपने दिल में यह नहीं मानता था कि वह यीशु के साथ एक ही भाग्य से बंधा है। यदि यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला और यीशु कंधे से कंधा मिलाकर चलते और उनके साझे में एक ही भाग्य था तो यह कैसे हो सकता है कि यीशु बढ़े और यूहन्ना घटे? वस्तुतः, यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले को यीशु का सबसे बड़ा प्रेरित होना चाहिये था और उसे उत्साह के साथ यीशु के सुसमाचार का प्रचार करना चाहिये था। परन्तु, अपनी दृष्टिहीनता के कारण वह अपने मिशन को पूरा नहीं कर सका। उसका अनमोल जीवन जिसको उसे यीशु की प्रस्तुति में व्यतीत करना चाहिये था, अंततः एक अपेक्षाकृत साधारण से मामले के कारण हाथ से निकल गया।[२५९]

जब तक यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले का मन परमेश्वर के साथ लगा हुआ था, उसने यीशु को मसीह मान कर उसके लिये गवाही दी। बाद में जब उसकी प्रेरणा जाती रही तब वह अपनी साधारण स्थिति में वापस आ गया, वह फिर से अबोध हो गया और उसकी अज्ञानता ने उसके अविश्वास को बढ़ावा दिया। अपने आप को एलिय्याह की वापसी मानने में असमर्थ होने के कारण, यूहन्ना, अन्य यहूदियों की तरह, विशेष करके उसके कैद होने के बाद यीशु को अविश्वास की नज़रों से देखने लगा। अब यीशु के हर शब्द और काम उसे अजीब और हैरान करने वाले लगने लगे। एक बार, यूहन्ना ने अपना संदेह मिटाने

---

[२५४] लूक १:७४-७५
[२५५] लूक ३:१५
[२५६] यूहन्ना १:१९-२०
[२५७] यूहन्ना ३:२५-२६
[२५८] यूहन्ना ३:३०
[२५९] मरकुस ६:१४-२९

के लिये यीशु के पास अपने चेलों को भेज कर पूछा, "क्या आने वाला तू ही है या हम किसी और की बाट जोहें"?[२६०] जब यीशु के सामने यूहन्ना का यह प्रश्न आया तो उसने क्रोध में आकर चेतावनी देते हुए उत्तर दिया, जाओ और यूहन्ना से कहो:

> "जो तुम सुनते हो और देखते हो, वह सब जाकर यूहन्ना से कह दो, अंधे देखते हैं, लंगड़े चलते फिरते हैं, कोढ़ी शुद्ध किए जाते हैं, बहरे सुनते हैं और मुर्दे जिलाए जाते हैं, और कंगालों को सुसमाचार सुनाया जाता है। और धन्य है वह जो मेरे कारण ठोकर न खाए।" —मत्ती ११:४-६

यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला गर्भ से ही यीशु की सेवा-टहल करने के लिये चुना गया था। उसने जंगल में एक कठिन तपस्वी जीवन बिताया था, उसे आने वाले मसीह के लिए रास्ता तैयार करने के लिए धर्म-सेवा का निर्माण करना था। जब यीशु ने अपनी सार्वजनिक धर्म-सेवा का काम शुरू किया था तब परमेश्वर ने औरों से पहले यूहन्ना को यीशु को पहचानने के लिये प्रेरित किया, ताकि वह उसकी परमेश्वर के पुत्र होने की गवाही दे। तब भी यूहन्ना ने स्वर्ग का दिया गया अनुग्रह यथायोग्य ग्रहण नहीं किया। इसलिए, यूहन्ना के संदेहजनक प्रश्न का उत्तर यीशु ने स्पष्ट रूप से नहीं दिया कि वह मसीह है, इसके बजाय उसने उसे घुमाकर जवाब दिया। अवश्य ही यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला यीशु के चमत्कार और चिह्नों के बारे में जानता होगा। इसके बावजूद, यह जताते हुए कि वह कैसे काम कर रहा है, यीशु ने उसे अस्पष्ट उत्तर दिया, इस आशा से कि यह उसकी सही पहचान करने के लिए उसे जागृति करें।

हमें समझना चाहिए कि जब यीशु ने कहा, "कंगालों को सुसमाचार प्रचार किया जा रहा है," वह यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले और यहूदी नेतृत्व के अविश्वास पर गहरा दु:ख व्यक्त कर रहा था। यीशु के लिये, यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला और जिन यहूदियों को विशेष करके तैयार किया गया था, वे धनवान लोग थे जिन पर परमेश्वर के प्रेम का बहुत बड़ा अनुग्रह था। परन्तु, जब उन सभी ने यीशु को अस्वीकार किया, तब वह गलील के समुद्र तट पर और सामरया के "गरीब" क्षेत्र के ऐसे लोगों की खोज में निकल पड़ा जो सुसमाचार सुनना चाहते थे। वे गरीब अशिक्षित मछवे, कर-संग्रहक और वेश्याएं थीं। शिष्य बनाने के लिये जैसे लोग यीशु चाहता था यह वैसे नहीं थे। चूँकि यीशु पृथ्वी पर स्वर्ग के राज्य की स्थापना करने के लिए आया था, उसे ऐसे नेता की आवश्यकता थी जो हजारों का मार्गदर्शन कर सकें न कि हज़ारों लोगों की जो एक नेता के पीछे चलने वाले हों। क्या उसने मंदिर के याजकों और लेखकों को पहले सुसमाचार प्रचार नहीं किया था? वह वहाँ कुशल और सक्षम लोगों की तलाश में गया था।

फिर भी, यीशु ने एक दृष्टान्त के द्वारा इशारा करते हुए कहा, क्योंकि जो अतिथि भोज के लिये आमंत्रित किए गये थे वे नहीं आए तो उसे सड़कों गलियों में घूमकर कंगालों, अपंग, अंधे और लंगड़ों को एकत्र करना पड़ा।[२६१] ऐसी दुखित स्थिति में उसने समाज के बिन बुलाए, निर्वासित लोगों को भोज प्रसादन प्रदान

---

[२६०] मत्ती ११:३

[२६१] लूक १४:१६-२४

किया, यीशु ने इस दु:ख को इन न्याय-युक्त शब्दों में व्यक्त किया: “धन्य है वह जो मेरे कारण ठोकर न खाए।”[२६२] यद्यपि, उन दिनों में यूहन्ना का बड़ा नाम था, फिर भी यीशु ने यूहन्ना के जीवन के लिये निर्णय लेते हुए उलटा बोल कर कहा, कि जो मेरी वजह से ठोकर का कारण बना है वह धन्य नहीं हो सकता चाहे वह कितना महान क्यों न हो। यूहन्ना ने यीशु के कारण ठोकर खाई और इस तरह वह अपना मिशन, अपना सारा जीवन भक्ति के साथ यीशु की सेवा में लगाने में विफल हो गया।

यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के चेले जब यीशु से प्रश्न पूछ कर चले गये, यीशु ने कहा, भविष्यवक्ताओं में यूहन्ना सबसे अधिक महान क्यों न रहा हो, वह परमेश्वर के दिये गये मिशन को पूरा करने में विफल हो गया है:

> मैं तुम से सच कहता हूँ कि जो स्त्रियों से जन्में हैं, उनमें से यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले से बड़ा कोई नहीं हुआ; पर जो स्वर्ग के राज्य में छोटे से छोटा है वह उससे बड़ा है। मत्ती ११.११

हर कोई जो स्वर्ग में है वह औरत का जन्म हुआ है और सांसारिक जीवन बिता चुका है। कोई सोचेगा चूँकि यूहन्ना औरतों से जन्म लेने वालों के बीच सबसे बड़ा है, तो वह स्वर्ग के राज्य में भी सबसे बड़ा होना चाहिए। यूहन्ना स्वर्ग के राज्य में सबसे कम क्यों है? अतीत के लम्बे समय में कई नबियों ने परोक्ष रूप से मसीह के लिए गवाही दी थी। यूहन्ना का मिशन उनसे उलटा था, उसे मसीह के लिये प्रत्यक्ष रूप से गवाही देना था। यदि भविष्यवक्ताओं का मसीह के लिये गवाही देना मुख्य ध्येय था, तो यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला निश्चित रूप से सबसे बड़ा भविष्यद्वक्ता था। फिर भी, मसीह की सेवा में भागी होने के ध्येय से, वह छोटों से छोटा गिना गया है। स्वर्ग के राज्य में सब को, चाहे वह कितना छोटा क्यों न हो, यह मालूम था कि यीशु मसीह है और उन सब ने श्रद्धा के साथ उसकी सेवा की। परन्तु यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला, जो दूसरों के अधिक करीब से मसीह की सेवा करने के लिये बुलाया गया था, यीशु से अलग हो गया और अपने रास्ते पर चला गया। इस तरह, यीशु के प्रति श्रद्धा-भक्ति की दृष्टि से देखने से, वह स्वर्ग के राज्य में छोटे से भी छोटा था।

यीशु ने आगे यह भी कहा, “यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के दिनों से अब तक स्वर्ग के राज्य में बलपूर्वक प्रवेश होता रहा है, और बलवान उस पर अधिकार करते हैं।”[२६३] यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला जन्म से पहले ही चुना गया था और उसने जंगल में कठिन तपस्वी जीवन व्यतीत किया था। यदि वह दिल से ईमानदारी के साथ यीशु की सेवा में भाग लेता तो, शर्तिया यीशु के मुख शिष्य की पदवी उसी के लिए आरक्षित रहती। चूँकि वह अपने मिशन यीशु का सेवक बनने में विफल हुआ, पतरस को, एक “सशक्त पुरुष” होने के नाते, मुख शिष्य का पद मिला। हम इस प्रकाशन से, “यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के दिनों से अब तक”, यह परिणाम निकाल सकते हैं, जैसा कि यीशु ने आगे के पद्य[२६४] में कहा, कि यह उपमा उसने आम लोगों के लिये नहीं परन्तु विशेष कर यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के लिये दी है। निष्कर्षत:

---

[२६२] मत्ती ११:६

[263] मत्ती ११:१२

[264] मत्ती ११:१६-१९

यीशु ने कहा, “ज्ञान अपने कामों से सच्चा ठहराया गया है।”[२६५] यदि यूहन्ना ने बुद्धिमानी से काम लिया होता तो वह यीशु को नहीं छोड़ता, और उसके काम हमेशा के लिए धर्म के काम से याद किए जाते। दुर्भाग्य से, वह मूर्ख था। उसने इज़राएली लोगों का यीशु के पास आने के रास्ते में बाधा डाली और साथ में अपने रास्ते में भी बाधक बना। इससे हम यह समझ सकते हैं कि यीशु की सूली पर मौत का मुख्य

कारण यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले की विफलता थी।

२.४ किस अर्थ से यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला एलिय्याह था

हम पहले यह सीख चुके हैं कि एलिय्याह का मिशन जिसे वह धरती पर अधूरा छोड़ गया था यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले को उत्तराधिकार में प्राप्त करना था और उसे पूरा करना था। जैसे कि बाईबल में दर्ज है, वह प्रभु के आने से पहले इस मिशन के साथ पैदा हुआ था, “वह एलिय्याह की आत्मा और सामर्थ्य में होकर उसके आगे, आगे चलेगा कि पितरों का मन बाल-बच्चों की ओर फेर दे, और आज्ञा न मानने वालों को धर्मियों की समझ पर लाए, और प्रभु के लिये एक योग्य प्रजा तैयार करे।”[२६६] इसलिए, मिशन की दृष्टि से देखने से यूहन्ना एलिय्याह का दूसरा आगमन था। इसके अतिरिक्त, आगे इस बारे में और अधिक विस्तार में चर्चा की जाएगी,[२६७] एलिय्याह वास्तव में आत्मा में लौटा था, और अपना मिशन, जिसमें वह, जब संसार में जीवित था स्वयं विफल हुआ था, पूरा करने के लिये यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले की सहायता कर रहा था। एलिय्याह, यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के शरीर के माध्यम से अपने मिशन को पूरा करने के लिए काम कर रहा था। इसलिए, उनके आम मिशन के संबंध से, यूहन्ना और एलिय्याह एक ही व्यक्ति के रूप में देखे जा सकते हैं।

२.५ बाईबल के प्रति हमारा रवैया

हमने सीखा है कि यीशु के संबंध में यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की अज्ञानता और अविश्वास यहूदी लोगों के अविश्वास का कारण बना, जिससे अंततः यीशु को क्रूस पर चढ़ाया गया। आज तक, किसी ने कभी भी इस स्वर्गीय रहस्य को उजागर नहीं किया है, क्योंकि हम विश्वास के आधार पर निर्विवाद बाईबल में पढ़ते आए हैं कि यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला एक महान भविष्यद्वक्ता था। यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के बारे में हमारी नई अंतर्दृष्टि सिखाती है कि हमें विश्वास के रूढ़िवादी दृष्टिकोण को, जिस की वजह से हमें पारंपरिक मान्यताओं और पारंपरिक सिद्धांतों पर प्रश्न करने से डर लगता है, दूर करना चाहिए। क्या यह समझना कि यूहन्ना वास्तव में अपने मिशन में विफल हुआ, जबकि वह सफल हुआ है, हमारी त्रुटि नहीं होगी? इसी प्रकार, यह विश्वास करना निश्चित रूप से गलत है कि यूहन्ना ने अपने मिशन को पूरा किया जबकि वास्तव में उसने पूरा नहीं किया। हमें आत्मा और सच्चाई दोनों में

---

[265] मत्ती ११:१९

[२६६] लूक १:१७

[२६७] प्रति-संदर्भ २.३.२

लगातार खोज करके सही विश्वास रखने का प्रयास करना चाहिए। यद्यपि यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के बारे में हमारी चर्चा बाईबल की जाँच पर आधारित है, वे जो आध्यात्मिक स्तर पर संवाद करने में सक्षम हैं, यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले की स्थिति समझ सकते हैं और पुष्टि कर सकते हैं कि यूहन्ना के बारे में उपरोक्त आकाशवाणी पूरी तरह से सही और सत्य है।

दिव्य नियम प्रतिपादन

भाग १

अध्याय ५

पुनरुत्थान

विषय सूची

अध्याय ५ पृष्ठ

पुनरुत्थान १४४

संभाग १ पुनरुत्थान १४६
१.१ जीवन और मृत्यु के बारे में बाईबल की धारणा १४६
१.२ पतन के कारण मृत्यु १४८
१.३ पुनरुत्थान का अर्थ १४९
१.४ पुनरुत्थान के कारण मनुष्यों में क्या बदलाव आते हैं १५०

संभाग २ पुनरुत्थान की दैवी योजना १५१
२.१ परमेश्वर किस प्रकार पुनरुत्थान का कार्य करता है? १५२
२.२ पृथ्वी पर मनुष्यों के पुनरुत्थान के लिये दैवी योजना १५२
२.२.१ पुनरुत्थान की नींव डालने की दैवी योजना १५२
२.२.२ गठन-चरण पुनरुत्थान की दैवी योजना १५३
२.२.३ विकास-चरण पुनरुत्थान की दैवी योजना १५३
२.२.४ निष्पत्ति-चरण पुनरुत्थान की दैवी योजना १५३
२.२.५ स्वर्ग का राज्य और वैकुंठ १५४
२.२.६ अंतिम दिनों में अद्भुत आत्मिक घटनाएं १५५
२.२.७ पहला पुनरुत्थान १५७
२.३ आत्माओं के लिये पुनरुत्थान की दैवी योजना १५८
२.३.१ वापसी पुनरुत्थान का अभिप्राय और विधि १५८
२.३.२ यहूदियों और ईसाई लोगों की आत्माओं का वापसी पुनरुत्थान १५९
२.३.२.१ विकास-चरण वापसी पुनरुत्थान १५९
२.३.२.२ निष्पत्ति-चरण वापसी पुनरुत्थान १६०
२.३.३ उन आत्माओं का वापसी पुनरुत्थान जो वैकुंठ के बाहर रहतीं है १६१
२.४ वापसी-पुनरुत्थान के नियम के प्रकाश में पुनर्जन्म के सिद्धांत की जाँच १६२

संभाग ३ वापसी-पुनरुत्थान के द्वारा धर्मों का एकीकरण १६४
३.१ वापसी पुनरुत्थान के द्वारा ईसाई धर्म का एकीकरण १६४
३.२ वापसी पुनरुत्थान के द्वारा दूसरे सब धर्मों का एकीकरण १६४
३.३ वापसी पुनरुत्थान के द्वारा धर्मनिरपेक्ष लोगों का एकीकरण १६५

पुनरुत्थान

यदि हम पवित्र शास्त्र की भविष्यवाणियों पर यथाशब्द विश्वास करें तो हमें यीशु के दूसरे आगमन के समय संतों के शरीर के साथ फिर से पुनर्जीवित होने की आशा भी करनी चाहिये। उनका शरीर जो, पृथ्वी में बहुत समय से दफन है और पूरी तरह से विघटित हो चला है, फिर से अपनी मूल अवस्था में पुनर्गठन किया जाना चाहिये।[२६८] एक तरफ, ये भविष्यवाणियाँ परमेश्वर का वचन हैं जिसे, विश्वासी होने के कारण हमें स्वीकार करना होगा। दूसरी ओर, हमारे ज्ञान के आधुनिक मानक को देखते हुए, यह हमें तर्कसंगत नहीं लगता। यह ईसाई धर्म के लिए बड़ी उलझन खड़ी करता है। इसलिए, यह आवश्यक है कि हम पुनरुत्थान का सही अर्थ स्पष्ट करें।

[२६८] १ थिस्सलुनिकियों ४:१६, मत्ती २७:५२

संभाग १

पुनरुत्थान

पुनरुत्थान का अर्थ है फिर से जी उठना। जी उठने का तात्पर्य हुआ कि हम मरे हुए थे। पुनरुत्थान का अर्थ पूर्ण रूप से समझने के लिये, हमें बाईबल में जीवन और मृत्यु की धारणाओं का स्पष्टीकरण करना होगा।

१.१ जीवन और मृत्यु के बारे में बाईबल की धारणा

जब यीशु के एक अनुयायी ने उससे पूछा, क्या वह अपने मृत पिता को दफनाने के लिए घर जा सकता है, तो यीशु ने कहा, "मरे हुओं को अपने मुर्दे गाड़ने दे।"[२६९] यीशु के इन शब्दों से साफ ज़ाहिर है कि बाईबल में जीवन और मृत्यु की दो अलग धारणाएं हैं। जीवन और मृत्यु की पहली अवधारणा भौतिक जीवन से संबंधित है। यहाँ, "मौत" का अर्थ हुआ भौतिक जीवन का अंत, जैसे कि उस शिष्य के मृतक पिता के मामले में कहा गया था जो दफनाया जाने वाला था। "जीवन" का अर्थ यहाँ भौतिक शरीर की वह स्थिति है जब जीवित देह शारीरिक कार्य करती है।

जीवन और मृत्यु की दूसरी अवधारणा से संबंधित वे लोग हैं जो जीवित थे और मृतक व्यक्ति को दफनाने के लिए एकत्र हुए थे, उनके लिये यीशु ने कहा वे "मृत हैं"। इन लोगों के लिये यीशु ने क्यों कहा कि वे मृत हैं, जो शरीर से जीवित और सक्रिय थे? इसका अर्थ यह है कि उन्होंने यीशु को अब तक स्वीकार नहीं किया था, इसलिये वे परमेश्वर के प्रेम से दूर थे और शैतान के प्रभुत्व के क्षेत्र में वास करते थे। मौत की यह दूसरी अवधारणा शारीरिक जीवन के अंत से संबंधित नहीं है। इसका अर्थ, परमेश्वर के प्रेम से दूर शैतान के प्रभुत्व के अधीन रहना हुआ। उसी तरह से जीवन की दूसरी अवधारणा परमेश्वर की इच्छा के अनुसार उसके अनंत प्रेम के प्रभुत्व में रहने की स्थिति का उल्लेख करती है। इसलिए, भले ही कोई व्यक्ति शरीर से जीवित हो, परन्तु यदि वह परमेश्वर के प्रभुत्व से अलग शैतान की दासता में है, तो वह मूल मानक के हिसाब से मृत है। इसका एक उदाहरण सरदीस की कलीसिया के अविश्वसनीय लोगों के बारे में प्रभु के न्याय के वचन से लिया जा सकता है: "तू जीवित तो कहलाता है, पर है मरा हुआ"।[२७०]

दूसरी तरफ, भले ही एक व्यक्ति का भौतिक जीवन समाप्त हो गया हो, फिर भी यदि उसकी आत्मा स्वर्ग में रहती है, जहाँ परमेश्वर के प्रेम का राज्य है, तो वह यथार्थतः जीवित है। जब यीशु ने कहा, "जो कोई मुझ पर विश्वास करता है वह यदि मर भी जाए तौभी जीएगा"[२७१], उसके कहने का अर्थ यह था, जो उस पर विश्वास करता है और परमेश्वर के प्रभुत्व में रहता है वह जीता है। उनके अपने भौतिक शरीर के मिट्टी में मिल जाने के बाद भी उनकी आत्माएं परमेश्वर के प्रभुत्व में रहकर जीवन का आनंद लेतीं

---

[२६९] लूक ९:६०
[२७०] प्रकाशितवाक्य ३:१
[२७१] यूहन्ना ११:२५

हैं। यीशु ने यह भी कहा, "और जो कोई जीवित है और मुझ पर विश्वास करता है वह अनन्तकाल तक न मरेगा।"[२७२] विश्वासी कभी नहीं मरेंगे, ऐसा कहने का अर्थ था कि जो यीशु पर अपने पार्थिव जीवन के दौरान विश्वास करते हैं उन्हें अनन्त जीवन, इस संसार में नहीं वरन्, आत्मा में, परमेश्वर के प्रेमालिंगन में मिलेगा। वे, दोनों, इस जीवन में और अगले जीवन में भी जीयेंगे। यीशु के यह शब्द हमें विश्वास दिलाते हैं कि शारीरिक जीवन की मृत्यु का हमारे अनन्त जीवन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

यीशु ने कहा, "जो कोई अपना प्राण बचाना चाहे वह उसे खोएगा, और जो कोई खोए वह उसे जीवित रखेगा।"[२७३] जो लोग अपने शरीर को जीवित रखने के लिये परमेश्वर की इच्छा का उल्लंघन करते हैं उनका शरीर जीवित होने पर भी मरा हुआ है। दूसरी ओर, जो अपना शरीर परमेश्वर की इच्छा के लिये बलिदान करते हैं, उनका शरीर भले ही दफन हुआ और सड़ गया हो, तो भी वे जीवित हैं। वे लोग आत्माओं के रूप में सर्वदा परमेश्वर के प्रेम में जीवित रहते हैं।

१.२ पतन के कारण मृत्यु

बाईबल से हमने मृत्यु की दो विभिन्न धारणाओं के बारे में सीखा है। दोनों में से कौन सी मौत पहले मानव पूर्वजों के पतन के कारण थी?

परमेश्वर ने मनुष्य ऐसा बनाया है कि वह बूढ़ा होकर वापस मिट्टी में मिल जाए; मनुष्य का पतन चाहे हुआ हो या नहीं उसके लिये शारीरिक मृत्यु निर्धारित की गई है। बाईबल के अनुसार आदम ९३० वर्ष की उम्र में मर गया, और उसका शरीर मिट्टी में मिल गया; परन्तु यह मौत पतन के कारण नहीं थी। सृष्टि के नियम के अनुसार, शरीर आत्मा का वस्त्र है। जैसे कोई अपने फटे-पुराने कपड़ों को उतार कर फेंक देता है, उसी तरह यह शरीर भी जब बूढ़ा और कमजोर हो जाता है तो उसे त्याग दिया जाता है। केवल आत्मा ही परलोक में प्रवेश करती है और सदा जीवित रहती है। कोई भी भौतिक वस्तु सदा तक बनी नहीं रहती। मनुष्य कोई अपवाद नहीं हैं; हमारे शरीर सदा तक नहीं रह सकते। यदि मनुष्य हमेशा के लिए शरीर में पृथ्वी पर रहते, तो फिर परमेश्वर ने हमारे अंतिम गंतव्य के रूप में परलोक क्यों बनाया? परलोक, जो आत्माओं के रहने का स्थान, पतन के बाद नहीं रचा गया था। बल्कि, यह मूल सृष्टि का हिस्सा है, जहाँ, जो लोग पृथ्वी पर रह कर सृष्टि का उद्देश्य पूरा करते हैं वह मृत्यु के बाद अनन्त जीवन का आनन्द लेते हैं।

लोग अधिकतर अपने सांसारिक जीवन से जुड़े होते हैं। पतन के कारण, वे इस तथ्य से अज्ञान होते हैं कि अपना शरीर छोड़ने के बाद उन्हें सुंदर और सनातन आत्मिक दुनिया में हमेशा के लिये रहना है। भौतिक जीवन से आत्मिक दुनिया में संक्रमण करना कमला का तितली में रूपांतर होने की तुलना से किया जा सकता है। यदि कमला में आत्म-जागरूकता होती, तो वह भी लोगों की तरह, जैसे लोग

---

[२७२] यूहन्ना ११:२६
[२७३] लूक १७:३३

सांसारिक जीवन से मोह रखते हैं, अपने सीमित अस्तित्व में पौधों की पत्तियों पर चढ़ने-उतरने में ही व्यस्त रहना चाहता। वह भी, शायद अपने कमला के अस्तित्व को समाप्त करने के लिए अनिच्छुक होता और इस बात से अनजान होता कि उसके लिये तितली के रूप में एक नए चरण में प्रवेश करना नियत है कि जहाँ वह सुगंधित फूलों के मीठे अमृत का भरपूर आनंद उठाएगा।

सांसारिक अस्तित्व और एक आत्मा के जीवन के बीच का रिश्ता कमला और तितली के संबंध जैसा है। इसके अतिरिक्त, यदि पतन न हुआ होता, तो सांसारिक लोग स्वाभाविक रूप से आत्माओं के साथ संबंध रखने में सक्षम होते, जिस प्रकार वे आपस में संबंध रखते हैं। वे यह जानते होते कि पृथ्वी पर मृत्यु अपने प्रियजनों से अंतिम प्रस्थान नहीं है। यदि लोगों को यह मालूम होता कि पृथ्वी पर पूर्णता प्राप्त करने, और प्राकृतिक मौत के पश्चात वे कितनी सुन्दर और ख़ुशहाल दुनिया में प्रवेश करने वाले हैं, तो वे उस दुनिया में प्रवेश करने के लिए बेसब्री से उस दिन की प्रतीक्षा करते होते।

चूँकि पतन शारीरिक जीवन के अंत का कारण नहीं था, हम यह वितर्क कर सकते हैं कि वह अन्य प्रकार की मौत लाया। आइए हम आगे इसकी की जाँच करें। परमेश्वर ने आदम और हव्वा से कहा जिस दिन वे अच्छाई और बुराई के वृक्ष के ज्ञान का फल खाएंगे वे मर जाएंगे।[२७४] चूँकि परमेश्वर ने उन्हें यह चेतावनी दी, तो फिर आदम और हव्वा के फल खाने के बाद उन्हें वास्तव में मरना चाहिये। परन्तु पतन के बाद आदम और हव्वा ने अपना सांसारिक जीवन जिया और बच्चे पैदा किए, जिनसे आज का भ्रष्ट मानव समाज बना है। इस तथ्य से हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि पतन की मौत का आशय शारीरिक जीवन का अंत नहीं है, किंतु परमेश्वर के अच्छे प्रभुत्व से नीचे शैतान के दुष्ट प्रभुत्व के अधीन होने से है। आएं हम बाईबल से और भी सहायता लेते हैं। यह लिखा है, “हम जानते हैं कि हम मृत्यु से पार होकर जीवन में पहुँचे हैं, क्योंकि हम भाइयों से प्रेम रखते हैं। जो प्रेम नहीं रखता वह मृत्यु की दशा में रहता है।”[२७५] यहाँ प्रेम का अर्थ है परमेश्वर का प्रेम। वह व्यक्ति जो अपने पड़ोसियों से परमेश्वर के प्रेम जैसा प्रेम नहीं रखता वह मर चुका है, यद्यपि वह पृथ्वी पर जीवित चलता-फिरता है। यह भी इन आयतों के भाव हैं, “क्योंकि पाप की मज़दूरी मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है।”[२७६] और “शरीर पर मन लगाना तो मृत्यु है, परन्तु आत्मा पर मन लगाना जीवन और शांति है।”[२७७]

१.३ पुनरुत्थान का अर्थ

बहुत से लोग अब तक मानते आएं हैं कि शारीरिक मौत का कारण पतन है। फलस्वरूप, वे बाईबल की पुनरुत्थान की अवधारणा का अर्थ शारीरिक मृत्यु से फिर जी उठना समझते हैं, और उनका

---

[२७४] उत्पत्ति २:१७

[२७५] १ यूहन्ना ३:१४

[२७६] रोमियों ६:२३

[२७७] रोमियों ८:६

यह विश्वास है कि मरे हुओं के जी उठने में उनकी विघटित देह का जैविक उत्थान सम्मिलित है। परन्तु, पहले मानव पूर्वजों के पतन का कारण इस प्रकार की मौत नहीं था। सृष्टि के नियम के अनुसार, मानव शरीर बूढ़ा हो जाने के बाद धूल में वापस मिल जाने के लिए बनाया गया था। विघटित शरीर उसकी मूल अवस्था में पुनर्स्थापित नहीं किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त, आत्मा के लिये यह आवश्यक नहीं है कि उसका भौतिक शरीर दूसरी देह अपनाए क्योंकि उसके लिये विशाल परलोक पड़ा है जहाँ वह अनन्त जीवन का आनन्द ले सकता है।

पुनरुत्थान, पुनरुद्धार की दैवी योजना के द्वारा पतन के कारण हुई मौत से फिर से जी उठने, यानी शैतान के प्रभुत्व के दायरे से निकल कर परमेश्वर के प्रत्यक्ष प्रभुत्व में पुनर्स्थापित होने की प्रक्रिया के रूप में वर्णित किया जा सकता है। तदनुसार, जब कभी हम अपने पापों का पश्चाताप करते हैं तो अच्छाई की एक उच्च अवस्था पर उठ जाते हैं, इस प्रकार हम उस कोटि तक पुनर्जीवित होते हैं।

बाईबल पुनरुत्थान की प्रक्रिया स्पष्ट करती है, “मैं तुम से सच, सच कहता हूँ कि जो मेरा वचन सुनकर मेरे भेजने वाले पर विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसका है”।[२७८] इस आयत के आधार पर, हम यह अभिपुष्टि कर सकते हैं कि पुनरुत्थान का अर्थ शैतान के पहलू से निकल कर परमेश्वर की गोद में वापस आना है। यह भी लिखा है, “और जैसे आदम में सब मरते हैं वैसे ही मसीह में सब जिलाए जाते हैं”।[२७९] इस आयत का अर्थ है कि आदम के पतन के परिणाम से हमें शैतान का वंश विरासत में मिला है, इसलिये हम मरे हुए हैं; परन्तु जब हम मसीह के द्वारा परमेश्वर के वंश में वापस आते हैं, तब हम पुनर्जीवित किए जाते हैं।

१.४ पुनरुत्थान के कारण मनुष्यों में क्या बदलाव आते हैं

परमेश्वर के वचन के अनुसार आदम और हव्वा की मृत्यु हो गई थी, जब उन्होंने अच्छे और बुरे के ज्ञान के पेड़ का फल खाया लिया था। फिर भी, उनमें कोई बाहरी महत्वपूर्ण परिवर्तन नहीं हुआ। अधिक से अधिक उनके चेहरे पर पतन होने के सदमे से महसूस होने वाली चिंता और भय के कारण क्षणिक परिवर्तन हुए होंगे। इसी प्रकार, पतन से पहले के राज्य में पुनरुत्थान किए जाने पर पतित लोगों में कोई महत्वपूर्ण बाहरी परिवर्तन होने की उम्मीद नहीं की जानी चाहिए। जिसे पवित्र आत्मा के माध्यम से पुनर्जन्म दिया गया है, उसे निश्चित रूप से पुनरुत्थान का अनुभव हुआ है। ऐसे वफादार व्यक्ति की तुलना एक डाकू से कर सकते हैं: एक को परमेश्वर के मंडल में पुनर्जन्म के स्तर पर पुनर्जीवित किया गया है, जबकि दूसरा आत्मिक रूप से मृत व्यक्ति है और नरक में जाने वाला है। फिर भी दोनों के बाहरी रूप-रंग में कोई अंतर देखने में नहीं आता है। जो यीशु के शिक्षण के अनुसार परमेश्वर में विश्वास करता है वह वास्तव में मृत्यु से जीवन में पुनर्जीवित होता है। हालांकि, यीशु को प्राप्त करने और पुनरुत्थान के माध्यम से जीवन प्राप्त करने से पहले या बाद में भौतिक शरीर में कोई स्पष्ट परिवर्तन नहीं होता है।

---

[२७८] यूहन्ना ५:२४
[२७९] कुरिंथियों १५:२२

यीशु वास्तव में वह इनसान था जिसने सृष्टि के उद्देश्य को पूरा किया था।[२८०] फिर भी, उसके बाहरी रंग-रूप के आधार पर, यीशु सामान्य लोगों से अलग नहीं दिखता था। यदि उसने अपने बाहरी व्यक्तित्व से अनजाने में दिव्यता प्रदर्शित की होती, तो उसके आस-पास के हर किसी ने निश्चित रूप से उस पर विश्वास किया होता और उसके पीछे चले होते।

जब किसी व्यक्ति का पुनरुत्थान होता है और वह परमेश्वर के शासन में प्रवेश करता है तो उसके दिल और आत्मा में परिवर्तन होते हैं। ये आंतरिक परिवर्तन शरीर को शुद्ध करते हैं, इसे शैतान के अड्डे से परमेश्वर के मंदिर में बदलते हैं। इस अर्थ में, हम कह सकते हैं कि हमारे भौतिक शरीर को भी पुनर्जीवित किया जाता है। हम इसकी तुलना किसी भवन से कर सकते हैं जिसे पहले बुरे उद्देश्यों के लिए इस्तेमाल किया जाता था और अब आराधना और प्रार्थना के स्थान के रूप में उपयोग किया जाता है। यद्यपि इसके बाहरी रूप-रंग में कोई बदलाव नहीं होता है, लेकिन अब इसे पवित्र इमारत के रूप में पवित्र किया गया है।

[२८०] प्रति-संदर्भ—ख्रीस्त-बोध २.२

संभाग २

पुनरुत्थान की दैवी योजना

२.१ परमेश्वर किस प्रकार पुनरुत्थान का कार्य करता है?

पुनरुत्थान का अर्थ है, वह प्रक्रिया जिसके माध्यम से पतन के बाद लोग परमेश्वर की आकांक्षित इच्छा के अनुसार उनकी मूल अवस्था में पुनर्स्थापित किए जाते हैं। इस प्रकार, पुनरुत्थान की दैवी योजना का अर्थ पुनरुद्धार की दैवी योजना है। चूँकि पुनरुद्धार की दैवी योजना परमेश्वर का पुनः निर्माण का कार्य है इसलिये पुनरुत्थान भी पुनः निर्माण का कार्य है। इस प्रकार, पुनरुत्थान की दैवी योजना सृष्टि के नियम के अनुसार, निम्न लिखित तरीके से कार्य करती है।

सबसे पहले, पुनरुत्थान के इतिहास में, जिन्हें यह मिशन सौंपे गए थे उन लोगों में से बहुतों ने अत्यंत ईमानदारी और विश्वास के साथ परमेश्वर की इच्छा को साकार करने की कोशिश की। यद्यपि, उन्होंने पूरी तरह से अपने दायित्व को पूरा नहीं भी किया हो, तो भी उनकी भक्ति के आधार पर उन्होंने उस नींव को और बढ़ाया जिस पर आने वाली पीढ़ी के लोग परमेश्वर के साथ दिली रिश्ता स्थापित कर सकें। पुनरुद्धार की दैवी योजना में हम इस नींव को *युग का अनुग्रह* कहते हैं। जो भविष्यद्वक्ता, संत और धर्मी लोग हम से पहले आए थे उनके द्वारा डाली गई हार्दिक नींव से अधिक अनुपात में युग के अनुग्रह में वृद्धि हुई है। इस प्रकार पुनरुत्थान युग के अनुग्रह के आधार चलाया गया है।

दूसरा, सृष्टि के नियम के अनुसार मनुष्य की रचना करना और उसको वचन देना परमेश्वर की ज़िम्मेदारी है, जबकि उस पर विश्वास करना और उसके अनुसार चलकर पूर्णता तक पहुंचना मनुष्य के हिस्से की ज़िम्मेदारी है। उसी तरह, पुनरुत्थान की दैवी योजना का प्रबंध करना, हमें वचन देना और हमारा मार्गदर्शन करना परमेश्वर की ज़िम्मेदारी है, जबकि दैवी योजना को पूरा करने के लिये उस पर विश्वास करना और उसका अनुशीलन करना हमारी ज़िम्मेवारी है।

तीसरा, सृष्टि के नियम के अनुसार मनुष्य की आत्मा केवल शरीर के माध्यम से ही पूर्णता प्राप्त करती है। उसी तरह, पुनरुत्थान की दैवी योजना में आत्मा का पुनर्जागरण केवल सांसारिक जीवन के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है।

चौथा, सृष्टि के नियम के अनुसार मनुष्य विकास काल के तीन क्रमवार चरण के द्वारा ही पूर्णता तक पहुँचता है। इसलिए, पतित लोगों के लिये पुनरुत्थान की दैवी योजना भी तीन क्रमिक चरणों के माध्यम से ही पूरी की जाती है, जो पुनरुद्धार की दैवी योजना में तीन युगों के रूप में प्रगट होतीं हैं।

२.२ पृथ्वी पर मनुष्यों के पुनरुत्थान के लिये दैवी योजना

२.२.१ पुनरुत्थान की नींव डालने की दैवी योजना

परमेश्वर ने आदम के परिवार से पतित मानव जाति के पुनरुत्थान की दैवी योजना आरंभ की। परन्तु, यह दैवी योजना विलंबित हुई, क्योंकि जिन लोगों को परमेश्वर की इच्छा पूरी करने की ज़िम्मेदारी

सौंपी गई थी उन्होंने अपना उत्तरदायित्व पूर्ण नहीं किया। बाईबल के दो हज़ार वर्ष पश्चात, परमेश्वर ने अब्राहम को चुना जो विश्वास का पिता माना गया, और उसके द्वारा परमेश्वर की इच्छा पूर्ण होने लगी। फलस्वरूप, आदम से अब्राहम तक दो हज़ार वर्ष में वह नींव तैयार हुई जिस पर अगले युग में परमेश्वर अपनी पुनरुत्थान की दैवी योजना आरंभ कर सका। इस कारण से, हम इस अवधि को पुनरुत्थान की नींव डालने का युग कह सकते हैं।

२.२.२ गठन-चरण पुनरुत्थान की दैवी योजना

अब्राहम से यीशु तक दो हजार वर्षों के दौरान, परमेश्वर ने लोगों को पुनरुत्थान के गठन-चरण तक उठाने का काम किया। इसलिए, इस युग को पुनरुत्थान की गठन-चरण की दैवी योजना कहा जा सकता है। इस युग के दौरान पृथ्वी पर रहने वाले सब लोग परमेश्वर के गठन-चरण पुनरुत्थान के कार्य के आधार पर युग का अनुग्रह प्राप्त कर सकते थे। इस युग में, परमेश्वर ने पुराने-नियम का विधान दिया। उस पर विश्वास करके और उस का अनुकरण करके, लोग अपनी ज़िम्मेदारी को पूरा कर सकते थे और परमेश्वर के सामने धर्मी ठहर सकते थे। इसलिए, यह युग कर्म के द्वारा धर्मी ठहराए जाने का युग कहा गया है। इस युग के लोग जो अपने दैनिक जीवन में विधान का अनुसरण करते थे आत्मा में गठन-चरण में पुनर्जीवित किए गये और प्रारूप-आत्मा बन गये। मृत्यु के बाद, जिन लोगों ने पृथ्वी पर रहते समय प्रारूप-आत्मा का स्तर प्राप्त कर लिया था, वे आत्मा लोक के प्रारूप-आत्मा-स्तर में रहने लगे।

२.२.३ विकास-चरण पुनरुत्थान की दैवी योजना

यीशु के सूली पर चढ़ाये जाने के कारण, पुनरुत्थान का काम अधूरा रह गया था, और उसका पूरा होना यीशु की वापसी के समय तक विलंबित हो गया था। तब से दो हज़ार वर्ष प्रवर्धन का समय रहा है, जिसके दौरान परमेश्वर ने अपनी दैवी योजना में लोगों को आत्मिक मुक्ति के द्वारा विकास-चरण तक पुनर्जीवित करने का कार्य किया। इसलिए, यह दौर विकास-चरण पुनरुत्थान की दैवी योजना का युग कहा जा सकता है। वह सब लोग जो इस काल में रह चुके हैं परमेश्वर के विकास-चरण पुनरुत्थान के कार्य के आधार पर युग का अनुग्रह प्राप्त कर सकते हैं। इस युग में, लोगों को परमेश्वर के दिये गए नए नियम के वचन पर विश्वास करना है ताकि वे दैवी योजना में अपनी ज़िम्मेदारी पूरी करके परमेश्वर के सामने धर्मी ठहरें। इसलिये, इस काल को विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराए जाने का युग कहते हैं।

जो लोग इस युग में रहते हैं वे अपने सांसारिक जीवन के दौरान सुसमाचार पर विश्वास करके आत्मा में पुनर्जीवित किए जा सकते हैं। विकास-चरण तक पुनर्जीवित किए जाने पर वे जीव-आत्मा बन सकते हैं। उनकी मृत्यु के बाद, वे जो अपने पृथ्वी के जीवन में जीव-आत्मा बने हैं वैकुंठ में प्रवेश करते हैं और वहाँ रहते हैं।

२.२.४ निष्पत्ति-चरण पुनरुत्थान की दैवी योजना

वह काल, जिसमें वापस लौटने वाले मसीह के द्वारा लोगों का आत्मिक और शारीरिक दोनों रूप से पुनरुत्थान होगा और पुनरुत्थान की दैवी योजना पूरी होगी, पुनरुत्थान की दैवी योजना का निष्पत्ति-चरण का युग कहा जाता है। वह सब लोग जो इस युग के दौरान रहे हैं परमेश्वर के निष्पत्ति-चरण पुनरुत्थान के कार्य के आधार पर युग का अनुग्रह प्राप्त करते हैं। मसीह अपने दूसरे आगमन पर नया सत्य लाता है जिसके द्वारा वह पुराने नियम और नए नियम की प्रतिज्ञाओं को पूरा करता है, यह परिपूरित नियम कहा जा सकता है।[२८१] इस सत्य पर विश्वास करके, लोगों को पृथ्वी पर प्रभु की सेवा करनी चाहिये, ताकि वे दैवी योजना के लिये अपनी ज़िम्मेदारी पूरी करें और परमेश्वर के सामने धर्मी ठहराए जाएं। इसलिए, यह काल सेवा द्वारा धर्मी ठहराए जाने का युग कहा जाता है। विश्वास करने से और प्रभु की सेवा में अपने आप को उसके काम के लिये समर्पित करने से, इस दौर के लोग पूरी तरह से पुनर्जीवित होते हैं, और दिव्य-आत्मा बन जाते हैं, और पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य में रहते हैं। जब वे अपना भौतिक शरीर त्यागते हैं, तब आत्मा के रूप में वे स्वर्ग में प्रवेश करके स्वर्ग के राज्य में रहते हैं, जो स्वर्गलोक का दिव्य-आत्मा का स्तर है।

२.२.५ *स्वर्ग का राज्य और वैकुंठ*

कुछ ईसाई लोग, नियम की पूरी समझ की कमी के कारण, स्वर्ग के राज्य और वैकुंठ की संकल्पना को स्पष्ट रूप से नहीं समझ सकते हैं। यदि यीशु ने मसीह के रूप में पृथ्वी पर अपना मिशन पूरा किया होता, तो उसके दिनों ही में पृथ्वी पर स्वर्ग का राज्य स्थापित हो जाता। उन्हीं दिनों में स्वर्ग में भी स्वर्ग का राज्य स्थापित हो जाता, तब पृथ्वी पर स्वर्ग के राज्य में रहने वाले आदर्श चरित्र के लोग दिव्य-आत्माओं के रूप में आत्मालोक में पारित हो जाते। परन्तु, चूँकि यीशु सूली पर मरा गया, इसलिये पृथ्वी पर स्वर्ग का राज्य स्थापित नहीं हो सका। इसलिये पृथ्वी पर ऐसे लोग जिन्होंने दिव्य-आत्मा का स्तर प्राप्त लिया हो कभी देखने में नहीं आए। आत्मा-लोक में कभी कोई भी स्वर्ग के राज्य का नागरिक नहीं बना सका, जो दिव्य-आत्माओं के धाम के रूप में बनाया गया था। इसलिए, स्वर्ग में स्वर्ग का राज्य खाली और अधूरा रहा है।

तो फिर यीशु ने ऐसा क्यों कहा कि जो कोई उस पर विश्वास करेगा वह स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करेगा? उसका पृथ्वी पर आने का मूल प्रयोजन स्वर्ग के राज्य की स्थापना करना था। परन्तु, इससे पहले कि वह स्वर्ग का राज्य स्थापित करता लोगों के अविश्वास के कारण यीशु क्रूस पर मरा गया। यीशु ने उस चोर से जो उसके दाईं ओर सूली पर चढ़ाया गया था, वादा किया कि वह उसके साथ वैकुंठ में प्रवेश करेगा।[२८२] वह चोर केवल एक ही व्यक्ति था जिसने अंत में यीशु पर विश्वास किया था जबकि बाकी सब ने उसे त्याग दिया था। जब तक यीशु मसीह को अपना मिशन को पूरा करने की उम्मीद थी, उसने यह प्रचार किया ताकि लोग स्वर्ग के राज्य में प्रवेश कर सकें। परलोक में वैकुंठ उन आत्माओं के लिये है

---

[२८१] अंतिम दिन संबंधी उपदेश ५.१

[२८२] लूक २३:४३

जिन्होंने अपने सांसारिक जीवन के दौरान में यीशु पर विश्वास करके दिव्य-आत्मा का स्तर प्राप्त किया है। वहाँ वे उस दिन तक प्रतीक्षा में रहतीं हैं जब तक स्वर्ग के राज्य का द्वार खुल नहीं जाता।

२.२.६ *अंतिम दिनों में अद्भुत आत्मिक घटनाएं*

आदम और हव्वा का पतन विकास-चरण के शिखर पर हुआ। वर्तमान समय में मनुष्य, पुराने और नए नियम के युगों से पारित होकर पुनरुद्धार की दैवी योजना के द्वारा विकास-चरण के शीर्ष तक उठाए जा रहे हैं। अंतिम दिन वह समय है जिसमें लोग उस आत्मिक स्तर पर पहुँचते हैं, जिस स्तर पर पहले पूर्वज पतन से पहले पहुँचे गए थे। आज कल के दिन भी अंतिम दिन होने की वजह से ऐसा समय है कि जब सारी दुनिया में लोग इस स्तर तक पहुँच रहे हैं। जिस तरह से आदम और हव्वा पतन से पहले परमेश्वर के साथ सीधे बातचीत करने में सक्षम थे उसी तरह, आज पृथ्वी पर बहुत से लोग आत्मिक दुनिया से संवाद करते हैं। यह भविष्यद्वाणी, कि "अंतिम दिनों में ऐसा होगा कि मैं अपना आत्मा सब मनुष्यों पर उँडेलूँगा, और तुम्हारे बेटे और तुम्हारी बेटियाँ भविष्यद्वाणी करेंगी, और तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे और तुम्हारे पुरनिए स्वप्न देखेंगे,"[२८३] यह नियम पर आधारित इस अंतर्दृष्टि से समझाया जा सकता है।

अंतिम के दिनों में बहुत से लोगों को ऐसे दर्शन प्राप्त होंगे, कि "तुम प्रभु हो"। ऐसे समय बहुधा, लोग यह समझ कर गुमराह हो जाएंगे कि वे मसीह का दूसरा आगमन हैं। तो फिर वे सही पथ से क्यों भटकते हैं?

मनुष्य की सृष्टि के बाद, परमेश्वर ने उन्हें विश्व पर राज्य करने का आदेश दिया था।[२८४] परन्तु पतन के कारण, वे इस वरदान को पूरा करने में असमर्थ रहे। जब पतित लोग पुनरुद्धार की दैवी योजना के माध्यम से आध्यात्मिक रूप से विकास-चरण के शिखर तक बहाल किए जाते हैं, वे आदम और हव्वा के पतन से पहले के तुलनीय हार्दिक स्तर तक उठाए जाते हैं। परमेश्वर कुछ लोगों को, जो इस स्तर पर हैं दर्शन देता है कि वे प्रभु हैं, इस तात्पर्य से कि उन्हें यह मान्यता मिले कि वे प्रौढ़ता के ऐसे स्तर पर पहुँच गए हैं जिस पर परमेश्वर ने उन्हें आरम्भ में विश्व पर राज्य करने का आशीर्वाद दिया गया था।

अंतिम दिनों में उन विश्वासी लोगों को जिन की श्रद्धालु आस्था उन्हें इस प्रेरणा को, कि वे "प्रभु" हैं, प्राप्त करने का अधिकार देती है, वे यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले की समान स्थिति में खड़े होते हैं। यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला यीशु के लिये रास्ता तैयार करने का मिशन लेकर आया था।[२८५] उसी तरह, इन निष्ठावान लोगों को मसीह के दूसरे आगम में, उनके अपने विशेष क्षेत्रों में, उसका रास्ता तैयार करने की जिम्मेदारी दी गई है। चूंकि उन्हें, अपने संबंधित क्षेत्रों में परमेश्वर के प्रतिनिधि के रूप में कार्य करना है,

---

[२८३] प्रेरितों २:१७

[२८४] उत्पत्ति १:२८

[२८५] यूहन्ना १:२३

इसलिए परमेश्वर उन्हें ऐसा दर्शन देता है कि वे प्रभु हैं।

जब किसी के पास आध्यात्मिक संवाद की प्रतिभा होती है और उसे यह दर्शन मिलता है कि वह प्रभु है, तो उसे इस घटना को नियम की शिक्षाओं के द्वारा समझना चाहिए। उसे गलत तरीके से उपयोग नहीं करना चाहिए, खुद को दूसरे आगमन पर मसीह समझ लेने की भूल नहीं करनी चाहिये। इस कारण से बाईबल में ऐसी भविष्यवाणियाँ हैं कि अंतिम दिनों में बहुत से मसीह-विरोधी निकलेंगे।[२८६]

आत्मिक बीचौलिये, बहुधा अस्तव्यस्त हो जाते हैं और आपस में जद्दोजहद करने लगते हैं, चूँकि वे आत्मालोक के अलग-अलग स्तर से बात-चीत करते हैं इसलिये उनके प्रकटीकरण की अंतर्वस्तु भिन्न होती है।[२८७] हालाँकि, आध्यात्मिक रूप से सचेत लोग एक ही आत्मालोक से संपर्क करते हैं, परन्तु चूँकि उनकी अपनी परिस्थितियाँ और स्थिति भिन्न होती हैं, और उनके चरित्र, बुद्धि और आध्यात्मिकता विभिन्न स्तरों पर होती हैं, इसलिये वे आत्मालोक को अलग-अलग तरह से समझते हैं। यह मतभेद उनमें संघर्ष को जन्म देते हैं।

जो लोग पुनरुद्धार की दैवी योजना में योगदान करते हैं वे दैवी योजना के केवल एक ही भाग के लिये जिम्मेदार होते हैं। उनका ध्यान केवल परमेश्वर से लंब संबंध में रहने के कारण, वे बहुधा अन्य आध्यात्मिक व्यक्तियों के साथ उचित क्षैतिज संबंधों के प्रति संवेदनशील नहीं होते। इसलिये उनके मध्य संघर्ष पैदा होता है, क्योंकि प्रत्येक यही सोचता है कि परमेश्वर की जो इच्छा वह पूरी कर रहा है वह दूसरों की सेवा से फर्क है। उनका संघर्ष और भी बढ़ जाता है जब उनमें प्रत्येक जो प्रकटीकरण प्राप्त करते हैं, यह सोचते हैं कि उसका प्रकटीकरण सबसे अच्छा है। फिर भी पूरी दैवी-योजना के अन्दर परमेश्वर प्रत्येक को अपने-अपने विशेष मिशन में अधिक से अधिक अच्छा करने के लिए प्रोत्साहन प्रदान देता है। परमेश्वर ऐसे प्रकटीकरण इसलिये भी देता है, क्योंकि प्रत्येक अपने मिशन से संबंधित क्षेत्र के लिये सब से अधिक योग्य होता है।

इसके अतिरिक्त, जब आस्था पूर्ण भक्त लोग आत्मिक रूप से चैतन्य हो जाते हैं और आदम और हव्वा के पतन से पहले के दिली स्तर के बराबर तक पहुँचते हैं, तब उन्हें एक ऐसे परीक्षण का सामना करना होता है जिस प्रकार के परीक्षण में आदम और हव्वा प्रबल होने में विफल हुए थे। इसमें यदि वे सावधान नहीं रहे, तो वे पतन के जैसी गलती कर सकते हैं। नियम की समझ के बिना इस प्रलोभन पर काबू पाना बेहद मुश्किल है। खेद की बात यह है कि बहुत से धार्मिक लोग, ऐसे परीक्षण पर काबू पाने में विफल होने के कारण वर्षों की भक्ति और श्रम के माध्यम से प्राप्त की हुई उपलब्धियों को एक क्षण में खो बैठते हैं।

आध्यात्मिक प्रतिभा से संपन्न लोग इस परेशानी का समाधान कैसे कर सकते हैं? पुनरुद्धार की दैवी योजना को थोड़ी अवधि में पूरा करने के लिए, परमेश्वर कई व्यक्तियों को अलग-अलग मिशन प्रदान करता है और प्रत्येक के साथ स्वतंत्र रूप से संबंध रखता है। इसलिये आध्यात्मिक रूप से भावुक

---

[२८६] १यूहन्ना २:१८

[२८७] १ कुरिंथियों १५:४१

लोगों के बीच संघर्ष होना वस्तुतः अनिवार्य है। हालांकि, इतिहास के अंत में, परमेश्वर उन्हें नया सत्य प्रदान करेगा। नया सत्य उन्हें समझने में मदद करेगा कि यह अद्वितीय मिशन प्रत्येक व्यक्ति को परमेश्वर के एक ही परम उद्देश्य की ख़ातिर सौंपा गया है। यह उन्हें एक दूसरे के साथ सहयोग और एकता से पुनरुद्धार की दैवी योजना के अधिक बड़े उद्देश्य को पूरा करने के लिए काम करने में मार्गदर्शन करेगा। इस युग में, आध्यात्मिक प्रतिभा वाले लोगों को अपनी ज़िद और अनुरोध, कि वे ही अकेले परमेश्वर की इच्छा पूरी कर रहे हैं बंद करना चाहिये। उन्हें सत्य के अधिक उच्च और व्यापक वचन की खोज करनी चाहिये जो उन्हें सही ढंग से अपनी स्थिति और दैवी मिशन का भाव समझने में मदद कर सके। तब ही वे अपने भ्रम को, जो उनके अपने क्षैतिज संघर्ष के कारण हुआ था, दूर करने में सक्षम होंगे। केवल तब ही प्रत्येक अपने विश्वास के अलग-अलग पथ के उद्देश्य को पूरा कर सकेंगे और अच्छे फलों को अंजाम दे सकेंगे।

२.२.७ *पहला पुनरुत्थान*

बाईबल में "पहले पुनरुत्थान" के बारे में जो कहा गया है वह दैवी योजना के इतिहास में पहली बार बहाली की पूर्ति का वर्णन है। यह मसीह के दूसरे आगमन पर पूरा किया जाएगा। वह लोगों को उनके मूल पाप से शुद्ध करेगा और प्रत्येक को उनकी मूल अवस्था में पुनर्स्थापित करके उन्हें सृष्टि के उद्देश्य को सक्षम करने में मदद करेगा।

सभी ईसाई लोग यह आशा करते हैं कि वे पहले पुनरुत्थान में भाग ले सकें। परन्तु, वास्तव में कौन भाग ले सकेगा? यह वे लोग हैं जो मसीह के दूसरे आगम में सर्वप्रथम मसीह पर विश्वास करेंगे, और उसकी सेवा करेंगे। वे पूरे विश्व की क्षतिपूर्ति की सभी शर्तें पूरी करने में और पुनरुद्धार की दैवी योजना को पूरा करने में उसकी सहायता करेंगे। इस प्रक्रिया से, उनके मूल पाप हटाए जाने में, दिव्य आत्मा बनने और सृष्टि के उद्देश्य को पूरा करने में वे प्रथम होंगे।

आगे, आइए हम बाईबल में उल्लिखित १४४,०००[२८८] की जाँच करें। मसीह को उसके दूसरे आगमन में पुनरुद्धार की दैवी योजना को पूरी करने के लिये एक विशेष संख्या में लोगों की खोज करनी होगी जो क्षतिपूर्ति द्वारा उन सभी संत लोगों के मिशनों को बहाल करने में, अपने अत्यधिक प्रयासों के बावजूद भी शैतान के शिकार बन गए और अपनी ज़िम्मेदारियों को पूरा करने में विफल हुए। उसे अपने जीवनकाल के दौरान इन लोगों को इकट्ठा करना होगा, और शैतान की दुनिया पर विजय की नींव डालनी होगी। उन संत लोगों की संख्या जिन्हें मसीह को अपने दूसरे आगमन पर इस कार्य को पूरा करने के लिए इकट्ठा करना चाहिए उनकी कुल संख्या १४४,००० है।

परमेश्वर की पुनरुद्धार की दैवी योजना के दौरान, याकूब के बारह बच्चे थे जिनके साथ उसने परिवार की बहाली के मिशन का बीड़ा उठाया। मूसा ने बारह गोत्रों के साथ राष्ट्र की बहाली के मिशन को पूरा करने का बीड़ा उठाया। यदि यह बारह गोत्र एक बार और बारह जनजातियों के नमूने पर गुणित

[२८८] प्रकाशितवाक्य १४:१-४, ७:४

होते, तो वे कुल १४४ हो जाते। यीशु, जो दुनिया को बहाल करने के मिशन से आया था, उसने बारह चेले बनाए ताकि वह क्षतिपूर्ति के माध्यम से, दोनों आत्मिक और शारीरिक रूप से संख्या १४४ पुनःस्थापित कर सके। परन्तु क्रूस पर चढ़ाए जाने के कारण यीशु इसे केवल आत्मिक रूप से पुनः स्थापित करने में सक्षम हुआ। याकूब के बारह लड़के हुए थे, ताकि वह क्षतिपूर्ति के माध्यम से अपने जीवनकाल में नूंह तक बारह पीढ़ियों की लंब मियाद को बहाल करे, परंतु उसपर शैतान ने दावा कर लिया।[२८९] उसी तरह, मसीह जिसने १४४ जनजातियों का आत्मिक नमूना स्थापित किया था, उसे अपने दूसरे आगमन पर दोनों आत्मिक और शारीरिक रूप से, पहले आगमन से लेकर अब तक का लम्बा कार्यकाल, अपने जीवनकाल ही में क्षतिपूर्ति द्वारा स्थापित करना होगा। यह पूरा करने के लिए, उसे विश्वासियों की अपेक्षित संख्या, जो १४४ संख्या के समतुल्य हो प्राप्त करनी चाहिये।

२.३ आत्माओं के लिये पुनरुत्थान की दैवी योजना

२.३.१ वापसी पुनरुत्थान का अभिप्राय और विधि

सृष्टि के नियम के अनुसार, मनुष्य की आत्मा की वृद्धि के लिये दो प्रकार के पुष्टिकारक पदार्थों की आवश्यकता होती है: जीवन-तत्व जो परमेश्वर से प्राप्त होते हैं और प्राण-तत्व जो शरीर और आत्म के आदान-प्रदान क्रिया के माध्यम से प्राप्त होते हैं। शरीर के बिना आत्माएं न तो आगे बढ़ सकतीं हैं और न ही उनका पुनरुत्थान हो सकता है। फलस्वरूप, जिन लोगों का निधन उनके सांसारिक जीवन के दौरान पूर्णता तक पहुँचने से पहले हो गया था, उन आत्माओं का पुनरुत्थान, पृथ्वी पर वापस लौट कर सांसारिक लोगों के साथ सहयोग करके अपनी अधूरी जिम्मेदारी को पूरा करने से ही हो सकता है। पृथ्वी पर रहने वाले सह-विश्वासी लोगों के मिशन को पूरा करने के लिए उनकी सहायता करने से आत्माएं अपने मिशन को भी उसी समय में पूरा कर सकतीं हैं। इस का अर्थ इस आयत में, जिसमें यह भविष्यद्वाणी की गई थी कि अंतिम दिनों में “देखो, प्रभु अपने लाखों-पवित्र लोगों के साथ आया”, निहित है।[२९०] इस प्रक्रिया को हम *वापसी-पुनरुत्थान* कहते हैं।

आत्माएं पृथ्वी पर परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने में लोगों की किस तरह सहायता करतीं हैं? जब लोग प्रार्थना या अन्य आध्यात्मिक गतिविधि के माध्यम से आत्माओं के लिए ग्रहणशील होते हैं, तो आत्माएं उन पर उतरतीं हैं और लोगों की आत्माओं के साथ मिलकर काम करतीं हैं। आत्माएं विभिन्न कार्य करतीं हैं। उदाहरण की तौर पर, वे सांसारिक लोगों में आत्मिक दान उंडेलतीं हैं और रोगों को चंगा करने की शक्ति देतीं हैं। वे लोगों को समाधि की अवस्था में प्रवेश करने और आत्मा-लोक की वास्तविकताओं का अनुभव करने में लोगों की सहायता करतीं हैं। वे लोगों को प्रकटीकरण और भविष्यद्वाणी करने का दान देतीं हैं। वे लोगों को गहरी प्रेरणा भी दे सकतीं हैं। इन सब विभिन्न कार्यों में,

---

[२८९] प्रति-संदर्भ--काल २.२

[२९०] यहूदा की पत्री जूड १४

आत्माएं पवित्र आत्मा के लिये काम करती है और पृथ्वी पर परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने के लिए लोगों का मार्गदर्शन करतीं हैं।

२.३.२ *यहूदियों और ईसाई लोगों की आत्माओं का वापसी-पुनरुत्थान*

२.३.२.१ विकास-चरण वापसी-पुनरुत्थान

जिन लोगों की आत्माओं ने मूसा की व्यवस्था का पालन किया और पुराने नियम के युग के दौरान पृथ्वी पर अपने जीवन में सच्चाई से परमेश्वर की उपासना की वह आत्मालोक में प्रारूप-आत्मा के स्तर पर रहने लगीं। यीशु के आगमन के बाद, यह सब आत्माएं पृथ्वी पर लौट कर वापस आईं और पृथ्वी पर परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने के लिए उन्होंने विश्वासियों की सहायता की। इस प्रकार लोगों को जीव-आत्मा का स्तर प्राप्त करने में उनकी सहायता करने से उन्होंने भी समान लाभ प्राप्त किया, अर्थात्, वे जीव-आत्मा बन गये और उन्होंने वैकुंठ में प्रवेश किया। इस व्यवस्था को हम विकास-चरण वापसी-पुनरुत्थान कहते हैं।

आईये हम बाईबल से कुछ उदाहरण लेते हैं। चूंकि एलिय्याह आत्मा के रूप में यीशु और उसके चेलों को दिखाई दिया था,[२९१] इससे साफ स्पष्ट होता है कि एलिय्याह अभी भी आत्मा-लोक में रहता है। फिर भी यीशु ने यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले को जो पृथ्वी पर रहता था[२९२] एलिय्याह के रूप में उल्लिखित किया। यीशु ने उनके आम मिशन के संबंध में उसे एलिय्याह कहा, क्योंकि यूहन्ना का शरीर एलिय्याह के शरीर के रूप में काम कर रहा था। एलिय्याह अपने सांसारिक जीवन के दौरान जो मिशन अधूरा छोड़ गया था उसे पूरा करने के लिये उसकी आत्मा यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले पर उसकी सहायता करने के लिये उतरी। यह एलिय्याह का वापसी-पुनरुत्थान था।

बाईबल में यह अभिलिखित है, कि जब क्रूस पर यीशु की मृत्यु हुई, तब बहुत से संतों के शव उनके मकबरे से निकल कर से जी उठे।[२९३] इस आयत का अर्थ यह नहीं है कि इन संतों का सड़ा हुआ शरीर फिर से पुनर्जीवित होकर उसी शरीर में उठ कर खड़ा हो गया। बल्कि, यह घटना उनके आध्यात्मिक वापसी-पुनरुत्थान का वर्णन करती है। आस्थावान यहूदियों की आत्माएं आत्मा-लोक के प्रारूप-आत्मा स्तर से, जहाँ वह रहतीं थीं, उतर कर पृथ्वी पर आईं। वे विश्वासियों की मदद करने के लिये पृथ्वी पर लौट कर आईं, इन आत्माओं को यीशु पर विश्वास करके क्रूस से उद्धार का लाभ प्राप्त करने का शुभ अवसर था। ऐसा करने से, लौट कर आने वाली आत्माएं भी जीव-आत्मा बन गईं। यदि संत लोग शरीर के साथ सचमुच अपनी कब्रों से, जैसा बाईबल में लिखा है जी उठते, तो वे इस तथ्य की कि यीशु, मसीह था, निश्चित रूप से गवाही देते। यदि ऐसा होता तो फिर कौन मसीह पर विश्वास न करने की जुर्रत करता?

---

[२९१] मत्ती १७:३

[२९२] मत्ती १७:१२-१३

[२९३] मत्ती २७:५२

इसके अतिरिक्त, उनके कर्म और कार्य भी बाईबल में दर्ज किए जाते, परन्तु हमारे पास इस अस्पष्ट विवरण के अलावा कि संत लोग कब्र से जी उठे थे, अभी तक अन्य कोई और जानकारी नहीं है। यह एक ऐसी डांवांडोल आध्यात्मिक घटना थी जो केवल आध्यात्मिक सुध-बुध वाले विश्वासी लोग ही महसूस कर सकते थे।

वैकुंठ की तुलना में, जिसमें लोग यीशु की क्रूस के द्वारा मुक्ति के आधार पर प्रवेश करते हैं, आत्मा-लोक का यह क्षेत्र जहाँ पुराने नियम के संत लोग रहते थे, अपेक्षाकृत, अन्धकारमय और दीन-हीन सा जान पड़ता था, इसी लिये इसे "कब्र" कहा गया है।

२.३.२.२ निष्पत्ति-चरण वापसी-पुनरुत्थान

नए नियम के दौरान जिन लोगों ने पृथ्वी पर रहते हुए यीशु पर विश्वास किया, उनकी आत्माएं जीव-आत्मा बन गयीं और उन्होंने वैकुंठ में प्रवेश किया। दूसरे आगमन के बाद, यह आत्माएं पृथ्वी पर वापस लौट कर आएंगी और निष्ठावान लोगों को लौटने वाले प्रभु पर विश्वास करने और उसकी सेवा में आने के लिये सहायता करेंगी। इस तरह पृथ्वी पर लोगों को दिव्य-आत्मा का स्तर प्राप्त करने में उनकी सहायता करने से वे भी दिव्य-आत्मा बनने का समान लाभ प्राप्त करेंगी। जब सांसारिक संत लोग आत्मा-लोक में पधारेंगे और स्वर्ग में स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करेंगे, तो लौटने वाली आत्माएं भी स्वर्ग में प्रवेश करेंगी। यह व्यवस्था निष्पत्ति-चरण वापसी-पुनरुत्थान कहलाती है। इस व्यवस्था में, न केवल आत्माएं सांसारिक लोगों की सहायता करतीं हैं; पर सांसारिक लोग भी आत्माओं के पुनरुत्थान में सहायता करते हैं। आईये हम निम्नलिखित पद्य को स्पष्ट करें:

> विश्वास ही के द्वारा इन सब के (पुराने नियम के संत लोग) विषय में अच्छी गवाही दी गई, तौभी उन्हें प्रतिज्ञा की हुई वस्तु न मिली (स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करने की अनुमति)। क्योंकि परमेश्वर ने हमारे लिये पहले से एक उत्तम बात ठहराई, कि वे हमारे बिना सिद्धता को न पहुँचें (स्वर्ग के राज्य के नागरिक)। इब्रानियों ११:३९-४०

इस व्याख्या से हम समझ सकते हैं, कि यह पद्य सही तौर पर वापसी-पुनरुत्थान या लौटकर-वापस-आनेवाला-पुनरुत्थान दर्शाता है। यह दिखाता है कि जो आत्माएं आत्मा-लोक में रहतीं हैं वे सांसारिक लोगों के सहयोग के बिना सिद्धता नहीं प्राप्त कर सकतीं। आगे यह लिखा है, "मैं तुम से सच, सच कहता हूँ, जो कुछ तुम पृथ्वी पर बांधोगे वह स्वर्ग में बंधेगा, और जो कुछ तुम पृथ्वी पर खोलोगे वह स्वर्ग में खुलेगा।"[२९४] यह पद्य हमें सिखाता है कि जब तक विश्वासी लोग पृथ्वी पर जो बांधा गया है पहले न खोलें, आत्माएं भी उसे खोल नहीं सकतीं जो उनमें बंधा है। चूँकि आत्माओं का पुनरुत्थान, पृथ्वी पर जिन विश्वासियों पर वे उतरतीं है, उनके साथ सहयोग के द्वारा होता है, यीशु ने स्वर्ग के राज्य की कुंजी

[२९४] मत्ती १८:१८

पतरस को दी, जो पृथ्वी पर विश्वासियों का प्रतिनिधित्व करता है, ताकि वह पृथ्वी पर स्वर्ग के राज्य का द्वार खोल सके।[२९५]

२.३.३ उन आत्माओं का वापसी-पुनरुत्थान जो वैकुंठ के बाहर रहतीं हैं

आत्माओं के अनेक वर्ग हैं जो वैकुंठ से बाहर रहतीं हैं; वापसी-पुनरुत्थान प्राप्त करने के लिये प्रत्येक का अपना अलग तरीका है। सबसे पहले हम उन आत्माओं के वापसी-पुनरुत्थान के बारे में जाँच करें जो अपने जीवनकाल के दौरान ईसाई धर्म के अलावा अन्य धर्मों में विश्वास रखतीं थीं। किन्हीं भी दो व्यक्तियों को इससे पहले कि वे किसी सामान्य लक्ष्य की ओर एक साथ कार्य करें उन्हें एक दूसरे के साथ मिलकर साहचार्य स्थापित करना होता है, उसी तरह पृथ्वी के लोग और आत्माएं भी एक साथ मिल कर केवल उसी समय आम दैवी लक्ष्य प्राप्त कर सकतीं है जब वे पहले एक दूसरे के साथ साहचार्य स्थापित न कर लें। इसलिए, जो आत्मा अपने पुनरुत्थान के लिये पृथ्वी पर लौटकर आती है, वह संसार में एक ऐसे समकक्ष को ढूँढ़ती है जो उस धर्म में विश्वास रखता हो जिस धर्म में वह अपने सांसारिक जीवन के दौरान विश्वास रखती थी। आत्मा अपने पसंद के व्यक्ति के ऊपर उतरती है और फिर उसका मार्गदर्शन करती है। जब वह उस व्यक्ति के पुनरुद्धार की दैवी योजना के उद्देश्य को पूरा करने में मदद करती है, तब दोनों को एक समान लाभ प्राप्त होता है।

दूसरा, आईये हम उन आत्माओं के वापसी-पुनरुत्थान की जाँच करें जिन्होंने किसी धर्म पर विश्वास न करते हुए भी ईमानदारी के साथ अपना जीवन बिताया था। पतित मानवता में कोई भी ऐसा नहीं है जो नितांत अच्छाई का मूर्त रूप हो क्योंकि किसी ने भी अपने अंदर का मूल पाप हल नहीं किया है। इसलिए, अच्छी आत्मा वह है जिसमें अपेक्षाकृत अधिक अच्छाई पाई जाती है। ऐसी अच्छी आत्माएं पृथ्वी पर अच्छे लोगों पर उतरतीं है और उनके साथ सहयोग करके, परमेश्वर के पुनरुद्धार की दैवी योजना के उद्देश्य को पूरा करने के लिये उनकी मदद करतीं हैं। इस प्रक्रिया में, आत्माएं जिन लोगों की मदद करती हैं उनके साथ समान लाभ प्राप्त करती हैं।

तीसरा, आईये हम दुष्ट आत्माओं के वापसी-पुनरुत्थान की जाँच करें। बाईबल में हम उन शापित लोगों के बारे में पढ़ते हैं जिनके बारे में कहा गया है, “अनंत आग में चले जाओ, जो शैतान और उसके दूतों के लिये तैयार की गई है”।[२९६] “उसके दूत” उन आत्माओं के लिये कहा गया है जो शैतान के अधीन काम करते हैं। यह आत्मिक जीव आमतौर पर भूत के नाम से जाने जाते हैं जिनके नाक-नक्शे और पहचान बहुधा स्पष्ट नहीं होतीं हैं, वह अन्य कोई नहीं पर दुष्ट आत्मा ही होतीं हैं। दुष्ट आत्माएं भी जो पृथ्वी पर लौट कर आतीं हैं युग के अनुग्रह का लाभ प्राप्त कर सकतीं हैं। हालांकि, दुष्ट आत्माओं के काम हमेशा फलदायक नहीं होते और वापसी-पुनरुत्थान का लाभ प्राप्त नहीं कर पाते। ऐसा लाभ प्राप्त

---

[२९५] मत्ती १६:१९

[२९६] मत्ती २५:४१

करने के लिए उनके कार्य सांसारिक लोगों को दंडित करने का प्रभाव डालने वाले होने चाहिये, ताकि उन्हें भुगतान-शर्त झेलने का अवसर मिले और उनकी विफलताओं की क्षतिपूर्ति करने में मदद मिले। तो फिर, दुष्ट आत्माओं के कार्य स्वर्ग की ओर से दण्ड का असर किस प्रकार कर सकते हैं?

आइए हम एक उदाहरण लेते हैं। मान लीजिये, एक व्यक्ति जो धरती पर रहता है, युग के अनुग्रह पर आधारित, वर्तमान क्षेत्र के लाभ से एक उच्च लाभ के क्षेत्र में उन्नति प्राप्त करता है। वह नए लाभ के क्षेत्र में उस समय तक उठ नहीं सकता, जब तक वह पहले अपने अतीत के पापों से मुक्ति पाने के लिए क्षतिपूर्ति की शर्त पूरी नहीं करता। यदि वह परिवार क्षेत्र से ऊपर कबीले क्षेत्र में उन्नत होता है तो उसे अपने और अपने कबीले के पूर्वजों के पापों का ऋण चुकाना होगा। इस पाप के लिए, दण्ड के रूप में, स्वर्ग उसे पीड़ा पहुँचाने के लिये दुष्ट आत्माओं को अनुमति देता है। यदि वह स्वेच्छया से दुष्ट आत्माओं के द्वारा दिए दुख को सह लेता है, तो वह सफलतापूर्वक इस सुविधा के माध्यम से क्षतिपूर्ति का भुगतान करता है और इस प्रकार वह कबीले के स्तर में प्रवेश करने का लाभ प्राप्त करने का अधिकारी होता है। वह दुष्ट आत्माएं जिन्होंने उसे सताया है उन्हें भी ऐसा ही लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार, युग के अनुग्रह के आधार पर, पुनरुद्धार की दैवी योजना के लाभ का क्षेत्र, पारिवारिक स्तर से कबीले के स्तर, आगे राष्ट्रीय स्तर और विश्व स्तर तक विकसित होता। जब भी मानवता उच्च स्तर पर उन्नति करती है, वह व्यक्ति जो दैवी योजना की अगवाई करता है उसे अपने और अपने पूर्वजों के पापों के समाधान के लिये क्षतिपूर्ति के भुगतान की शर्त भोगना आवश्यक है।

बुरी आत्माओं के काम पृथ्वी पर किसी व्यक्ति के पापों को दो अलग-अलग तरीकों से शुद्ध करने के लिए क्षतिपूर्ति की शर्त पूरी करने में मदद कर सकते हैं। पहला, आत्मा सांसारिक व्यक्ति को सीधे तंग कर सकती है। दूसरा, दुष्ट आत्मा दूसरे किसी ऐसे व्यक्ति की आत्मा पर उतरती है जो पृथ्वी पर जीवित है और पाप करने जा रहा है, ऐसा पाप जो उस व्यक्ति के पाप के समान है जिसको दण्ड दिया जा रहा है, इस तरह, दुष्ट आत्मा इस दूसरे व्यक्ति के साथ काम करके पहले पर हमला करे। दोनों घटनाओं में यदि सांसारिक व्यक्ति आभार और स्वेच्छा से ग्रस्त दुष्ट आत्मा द्वारा दिये हुए दुःख को सह ले तो वह अपने और अपने पूर्वजों के पाप की शुद्धि के लिये क्षतिपूर्ति के भुगतान की शर्त पूरी करता है। फिर इस पाप का समाधान हो जाएगा, और वह उच्च क्षेत्र में प्रवेश करेगा और नए युग में उपलब्ध लाभ प्राप्त कर सकेगा। इस प्रकार, दुष्ट आत्मा का कार्य उस व्यक्ति के लिये ईश्वर की ओर से दण्ड की कार्रवाई होगी। फलस्वरूप, यह आत्मा भी वही लाभ प्राप्त करेगी जो सांसारिक व्यक्ति को मिलेगा, वह भी उच्च लाभ के क्षेत्र में प्रवेश करेगी।

२.४ वापसी-पुनरुत्थान के नियम के प्रकाश में पुनर्जन्म के सिद्धांत की जाँच

पुनरुद्धार की दैवी योजना के संपूर्ण उद्देश्य को पूरा करने के तात्पर्य से, परमेश्वर ने कई व्यक्तियों को बुलाया और प्रत्येक को उपयुक्त मिशन बांट कर दिया है। इन व्यक्तियों ने अपने विशेष मिशन, इनके बाद आने वाले समान चरित्र और परिस्थिति वाले व्यक्तियों को पारित किए, इस तरह धीरे-धीरे इतिहास

के लंबे प्रवाह में उन्होंने मिशन के प्रत्येक क्षेत्र को कार्यान्वित किया।

पुनरुद्धार की दैवी योजना एक व्यक्ति के द्वारा आरंभ होती है, फिर परिवार, राष्ट्र और विश्व तक फैलती है, और अंततः सारे स्वर्ग और पृथ्वी का पुनरुद्धार होता है। यद्यपि प्रत्येक व्यक्ति को दिया गया मिशन संपूर्ण मिशन का केवल एक छोटा हिस्सा ही क्यों न हो, वह भी इसी ढंग के अनुसार आगे बढ़ता है। प्रत्येक मिशन एक व्यक्ति के स्तर से आरंभ होता है और अपना दायरा परिवार, राष्ट्र और विश्व स्तर तक फैलाता है। बाईबल से एक उदाहरण लेते हैं, अब्राहम से उसका मिशन व्यक्तिगत और पारिवारिक स्तर पर आरंभ होकर मूसा को राष्ट्रीय स्तर पर मिला, फिर विश्वव्यापी स्तर पर यीशु को मिला।

वह आत्माएं जो अपना मिशन सांसारिक जीवन के दौरान पूर्ण नहीं कर सकीं उन्हें पृथ्वी पर उन लोगों के पास वापस लौट कर आना पड़ता है, जिनका मिशन उसी प्रकार का है जिस प्रकार का पृथ्वी पर उनके जीवन काल में था। जब एक आत्मा परमेश्वर की इच्छा पूरी करने के लिये किसी सांसारिक व्यक्ति की सहायता करती है तो वह व्यक्ति न केवल अपना मिशन पूरा करता है, परन्तु उस आत्मा का मिशन भी जिसने उसकी सहायता की है पूरा करता है। अतः, मिशन के दृष्टिकोण से, इस व्यक्ति का शरीर, साथ-साथ, उस आत्मा के शरीर का कार्य भी करता है। इस तरह से देखा जाए तो यह उस आत्मा का दूसरी बार वापस लौटकर आना होता है; अतः, वह व्यक्ति उस आत्मा का अवतरण सा प्रतीत होता है और कभी-कभी उस आत्मा के नाम से बुलाया जा सकता है बाईबल में यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले को एलिय्याह का मिशन, जो वह अपने सांसारिक जीवन के दौरान अधूरा छोड़ गया था, पूरा करना चाहिये था, क्योंकि उसे अपना कार्य करने के लिये एलिय्याह की सहायता मिली। इसलिये यीशु ने यूहन्ना को "एलिय्याह" कहा, क्योंकि यूहन्ना का शरीर साथ-साथ एलिय्याह के शरीर का काम कर रहा था।[२९७]

अंतिम दिनों में, पृथ्वी पर कुछ लोगों को विश्वव्यापी स्तर पर मिशन सौंपे गए हैं। उन्हें अतीत की सभी आत्माओं के दायित्व को जो उस क्षेत्र से संबंधित हैं, विरासत में लेकर पूरा करना होगा। यह आत्माएं इन लोगों पर उतरेंगी और अपना अधूरा काम पूरा करने के लिये इन लोगों की सहायता करेंगी। चूँकि सांसारिक लोग, एक अर्थ में, इन मार्गदर्शक आत्माओं का दूसरा आगमन हैं, अतेव, वे यह सोच सकते हैं कि वे इन का अवतरण हैं। अतः, अंतिम दिनों में कुछ लोग अपने आप को यीशु, बुद्ध, कनफूसी का दूसरा आगमन या जैतून का पेड़, या जीवन के पेड़ होने का दावा करेंगे। हिंदू और बौद्ध धर्म के पुनर्जन्म के सिद्धांत इन बाहरी घटनाओं की व्याख्या करते हैं परन्तु वे वापसी-पुनरुत्थान के नियम की जानकारी के लाभ के बिना करते हैं।

[२९७] प्रति संदर्भ पुनरुत्थान २.३.२.१

संभाग ३

वापसी-पुनरुत्थान के द्वारा धर्मों का एकीकरण

३.१ वापसी-पुनरुत्थान के द्वारा ईसाई धर्म का एकीकरण

दूसरे आगमन के समय पर सभी जीव-आत्माएं जो स्वर्ग में रहतीं हैं पृथ्वी पर लोगों पर उतरेंगी और प्रभु पर विश्वास करके और उसकी सेवा-शुश्रुषा में भाग लेने के द्वारा दिव्य आत्मा का स्तर प्राप्त कर सकतीं हैं। पुनरुद्धार की दैवी योजना में परमेश्वर की इच्छा पूरी करने के लिये इन लोगों के साथ मिलकर काम करने से आत्माएं वही लाभ प्राप्त कर सकतीं हैं और स्वर्ग के राज्य में प्रवेश कर सकतीं हैं।[२९८] तदनुसार, उस दिन सभी आत्माएं वैकुंठ से उतरेंगी और पृथ्वी पर विश्वासियों की मदद करेंगी।

यद्यपि प्रभु के अनुग्रह का समय, लोगों की आस्था, स्वाभाविक प्रकृति और दैवी योजना के लिए उनके पूर्वजों की उपलब्धियों के अनुसार भिन्न हो सकता है, पर चाहे अभी हो या बाद में प्रत्येक विश्वासी का मार्गदर्शन वैकुंठ की आत्माओं द्वारा किया जाएगा ताकि वे दूसरे आगमन के मसीह के पीछे चलें और अपने जीवन को परमेश्वर की इच्छा के लिए समर्पित करें। इस कारण से, ईसाई धर्म का एकजुट होना पूर्वनिर्दिष्ट है।

३.२ वापसी-पुनरुत्थान के द्वारा सब धर्मों का एकीकरण

जैसा कि ऊपर बताया गया है, जिन धर्मों ने उसी एक चरम उद्देश्य की खोज की है, वह सब धीरे-धीरे ईसाई धर्म के आदर्शों पर आधारित एक सांस्कृतिक क्षेत्र में सम्मिलित हो रहे हैं।[२९९] ईसाई धर्म का अस्तित्व उसके स्वयं हित के लिये ही नहीं है, परन्तु उसका अंतिम मिशन इतिहास में सब धर्मों के उद्देश्य की पूर्ति के लिये है। दूसरे आगमन का मसीह जो ईसाई धर्म के केंद्र के रूप में आ रहा है, वह व्यक्ति मैत्रेय बुद्ध भी है जो बौद्ध धर्म की शिक्षा के अनुसार लौट कर आने वाला था, चीनी धार्मिक परंपरा में भी वह जो सत्-पुरुष के नाम से जाना जाता है, और चौंगदोरयौंग, जिसके लिये कोरिया के लोग लालायित रहे हैं। यह वही प्रधान पुरुष है जिसके आगमन की उम्मीद सभी धर्मों को है।

फलस्वरूप, मसीह के दूसरे आगमन पर, सभी आत्माएं जो अपने जीवन काल में ईसाई धर्म को छोड़ दूसरे धर्मों में विश्वास रखती थीं, वैकुंठ की आत्माओं की तरह, अपने पुनरुत्थान के लिये पृथ्वी पर वापस लौट कर आएंगी, परन्तु उनके आने का समय उनकी अपनी आध्यात्मिक स्थिति पर निर्भर होगा। मसीह के दूसरे आगमन पर इन आत्माओं को संसार में उनके अपने धर्म से संबंधित विश्वासियों का मसीह की ओर मार्गदर्शन करना होगा और परमेश्वर की इच्छा पूरी करने के लिये उन्हें उस पर विश्वास करने और उसकी सेवा में भाग लेने के लिए सहायता करनी होगी। हम मसीह के पहले आगमन के समय का एक समानांतर उदाहरण ले सकते हैं: पूर्व से तीन ज्योतिषी, जो पारसी लोग थे, यीशु के जन्म के समय

---

[२९८] प्रति-संदर्भ पुनरुत्थान २.३.२.२

[२९९] अंतिम दिन संबंधी उपदेश ४.२

उसकी उपासना करने के लिये उसकी तलाश में आए।[300] तदनुसार, सभी धर्म अंत में ईसाई धर्म के चारों ओर संयुक्त होकर पुनः जाग्रत होंगे।

३.३ वापसी-पुनरुत्थान के द्वारा धर्मनिरपेक्ष लोगों का एकीकरण

वह आत्माएं, जिन्होंने अपने जीवनकाल में शुद्ध अंतःकरण से जीवन बिताया है परन्तु उनका संपर्क किसी धर्म से नहीं था वह भी ठहराए हुए समय पर वापसी-पुनरुत्थान का लाभ प्राप्त करने के लिये पृथ्वी पर लौटेंगी। वे मसीह के दूसरे आगमन पर शुद्ध अंतःकरण वाले सांसारिक लोगों का मार्गदर्शन करेंगी और उसे खोजने और उसकी सेवा में जाने और परमेश्वर की इच्छा पूरी करने के लिये उसकी सहायता करेंगी।

परमेश्वर की पुनरुद्धार की दैवी योजना का परम उद्देश्य सारी मानवता को बचाने का है। इसलिए, परमेश्वर प्रत्येक व्यक्ति को उनके पापों की क्षतिपूर्ति के लिये आवश्यक समय देकर नरक का पूर्णतः अंत करना चाहता है। यदि दुनिया में नरक हमेशा के लिये बना रहे, जहां परमेश्वर की अच्छाई का उद्देश्य कार्यान्वित होता है, तो यह परमेश्वर की पूर्णता, उसके आदर्श, और उसके पुनरुद्धार की दैवी योजना के खिलाफ होगा।

पतित माता-पिता भी यदि उनके बच्चों में से एक खुश ना हो वे ख़ुशी कभी महसूस नहीं कर सकते। तो क्या यह परमेश्वर, हमारे स्वर्गीय माता-पिता के लिए सच नहीं है? जैसे कि लिखा है, "प्रभु धीरज धरता है, और नहीं चाहता कि कोई नष्ट हो, वरन् यह कि सब को मन फिराव का अवसर मिले"।[301] तदनुसार, नरक हमेशा के लिये नहीं रह सकता। यह परमेश्वर की गहन इच्छा की पूर्ति है कि आदर्श दुनिया में नरक का कोई नाम-निशान तक नहीं रहेगा। अंतिम दिनों में, जब समय आएगा, दुष्ट आत्माएं पृथ्वी पर उसी आध्यात्मिक स्तर के दुष्ट लोगों पर उतरेंगी और परमेश्वर की इच्छा पूरी करने के लिये उनकी सहायता करेंगी। यथार्थतः, यहां तक कि दानव भी गवाही देते हैं कि यीशु परमेश्वर का पुत्र था।[302]

इन विभिन्न व्यवस्थाओं में भाग लेने के द्वारा, एक लम्बे समय के बाद, सभी लोग धीरे-धीरे परमेश्वर के आदर्श विश्व के लक्ष्य की ओर अभिमुख होंगे।

---

[300] मत्ती २:१-१२

[301] २ पतरस ३:९

[302] मत्ती ८:२९

दिव्य नियम प्रतिपादन

भाग १.

अध्याय ६

पूर्वनियति

विषय सूची

अध्याय ६		पृष्ठ
पूर्वनियति		१६८
संभाग १	परमेश्वर की इच्छा की पूर्वनियति	१७१
संभाग २	पूर्वनियति की विधि जिसमें परमेश्वर की इच्छा पूर्ण होती है	१७२
संभाग ३	मनुष्य की पूर्वनियति	१७४
संभाग ४	बाईबल के उन पदों का स्पष्टीकरण जो पूर्ण पूर्वनियति के सिद्धांत का समर्थन करते हैं	१७६

पूर्वनियति

पूर्वनियति के विषय पर आध्यात्मविद्या संबंधी विवाद लोगों के धार्मिक जीवन में बड़ी उलझन का कारण बन गया है। आएं हम इस विवाद के स्रोत का परीक्षण शुरू करते हैं। बाईबल में हम बहुत से ऐसे हवाले पाते हैं जिनकी व्याख्या से यह प्रतीत होता है कि किसी व्यक्ति के जीवन में उसकी समृद्धि या अवनति, ख़ुशी या दु:ख, उसका उद्धार या दोषी ठहराया जाना, और कि देशों का उत्थान और पतन, इसलिये होता है क्योंकि यह सब परमेश्वर ने पूर्वनिर्दिष्ट किया है। उदाहरण की तौर पर संत पौलुस ने लिखा है:

> फिर जिन्हें उसने पहले से ठहराया, उन्हें बुलाया भी, और जिन्हें बुलाया उन्हें धर्मी भी ठहराया। रोमियों ८:३०
> मैं जिस पर दया करना चाहूँ उस पर दया करूँगा, और जिस पर कृपा करना चाहूँ उस पर कृपा करूँगा। रोमियों ९: १५-१६
> क्या कुम्हार को मिट्टी पर अधिकार नहीं कि एक ही लोंदे में से एक बरतन आदर के लिये, और दूसरे को अनादर के लिये बनाए? रोमियों ९:२१

यह भी लिखा है, कि जब वे अपनी माँ के गर्भ ही में थे, परमेश्वर ने याकूब से प्रेम किया और कि वह एसाव से घृणा करता था और उनके भाग्य की घोषणा करते हुए, लिखा है कि "बड़ा छोटे की सेवा करेगा।"[३०३] इस प्रकार, बाईबल में पर्याप्त उदाहरण हैं जिनसे परमेश्वर का निरपेक्ष और पूर्ण पूर्वनियति का सिद्धाँत उचित सिद्ध होता।

परन्तु बाईबल में हम ऐसे भी पर्याप्त प्रमाण पाए जाते हैं जो निरपेक्ष पूर्वनियति के सिद्धांत का खंडन करते हैं। उदाहरण के लिए, परमेश्वर ने पतन को रोकने के लिये पहले मानव पूर्वजों को फल खाने के लिए मना किया।[३०४] इससे हम यह अनुमान लगा सकते हैं कि मानव पतन परमेश्वर की पूर्वनियति का परिणाम नहीं था, अथवा मनुष्य का परमेश्वर की आज्ञा उल्लंघन करने का परिणाम था। आगे हम यह पढ़ते हैं, "और यहोवा पृथ्वी पर मनुष्य को बनाने से पछताया, और वह मन में अति खेदित हुआ"।[३०५] यदि मानव पतन परमेश्वर द्वारा पूर्वनिर्दिष्ट होता तो फिर परमेश्वर का पतित मानवता के लिये, जो उसकी पूर्वनियति के अनुसार काम कर रहे थे, खेदित होने का कोई कारण नहीं होता। इसके अतिरिक्त, यूहन्ना के सुसमाचार में यह लिखा है, कि जो भी मसीह में विश्वास करता है वह नाश नहीं होगा, परन्तु अनन्त जीवन पाएगा,[३०६] जिसका अर्थ है कि कोई भी दण्ड के लिए पूर्वनियत नहीं है।

मानव कार्य का परिणाम परमेश्वर की पूर्वनियति द्वारा निर्धारित नहीं किया जाता, परन्तु मानव प्रयास द्वारा किया जाता है, बाईबल का यह प्रसिद्ध पद्य इस सिद्धाँत का समर्थन करता है, "मांगो तो तुम्हें

---

[३०३] रोमियों ९:११-१३
[३०४] उत्पत्ति २:१७
[३०५] उत्पत्ति ६:६
[३०६] यूहन्ना ३:१६

दिया जाएगा, ढूँढो तो तुम पाओगे, खटखटाओ तो तुम्हारे लिये खोला जाएगा" ।[३०७] यदि मनुष्य का हर एक कार्य परमेश्वर की पूर्वनियति बन जाता है तो फिर यीशु ने मानव प्रयास की आवश्यकता पर क्यों ज़ोर दिया है? बाईबल हमें बीमार भाइयों के लिए प्रार्थना करने का निर्देश देती है,[३०८] यह सुझाव बताता है कि बीमारी और स्वास्थ्य केवल परमेश्वर की पूर्वनियति पर निर्भर नहीं है। यदि सब कुछ अनिवार्यतः भाग्य ही निर्दिष्ट करता है तो आँसू भरी याचनाएं सब बेकार हो जाएंगी।

चूँकि परमेश्वर पूर्ण है, इसलिये हम यह उम्मीद कर सकते हैं कि जब वह कुछ भी पूर्वनिर्धारित करता है, वह पूरी तरह से बांधा जाता है और मानव प्रयास द्वारा बदला नहीं जा सकता है। इसलिए, यदि हम यह पारंपरिक सिद्धांत स्वीकार करते है कि सब कुछ परमेश्वर के द्वारा पूर्णतः पूर्वनिर्धारित है तो हमें इसका यह निचोड़ निकालना होगा कि मनुष्य के किसी भी प्रयास से, जिसमें प्रार्थना, सुसमाचार का प्रचार या दान भी शामिल है, परमेश्वर की दैवी योजना में कोई फर्क नहीं पड़ेगा। प्राकृतिक क्रम के बाहर कोई भी प्रयास बिल्कुल निरर्थक होगा।

चूँकि बाईबल में इन दोनों परस्पर विरोधी सिद्धांतों को उचित ठहराने के लिए पर्याप्त आधार हैं, पूर्वनियति के इस मुद्दे पर विवाद अनिवार्यतः होता आया है। नियम इस समस्या को किस प्रकार हल कर सकता है? हम कई विषयों के तहत इसका विश्लेषण करके पूर्वनियति के प्रश्न पर विचार करेंगे।

---

[३०७] मत्ती ७:७

[३०८] याकूब ५:१४-१५

संभाग १

परमेश्वर की इच्छा की पूर्वनियति

परमेश्वर की इच्छा की पूर्वनियति की चर्चा करने से पहले, आइए हम, इच्छा क्या है इस बात की जाँच करें। हमें यह स्मरण रहे: मानव पतन के कारण परमेश्वर अपना सृष्टि का उद्देश्य पूरा नहीं कर सका। तदनुसार, पतित मानवता के लिए अपनी दैवी योजना को अंजाम देकर सृष्टि के उद्देश्य को पूरा करने के लिए परमेश्वर की इच्छा अभी भी स्थिर है। इस अर्थ में, परमेश्वर की इच्छा है कि पुनरुद्धार का काम पूरा हो।

आगे, हमें यह मालूम होना चाहिए कि परमेश्वर पहले अपनी इच्छा पूर्वनिर्धारित करता है फिर उसकी पूर्ति के लिए काम करता है। जब परमेश्वर ने मनुष्य की रचना की उसने यह पूर्वनिर्धारित किया है कि वे सृष्टि के उद्देश्य को पूरा करें। पतन के कारण जब परमेश्वर अपनी इच्छा पूरी नहीं कर सका तो एक बार फिर उसने पुनरुद्धार की दैवी योजना के द्वारा अपनी इच्छा पूर्ण करना निश्चित किया और तब से वह उसे पूरा करने का काम कर रहा है।

परमेश्वर अपनी इच्छा पूर्वनिर्दिष्ट करता है और उसे भली युक्तियों से साधित करता है बुराई की विधियों से नहीं। परमेश्वर अच्छाई का कर्ता है। अतएव, उसका सृष्टि का उद्देश्य अच्छा है; उसी रीति से, पुनरुद्धार की दैवी योजना का उद्देश्य और उद्देश्य को पूरा करने की इच्छा भी अच्छी है। इस कारण से, परमेश्वर नहीं चाहता कि सृष्टि के उद्देश्य को पूरा करने के इरादे में कोई वस्तु रुकावट डाले या विरोध करे। विशेष रूप से, वह मनुष्य का पतन या पाप जो मनुष्य को दोषी ठहराते हैं पूर्वनिर्धारित नहीं कर सकता। और ना ही वह जगत के विनाश के लिए कोई घटना पूर्वनिर्दिष्ट कर सकता है। यदि ऐसी दुर्घटनाएँ परमेश्वर की पूर्वनियति का अपरिहार्य परिणाम होतीं, तो परमेश्वर अच्छाई का कर्ता नहीं हो सकता था। इसके अतिरिक्त, यदि परमेश्वर ने स्वयं ऐसे बुरे परिणाम पूर्वनिर्धारित किए होते तो वह उनपर खेद प्रगट नहीं करता, जैसा कि उसने पतित मानव की भ्रष्टता पर किया[३०९] और राजा शाऊल के लिये किया जब वह अविश्वास[३१०] में पड़ गया था। ऐसे पद्य यह वर्णन करते हैं कि बुराई परमेश्वर की पूर्वनियति का परिणाम नहीं है, बजाए इसके यह मनुष्य का अपनी जिम्मेदारी को पूरा करने में निष्फल होने और उनका शैतान के साथ हाथ मिलाने का परिणाम है।

परमेश्वर, सृष्टि के उद्देश्य की अंतिम उपलब्धि के लिए किस हद तक अपनी इच्छा पूर्वनिर्धारित करता है? परमेश्वर पूर्ण सत्ता है, अद्वितीय, अनंत और अपरिवर्तनीय है; इसलिए, उसकी सृष्टि का उद्देश्य भी पूर्ण, अद्वितीय, अनंत और अपरिवर्तनीय होना चाहिए। इसी प्रकार, पुनरुद्धार की दैवी योजना के लिये उसकी इच्छा भी, जिसका लक्ष्य सृष्टि के उद्देश्य की उपलब्धि है, पूर्ण, अद्वितीय और अपरिवर्तनीय होना चाहिए। तो फिर, परमेश्वर की इच्छा की पूर्वनियति भी—कि सृष्टि का उद्देश्य जो एक दिन पूरा होगा—पूर्ण होनी चाहिए, जैसे कि लिखा है, "मैंने ही यह बात कही है, और उसे पूरा भी करूँगा, मैंने विचार बांधा

---

[३०९] उत्पत्ति ६.६

[३१०] १ शमूएल १५:११

है और उसे सफल भी करूँगा।"[३११] चूँकि परमेश्वर अपनी इच्छा सर्वथा पूर्वनिर्धारित करता है, यदि एक चुना हुआ व्यक्ति उसकी इच्छा पूरी करने में विफल होता है, तो परमेश्वर को अपनी दैवी योजना को उसके पूरी होने तक जारी रखना ही पड़ता है, भले ही उसके मिशन की पूर्ति में सहायता के लिये उसे दूसरा व्यक्ति क्यों न चुनना पड़े।

उदाहरण की तौर पर, परमेश्वर की यह इच्छा कि उसका सृष्टि का उद्देश्य आदम के द्वारा पूरा हो। यद्यपि यह सफल नहीं हुआ, परमेश्वर की इस दैवी इच्छा की पूर्वनियति अटल रही। इसलिए, परमेश्वर ने, यीशु को दूसरे आदम के रूप में भेजा है और उसके द्वारा अपनी इच्छा को पूरी करने का प्रयास किया। जब यहूदी लोगों के अविश्वास[३१२] के कारण यीशु इच्छा की पूर्ण पूर्ति नहीं कर सका, तो यीशु ने वापस लौट कर आने का वादा किया और कि वह उसे फिर निःसंदेह पूरा करेगा।[३१३] इसी तरह, परमेश्वर की इच्छा थी कि वह कैन और हाबिल की व्यवस्था के माध्यम से मसीह के लिए परिवार की नींव स्थापित करे। जब कैन ने हाबिल को मार डाला और यह इच्छा पूरी नहीं हो सकी, तो परमेश्वर ने नूंह के परिवार के माध्यम से उसे पूरा करने का प्रयास किया। जब नूंह का परिवार भी उसकी इच्छा को पूरा करने में विफल रहा, तो परमेश्वर ने उसके बदले में अब्राहम को चुना और उसके माध्यम से काम किया। हम यह दूसरे व्यक्तियों के मिशन के दृष्टिकोण से भी देखते हैं: परमेश्वर ने हाबिल की विफलता को सुधारने के लिए उसके बदले सेथ को चुन कर अपनी इच्छा को पूरा करने की कोशिश की।[३१४] परमेश्वर ने अपनी अधूरी इच्छा को पूरा करने की कोशिश में मूसा के बदले यहोशू को चुना।[३१५] यहूदा के यीशु के प्रति विश्वासघात के कारण जब परमेश्वर की इच्छा खंडित हुई, तब परमेश्वर ने उसके स्थान पर मत्तियाह को चुनकर अपनी इच्छा को पूरा करने के लिए दूसरा प्रयास किया।[३१६]

[३११] यशायाह ४६:११
[३१२] प्रति-संदर्भ मसीह १.२
[३१३] मत्ती १६:२७
[३१४] उत्पत्ति ४:२५
[३१५] यहोशू १:५
[३१६] प्रेरितों १: २४-२६

संभाग २

पूर्वनियति की विधि जिसमें परमेश्वर की इच्छा पूर्ण होती है

सृष्टि के नियम के अनुसार, परमेश्वर की सृष्टि की रचना का उद्देश्य केवल उसी समय साधित किया जा सकता है जब मनुष्य अपने हिस्से की जिम्मेदारी पूरी करता है।[३१७] हालांकि, पुनरुद्धार की दैवी योजना के माध्यम से उद्देश्य को साधित करने के लिये परमेश्वर की इच्छा पूर्ण है और मानव शक्ति से परे है, इसकी पूर्ति के लिये मनुष्य की अपने हिस्से की जिम्मेदारी अनिवार्य है। मूलतः, आदम और हव्वा के माध्यम से परमेश्वर का सृष्टि का उद्देश्य केवल उसी समय परिपूर्ण होता, जब वे अपना दायित्व पूरा करते और भले और बुरे के वृक्ष का फल खाने से इनकार करते।[३१८] इसी तरह, पुनरुद्धार की दैवी योजना में, परमेश्वर की इच्छा केवल उसी समय पूरी होती है जब मुख्य व्यक्ति अपने मिशन से संबंधित, जिसका वह जिम्मेदार है, अपने हिस्से की ज़िम्मेदारी पूरी करता है। उदाहरण के लिए, यहूदी लोगों को, मुख्य देश होने के नाते, यीशु में विश्वास करना चाहिए था और उसके पीछे बिला शर्त चलना चाहिये था ताकि परमेश्वर उस समय संपूर्ण उद्धार संपन्न कर लेता। चूँकि उन्होंने विश्वास नहीं किया और अपनी ज़िम्मेदारी निबाहने में विफल हुए, इच्छा की पूर्ति दूसरे आगमन के समय तक स्थगित हो गई।

परमेश्वर किस हद तक दैवी योजना की घटनाओं का विकास पूर्वनिर्धारित करता है? हालांकि, पुनरुद्धार की दैवी योजना के उद्देश्य को साधित करने के लिये परमेश्वर की इच्छा पूर्ण है, परमेश्वर उसकी उपलब्धि की प्रक्रिया को सशर्त पूर्वनिर्धारित करता है, जो मुख्य व्यक्ति की अपनी पाँच प्रतिशत ज़िम्मेदारी पर निर्भर है, और परमेश्वर की पचानवे प्रतिशत ज़िम्मेदारी के साथ अवश्य पूरी होनी चाहिये। यहाँ पांच प्रतिशत के अनुपात का उपयोग इसलिये किया गया है क्योंकि मनुष्य की जिम्मेदारी का भाग परमेश्वर की जिम्मेदारी के भाग की तुलना में अत्यंत छोटा है। फिर भी मनुष्य के लिये यह पांच प्रतिशत, सौ प्रतिशत प्रयासों के बराबर है।

कुछ उदाहरणों के हवाले: परमेश्वर ने अपनी इच्छा आदम और हव्वा के द्वारा पूरी होने के लिये पूर्वनिर्धारित की थी, उन्हें केवल फल खाने से परहेज़ करके अपनी जिम्मेदारी निबाहनी थी। नूंह के माध्यम से पुनरुद्धार की व्यवस्था में, परमेश्वर ने अपनी इच्छा की पूर्ति इस उम्मीद से पूर्वनिर्धारित की थी कि नूंह अत्यंत भक्ति के साथ स्वयं परिश्रम करके किश्ती बनाए और अपनी जिम्मेदारी पूरी करे। यीशु के द्वारा उद्धार की दैवी योजना में परमेश्वर ने अपनी इच्छा की पूर्ति पूर्वनिर्धारित केवल इस भरोसे के साथ की थी कि लोग यीशु को मसीह मान कर उस पर विश्वास करेंगे और भक्ति के साथ उसकी सेवा करके अपनी जिम्मेदारी पूरी करें।[३१९] परंतु मनुष्य, बारंबार अपने हिस्से की थोड़ी सी ज़िम्मेदारी नहीं निबाह सके। फलस्वरूप, परमेश्वर की दैवी योजना लगातार विलंबित होती गई। बाईबल में लिखा है, "और विश्वास

[३१७] प्रति-संदर्भ सृष्टि ५.२.२
[३१८] उत्पत्ति २:१७
[३१९] यूहन्ना ३:१६

की प्रार्थना के द्वारा रोगी बच जाएगा,"[३२०] "तेरे विश्वास ने तुझे चंगा किया है,"[३२१] और "क्योंकि जो कोई मांगता है उसे मिलता है, और जो ढूँढ़ता है, पाता है, और जो खटखटाता है उसके लिये खोला जाएगा।"[३२२] ये छंद यह पुष्टि करते हैं कि परमेश्वर की अपनी इच्छा का पूर्वनिर्धारण मनुष्य की अपने हिस्से की ज़िम्मेदारी की पूर्ति पर निर्भर है। इन उदाहरणों से हमें यह पहचानना चाहिये, कि परमेश्वर के परिश्रम और अनुग्रह की तुलना में मनुष्य के हिस्से की ज़िम्मेदारी कितनी कम होती है। दूसरी ओर, जब हम इस तथ्य पर विचार करते हैं कि दैवी योजना में प्रधान लोग बारंबार अपनी ज़िम्मेदारी संभालने में विफल रहे, इससे हम यह समझ सकते हैं कि उनके लिये यह अपेक्षाकृत छोटी सी ज़िम्मेदारी भी पूरी करना कितनी कठिन बात थी।

---

[३२०] याकूब ५:१५
[३२१] मरकुस ५:३४
[३२२] मत्ती ७:८

संभाग ३

मनुष्य की पूर्वनियति

आदम और हव्वा का मानवता के अच्छे पूर्वज बनना, उनके फल न खाने की आज्ञा का पालन करने की उनकी अपनी ज़िम्मेदारी पूरा करने पर आश्रित था। तदनुसार, परमेश्वर ने निःसंदेह यह पूर्वनिर्धारित नहीं किया था, कि आदम और हव्वा हमारे अच्छे पूर्वज बनेंगे। यह सभी पतित लोगों के लिए भी कहा जा सकता है: वे परमेश्वर के पूर्वनिर्धारित किए हुए आदर्श लोग तब ही बन सकते हैं, केवल जब वे अपनी जिम्मेदारी पूरी करें। इसलिए, परमेश्वर पूर्ण रूप से यह पूर्वनिर्धारित नहीं करता कि वास्तव वे में किस तरह लोग बनेंगे।

परमेश्वर किस हद तक किसी व्यक्ति का भाग्य नियत करता है? किसी भी एक व्यक्ति को परमेश्वर की इच्छा पूरी करने के लिये उसे अपनी ज़िम्मेदारी को पूरा करना बिल्कुल आवश्यक है। इसलिये, यद्यपि परमेश्वर किसी व्यक्ति को एक विशेष मिशन के लिये पूर्वनियत करता है, तो इससे पहले कि वह व्यक्ति अपना दिया गया मिशन पूरा करे और परमेश्वर की इच्छा पूरी करे, उसको पूरा करने में परमेश्वर की पचानवे प्रतिशत ज़िम्मेदारी और उस व्यक्ति की पाँच प्रतिशत ज़िम्मेदारी साथ-साथ पूरी होनी चाहिये। यदि वह व्यक्ति अपनी जिम्मेदारी पूरी नहीं करता है, तो वह ऐसा व्यक्ति नहीं बन सकेगा जैसा परमेश्वर का इरादा था।

उदाहरण के लिये, जब परमेश्वर ने मूसा को चुना, तो उसने यह सशर्त पूर्वनिर्धारित किया कि जब मूसा अपनी जिम्मेदारी पूरी करेगा, तब वह चुने हुए लोगों का प्रतिज्ञा के देश कनान ले जाने के लिये नेतृत्व करेगा।[३२३] परन्तु मूसा ने कादेश-बारनिया की चट्टान पर दो बार लाठी मारी, इस कारण से वह परमेश्वर की इच्छा पूरी करने में विफल हुआ। परिणाम स्वरूप, मूसा अपने अंतिम गंतव्य तक पहुँचने से पहले मर गया, और परमेश्वर की मंशा, कि वह लोगों का कनान ले जाने के लिये नेतृत्व करेगा, सफल नहीं हुई।[३२४] जब परमेश्वर ने यहूदा इस्कारयोट को चुना, तो उसने सशर्त यह पूर्वनिर्धारित किया कि यहूदा ईमानदारी से अपनी जिम्मेदारी को पूरी करेगा और यीशु का एक वफादार शिष्य बना रहेगा। परन्तु जब यहूदा बेवफ़ा हो गया तो उसके लिए परमेश्वर की अपेक्षा साधित नहीं हो पाई, और वह एक गद्दार बन कर रह गया। जब परमेश्वर ने यहूदी लोगों को स्थापित किया, तब उसने उनके लिये सशर्त यह पूर्वनिर्धारित किया कि जब वे यीशु पर विश्वास करेंगे और यीशु की सेवा में आकर अपनी जिम्मेदारी पूरी करेंगे, तो चुने हुए राष्ट्र के रूप में गौरवशाली होंगे। परन्तु जब उनके नेताओं ने यीशु को सूली पर चढ़ा दिया, तो यह पूर्वनिर्धारित नियति पूरित नहीं हो सकी, और यहूदी राष्ट्र टूट कर तितर-बितर हो गया।

आइए आगे हम पुनरुद्धार की दैवी योजना में प्रधान लोगों के लिए परमेश्वर की पूर्वनियति की जाँच करते हैं। परमेश्वर की पुनरुद्धार की दैवी योजना का उद्देश्य पतित संसार को परमेश्वर की आकांक्षा के अनुकूल पूरी तरह से बहाल करना है। इसलिये, यद्यपि उनके उद्धार का समय चाहे अलग-अलग क्यों

---

323 गिनती २०:११-१२

324 गिनती २०:२-१३; २७:१३-१४

न हो, तथापि, सारे पतित लोगों की मुक्ति पूर्वनिर्धारित है।[३२५] फिर भी, जैसा कि परमेश्वर की सृष्टि के मामले में यह सच है, उसके उद्धार की दैवी योजना— जो कि एक पुन:निर्माण का कार्य है—एक पल में पूरा नहीं हो सकता। वह एक बिंदु से आरंभ होकर धीरे-धीरे फैल कर संपूर्ण होता है। इसलिए, उद्धार की दैवी योजना में, परमेश्वर पहले एक व्यक्ति को प्रधान होने के लिये पूर्वनियत करता है, और तब उसे किसी मिशन के लिये बुलाता है।

ऐसी बुलाहट के लिये इस व्यक्ति के पास क्या योग्यता होनी चाहिए? सबसे पहले, इस प्रधान व्यक्ति को चुने हुए लोगों में पैदा होना चाहिए। फिर, चुने हुए लोगों के बीच, उसे ऐसे पैतृक वंशक्रम का होना चाहिये जिन में कई अच्छी उपलब्धियाँ पाई जातीं हों। इस उत्कृष्ट वंश की सन्तान के बीच, उसे अपेक्षित चरित्र से संपन्न होना चाहिए। अपेक्षित चरित्र वाले लोगों के बीच, उसे अपने प्रारंभिक जीवन के दौरान आवश्यक गुण विकसित करना चाहिये। अंततः, उन लोगों के बीच जिन्होंने इन गुणों को अर्जित किया है, परमेश्वर पहले उस व्यक्ति को चुनता है जो ऐसे समय और स्थान में रहता हो जो परमेश्वर की ज़रूरतों के अनुकूल हो।

---

[३२५] २ पतरस ३:९

संभाग ४

बाईबल के उन पदों का स्पष्टीकरण जो पूर्ण पूर्वनियति के सिद्धांत का समर्थन करते हैं

अब तक, हमने पूर्वनियति के विषय में विभिन्न मुद्दों का विश्लेषण किया है। आगे, हम फिर से बाईबल के उन पदों का जिनसे ऐसा लगता है कि वे यह सुझाव देते हैं कि हर कार्य का परिणाम परमेश्वर की पूर्ण पूर्वनियति के द्वारा निर्धारित किया जाता है, और उनके अर्थ स्पष्ट करेंगे।
आएं हम निम्नलिखित पद के साथ शुरू करते हैं:

> क्योंकि जिन्हें उसने पहले से जान लिया है, उन्हें पहले से ठहराया भी है...फिर जिन्हें उसने पहले से ठहराया, उन्हें बुलाया भी, और जिन्हें बुलाया, उन्हें धर्मी भी ठहराया, जिन्हें उसने धर्मी ठहराया उन्हें महिमा भी दी है। रोमियों ८:२९-३०

परमेश्वर सर्वज्ञ होने के नाते, पहले से जानता है कि कौन पुनरुद्धार की योजना में प्रधान बनने के योग्य है। परमेश्वर जिन्हें पूर्वनिर्धारित करता है उन्हें वह पहले से जानता है; तब वह उन्हें दैवी योजना के उद्देश्य को पूरा करने के लिये बुलाता है। व्यक्ति को बुलाना परमेश्वर की जिम्मेदारी है, लेकिन केवल यह तथ्य उस व्यक्ति को परमेश्वर के सामने धर्मी ठहरने और महिमा के लिये समर्थ नहीं बनाता है। जब वह व्यक्ति बुलाए जाने के बाद अपनी जिम्मेदारी पूरी करता है तब ही वह धर्मी और महिमा का पात्र बनता है। इस प्रकार किसी व्यक्ति की महिमा के विषय में परमेश्वर की पूर्वनियति उसकी अपने हिस्से की जिम्मेदारी पूरा होने पर निर्भर है। चूँकि बाईबल का यह पद मनुष्य के हिस्से की जिम्मेदारी का उल्लेख नहीं करता है, इसलिये लोग इसका गलत मतलब निकाल सकते हैं कि सभी मामले पूरी तरह परमेश्वर की पूर्ण पूर्वनियति द्वारा ही निर्धारित किए जाते हैं। यह लिखा है,

> मैं जिस पर दया करना चाहूँ उस पर दया करूँगा, और जिस कसी पर कृपा करना चाहूँ उसी पर कृपा करूँगा। अतः यह न तो चाहने वाले की, न दौड़ने वाले की परन्तु दया करने वाले परमेश्वर की बात है। रोमियों ९:१५-१६

जैसा कि ऊपर बताया गया है, केवल परमेश्वर ही उसे पहले से जानता है और चुनता है जो पुनरुद्धार की दैवी योजना के उद्देश्य को पूरा करने के लिए सबसे उपयुक्त व्यक्ति है। यह अधिकार परमेश्वर का है कि वह किस व्यक्ति का चयन करे और उस पर दया करे; यह मनुष्य के प्रयास पर बिल्कुल निर्भर नहीं है। यह पद परमेश्वर की शक्ति और कृपा के महत्व पर ज़ोर देने के लिये लिखा गया था। पौलुस ने यह भी कहा,

> क्या कुम्हार को मिट्टी पर अधिकार नहीं कि एक ही लोंदे में से एक बरतन आदर के लिये, और दूसरे को अनादर के लिये बनाए? रोमियों ९:२१

यह पहले स्पष्ट किया गया है कि परमेश्वर ने मनुष्य को उनके हिस्से की ज़िम्मेदारी दी है ताकि,

इस शर्त के आधार पर वह उन्हें सृष्टि की अन्य वस्तुओं से अधिक प्रेम कर सके। इस शर्त से परमेश्वर का आशय यह था कि वह उन्हें सृष्टि का स्वामी होने के योग्य बना सके और कि वे उसकी रचनात्मक प्रवृत्ति को प्राकृतिक रूप से प्राप्त कर सकें। परन्तु मनुष्य ने स्वयं इस शर्त का उल्लंघन किया और वे पतित हो गए। वे कूड़े की तरह हो गये, जो केवल फेंकने के योग्य है। ऐसी स्थिति में, पतित लोगों को शिकायत करने का कोई कारण नहीं है, परमेश्वर उनके साथ चाहे कैसा भी व्यवहार कर सकता है। यह पद हमें यही सिखाता है।

यह लिखा है कि परमेश्वर ने याकूब प्रेम किया और एसाव नफरत की, जब वे अपनी माँ के गर्भ के अंदर ही थे और उन्होंने कोई अच्छा या बुरा नहीं किया था। परमेश्वर ने एक को स्वीकार किया और दूसरे को अस्वीकार, और रिबका से कहा, "जेठा छोटे का दास होगा"।[३२६] इस पक्षपात का कारण क्या था? परमेश्वर ने इसलिये एक से अधिक दूसरे का पक्ष लिया ताकि वह पुनरुद्धार की दैवी योजना में एक विशेष रास्ता तैयार कर सके। इस विषय पर नीचे ब्योरा में बात की जाएगी,[३२७] परमेश्वर ने इज़हाक को इस मंशा से दो पुत्र, एसाव और याकूब दिये, ताकि वह उन्हें कैन और हाबिल के स्थानों पर खड़ा करे। उन्हें क्षतिपूर्ति की उन शर्तों को पुनःस्थापित करना था जो आदम के परिवार में कैन के हाबिल को मार डालने के कारण खो गयी थी, और जो परमेश्वर की इच्छा पूरी करने के लिये और पहिलौठे के अधिकार की पुनः प्राप्ति के लिए आवश्यक थीं। परमेश्वर ने अपनी इच्छा साकार करने की मंशा से याकूब को अपने बड़े भाई एसाव का मन जीतने के लिये हाबिल के स्थान पर रखा और एसाव को कैन के स्थान पर रखा। चूँकि एसाव कैन के स्थान पर था इसलिये वह परमेश्वर की उपेक्षा का पात्र था। चूँकि याकूब हाबिल के स्थान पर था इसलिये वह परमेश्वर के प्रेम का पात्र था।

तथापि, अंत में परमेश्वर किसे स्वीकार या अस्वीकार करता है यह उनके अपने हिस्से की ज़िम्मेदारी को पूरा करने पर निर्भर था। वास्तव में, क्योंकि एसाव आज्ञाकारिता के साथ याकूब की उपस्थिति में आया, इसलिये वह अपनी पिछली स्थिति से जिसमें उसे परमेश्वर की ओर से नफरत मिली, ऊपर उठा और याकूब के बराबर उसने परमेश्वर के प्रेम का आशीर्वाद प्राप्त किया। इसके विपरीत, हालांकि, याकूब शुरू में परमेश्वर का अनुग्रह प्राप्त करने की जगह पर था, यदि वह अपनी ज़िम्मेदारी पूरी करने में विफल होता तो वह यह प्राप्त करने में असमर्थ होता।

जॉन केल्विन जैसे लोगों ने पूर्ण और सम्पूर्ण पूर्वनियति के सिद्धांत को स्थापित किया है जो कि अब भी हमारे वर्तमान दिन में माना जाता है। यह इसलिये क्योंकि उनका विश्वास इस गलत धारणा पर आधारित था कि परमेश्वर की इच्छा की परिपूर्णता केवल परमेश्वर की शक्ति के कार्य पर निर्भर होती है। वे पुनरुद्धार की दैवी योजना के उद्देश्य की पूर्ति के लिये परमेश्वर के हिस्से की जिम्मेदारी और मनुष्य के हिस्से की ज़िम्मेदारी के बीच के यथार्थ संबंध से अनभिज्ञ थे।

---

326 रोमियों ९:१०-१३

327 प्रति-संदर्भ ३:२

दिव्य नियम प्रतिपादन

भाग १.

अध्याय ७

ख्रीस्त-बोध

विषय-सूची

		पृष्ठ
खीस्त-बोध (मसीह का शैक्षिक अध्ययन)		१८०
संभाग १	किसी व्यक्ति का मूल्य जिसने सृष्टि का उद्देश्य साधित किया है	१८१
संभाग २	यीशु और वह व्यक्ति जिसने सृष्टि का उद्देश्य साधित किया है	१८३
२.१	पूर्ण आदम, यीशु और जीवन के वृक्ष की पुनःप्राप्ति	१८३
२.२	यीशु, मनुष्य और सृष्टि के उद्देश्य की पूर्ति	१८३
२.३	क्या यीशु स्वयं परमेश्वर है?	१८४
संभाग ३	यीशु और पतित लोग	१८७
संभाग ४	नए सिरे से जन्म लेना और ट्रिनिटी	१८८
४.१	नए सिरे से जन्म लेना	१८८
	४.१.१ यीशु और पवित्र आत्मा और उनका नए सिरे से जन्म देने का मिशन	१८८
	४.१.२ यीशु और पवित्र आत्मा और वचन के द्वैत अभिलक्षण	१८९
	४.१.३ यीशु और पवित्र आत्मा के द्वारा नए सिरे से आत्मिक जन्म लेना	१९०
४.२	ट्रिनिटी (पिता-पुत्र-पवित्र आत्मा)	१९०

ख्रीस्त-बोध (मसीह का शैक्षिक अध्ययन)

पतित लोग, जो मुक्ति की तलाश करते हैं, उनके लिये अन्य अनेक प्रश्नों में शायद सबसे आवश्यक प्रश्न जिसका वह हल करना चाहते हैं वह ख्रीस्त-बोध से संबंधित है। इन प्रश्नों के दायरे में शामिल हैं, ट्रिनिटी का प्रश्न, जो पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के बीच के संबंध के बारे में है, फिर यीशु, पवित्र आत्मा और पतित लोगों के बीच के संबंधों के बारे में और नए सिरे से जन्म लेने से संबंधित प्रश्न। आज तक इन मुद्दों पर विवाद का स्पष्ट रूप से समाधान नहीं किया गया है। परिणाम स्वरूप, ईसाई धर्म के तौर-तरीकों और विश्वास में काफी अस्तव्यस्तता है। इस विषय को समझने के लिये मनुष्य के मूल मूल्य को समझना अनिवार्य है। ख्रीस्त-बोध के सवालों का उत्तर देने के लिए आधार के रूप में पहले हम इस मुद्दे पर चर्चा करेंगे।

किसी व्यक्ति का मूल्य जिसने सृष्टि का उद्देश्य साधित किया है

आइए हम उस व्यक्ति का मूल्य जिसने सृष्टि का उद्देश्य साधित कर लिया हो; अर्थात, पूर्णता प्राप्त कर लेने के पश्चात आदम या हव्वा के मूल्य के बारे में चर्चा करते हैं। ऐसे व्यक्ति का मूल्य हम कई दृष्टिकोण से देख सकते हैं।

सबसे पहले हम यह देखते हैं कि, परमेश्वर और पूर्ण रूप से प्रौढ़ व्यक्ति के बीच का संबंध द्वैत-अभिलक्षणों के बीच के संबंध के सदृश्य होता है। मनुष्य के अमूर्त मन और शरीर की रचना परमेश्वर के द्वैत-अभिलक्षणों की समानता में की गई है।[328] इस प्रकार, परमेश्वर और एक व्यक्ति, जिसने अपने व्यक्तिगत चरित्र में पूर्णता प्राप्त कर ली है उनके बीच के संबंध की तुलना, उस व्यक्ति के द्वैत-अभिलक्षणों के बीच के संबंध से की जा सकती है, यानी, उसके मन और शरीर के बीच के संबंध से। जिस प्रकार शरीर अमूर्त मन का शारीरिक पात्र साझी होने के लिये उसकी समानता में रचा गया है, मनुष्य अमूर्त परमेश्वर की समानता में उसका शारीरिक पात्र साझी होने के लिये रचा गया है। जिस प्रकार मन और शरीर के बीच अटूट संबंध होता है वैसा ही एक सच्चे इंसान का, जिसने परमेश्वर पर केंद्रित चार-दिशा-आधार स्थापित किया है, परमेश्वर के साथ अखंडनीय संबंध और एकता होती है। इस गठबंधन में, वह व्यक्ति परमेश्वर के हृदय को अपनी वास्तविकता के रूप में अनुभव करता है। ऐसा व्यक्ति जो अपने चरित्र में पूरी तरह से सिद्ध पुरुष बन चुका हो वह परमेश्वर का मंदिर है जिसमें परमेश्वर लगातार रह सकता है, और उसमें दिव्य प्रकृति होती है।[329] पूर्णता की इस अवस्था के बारे में यीशु ने कहा, “इसलिये चाहिये कि तुम सिद्ध बनो, जैसा तुम्हारा स्वर्गीय पिता सिद्ध है।”[330] इस प्रकार, हम देखते हैं कि जिस व्यक्ति ने सृष्टि का उद्देश्य साधित कर लिया है उसे परमेश्वर के बराबर दिव्य मान प्राप्त होता है।

दूसरा, आईये हम मनुष्य के मूल्य पर सृष्टि के उद्देश्य के दृष्टिकोण से, जिसके लिये वह रचा गया था, विचार करें। परमेश्वर ने मनुष्य की सृष्टि उसके साथ आनन्द से रहने के तात्पर्य से की थी। प्रत्येक मनुष्य के पास एक विशिष्ट व्यक्तिगत चरित्र होता है। धरती पर चाहे कितने अरब लोग क्यों न जन्म लें, किन्हीं दो व्यक्तियों का व्यक्तित्व ठीक एक सा कभी नहीं होता है। हर व्यक्ति परमेश्वर का शारीरिक पात्र साझी होता है जो परमेश्वर की दोहरी विशेषताओं के एक विशिष्ट पहलू प्रकट करता है। इसलिए, वह व्यक्ति पूरे जगत में केवल एक ही होता है जो परमेश्वर की प्रकृति के उस विशिष्ट पहलू को उत्तेजित करके उसे उल्लास दे सकता है।[331] इस प्रकार हर एक व्यक्ति जिसने सृष्टि का उद्देश्य पूरा किया है उसका अस्तित्व जगत में अद्वितीय है। हम इस प्रकार बुद्ध के कहे गये इस सत्य की पुष्टि कर सकते हैं, “स्वर्ग

[328] प्रति-संदर्भ—सृष्टि १.१

[329] १ कुरिंथियों ३:१६, प्रति-संदर्भ सृष्टि ३.२

[330] मत्ती ५:४८

[331] प्रति-संदर्भ सृष्टि ३.२

में और पृथ्वी पर मैं अकेला ही माननीय हूँ" ।[३३२]

तीसरा, आइए अब हम, जैसा कि सृष्टि के नियम में स्पष्ट किया गया है, मनुष्य के मूल्य का जगत के साथ उसके संबंध के आधार पर विचार करेंगे। वह व्यक्ति जिसने सृष्टि का उद्देश्य पूरा कर लिया है वह पूरे जगत का शासन कर सकता है।[३३३] आत्मा और शरीर दोनों में होने के कारण वह अपनी आत्मा के द्वारा आत्मालोक और शरीर के द्वारा भौतिक दुनिया का शासन कर सकता है। जब मनुष्य बिचवई के रूप में काम करता है तो दोनों लोक पारस्परिक संबंध बनाते हैं और एक संगठित जगत स्थापित करते हैं जो परमेश्वर का पूर्ण पात्र साझी होता है।

हमने सृष्टि के नियम से सीखा है कि जगत मनुष्य की दोहरी विशिष्टता का वास्तविक प्रकटीकरण है। व्यक्ति की आत्मा आत्मिक दुनिया के सभी तत्वों को संपुटित करती हैं जबकि उसका शरीर भौतिक दुनिया के सभी तत्वों को संपुटित करता है। इस प्रकार, वह व्यक्ति जिसने सृष्टि का उद्देश्य को पूरा किया हो, जगत की सब वस्तुओं के तत्वों को संपुटित करता है। यथा, मनुष्य जगत का एक लघु रूप कहा जाता है। इन कारणों से मनुष्य का मूल्य समस्त जगत के मूल्य के बराबर है। इस प्रकार, हम यीशु के ये वचन इस नए प्रकाश में समझ सकते हैं, "यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे, और अपने प्राण की हानि उठाए, तो उसे क्या लाभ होगा?"[३३४]

मान लीजिये कि एक उत्तम मशीन है, जिसका हर पुरज़ा दुनिया में अपनी तरह का केवल एक ही है, और वैसा ही दूसरा प्रतिस्थापन करने या उपलब्ध करने का कोई और रास्ता नहीं है। वह कितना छोटा और अनावश्यक क्यों न हो, उसका मूल्य पूरी मशीन के मूल्य जितना होगा। इसी तरह, एक पूरी तरह से सयाना व्यक्ति सारे जगत में अद्वितीय है। वह कितना महत्वहीन क्यों न लगता हो, कोई फर्क नहीं पड़ता, उसका मान पूरे जगत के बराबर है।

[५] बुद्ध के जन्म के बाद पहले शब्द जो उसको आरोपण किए गये हैं (छंग अ-बन छिंग) टी ११४ सी १-२

[३३३] उत्पत्ति १:२८

[३३४] मत्ती १६:२६

संभाग २

यीशु और वह व्यक्ति जिसने सृष्टि का उद्देश्य साधित किया है

२.१ पूर्ण आदम, यीशु और जीवन के वृक्ष की पुन:प्राप्ति

मानव इतिहास पुनरुद्धार (उद्धार) की दैवी योजना का इतिहास है। उसका लक्ष्य पृथ्वी पर स्वर्ग के राज्य की स्थापना करना है, इतिहास के अंत में, जब जीवन का वृक्ष जो अदन की वाटिका में गँवा दिया गया था, फिर से वापस प्राप्त किया जाएगा।[३३५] हम अदन के बगीचे के जीवन के पेड़ की तुलना अंतिम दिनों में बहाल किए जाने वाले जीवन के पेड़ के साथ करके, पूर्ण आदम और यीशु के संबंध को समझ सकते हैं।

जैसे हमने पहले चर्चा की है,[३३६] यदि आदम ने सृष्टि का आदर्श पूरी तरह से साधित कर लिया होता, तो वह जीवन का वृक्ष बन गया होता और उसका सारा वंश भी जीवन के वृक्ष बन गये होते। यद्यपि, आदम के पतन के कारण परमेश्वर की इच्छा कुंठित हो गई थी, तो भी मानव जाति जीवन के वृक्ष के रूप में फिर से बहाल होने की आशा करती आई है।[३३७] चूँकि पतित व्यक्ति स्वयं अपने प्रयासों से अपने आप को पूरी तरह से जीवन के वृक्ष के रूप में बहाल नहीं कर सकता है, इसलिये एक ऐसे व्यक्ति को जिसने सृष्टि के आदर्श को पूरा कर लिया है जीवन के वृक्ष के रूप में आकर सभी लोगों को अपने आप में आरोपित करना होगा। बाईबल में, यीशु मसीह का चित्रण जीवन के वृक्ष से किया गया है। यदि आदम ने अदन की वाटिका में पूर्णता का आदर्श जो जीवन के वृक्ष के द्वारा दर्शाया गया है साधित कर लिया होता, और यीशु, जो प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में जीवन के वृक्ष से चित्रित किया गया है, दोनों सृष्टि के लक्ष्य को साधित किये जाने के अर्थ में एक समान हैं। इस प्रकार, दोनों का मूल्य बराबर होता।

२.२ यीशु, मनुष्य और सृष्टि के उद्देश्य की पूर्ति

आइए हम यीशु के मूल्य की तुलना, एक पूर्ण चरित्र वाले व्यक्ति के साथ करते हैं। सृष्टि के उद्देश्य के संबंध से एक पूर्णतया प्रौढ़ व्यक्ति परमेश्वर के जैसा सिद्ध होता है।[३३८] उसके पास परमेश्वर के जैसी दिव्य प्रकृति होने के कारण वह सर्वथा अमूल्य है। चूंकि परमेश्वर अनन्त है, वह व्यक्ति जो पूर्णता में उसका मूर्त रूप पात्र साझी होने के लिये रचा गया है उसमें भी अनन्त जीवन होना चाहिये। एक पूरी तरह से परिपक्व व्यक्ति संपूर्ण जगत में अद्वितीय है। इसके अतिरिक्त, क्योंकि वह सारी प्राकृतिक दुनिया का प्रभु है, जिसके बिना वह अपना पूर्ण मूल्य प्राप्त नहीं कर सकती, इस तरह वह संपूर्ण जगत का महत्व रखता है।

---

335 प्रकाशितवाक्य २२:१४, उत्पत्ति ३:२४

336 प्रति-संदर्भ—पतन १.१.१

337 नीतिवचन १३:१२; प्रकाशितवाक्य २२:१४

338 मत्ती ५:४८

सृष्टि का आदर्श साधित करने वाले व्यक्ति से अधिक और कुछ मूल्यवान नहीं है। यह यीशु का मूल्य है जिसने निःसंदेह कल्पना से अधिक उच्च मूल्य प्राप्त किया था। औपचारिक ईसाई मत में यीशु की दिव्यता की अवधारणा दृढ़ता से स्थापित है, क्योंकि पूर्ण मनुष्य होने के नाते यीशु पूरी तरह से परमेश्वर के साथ एकात्म है। इसलिये यह दृढ़तापूर्वक कहने से कि यीशु वह व्यक्ति है जिसने सृष्टि के उद्देश्य को पूरा कर लिया है, यीशु का मूल्य तनिक भी कम नहीं होता। वास्तव में, सृष्टि का नियम सभी लोगों के मूल्य को, जिन्होंने सृष्टि के आदर्श को पूरा कर लिया है, यीशु के तुलनीय स्तर पर उठाता है।

अब आइए हम बाईबल में कुछ सबूतों की जाँच करें जो इस बात का समर्थन करते हैं कि यीशु वह व्यक्ति है जिसने सृष्टि के उद्देश्य को पूरा किया है। यह लिखा है:

> क्योंकि परमेश्वर एक ही है, और परमेश्वर और मनुष्यों के बीच एक ही बिचवई है, अर्थात यीशु मसीह जो मनुष्य है। १तीमुथियुस २:५

> क्योंकि जैसा एक मनुष्य के आज्ञा न मानने से बहुत से लोग पापी ठहरे, वैसे ही एक मनुष्य के आज्ञा मानने से बहुत से लोग धर्मी ठहरेंगे। रोमियों ५:१९

> क्योंकि जब एक मनुष्य (आदम) के द्वारा मृत्यु आई, तो एक मनुष्य (यीशु) के द्वारा मरे हुओं का पुनरुत्थान भी आया। १कुरिंथियों १५:२१

> क्योंकि उसने एक दिन ठहराया है जिसमें वह उस मनुष्य के द्वारा धर्म से जगत का न्याय करेगा, जिसे उसने ठहराया है...। प्रेरितों १७:३१

इस प्रकार, बाईबल यह स्पष्ट रूप से यह दर्शाती है कि यीशु एक इनसान है। ख़ास करके, उसे मनुष्य के रूप में आना था ताकि वह सद्-वृत्त (सच्चा) माता-पिता बनकर मनुष्य को नए सिरे से जन्म दे सके।

२.३ क्या यीशु स्वयं परमेश्वर है?

जब फिलिप ने यीशु से कहा मुझे परमेश्वर दिखा, तो यीशु ने कहा, "जिसने मुझे देखा है उसने पिता को देखा है, तू क्यों कहता है कि पिता को हमें दिखा? क्या तू विश्वास नहीं करता कि मैं पिता में हूँ और पिता मुझ में है?"[३३९] यीशु के बारे में लिखा हुआ है कि "वह जगत में था और जगत उसके द्वारा उत्पन्न हुआ, और जगत ने उसे नहीं पहचाना।"[३४०] यीशु ने यह भी कहा, "मैं तुम से सच-सच कहता हूँ, कि पहले इसके कि अब्राहम उत्पन्न हुआ मैं हूँ।"[३४१] बाईबल के इन पदों पर आधारित, बहुत से ईसाई लोगों का यह विश्वास है कि यीशु स्वयं सर्जक परमेश्वर है।

यह कहा जा सकता है कि यीशु परमेश्वर है, क्योंकि वह मनुष्य जिसने सृष्टि का आदर्श साधित कर लिया है और जो परमेश्वर के साथ एकात्म होकर रहता है, उसकी प्रकृति दिव्य है। हालाँकि, वह

---

[३३९] यूहन्ना १४:९-१०
[३४०] यूहन्ना १:१०
[३४१] यूहन्ना ८:५८

स्वयं परमेश्वर नहीं है। परमेश्वर और यीशु के बीच संबंध को मन और शरीर के बीच संबंध के अनुरूप माना जा सकता। क्योंकि शरीर मन का दैहिक पात्र साझी है, जो कि मन के जैसा दिखता है और मन के साथ एकात्मता से कार्य करता है, इसलिये शरीर मन का दूसरा रूप समझा जा सकता है; परन्तु यह वस्तुतः मन नहीं है। इस उपमा से, चूँकि यीशु परमेश्वर के साथ एकात्म है और परमेश्वर का मूर्त रूप है, इस प्रकार वह परमेश्वर का दूसरा रूप समझा जा सकता है, परन्तु वह परमेश्वर नहीं है। यह भी सच है कि जिसने यीशु को देखा है यह कहा जा सकता है कि उसने परमेश्वर को देखा है,[३४२] परन्तु यह कहने से यीशु का तात्पर्य यह नहीं था कि वह स्वयं परमेश्वर है।

बाईबल यीशु को वचन का देहधारी के रूप में दर्शाती है।[३४३] इस पद का अर्थ है कि यीशु वचन का मूर्त रूप है; यानी वह व्यक्ति जिसमें वचन जीवित है। आगे हम यह भी पढ़ते हैं कि सभी वस्तुएं वचन के द्वारा रचीं गईं हैं, और आगे, कि जगत यीशु के द्वारा सृजा गया।[३४४] इस प्रकार, यीशु के लिये कहा जा सकता है कि यीशु सर्जक है। इन पदों का अर्थ समझने के लिए, इस बात पर विचार करें कि जगत सृष्टि के नियम के अनुसार पूर्ण चरित्र वाले व्यक्ति की आंतरिक प्रकृति और बाह्य रूप का वस्तुगत प्रकटीकरण है। जगत के सभी तत्व परिपक्व व्यक्ति में पूरी तरह से संपुटित पाए जाते हैं और उसके चारों ओर सामंजस्य से गूँजते रहते हैं। इस अर्थ से, यह कहा जा सकता कि जगत एक पूर्ण इंसान के द्वारा बनाया गया है। इसके अतिरिक्त, परमेश्वर की यह मंशा थी कि मनुष्य प्राकृतिक दुनिया का प्रभु और रचयिता हो इसी लिये उसने मनुष्य को निर्माता का चरित्र और शक्तियाँ प्रदान कीं; परन्तु यह उस समय संभव हो सकता है जब वे अपनी जिम्मेदारी को पूरा करके पूर्णता प्राप्त कर लें। इस दृष्टिकोण से देखा जाए तो, यह पद हमारी समझ से समर्थित हैं कि यीशु वह व्यक्ति था जिसने सृष्टि का उद्देश्य पूरा कर लिया है; पर वह यह नहीं दर्शाते हैं कि यीशु स्वयं निर्माता है।

यीशु ने यह भी कहा, “कि पहले इसके कि अब्राहम उत्पन्न हुआ, मैं हूँ।”[३४५] यीशु अब्राहम का वंशज था। यद्यपि, पुनरुद्धार की दैवी योजना के संबंध से यीशु अब्राहम का वंशज होता है तो भी क्योंकि, समस्त मानव को नए सिरे से जन्म देने वाले के रूप में यीशु उसके पूर्वज के स्थान पर है। इसलिये हमें यह समझना चाहिए कि यीशु का ऐसा कहने का मतलब यह नहीं था कि वह स्वयं परमेश्वर है। पृथ्वी पर यीशु एक इंसान के रूप में था, इस तथ्य के अलावा कि उसमें मूल पाप नहीं था हम में से वह किसी से फर्क नहीं था। अपने जी उठने के बाद आत्मालोक में भी यीशु एक आत्मा के रूप में रहता है, जैसे कि उसके चेले रहते हैं। उन दोनों के बीच केवल इतना फर्क है कि यीशु एक दिव्य-आत्मा के रूप में रह कर, प्रकाश की अत्यंत तेजस्वी किरणें प्रसारित करता है, जबकि उसके शिष्य, जीव-आत्माओं के रूप में उस प्रकाश को प्रतिबिंबित करते हैं।

---

342 यूहन्ना १४:९-१०

343 यूहन्ना १:१४

344 यूहन्ना १:३, १०

345 यूहन्ना ८.५८

यह लिखा है अपने पुनरुत्थान के बाद से, यीशु परमेश्वर के सामने हमारे लिये अनुनय करता है[३४६] जिस तरह जब वह पृथ्वी पर था करता था।[३४७] यदि यीशु परमेश्वर है, तो वह हमारे लिये खुद से किस तरह मध्यस्थता कर सकता है? इसके अतिरिक्त, यीशु ने परमेश्वर को "पिता" कह कर बुलाया, इस प्रकार यीशु अंगीकार करता है कि वह स्वयं परमेश्वर नहीं है।[३४८] यदि यीशु परमेश्वर होता, तो वह शैतान के द्वारा किस प्रकार परखा जा सकता है? सूली पर यीशु ने यह शब्द कहे, "हे परमेश्वर, हे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों छोड़ दिया"? इससे हम यह अंतिम निष्कर्ष पर निकाल सकते हैं कि यीशु स्वयं परमेश्वर नहीं था।[३४९]

[३४६] रोमियों ८:३४
[३४७] लूक २३:३४
[३४८] यूहन्ना १७:१
[३४९] मत्ती २७:४६

संभाग ३

यीशु और पतित लोग

एक पतित व्यक्ति के पास, एक सच्चे व्यक्ति के मूल्य के बराबर जिसने सृष्टि का उद्देश्य पूरा कर लिया है, कुछ नहीं है। बल्कि वह इतने निम्न स्तर पर गिरा हुआ है कि स्वर्ग दूतों को अपने से उच्च समझता है जो उसके अधीन रहने के लिये रचे गये थे। अपितु, क्योंकि यीशु, जिसने सृष्टि का उद्देश्य पूरा किया है, एक सच्चे व्यक्ति के पूरे मूल्य के साथ आया, और "परमेश्वर ने सब कुछ उसके पांवों के तले कर दिया।"[३५०] पतित मनुष्य मूल पाप से कलंकित हैं जिसके कारण शैतान उस पर हमला कर सकता है। किंतु, यीशु मूल पाप से वंचित होने के कारण, उसमें कोई ऐसी वजह नहीं पाई गई जिससे शैतान उस पर हमला कर सके। एक पतित व्यक्ति परमेश्वर का दिल और उसकी इच्छा नहीं समझ सकता। अधिक से अधिक वह केवल उसकी झलक देख सकता है। इसके विपरीत, यीशु न केवल परमेश्वर के दिल की इच्छा को अच्छी तरह से समझ सकता था पर वह परमेश्वर के दिल को अपनी वास्तविकता के रूप में अपने दैनिक जीवन में अनुभव करता था।

एक व्यक्ति का कोई मूल मूल्य नहीं होता जब तक वह पतित अवस्था में रहता है। परन्तु यदि, यीशु के द्वारा जो सच्चा माता-पिता है, उसका आत्मिक और शारीरिक रूप से नए सिरे से जन्म हो जाए और वह मूल पाप से शुद्ध होकर एक अच्छा व्यक्ति बन जाए, तो वह एक ऐसे व्यक्ति में बहाल हो जाएगा जिसने यीशु की तरह सृष्टि के उद्देश्य को पूरा कर लिया है। तब यीशु के साथ उसका रिश्ता, जैसे बच्चों का रिश्ता उनके माँ-बाप के साथ होता है, वैसा हो जाएगा। भले ही उनका रिश्ता लंब क्रम में हमेशा माता-पिता और बच्चों के जैसा रहे, परन्तु उनके मूल मूल्य में कोई फर्क नहीं होगा। जिस तरह, मसीह कलीसिया का सिर है[३५१] और हम उसके शरीर और अंग हैं,[३५२] उसी तरह, यीशु मुख्य मंदिर है और हम मंदिर की शाखाएं हैं। यीशु दाखलता है और हम डालियाँ हैं।[३५३] हमें, जो जंगली जैतून की टहनी हैं, इससे पहले कि सच्चे जैतून का वृक्ष बन सकें, यीशु में जो सच्चा जैतून का वृक्ष है[३५४] साटा जाना चाहिए। तदनुसार, यीशु ने हमें "मेरे मित्र" कह कर बुलाया,[३५५] और यह लिखा है कि "जब वह प्रगट होगा तब हम उसके समान होंगे।"[३५६] केवल यीशु ही "पहला फल" है, उसके पुनरागमन पर हम जो मसीह के हैं दूसरा फल होंगे।[३५७]

---

[३५०] १ कुरिंथियों १५:२७
[३५१] इफिसियों १:२२
[३५२] १ कुरिन्थियों १२:२७
[३५३] यूहन्ना १५:५
[३५४] रोमियों ११:१७
[३५५] यूहन्ना १५:१४
[३५६] १यूहन्ना ३:२
[३५७] १ कुरिन्थियों १५:२३

संभाग ४

नए सिरे से जन्म लेना और ट्रिनिटी

ईसाई आध्यात्मविद्या में ट्रिनिटी के सिद्धांत सबसे अधिक रहस्यमय विषयों में से एक रहा है। इसके अतिरिक्त नए सिरे से जन्म लेने से संबंधित सिद्धांत, जो यथोचित रूप से सभी को स्पष्ट लगते हैं, फिर भी उनकी गहरी व्याख्या की जरूरत है। हम इस अनुभाग में इन सिद्धांतों की जांच करेंगे।

४.१ नए सिरे से जन्म लेना

४.१.१ यीशु और पवित्र आत्मा और उनका लोगों को नए सिरे से जन्म देने का मिशन

यीशु ने निकुदेमुस से कहा, "मैं तुझ से सच-सच कहता हूँ, यदि कोई नये सिरे से न जन्मे तब तक वह परमेश्वर का राज्य नहीं देख सकता।"[३५८] नए सिरे से जन्म लेने का अर्थ है दूसरी बार जन्म लेना है। पतित लोगों को नए सिरे से जन्म लेना क्यों आवश्यक है?

यदि आदम और हव्वा ने सृष्टि का आदर्श साधित कर लिया होता और मानवता के सद्-वृत्त माता-पिता (सच्चे माता-पिता) बन गए होते, तो वे मूल पाप से रहित अच्छे बच्चों को जन्म देते और पृथ्वी पर स्वर्ग के राज्य का गठन करते। परन्तु आदम और हव्वा पतित हो गए और अधर्मी माता-पिता बनकर अधर्मी बच्चे पैदा किए, जिन्होंने पृथ्वी पर यह नरक बना दिया। इसी लिये यीशु ने निकुदेमुस से कहा, पतित लोग परमेश्वर के राज्य को नहीं देख सकते जब तक वे पहले, मूल पाप के बिना, बच्चों के रूप में नए सिरे से जन्म न लें।

हम बिना माँ बाप के जन्म नहीं ले सकते। तो फिर, सच्चे माता-पिता कौन हैं जिनके माध्यम से हम मूल पाप से शुद्ध दुबारा जन्म ले सकते हैं, और परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने में सक्षम हो सकते हैं? माता पिता, जिन में मूल पाप है वह ऐसे अच्छे बच्चों को जिनमें मूल पाप नहीं है जन्म नहीं दे सकते। निश्चित रूप से, इस पतित संसार में पाप रहित माता-पिता का मिलना असंभव है। पापहीन माता पिता का स्वर्ग से उतरना आवश्यक है। यीशु वह माता-पिता था जो स्वर्ग से आया था। वह सत्-पिता के रूप में आया ताकि पतित मानव को नए सिरे से जन्म दे, उन्हें मूल पाप से शुद्ध करके अच्छे बच्चों में बदले जो पृथ्वी पर स्वर्ग के राज्य का निर्माण करने के योग्य हों। इसलिए, बाईबल में यह लिखा है, "हमारे प्रभु यीशु के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद हो, जिसने यीशु मसीह को मरे हुओं में से जी उठने के द्वारा अपनी बड़ी दया से हमें जीवित आशा के लिये नया जन्म दिया।"[३५९] यीशु सत्-पिता के रूप में आया, आदम जो बनने में विफल रहा। इस कारण से, बाईबल उसके बारे में यह कहती है कि वह "अंतिम आदम था", और "अनन्त काल का पिता" है।[३६०]

---

[३५८] यूहन्ना ३:३
[३५९] १ पतरस १:३
[३६०] १ कुरिन्थियों १५:४५; यशायाह ९:६

किंतु, पिता अकेले बच्चों को जन्म नहीं दे सकता है। पतित बच्चों को अच्छे बच्चों के रूप में नए सिरे से जन्म लेने के लिये सत्-पिता के साथ एक सत्-माता भी चाहिये। पवित्र आत्मा सत्-माता के सामर्थ्य से आई। इसी लिये यीशु ने नीकुदेमुस से कहा कि जब तक कोई पवित्र आत्मा के द्वारा नए सिरे से जन्म न ले वह स्वर्ग के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता।[३६१]

बहुत लोगों को यह प्रकटन हुआ है कि पवित्र आत्मा स्त्रीलिंग है। यह इसलिये क्योंकि पवित्र आत्मा माँ या दूसरी हव्वा के रूप में आती है। चूँकि पवित्र आत्मा दिव्यता का ज़नाना पहलू है, उसे प्राप्त करने के बिना हम यीशु की दुल्हन नहीं बन सकते। स्त्री होने के नाते, पवित्र आत्मा दिलासा देती है और लोगों के दिलों को छूती है।[३६२] इस तरह वह लोगों को उनके पापों से शुद्ध करती है, और हव्वा ने जो पाप किया था उसका प्रायश्चित करती है। यीशु, जो मर्दाना (यांग) प्रभु है, स्वर्ग में काम करता है, जबकि पवित्र आत्मा जो उसका ज़नाना (यिन) प्रतिरूप है, पृथ्वी पर काम करती है।

४.१.२ यीशु और पवित्र आत्मा और लोगोस के द्वैत अभिलक्षण

लोगोस का अर्थ यूनानी भाषा में "तर्कसंगत नियम" या "वचन" है। बाईबल में लोगोस परमेश्वर[३६३] के पात्र साझी को इंगित करता है और उसके साथ पारस्परिक संबंध रखता है। चूँकि परमेश्वर कर्ता साझी है, और उसमें द्वैत अभिलक्षण हैं, इसलिये लोगोस जो पात्र साझी है उसे भी ऐसे ही द्वैत अभिलक्षणों से बना होना चाहिये। यदि लोगोस द्वैत अभिलक्षणों के बिना होता, तो सब वस्तुएं जो उसके द्वारा बनीं है[३६४] उन में भी द्वैत अभिलक्षण नहीं होते। आदम और हव्वा, परमेश्वर की छवि के मूर्त रूप पात्र साझी हैं, जो लोगोस के द्वैत अभिलक्षणों[३६५] के रूप में अलग-अलग रचे गए थे।

यदि आदम ने पुरुष होकर सृष्टि का आदर्श साधित कर लिया होता और जीवन का वृक्ष बन गया होता, और हव्वा ने भी स्त्री होकर सृष्टि का आदर्श साधित कर लिया होता और भले और बुरे के ज्ञान का वृक्ष बन गई होती, तो वे दोनों मिलकर मानव जाति के सद्-वृत्त (सच्चे) माता-पिता बन कर क़ायम हो गये होते। तब उन्होंने तीन महान आशीर्वादों को भी प्राप्त लिया होता और पृथ्वी पर परमेश्वर का राज्य स्थापित कर लिया होता। बजाए इसके, उनके पतित होने के कारण यह दुनिया पार्थिव नरक बन गई। इसलिये, पतित लोगों को नए सिरे से जन्म देने के लिये यीशु, दूसरे आदम के रूप में, जो जीवन के वृक्ष का प्रतीक है[३६६], सत्-पिता की हैसियत से आया[३६७]। यदि यह सच्च है तो क्या दूसरी हव्वा, जो भले और

---

361 यूहन्ना ३:५
362 रोमियों ५:५, यूहन्ना १४:२६,२७, प्रेरितों ९:३१
363 यूहन्ना १:१
364 यूहन्ना १:३
365 प्रति-संदर्भ—सृष्टि १.१
366 प्रकाशितवाक्य २२.१४
367 १ कुरिन्थियों १५:४५

बुरे के ज्ञान के वृक्ष का प्रतीक हो, मानव जाति की सच्ची माँ[३६८] के मिशन के साथ नहीं आनी चाहिये थी? जो सच्ची माँ के रूप में पतित मानव को नए सिरे से जन्म देने के लिये आई है वह पवित्र आत्मा है।

४.१.३ यीशु और पवित्र आत्मा के द्वारा आत्मिक नए सिरे से जन्म लेना

माता-पिता के प्यार के माध्यम से एक नया जीवन पैदा होता है। जब हम पवित्र आत्मा की प्रेरणा के द्वारा यीशु पर उद्धारकर्ता के रूप में विश्वास करते हैं,[३६९] तो हम आत्मिक सद्-वृत्त माता-पिता का प्रेम प्राप्त करते हैं, जो कि आत्मिक सत्-पिता के रूप में यीशु, और आत्मिक सच्ची माँ पवित्र आत्मा के बीच के आदान-प्रदान संबंध द्वारा उत्पन्न होता है। इस प्रेम के द्वारा हमारे अन्दर नया जीवन भरा जाता है, और हमारी आत्माओं का नए रूप में नए सिरे से जन्म होता है। यह आत्मिक नए सिरे से जन्म लेना है। तो भी, चूंकि मनुष्य का पतन दोनों आत्मिक और शारीरिक रूप में हुआ, इसलिये नए सिरे से जन्म लेने के द्वारा हमारा मूल पाप दोनों आत्मिक और शारीरिक तौर पर शुद्ध होना चाहिये। मानवता को शारीरिक मोक्ष प्रदान करने के लिये मसीह को पृथ्वी पर लौटना आवश्यक है, यह हमारे शारीरिक नए सिरे से जन्म लेने के द्वारा पूरा होगा।

४.२ ट्रिनिटी (पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा)

सृष्टि के नियम के अनुसार, परमेश्वर का सृष्टि का उद्देश्य चार-दशा-आधार की बुनियाद पर पूरा किया जाता है, और आदि-विभाजन-संगठन-क्रिया के द्वारा तीन-पात्र-प्रयोजन को परिपूर्ण करने से स्थापित होता है। सृष्टि के उद्देश्य को पूरा करने के लिये, यीशु और पवित्र आत्मा, जो परमेश्वर के द्वैत अभिलक्षणों को अलग-अलग प्रकट करते हैं, परमेश्वर के सामने पात्र साझी के रूप में खड़े होते हैं। वे परमेश्वर को केन्द्र मान कर आदान-प्रदान के द्वारा एक दूसरे के साथ एकजुट होते हैं और चार-दशा-आधार स्थापित करते हैं। परमेश्वर, यीशु और पवित्र आत्मा मिलकर एक हो जाते हैं, यह एकात्मकता ट्रिनिटी कहलाती है।

आदि में, आदम और हव्वा की सृष्टि से परमेश्वर का उद्देश्य, उन्हें पाल-पोस कर बड़ा करके परमेश्वर पर केन्द्रित चार-दशा-आधार के द्वारा सामंजस्यपूर्ण एकात्मकता में पति-पत्नी बनाकर मानव जाति के सच्चे माता-पिता के रूप में ट्रिनिटी की रचना करने का था। यदि आदम और हव्वा पतित नहीं हुए होते, परमेश्वर के साथ उन्होंने ट्रिनिटी की स्थापना कर ली होती और सद्-वृत्त माता-पिता बन कर अच्छे बच्चे पैदा करते, तो उनका वंश भी उनके जीवन में परमेश्वर पर केन्द्रित अच्छे पति-पत्नी बनते, और उनकी हर एक जोड़ी ट्रिनिटी बनाती। इस तरह परमेश्वर के दिए हुए तीन महान आशीर्वाद परिपूर्ण हो जाते और पृथ्वी पर स्वर्ग का राज्य बन जाता। बजाए इसके, जब आदम और हव्वा पतित हो गए तो उन्होंने शैतान पर केन्द्रित चार-दशा-आधार बनाई; दूसरे शब्दों में उन्होंने शैतान के साथ पतित ट्रिनिटी बनाई। इस तरह

---

368 प्रकाशितवाक्य २२:१७

369 १कुरिन्थियों १२:३

उनके वंशों ने भी शैतान के साथ ट्रिनिटी बनाई, और एक भ्रष्ट और अनैतिक समाज का निर्माण किया। पतन के बाद से, परमेश्वर उस दिन की बाट जोहता है जब वह लोगों को नए सिरे से जन्म दे सके और उनके साथ ट्रिनिटी बनाकर शामिल हो सके। इस उद्देश्य से, परमेश्वर का इरादा था कि वह यीशु और उसकी दुल्हन को दूसरे आदम और हव्वा की जगह पर मानवता का सच्चे माता-पिता बना कर ऊँचा उठाए। परन्तु, पुनर्जीवित यीशु और पवित्र आत्मा की परमेश्वर के साथ एकात्मकता से केवल आत्मिक ट्रिनिटी बन सकी। वे केवल आत्मिक सद्-वृत्त माता-पिता का मिशन पूरा कर सके। इस प्रकार, यीशु और पवित्र आत्मा विश्वासी लोगों को आत्मिक बच्चों की तरह आत्मिक तौर पर नए सिरे से जन्म देते आए हैं और उन्हें आत्मिक ट्रिनिटी में पुनःस्थापित करते हैं।

मसीह को शरीर में फिर से वापस लौटना होगा और उसे अपनी दुल्हन ढूँढनी होगी। और वे पृथ्वी पर परमेश्वर के साथ पूर्ण ट्रिनिटी बनाएंगे और शरीर और आत्मा दोनों में सद्-वृत्त माता-पिता (सच्चे माता-पिता बनेंगे। तब वे पतित लोगों को दोनों शारीरिक और आत्मिक तौर पर नए सिरे से जन्म देंगे, और उनके मूल पाप को निकालेंगे और इस तरह वे परमेश्वर को केन्द्र में रख कर ट्रिनिटी स्थापित करने में समक्ष होंगे। इस तरह जब पतित लोगों का पुनरुद्धार होगा तब वे परमेश्वर पर केन्द्रित चार-दशा-आधार स्थापित कर सकेंगे, अंततः, वे पृथ्वी पर स्वर्ग का राज्य, जहाँ परमेश्वर के तीन महान आशीर्वाद पूरे होते हैं निर्माण करने में सक्षम होंगे।

दिव्य नियम प्रतिपादन

भाग २

पुनरुद्धार का परिचय

विषय सूची

भाग २	पृष्ठ
पुनरुद्धार का परिचय	१९३
संभाग १ क्षतिपूर्ति द्वारा पुनरुद्धार का नियम	१९५
१.१ क्षतिपूर्ति द्वारा पुनरुद्धार	१९५
१.२ मसीह के लिये नींव	१९७
१.२.१ विश्वास की नींव	१९८
१.२.२ वास्तविक नींव	१९९
संभाग २ पुनरुद्धार की दैवी योजना की अवधि	२०१
२.१ पुनरुद्धार की दैवी योजना की अवधि के युग	२०१
२.२ पुनरुद्धार की दैवी योजना में युगों की अवधि का वर्गीकरण	२०२
२.२.१ परमेश्वर के वचन के संदर्भ में वर्गीकृत युग	२०२
२.२.२ परमेश्वर के पुनरुत्थान के कार्य के संदर्भ में वर्गीकृत युग	२०३
२.२.३ दैवी योजना के संदर्भ में खोए हुए विश्वास के काल को क्षतिपूर्ति द्वारा पुनर्स्थापित करने के लिए वर्गीकृत किए गए युग	२०३
२.२.४ मसीह की नींव के बढ़ते हुए कार्यक्षेत्र के संदर्भ से वर्गीकृत युग	२०४
२.२.५ उत्तरदायित्व के संदर्भ से वर्गीकृत युग	२०४
२.२.६ दैवी योजना में समानांतर घटनाओं के संदर्भ से वर्गीकृत युग	२०५
संभाग ३ पुनरुद्धार की दैवी योजना का इतिहास और मैं	२०६

भाग २

पुनरुद्धार (उद्धार) का परिचय

पुनरुद्धार की दैवी योजना मनुष्य को उसकी मूल शुद्ध अवस्था में, जहाँ वह अपनी सृष्टि का उद्देश्य पूरा कर सकें, बहाल करने के लिये परमेश्वर के कार्यों को दर्शाती है। जैसे कि भाग १ में चर्चा की गई है कि मनुष्य का पतन संवृद्धि चरण[३७०] के ऊपरी खंड में हुआ था, तब से हम शैतान के प्रभुत्व में पड़ गए हैं। शैतान के प्रभाव को अंत करने के लिए परमेश्वर मनुष्य के उद्धार का काम करता है। फिर भी, जैसे कि ख्रीस्त-बोध में समझाया गया है कि इससे पहले कि हम शैतान के बंधनों को तोड़ सकें, और पतन से पहले के जैसी स्थिति में पुनर्स्थापित किए जा सकें हमारे मूल पाप का निकाला जाना आवश्यक है। यह उस समय संभव है, जब हम नए सिरे से मसीह के द्वारा, जो सद्-वृत्त माता-पिता (सच्चे मात-पिता) हैं, जन्म लें। इसे और सफाई से इस तरह से समझा जा सकता है: अपने आप को शैतान से अलग करने के लिए पहले हमें एक मियाद के माध्यम से होकर जाना ज़रूरी है। यह हम अपने आप को संवृद्धि चरण के ऊपरी हिस्से के उस आध्यात्मिक स्तर पर, जिस स्तर तक आदम और हव्वा पतन से पहले पहुँच गये थे, बहाल करने के लिये करते हैं। इस नींव पर, हम मसीह को प्राप्त कर सकते हैं और पुनर्जन्म ले सकते हैं; इस तरह हम मानवता के पतन से पहले की मूल अवस्था में पूरी तरह से बहाल किये जा सकते हैं। अंत में, मसीह के पीछे चलने के द्वारा हमें प्रौढ़ता की ओर बढ़ते रहना चाहिये ताकि हम सृष्टि का उद्देश्य पूरा कर सकें।

चूँकि पुनरुद्धार की दैवी योजना परमेश्वर का पुनर्निर्माण का कार्य है, उसका लक्ष्य सृष्टि के उद्देश्य की पूर्ति करना है, परमेश्वर अपनी दैवी योजना नियम के अनुसार कार्याविन्त करता है। पुनरुद्धार की दैवी योजना के दौरान, यह नियम पुनरुद्धार का नियम कहलाता है। आइए हम, पुनरुद्धार की दैवी योजना किस प्रकार संपन्न की जाती है इसका अध्ययन करें।

---

[३७०] प्रति-संदर्भ—सृष्टि ५.२.१, पतन ४.१

संभाग १

क्षतिपूर्ति द्वारा पुनरुद्धार का नियम

१.१ क्षतिपूर्ति द्वारा पुनरुद्धार

क्षतिपूर्ति के माध्यम से पुनरुद्धार के नियम पर चर्चा करने से पहले, हमें यह समझना चाहिए कि पतन के कारण, परमेश्वर और शैतान से संबंधित मनुष्य की क्या स्थिति थी। यदि पहले मानव पूर्वज पतित नहीं हुए होते पर पूर्ण होकर परमेश्वर के साथ एक में दिल हो जाते, तो उनका संबंध केवल परमेश्वर के साथ रहता। परंतु पतन के कारण, वे शैतान के साथ ख़ूनी रिश्ते से जुड़ गए, इस हालत ने उन्हें उसके साथ भी लेन-देन रखने से मजबूर किया। आदम और हव्वा के पतन के तत्पश्चात, जब उनमें मूल पाप आ गया था, परन्तु, उन्होंने अभी तक कोई अच्छा या बुरा काम नहीं किया था, उस समय वे मध्यवर्ती स्थिति में थे जहाँ वे परमेश्वर और शैतान दोनों से संबंध रखते थे। परिणाम स्वरूप, उनके वंश भी मध्यवर्ती स्थिति में हो गए। उदाहरण के तौर पर, पतित संसार में एक व्यक्ति जो यीशु में विश्वास नहीं करता है लेकिन एक ईमानदार जीवन बिताता है। जब तक वह ऐसा धार्मिक जीवन बिताता है तब तक शैतान उसे नरक में नहीं खींच सकता; परन्तु परमेश्वर भी उसे वैकुंठ में नहीं ला सकता जब तक वह यीशु पर विश्वास नहीं करता। वह मध्यवर्ती अवस्था में रहता है। उसकी आत्मा आत्मालोक के मध्यवर्ती क्षेत्र में रहती है जो कि न तो वैकुंठ है और ना ही नरक है।

परमेश्वर पतित लोगों को जो मध्यवर्ती स्थिति में हैं कैसे शैतान से अलग करता है? शैतान उनके साथ वंश के आधार पर संबंध रखता है। इसलिए, जब तक लोग कोई ऐसा कार्य नहीं करते जिस के आधार पर परमेश्वर दावे के साथ उन्हें अपना कह सके तब तक कोई ऐसा रास्ता नहीं है जिससे परमेश्वर उन्हें स्वर्गीय पक्ष में पुनर्स्थापित कर सकता है। दूसरी ओर, शैतान यह मानता है कि परमेश्वर मनुष्य का निर्माता है। जब तक शैतान किसी पतित व्यक्ति में कोई ऐसी शर्त न पाए जिसके आधार पर वह व्यक्ति पर हमला कर सके, तो वह भी मनमाने उसको अपने पक्ष में खींचने का कोई दावा नहीं कर सकता। इस तरह यदि वह कोई अच्छा काम करे तो परमेश्वर की ओर जाएगा और यदि वह कोई बुरा काम करे तो शैतान की ओर जाएगा।

उदाहरण की तौर पर, जब आदम और हव्वा मध्यवर्ती स्थिति में थे, तब परमेश्वर ने उनके बच्चों को, यानी कैन और हाबिल को बलिदान करने का निर्देश दिया ताकि उनके लिये ऐसी स्थिति तैयार हो जहाँ परमेश्वर उनके द्वारा अपनी दैवी योजना का कार्य कर सके। परंतु, जब कैन ने हाबिल को मार डाला, तो इस हालत में शैतान ने उन पर दावा कर लिया। परमेश्वर ने यीशु को पतित लोगों के पास भेजा ताकि वे उस पर विश्वास करके परमेश्वर के पक्ष में खड़े हो सकें। दुर्भाग्य से, जब वह आया, तो बहुत लोगों ने उसे अस्वीकार किया और इस तरह वे शैतान की तरफ बने रहे। यही कारण है कि यीशु उद्धारकर्ता और न्याय दोनों का प्रभु है।

तो फिर, क्षतिपूर्ति के माध्यम से पुनरुद्धार का क्या अर्थ है? जब कोई अपना मूल स्थान या स्थिति खो बैठता है, तो उसे पुनर्स्थापित करने के लिए, बदले में उसे कोई मूल्य चुकाना पड़ता है। भुगतान की

ऐसी शर्त रखने को क्षतिपूर्ति कहा जाता है। उदाहरण के लिए, खोई हुई प्रतिष्ठा, स्थिति या स्वास्थ्य को वापस ठीक करने के लिए, उसे नियत मूल्य के भुगतान के लिये कुछ आवश्यक प्रयास करना पड़ता है। मान लो, दो व्यक्ति जो पहले एक दूसरे से प्रेम रखते थे, उनके संबंध में किसी कारण ख़लल पड़ जाती है; तो उन्हें पहले के जैसे प्रेम भाव को दोबारा पुनर्जीवित करने के लिये सुलह की कुछ शर्तें बनानी पड़तीं हैं। इसी तरह, मनुष्यों को भी जो परमेश्वर की कृपा दृष्टि से नीचे भ्रष्टाचार में गिर गये हैं कुछ शर्तें भुगतनी पड़तीं हैं इससे पहले कि वे अपनी पूर्वावस्था में पुनर्स्थापित किए जा सकते हैं। मनुष्य को उसके मूल स्थान और अवस्था में पुनर्स्थापित करने की इस प्रक्रिया को हम, *क्षतिपूर्ति द्वारा पुनरुद्धार* कहते हैं, और इस शर्त को भुगतान की शर्त कहते हैं। मनुष्यों को उनकी असली शुद्ध अवस्था में पुनर्स्थापित करने के परमेश्वर के इस कार्य को, जिसके लिये मनुष्य को क्षतिपूर्ति की शर्त को पूरी करनी होतीं हैं, क्षतिपूर्ति द्वारा पुनरुद्धार की दैवी योजना कहा जाता है।

क्षतिपूर्ति की शर्त की तुलना किसी खोई हुई वस्तु के मूल्य से कैसे की जाती है? हम निम्न लिखित तीन प्रकार की क्षतिपूर्ति की शर्तों के द्वारा इसका उत्तर दे सकते हैं।

पहला, बराबर की क्षतिपूर्ति की शर्त पूरी करना। इस स्थिति में, खोई हुई वस्तु के मूल्य के बराबर क्षतिपूर्ति की शर्त पूरी करने से उस व्यक्ति को, जो अपनी मूल अवस्था या स्थान से भटक गया हो, पुनरुद्धार प्राप्त होता है। क्षतिपूर्ति या हरजाने के कार्य इस प्रकार की क्षतिपूर्ति की शर्तें होतीं हैं। यह पद, "जान के लिये जान, दांत के लिये दांत"[३७१] इस प्रकार की क्षतिपूर्ति की शर्त को संकेत करता है।

दूसरा, अल्पतम क्षतिपूर्ति की शर्त रखना। इस स्थिति में, खोई हुई वस्तु के मूल्य से कम कीमत पर क्षतिपूर्ति की शर्त रखने के द्वारा पूर्वावस्था की प्राप्ति की जा सकती है। उदाहरण के लिए, किसी के ऊपर बहुत बड़ा ऋण है, परन्तु लेनदार सद्भाव से उस ऋण के एक हिस्से को क्षमा कर दे, तब ऋणी कुल राशि से कम ऋण देकर भी पूरे कर्ज को संतुष्ट करता है। सूली के माध्यम से मुक्ति का यह एक उत्कृष्ट उदाहरण है। केवल यीशु में विश्वास करने की एक छोटी सी क्षतिपूर्ति की शर्त को पूरा करने के द्वारा हमें बहुत बड़े उद्धार की कृपा प्राप्त होती है जिसके कारण हम यीशु के साथ उसके जी उठने में भाग लेते हैं। जल से बपतिस्मा लेने की क्षतिपूर्ति शर्त पूरी करने के द्वारा, आत्मिक दृष्टि से हम यीशु और पवित्र आत्मा के माध्यम से नए सिरे से पैदा किए जा सकते हैं। इसके अतिरिक्त, पवित्र भोज के संस्कार में रोटी का एक टुकड़ा और द्राक्षासव का एक प्याला लेने से, हमें यीशु के शरीर और रक्त में भाग लेने की बहुमूल्य कृपा प्राप्त होती है। यह सभी न्यूनतम क्षतिपूर्ति की शर्तों के उदाहरण हैं।

तीसरा, अधिक क्षतिपूर्ति की शर्त रखना। जब एक व्यक्ति कम क्षतिपूर्ति की शर्त को पूरा करने में विफल हो, तो उसे मूल स्थिति में वापस आने के लिये इस बार, पहले से अधिक कीमत पर क्षतिपूर्ति की शर्त भोगनी पड़ेगी। उदाहरण के लिये, क्योंकि, जब अब्राहम ने एक कबूतर, मेंढ़ा और बछिया के बलिदान के चढ़ावे में गलती की, तो उसे उसकी इस विफलता को सुधारने के लिए बृहत्तर क्षतिपूर्ति की शर्त को पूरी करनी पड़ी। यानी, परमेश्वर ने उसे अपने इकलौते बेटे इज़हाक को बलिदान करने के लिये

[३७१] निर्गमन २१:२३-२४

कहा। मूसा के दिनों में जब इज़राएली लोग कानन देश में जासूसी के चालीस दिनों के दौरान परमेश्वर के वादे में विश्वास रखने में विफल हुए, तो उन्हें जंगल में चालीस वर्षों के लिए भटकने की बृहत्तर क्षतिपूर्ति की शर्त पूरी करनी पड़ी, जो कि जासूसी के मिशन के एक दिन के लिए एक वर्ष के हिसाब से थी।[३७२]

दूसरी बार क्षतिपूर्ति की शर्त के लिये बृहत्तर क्षतिपूर्ति की शर्त स्थापित करना क्यों आवश्यक है? जब कभी कोई परमेश्वर की दैवी योजना को पूरी करने के लिये दूसरा प्रयास करता है तो उसे हरजाने की तौर पर न केवल अपनी विफलताओं के लिये क्षतिपूर्ति की शर्त को पूरी करनी होती है पर उन लोगों के लिये भी जो उससे पहले आए थे।

आगे, आयें हम क्षतिपूर्ति शर्तों को पूरा करने की विधि का अध्ययन करते हैं। हर किसी को अपनी पतित अवस्था से मूल अवस्था में फिर से पुनर्स्थापित किए जाने के लिए, जिस रास्ते पर चलकर उसने गलती की थी, उसे वापस उलटे पाँव चलकर अपनी गलती को सुधारने के लिये क्षतिपूर्ति की शर्त पूरी करनी चाहिये। उदाहरण के लिए, क्योंकि चुने हुए लोगों ने यीशु को निंदित किया और उसे सूली पर चढ़ाया, इसलिये उद्धार पाने के लिये और परमेश्वर के चुने हुए बनकर अपनी मूल अवस्था में पुनर्स्थापित किए जाने के लिये उन्हें वापस उलटा जाना होगा: यानी यीशु को प्रेम करके और स्वेच्छया से उसके खातिर उसकी सूली उठानी होगी।[३७३] यही कारण है कि ईसाई धर्म यातनाएं उठाने का धर्म बन गया है। इसके अलावा, मनुष्य ने पतित होकर और परमेश्वर की इच्छा का उल्लंघन करके परमेश्वर को बहुत अधिक दु:ख दिए हैं। इसलिए हमें, क्षतिपूर्ति द्वारा फिर से अपना शुद्ध, मूल स्वभाव पुनर्स्थापित करने की कोशिश करनी चाहिए और परमेश्वर की इच्छा की आज्ञाकारिता से जीवन व्यतीत करके उसके दिल को सुख देना चाहिए। उसी तरह, क्योंकि पहले आदम ने परमेश्वर का परित्याग किया था इसलिये उसका वंश शैतान की अधीनता में आ गया। तदनुसार, मनुष्यों को शैतान की अधीनता से स्वतंत्र करके परमेश्वर के पास लाने के लिए, परमेश्वर के द्वारा त्यागे जाने पर भी दूसरे आदम यीशु को परमेश्वर के सम्मान में उसकी उपासना करते रहना पड़ा। क्रूस पर[३७४] यीशु का परमेश्वर द्वारा त्यागे जाने का यह जटिल कारण है। अंत में, किसी भी देश का कानून, सामाजिक व्यवस्था को बनाए रखने के लिए, अपराधियों को आवश्यक सज़ा भुगतने के लिए क्षतिपूर्ति की शर्त लागू करता है।

किसे क्षतिपूर्ति की शर्त रखनी चाहिए? पहले, हम ने सीखा है कि मनुष्य अपनी जिम्मेदारी को पूरा करने के द्वारा पूर्ण बन सकता है; तब उसे स्वर्गदूतों पर भी शासन करने का अधिकार होगा। तथापि, मानवता के पहले पूर्वज अपनी जिम्मेदारी निबाहने में विफल हुए और इस तरह वे शैतान के नियंत्रण में उसके नीचे आ गए। शैतान के प्रभुत्व से बचने और अपने पुनरुद्धार के लिए, हमें क्षतिपूर्ति शर्तों को पूरा करके स्वयं अपने हिस्से की जिम्मेदारी निबाहना आवश्यक है।

---

[३७२] गिनती १४:३४
[३७३] लूक १४:२७
[३७४] मत्ती २७:४६

१.१ मसीह के लिये नींव

मसीह मानवता का सद्-वृत्त माता-पिता बन कर आता है, क्योंकि केवल वही मानवता को जो पतित माता-पिता से जन्में हैं, मूल पाप से निकाल कर पुनर्जन्म दे सकता है।[३७५] पतित लोगों को उनकी मूल अवस्था में बहाल करने के लिये, उन्हें मसीह को स्वीकार करना आवश्यक है। इससे पहले कि हम मसीह को प्राप्त कर सकें, हमें पहले *मसीह के लिए नींव* स्थापित करना आवश्यक है।

मसीह के लिये नींव स्थापित करने के लिये किस प्रकार की क्षतिपूर्ति की शर्तें स्थापित करना आवश्यक है? इस प्रश्न के जवाब के लिए, यह समझना आवश्यक है कि आदम को किस प्रकार सृष्टि का उद्देश्य साधित करना चाहिये था और कि वह इस में किस प्रकार विफल हुआ, क्योंकि क्षतिपूर्ति की शर्त, मूल पथ से विचलित होने के रास्ते पर उलटा चल कर, पूरी की जाती है।

सृष्टि का उद्देश्य साकार करने के लिये आदम को दो शर्तें पूरी करना चाहिए थीं। सबसे पहले, आदम को *विश्वास की नींव* स्थापित करनी चाहिए थी। नींव डालने वाला व्यक्ति स्वयं आदम ही था। इस नींव को स्थापित करने की शर्त यह थी कि उसे किसी भी हालत में भले और बुरे के वृक्ष का फल नहीं खाना चाहिये और परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना चाहिये था। और इस शर्त को पूरी करने के लिये आदम विकास की नियत अवधि को पार करने वाला था, यह समय उसे उसकी अपने हिस्से की जिम्मेदारी को पूरा करने के लिये दिया गया था। यह अवधि दैवी महत्व की कुछ संख्याओं को दर्शाती है। इसलिए, यह विकास काल के कुछ नंबरों को पूरा करने की एक अवधि के रूप में भी सोचा जा सकता।

दूसरी शर्त जो आदम को सृष्टि का उद्देश्य साकार करने के लिये पूरी करनी थी, वह *वास्तविक नींव* स्थापित करना था। विश्वास की एक अविचल नींव स्थापित करने के बाद, आदम को परमेश्वर के साथ एकात्म हो जाना था, इस प्रकार से एक वास्तविक नींव स्थापित हो जाती। इसका अर्थ यह हुआ कि वह वचन[३७६] का पूर्ण देहधारी बन जाता, अर्थात पूर्ण चरित्र वाला व्यक्ति बन जाता और परमेश्वर का प्रथम आशीर्वाद सकार हो जाता। इस प्रकार, यदि आदम का पतन नहीं हुआ होता तो उसने सृष्टि का उद्देश्य साकार कर लिया होता। एक पतित व्यक्ति को मसीह को प्राप्त करने की नींव डालने के लिये समान पथ से गुज़रना पड़ता है: पहले विश्वास की नींव और फिर वास्तविक नींव की स्थापना करनी पड़ती है।

१.२.१ विश्वास की नींव

क्योंकि आदम ने परमेश्वर के वचन की अवज्ञा की और पतित हो गया, वह विश्वास की नींव नहीं स्थापित कर सका। इसलिए, वह वचन का पूर्ण मूर्तरूप नहीं बन सका और न ही सृष्टि के उद्देश्य को पूरा कर सका। ऐसी नींव पुनर्स्थापित करने के लिये जिसपर वे सृष्टि के उद्देश्य को पूरा कर सकें, पतित लोगों को

---

[३७५] प्रति-संदर्भ—ख्रीस्त-बोध ४.१.१

[३७६] यूहन्ना १:१४

पहले क्षतिपूर्ति के माध्यम से विश्वास की नींव, जिसकी स्थापना करने में पहले मानव पूर्वज विफल हुए, पुनर्स्थापित करनी चाहिए। विश्वास की नींव को पुनर्स्थापित करने के लिये क्षतिपूर्ति के यह तीन आवश्यक पहलू हैं।

पहला, एक *मुख्य-व्यक्ति* होना चाहिये। जब से आदम विश्वास की नींव स्थापित करने में विफल हुआ, तब से परमेश्वर एक मुख्य-व्यक्ति की तलाश कर रहा है जो विश्वास की खोई हुई नींव पुनर्स्थापित कर सके। परमेश्वर ने कैन और हाबिल को इसी उद्देश्य से बलिदान चढ़ाने के लिये कहा था। इसी तरह, परमेश्वर ने नूंह, अब्राहम, इज़हाक, याकूब, मूसा, राजाओं और यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले जैसे व्यक्तियों को बुलाया और अगवाई करने के उद्देश्य से उन्हें बढ़ाया।

दूसरा, *शर्त की वस्तु* का भेंट चढ़ाया जाना आवश्यक है। जब आदम ने परमेश्वर में विश्वास खो दिया, उसने परमेश्वर का वचन भी जो उसे विश्वास की नींव स्थापित करने की शर्त की पूर्ति के लिए दिया गया था खो दिया। परिणाम स्वरूप, पतित लोग विश्वास की नींव पुनर्स्थापित करने के लिए परमेश्वर का वचन सीधे प्राप्त नहीं कर सकते हैं। वचन की जगह पर शर्त की वस्तु का भेंट चढ़ाना आवश्यक बन गया। मनुष्य, पतन के कारण सृष्टि की वस्तुओं से भी नीचे पदच्युत हो गए, जैसा कि लिखा है, “मन तो सब वस्तुओं से अधिक धोखा देनेवाला होता है।”[३७७] इसलिए, पुराना नियम दिये जाने से पहले के युग में, लोग विश्वास की नींव स्थापित करने के लिए बलिदान या उसके बराबर की वस्तु की भेंट चढ़ा सकते थे, जैसे कि लकड़ी का संदूक, जो प्राकृतिक दुनिया से प्राप्त किया गया है। इस प्रकार, विश्वास की नींव ने अन्य सभी वस्तुओं को, जो शैतान ने भ्रष्ट कर दीं थीं, बहाल करने का काम किया। पुराने नियम के युग में, वचन जो मूसा के कानून में प्रकाशित हुआ या वचन का प्रतिनिधित्व करने वाले—जैसे कि वाचा का संदूक, मंदिर और विभिन्न प्रमुख-व्यक्ति—इन्होंने मूल वचन के बदले शर्त की वस्तु के रूप में काम किया। नए नियम के युग में वचन, जो वचन के देहधारी यीशु के द्वारा सुसमाचार में प्रकाशित हुआ, शर्त की वस्तु थी। मनुष्य के दृष्टिकोण से, यह शर्त की वस्तुएं विश्वास की नींव की स्थापना करने के उद्देश्य के लिए अर्पण की गईं। परमेश्वर के दृष्टिकोण से, शर्त की वस्तुओं का अर्पण करना, व्यवस्था पर परमेश्वर के स्वामित्व को सुरक्षित बनाए रखना था।

तीसरा, *क्षतिपूर्ति की संख्यात्मक अवधि* का पूरा किया जाना आवश्यक। ऐसे प्रश्न, जैसे कि क्षतिपूर्ति की अवधि की लंबाई किन्हीं दैवी संख्याओं पर ही क्यों आधारित होना चाहिए और संख्यात्मक समय की लंबाई का अर्थ क्या है, बाद में विस्तारपूर्वक चर्चा की जाएगी।[३७८]

१.२.२ वास्तविक नींव

जैसा कि पहले बताया गया है, पतित लोगों को सृष्टि का उद्देश्य पूरा करने के लिये वचन का पूर्ण मूर्त रूप बनना आवश्यक है, यह वह अवस्था है जिस को प्राप्त करने में हमारे पूर्वज विफल हुए थे। पूर्ण

---

[३७७] यिर्मयाह १७:९

[३७८] प्रति-संदर्भ—कालावधि २:४

मूर्त रूप बनने के लिये हमें पहले मसीह के द्वारा अपने मूल पाप से शुद्ध होने की आवश्यकता है। इससे पहले कि हम मसीह को प्राप्त कर सकें, हमें उसके लिये नींव डालनी चाहिये, जो कि उस समय पूरी होती है जब हम विश्वास की नींव के आधार पर वास्तविक नींव की स्थापना करते हैं। मसीह को प्राप्त कर लेने पर और पहले मानव पूर्वजों के पतन से पहले की अवस्था में बहाल किये जाने के बाद, हमें अभी भी एक और पथ पर चलना बाकी रहता है: परमेश्वर के हृदय की भावना को महसूस करते हुए हमें मसीह के साथ एकात्म होना आवश्यक है, और फिर उसके पीछे अनजाने पथ पर चल कर हमें विकास काल की शिखर तक जाना होता है, इस तरह हम, और अन्ततः पूर्ण मूर्त रूप बन सकते हैं।

पतित लोग क्षतिपूर्ति की शर्त का, जो *पतित स्वभाव को निकाले की क्षतिपूर्ति की शर्त है*, भुगतान करके वास्तविक नींव स्थापित सकते हैं। पहले मानव पूर्वजों ने पतन के कारण मूल पाप उपार्जित किया था, इसलिये वे अपनी ईश्वर प्रदत्त मूल प्रकृति साकार नहीं सके, बजाए इसके, वे पतित स्वभाव के प्राथमिक लक्षणों से भर गये।[३७९] क्षतिपूर्ति की शर्त का भुगतान करने से पतित स्वभाव निकाला जा सकता है, और पतित व्यक्ति वास्तविक नींव खड़ी कर सकता है, जिसके द्वारा वह मसीह को प्राप्त कर सकता है, अपने मूल पाप से शुद्ध हो सकता है, और अंततः अपनी मूल प्रकृति बहाल कर सकता है। इसके बाद के अध्यायों में, हम चर्चा करेंगे कि यह शर्त किस प्रकार पूरी की जा सकती है।[३८०]

---

[३७९] प्रति-संदर्भ—पतन ४:६

[३८०] प्रति-संदर्भ—नींव १.२

संभाग २

पुनरुद्धार की दैवी योजना की अवधि

२.१ पुनरुद्धार की दैवी योजना की अवधि के युग

अब आएं हम बाईबल के अनुसार आदम के समय से लेकर पूरे इतिहास की समीक्षा प्रस्तुत करेंगे, और इसकी दैवी योजनाओं का निरीक्षण करेंगे। पतित लोगों के लिये परमेश्वर की दैवी योजना, जिससे वे मसीह को प्राप्त करते हैं और सृष्टि के उद्देश्य पूरा कर सकते हैं, आदम के परिवार के साथ शुरू हुई। परन्तु, कैन का हाबिल की हत्या कर देने से परमेश्वर की इच्छा कुंठित हो गई। दस पीढ़ियों के बाद, वह अधूरी इच्छा नूंह के परिवार को हस्तांतरित हुई। परमेश्वर ने नूंह के परिवार को पापी दुनिया से अलग करने के लिये पापी दुनिया को दण्ड दिया और पुनरुद्धार की दैवी योजना जारी की। इस आधार पर परमेश्वर का इरादा था कि वह अपनी दैवी योजना को पूरा करने के लिये मसीह को नूंह के परिवार में भेजे। परन्तु, नूह के दूसरे पुत्र, हाम के पतित कर्म के कारण, नूंह के परिवार में परमेश्वर की दैवी योजना और जहाज़ की कार्यवाही विफल हुई। परिणाम स्वरूप, दस पीढ़ियाँ और चालीस दिवसीय बाढ़ जो परमेश्वर ने इस दैवी योजना को पूरा करने की तैयारी के लिये रखीं थीं, सब खो कर शैतान को चलीं गईं।

चार सौ साल बीतने के बाद, वह सब जो नष्ट हो गया था उसे स्वर्ग के हित में पुनर्स्थापित करने के लिये परमेश्वर की इच्छा अब्राहम को सौंपी गई। यदि अब्राहम ने परमेश्वर की अभिलाषा के अनुसार पारिवारिक स्तर पर मसीह की नींव कायम कर ली होती, तो वह नींव राष्ट्रीय स्तर तक विस्तीर्ण हो जाती, और इस के बाद मसीह आ गया होता। परन्तु अब्राहम प्रतीकात्मक बलि के चढ़ाने में विफल रहा, और एक बार फिर परमेश्वर की इच्छा निराशा में बदल गई। फल स्वरूप, आदम से अब्राहम[३८१] तक बाईबल के दो हजार वर्ष, जिसमें परमेश्वर ने विश्वास के पिता की, जो मसीह को प्राप्त कर सकता था, तलाश की, शैतान के दावे में चले गए। फिर भी, अब्राहम की स्थिति नूंह से फर्क थी। यद्यपि, अब्राहम सांकेतिक बलि में विफल रहा, परन्तु मसीह के लिए पारिवारिक नींव अंततः उसके ही परिवार की तीन पीढ़ियों, अब्राहम, इज़हाक और याकूब, में पूरी हो गई। उस आधार पर परमेश्वर ने चुने हुए लोगों को मिस्र में बढ़ाया और मसीह के लिए नींव राष्ट्रीय स्तर तक फैल गई। यही कारण है कि अब्राहम विश्वास का पिता कहा जाता है।[३८२] यदि हम परिणामों के आधार पर युग के महत्व की ठीक आलोचना करें, तो हम यह समझ सकते हैं कि आदम से अब्राहम तक की दो हजार वर्ष की अवधि एक ऐसे विश्वास के पिता की तलाश में थी, जो पुनरुद्धार की दैवी योजना को शुरू करने के लिये नींव डाल सके। इस प्रकार, यह कहा जा सकता है कि परमेश्वर का पुनरुद्धार का कार्य अब्राहम से शुरू हुआ।

परन्तु, अब्राहम की प्रतीकात्मक बलिदान में गलती करने के कारण, आदम से अब्राहम तक दो हजार वर्ष शैतान के दावे में चले गए। इसलिए, एक ऐसी अवधि नियत करनी पड़ी जिसके आधार पर

---

[३८१] बाईबल के पारंपरिक हिसाब से पहले मानव पूर्वजों की तिथि की गणना, छह हजार साल पहले की है, दो हजार साल अब्राहम से पहले, जो प्रतीकात्मक कालक्रम को दर्शाता है वह इससे अधिक लंबा समय है, जिसका निरूपण करना विज्ञान का कार्य है।—एड

[३८२] रोमियों ४:११-१२, १६-१७

वह खोए हुए वर्ष क्षतिपूर्ति के माध्यम से परमेश्वर की ओर बहाल किये जा सकें; अब्राहम से यीशु तक के दो हजार वर्षों की अवधि का यह महत्व है। यदि अब्राहम प्रतीकात्मक बलिदान चढ़ाने में असफल न हुआ होता, तो मसीह अब्राहम के तात्कालिक वंश के द्वारा बनाई हुई राष्ट्रीय नींव पर आकर खड़ा हो गया होता और इस प्रकार पुनरुद्धार की दैवी योजना उसी समय पूरी हो जाती। उसी प्रकार, यदि यहूदी लोगों ने यीशु में विश्वास किया होता, उसकी सेवा में भाग लिया होता तो वे उसे परमेश्वर के सामने जीता बलिदान के रूप में राष्ट्रीय प्रतिनिधित्व करने के लिये उसका साथ देते। तब वे मसीह के लिए राष्ट्रीय नींव निर्धारित कर लेते और यीशु उस नींव पर मसीह के रूप में खड़े होकर पुनरुद्धार की दैवी योजना पूरी कर लेता।

परन्तु, जिस प्रकार अब्राहम अपनी सांकेतिक भेंट में विफल हुआ, यहूदी लोग भी, जब उनके नेताओं ने यीशु को सूली पर चढ़ाया, राष्ट्रीय स्तर पर भेंट चढ़ाने में विफल हुए। इस प्रकार, दो हजार वर्ष की अवधि—अब्राहम से यीशु तक—शैतान की नज़र हो गई। परिणाम स्वरूप, एक समानांतर अवधि, जिसमें पहले की दो हज़ार वर्ष की अवधि क्षतिपूर्ति के माध्यम से परमेश्वर की तरफ बहाल की जा सके, स्थापित करनी पड़ी। यह यीशु के समय से आज तक दो हजार वर्ष की अवधि का महत्व है। इस युग के दौरान, ईसाइयों को यीशु की सूली की नींव के आधार पर, मसीह के लिये विश्वव्यापी नींव स्थापित करना आवश्यक है।

२.२ पुनरुद्धार की दैवी योजना में युगों की अवधि का वर्गीकरण

पुनरुद्धार की दैवी योजना के दौर के युग परमेश्वर की दैवी योजना के प्रगतिशील विकास को दर्शाते हैं। वे छह मानदंडों के अनुसार वर्गीकृत किए जा सकते हैं।

२.२.१ परमेश्वर के वचन के संदर्भ में वर्गीकृत युग

१. आदम से अब्राहम तक दो हजार वर्ष की अवधि के दौरान, लोगों ने परमेश्वर का वचन सीधे प्राप्त करने के लिये अभी तक क्षतिपूर्ति की पर्याप्त शर्तें पूरी नहीं की थीं। अधिक से अधिक, पतित लोगों ने बलिदान की भेंट चढ़ा कर क्षतिपूर्ति की शर्तें निबाहीं; इस तरह उन्होंने अगली अवधि के लिये जब परमेश्वर वचन पर आधारित अपनी दैवी योजना शुरू कर सकेगा, नींव तैयार की थी। इसलिये यह अवधि वचन के लिये नींव डालने का युग कहलाता है।
२. अब्राहम से यीशु तक दो हजार वर्ष की अवधि के दौरान, मानवता की आध्यात्मिकता और बुद्धि, पुराने नियम के वचन के प्रकटीकरण के आधार पर गठन-चरण तक विकसित हुई। इसलिए यह अवधि दैवी योजना का गठन-चरण का युग, या पुराने नियम का युग कहलाता है।
३. यीशु से लेकर दूसरे आगमन तक के दो हजार वर्ष की अवधि के दौरान, नए नियम के वचन के आधार पर मनुष्य की आध्यात्मिकता और बुद्धि जीवात्मा के स्तर तक विकसित हुई।

इसलिये दैवी योजना का यह युग संवृद्धि-चरण का युग, या नए नियम का युग कहा जाता है।

४. मसीह के दूसरे आगमन के बाद, इस अवधि के दौरान जब पुनरुद्धार की दैवी योजना संपन्न होने वाली होगी, परिपूरित नियम के आधार पर, जो पुनरुद्धार की दैवी योजना के परिपूर्ण हो जाने के बाद दिया जाएगा, मनुष्य की आध्यात्मिकता और बुद्धि निष्पत्ति-चरण तक विकसित हो जाएगी। इसलिये, यह अवधि दैवी योजना का निष्पत्ति-चरण युग या परिपूरित नियम का युग कहा जाता है।

२.२.२ *परमेश्वर के पुनरुत्थान के कार्य के संदर्भ में वर्गीकृत युग*

१. आदम से अब्राहम तक दो हजार वर्ष की अवधि के दौरान, जब परमेश्वर अपना पुनरुत्थान का कार्य शुरु करनेवाला था, पुराने नियम को आरंभ करने की नींव डालने के लिए लोग बलिदान की भेंट का चढ़ावा देते थे। इसलिए यह अवधि पुनरुत्थान की दैवी योजना की नींव डालने का युग कहलाता है।

२. अब्राहम से यीशु तक दो हज़ार वर्ष की अवधि के दौरान पुराने नियम के आधार पर परमेश्वर की दैवी योजना में युग के अनुग्रह के द्वारा लोगों का पुनरुत्थान प्रारूप-आत्मा के स्तर तक हुआ। इसलिए, यह युग प्रारूप-आत्मा के पुनरुत्थान की दैवी योजना का युग कहलाता है।

३. यीशु से दूसरे आगमन तक दो हज़ार वर्ष की अवधि के दौरान, पुनरुद्धार की दैवी योजना में नए नियम के वचन और युग के अनुग्रह के आधार पर लोगों का पुनरुत्थान जीव-आत्मा के स्तर तक होगा। इसलिए, यह युग संवृद्धि-चरण पुनरुत्थान का युग कहलाता है।

४. मसीह के दूसरे आगमन के पश्चात, इस अवधि के दौरान जब पुनरुद्धार की दैवी योजना पूरी की जाने वाली होगी, परिपूरित नियम और युग के अनुग्रह के आधार पर लोगों का पूर्ण रूप से दिव्य-आत्मा के स्तर तक पुनरुत्थान होगा। इसलिए, यह युग दैवी योजना का निष्पत्ति-चरण पुनरुत्थान का युग कहलाता है।

२.२.३ *दैवी योजना के संदर्भ में खोए हुए विश्वास के काल को क्षतिपूर्ति द्वारा पुनर्स्थापित करने के लिए वर्गीकृत किए गए युग*

१. आदम से अब्राहम तक के दो हजार वर्ष की अवधि के दौरान, परमेश्वर ने पुराने नियम की लिए नींव डाली। हालांकि यह अवधि शैतान के दावे में चली गई, अब्राहम को बढ़ा कर परमेश्वर पुराने नियम की शुरूआत कर सका, जिसमें वह क्षतिपूर्ति द्वारा पहला काल बहाल कर सका। इसलिये यह अवधि (क्षतिपूर्ति द्वारा) पुनरुद्धार के लिए नींव डालने की दैवी योजना का युग कहा जाता है।

२. अब्राहम से यीशु तक दो हजार वर्ष की अवधि के दौरान, परमेश्वर ने मुख्य रूप से इस्राएली लोगों के द्वारा काम करके क्षतिपूर्ति के माध्यम से पिछले दो हज़ार वर्ष की अवधि, जो कि

अब्राहम की प्रतीकात्मक भेंट चढ़ाने में ग़लती के कारण शैतान के दावे में चली गई थी, पुनर्स्थापित की। इसलिये यह अवधि (क्षतिपूर्ति द्वारा) पुनरुद्धार की दैवी योजना कही जाती है।

३. यीशु से दूसरे आगमन तक दो हजार वर्ष की अवधि के दौरान, पुराने नियम का युग जो यीशु के सूली पर चढ़ाए जाने के कारण शैतान के दावे में आ गया था, परमेश्वर मुख्य तौर पर ईसाई धर्म के माध्यम से क्षतिपूर्ति के द्वारा काम करके पुनर्स्थापित कर रहा है। इसलिए, यह अवधि (क्षतिपूर्ति द्वारा) पुनरुद्धार की दैवी योजना के दीर्घीकरण का युग कहा जाता है।

४. मसीह के दूसरे आगमन के बाद के दौर में जब पुनरुद्धार की दैवी योजना समाप्त होने पर होगी, परमेश्वर पुनरुद्धार की दैवी योजना की समस्त अवधि, जो शैतान के चंगुल में आ गई थी, क्षतिपूर्ति द्वारा पुनर्स्थापित करने का काम करेगा। इसलिये यह अवधि, (क्षतिपूर्ति द्वारा) पुनरुद्धार की दैवी योजना को पूरा करने का युग कहा जाता है।

२.२.४ *मसीह की नींव के बढ़ते हुए कार्यक्षेत्र के संदर्भ से वर्गीकृत युग*

१. आदम से अब्राहम तक दो हजार वर्ष की अवधि के दौरान, परमेश्वर ने अब्राहम के परिवार को उनके बलिदान के संस्कार की शर्तों पर बढ़ा कर मसीह की पारिवारिक नींव डाली। इसलिए, यह अवधि मसीह के लिये पारिवारिक नींव रखने की दैवी योजना का युग कहा जाता है।

२. अब्राहम से यीशु तक दो हजार वर्ष की अवधि के दौरान, परमेश्वर ने पुराने नियम के आधार पर इस्राएली लोगों को बढ़ा कर मसीह के लिये राष्ट्रीय नींव डालने का काम किया। इसलिये यह अवधि मसीह के लिए राष्ट्रीय नींव रखने की दैवी योजना का युग कहा जाता है।

३. यीशु से दूसरे आगमन तक दो हजार वर्ष की अवधि के दौरान, नए नियम के वचन के आधार पर परमेश्वर विश्वव्यापी ईसाई धर्म की वृद्धि से विश्वव्यापी नींव बना रहा है। इसलिए, यह अवधि मसीह के लिये विश्वव्यापी नींव डालने की दैवी योजना का युग कहा जाता है।

४. मसीह के दूसरे आगमन के बाद जब पुनरुद्धार की दैवी योजना संपन्न होने वाली है इस अवधि के दौरान परमेश्वर परिपूरित नियम के वचन के आधार पर समस्त स्वर्ग और पृथ्वी में काम करके मसीह के लिये जगती नींव डालने का काम पूरा करेगा। इसलिए, यह अवधि मसीह के लिये जगती नींव डालने का काम पूरा करने का युग कहा जाता है।

२.२.५ *उत्तरदायित्व के संदर्भ से वर्गीकृत युग*

१. आदम से अब्राहम तक दो हजार वर्ष की अवधि के दौरान, परमेश्वर ने उत्तरवर्ती पुराने नियम के युग में दैवी योजना का काम करने के लिये नींव डाली, जिसको पूरा करने की ज़िम्मेदारी उठाने में परमेश्वर ने कंधा दिया। इसलिए, यह अवधि परमेश्वर की नींव डालने की ज़िम्मेदारी की दैवी योजना का युग कहलाती है।

२. अब्राहम से यीशु तक दो हजार वर्ष की अवधि के दौरान, परमेश्वर ने मनुष्य का निर्माता होने के नाते ज़िम्मेदारी उठाई और गठन-चरण पर पुनरुद्धार की दैवी योजना का कार्य किया। परमेश्वर ने भविष्यद्वक्ताओं के साथ काम किया है और व्यक्तिगत रूप से शैतान को पराजित करने के लिए पहली जिम्मेदारी अपने कंधों पर ली। इसलिए, यह अवधि परमेश्वर की जिम्मेदारी पर आधारित दैवी योजना का युग कहा जाता है।
३. यीशु से दूसरे आगमन तक दो हज़ार वर्ष की अवधि के दौरान, यीशु और पवित्र आत्मा ने आदम और हव्वा का मिशन अपने हाथ में लिया, और संवृद्धि-चरण तक पुनरुद्धार की दैवी योजना का कार्य किया। पतित लोगों के पुनरुद्धार के काम में यीशु और पवित्र आत्मा ने शैतान को फिर से पराजित करने की ज़िम्मेदारी दूसरी बार अपने कंधों पर ली। इसलिए, यह अवधि यीशु और पवित्र आत्मा की जिम्मेदारी पर आधारित दैवी योजना का युग कहा जाता है।
४. मसीह के दूसरे आगमन के पश्चात जब पुनरुद्धार की दैवी योजना पूर्ण होने वाली होगी, इस अवधि के दौरान, स्वर्ग और पृथ्वी के विश्वासी लोगों को तीसरी बार पतित महादूत शैतान को पराजित करने की ज़िम्मेदारी उठा कर पुनरुद्धार की दैवी योजना को पूरा करना होगा। यह उन्हें सृष्टि के नियम के अनुसार चल कर, जो मनुष्य का स्वर्ग दूतों पर राज करने के लिए योग्यता उपार्जित करने का रास्ता तैयार करता है, प्राप्त करना होगा। इसलिए, यह अवधि विश्वासियों की जिम्मेदारी पर आधारित दैवी योजना का युग कहा जाता है।

२.२.६ *दैवी योजना में समानांतर घटनाओं के संदर्भ से वर्गीकृत युग*

१. आदम से अब्राहम तक दो हजार वर्ष की अवधि के दौरान, मसीह के लिये नींव प्रतीकात्मक भाँति की समानांतर क्षतिपूर्ति की शर्त पूरी करने के द्वारा पुनर्स्थापित की गई थी। इसलिए, यह अवधि प्रतीकात्मक-समानांतर-युग कहा जाता है।
२. अब्राहम से यीशु तक दो हजार वर्ष की अवधि के दौरान, मसीह के लिए नींव छवि के नमूने की समानांतर क्षतिपूर्ति की शर्तों को पूरा करने के द्वारा पुनर्स्थापित की गई थी। इसलिए, यह अवधि छवि-समानांतर-युग कहा जाता है।
३. यीशु से दूसरे आगमन तक दो हज़ार वर्ष की अवधि के दौरान मसीह के लिये नींव, वास्तविक समानांतर क्षतिपूर्ति की शर्तों को पूरा करने के द्वारा पुनर्स्थापित की गई है। इसलिए, यह अवधि वास्तविक समानांतर युग कहा जाता है।

संभाग ३

पुनरुद्धार की दैवी योजना का इतिहास और मैं

हम में से हर एक, व्यक्तिगत रूप से, पुनरुद्धार की दैवी योजना के इतिहास के फल हैं। इसलिए, वह व्यक्ति जो इतिहास के लक्ष्य को पूरा करने वाला है, अन्य और कोई नहीं है, स्वयं मैं ही हूँ। मुझे इतिहास की सूली उठानी होगी और इस आह्वान को पूरा करने का दायित्व स्वीकार करना होगा। यह कार्याविन्त करने के लिए, मुझे अपने प्रयासों के द्वारा क्षतिपूर्ति की (क्षैतिज) शर्तें, जो पुनरुद्धार की (लंब) दैवी योजना के लम्बे अरसे में जमा होतीं आईं हैं, अपने जीवन में पूरी करनी होंगी। केवल ऐसा करने पर ही मैं, जिसे परमेश्वर ने बड़ी उत्सुकता से अपनी पूरी दैवी योजना के दौरान तलाश किया है, गर्व के साथ इतिहास का फल बन कर खड़ा हो सकता हूँ। दूसरे शब्दों में, मुझे अपनी पीढ़ी के दौरान, पिछले भविष्यद्वक्ताओं और संतों के मिशन, जो अपने समय में पुनरुद्धार की सूली उठाने के लिये बुलाए गए थे, क्षतिपूर्ति की शर्तों के द्वारा पुनर्स्थापित करने होंगे। अन्यथा, मैं वह व्यक्ति नहीं बन सकता जिसने पुनरुद्धार की दैवी योजना का लक्ष्य परिपूर्ण किया है। ऐसा ऐतिहासिक विजेता बनने के लिये, मुझे परमेश्वर के हृदय को स्पष्टता से समझना होगा; जब उसने पिछले भविष्यद्वक्ताओं और संतों के साथ काम किया था, जिस मूल उद्देश्य के लिये उन्हें बुलाया था, और जो दैवी मिशन उन्हें सौंपे गये थे यह सब विवरण में समझना चाहिये।

तथापि, पतित मानवता में कोई भी नहीं है, जो ऐसा ऐतिहासिक विजेता केवल अपने प्रयासों के द्वारा ही बन सकता हो। इस कारण से, यह सब बातें हमें दूसरे आगमन के मसीह के द्वारा समझनी होंगी, जो पुनरुद्धार की दैवी योजना को पूरी करने के लिये आ रहा है। इसके अतिरिक्त, जब हम उस पर विश्वास करेंगे, उसके साथ एक हो कर काम में भाग लेंगे, तब हम उसके साथ पुनरुद्धार की दैवी योजना के इतिहास में क्षैतिज तौर पर लंब क्षतिपूर्ति की शर्तें पूरी करने के स्थान में खड़े हो सकते हैं।

परमेश्वर की दैवी इच्छा पूरी करने के प्रयास में जिस पथ पर अतीत के सब संत लोग चले हैं आज उसी पथ पर हमें फिर से चलना होगा। उसके अलावा, हमें इस पथ के अंत तक चलना होगा, यहाँ तक कि जिन पगडंडियों पर वे लोग नहीं चले उन पर भी चलना होगा। इसलिए, पतित लोग पुनरुद्धार की दैवी योजना के विवरण को समझे बिना उस मार्ग को जो जीवन की ओर ले जाता है नहीं ढूँढ़ सकते। यही कारण है कि हमें पुनरुद्धार के सिद्धाँत का विस्तारपूर्वक अध्ययन करना आवश्यक है।

दिव्य नियम प्रतिपादन

भाग २

अध्याय १

पुनरुद्धार के लिए नींव डालने की दवी योजना

विषय सूची

पृष्ठ

संभाग १ आदम के परिवार में पुनरुद्धार की दैवी योजना २०९

१.१ विश्वास की नींव २०९
१.२ वास्तविक नींव २१२
१.३ आदम के परिवार में मसीह के लिये नींव २१४
१.४ आदम के परिवार से कुछ शिक्षाएं २१५

संभाग २ नूंह के परिवार में पुनरुद्धार की दैवी योजना २१८

२.१ विश्वास की नींव २१८
२.१.१ विश्वास की नींव के लिये मुख्य व्यक्ति २१८
२.१.२ विश्वास की नींव के पुनःस्थापन के लिये शर्त की वस्तु २१९
२.२ वास्तविक नींव २२२
२.३ नूंह के परिवार से प्राप्त कुछ शिक्षाएं २२४

संभाग ३ अब्राहम के परिवार में पुनरुद्धार की दैवी योजना २२६

३.१ विश्वास की नींव २२६
३.१.१ विश्वास की नींव के लिये प्रमुख व्यक्ति २२६
३.१.२ विश्वास की नींव के लिये भेंट की गई शर्त की वस्तु २२७
३.१.२.१ अब्राहम की प्रतीकात्मक भेंट २२७
३.१.२.२ अब्राहम का इज़हाक को बलिदान करना २३३
३.१.२.३ परमेश्वर की दृष्टि में इज़हाक का स्थान और उसकी सांकेतिक भेंट २३५
३.२ वास्तविक नींव २३६
३.३ मसीह के लिये नींव २३९
३.४ अब्राहम की कार्यवाही से कुछ शिक्षाएँ २४२

संभाग १

आदम के परिवार में पुनरुद्धार की दैवी योजना

भले ही पतन मानवीय भूल से हुआ, परमेश्वर पतित मानवता को बचाने के लिए अपने आप को जिम्मेदार महसूस करता है।[३८३] इसलिए, परमेश्वर ने अपनी दैवी योजना में पतित लोगों के पुनरुद्धार के लिये आदम के परिवार में तुरंत मसीह की नींव डालने का काम आरंभ किया।

आदम का शैतान के साथ रक्त-संबंध होने के कारण, वह परमेश्वर और शैतान दोनों के बीच मध्यवर्ती स्थिति में था।[३८४] एक पतित व्यक्ति को, जो ऐसी मध्यवर्ती अवस्था में खड़ा हो, शुद्ध होने और परमेश्वर की ओर आने और मसीह के लिए नींव स्थापित करने के लिए, क्षतिपूर्ति की शर्त स्थापित करना आवश्यक है। फलस्वरूप, आदम के परिवार में पुनरुद्धार की दैवी योजना संपन्न होने के लिए, उसके परिवार के सदस्यों को विश्वास की नींव और वास्तविक नींव पुनःस्थापित करने के लिये क्षतिपूर्ति की कुछ शर्तें पूरी करनी पड़ीं। इन दोनों नींव पर मसीह के लिए नींव स्थापित की जाने वाली थी, इसके बाद ही, आदम के परिवार में मसीह आ सकता था।

१.१ विश्वास की नींव

क्षतिपूर्ति के माध्यम से विश्वास की नींव पुनःस्थापित करने के लिए, पतित लोगों को शर्त की एक वस्तु तैयार करनी चाहिये। अपने अविश्वास के कारण, आदम ने परमेश्वर का वचन, जो उसे विश्वास की नींव स्थापित करने के लिए दिया गया था, खो दिया था। वह ऐसी स्थिति में पड़ गया था कि अब वह परमेश्वर का वचन सीधे प्राप्त नहीं कर सकता था। परिणाम स्वरूप, विश्वास की नींव पुनःस्थापित करने के लिये, आदम को बड़ी वफादारी के साथ, ऐसे ढंग से जो परमेश्वर को स्वीकार्य हो, वचन की जगह पर शर्त की कोई और वस्तु भेंट चढ़ानी थी। आदम के परिवार के लिये यह वस्तु बलि की भेंट थी।

विश्वास की नींव पुनःस्थापित करने के लिए, एक प्रमुख व्यक्ति का होना आवश्यक है। यह भी सोचा जा सकता है कि आदम के परिवार का प्रमुख व्यक्ति स्वयं आदम ही को होना चाहिये। ऐसा प्रतीत भी होता है कि आदम को बलिदान करना चाहिए था, और तब उसका भेंट चढ़ाने का ढंग स्वीकार्य हो या न हो, यह उसके विश्वास की नींव डालने की सफलता या विफलता पर निर्भर होता।

लेकिन बाईबल में हमें अब तक कहीं कोई ऐसा लिखित प्रमाण नहीं मिला है कि आदम ने बलिदान की भेंट चढ़ाई। इसके बजाय, कैन और हाबिल, उसके बेटों ने बलि की भेंट चढ़ाई। इसका क्या कारण हो सकता है? सृष्टि के नियम के अनुसार, मनुष्य केवल एक ही प्रभु की सेवा करने के लिए बनाए गए थे।[३८५] सृष्टि के नियम के अनुसार परमेश्वर अपनी दैवी योजना किसी ऐसे व्यक्ति के साथ संचालित नहीं कर सकता जो दो स्वामियों की सेवा करता हो। यदि परमेश्वर ने आदम की भेंट को स्वीकार कर लिया

---

[३८३] प्रति-संदर्भ—मसीह २.१

[३८४] प्रति-संदर्भ—पुनरुद्धार १.१

[३८५] मत्ती ६:२४

होता, तो शैतान आदम के साथ अपने रक्त-संबंध की क्षमता पर शर्त के रूप में उस पर और उसकी भेंट पर जवाबी दावा कर सकता था। ऐसी हालत में, आदम दो स्वामियों की सेवा करने वाले की अनैतिक स्थिति में रखा जाता: परमेश्वर और शैतान। चूंकि परमेश्वर ऐसी अनैतिक दैवी योजना संचालित नहीं कर सकता, उसने आदम का, जो भलाई और बुराई दोनों का मूर्त रूप था, प्रतीकात्मक रूप से दो हस्तियों में विभाजन किया, एक जो अच्छाई का प्रतिरूप हो और अन्य जो बुराई प्रदर्शित करता है, एक ऐसी व्यवस्था जो नियम के अनुकूल हो। इस कारण से, परमेश्वर ने आदम को दो पुत्र दिये, जो अच्छाई और बुराई के स्थान पर हों, और उन्हें ऐसी स्थिति में रखा कि प्रत्येक केवल एक ही स्वामी के साथ संबंध रखता हो। इस व्यवस्था को स्थापित करने के बाद, परमेश्वर ने दोनों पुत्रों को अलग-अलग बलिदान करने के लिये ठहराया।

कैन और हाबिल दोनों आदम के पुत्र थे। उनमें से किसको अच्छाई का प्रतिनिधित्व करना चाहिये और जो परमेश्वर से संबंध रख सके और किसे बुराई का प्रतिनिधित्व करना चाहिये जो शैतान से संबंधित हो? कैन और हाबिल दोनों हव्वा के पतन के फल थे; इसलिए उनके सापेक्षिक स्थान, हव्वा के पतन के क्रम के अनुसार निर्धारित की गए थे। हव्वा का पतन दो अलग-अलग अवैध प्रेम संबंधों द्वारा अंजाम दिया गया था। पहला आत्मिक पतन था जो प्रधान स्वर्गदूत के साथ प्रेम संबंध से हुआ था। दूसरा शारीरिक पतन था जो आदम के साथ के प्रेम संबंध से हुआ था। निश्चित रूप से, दोनों संबंध पतित कर्मों से संबंधित थे। फिर भी दोनों के बीच, दूसरा कर्म अधिक नियम के साथ होने की स्थिति में था और पहले से अधिक क्षमा योग्य था। हव्वा का पहला पतित कर्म वासना की अत्यधिक कामना से प्रेरित होकर किया गया था जिसका आनन्द उठाने के लिए अभी तक समय नहीं आया था, और जिसने परमेश्वर की तरह उसकी आंखें खोल दी थीं।[३८६] इस कामना के कारण उसने प्रधान स्वर्गदूत के साथ सिद्धांतहीन भोग विलास किया। इसकी तुलना में, हव्वा की दूसरी करनी परमेश्वर के पास वापस लौटने की हार्दिक लालसा से प्रेरित हुई थी, जो उसने बाद में महसूस की कि उसका पहला संबंध अवैध था। इस कामना से उसने आदम के साथ, जो नियम के अनुसार उसका भावी पति था, प्रेम संबंध निभाया, जबकि परमेश्वर ने अब तक इसकी अनुमति नहीं थी।[३८७]

कैन और हाबिल दोनों हव्वा के अवैध प्रेम के फल थे। परमेश्वर ने उसके दो अवैध प्रेम की करनी के आधार पर कैन और हाबिल को तदनुसार दो विरोधी स्थितियों पर रख कर दोनों के बीच अंतर किया। दूसरे शब्दों में, चूंकि कैन, जो हव्वा के प्रथम प्रेम का फल था, और जो प्रधान स्वर्गदूत के साथ उसके प्रथम पतित प्रेम की करनी को संकेत करता है, उसे बुराई का प्रतिनिधित्व करने के लिये चुना गया। फलतः वह शैतान के साथ संबंध रखने की परिस्थिति में पाया गया। चूंकि हाबिल हव्वा के दूसरे प्रेम का फल था, जो हव्वा का आदम के साथ उसकी दूसरी पतित करनी को संकेत करता है, उसे अच्छाई का प्रतिनिधित्व करने के लिए चुना गया। अतेव वह परमेश्वर के साथ संबंध रखने की परिस्थिति में था।

---

[३८६] उत्पत्ति ३:५

[३८७] प्रति-संदर्भ—पतन २.२

शैतान ने सृष्टि को जो परमेश्वर ने नियम पर बनाई थी, जब्त करके अपने बस में कर ली थी, और सिद्धांतहीन दुनिया की स्थापना की, जो केवल बाह्य रूप में परमेश्वर का चाहता विश्व है। मूल सैद्धांतिक दुनिया में परमेश्वर का इरादा था कि वह ज्येष्ठ पुत्र को स्थापित करे और उसे जन्मसिद्ध का अधिकार विरासत में दे। इसलिए, शैतान ने छोटे पुत्र से अधिक बड़े पुत्र से लगाव महसूस किया। क्योंकि शैतान ने पहले से ही पूरे जगत पर दावा कर लिया था, उसने बड़े बेटे कैन के लिये, जो उसके लिये अधिक मूल्यवान था, परमेश्वर से टक्कर ली। क्योंकि शैतान को कैन से अधिक लगाव था, परमेश्वर ने हाबिल को चुना।

बाईबल पहलौठे और दूसरे बेटे के बीच भेदभाव प्रमाणित करती है। उदाहरण के लिए, परमेश्वर ने कैन से कहा, "यदि तू भला न करे तो पाप द्वार पर छिपा है"।[३८८] इस से हम समझ सकते हैं कि कैन का शैतान के साथ संबंध था। जब इज़राएली लोग मिस्र से भागने वाले थे, तब परमेश्वर ने मिस्रियों के पहलौठों को मारा, यहाँ तक कि पशुओं के पहलौठों भी[३८९] मारा, क्योंकि मिस्री लोग, जो शैतान के अधीन थे, कैन के स्थान पर थे। जब इज़राएली लोग कानन देश को लौट रहे थे, केवल लेवियों को, जो छोटे बेटे हाबिल के स्थान पर थे, वाचा के संदूक को उठा कर ले जाने की अनुमति दी गई।[३९०] यह लिखा है कि परमेश्वर ने दूसरे पुत्र याकूब से प्रेम किया और पहले पुत्र एसाव से घृणा की, यहां तक कि जब वे अपनी माँ के गर्भ में थे।[३९१] वे केवल जेठ पुत्र के भेद के आधार पर कैन और हाबिल के स्थानों पर रखे गये थे। जब याकूब अपने दोनों पोतों, एप्रैम और मनश्शे को आशीर्वाद दे रहा था, तो उसने अपने हाथों को तिरछा करके अपना दाहिना हाथ एप्रैम पर रखा, जो दूसरे पुत्र हाबिल के स्थान पर था, ताकि उसे पहला और अधिक बड़ा आशीर्वाद दे।[३९२] इस नियम के अनुसार, परमेश्वर ने कैन और हाबिल को ऐसे स्थानों पर रखा जहाँ वे केवल एक ही स्वामी से वास्ता रखें, और उन्हें बलिदान की भेंट चढ़ाने के लिये कहा।[३९३]

जब कैन और हाबिल ने बलिदान चढ़ाए, "तब परमेश्वर ने हाबिल और उसकी भेंट को ग्रहण किया, परन्तु कैन और उसकी भेंट को ग्रहण नहीं किया।"[३९४] परमेश्वर ने क्यों हाबिल की भेंट को स्वीकार और कैन की भेंट को अस्वीकार किया? परमेश्वर ने हाबिल का बलिदान स्वीकार किया क्योंकि उसका परमेश्वर के साथ उचित संबंध था और उसने स्वीकार्य ढंग से भेंट चढ़ाई।[३९५] इस रीति से, हाबिल ने आदम के परिवार में सफलतापूर्वक विश्वास की नींव स्थापित की। वह हर एक पतित व्यक्ति के लिये उदाहरण बनता है, कि कोई भी आवश्यक शर्तों को संतुष्ट करके परमेश्वर को स्वीकार्य भेंट चढ़ा सकता है।

परमेश्वर ने कैन के बलिदान को अस्वीकार इसलिये नहीं किया था क्योंकि वह उससे नफरत

---

[३८८] उत्पत्ति ४:७
[३८९] निर्गमन १२:२९
[३९०] गिनती १:५०, व्यवस्थाविवरण ३१:३३
[३९१] रोमियों ९:११-१३
[३९२] उत्पत्ति ४८:१४
[३९३] उत्पत्ति ४:३-५
[३९४] उत्पत्ति ४:४
[३९५] इब्रानियों ११:४

करता था। परंतु, क्योंकि कैन का शैतान के साथ रिश्ता था, बलिदान पर शैतान का अधिकार बनता था, इसलिये परमेश्वर उसका बलिदान स्वीकार नहीं कर सकता था, जब तक कि वह पहले बलिदान की कोई ऐसी शर्त पूरी न कर ले जो उसके स्वीकार्य को उचित ठहराए। कैन का उदाहरण यह दिखाता है कि कोई व्यक्ति जिसका संबंध शैतान के साथ हो, उसे परमेश्वर की तरफ वापस आने के लिये एक अपेक्षित क्षतिपूर्ति शर्त पूरी करनी चाहिये। कैन को क्षतिपूर्ति की कैसी शर्त पूरी करनी चाहिये थी? वह पतित प्रवृत्ति निकालने की क्षतिपूर्ति की शर्त थी।

१.२ वास्तविक नींव

यदि कैन ने पतित प्रवृत्ति निकालने के लिए क्षतिपूर्ति की शर्त पूरी की होती, तो परमेश्वर सहर्ष उसके अर्पण किए हुए बलिदान को स्वीकार कर लेता। और आदम के परिवार में वास्तविक नींव स्थापित हो जाती। पतित प्रवृत्ति निकालने के लिए कैन को किस प्रकार से क्षतिपूर्ति की शर्त पूरी करनी चाहिए थी? पहले मानव पूर्वज प्रधान स्वर्गदूत के अधीन होकर पतित हुए थे, और उससे उन्हें पतित प्रवृत्ति विरासत में मिली थी। पतित प्रवृत्ति को निकालने के लिए मानवता को पुनरुद्धार के नियमानुसार क्षतिपूर्ति द्वारा, जिस प्रक्रिया से उन्होंने शुरू में पतित प्रवृत्ति अधिग्रहण की थी, उससे उलटे चलकर क्षतिपूर्ति की शर्त पूरी करनी चाहिए।

प्रधान स्वर्गदूत पतित हुआ क्योंकि वह आदम से प्रेम नहीं करता था; बल्कि, उसने आदम से ईर्षा की क्योंकि आदम को परमेश्वर का प्रेम उससे अधिक मिल रहा था। पतित प्रवृत्ति के पहले प्राथमिक-अभिलक्षण का कारण यह था: परमेश्वर के दृष्टिकोण से देखने में विफल होना। पतित प्रवृत्ति के इस अभिलक्षण को निकालने के लिए, कैन को, जो प्रधान स्वर्गदूत के स्थान में खड़ा था, चाहिये था कि वह हाबिल से, जो आदम के स्थान पर खड़ा था, परमेश्वर के दृष्टिकोण से प्रेम करे।

प्रधान स्वर्गदूत इसलिए पतित हुआ क्योंकि उसने आदम को परमेश्वर का बिचवई होने के रूप में सम्मान नहीं दिया और उसके माध्यम से परमेश्वर का प्रेम प्राप्त नहीं किया; बल्कि, उसने आदम के स्थान को जब्त करने का प्रयास किया। पतित प्रवृत्ति का दूसरा प्राथमिक-अभिलक्षण का कारण यह था: अपना उचित स्थान छोड़ना। पतित प्रवृत्ति के इस अभिलक्षण को निकालने के लिये कैन को, जो प्रधान स्वर्गदूत के स्थान पर खड़ा था, परमेश्वर का प्रेम हाबिल के माध्यम से प्राप्त करना चाहिये था, जो आदम के स्थान पर था और उसे परमेश्वर का मध्यस्थ मानकर सम्मान देना चाहिये था। इस तरह, कैन को अपना उचित स्थान बनाए रखना चाहिये था।

प्रधान स्वर्गदूत का पतन उस समय हुआ जब उसने आदम और हव्वा पर प्रभुत्व का दावा किया जो उसके यथोचित स्वामी थे। पतित प्रवृत्ति के तीसरे प्राथमिक-अभिलक्षण का कारण यह था: प्रभुत्व उलटना। इस पतित प्रवृत्ति को निकालने के लिये, कैन को, जो प्रधान स्वर्गदूत के स्थान पर था, हाबिल का आज्ञाकारी बन कर उसकी अधीनता स्वीकार करनी चाहिये थी, जो आदम के स्थान पर था। हाबिल

का प्रभुत्व स्वीकार करके कैन को प्रभुत्व के अनुक्रम को सुधारना चाहिये था।

परमेश्वर ने आदम को भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष के फल को खाने के लिये मना किया था। आदम को चाहिये था कि वह परमेश्वर की इस इच्छा को हव्वा को व्यक्त करता, और फिर हव्वा को यही बात प्रधान स्वर्गदूत से कहनी चाहिये थी, इस तरह अच्छाई को पुष्ट करना चाहिये था। बजाय इसके, प्रधान स्वर्गदूत ने अपनी बुरी इच्छा हव्वा को बताई कि इस फल को खाने की अनुमति है। हव्वा ने यह बुरी इच्छा मुड़ कर आदम से कही और यह आदम के पतन का कारण बनी। पतित प्रवृत्ति का चौथा प्राथमिक-अभिलक्षण का कारण यह था: बुराई फैलाना। इस पतित प्रवृत्ति को निकालने के लिये कैन, जो प्रधान स्वर्गदूत के स्थान पर खड़ा था, उसे चाहिये था कि वह हाबिल, जो परमेश्वर के करीब था, उसके इरादों को स्वीकार करे और उससे परमेश्वर की इच्छा जाने। इस तरह कैन को अच्छाई की पुष्टि की नींव डालनी चाहिये थी।

मानव जीवन में कैन और हाबिल की स्थितियों के अनुरूप बहुत से उदाहरण मिलते हैं। जब हम अपने भीतर देखते हैं तो हम यह देखते है कि हमारा अंतरिम मन परमेश्वर के नियम से प्रसन्न होता है।[३९६] तब वह हाबिल के स्थान पर होता है जबकि हमारा शरीर, जो पाप करता है,[३९७] कैन के स्थान में होता है। हम केवल उसी समय अच्छे बन सकते हैं जब हमारा शरीर मन की आज्ञा माने, जो हमें अच्छाई की ओर ले जाता है। हालांकि, बहुधा ऐसा होता है कि हमारा शरीर मन के आदेशों पर नहीं चलता और बग़ावत करता है, जो कैन का हाबिल की हत्या की उपमा को दोहराता है। इस तरह से बुराई हमारे भीतर बढ़ती है। इसी कारण से, धार्मिक जीवन हमें अपने शरीर को मन के उच्च आदेशों के अधीन रहने के लिये मजबूर करना चाहिए है, जिस तरह कैन को हाबिल के अधीन होकर रहना चाहिये था।

यह बात हम बलिदान की भेंट चढ़ाने के रिवाज में ही देख सकते हैं। चूंकि हम "सृष्टि की सब वस्तुओं से अधिक धोखेबाज़ ठहराए गये हैं",[३९८] सृष्टि की वस्तुएं हाबिल के स्थान पर रखी गईं हैं। इसलिए, उन्हें बलिदान के रूप में भेंट चढ़ाने के माध्यम से हम परमेश्वर के सामने खड़े हो सकते हैं। इसका दूसरा उदाहरण कि अच्छे नेता और धर्मी दोस्तों को तलाश करने की सर्वव्यापी प्रवृत्ति हमारे अंतरतम की उत्कंठा से उठती है, कि हम परमेश्वर के सामने हाबिल जैसे व्यक्ति के माध्यम से, जो परमेश्वर के अधिक करीब होते हैं जा सकते हैं। उसके साथ तालमेल रखकर हम परमेश्वर के करीब आ सकते हैं। ईसाई धर्म हमें निरहंकार और विनम्र होना सिखाता है। इस प्रकार के जीवन से हम अपने हाबिल से मिल सकते हैं और परमेश्वर के सामने जाने का रास्ता सुरक्षित कर सकते हैं।

समाज में प्रत्येक स्तर पर संबंधों के बीच—अकेले व्यक्तियों से लेकर परिवारों, समुदायों, समाज, राष्ट्र और विश्व के स्तर तक—हम दो प्रकार के व्यक्तियों को पाते हैं, एक जो हाबिल की भूमिका निभाता है और अन्य जो कैन की भूमिका निभाता है। प्रत्येक स्तर पर समाज को पूर्वावस्था में, जिस अवस्था में परमेश्वर ने आदि में कल्पना की थी, स्थापित करने के लिये उन लोगों को जो कैन के स्थान पर हैं, हाबिल

[३९६] रोमियों ७:२२
[३९७] रोमियों ७:२५
[३९८] यर्मयाह १७:९

के स्तर के लोगों का आदर करना चाहिये और उनका आज्ञाकारी होना चाहिये। यीशु इस दुनिया में हाबिल के रूप में आया था, जिसके आगे सारी मानवता को झुकना चाहिये था और उसके पीछे चलना चाहिये था। इसी कारण, उसने कहा, "मेरे बिना कोई पिता के पास नहीं पहुँच सकता।"[३९९]

यदि कैन ने हाबिल के आगे आत्मसमर्पण कर लिया होता और इस प्रकार आदम के परिवार में पतित प्रवृत्ति को निकालने के लिए क्षतिपूर्ति की शर्त पूरी हो जाती, तो वे वास्तविक नींव की स्थापना करने में सफल हो जाते। इस प्रकार, विश्वास की नींव के साथ, जो पहले ही से तैयार थी, आदम के परिवार ने मसीह के लिए नींव की स्थापना कर ली होती। मसीह तब उनके पास आ गया होता और मूल चार-दशा-आधार की नींव पुनः स्थापित कर ली होती। बजाए इसके कैन ने हाबिल को मार डाला। हाबिल की हत्या करके कैन ने प्रधान स्वर्गदूत के पाप को दोहराया। यानी उसने उस प्रक्रिया को फिर से दोहराया जिससे पतित प्रवृत्ति के प्राथमिक लक्षण पैदा हुए थे। इस प्रकार, आदम का परिवार वास्तविक नींव स्थापित करने में विफल हो गया। फलस्वरूप, आदम के परिवार में परमेश्वर की पुनरुद्धार की दैवी योजना पूरी नहीं हो सकी।

१.३ आदम के परिवार में मसीह के लिये नींव

मसीह के लिए नींव, पहले क्षतिपूर्ति के माध्यम से विश्वास की नींव और फिर वास्तविक नींव स्थापित करने से स्थापित होती है। अपेक्षित बलिदानों के संबंध में, विश्वास की नींव स्वीकार्य *सांकेतिक भेंट चढ़ाने* से पुनःस्थापित की जाती है, और वास्तविक नींव स्वीकार्य *वास्तविक भेंट चढ़ाने* से स्थापित की जाती है, आईये अब हम सांकेतिक भेंट और वास्तविक भेंट के अर्थ और उद्देश्य की जांच करें।

आदम और हव्वा को तीन महान आशीर्वाद दिए गए थे, यह परमेश्वर का सृष्टि का उद्देश्य है, जो उनके अपने व्यक्तिगत चरित्र को पूर्ण करने के बाद पति पत्नी बनने पर साधित होने चाहिए थे। तब वे अच्छे बच्चों को जन्म देते, अच्छा परिवार बनाते, और प्राकृतिक दुनिया पर प्रभुत्व प्राप्त कर लेते। परंतु पतन के कारण, तीनों महान आशीर्वाद खो गए। उनको पुनःस्थापित करने के लिये हमें पतन के रास्ते पर उलटे चलने की आवश्यकता है। सबसे पहले, हमें सांकेतिक भेंट चढ़ा कर विश्वास की नींव स्थापित करना आवश्यक है जो सभी चीजों के पुनःस्थापन और लोगों के सांकेतिक पुनरुद्धार के लिये क्षतिपूर्ति की शर्त को पूरी करता है। फिर, हमें वास्तविक भेंट चढ़ा कर वास्तविक नींव स्थापित करने की आवश्यकता है, जो पहले बच्चों और फिर उसके माता-पिता के पुनरुद्धार के लिये क्षतिपूर्ति की शर्त पूरा करती है। इस आधार पर, हम मसीह के लिए नींव स्थापित कर सकते हैं।

हम दो तरीकों से सांकेतिक भेंट के उद्देश्य और अर्थ पर विचार कर सकते हैं। सबसे पहले, जैसे ऊपर चर्चा की गई है,[४००] मनुष्यों पर, जो सृष्टि के असली शासक थे, शैतान का प्रभुत्व होने के कारण उसने सारी प्राकृतिक दुनिया पर प्रभुता प्राप्त कर ली है। इस कारण यह लिखा है, "सारी सृष्टि अब तक मिलकर

[३९९] यूहन्ना १४:६

[४००] प्रति-संदर्भ पतन ४:१

कहराती है और पीड़ाओं में तड़पती है।"[४०१] इस प्रकार सांकेतिक भेंट चढ़ाने का एक उद्देश्य यह है कि सब चीज़ों को सांकेतिक रूप से परमेश्वर के समक्ष वास्तविक पात्र साझी बनने के लिये समर्थ करना है। यह परमेश्वर के साथ प्राकृतिक दुनिया का मौलिक संबंध पुनःस्थापना करने के लिये क्षतिपूर्ति की शर्त को पूरा करता है। दूसरा, चूँकि मनुष्य सृष्टि की वस्तुओं से भी नीचे गिर गया है,[४०२] इसलिये वे परमेश्वर के पास सब चीजों के माध्यम से होकर ही जा सकते हैं। यह सृष्टि के नियम पर आधारित है कि यदि कोई परमेश्वर के पास जाना चाहता हो तो उसे उस वस्तु के माध्यम से जाना आवश्यक है जो परमेश्वर के सबसे करीब है। इस तरह, प्रतीकात्मक भेंट चढ़ाने का दूसरा उद्देश्य मनुष्यों के प्रतीकात्मक पुनरुद्धार के लिए क्षतिपूर्ति की शर्त को पूरा करना है।

दूसरी ओर, वास्तविक भेंट आंतरिक भेंट है। सृष्टि के नियम के अनुसार, चूँकि सब वस्तुओं की रचना करने के बाद परमेश्वर ने मनुष्य की रचना की, इसलिये मनुष्य के पुनरुद्धार के लिए यह आंतरिक भेंट केवल स्वीकार्य प्रतीकात्मक भेंट के आधार पर ही की जा सकती है। प्रतीकात्मक भेंट जब सब वस्तुओं के पुनःस्थापन और मनुष्य के पुनरुद्धार दोनों के लिये क्षतिपूर्ति की शर्त पूरी कर चुकती है, तब हमें वास्तविक भेंट चढ़ानी चाहिये, जो मनुष्य के पूर्ण पुनरुद्धार के लिये क्षतिपूर्ति की शर्त पूरी करती है। वास्तविक भेंट का अर्थ है, पतित प्रवृत्ति को निकालने के लिए क्षतिपूर्ति शर्त पूरी करना। यह मनुष्य के वास्तविक पुनरुद्धार के लिए आवश्यक है। वास्तविक भेंट उस समय चढ़ाई जाती है जब कोई कैन के स्थान पर खड़ा होकर हाबिल के स्थान पर खड़े हुए व्यक्ति का सम्मान करे और उसको अपने से ऊपर मान कर भेंट के रूप में रखे। इस माध्यम से, वह अच्छे बच्चों के रूप में पुनःस्थापित किए जाने के लिए क्षतिपूर्ति की शर्त को पूरा करते हैं। उसी समय यह उनके माता पिता के पुनरुद्धार के लिए भी क्षतिपूर्ति की शर्त के रूप में गिना जाता है। इस तरीके से वास्तविक भेंट परमेश्वर की अपेक्षा को पूरा कर सकती है।

माता-पिता के पुनरुद्धार के लिए हम क्षतिपूर्ति की शर्त कैसे समझ सकते हैं? आदम के परिवार में मसीह के लिए नींव स्थापित करने के लिए, आदम ही वह व्यक्ति था जिसको प्रतीकात्मक भेंट चढ़ा कर विश्वास की नींव स्थापित करना चाहिए थी। तथापि, आदम यह बलिदान नहीं चढ़ा सका, क्योंकि, यदि आदम ऐसा करने की कोशिश करता तो उसके दो स्वामी हो जाते, परमेश्वर और शैतान दो प्रतिद्वंद्वी स्वामी—जो एक अनियमित समस्या खड़ी करता। इसके अलावा, दिल के पहलू से देखने से भी एक और कारण बनता है। पतित आदम स्वयं ऐसा पापी था जिसने परमेश्वर का दिल दुखाया और हज़ारों वर्ष तक न मिटने वाली गहरी वेदना का कारण बना। वह परमेश्वर का हृदय प्रिय होने के योग्य नहीं था, जिसके साथ परमेश्वर पुनरुद्धार का कार्य सीधे कर सके।

तदनुसार, उसके बदले परमेश्वर ने आदम के दूसरे बेटे हाबिल को सांकेतिक बलि चढ़ाने के लिये चुना। हाबिल ने सभी वस्तुओं के पुनःस्थापन और मनुष्यों के प्रतीकात्मक पुनरुद्धार के लिये क्षतिपूर्ति

---

[४०१] रोमियों ८:२२
[४०२] यर्मयाह १७:९

की शर्तें पूरी कीं। यदि कैन और हाबिल ने उस समय स्वीकार्य वास्तविक भेंट चढ़ा कर बच्चों के पुनरुद्धार के लिये क्षतिपूर्ति की शर्त पूरी कर ली होती तो उनका पिता आदम वास्तविक नींव की इस जीत में भागीदार हो जाता। इस प्रकार आदम के परिवार ने मसीह के लिये नींव स्थापित कर ली होती।

वास्तविक भेंट चढ़ाने से पहले, भेंट का प्रमुख-व्यक्ति जो भेंट के लिये ठहराया गया है, चुना जाना चाहिये। परमेश्वर ने दो कारणों से हाबिल को सांकेतिक भेंट अर्पित करने का आदेश दिया: सबसे पहले, उसे आदम के बदले विश्वास की नींव स्थापित करने के लिए ठहराया; दूसरा, उसे प्रमुख-व्यक्ति के रूप में वास्तविक भेंट चढ़ाने के योग्य बनाने के लिये चुना।

कैन वह व्यक्ति था जिसको पतित प्रवृत्ति निकालने के लिये क्षतिपूर्ति की शर्त को पूरा करना चाहिये था, तब उसकी उपलब्धियों से आदम के पूरे परिवार के लिये शर्त पूरी हो सकती थी। यह कैसे संभव हो सकता है? इसकी तुलना पहले मानव पूर्वजों की परिस्थिति से की जा सकती है, जो परमेश्वर की संपूर्ण इच्छा को पूरी करने में उसकी मदद कर सकते थे यदि उन्होंने परमेश्वर के वचन का पालन किया होता। इसकी तुलना यीशु के दिनों के यहूदी लोगों की स्थिति से भी की जा सकती है, जो मानव जाति के पूर्ण उद्धार के लिये यीशु की इच्छा को पूरी करने में उसकी मदद कर सकते थे यदि उन्होंने यीशु पर विश्वास किया होता। यदि कैन ने हाबिल के सामने समर्पण कर लिया होता और पतित प्रवृत्ति निकालने के लिये क्षतिपूर्ति की शर्त पूरी की होती, तो यह शर्त दोनों बच्चों ने पूरी की है मानी जाती। कैन और हाबिल आदम के संतान थे, और अच्छाई और बुराई दोनों के मूर्त रूप थे। यदि उन्होंने पतित प्रवृत्ति निकालने के लिये क्षतिपूर्ति की शर्त पूरी करके अपने आप को शैतान के पंजे से मुक्त कर लिया होता, तो आदम उनका पिता भी शैतान के पंजे से छूट जाता और वास्तविक नींव पर खड़ा हो जाता। इस प्रकार, पूरे परिवार के द्वारा मसीह के लिए नींव स्थापित हो जाती। संक्षेप में, यदि कैन और हाबिल सांकेतिक और वास्तविक भेंट चढ़ाने में सफल हो जाते, तो माता-पिता के पुनरुद्धार की क्षतिपूर्ति शर्त पूरा हो जाती।

जब हाबिल ने इस भाँति से बलिदान चढ़ाया जो परमेश्वर को स्वीकार्य हो, उसने आदम के लिये विश्वास की नींव पुनःस्थापित करने की क्षतिपूर्ति की शर्त पूरी की और अपने लिये प्रमुख-व्यक्ति के रूप में वास्तविक भेंट का पद मज़बूती से सुरक्षित कर लिया। तथापि, जब कैन ने हाबिल की हत्या की, उसने पतन को पुनः दोहराया, जिसमें प्रधान स्वर्गदूत ने हव्वा की आत्मिक रूप से हत्या की थी। यह कहना अनावश्यक है कि उन्होंने पतित प्रवृत्ति को निकालने के लिये क्षतिपूर्ति की शर्त को पूरा नहीं किया और वास्तविक चढ़ावे में असफल रहे। इसलिए, न तो वास्तविक नींव और ना ही मसीह के लिये नींव स्थापित की जा सकी। आदम के परिवार में परमेश्वर के पुनरुद्धार की दैवी योजना विफल हो गई।

१.४ आदम के परिवार से कुछ शिक्षाएं

आदम के परिवार में परमेश्वर के पुनरुद्धार की दैवी योजना की विफलता हमें परमेश्वर की अपनी इच्छा की उपलब्धि की सशर्त पूर्वनियति और मनुष्य का अपने हिस्से के दायित्व उठाने के चलन हेतु उसके पूर्ण समादर के बारे में कुछ महत्वपूर्ण शिक्षा देती है। सृष्टि के निर्माण के समय से परमेश्वर ने यह पूर्वनिर्धारित किया था कि उसकी इच्छा, उसके हिस्से की ज़िम्मेदारी और मनुष्य के हिस्से के दायित्व की संयुक्त पूर्ति

के आधार पर पूरी की जाएगी। परमेश्वर कैन और हाबिल को यह आदेश नहीं दे सकता था कि वे किस प्रकार अपना यथायोग्य बलिदान चढ़ाएं क्योंकि यह उनकी अपने हिस्से ज़िम्मेदारी थी और कि कैन को हाबिल की मदद के साथ अपना बलिदान चढ़ाना चाहिए।

दूसरा, कैन के हाबिल को मार डालने के बाद भी परमेश्वर ने अपनी दैवी योजना में हाबिल के स्थान पर सेथ को खड़ा करके नया कदम उठाया। यह दर्शाता है, परमेश्वर ने अपनी इच्छा को सर्वथा पूर्वनिर्धारित किया है कि वह एक दिन पूरी होगी, जबकि व्यक्तियों के व्यक्तिगत संबंध से उसकी पूर्वनियति सशर्त है। हाबिल का वास्तविक भेंट का प्रमुख-व्यक्ति के रूप में सफल होना उसकी अपने हिस्से की जिम्मेदारी को पूरा करने पर निर्भर है यह परमेश्वर ने पूर्वनिश्चित किया है। इसलिए, जब हाबिल अपनी जिम्मेदारी को पूरा नहीं कर सका, परमेश्वर ने उसके स्थान पर सेथ को चुना और अपनी इच्छा को, जो निःसंदेह पूरी होने के लिये पूर्वनिर्धारित है, पूरा करने का प्रयास किया।

तीसरा, कैन और हाबिल की भेंट के द्वारा परमेश्वर हमें यह सिखाता है कि पतित लोगों को लगातार हाबिल-वर्ग के व्यक्ति की तलाश करना चाहिये। उसका आज्ञाकारी होकर, मान-सम्मान करके और उसके पीछे चलकर हम ईश्वर की इच्छा के हर पहलू को समझने के बिना भी परमेश्वर की इच्छा पूरी कर सकते हैं।

आदम के परिवार के द्वारा परमेश्वर ने अपनी दैवी योजना का जो कार्य किया वह मनुष्य की अविश्वसनीयता के कारण बहुत बार दुहराया गया है। परिणाम स्वरूप, यह मार्ग क्षतिपूर्ति के पथ के रूप में हमें स्वयं चलना होगा। इस तरह, आदम के परिवार में पुनरुद्धार की दैवी योजना हमें अपनी आस्था के पथ पर चलने के लिये कई मूल्यवान शिक्षा प्रदान करती है।

संभाग २

नूंह के परिवार में पुनरुद्धार की दैवी योजना

कैन ने हाबिल को मार डाला, इसलिये आदम के परिवार में परमेश्वर की दैवी योजना पूरी नहीं हो सकी। परंतु, परमेश्वर ने उसके सृष्टि के उद्देश्य की पूर्ति पूर्णतः पूर्वनिर्धारित की है, और उसकी इच्छा अपरिवर्तनीय थी। इसलिए, हाबिल की निष्ठा की नींव पर, जो उसने स्वर्ग के लिये प्रगट की थी, परमेश्वर ने उसकी जगह पर सेथ को चुना।[४०३] सेथ के वंश से परमेश्वर ने आदम के परिवार के बदले नूंह के परिवार से अपनी दैवी योजना में एक नया खंड शुरू किया। लिखा है कि परमेश्वर ने दुनिया का बाढ़ द्वारा न्याय किया: "तब परमेश्वर ने नूंह से कहा, सब प्राणियों का अंत करने का प्रश्न मेरे सामने आ गया है, क्योंकि उनके कारण पृथ्वी उपद्रव से भर गई है, इसलिये मैं उनको पृथ्वी समेत नष्ट कर डालूँगा।"[४०४] यह हमें बताता है, कि नूंह का समय अंतिम दिन थे। परमेश्वर का इरादा था कि वह बाढ़ के दंड के बाद, नूंह के परिवार के द्वारा स्थापित की गई नींव पर मसीह को भेज कर सृष्टि के उद्देश्य को पूरा करेगा। इस कारण, नूंह का परिवार क्षतिपूर्ति की शर्त पूरी करके विश्वास की नींव और फिर वास्तविक नींव पुनःस्थापित करने का ज़िम्मेदार था। उन्हें क्षतिपूर्ति के माध्यम से मसीह के लिये नींव, जिसमें आदम का परिवार विफल रहा था, पुनःस्थापित करना था।

२.१ विश्वास की नींव

२.१.१ विश्वास की नींव के लिये मुख्य व्यक्ति

नूंह के परिवार के द्वारा पुनरुद्धार की दैवी योजना में, विश्वास की नींव पुनःस्थापित करने वाला प्रमुख व्यक्ति नूंह था। परमेश्वर ने नूंह को अपनी इच्छा, जो उसने आदम के द्वारा पूरी करनी चाही थी, पूरी करने के प्रयोजन से आदम से दस पीढ़ी बाद यानी बाईबल के सोलह सौ वर्ष के बाद नूंह को बुलाया। तदनुसार, परमेश्वर ने उसे आशीर्वाद दिया, "फूलो-फलो और बढ़ो,"[४०५] जिस तरह पहले उसने आदम को तीन आशीर्वाद दिये थे।[४०६] इस अर्थ से, नूंह मानवता का दूसरा पूर्वज था।

नूंह उस समय बुलाया गया था, जब "पृथ्वी हिंसा से भर गई थी"।[४०७] उसने १२० वर्ष तक परमेश्वर के निर्देशों को पूर्ण आज्ञाकारिता के साथ, उपहास और मजाक के सभी प्रकार के ताने सह कर, पहाड़ के ऊपर जहाज़ बना कर तैयार किया। विश्वास की इस शर्त पर, परमेश्वर नूंह के परिवार पर केंद्रित बाढ़ का दंड ला सका। इस अर्थ में नूंह पहला विश्वास का पिता था। हालांकि आमतौर पर हम अब्राहम को विश्वास के पिता का मान देते हैं, पर वास्तव में नूंह को वह सम्मान मिलना चाहिये था। जैसे कि हम देखेंगे

---

[४०३] उत्पत्ति ४:२५
[४०४] उत्पत्ति ६:१३
[४०५] उत्पत्ति ९:७
[४०६] उत्पत्ति १:२८
[४०७] उत्पत्ति ६:११

कि उसके पुत्र हैम के पाप के कारण यह मिशन अब्राहम को सौंपा गया।

आदम के किस्से में, यह बताया गया है कि यद्यपि उसको विश्वास की नींव पुनः स्थापित करने के लिए प्रमुख व्यक्ति के स्थान पर होना चाहिये था, परंतु वह स्वयं बलिदान नहीं चढ़ा सका। नूंह की स्थिति अलग थी। उसे परमेश्वर ने हाबिल की निष्ठावान और विश्वसनीय स्वीकार्य सांकेतिक भेंट की नींव पर बुलाया था। वंश के संबंध से, नूंह सेथ का वंशज था, जो हाबिल की जगह चुना गया था। इसके अतिरिक्त, नूंह परमेश्वर की दृष्टि में धर्मी था।[४०८] इन कारणों से, वह, जहाज़ बना कर, परमेश्वर को सांकेतिक भेंट चढ़ने के योग्य था।

२.१.२ *विश्वास की नींव के पुनः स्थापन के लिये शर्त की वस्तु*

शर्त की वह वस्तु जिसके द्वारा नूंह विश्वास की नींव पुनः स्थापित करने वाला था वह जहाज़ थी। जहाज़ प्रतीकात्मक महत्व से भरा था। इससे पहले कि नूंह मानवता का दूसरे पूर्वज के रूप में आदम की जगह पर खड़ा हो सके, उसे विश्व के छुटकारे के लिए, जो आदम के पतन के कारण शैतान के हाथ में चला गया था, पहले एक क्षतिपूर्ति की शर्त स्थापित करनी होगी। अतः, शर्त की वस्तु, जिसे नूंह को एक स्वीकार्य रीति से भेंट करनी होगी, वह नए विश्व का प्रतीक होना चाहिए। भेंट की वस्तु के रूप में उसने जहाज़ की प्रस्तुति की।

जहाज़ तीन पटाव में बनाया गया था जो विश्व का प्रतीक है और कि वह विकास काल के तीन चरणों के माध्यम से रचा गया था। नूंह के परिवार के आठ सदस्य, जिन्होंने जहाज़ में प्रवेश किया था, आदम के परिवार के आठ सदस्यों को दर्शाते हैं, जिनका पुनरुद्धार, शैतान के अधिकार में होने के कारण, क्षतिपूर्ति के माध्यम से ही हो सकता था। इस प्रकार, जहाज़ विश्व का प्रतीक है; नूंह उसका कप्तान परमेश्वर का प्रतीक है; उसके परिवार के सदस्य मानवता के प्रतीक हैं; और जो जानवर जहाज़ में लाए गये थे वे पूरी प्राकृतिक दुनिया के प्रतीक थे।

जहाज़ के बन कर तैयार होने के बाद, परमेश्वर ने दुनिया को चालीस दिन तक बाढ़ के द्वारा दंड दिया। बाढ़ का क्या उद्देश्य था? सृष्टि के नियम के अनुसार, मनुष्य केवल एक ही स्वामी की सेवा करने के लिये बनाया गया है। मानव जाति शैतान के बंधन में होने के कारण भ्रष्टाचार और व्यभिचार से भर गई थी, यदि परमेश्वर उनसे कोई भी संबंध रखता तो उसे पराधीन स्वामी के स्थान पर होकर रहना पड़ता। जो कि अनियमी होता। इसलिए, एक ऐसे परिवार को बढ़ाने के लिये जिसके साथ वह संबंध रख सके परमेश्वर ने बाढ़ के दण्ड से पतित मानवता का अंत किया।

परमेश्वर ने बाढ़ के लिए चालीस दिन की अवधि का चयन क्यों किया? चालीस दिन की अवधि का महत्व संख्या चार और दस के अर्थ के संबंध से समझा जाना चाहिए। संख्या दस एकता का महत्व दिखाती है।[४०९] आदम से दस पीढ़ियों के बाद परमेश्वर ने अपनी इच्छा को जो आदम पूरा नहीं कर सका,

---

[४०८] उत्पत्ति ६:९

[४०९] प्रति-संदर्भ—काल २.४

क्षतिपूर्ति के माध्यम से पुनः स्थापित करने के लिए नूंह को आह्वान दिया। परमेश्वर का अभिप्राय था कि क्षतिपूर्ति की अवधि को जिसमें संख्या दस हो पूरा करने के द्वारा वह व्यवस्था को अपनी इच्छा के साथ एकता में लाए। इसके अतिरिक्त, चूँकि पुनरुद्धार का लक्ष्य चार-दशा-आधार पूरा करना है, परमेश्वर ने क्षतिपूर्ति की अवधि की स्थापना इन दस पीढ़ियों की हर पीढ़ी को उठा कर संख्या चार को पुनः स्थापित करने का कार्य किया। आदम से नूंह तक की कुल अवधि संख्या चालीस को पुनः स्थापित करने के लिए क्षतिपूर्ति की अवधि थी। परंतु, उन दिनों के लोगों की कामुक लिप्सा के कारण शैतान ने इस क्षतिपूर्ति की अवधि की संख्या चालीस को अशुद्ध कर दिया था। नूंह के जहाज़ की व्यवस्था से परमेश्वर का चार-दशा-आधार की नींव को पूरा करने का नया प्रयास था। इसलिए, परमेश्वर ने संख्या चालीस को क्षतिपूर्ति की अवधि के रूप में पुनः स्थापित करने के लिये बाढ़ के न्याय की अवधि चालीस दिन संख्या की रखी, जो शैतान के कब्जे में आने से भ्रष्ट हो गई थी। क्षतिपूर्ति की इस संख्यात्मक अवधि को पूरा करने के द्वारा, परमेश्वर ने विश्वास की नींव को पुनः स्थापित करने का इरादा किया था।

इस प्रकार, संख्या चालीस *शैतान से अलग होने के लिये व्यवस्थाओं* की विशेषता बन गई जो विश्वास की नींव बहाल करने के लिए आवश्यक हैं। इसके कई उदाहरण हैं: नूंह के चालीस दिवसीय बाढ़; नूंह से अब्राहम तक चार सौ साल; मिस्र में इस्राएलियों की चार सौ वर्ष की दासता; मूसा के दो चालीस दिवसीय व्रत; चालीस दिन कनान में जासूसी; इस्राएलियों का जंगल में चालीस वर्ष भटकना; राजा शाऊल, राजा दाऊद और राजा सुलेमान का चालीस वर्षीय राज; एलिय्याह का चालीस दिन का व्रत; यूनुस की भविष्यवाणी कि नीनवे चालीस दिनों में नष्ट हो जाएगा; यीशु का जंगल में चालीस दिन उपवास और प्रार्थना; और यीशु के पुनरुत्थान से उसके स्वर्ग पर उठाए जाने के दिन तक की चालीस दिन की अवधि।

बाईबल में हम पढ़ते हैं कि चालीस दिन की वर्षा के अंत में, नूंह ने जहाज़ से एक कौवे और एक फाक्ता को छोड़ा।[४१०] आइए हम भविष्य की इन दैवी स्थितियों की जाँच करें जिनका वर्णन पहले से किया गया है, जैसा लिखा है, "इसी प्रकार प्रभु यहोवा अपने दास भविष्यद्वक्ताओं पर अपना रहस्य बिना प्रगट किए कुछ भी नहीं करता है।"[४११] जहाज़ बना कर और चालीस दिवसीय बाढ़ के दंड से गुज़र कर, नूंह ने विश्व की बहाली के लिए क्षतिपूर्ति शर्त को पूरा किया। बाढ़ विश्व के निर्माण से पहले की अव्यवस्था की अवधि के अनुरूप है जब "परमेश्वर का आत्मा जल के ऊपर मण्डराता था।"[४१२] तदनुसार, परमेश्वर के कार्य जो उसने चालीस दिन की बाढ़ के अंत में जहाज़ के आस-पास किए, स्वर्ग और पृथ्वी की सृष्टि के बाद से संपूर्ण इतिहास का प्रतीक है।

जब नूंह ने कौवे को छोड़ा, जो पानी के सूख जाने तक उतरने के लिये जगह ढूँढ़ता हुआ चक्कर काट रहा था, क्या पूर्वाभासित करता है? यह ये संकेत करता कि शैतान अवश्य कोई बहाना ढूँढ़ेगा जिसके ज़रिये वह नूंह के परिवार पर हमला करे, जिस प्रकार से प्रधान स्वर्गदूत मनुष्य की सृष्टि के एक दम बाद

---

[४१०] उत्पत्ति ८:६-७
[४११] आमोस ३:७
[४१२] उत्पत्ति १:२

ही हव्वा के प्रेम की आस लगाए बैठा था, और जिस प्रकार शैतान कैन और हाबिल के बलिदान की भेंट पर आक्रमण करने के अवसर की तलाश में द्वार पर छिपा था।[४१३]

नूंह का तीन बार फाक्ता को छोड़ना क्या संकेत करता है? हालांकि, बाईबल में लिखा है कि नूंह ने यह देखने के लिए कि पानी कितना सूख गया है फाक्ता छोड़ी थी, परंतु यह एकमात्र उद्देश्य नहीं था। अवश्य ही नूंह ने जिस खिड़की से फाक्ता छोड़ी थी, उस खिड़की से स्वयं झांक कर स्थिति की जाँच कर सकता था। फाक्ता का छोड़ना परमेश्वर की रहस्यमय इच्छा के गहरे महत्व से जुड़ा है। नूंह द्वारा बाढ़ के फैसले की परमेश्वर की घोषणा के सात दिनों के बाद बाढ़ शुरू हो गई।[४१४] उसके चालीस दिन के बाद फाक्ता छोड़ी गई। वह इधर-उधर उड़ कर जहाज़ पर लौट आई और नूंह ने उसे वापस अंदर ले लिया।[४१५] फाक्ता, का पहली बार छोड़ा जाना, पहले आदम को संकेत करता है। परमेश्वर ने आदम की रचना इस आशा से की थी कि उसका सृष्टि का आदर्श, जो उसने पहले से पोषित किया था, पृथ्वी पर आदम में दिव्य आदर्श के रूप में पूर्ण रूप से साधित हो सके। परंतु आदम के पतन के कारण, परमेश्वर उसके द्वारा पृथ्वी पर दिव्य आदर्श साकार नहीं सका। इस प्रकार परमेश्वर ने कुछ समय के लिये अपना आदर्श पृथ्वी से वापस हटा लिया और इसकी पूर्ति बाद की तिथि के लिये स्थगित कर दी।

सात दिनों के बाद, नूंह ने दूसरी बार फाक्ता को छोड़ा। परंतु पानी अभी तक नहीं सूखा था, इसलिये फाक्ता फिर से वापस लौट आई। इस समय वह मुंह में जैतून का एक पत्ता लेकर आई, यह संकेत करता है कि अगली बार उसे उतरने की जगह होगी।[४१६] फाक्ता, जब दूसरी बार बाहर भेजी गयी थी, वह दूसरे आदम, यीशु का प्रतीक है जिसके आने से, पृथ्वी पर दिव्य आदर्श पूर्ण रूप से साकार करने का परमेश्वर का दूसरा प्रयास होगा। यह छंद, यह पूर्वाभास देते हैं कि यदि चुने हुए लोग यीशु के आगमन पर उस पर विश्वास नहीं करेंगे तो “उसे सिर रखने की कहीं जगह नहीं मिलेगी”[४१७] और इस प्रकार वह पृथ्वी पर परमेश्वर की पूर्ण इच्छा पूरी नहीं कर सकेगा। उस स्थिति में, यीशु को अपनी दूसरे आगमन का वादा करके क्रूस पर जाना होगा और इस तरह वह वापस परमेश्वर की गोद में चला जाएगा। फाक्ता वापस जहाज़ पर आ गई क्योंकि पानी अभी तक सूखा नहीं था। तुल्यता, यदि यहूदी लोगों में से अधिकांश यहूदी श्रद्धापूर्वक यीशु की सेवा-टहल करते तो उसे उनके बीच खड़े होने के लिए एक सुरक्षित जगह मिल जाती। वह क्रूस पर नहीं चढ़ाया जाता और उसने पृथ्वी पर स्वर्ग के राज्य की स्थापना कर ली होती।

सात दिन और बीतने के बाद नूंह ने तीसरी बार फाक्ता को बाहर छोड़ा। इस बार फाक्ता जहाज़ पर वापस नहीं आई, क्योंकि जमीन सूखी थी।[४१८] फाक्ता का तीसरी बार छोड़ा जाना, मसीह के दूसरे

---

[४१३] उत्पत्ति ४:७
[४१४] उत्पत्ति ७:१०
[४१५] उत्पत्ति ८:९
[४१६] उत्पत्ति ८:१०-११
[४१७] लूक ९:५८
[४१८] उत्पत्ति ८:१२

आगमन का प्रतीक है जो तीसरे आदम के रूप में आने वाला है। यह पूर्वाभासित करता है कि जब मसीह फिर से आएगा, वह निश्चित रूप से परमेश्वर का सृष्टि का आदर्श साधित करने में सक्षम होगा जो पृथ्वी से कभी नहीं मिटेगा। जब फाक्ता वापस नहीं आई, तब अंत में नूंह का परिवार जहाज़ से बाहर पृथ्वी पर आया, जो कि पाप से धुलकर नई बन गई थी। यह पूर्वाभासित करता है कि जब तीसरे आदम के कार्य से पृथ्वी पर सृष्टि का आदर्श साकार हो जाएगा तब नया यरूशलेम स्वर्ग से उतरेगा और परमेश्वर का निवास लोगों के साथ होगा।[४१९]

इस कथा के पूर्वाभासी भावों की व्याख्या, जैसे पहले बताया गया है, नियम के प्रकाश में समझनी चाहिए: परमेश्वर के पुनरुद्धार की दैवी योजना दीर्घीकृत हो सकती है यदि कोई व्यक्ति जिसे यह दैवी योजना सौंपी गई है अपनी जिम्मेदारी निबाहने में विफल हो जाए।[४२०] आदम के अविश्वास और उसका अपनी जिम्मेदारी को पूरा करने में विफल होने के कारण, यीशु को दूसरे आदम के रूप में आना पड़ा। फिर, यदि यहूदी लोग यीशु में विश्वास नहीं करेंगे और इस तरह अपनी जिम्मेदारी को पूरा करने के लिए विफल होंगे, तो मसीह को निश्चित रूप से तीसरे आदम के रूप में फिर से आना होगा। जिस तरह, स्वर्ग और पृथ्वी के निर्माण में सात-दिन का समय लगा था, और हर बार फाक्ता छोड़ने के बीच सात दिवसीय अंतराल था, यह संकेत करता है कि स्वर्ग और पृथ्वी की बहाली के लिये भी कुछ दैवी अवधी का लगना आवश्यक है।

२.२ वास्तविक नींव

नूंह ने क्षतिपूर्ति द्वारा जहाज़ की व्यवस्था को पूरा करके सफलतापूर्वक विश्वास की नींव पुनः स्थापित की और इस तरह परमेश्वर को स्वीकार्य प्रतीकात्मक भेंट अर्पण की। ऐसा करने से नूंह ने सभी चीजों की बहाली के लिए, और मनुष्य के प्रतीकात्मक पुनरुद्धार के लिये क्षतिपूर्ति की शर्त पूरी की। इस नींव पर नूंह के बेटे सेथ, शेम और हैम क्रमशः, कैन और हाबिल के स्थान में खड़े हो सकते थे। यदि वे पतित प्रवृत्ति निकालने के लिये क्षति-पूर्ति की शर्त को पूरा करके वास्तविक भेंट अर्पण करने में सफल हो जाते, तो वे वास्तविक नींव स्थापित कर सकते थे।

नूंह के परिवार को संतोषजनक वास्तविक नींव बनाने के लिए, नूंह के दूसरे बेटे हैम को, आदम के दूसरे बेटे हाबिल का स्थान पुनः स्थापित करना चाहिये था। उसे वास्तविक भेंट का प्रमुख व्यक्ति बनना चाहिये था जैसे हाबिल अपने परिवार की वास्तविक भेंट का प्रमुख व्यक्ति था। आदम के परिवार में हाबिल ने क्षतिपूर्ति के माध्यम से विश्वास की नींव स्थापित करने के लिये और वास्तविक भेंट के योग्य प्रमुख व्यक्ति बनने के लिये आदम के स्थान पर सफलतापूर्वक प्रतीकात्मक भेंट चढ़ाई। नूंह के परिवार के बारे में, हैम ने नहीं, परंतु नूंह ने सांकेतिक भेंट चढ़ाई थी। इसलिए, हैम को हाबिल के स्थान पर खड़े होने के लिये, जिस तरह वह प्रतीकात्मक भेंट चढ़ाने में सफल हुआ था, उसे अपने पिता के साथ पूर्णतः एक दिल

[४१९] प्रकाशितवाक्य २१:१-३
[४२०] प्रति-संदर्भ—पूर्वनियति २

होना जाना चाहिये, इस तरह कि वह उससे कभी अलग न हो सके। आईये हम यह जांच करें कि नूंह के साथ एक दिल होने के लिये परमेश्वर ने किस तरह हैम की मदद करने का काम किया।

बाईबल यह बताती है कि जब हाम ने अपने पिता को उसके तम्बू में नग्न लेटा हुआ देखा, तो उसने नूंह के लिये शर्म महसूस की और इसे अपमान समझा। हाम ने अपने भाइयों शेम और येपेत में इन्हीं भावनाओं को उभारा। हाम के द्वारा अपने पिता की नग्नता से शर्म महसूस करते हुए उन्होंने अपने मुंह को फिराया कि उसे देख न सकें और उलटे चल कर अपने पिता के शरीर को चादर से ढांपा। यह इतना गम्भीर पाप था कि नूंह ने अपने बेटे हाम को डांटा और श्राप देते हुए कहा कि वह अपने भाइयों का दास होगा।[४२१]

परमेश्वर ने ऐसा निर्णय क्यों लिया? तन की नग्नता से शर्म महसूस करना क्यों पाप माना गया? इन मसलों को समझने के लिए हमें सबसे पहले यह याद करना है कि पाप क्या है।[४२२] शैतान अपना अस्तित्व—या कोई कार्यवाही करने के लिए अपनी शक्तियों को प्रगट नहीं कर सकता, जब तक कि वह पहले किसी को पात्र साझी न बना ले और उसके साथ लेन-देन का पारस्परिक संबंध स्थापित न कर ले। जब भी कोई व्यक्ति शैतान के हमले के लिये कोई वजह बनाता है, मतलब यह कि वह खुद शैतान का पात्र साथी बन जाता है, तो वह शैतान को कार्य करने के लिए अनुमति देता है। यह पाप कहलाता है।

आगे हम यह जांच करें, कि परमेश्वर ने हाम को नूंह की नग्नता दिखाकर उसका परीक्षण क्यों किया। हमने देखा है कि जहाज़ विश्व का प्रतीक था, और जहाज़ की व्यवस्था के तुरंत बाद जो घटनाएं घटीं वे घटनाएं उन घटनाओं को दर्शातीं हैं जो विश्व की सृष्टि के तुरंत बाद घटीं थीं। इसलिए, बाढ़ के तुरंत बाद नूंह की स्थिति भी वैसी ही थी जो स्वर्ग और पृथ्वी के निर्माण के बाद आदम की थी।

आदम और हव्वा पतन से पहले मासूम दिल के थे और एक दूसरे के साथ और परमेश्वर के साथ आत्मीय संबंध रखते थे, जैसा लिखा है, वे अपने नग्न तन से शर्म नहीं करते थे।[४२३] परंतु पतन के बाद वे अपने नग्न तन से शर्म महसूस करने लगे। उन्होंने अपने तन के निचले भागों को अंजीर की पत्तियों से ढांपा और इस डर से कि परमेश्वर उन्हें देख न ले वाटिका में पेड़ों के बीच छुप गये।[४२४] यह शर्म उनकी अंदरूनी सच्चाई को प्रगट करती है, क्योंकि अपने यौन अंगों से पाप करने की वजह से वे शैतान के साथ ख़ून के रिश्ते से बंध गए थे। अपने तन के निचले भागों को छिपाने से उन्होंने अपना दोषी विवेक व्यक्त किया, जिसके कारण उन्हें परमेश्वर के सामने आने से शर्मिंदगी महसूस की।

नूंह, जिसने चालीस दिवसीय बाढ़ के दंड के द्वारा शैतान के साथ अपने संबंधों को तोड़ डाला था, उसे आदम के स्थान को, जैसा विश्व के सृजन के तुरंत बाद था, सुरक्षित कर लेना चाहिए था। परमेश्वर को यह अपेक्षा थी कि नूंह के परिवार के सदस्य नूंह के नग्न तन को शर्म की भावना से नहीं देखेंगे और उसके शरीर को छिपाने का विचार नहीं करेंगे। परमेश्वर नूंह के परिवार के भोलेपन से फिर से वही ख़ुशी

---

[४२१] उत्पत्ति ९:२०-२५

[४२२] प्रति-संदर्भ—पतन ४.५

[४२३] उत्पत्ति २:२५

[४२४] उत्पत्ति ३:७-८

महसूस करना चाहता था जो उसे आदम और हव्वा के पतन से पहले उनकी मासूमियत से होती थी। इस गहन इच्छा को पूरा करने के लिए, परमेश्वर ने नूंह को नंगा लेटाया था। यदि हाम नूंह के साथ एक दिल होता, और उसे उसी दिल से और उसी दृष्टि से देखता जिस दृष्टि से परमेश्वर उसे देख रहा था तो उसे अपने पिता के नंगे को देखकर शर्म की भावना नहीं आती। इस प्रकार वह नूंह के परिवार में आदम और हव्वा के पतन से पहले की मासूम दशा को बहाल करने के लिए क्षतिपूर्ति शर्त पूरी कर लेता।

इस प्रकार हम यह समझ सकते हैं कि जब नूंह के पुत्रों ने अपने पिता की नग्नता पर शर्म महसूस की और उसके शरीर को ढांका, तो पतन के बाद आदम के परिवार की तरह उन्होंने यह मान लिया कि वे भी शैतान के साथ शर्मनाक बंधन में बंधे हुए हैं और इस प्रकार परमेश्वर के सामने आने के लिए अयोग्य हैं। शैतान, नूंह के परिवार पर आक्रमण करने के लिये कोई बहाने की तलाश में कौवे की तरह पानी पर मंडरा रहा था। नूंह के पुत्रों ने जब यह मान लिया कि वे उसके वंश के हैं तो उन्हें अपना पात्र साझी बनाकर उसने उन पर आक्रमण कर दिया।

जब हाम ने अपने पिता की नग्नता से शर्म महसूस की और उसे ढांपा दिया, ऐसा करने से उसने शैतान को काम करने का मौका दिया; इसलिये उसकी यह भावना और कर्म पाप प्रमाणित हुआ। परिणाम स्वरूप, हाम क्षतिपूर्ति के माध्यम से हाबिल का स्थान पुनः स्थापित नहीं कर सका जिसके द्वारा वह वास्तविक भेंट चढ़ा सके। चूंकि वह वास्तविक नींव नहीं स्थापित कर सका, नूंह के परिवार में पुनरुद्धार की दैवी योजना विफल हो गई।

क्या नग्नता को हमेशा शर्म की भावना के साथ देखना पाप है? नहीं। नूंह का मामला एक विशेष वारदात थी। आदम के स्थान पर नूंह का यह मिशन था कि वह आदम के उन सभी हालात से बचे जो शैतान के हमले का कारण बने। नूंह का परिवार, यह दिखाकर कि उन्होंने न तो नूंह की नग्नता पर शर्म महसूस की और न ही उसे ढांकने की कोशिश की, आदम के परिवार की मूल मासूमियत को जो उनके शैतान के साथ रक्त-संबंध की सगोत्रता में जुड़ने से पहले थी, क्षतिपूर्ति की शर्त द्वारा पूरी कर सकते थे। इसलिये यह एक क्षतिपूर्ति की शर्त थी जो केवल नूंह के परिवार को ही पूरी करना आवश्यक थी।

२.३ नूंह के परिवार से प्राप्त कुछ शिक्षाएं

यह बात किसी के लिए भी समझना कठिन है कि नूंह किस तरह १२० से अधिक वर्ष तक पहाड़ पर जहाज़ बनाने का काम करते समय कठोर आलोचना और उपहास का शिकार बन कर भी डटा रहा। हाम यह अच्छी तरह से जानता था कि उसका परिवार उसके पिता की मेहनत के द्वारा बच गया है। इन बातों पर विचार करके हैम के दिल में अपने पिता के लिये ऐसा आदर होना चाहिये था, कि वह अपनी व्यक्तिगत नाराज़गी को वश में कर सके और अपने पिता की नग्नता पर समझ से काम ले। फिर भी नूंह पर भरोसा रखने के बजाए, जो परमेश्वर के द्वारा धर्मी ठहराया गया था, हैम ने स्वार्थी दृष्टिकोण से उसकी आलोचना की और अपनी नाराज़गी अपने कार्यों द्वारा प्रगट की। उसके अपमान का नतीजा यह हुआ कि नूंह के परिवार के द्वारा परमेश्वर की दैवी योजना में लम्बे समय तक उसकी सारी मेहनत चौपट हो

गई। हमें भी स्वर्ग के रास्ते की ओर विनम्रता, आज्ञाकारिता और धैर्य से चलने की ज़रूरत है। आगे, नूंह के परिवार की दैवी योजना हमें परमेश्वर की इच्छा की पूर्ति की सशर्त पूर्वनियति और मनुष्य के हिस्से की जिम्मेदारी के प्रति उसके सम्मान के बारे में सिखाती है। परमेश्वर को नूंह का परिवार सोलह सौ वर्ष की तैयारी के बाद मिला। उसने जहाज़ के निर्माण करने में नूंह का १२० वर्ष मार्गदर्शन किया और बाढ़ से सारी मानवता के बलिदान की बड़ी कीमत पर उसके परिवार को बचा कर बढ़ाया। पुनरुद्धार की दैवी योजना में भले ही वे उसके प्रेम पात्र थे, तथापि, जब हाम ने छोटी सी भूल की, जिससे शैतान को उन पर दाग़ लगाने का अवसर मिला, नूंह के परिवार पर केन्द्रित उसकी संपूर्ण इच्छा शून्य हो गई।

अंत में, नूंह के परिवार के द्वारा परमेश्वर की दैवी योजना हमें मनुष्य के लिये परमेश्वर की सशर्त पूर्वनियति के बारे में सिखाती है। इस तथ्य के बावजूद भी कि परमेश्वर ने कठिन प्रयास के साथ बहुत समय तक नूंह की तलाश की थी, और उसे विश्वास का पिता बनाया, परंतु जब उसके परिवार ने अपनी ज़िम्मेवारी नहीं निबाही, तो परमेश्वर ने, यद्यपि दुखी हो के, उसे छोड़ने में संकोच नहीं किया और उसकी जगह पर अब्राहम को चुना।

संभाग ३

अब्राहम के परिवार में पुनरुद्धार की दैवी योजना

हाम के पतित कर्म के कारण, नूंह के परिवार में पुनरुद्धार की दैवी योजना पूरी नहीं हुई। हालांकि, परमेश्वर ने यह सर्वथा पूर्वनिर्धारित किया था कि सृष्टि का उद्देश्य एक दिन पूरा होगा। इसलिए, परमेश्वर के प्रति नूंह की दिली वफादारी की नींव पर परमेश्वर ने अब्राहम को बुलाया और उसके परिवार के साथ पुनरुद्धार की दैवी योजना का नया अध्याय शुरू किया।

अब्राहम के परिवार को मसीह की नींव पुनः स्थापित करनी थी, जो नूंह के परिवार ने अधूरी छोड़ी थी, और उस नींव पर मसीह को ग्रहण करना था। इस प्रकार, नूंह की तरह अब्राहम को पहले क्षतिपूर्ति के माध्यम से विश्वास की नींव पुनः स्थापित करनी पड़ी, और उसके पुत्रों को क्षतिपूर्ति के माध्यम से वास्तविक नींव पुनः स्थापित करनी पड़ी।

३.१ विश्वास की नींव

३.१.१ विश्वास की नींव के लिये प्रमुख व्यक्ति

पुनरुद्धार की दैवी योजना में अब्राहम के परिवार में विश्वास की नींव पुनः स्थापित करने वाला प्रमुख व्यक्ति अब्राहम था। अपनी इच्छा की पूर्ति के मिशन के लिए, जो उसने पहले नूंह के द्वारा पूरा करने की कोशिश की थी, परमेश्वर ने अब्राहम को चुना। परंतु अब्राहम यह मिशन उस समय तक प्राप्त नहीं कर सकता था जब तक वह उन सभी शर्तों को, जो नूंह को पूरी करने के लिये दी गईं थीं, परंतु हाम के पाप के कारण शैतान के दावे में चलीं गईं थीं, क्षतिपूर्ति के द्वारा पुनः स्थापित नहीं कर लेता।

पहली शर्त जो नूंह का परिवार शैतान के हाथ खो बैठा था वह आदम से नूंह तक दस पीढ़ियाँ और न्याय के चालीस दिन की अवधि थी। इसलिए, अब्राहम को क्षतिपूर्ति के माध्यम से और दस पीढ़ियाँ पुनः प्राप्त करनी थीं। इन दस पीढ़ियों में प्रत्येक पीढ़ी को संख्या चालीस, जो जल प्रलय के न्याय को दर्शाती हैं, पुनः प्राप्त करना चाहिए था। चालीस दिवसीय बाढ़ का अंत निष्फल होने की वजह से प्रत्येक पीढ़ी को पुनः प्राप्त करने के लिए पीढ़ी का पूरा अरसा लगा, यह केवल चालीस दिन में पूरी नहीं की जा सकती थी। बाढ़ की पुनः प्राप्ति करने की दैवी योजना को दस पीढ़ियों की प्रत्येक पीढ़ी में और अधिक लंबा समय लगना ज़रूरी था: चालीस वर्ष। यह मूसा के समय के लोगों की स्थिति के समान है जब चालीस दिवसीय जासूसी मिशन की दैवी योजना के विफल होने पर उन्हें जंगल में अपेक्षित चालीस वर्ष तक भटकना पड़ा।[४२५] इसलिए, नूंह से दस पीढ़ी और चार सौ वर्षों की क्षतिपूर्ति की अवधि के बाद परमेश्वर ने नूंह[४२६] के मिशन की ज़िम्मेदारी उठाने के लिये अब्राहम को चुना।

शर्तों का अगला संग्रह जो नूंह के परिवार ने शैतान के हाथ खो दीं थी, वह था विश्वास के पिता का स्थान और हाम का स्थान, जिसे हाबिल की भूमिका निबाहने थी। इसलिए, अब्राहम नूंह के स्थान पर

[४२५] गिनती १४:३४

[४२६] बाईबल के अनुसार परमेश्वर ने नूंह की पीढ़ी के तुरंत बाद मनुष्य की आयु कम कर दी थी, इसलिये आदम से नूंह तक दस पीढ़ियों के लिये सोलह सौ वर्ष लगे, जबकि नूंह से अब्राहम तक की दस पीढ़ियों के लिये केवल चार सौ वर्ष लगे।

नहीं खड़ा हो सकता जब तक वह पहले क्षतिपूर्ति के माध्यम से विश्वास के पिता और हाम की भूमिकाएँ पुनःस्थापित न कर ले। नूंह के स्थान पर विश्वास के पिता की भूमिका निबाहने के लिये अब्राहम को नूंह की तरह, जिस तरह उसने जहाज़ बनाया था, दिली वफादारी के साथ विश्वास की प्रतीकात्मक भेंट चढ़ाना ज़रूरी था। फिर, अब्राहम हाम का स्थान किस प्रकार बहाल कर सकता था? हाम को हाबिल का प्रतिनिधित्व करना था, जो परमेश्वर का सबसे प्रिय था: दोनों दूसरे बेटे के स्थान पर थे और वास्तविक भेंट के प्रमुख-व्यक्ति थे। चूँकि शैतान ने दावा कर के हाम को मांगा, इसलिए, क्षतिपूर्ति द्वारा पुनरुद्धार की दैवी योजना के नियम के अनुसार, परमेश्वर को भी ऐसे व्यक्ति का दावा करना चाहिये जिसे शैतान सबसे अधिक प्रेम रखता हो। इस कारण, परमेश्वर ने अब्राहम को बुलाया, जो तेरह का, जो मूर्तिपूजक था, जेठा पुत्र था[४२७]।

अब्राहम को नूंह का मिशन विरासत में मिलने वाला था और इस प्रकार आदम का मिशन। इस बूते पर उसने बहाल किए हुए आदम का प्रतिनिधित्व किया। जैसे परमेश्वर ने आदम और नूंह को आशीर्वाद दिया था, उसी तरह उसने अब्राहम को भी आशीष दी:

> और मैं तुझ में एक बड़ी जाति बनाऊँगा, और तुझे आशीष दुँगा, और तेरा नाम महान करूँगा, और तू आशीष का मूल होगा। जो तुझे आशीर्वाद देगा, उन्हें मैं आशीष दुँगा; और जो तुझे कोसे, उसे मैं श्राप दुँगा; और भूमंडल के सारे कुल तेरे द्वारा आशीष पाएंगे। उत्पत्ति १२:२-३

इस आशीष को प्राप्त करने के बाद, परमेश्वर के आदेश की आज्ञाकारिता में, अब्राहम ने हारान में अपने पिता का घर छोड़ दिया और अपनी पत्नी सारै, और भतीजे लूत के साथ, सारे सामान और सभी कर्मचारियों को लेकर कनान में प्रवेश किया।[४२८] इस अर्थ से, कनान को बहाल करने के लिये परमेश्वर ने अब्राहम की कार्यवाही को एक नमूने के तौर पर स्थापित किया, जिस पर याकूब और मूसा को अपने दिनों में चलना होगा। याकूब और मूसा क्रमशः अपने परिवार के सभी सदस्यों को सारे सामान के साथ हारान और मिस्र से बाहर ले जाएंगे, और फिर रास्ते में बड़ी कठिनाई और कष्ट उठा कर कनान वापस ले कर आएंगे। अब्राहम की कार्यवाही यह भी पूर्वाभास देती है कि यीशु को भी एक दिन इसी पथ पर चलना होगा: मानवता और सभी चीज़ों को शैतान की दुनिया से बाहर निकाल कर परमेश्वर की दुनिया में वापस लाना होगा।[४२९]

३.१.२ विश्वास की नींव के लिये भेंट की गई शर्त की वस्तु

३.१.२.१ अब्राहम की प्रतीकात्मक भेंट

---

[४२७] यहोशू २४:२.३

[४२८] उत्पत्ति १२:४-५

[४२९] प्रति-संदर्भ—मूसा और यीशु १.२

परमेश्वर ने अब्राहम को आदेश दिया कि वह एक पिण्डुक, एक कबूतर, एक मेंढ़ा और एक बकरी की भेंट चढ़ाए।[४३०] विश्वास की नींव पुनःस्थापित करने के लिये शर्त की यह वस्तुएं थीं। परंतु इससे पहले कि वह प्रतीकात्मक भेंट चढ़ाए उसे उचित आस्था का प्रदर्शन करना चाहिये, जिस प्रकार उससे पहले नूंह जहाज़ बनाने के प्रतीकात्मक चढ़ावे से धर्मी ठहराया गया था। बाईबल यह स्पष्ट रूप से नहीं बताती है कि नूंह ने किस तरह अपनी श्रद्धा का प्रदर्शन किया। परंतु, "नूंह धर्मी पुरुष और अपने समय के लोगों में खरा था, और परमेश्वर के साथ चलता रहा,"[४३१] इस छंद से हम यह अनुमान लगा सकते हैं कि, इससे पहले कि वह परमेश्वर की जहाज़ के बनाने की आज्ञा प्राप्त करने के योग्य समझा जाए, नूंह ने विश्वास दिखाया था। सच तो यह है कि जो पुनरुद्धार की दैवी योजना में चलता है उसे लगातार अपने विश्वास को दृढ़ करना चाहिये।[४३२] आईये हम यह जांच करें कि अब्राहम ने कैसे प्रतीकात्मक भेंट चढ़ाने की तैयारी करने में अपनी आस्था को दृढ़ किया।

चूँकि नूंह दूसरा मानव पूर्वज था, अब्राहम को भी नूंह का स्थान प्राप्त करने के लिए आदम का स्थान अपनाना था। इस कारण से, आदम के परिवार का स्थान पुनर्स्थापित करने के लिये उसे कोई सांकेतिक क्षतिपूर्ति की शर्त ठहराना आवश्यक था इससे पहले कि वह असली प्रतीकात्मक भेंट चढ़ाए।

इस संबंध में बाईबल, अकाल के कारण अब्राहम की मिस्र की यात्रा का बयान करती है।[४३३] जब उन्होंने मिस्र में प्रवेश किया, अब्राहम ने अपनी पत्नी सैरा को समझाया कि वह फिरौन के सामने उसकी बहन का ढोंग रचे, क्योंकि उसे डर था कि फिरौन उसकी कामना करेगा। अब्राहम को यह भी डर था कि यदि फिरौन को यह पता चल गया कि वह सैरा का पति है तो वह उसे मरवा डालेगा। वास्तव में उसके यह ढोंग रचने से फिरौन के आदेश पर अब्राहम ने सैरा को उसके हाथ में सौंप दिया। इस के बाद, परमेश्वर ने फिरौन को डांटा, अब्राहम ने भतीजे लूट के साथ अपनी पत्नी वापस ले ली और प्रचुर मात्रा में जो धन फिरौन ने उसे दिया था वह लेकर मिस्र से विदा हुआ।

इस तरह, अब्राहम ने, अनजाने दैवी योजना के पथ पर चल कर, क्षतिपूर्ति की प्रतीकात्मक शर्त पूरी की और आदम के परिवार का स्थान पुनःस्थापित किया । जब प्रधान स्वर्गदूत ने हव्वा का अपहरण किया—उसने हव्वा के वंश और प्राकृतिक दुनिया की हर चीज़ पर अपना प्रभुत्व जमा लिया—उस समय आदम और हव्वा भाई और बहिन के रिश्ते से बंधे थे। इस स्थिति को बहाल करने के लिये, अब्राहम को अपनी पत्नी सारा को, जो उसकी बहिन का पाठ अदा कर रही थी, फिरौन के हाथ, जो शैतान की जगह पर था, खो कर क्षतिपूर्ति शर्त पूरी करनी थी। फिर फिरौन से अपनी पत्नी वापस लेनी थी और साथ में लूट जो सारी मानवता का प्रतिनिधित्व करता है, और धन जो प्राकृतिक दुनिया का प्रतीक है। यह मार्ग जिसपर अब्राहम चला यीशु के लिये एक आदर्श पथ था जो उसे अपने दिनों में चलना था। क्षतिपूर्ति की यह शर्त एक बार पूरी होने पर अब्राहम प्रतीकात्मक भेंट चढ़ाने के लिये तैयार समझा जाएगा।

---

[४३०] उत्पत्ति १५:९

[४३१] उत्पत्ति ९:६

[४३२] रोमियों १:१७

[४३३] उत्पत्ति १२:१०-२०

अब्राहम की प्रतीकात्मक भेंट का क्या महत्व था? अब्राहम को विश्वास का पिता बनने के लिए, उसे नूंह, जिसे परमेश्वर ने विश्वास के पिता के रूप में बढ़ाने का इरादा किया था, उसके परिवार और स्थान को क्षतिपूर्ति के माध्यम से पुनः स्थापित करना था। इसके अलावा, उसे आदम और उसके परिवार के स्थान को भी पुनःस्थापित करना था। इस प्रकार अब्राहम को यह आवश्यक था कि वह स्वीकार्य तरीके से शर्त की उन वस्तुओं को अर्पण करे, जिन्हें कैन और हाबिल को बलिदान के द्वारा पूरा करना चाहिये था, और उन सब चीजों को जिन्हें नूंह का परिवार, जहाज़ की योजना के द्वारा पूरा करने की कोशिश कर रहा था। अब्राहम की प्रतीकात्मक भेंट में ऐसी सब वस्तुएं शामिल है जिनका यह सांकेतिक अर्थ है।

अब्राहम ने अपनी सांकेतिक भेंट के लिए शर्त के रूप में तीन प्रकार की वस्तुओं की बलि चढ़ाई: पहला, एक कबूतर और एक पंडुक; दूसरा, एक मेंढ़ा और एक बकरी; और तीसरा एक बछिया। यह तीन बलिदान जगत का प्रतीक हैं, जो विकास-काल के तीन चरणों के माध्यम से पूरा किया गया था। पंडुकी गठन-चरण को दर्शाती है। जब यूहन्ना बपतिस्मा देन वाले ने यीशु को यरदन नदी में बपतिस्मा दिया, तो परमेश्वर का आत्मा एक पंडुकी के रूप में उस पर उतरा।[४३४] यह इसलिये क्योंकि यीशु पुराने नियम को पूरा करने के लिये आया था, जो दैवी योजना के गठन-चरण के रूप में पंडुकी का प्रतीक था। इसके अतिरिक्त, यीशु पर पंडुकी के उतरने के दृश्य का दूसरा कारण था। यीशु को अब्राहम की पंडुकी का बलिदान करने में ग़लती को सुधारना था, जो, जैसा कि हम देखेंगे, शैतान ने छीन ली थी।

मेढ़ा विकास-चरण का प्रतीक है। यीशु का एक बार पुराने नियम की पूर्ति कर चुकने पर, और इस प्रकार हर चीज़ को जो पंडुक द्योतित करती है पुनर्स्थापित करने के बाद, उसने नए नियम की दैवी योजना का आरंभ विकास-चरण पर किया, जब हर वस्तु जो मेंढ़े का प्रतिनिधित्व करती है बहाल की जाने वाली थी। यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के यह गवाही देने के बाद कि उसने पवित्र आत्मा को पंडुक के रूप में यीशु पर उतरते देखा—इसका अर्थ यह कि यीशु वह व्यक्ति था जिसे गठन-चरण की दैवी योजना को पूरा करना था—उसने यीशु के लिये यह कह कर गवाही दी कि वह विकास-चरण का मिशन आरम्भ करेगा, “देखो यह परमेश्वर का मेम्ना है जो जगत का पाप उठा लिये जाता है।”[४३५]

बछिया निष्पत्ति-चरण को द्योतित करती है। लिखा है, जब शिमशोन ने पलिश्तियों के सामने एक पहेली रखी, तो उन्होंने उसकी पत्नी के द्वारा उस पर दबाव डाल कर उससे जवाब प्राप्त किया। शिमशोन ने उनसे कहा, “यदि तुम मेरी बछिया को हल में न जोतते, तो मेरी पहेली को कभी नहीं बूझते”,[४३६] इस तरह उसने अपनी पत्नी को लाक्षणिक रूप से बछड़ी कहा। यीशु सारी मानवता के लिए दूल्हे के रूप में आया था। सभी भक्त विश्वासियों को, जो उसकी वापसी की प्रतीक्षा करते हैं, उसकी दुल्हन बनना चाहिये। यह दुल्हनें, अपने दूल्हे यीशु के साथ मेम्ने की शादी का जश्न मनाने के बाद, स्वर्ग के राज्य में उसके साथ पत्नी की तरह (सांकेतिक अर्थ में) एक होकर रहेंगी। इसलिए, यीशु के दूसरे आगमन के बाद परिपूरित नियम का युग बछिया का युग, यानी पत्नी का युग है। कुछ आध्यात्मिक माध्यमों को यह दर्शन

[४३४] मत्ती ३:१६
[४३५] मत्ती १:२९
[४३६] न्यायी १४:१८

मिला है कि वर्तमान युग गाय या बछिया का युग है, यह इसलिये क्योंकि हम निष्पत्ति-चरण में प्रवेश कर रहे हैं।

क्षतिपूर्ति के लिए वे कौन से तीन बलिदान थे? इन बलिदानों से अब्राहम को वह सभी वस्तुएं बहाल करनी थीं जिन्हें परमेश्वर आदम और नूंह के परिवारों के किए गए प्रतीकात्मक बलिदान के द्वारा बहाल नहीं कर सका—यह बलिदान स्वीकार्य रूप से भेंट किए गये थे परन्तु बाद की विफलताओं के कारण शैतान ने जब्त कर लिए थे। अब्राहम के बलिदान, वास्तविक भेंट चढ़ाने में उनकी विफलताओं के कारण प्रायश्चित के रूप में क्षतिपूर्ति की सांकेतिक भेंट चढ़ाने के लिए भी था। दूसरे शब्दों में, अब्राहम का तीन प्रकार की वस्तुओं के प्रतीकात्मक बलिदान का उद्देश्य, उसकी अपनी पीढ़ी में (क्षैतिज रूप से) क्षतिपूर्ति की सारी शर्तें, जो दैवी योजना के दौरान आदम, नूंह और अब्राहम की तीन पीढ़ियों में (लंब रूप में) इकट्ठी हुईं थी, पुनः स्थापित करना था।

अब्राहम ने तीन बलिदान, पंडुक और कबूतर, मेंढ़ा और बकरी, और बछिया, जो गठन-विकास-निष्पत्ति चरण के प्रतीक थे—एक वेदी पर क्यों रखे? पतन से पहले आदम अपने जीवन के सभी तीन चरणों से हो कर बढ़ने के लिये ज़िम्मेदार था। उसी तरह, अब्राहम को भी, जो अब आदम के स्थान पर था, एक ही बार में इस लंबी दैवी योजना को जो परमेश्वर ने तीन दैवी पीढ़ियों, आदम (गठन), नूंह (विकास) और अब्राहम (निष्पत्ति) के माध्यम से आयोजित की थी, पुनः स्थापित करना चाहिए था। इस तरह एक बलिदान के माध्यम से, वह संख्या तीन से युक्त सभी भ्रष्ट शर्तों को पुनः स्थापित कर सकता था। अब्राहम के बलिदान का प्रतीकवाद परमेश्वर की इच्छा प्रकट करता है कि वह संपूर्ण दैवी योजना सदा के लिये एक ही बार में पूरी करे।

अब हम यह अध्ययन करेंगे कि अब्राहम ने प्रतीकात्मक बलिदान कैसे किए:

> यहोवा ने उससे कहा, "मेरे लिये तीन वर्ष की एक बछिया, और तीन वर्ष की एक बकरी, और तीन वर्ष का एक मेढ़ा और एक पिण्डुक और कबूतर का एक बच्चा ले। इन सभों को लेकर उसने बीच से दो टुकड़े कर दिया, और टुकड़ों को आमने-सामने रखा, पर उसने चिड़ियों के टुकड़े नहीं किए। जब मांसाहारी पक्षी लोथों पर झपटे, तब अब्राहम ने उन्हें उड़ा दिया। जब सूर्य अस्त होने लगा, तब अब्राहम को भारी नींद आई, और देखो, अत्यंत भय और महा अंधार ने उसे छा लिया। तब यहोवा ने अब्राहम से कहा, 'यह निश्चय जान कि तेरे वंश पराए देश में परदेशी होकर रहेंगे, और उस देश के लोगों के दास हो जाएंगे, और वे उनको चार सौ वर्ष तक दुःख देंगे'"। उत्पत्ति १५:६-१३

क्योंकि अब्राहम ने पिण्डुक और कबूतर को दो टुकड़ों में नहीं काटा, जैसा कि उसे करना चाहिये था, इसलिये शिकार के पक्षियों ने नीचे आकर बलिदान को अशुद्ध किया। उसकी इस गलती के परिणामस्वरूप, इस्राएली लोगों को मिस्र में प्रवेश करना और चार सौ वर्ष तक दुःख उठाना निर्दिष्ट हो गया। पक्षियों को दो भागों में नहीं काटना क्यों पाप था? यह प्रश्न केवल नियम की सहायता से समझा जा सकता है।

आएं पहले हम इस मामले की जाँच करें, कि अब्राहम को बलिदान की वस्तुओं को आधे में काटने का निर्देश क्यों दिया गया था। परमेश्वर के उद्धार के कार्य के लक्ष्य के आधार पर अच्छाई की प्रभुता को बहाल करने के लिये पहले अच्छाई को बुराई से अलग करना चाहिये फिर अच्छाई को बढ़ाना और बुराई को नष्ट करना चाहिये। यही कारण है कि आदम को बलिदान चढ़ाने से पहले कैन और हाबिल में विभाजित किया गया। यही कारण है नूंह के दिन में परमेश्वर ने बाढ़ के न्याय के द्वारा बुराई को मारा और नूंह के परिवार को अच्छाई के रूप में बाहर निकाला। भेंट चढ़ाने से पहले परमेश्वर ने इस मंशा से अब्राहम से बलिदान को दो भागों में विभाजित करने के लिये कहा, ताकि अच्छाई और बुराई को विभाजित करने का प्रतीकात्मक कार्य जो आदम और नूंह ने अधूरा छोड़ा था उसे पूरा करे।

बलिदान को दो भागों में काट कर इसलिए विभाजित करना चाहिये था, पहला, आदम के परिवार की स्थिति को पुनः स्थापित करने के लिए जिसमें हाबिल और कैन, अच्छाई और बुराई के प्रतीक के रूप में विभाजित किए गए थे। दूसरा, यह कि नूंह के समय चालीस दिनों की बाढ़ के दौरान, अच्छाई को बुराई से विभाजित करने की स्थिति को पुनः स्थापित करना था। तीसरा, यह कि अच्छाई के साम्राज्य के दायरे को शैतान द्वारा शासित विश्व से अलग करने के लिये प्रतीकात्मक शर्त रखनी थी। चौथा, बलिदान में से मौत के ख़ून को, जो पतित मानवता में शैतान के साथ रक्त-बंधन के कारण पैवस्त हो गया था, बाहर निकाल कर शुद्ध करने के लिए था।

बलिदान को विभाजित न करना पाप क्यों गिना गया था? पहला, विभाजन न करना कैन और हाबिल को विभाजित नहीं करने का महत्व रखता है। विभाजन किए बिना, बलिदान परमेश्वर को स्वीकरणीय नहीं हो सकता था क्योंकि इस रीति से उसे एक हाबिल के वर्ग का पात्र-साझी नहीं मिलता है। परिणाम स्वरूप, कैन और हाबिल ने अपने बलिदानों में जो ग़लतियाँ कीं थीं वह बहाल नहीं हो सकीं। दूसरा, विभाजित नहीं करना उस विफलता को दोहराना हुआ जो नूंह के समय की दैवी योजना के दौरान हुईं थीं, जब बाढ़ के बावजूद अच्छाई और बुराई अविभाजित रहीं। नूंह के परिवार की विफलता की तरह, अब्राहम के बलिदान विभाजित करने में विफलता के कारण भी परमेश्वर अपने अच्छे पात्र-साझी से वंचित रहा। इस प्रकार, गलती दोहरायी गई जिस की वजह से बाढ़ की व्यवस्था विफल हुई। तीसरा, बलिदान को विभाजित नहीं करने का अर्थ यह हुआ कि परमेश्वर के अच्छे साम्राज्य के दायरे को शैतान की प्रभुता के अधीन विश्व से अलग करने की कोई प्रतीकात्मक शर्त नहीं ठहराई गई थी। चौथा, चूँकि, मौत का खून बाहर नहीं निकाला गया था, इसलिये बलिदान को विभाजित नहीं करने का अर्थ हुआ कि वह परमेश्वर के लिये शुद्ध स्वीकार्य भेंट नहीं बन सकी। दूसरे शब्दों में, जब अब्राहम ने पक्षियों को पहले विभाजन किए बिना भेंट चढ़ाया, तो उसका अर्थ यह हुआ कि उसने वह भेंट चढ़ाई जो शैतान के कब्ज़े से वापस छीनी नहीं गई थी। उसकी गलती का प्रभाव उन वस्तुओं पर शैतान के कब्ज़े को स्वीकार करना हुआ।

पंडुक, जो गठन-चरण का प्रतीक है, शैतान के कब्जे में रही। फलस्वरूप, शैतान ने, मेंढ़ा जो विकास-चरण का प्रतीक है, और बछिया जो निष्पत्ति-चरण का प्रतीक है, इन पर भी दावा कर लिया, इन

दोनों की पूर्ति गठन-चरण पर आधारित थी। चूँकि, इन सब बातों का प्रभाव कुल प्रतीकात्मक भेंट का शैतान को सौंपा जाना हुआ, इसलिये पक्षियों को विभाजित न करना पाप गिना गया।

आगे, आएं हम इस पद के अर्थ की जाँच करें, शिकार के पक्षियों का शवों पर उतरना। पहले मानव पूर्वजों के पतन के बाद से शैतान हमेशा उन लोगों की ताक में रहता है जिनके साथ परमेश्वर अपनी इच्छा पूरी करने के लिए काम करता है। जब कैन और हाबिल अपने बलिदानों चढ़ा रहे थे, शैतान दरवाजे पर उनकी ताक में खड़ा था।[४३७] नूंह की कहानी में, कौवा, जो शैतान का प्रतीक है बाढ़ के बाद कैसे नूंह के परिवार पर आक्रमण करने के लिए चक्कर लगा रहा था।[४३८] उसी तरह, जब अब्राहम अपना सांकेतिक बलिदान चढ़ा रहा था तो शैतान बलिदान पर दावा करने का अवसर ढूंड रहा था। जैसे ही उसने देखा कि पक्षी विभाजित नहीं गए उसने उन्हें अपवित्र कर दिया। बाईबल इसका वर्णन बलिदान पर शिकार के पक्षियों के उतरने के दृश्य से करती है।

प्रतीकात्मक बलिदान की भेंट चढ़ाने में अब्राहम की ग़लती के कारण भेंट भ्रष्ट हो गई। सभी शर्तें, जिन्हें परमेश्वर ने उसके द्वारा पुनः स्थापित करने का इरादा किया था, डूब गईं। परिणाम स्वरूप, अब्राहम के वंश को मिस्र की भूमि पर चार सौ वर्ष अत्याचार और दासता सहन करनी पड़ी। आइए हम इसके कारण की जाँच करें।

परमेश्वर ने अब्राहम को चार सौ वर्ष की अवधि के पूरे होने पर बुला कर शैतान से अलग होने के लिये प्रतीकात्मक बलिदान चढ़ाने की आज्ञा दी। यह अवधि आदम से नूंह तक दस पीढ़ियाँ और चालीस दिन बाढ़ के न्याय की अवधि, जो हाम के पाप करने के कारण गवाँ दी गई थी, क्षतिपूर्ति के माध्यम से बहाल करने के लिये तैयार की गई थी। क्षतिपूर्ति की यह अवधि, अब्राहम को, उसके प्रतीकात्मक बलिदान चढ़ाने के बाद, विश्वास का पिता स्थापित करने के लिये आवश्यक थी। प्रतीकात्मक भेंट में अब्राहम की गलती की वजह से जब शैतान को उस पर अपना अधिकार जमा लेने का मौका मिला, तो वह चार-सौ-वर्ष की अवधि भी शैतान के हाथ लग गई। अब्राहम की प्रतीकात्मक बलिदान में विफलता से पहले की स्थिति को राष्ट्रीय स्तर पर फिर से लागू करने के लिये, जो कि नूंह को जहाज़ बनाने की बुलाहट के समानांतर थी, परमेश्वर ने शैतान से अलग होने के लिये दूसरे चार सौर वर्ष की अवधि रखी। इस अवधि के दौरान इस्राएली लोग मिस्र में दास थे। इस अवधि को झेलने से इस्राएली लोग—इस समय राष्ट्रीय स्तर पर—नूंह और अब्राहम की घटना को जो शुरू में उनके विश्वास के पिता बनने के मिशन के लिए थी बहाल करते, इसके बाद वे मूसा के मिशन के आरंभ के लिए नींव भी डाल सकते थे। इसलिए, गुलामी की यह अवधि, जब इस्राएली लोग अब्राहम की गलती के लिए दंडित किए जा रहे थे और जब वे शैतान के बंधनों को तोड़ने के लिए नींव डाल रहे थे, यह दोनों समय परमेश्वर की नई दैवी योजना के आरंभ करने का समय था।

जैसा कि पहले बताया गया है कि अब्राहम से परमेश्वर की यह आशा थी, कि वह व्यवस्था के

---

[४३७] उत्पत्ति ४:७

[४३८] उत्पत्ति ८:७

गठन-विकास-निष्पत्ति-चरण को एक ही बार में एक वेदी पर तीन प्रकार के प्रतीकात्मक बलिदान सफलतापूर्वक चढ़ा कर पूरा करेगा। इस योजना के विपरीत, अब्राहम अतीत की ग़लतियों को दोहरा कर विफल हो गया। फलस्वरूप, दैवी योजना जो उस पर केंद्रित थी, अब्राहम, इज़हाक और याकूब, तीन पीढ़ियों तक स्थगित हो गई।

३.१.२.२ अब्राहम का इज़हाक को बलिदान करना

अब्राहम के प्रतीकात्मक भेंट में विफल होने के बाद, परमेश्वर ने उसे अपने इकलौते पुत्र इज़हाक को होमबलि के रूप में बलिदान करने के लिए आज्ञा दी।[४३९] इस तरह, परमेश्वर ने, अब्राहम की विफलता को क्षतिपूर्ति द्वारा बहाल करने के उद्देश्य से एक नई व्यवस्था का आरंभ किया। परमेश्वर जिसे अपनी इच्छा के एक विशेष हिस्से को पूरा करने के लिए नियत करता है, यदि वह अपनी जिम्मेदारी को पूरा करने में विफल हुआ तो, पूर्वनियति के सिद्धांत के अनुसार, परमेश्वर उसे दूसरी बार उपयोग नहीं करता है। फिर परमेश्वर ने अब्राहम के साथ काम क्यों किया जब उसने उससे इज़हाक का बलिदान करवाया?

इसके हम तीन कारण देख सकते हैं। पहला, यह संख्या तीन की पूर्ति द्योतित करता है।[४४०] परमेश्वर के सिद्धांत की अपेक्षा यह है कि जब मसीह के लिये नींव रखने की दैवी योजना तीसरी बार रखी जाए, तो उसका निपटाव होना ही चाहिए। इसलिए, मसीह की नींव डालने के लिए परमेश्वर की दैवी योजना, जो पहली व्यवस्था के रूप में आदम के परिवार से शुरू हुई, और दूसरी व्यवस्था के रूप में नूंह के परिवार में सतत रही, उसे अब्राहम के परिवार में समाप्त होना ही चाहिए, जो कि तीसरी व्यवस्था थी। इस कारण से, अब्राहम को क्षतिपूर्ति की शर्त पूरी करने के लिए यह एक और अवसर मिला था, ताकि वह उन सब वस्तुओं की सांकेतिक बहाली कर सके, जिन्हें वह अपनी पहली प्रतीकात्मक भेंट की विफलता के कारण खो चुका था, हालांकि इसके लिये उसे अधिक कीमत चुकाने पड़ी। यह अधिक क्षतिपूर्ति शर्त उसे अपने बेटे इज़हाक को बलिदान के रूप में चढ़ा कर निबाहनी पड़ी।

दूसरा, जैसा कि पहले स्पष्ट किया गया है, जब अब्राहम अपना बलिदान चढ़ा रहा था, वह आदम के स्थान पर था। शैतान ने आदम और उसके बेटे कैन दोनों पर हमला किया और दो पीढ़ियों के दौरान उसके परिवार को दूषित किया। इसलिए, क्षतिपूर्ति द्वारा पुनरुद्धार के नियम के अनुसार, परमेश्वर अब्राहम और उसके पुत्र इज़हाक को दो पीढ़ियों के दौरान वापस लेने के लिए काम कर सकता था।

तीसरा, हमने सीखा है कि नूंह स्वयं जहाज़ के द्वारा प्रतीकात्मक बलिदान की भेंट चढ़ा सकता था, जबकि वह उसी स्थिति में था जिसमें आदम प्रत्यक्षतः बलिदान नहीं चढ़ा सका। यह इसलिए, क्योंकि वह हाबिल की योग्यता पर खड़ा था, जिसने प्रतीकात्मक भेंट में सफल होकर वफादारी दिखाई थी। जब परमेश्वर ने अब्राहम को बुलाया, तो वह हाबिल की सफलता, जो गठन-चरण की प्रतीकात्मक भेंट में सफल रहा, और नूंह की सफलता, जो विकास-चरण की प्रतीकात्मक भेंट में सफल रहा, दोनों की कामयाबी

[४३९] उत्पत्ति २२:२

[४४०] प्रति-संदर्भ—काल २:४

पर खड़ा था। अब्राहम को इन दोनों नींवों पर निष्पत्ति-चरण की प्रतीकात्मक भेंट चढ़ानी थी। तदनुसार, यद्यपि अब्राहम विफल हो गया, फिर भी परमेश्वर ने उसे ऊपर उठाने के लिए, हाबिल और नूंह की वफादारी के संचित पुण्य के आधार पर, बलि चढ़ाने का एक और अवसर दिया।

इससे पहले कि वह इज़हाक को बलिदान के रूप में भेंट करे, अब्राहम को एक बार फिर आदम के परिवार के पुनरुद्धार के लिए क्षतिपूर्ति की प्रतीकात्मक भेंट दुबारा चढ़ा कर अपने विश्वास का उचित प्रदर्शन करना था, जैसा कि उसने पहले किया था जब वह प्रतीकात्मक भेंट चढ़ाने वाला था। यही कारण है कि अब्राहम को एक बार फिर अपनी पत्नी सारा को बहन कह कर एक राजा के हाथ खोना पड़ा, इस बार वह गेरार का राजा अभिमलेक था। उसके राजा की पत्नी बनने के बाद उसने फिर उसे वापस ले लिया। इस समय अब्राहम ने फिर साथ में बहुत से दास, जो मानवता के प्रतीक थे, और धन जो प्राकृतिक दुनिया का प्रतीक था ले लिए।[४४१] अब्राहम ने इज़हाक को किस प्रकार बलिदान किया?

> जब वे उस स्थान को जिसे परमेश्वर ने उसे बताया था पहुँचे, तब अब्राहम ने वेदी बना कर लकड़ी को चुन चुनकर रखा, और अपने पुत्र इज़हाक को बाँध कर वेदी पर की लकड़ी के ऊपर रख दिया। फिर अब्राहम ने हाथ बढ़ाकर छुरी उठाई कि अपने पुत्र को बली करे। तब यहोवा के एक दूत ने स्वर्ग से उसको पुकार कर कहा, "हे अब्राहम, हे अब्राहम! उसने कहा देख मैं यहाँ हूँ। उसने कहा, उस लड़के पर हाथ मत बढ़ा, और न उसे कुछ कर, क्योंकि तूने मुझ से अपने पुत्र, वरन् अपने इकलौते पुत्र को भी नहीं रख छोड़ा, इससे मैंने जान लिया कि तू परमेश्वर का भय मानता है।" उत्पत्ति २२:९-१२

अब्राहम का विश्वास बिलकुल दृढ़ था। परमेश्वर के आदेश के अनुपालन में, वह इज़हाक, अपने इकलौते पुत्र को होमबलि के रूप में चढ़ाने के इरादे से उसे मारने जा रहा था। परमेश्वर ने उस समय हस्तक्षेप किया और अब्राहम से कहा लड़के को न मार।

परमेश्वर की इच्छा को पूर्ण विश्वास, आज्ञाकारिता और वफादारी के साथ अपनी दृढ़ कार्यवाही द्वारा पूरी करने के लिए अब्राहम की सरगर्मी ने उसे ऐसे उच्च पद पर उठाया, मानो जैसे उसने सचमुच इज़हाक को बलि कर दिया हो। इस तरह, उसने शैतान को इज़हाक से पूरी तरह से अलग कर दिया। परमेश्वर ने अब्राहम को आदेश दिया की इज़हाक को न मारे, क्योंकि इज़हाक ने अब शैतान के सभी संबंधों को काट डाला है और अब वह परमेश्वर के पक्ष में खड़ा है। हमें यह भी समझना चाहिए कि जब परमेश्वर ने कहा, "अब मैं जान गया हूँ... ।" इससे उसने दोनों, उसकी पहली प्रतीकात्मक भेंट में विफलता के लिए अपना तिरस्कार और इज़हाक की सफलतापूर्वक बलि के लिए अपना आनन्द, स्पष्ट किया। क्योंकि अब्राहम इज़हाक को भेंट करने में सफल रहा, अब्राहम के परिवार में अब इज़हाक द्वारा पुनरुद्धार की दैवी योजना चलाई जा सकती है।

अब्राहम को मोरिय्याह पहाड़ पर पहुँचने के लिए, जहाँ उसको अपने बेटे इज़हाक को बलिदान करना था, तीन दिन लगे। इज़हाक को शुद्ध करने की इस तीन दिवसीय अवधि से दैवी योजना में एक

---

[४४१] उत्पत्ति २०:१-१८

नया दौर शुरू होने वाला था। उस समय से आगे, नई व्यवस्था को शुरू करने से पहले शैतान से अलग होने की तीन-दिन की अवधि आवश्यक ठहराई गई है। दैवी योजना के इतिहास में हमें ऐसी अवधि के कई उदाहरण मिलते हैं। कनान की प्राप्ति के लिए पारिवारिक दौर को शुरू करने के लिए, याकूब जब हारान से अपने परिवार के साथ चला, तो शैतान से अलग होने के लिए तीन दिन अवधि थी।[४४२] मूसा ने भी कनान की प्राप्ति की राष्ट्रीय कार्रवाई शुरू करने के लिए इज़राएली लोगों को, जब वे मिस्र से चले, शैतान से अलग करने के लिए तीन दिन की अवधि के द्वारा उनकी अगवाई की।[४४३] जब यीशु ने कनान की प्राप्ति के लिए विश्वव्यापी आध्यात्मिक कार्रवाई आरंभ की, तो उसने शैतान से अलग होने के लिए कब्र में तीन दिन बिताए।

३.१.२.३ परमेश्वर की दृष्टि में इज़हाक का स्थान और उसकी सांकेतिक भेंट

यह पहले स्पष्ट किया गया है, कि यद्यपि अब्राहम की प्रतीकात्मक भेंट विफल हो गई, फिर भी उस पर केन्द्रित मसीह की नींव स्थापित करने के लिये नियम के अनुसार कुछ आधार अब भी बाकी थे। तथापि, चूँकि अब्राहम अपनी ज़िम्मेवारी में विफल हुआ, इसलिये, वह स्वयं दुबारा प्रतीकात्मक बलिदान करने के योग्य नहीं था।[४४४] परमेश्वर को किसी भी तरह कोई रास्ता ढूंढ़ना था जिससे वह यह मान सके कि अब्राहम प्रतीकात्मक भेंट में विफल नहीं हुआ है या दैवी योजना के प्रवर्धन का कारण नहीं बना। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए, परमेश्वर ने अब्राहम को इज़हाक को होम बलि करने का आदेश दिया। परमेश्वर ने अब्राहम से पहले यह कह कर प्रतिज्ञा की थी कि वह इज़हाक के वंश से एक चुने हुए लोगों को बढ़ाएगाः

> तब यहोवा का यह वचन उसके पास पहुँचा, "यह तेरा वारिस न होगा, तेरा जो निज पुत्र होगा, वही तेरा वारिस होगा।" और उसने उसको बाहर ले जाकर कहा, "आकाश की ओर दृष्टि करके तारागण को गिन, क्या तू इनको गिन सकता है?" फिर उसने कहा, "तेरा वंश ऐसा ही होगा।" उत्पत्ति १५:४-५

जब अब्राहम अपने पुत्र, अपने प्रतिज्ञा के पुत्र को घात करने के लिए तैयार हुआ, तो उसने स्वर्ग के प्रति अत्यधिक निष्ठा का प्रदर्शन किया। विश्वास की यह कार्यवाही आत्म हत्या करने के समान हुई—वह अस्मिता जो पहली प्रतीकात्मक भेंट की विफलता के कारण शैतान ने भ्रष्ट कर दी थी। तदनुसार, जब परमेश्वर ने इज़हाक को मृत्यु से बचाया, तो अब्राहम भी फिर से जी उठा, अब वह शैतान के हर बंधन से मुक्त हो गया था, जिन बंधनों से शैतान ने उसे उसकी पहली प्रतीकात्मक भेंट अशुद्ध होने के कारण बाँध रखा था। इसके अतिरिक्त, अब्राहम और इज़हाक ने अपनी निष्ठा में परमेश्वर की इच्छा के साथ अविभाज्य एकता प्राप्त कर ली।

---

[४४२] उत्पत्ति ३१:२०
[४४३] निर्गमन ८:२७
[४४४] प्रति-संदर्भ—पूर्वनियति ३

यद्यपि, इज़्हाक और अब्राहम दो अलग-अलग व्यक्ति थे, जब परमेश्वर ने उन्हें फिर से जिलाया, वे परमेश्वर की दृष्टि में एक व्यक्ति की तरह बन गए। भले ही अब्राहम के द्वारा व्यवस्था विफल रही और इज़्हाक के समय तक स्थगित हुई, परन्तु यदि इज़्हाक सफल हो गया, तो इज़्हाक की विजय स्वयं अब्राहम की विजय होगी। इसलिए, परमेश्वर यह मान सकता है कि अब्राहम व्यवस्था में विफल नहीं हुआ और कि व्यवस्था प्रवर्धित नहीं हुई।

यह बात स्पष्ट नहीं है, कि इज़्हाक की उम्र कितनी थी जब अब्राहम ने उस लड़के को बलिदान के रूप में भेंट किया। वह बलिदान के लिए लकड़ी ले जाने के लिए काफी बड़ा था,[४४५] और जब उसने देखा कि बलिदान के लिए कोई भेड़ नहीं है, तो उसने इसके बारे में अपने पिता से पूछा।[४४६] इज़्हाक अपने पिता के इरादों को समझने के लिए स्पष्ट रूप से काफी बड़ा था। इससे हम अनुमान कर सकते हैं कि यद्यपि वह जानता था कि उसका पिता उसे बलिदान के रूप में भेंट करने की तैयारी कर रहा है, फिर भी उसने अपने पिता की मदद की।

यदि इज़्हाक ने अपने पिता का उसे बलिदान करने के प्रयास का विरोध किया होता तो निश्चित रूप से परमेश्वर भेंट स्वीकार नहीं करता। वास्तव में, इज़्हाक ने अब्राहम के जैसी महान आस्था का प्रदर्शन किया। दोनों के विश्वास ने एक साथ बलिदान को सफल बनाया, और शैतान किसी भी तरह से उनपर कोई अधिकार बनाए नहीं रख सका। यह बलिदान करने में इज़्हाक और अब्राहम मृत्यु और पुनरुत्थान की प्रक्रिया से गुज़रे। परिणाम के रूप में, दो बातें संपन्न हुईं। अब्राहम शैतान से अलग हुआ, जिसने प्रतीकात्मक बलिदान में उसकी ग़लती के कारण दावा दिया था। उसने वह दशा जिस में वह यह ग़लती करने से पहले था, क्षतिपूर्ति द्वारा बहाल की और इस पुनःस्थापित किए गए स्थान से उसने यह दैवी मिशन इज़्हाक को हस्तांतरित किया। दूसरा, परमेश्वर की इच्छा का वफादारी से पालन करके, इज़्हाक ने यह दिव्य मिशन अब्राहम से विरासत में प्राप्त किया और अपने विश्वास के कारण वह प्रतीकात्मक भेंट चढ़ाने के योग्य ठहरा। यह दिव्य मिशन अब्राहम से इज़्हाक को हस्तांतरित होने के बाद, अब्राहम ने परमेश्वर द्वारा प्रदान किए गए एक मेंढ़े को इज़्हाक के बदले बलिदान किया:

> तब अब्राहम ने आँखें उठाईं, और क्या देखा कि उसके पीछे एक मेंढ़ा अपनी सींगों से एक झाड़ी में फंसा हुआ है, अतः अब्राहम ने जा के उस मेंढ़े को लिया, और अपने पुत्र के स्थान पर होमबलि करके चढ़ाया—उत्पत्ति २२:१३

वास्तव में, यह प्रतीकात्मक भेंट थी जिसके द्वारा इज़्हाक ने विश्वास की नींव पुनः स्थापित की। चूँकि इज़्हाक बलिदान के लिए लकड़ियाँ उठा कर लाया था, इससे हम यह अनुमान कर सकते हैं कि उसने मेंढ़े की भेंट में भाग लिया। इस तरह, भले ही यह लिखा है कि अब्राहम ने प्रतीकात्मक भेंट चढ़ाई, परंतु इज़्हाक अब्राहम के साथ एकजुट था और जिसको उसका मिशन मिरास में मिला था, उसे बलिदान

[४४५] उत्पत्ति २२.६

[४४६] उत्पत्ति २२:७

चढ़ाने के लिए दैवी श्रेय प्रदान किया गया था। इस प्रकार, इज़हाक ने अब्राहम का मिशन मिरास में पाकर, प्रतीकात्मक भेंट चढ़ाई और क्षतिपूर्ति के द्वारा विश्वास की नींव बहाल की।

३.२ वास्तविक नींव

इस प्रकार, इज़हाक अब्राहम के स्थान पर विश्वास की नींव को पुनः स्थापित करने के लिए प्रमुख व्यक्ति बन गया। उसने परमेश्वर को स्वीकार्य ढंग से मेंढ़े का प्रतीकात्मक बलिदान चढ़ा कर विश्वास की नींव की स्थापना की। इज़हाक के परिवार में मसीह के लिए नींव की स्थापना करने के लिए अब वास्तविक नींव खड़ी करनी थी। इस उद्देश्य के लिए, इज़हाक के बेटे एसाव और याकूब को क्रमशः कैन और हाबिल के विभाजित स्थानों में रखा जाना था। वास्तविक भेंट चढ़ा कर वे पतित प्रवृत्ति को निकालने के लिये क्षतिपूर्ति की शर्त को पूरा करने और वास्तविक नींव रखने के लिए जिम्मेदार थे।

यदि अब्राहम प्रतीकात्मक बलि में विफल नहीं हुआ होता, तो इज़हाक और इश्माएल उसका सौतेला भाई, हाबिल और कैन के स्थान पर खड़े होते। वे पतित प्रवृत्ति निकालने के लिए क्षतिपूर्ति की शर्त को, जो कैन और हाबिल ने पूरी नहीं की थी, पूरा करने के ज़िम्मेदार होते। परन्तु, चूँकि अब्राहम का बलिदान करने में विफल होने के कारण, परमेश्वर ने इज़हाक को अब्राहम के स्थान पर खड़ा किया, और एसाव और याकूब को इश्माएल और इज़हाक के स्थान पर, जो मूल रूप से इश्माएल और इज़हाक के लिए नियत हुआ था। तब यह एसाव और याकूब पर निर्भर था कि वे पतित प्रवृत्ति को निकालने के लिए क्षतिपूर्ति की शर्त को पूरा करें।

वास्तविक भेंट चढ़ाने के उद्देश्य के लिए, एसाव और याकूब अपने पिता इज़हाक के नीचे उसी स्थान पर थे, जिस तरह आदम से संबंधित कैन और हाबिल थे, और नूंह से संबंधित शेम और हैम थे। इज़हाक का ज्येष्ठ पुत्र एसाव अब्राहम की पहली प्रतीकात्मक भेंट को, जो शैतान के द्वारा भ्रष्ट हो गई थी, संकेत करता है, जबकि दूसरा पुत्र याकूब, इज़हाक के बलिदान को, जिसके द्वारा शैतान अलग किया गया था, संकेत करता है। इसके अतिरिक्त, एसाव ने बुराई के प्रतिनिधि के रूप में कैन की भूमिका निबाही, जबकि याकूब अच्छाई के प्रतिनिधि के रूप में हाबिल के स्थान पर खड़ा हुआ। एसाव और याकूब ने अपनी मां के गर्भ के अंदर लड़ना शुरू किया,[४४७] क्योंकि वे इस विपक्षी स्थिति में थे। फिर भी, परमेश्वर याकूब से प्रेम, और एसाव से नफरत करता था,[४४८] परंतु इस का दैवी कारण था: उन्हें कैन और हाबिल की ग़लतियों को, जो उन्होंने अपने बलिदान करने में कीं थीं, क्षतिपूर्ति के माध्यम से बहाल करना था।

परन्तु, इससे पहले कि एसाव और याकूब पतित प्रवृत्ति को निकालने के लिये क्षतिपूर्ति की शर्त पूरी करें और वास्तविक भेंट चढ़ाएं, याकूब को हाबिल का स्थान पुनः स्थापित करने के लिये पहले क्षतिपूर्ति की शर्त पूरी करनी पड़ी। यह सब निम्न लिखित याकूब के मिशन थे: पहला, उसे हाबिल का स्थान, जो वास्तविक बलिदान का प्रमुख व्यक्ति था, पुनः स्थापित करने के लिए क्षतिपूर्ति की शर्त पूरी

---

[४४७] उत्पत्ति २५:२२-२३
[४४८] रोमियों ९:११-१३

करनी थी। तब उसे वास्तविक भेंट चढ़ानी चाहिए। अंत में, इसकी चर्चा हम अगले भाग में करेंगे, अब्राहम की प्रतीकात्मक बलिदान में ग़लती के कारण, उसके वंश को चार-सौ-वर्षीय आवश्यक क्षतिपूर्ति अवधि का आरम्भ करने के लिए याकूब मिस्र में प्रवेश करेगा।

याकूब ने हाबिल के स्थान को पुनः स्थापित करने के लिए निम्न तरीके से क्षतिपूर्ति शर्त का भुगतान किया। पहले, याकूब ने व्यक्तिगत स्तर पर ज्येष्ठ पुत्र के जन्मसिद्ध अधिकार को लड़ाई की शर्त में विजय प्राप्त करके बहाल किया। क्योंकि शैतान ने परमेश्वर की सृष्टि विश्व पर कब्ज़ा कर लिया था, वह ज्येष्ठ पुत्र का स्थान पर हो गया। इस तरह परमेश्वर दूसरे पुत्र के स्थान पर हो गया, इस स्थिति से उसे जन्मसिद्ध अधिकार पुनः स्थापित करने के लिए आगे कार्य करना पड़ा। यही कारण है कि परमेश्वर जेठ पुत्रों के बजाए दूसरे पुत्रों को अधिक पसंद करता था, जैसे कि एसाव और याकूब का मामला है: “मैंने याकूब से प्रेम किया है लेकिन एसाव को अप्रिय जाना।”[४४९] याकूब, जो दूसरे पुत्र के स्थान पर था, ज्येष्ठ पुत्र के जन्मसिद्ध अधिकार को पुनः स्थापित करने के लिए ज़िम्मेदार था, उसने बड़ी चतुराई से एसाव से कुछ रोटी और दाल के एक कटोरे के बदले में यह प्राप्त किया।[४५०] क्योंकि याकूब जन्मसिद्ध अधिकार के मूल्य को अधिक उच्च समझता था और उसे अपने भाई से प्राप्त करने के लिए कोशिश की, इसलिये परमेश्वर ने उसे इज़हाक से आशीर्वाद दिलाया।[४५१] इसके विपरीत, परमेश्वर ने एसाव को आशीष नहीं दी, क्योंकि उसने अपने जन्मसिद्ध अधिकार को तुच्छ जाना और दाल के कटोरे के बदले में उसका सौदा किया।

दूसरा, याकूब हारान चला गया, जो शैतानी दुनिया का प्रतीक है। इक्कीस वर्ष के कठिन परिश्रम से पीड़ित होने के बाद, वह जन्मसिद्ध अधिकार को पुनःस्थापित करने के लिए लाबान के साथ लड़ा और परिवार, धन और उसके हिस्से की मिरास प्राप्त करने में विजयी हुआ। इस विजय के बाद याकूब कनान वापस लौट आया।

तीसरा, कनान, जो प्रतिज्ञा की आशीष का देश है, वापस लौटते समय रास्ते में याकूब ने यब्बोक के घाट पर स्वर्गदूत से मल्लयुद्ध करके विजय प्राप्त की, इस प्रकार शारीरिक संघर्ष से उसने स्वर्गदूत पर पुनः प्रभुत्व स्थापित किया। इन तीन विजयों के द्वारा, याकूब ने क्षतिपूर्ति के माध्यम से हाबिल का स्थान बहाल किया। इस के बाद, याकूब वास्तविक बलिदान का प्रमुख-व्यक्ति बन गया।

इस प्रकार, एसाव और याकूब ने वे स्थान प्राप्त कर लिए जिन में कैन और हाबिल खड़े थे जब परमेश्वर ने हाबिल का बलिदान स्वीकार किया था। तदनुसार, याकूब और एसाव को पतित-प्रवृत्ति निकालने के लिए, एसाव को याकूब से प्रेम करना चाहिए था, परमेश्वर और अपने बीच उसे मध्यस्थ मान कर उसका सम्मान करना चाहिए, आज्ञाकारी बनकर याकूब के निर्देशों के आगे झुकना चाहिए था, और अंत में, परमेश्वर के अनुग्रह के वाहक से अच्छाई प्राप्त करके नेकी बढ़ाने के लिए क्षतिपूर्ति की शर्त पूरी करनी चाहिए थी। वस्तुतः, जब याकूब इक्कीस वर्ष के कठोर परिश्रम के बाद अपने परिवार और

---

[४४९] मलाकी १:२
[४५०] उत्पत्ति २५:२९-३४
[४५१] उत्पत्ति २७:२७-२९

धन के साथ हारान लौटा, तो उसने एसाव के मन की पुरानी दुश्मनी को दूर करने के लिए प्रेरित किया:

> याकूब ने आँखें उठाकर देखा कि एसाव चार सौ पुरुष संग लिये हुए चला आता है। तब उसने बच्चों को अलग-अलग बाँटकर लिआः और राहेल और दोनों दासियों को सौंप दिया। और उसने सब से आगे लड़कों के समेत दासियों को, उसके पीछे लड़कों समेत लिआः को और सब के पीछे राहेल और यूसुफ को रखा और आप उन सब के आगे बढ़ा और सात बार भूमि पर गिर के दण्डवत् की, और अपने भाई के पास पहुँचा। तब एसाव उससे भेंट करने को दौड़ा, और उसको हृदय से लगाकर, गले से लिपट कर चूमा, फिर दोनों रो पड़े। उत्पत्ति ३३:१-४

जब एसाव ने अपने हाथ खोले और प्यार से याकूब का स्वागत किया, तब उन्होंने पतित-प्रवृत्ति को निकालने के लिए क्षतिपूर्ति शर्त पूरी की। पहली बार वास्तविक-नींव सफलतापूर्वक रखी गई थी। जब याकूब और एसाव अपनी वास्तविक-भेंट में सफल हुए, तो उन्होंने वास्तविक भेंट चढ़ाने की पिछली विफलताओं को क्षतिपूर्ति द्वारा बहाल किया: आदम के परिवार में कैन और हाबिल की विफलता को और नूंह के परिवार में हैम और शेम की विफलताओं को। इतिहास की एक लम्बी लंब अवधि के दौरान एक परिवार में जिसमें परमेश्वर ने वास्तविक-नींव की पुनः स्थापना के लिये काम किया, उनकी विजय ने अब्राहम पर केंद्रित देवी योजना को क्षैतिज रूप से भी क्षतिपूर्ति द्वारा बहाल किया।

एसाव अपनी माँ के पेट से ही परमेश्वर के लिए घृणा का पात्र बना[४५२] यह इसलिए क्योंकि उसे कैन के स्थान की भूमिका अदा करने के लिए मिली थी जो शैतान के पक्ष में था और पुनरुद्धार की दैवी योजना में क्षतिपूर्ति की शर्त को स्थापित करने के उद्देश्य से नियुक्त किया गया था। एक बार उसका याकूब को आत्मसमर्पण कर लेने से उसने अपने हिस्से की जिम्मेदारी पूरी की, और कैन के यथापूर्व स्थान में खड़ा हुआ और अंत में वह परमेश्वर का प्रेम प्राप्त करने में सक्षम हुआ।

३.३ मसीह के लिये नींव

मसीह के लिये नींव स्थापित करने का परमेश्वर का कार्य, जो उसने पहले आदम के परिवार में स्थापित करने की कोशिश की, वह तीन बार चलाया जाना पड़ा क्योंकि पुनरुद्धार की दैवी योजना में प्रमुख व्यक्तियों ने अपने हिस्से की ज़िम्मेदारी पूरी नहीं की थी। तीसरा प्रयास अब्राहम के समय का था, परन्तु यह भी स्थगित किया गया जब वह अपनी प्रतीकात्मक भेंट में विफल हो गया। इज़हाक और उसके परिवार ने परमेश्वर की यह इच्छा विरासत में पाई और उन्होंने विश्वास की नींव और वास्तविक नींव स्थापित की। अंत में, मसीह के लिए नींव स्थापित हो गई। लोग यह भी सोच सकते हैं कि मसीह को उस समय पृथ्वी पर आना चाहिए।

परन्तु मसीह के आने की नींव के लिए अनुकूल सामाजिक वातावरण की आवश्यकता भी होती है। यह नींव शैतानी दुनिया को मसीह द्वारा शासित परमेश्वर के राज्य में प्रत्यावर्तित करने के लिए योग्य

---

[४५२] रोमियों ९:११-१३

होनी चाहिए। आदम और नूंह के परिवारों में दैवी योजना के दौरान कोई ऐसा अन्य परिवार नहीं था जो संभवतः केंद्रीय परिवार पर हमला कर सके या उसे भ्रष्ट कर सकता था। यदि दोनों परिवारों में से किसी ने भी पारिवारिक स्तर पर मसीह की नींव स्थापित कर ली होती तो मसीह बिना विरोध के उसी समय आ गया होता। परन्तु, अब्राहम के समय तक, पतित लोगों ने पहले से ही शैतानी राष्ट्र बना लिए थे जो आसानी से अब्राहम के परिवार पर प्रबल हो सकते थे। अतः, उस समय मसीहा के लिए जो नींव रखी जाती वह सीमित नींव होती क्योंकि वह परिवार के स्तर रखी गई थी। उस नींव के आधार पर मसीह सुरक्षित रूप से नहीं आ सकता था। शैतानी दुनिया के देशों का सामना करने के लिये एक राजसत्ता की नींव आवश्यक थी।

अब्राहम का प्रतीकात्मक बलिदान में असफल न होने पर भी ऐसा आधार आवश्यक होता, परन्तु वह अपने पुत्रों, इज़हाक और इश्माएल के साथ मसीह की पारिवारिक नींव डालने के लिए वास्तविक नींव तैयार करने में सफल हुआ। फिर भी यह मसीह के आने के लिये सुरक्षित नहीं होती जब तक कि अब्राहम का वंश कनान में गुणित होकर बढ़ नहीं जाता और मसीह के लिए एक राष्ट्रीय नींव की स्थापना नहीं कर लेता। यद्यपि, इज़हाक की सन्तान ने मसीह के लिए पारिवारिक नींव की स्थापना की थी, फिर भी उन्हें, अब्राहम की गलती के कारण सज़ा के रूप में, अपनी मातृभूमि को छोड़ कर चार सौ वर्षों के लिए एक विदेशी भूमि पर दुःख भुगतना पड़ा। मिस्र में दुख उठाने के बावजूद भी वे फले-फूले और बढ़ कर एक दृढ़ कौम बन गए। तब वे कनान वापस गए जहाँ वे मसीह और उसके कार्य के लिए एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में नींव डालेंगे।[४५३]

प्रतीकात्मक भेंट में अब्राहम की गलती के कारण उसकी सन्तान के कंधों पर क्षतिपूर्ति का एक दौर रखा गया था। इस क्षतिपूर्ति के दौर को इज़हाक को नहीं, पर याकूब को शुरू करना था। क्षतिपूर्ति के मार्ग में चलने में बड़ा बोझ, वास्तव में, हाबिल-वर्ग के व्यक्ति के कंधों पर होता है जो एक प्रमुख-व्यक्ति के रूप में वास्तविक बलिदान चढ़ाने का कार्य करता है। आदम के परिवार में हाबिल, नूंह के परिवार में हैम, अब्राहम के परिवार में इज़हाक, और इज़हाक के परिवार में याकूब, अपने-अपने परिवारों में क्षतिपूर्ति के दौर का बड़ा बोझ उठा कर चले। उनमें केवल याकूब ही था, जो हाबिल के जैसा व्यक्ति था और मसीहा की नींव पर खड़ा था। इसलिए, वह शैतान से अलग होने के आदर्श पथ पर चलेगा, और मसीह के लिए एक नमूना स्थापित करेगा जिसपर मसीह को अपनी आगमन पर चलना होगा।[४५४]

याकूब का परिवार मसीह की नींव पर खड़ा था जो इज़हाक के परिवार में पूरी हो गई थी। इज़हाक के परिवार का स्थान मिरास में प्राप्त करके और अब्राहम के पाप की जिम्मेदारी उठा कर, अब्राहम को सौंपी गई व्यवस्था को पूरा करने के लिये उन्होंने क्षतिपूर्ति के चार-सौ-वर्षीय दौर का आरम्भ किया। इज़हाक के परिवार में याकूब हाबिल के स्थान पर था, जो क्षतिपूर्ति के संपूर्ण पथ पर चला। याकूब के परिवार में यूसुफ, याकूब की पत्नी राहेल का पुत्र परमेश्वर के पक्ष में था—जिसे मिस्र में प्रवेश करके और

[४५३] प्रति-संदर्भ—मूसा और यीशु २.२.३.३
[४५४] प्रति-संदर्भ—मूसा और यीशु १

क्षतिपूर्ति का पथ चल कर हाबिल का स्थान मज़बूत करना था। अपने भाइयों द्वारा दासता में बेचे जाने और मिस्र में लाए जाने के बाद, यूसुफ, तीस वर्ष की उम्र में मिस्र के प्रधान मंत्री के कार्यालय में पदोन्नत हुआ। बचपन में परमेश्वर द्वारा सपने में दी गई भविष्यवाणी को उसने पूरा होते देखा।[४५५] पहले, यूसुफ के सौतेले भाई, जो लिआः से उत्पन्न हुए थे और शैतान के पक्ष में थे, मिस्र में आए और उसके सामने आत्मसमर्पण किया। बाद में, याकूब के सभी बच्चों ने मिस्र में प्रवेश किया, और अंत में वे अपने पिता को भी मिस्र में ले आए। इस तरह, याकूब के परिवार ने राष्ट्र के निर्माण के लिये क्षतिपूर्ति का दौर शुरू किया जो एक दिन मसीह को स्वीकार करेंगे।

प्रमुख व्यक्ति के रूप में याकूब, जिसने मसीह की नींव डाली, अब्राहम के पाप का बोझ उठाने के लिए जिम्मेदार था। परमेश्वर की इच्छा को जो इज़हाक को सौंपी गई थी, राष्ट्रीय स्तर पर साधित करने के लिये वह क्षतिपूर्ति के दौर को आरंभ करने के लिये भी ज़िम्मेदार था। अतः, जैसे कि अब्राहम और इज़हाक के विषय में, परमेश्वर की दृष्टि में अब्राहम, इज़हाक और याकूब भले ही वे तीन विभिन्न व्यक्ति थे, परंतु उसकी इच्छा के संबंध में वे एक ही व्यक्ति के रूप में माने जाते हैं। तदनुसार, याकूब की सफलता इज़हाक की सफलता, और इज़हाक की सफलता अब्राहम की सफलता मानी गई है। अब्राहम पर केंद्रित, पुनरुद्धार की दैवी योजना, यद्यपि इज़हाक और याकूब तक विस्तारित हुई, परमेश्वर की दृष्टि में वह बिना किसी भी बढ़ाव के अब्राहम की पीढ़ी में ही पूरी हुई मानी गई है। यह लिखा है, “मैं तुम्हारे पिता का परमेश्वर हूँ, अब्राहम का परमेश्वर, इज़हाक का परमेश्वर और याकूब का परमेश्वर हूं।”[४५६] यह पद इंगित करता है, हालांकि यह तीन पीढ़ियाँ थीं, इन पूर्वजों ने सामूहिक रूप से उसकी इच्छा पूरी की है, इसलिये परमेश्वर ने इन्हें एक पीढ़ी माना है।

अपनी दैवी योजना के लक्ष्य को पूरा करने के लिये परमेश्वर का इरादा था कि वह राष्ट्रीय स्तर पर मसीह की नींव की स्थापना करे और मसीह को एक तैयार राष्ट्र में भेजे। यह पूरा करने के लिए, परमेश्वर ने याकूब के परिवार को मिस्र में, यानी शैतानी दुनिया में जहां वे चार सौ वर्ष दास के रूप में दुःख भोगेंगे, भेजा। फिर, अब्राहम के साथ किए हुए वायदे के अनुसार, परमेश्वर उन्हें चुने हुए लोगों के रूप में बढ़ाएगा और वापस कनान लाया। मसीह के लिए राष्ट्रीय नींव की स्थापना के लिए, इज़हाक के परिवार में मसीह के लिये जो नींव स्थापित की गई थी वह क्षतिपूर्ति का दौर शुरु करने का आधार बनी। आदम से अब्राहम तक की दो हजार वर्ष की अवधि, वस्तुतः, राष्ट्रीय दैवी योजना के अगले युग की शुरुआत के आधार के लिए डाली गई थी।

अंत में, अब्राहम की गलती के भुगतान के लिए याकूब क्षतिपूर्ति के दौर की जिम्मेदारी लेने में विजयी हुआ। परमेश्वर की इच्छा की ख़ातिर याकूब ने अपनी बुद्धि का उपयोग किया और व्यक्तिगत रूप से अपने संघर्ष में एसाव से जन्मसिद्ध अधिकार जीतने में विजयी हुआ। एक परिवार के रूप में वह हारान गया, जहाँ उसने इक्कीस वर्ष तक अपने चाचा लाबान के साथ संघर्ष किया और जन्मसिद्ध

---

[४५५] उत्पत्ति ३७:५-११

[४५६] निर्गमन ३;६

अधिकार जीतने में विजयी हुआ। हारान से कनान वापस लौटते समय रास्ते में याकूब एक दूत के साथ लड़ाई में विजयी हुआ। वह पहला पतित मनुष्य था जिसने दूतों पर प्रभुता पुनःस्थापित करने की क्षतिपूर्ति की शर्त को पूरा किया। तब उसने इज़राएल नाम प्राप्त किया[४५७], जो यह प्रकट करता है कि उसने एक नमूना स्थापित किया और आधार बनाया जिस पर चुने हुए लोग संगठित किए जाएंगे। इन विजयों के साथ कनान वापस लौटने के बाद याकूब ने एसाव का दिल जीत लिया, और दोनों ने एक साथ पतित प्रवृत्ति को निकालने के लिए क्षतिपूर्ति शर्त को पूरा किया।

इस प्रकार शैतान को वश में करने के लिये, याकूब एक उदाहरण का मार्ग संपन्न करने में विजयी हुआ। याकूब द्वारा स्थापित किए गए इस उदाहरण के मार्ग के नमूने पर मूसा, यीशु और इस्राएल के लोग भी चलेंगे। शैतान को राष्ट्रीय स्तर पर वश में किस प्रकार लाया जा सकता है यह समझने के लिये इज़राएल का इतिहास एक अच्छा ऐतिहासिक स्रोत है। इस कारण से, यह पुनरुद्धार की दैवी योजना के अध्ययन के लिए अति महत्वपूर्ण है।

३.४ अब्राहम के कार्यवाही से कुछ शिक्षाएँ

पहला, अब्राहम की कार्यवाही दर्शाती है कि परमेश्वर की पूर्वनियति उसकी इच्छा के पूरे होने के उपलक्ष्य में सशर्त है। पुनरुद्धार की दैवी योजना अकेले परमेश्वर की शक्ति से पूरी नहीं की जा सकती; यह केवल मानव के अपने हिस्से जिम्मेदारी के सहयोग से पूरी की जा सकती है। अतः, यद्यपि परमेश्वर ने अब्राहम को पुनरुद्धार की दैवी योजना को पूरा करने के उद्देश्य से बुलाया, परन्तु जब वह अपनी ज़िम्मेदारी पूरी करने में विफल हुआ, परमेश्वर की इच्छा पूरा नहीं हो पाई।

दूसरी, अब्राहम की कार्यवाही यह दर्शाती है कि मनुष्य के विषय में परमेश्वर की पूर्वनियति सशर्त है। यद्यपि परमेश्वर ने अब्राहम को उसकी भेंट में सफल होने के द्वारा विश्वास का पिता पूर्वनिर्धारित किया था, परन्तु जब वह अपनी जिम्मेदारी पूरी नहीं कर सका, उसका मिशन इज़हाक और याकूब तक विस्तृत हो गया।

तीसरा, अब्राहम की कार्यवाहियाँ हमें यह दिखाती हैं कि जब मनुष्य अपनी ज़िम्मेदारी को पूरा करने में असफल होता है, तो परमेश्वर की इच्छा की पूर्ति में हमेशा देर होती है, और उसके पुनरुद्धार के लिये अधिक क्षतिपूर्ति शर्त भुगतने की आवश्यकता होती है। अब्राहम के विषय में, परमेश्वर की इच्छा केवल पशुओं की बलि करने से पूरी हो जाती; परन्तु उसके विफल होने पर उसे अपने प्रिय पुत्र इज़हाक को बलिदान करके पूरी करनी पड़ी, जो इज़हाक और याकूब के द्वारा पूरी हुई।

चौथा, अब्राहम का उसके बलिदान को दो भागों में काटना यह सबक सिखाता है कि हमें भी अच्छाई को बुराई से अलग करने के लिए, एक भेंट के रूप में स्वयं को विभाजित करके अर्पण करना चाहिए। विश्वास का जीवन अपने आप को एक भेंट के स्थान में रखना होता है। केवल अपने आप में अच्छाई को बुराई से अलग करके हम परमेश्वर के लिये मनभावन जीवित बलिदान बन सकते हैं।

---

[४५७] उत्पत्ति ३२:२८

नींव३.४

परमेश्वर की इच्छा के मानक के अनुसार हमें लगातार अपने अन्दर की अच्छाई को बुराई से अलग करना चाहिये। यदि हम ऐसा करने में उपेक्षा करते हैं तो शैतान के आक्रमण की स्थिति खड़ी करते हैं।

दिव्य नियम प्रतिपादन

भाग २

अध्याय २

पुनरुद्धार की दवी योजना में
मूसा और यीशु

विषय सूची

पृष्ठ

पुनरुद्धार की दैवी योजना में मूसा और यीशु २४६

संभाग १ शैतान को अधीन करने के लिये आदर्श कार्यवाहियाँ २४७

१.१ याकूब की कार्यवाहियाँ और मूसा की कार्यवाहियाँ,
यीशु की कार्यवाही के लिए नमूने के रूप में क्यों रखीं गईं थीं २४७
१.२ याकूब की कार्यवाही, मूसा और यीशु की कार्यवाहियों के लिए नमूने के रूप में थी २४८

संभाग २ मूसा के नेतृत्व के अंतर्गत पुनरुद्धार की दैवी योजना २५२

२.१ मूसा की अगवाई में दैवी योजना की समीक्षा २५२
२.१.१ विश्वास की नींव २५२
२.१.१.१ विश्वास की नींव की बहाली के लिए मुख्य अगवा २५२
२.१.१.२ विश्वास की नींव की बहाली के लिये शर्त की वस्तु २५४
२.१.२ वास्तविक नींव २५५
२.१.३ मसीह के लिये नींव २५५

२.२ मूसा के नेतृत्व के अंतर्गत कानन की प्राप्ति की राष्ट्रीय कार्यवाहियाँ २५५
२.२.१ कानन की प्राप्ति के लिए पहली कार्यवाही २५६
२.२.१.१ विश्वास की नींव २५६
२.२.१.२ वास्तविक नींव २५७
२.२.१.३ कानन के प्राप्ति की पहली राष्ट्रीय कार्यवाही में विफलता २५८

२.२.२ कानन की प्राप्ति की दूसरी राष्ट्रीय कार्यवाही २५९
२.२.१.२ विश्वास की नींव २५९
२.२.२.२ वास्तविक नींव २५९
२.२.२.३ पुनरुद्धार की दैवी योजना और निवासस्थान २६७
२.२.२.३.१ पत्थर की पट्टियों, निवासस्थान और वाचा के संदूक का
महत्व और उद्देश्य २६७
२.२.२.३.२ निवासस्थान के लिये नींव २७०
२.२.२.४ कानन की प्राप्ति के लिए दूसरी राष्ट्रीय कार्यवाही में विफलता २७४

२.२.३ कानन की प्राप्ति के लिए तीसरी राष्ट्रीय कार्यवाही २७५

२.२.३.१ विश्वास की नींव २७५
२.२.३.२ वास्तविक नींव २७५
२.२.३.२.१ मूसा पर केन्द्रित वास्तविक नींव २७६
२.२.३.२.२ यहोशू पर केन्द्रित वास्तविक नींव २८१
२.२.३.२.२ मसीह के लिये नींव २८१

२.३ मूसा की कार्यवाही से सीखे गए कुछ पाठ २८६

संभाग ३ यीशु की अगवाई के अंतर्गत पुनरुद्धार की दैवी योजना २८६

३.१ कनान की प्राप्ति के लिये पहली विश्वव्यापी कार्यवाही २८९
३.१.१ विश्वास की नींव २८९
३.१.२ वास्तविक नींव २९१
३.१.३ कानन की प्राप्ति की पहली विश्वव्यापी कार्यवाही का विफल होना २९२

३.२ कानन की प्राप्ति की दूसरी विश्वव्यापी कार्यवाही २९२
३.२.१ विश्वास की नींव २९२
३.२.१.१ यीशु का यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का मिशन धारण करना २९२
३.२.१.२ यीशु का जंगल में चालीस दिन का उपवास और तीन प्रलोभन २९३
३.२.१.३ चालीस दिन के उपवास और तीन प्रलोभनों का परिणाम २९७
३.२.२ वास्तविक नींव २९८
३.२.३ कानन की प्राप्ति की दूसरी विश्वव्यापी कार्यवाही का विफल होना २९९

३.३ कानन की प्राप्ति की तीसरी विश्वव्यापी कार्यवाही २९९
३.३.१ यीशु के नेतृत्व में कानन की प्राप्ति की आत्मिक कार्यवाही ३००
३.३.१.१ विश्वास की आत्मिक नींव ३००
३.३.१.२ आत्मिक वास्तविक नींव ३०२
३.३.१.३ मसीह के लिये आत्मिक नींव ३०२
३.३.१.४ आत्मिक कनान की बहाली ३०३
३.३.२ दूसरे आगमन पर मसीह की अगवाई के अंतर्गत
वास्तविक कानन की बहाली की कार्यवाही ३०४

३.४. यीशु की कार्यवाही से सीखे हुए कुछ पाठ ३०८

पुनरुद्धार की दैवी योजना में मूसा और यीशु

बाईबल में परमेश्वर के उद्धार के कार्य के विषय में कई रहस्य अन्तर्विष्ट हैं। लिखा है, “निश्चय ही प्रभु यहोवा अपने दास भविष्यद्वक्ताओं पर अपना मर्म प्रगट किए बिना कुछ नहीं करता।”[४५८] तथापि, परमेश्वर की दैवी योजना के सिद्धांतों को जाने बिना, लोग बाईबल में छुपे रहस्य समझने में असमर्थ रहे हैं। बाईबल में किसी भविष्यद्वक्ता के जीवन के विवरण का इतिहास एकमात्र अभिलेख ही नहीं है बल्कि, भविष्यद्वक्ता के जीवन के दौर के माध्यम से बाईबल पतित लोगों के चलने के रास्ते का खुलासा करती है। विशेष रूप से हम यह जाँच करेंगे कि परमेश्वर ने मानव जाति को बचाने के लिए याकूब और मूसा की दैवी कार्यवाही यीशु के लिए नमूने के रूप में कैसे तैयार की थी।

[४५८] आमोस ३:७

संभाग १

शैतान को अधीन करने के लिये आदर्श कार्यवाहियाँ

हमने सीखा है, कि इज़हाक के परिवार के पुनरुद्धार की देवी योजना में याकूब प्रमुख व्यक्ति था, जिसने वास्तविक नींव डाली थी। उसने हाबिल का स्थान ग्रहण किया और बड़ी कठिनाई से शैतान को अधीन किया और पतित प्रवृत्ति निकालने की क्षतिपूर्ति की शर्त को पूरा करने के लिए कार्य किया। याकूब की संपूर्ण कार्यवाही मूसा और यीशु के लिए आदर्श नमूना बनी। यीशु शैतान को वास्तविक रूप से वश में करने के लिये आया था। यीशु से पहले मूसा शैतान के दमन के लिए उस पथ पर चला था जो कि उस पथ की छवि थी जिस पर यीशु को चलना था। इससे पहले भी परमेश्वर ने याकूब को एक ऐसे पथ पर चलाया जो यीशु के चलने के पथ का प्रतीकात्मक चित्रण था। इसके अतिरिक्त, याकूब की कार्यवाही शैतान को दमन करने के लिए और पुनरुद्धार की दैवी योजना के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए एक आदर्श पथ थी जिसपर इज़राएली लोगों को और सारी मानवता को चलना था।

१.१ याकूब की कार्यवाही और मूसा की कार्यवाही, यीशु की कार्यवाही के लिए नमूने के रूप में क्यों रखी गई थी

पुनरुद्धार की दैवी योजना का लक्ष्य उस समय प्राप्त किया जाता है जब मनुष्य शैतान को स्वैच्छिक आत्मसमर्पण करने के लिए मजबूर कर लेता है और उसका स्वामी बन जाता है। यह उन्हें अपने हिस्से की दी गई ज़िम्मेदारी को पूरा करने के द्वारा करना चाहिये। यीशु, मसीह और सच्चे मानव पूर्वज के रूप में शैतान का स्वैच्छिक आत्मसमर्पण करने में सभी विश्वासी लोगों की मदद करने के लिए आया था। उसने शैतान को पूर्ण आत्मसमर्पण करने का बेड़ा स्वयं पहले उठाया, और तब से उसने अपने उदाहरण का अनुसरण करने के लिए विश्वासी लोगों का मार्ग दर्शन किया।

शैतान, जो चुपचाप से परमेश्वर के सामने भी समर्पण नहीं करता वह यीशु के सामने आसानी से कदापि समर्पण नहीं करेगा, फिर साधारण विश्वासियों की बात ही और है। इसलिए परमेश्वर ने, जिसने मनुष्यों को बनाया, उनकी जिम्मेदारी अपने हाथ में ली और याकूब को बुला कर उसके द्वारा हमें दिखाया कि प्रतीकात्मक रूप से शैतान को वश में कैसे किया जा सकता है।

मूसा उस आदर्श पथ के नमूने का पालन करके, जो उसे प्रतीकात्मक रूप से याकूब के दौर के द्वारा दिखाया गया था, शैतान को वश में कर लेने में सक्षम हुआ। अपने दौर में मूसा ने इसे छवि के स्तर तक विकसित किया। इसी तरह, मूसा के दौर के नमूने पर चल कर यीशु वास्तविक रूप से शैतान को वश में करने के लिए आया था। यीशु के कदमों में चल कर, विश्वासी लोग भी शैतान को वश में करके उसके स्वामी बन सकते हैं। "जैसा मूसा ने कहा, 'प्रभु परमेश्वर तुम्हारे भाइयों में से तुम्हारे लिए मुझ सा एक भविष्यद्वक्ता उठाएगा, वह जो कुछ तुमसे कहे उसकी सुनना'"।[४५९] यह वह यीशु के बारे में कह रहा था। यीशु, मूसा के तुलनीय स्थान में खड़ा होगा और विश्वीय दैवी योजना में कनान—परमेश्वर के

---

[४५९] प्रेरितों ३:२२

राज्य—को बहाल करने के लिए, मूसा की कार्यवाही के नमूने पर चलेगा। यीशु ने कहा, "पुत्र आप से कुछ नहीं कर सकता, केवल वह जो पिता को करते देखता है, क्योंकि जिन, जिन कामों को वह करता है उन्हें पुत्र भी उसी रीति से करता है।"[४६०] इससे उसका तात्पर्य था कि वह उस आदर्श-पथ का जो परमेश्वर ने मूसा के द्वारा प्रकाशित किया है, अनुकरण कर रहा था। इस प्रकार से मूसा यीशु का आदिरूप था।

१.२ याकूब की कार्यवाही, मूसा और यीशु की कार्यवाही के लिए एक नमूने के रूप में थी

शैतान को वश में करने की कार्यवाही में याकूब ने अगवाई की थी। शैतान ने जिस तरीके से मानवता को दूषित किया था, यह कार्यवाही उसके विपरीत पथ पर थी। मूसा और यीशु याकूब की कार्य-वाही के नमूने पर चले। आइए हम इस अनुभाग में इन दोनों कार्यवाहियों का एक साथ अध्ययन करें।

(१) मनुष्य के पहले पूर्वजों को चाहिये था कि वे परमेश्वर की आज्ञा का पूरी तरह से पालन करें और फल नहीं खाएं, फिर भी प्रधान स्वर्गदूत के प्रलोभन देने पर वे अपने जीवन को जोखिम में डालकर पतित हो गए। तदनुसार, याकूब को परिवार के स्तर पर कनान की प्राप्ति के लिए—यानी अपने परिवार और धन के साथ वहाँ लौट कर मसीह को ग्रहण करने की नींव पुनःस्थापित करने के लिए—उसे स्वर्गदूत से, जो शैतान का प्रतिनिधित्व करता है, लड़ाई करके अपने जीवन को जोखिम में डाल कर विजय प्राप्त करना थी। याकूब इस परीक्षण में प्रबल होने के लिए अधीर था, जब वह यब्बोक के घाट पर स्वर्गदूत के साथ मल्लयुद्ध कर रहा था, वह विजयी हुआ और उसने "इस्राएल" नाम प्राप्त किया।[४६१] इस परीक्षण में, परमेश्वर ने स्वर्गदूत को शैतान की जगह रखकर याकूब का परीक्षण किया था। ऐसा करने से परमेश्वर का उद्देश्य याकूब को दुखी करने के लिए नहीं था, परन्तु हाबिल का स्थान प्राप्त करने के लिए उसकी सहायता करने के लिए था और कि वह दूतों पर राज करने की योग्यता प्राप्त करने के द्वारा अपने परिवार के पुनरुद्धार का कार्य पूरा कर सके। इसके अतिरिक्त, इस परीक्षण में दूत के नेतृत्व की भूमिका निभाने के द्वारा, दूत-दुनिया के पुनरुद्धार के लिये मार्ग खुल गया।

मूसा के विषय में, इससे पहले कि वह इस्राएलियों को कनान जाने के लिए मार्गदर्शन करे और इस प्रकार कनान के राष्ट्रीय पुनरुद्धार का कार्य पूरा कर सके, उसे पहले अपने जीवन को जोखिम में डाल कर एक परीक्षण में प्रबल होना था जिसमें यहोवा ने उसे मारने की कोशिश करता है।[४६२] हमें समझना चाहिए कि परमेश्वर लोगों का ऐसा परीक्षण इसलिए करता है क्योंकि वह उनसे प्रेम करता है। यदि परमेश्वर के स्थान पर शैतान ऐसे परीक्षण दे तो विफल होने पर वे शैतान के शिकार बनेंगे। उसी भाँति, यीशु को भी, इससे पहले कि वह कनान की प्राप्ति का विश्वव्यापी पुनरुद्धार का कार्य आरम्भ करे, अर्थात, मानवता को धरती पर स्वर्ग के राज्य में ले जाने के लिए मार्गदर्शन करे, एक ऐसे ही परीक्षण में

---

[४६०] यूहन्ना ५:१९
[४६१] उत्पत्ति ३२:२५-२८
[४६२] निर्गमन ४:२४

प्रबल होना था। जब उसने जंगल में चालीस दिन का उपवास रखा था और परखा गया था और अपने जीवन को जोखिम में डालकर शैतान के साथ लड़ाई लड़ी और उस पर प्रबल हुआ।[४६३]

(२) क्योंकि जब शैतान ने हमारे शरीर और आत्मा को अशुद्ध किया, हमने पतित प्रवृत्ति उपार्जित की, इसे निकालने के लिए याकूब को इसके तुलनीय शर्त पूरी करनी पड़ी। इस कारण से, क्षतिपूर्ति शर्त की पूर्ति के द्वारा हाबिल के स्थान को पुनःस्थापित करने के लिए और पतित प्रवृत्ति को निकालने के लिए, याकूब ने एसाव को रोटी और दाल देकर जन्मसिद्ध अधिकार खरीदा,[४६४] जो शरीर और आत्मा का प्रतीक है। मूसा के दिनों में इस कार्यवाही को फिर से दोहराने के लिए, परमेश्वर ने लोगों को मन्ना और बटेर खिलाया,[४६५] यह भी शरीर और आत्मा का प्रतीक है, इससे उसने अपने लिए उनकी कृतज्ञता को मजबूत किया और उनमें चुने हुए लोग होने की जागरूकता को बढ़ावा दिया। इस प्रावधान के माध्यम से, परमेश्वर यह चाहता था कि लोग मूसा की आज्ञा का पालन करें और राष्ट्रीय स्तर पर पतित प्रवृत्ति को निकालने के लिए क्षतिपूर्ति की शर्त पूरी करें।

यीशु ने कहा: “तुम्हारे बापदादों ने जंगल में मन्ना खाई और मर गए...मैं तुम से कहता हूँ, जब तक तुम मनुष्य के पुत्र का मांस न खाओ और उसका लहू न पीओ, तुम में जीवन नहीं है।”[४६६] इसके अतिरिक्त उसके यह प्रमाणित करने के अलावा कि वह मूसा द्वारा निर्धारित आदर्श-पथ पर चल रहा है, इन आयतों के द्वारा यीशु ने यह भी पुष्टि की कि सारी पतित मानवता को शरीर और आत्मा में उसके साथ एक बन जाना चाहिए। यीशु के साथ, जो उस समय यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले[४६७] के स्थान पर खड़ा था, वफादारी से एकजुट होकर उसके पीछे चलने से वे पतित प्रवृत्ति को निकालने के लिए विश्वीय क्षतिपूर्ति शर्त पूरा कर सकेंगे। फिर मसीह के रूप में यीशु की भक्तिपूर्वक सेवा में भाग लेने के द्वारा वे अपनी मूल प्रवृत्ति को बहाल कर सकेंगे।

(३) पतन के कारण, शैतान ने मानव शव को भी अशुद्ध किया। याकूब का शरीर उन आशीषों के कारण शुद्ध किया गया था जो उसने अपने जीवन में प्राप्त कीं थीं। मृत्यु में भी, उसके शव की व्यवस्था से भी शुद्धि की एक शर्त पूरी हुई। इस प्रकार शव के सुगंधित द्रव्य संलेपन में चालीस दिन लगे।[४६८] मूसा के विषय में, प्रधान स्वर्गदूत मीकाईल ने उसके शरीर के उचित प्रबंध के लिए शैतान के साथ वाद-विवाद किया।[४६९] हम जानते कि यीशु का शरीर लापता हो गया था, और खाली कब्र को देख कर अधिकारी लोग चकित हो गए।[४७०]

(४) पतन के समय शैतान ने प्रथम मानव पूर्वजों को विकास-काल के दौरान दूषित किया था।

---

[४६३] मत्ती ४:१-११
[४६४] उत्पत्ति २५:३४
[४६५] निर्गमन ६:१३
[४६६] यूहन्ना ६:४९-५३
[४६७] प्रति-संदर्भ—मूसा और यीशु ३.२.१
[४६८] उत्पत्ति ५०:३
[४६९] यहूदा ९
[४७०] मत्ती २७:६२-२८:१५

इस अपवित्रीकरण को क्षतिपूर्ति के द्वारा बहाल करने के लिए, परमेश्वर कुछ संख्याओं के आधार पर शर्तें रख कर कार्य कर रहा था, जैसे संख्या तीन, जो विकास-काल को दर्शाता है।[४७१] जब याकूब ने हारान से कनान की यात्रा आरंभ की, तो इससे पहले कि लाबान को उसकी अनुपस्थिति की सूचना दी जाए,[४७२] शैतान से अलग होने के लिए तीन दिन की अवधि रखी गई थी। जब मूसा ने अपने लोगों को मिस्र से बाहर निकालकर कनान जाने के लिये मार्गदर्शन किया, उसके लिए तीन दिन की प्रारंभिक अवधि थी।[४७३] यहोशू, यर्दन नदी को पार करने से पहले तीन दिनों के लिए वहीं टिका रहा।[४७४] कनान (परमेश्वर के राज्य) को प्राप्ति करने के लिए जब यीशु अपना विश्वीय आध्यात्मिक दौर शुरू करने जा रहा था, तो उससे पहले उसने कब्र में तीन दिन बिताए।[४७५]

याकूब के बारह पुत्र थे,[४७६] उसे अपनी पीढ़ी में क्षतिपूर्ति के द्वारा उन (क्षैतिज) क्षतिपूर्ति की शर्तों को जो (लंब रूप में) नूंह से याकूब तक बारह पीढ़ियों में जमा हुईं थीं, और जो शैतान के हाथ लग गईं थीं, पुनःस्थापित करनी थीं। मूसा के दिनों में बारह गोत्र थे[४७७] और इसी तरह यीशु के बारह चेले थे।[४७८] परमेश्वर की सृष्टि के सात दिन जो भ्रष्ट हो गए थे इस वजह से शैतान से अलग होने के लिए क्षतिपूर्ति की शर्त पूरी करने में याकूब के परिवार के सत्तर सदस्य,[४७९] मूसा के समय के सत्तर पुरनिये[४८०], और यीशु के सत्तर अनुयायी[४८१], इन सब ने अपने, अपने समय में प्रमुख दैवी योगदान दिए हैं।

(५) एक लाठी जो बुराई को मारती है, मार्ग की अगवाई भी करती है और जब कोई उस पर टिकता है तो सहारा देती है, वह मसीह का प्रतीक है।[४८२] याकूब ने यर्दन नदी को लाठी के सहारे पार करके कनान की भूमि में प्रवेश किया।[४८३] यह पूर्वाभास करता है कि एक दिन पतित मानवता भी मसीह के पीछे चल कर, उसके उदाहरण और मार्गदर्शन पर आश्रित, अन्याय को मारते हुए इस पापी संसार के पानी को पार करके आदर्श संसार के किनारे पर पहुँचेगी। मूसा ने इस्राएलियों को एक लाठी से मार्गदर्शन करके लाल सागर पार किया।[४८४] यीशु अपने दूसरे आगमन पर मानवता को लोहे का राजदण्ड लिए हुए इस पतित

---

[४७१] प्रति-संदर्भ—काल २.४
[४७२] उत्पत्ति ३१.२२
[४७३] निर्गमन ५:३
[४७४] यहोशु ३:२
[४७५] लूक १८:३३
[476] उत्पत्ति ३५:२२
[477] निर्गमन २४:४
[478] मत्ती १०:१
[479] उत्पत्ति ४६:७
[480] निर्गमन २४:१
[481] लूक १०:१
[482] प्रति-संदर्भ—मूसा और यीशु २.२.२.२
[483] उत्पत्ति ३२:१०
[484] निर्गमन १४:१६

संसार के अशांत पानी को पार करके आदर्श संसार के किनारे पहुँचाने के लिए मार्गदर्शन करेगा।[४८५]

(६) हव्वा के पाप के कारण मनुष्य के वंश में पाप की जड़ गाड़ी गई थी, फलस्वरूप कैन ने हाबिल को मार डाला। चूंकि एक माँ और बेटे ने शैतान को समर्थ होने दिया और पाप फला, अतः क्षतिपूर्ति द्वारा पुनरुद्धार के नियम के अनुसार, एक माँ और बेटे के संयुक्त प्रयासों के द्वारा शैतान से अलग होना आवश्यक है। याकूब अपनी माँ के निष्ठावान समर्थन और चतुर सलाह के बिना आशीर्वाद प्राप्त नहीं कर सकता था और ना ही शैतान से अलग हो सकता था।[४८६] मूसा अपनी माँ की सहायता के बिना मौत से नहीं बच सकता था और ना ही परमेश्वर की इच्छा के लिए कार्य करने के स्थान पर होता।[४८७] अंत में, मरियम ने यीशु को मरने से बचाया, जब हेरोदेस उसे मारना चाहता था, वह यीशु को साथ लेकर मिस्र चली गई।[४८८]

(७) दैवी योजना में जिस प्रमुख व्यक्ति को परमेश्वर की इच्छा पूरी करने का ज़िम्मा सौंपा गया है उसे शैतान की दुनिया से परमेश्वर की दुनिया में लौटना आवश्यक है। यही कारण है कि याकूब को हारान, शैतानी दुनिया से कनान के लिये कूच पड़ा,[४८९] और मूसा को मिस्र, शैतानी दुनिया, से प्रतिज्ञा के देश कनान की यात्रा करनी पड़ी।[४९०] यीशु ने जन्म के शीघ्र बाद[४९१] मिस्र में शरण ली, और फिर वह गलील वापस लौट आया।

(८) पुनरुद्धार का परम उद्देश्य शैतान को जड़ से उखाड़ना है। यह, याकूब का मूर्तियों को एक ओक वृक्ष के नीचे दफन करना, संकेत करता है,[४९२] मूसा ने सोने के बछड़े को तोड़ कर आग से जलाया, तब उसे पीस कर चूरा बना कर पानी के ऊपर फैला कर फेंका और वह पानी इस्राएलियों को पिलाया।[४९३] यीशु, शैतान को अपने शब्दों और शक्ति से वशीभूत करके इस संसार की बुराई को नष्ट करने के लिए आया था।[४९४]

---

485 प्रकाशितवाक्य २:२७, १२:५
486 उत्पत्ति २७:५-१७, ४२-४५
487 निर्गमन २.२
488 मत्ती २:१३
४८९ उत्पत्ति ३१:३३
४९० निर्गमन ३:८
४९१ मत्ती २:१४-१५
४९२ उत्पत्ति ३५:४
४९३ निर्गमन ३२:२०
४९४ प्रति-संदर्भ—अंतिम दिन संबंधी उपदेश ३.२.२

संभाग २

मूसा के नेतृत्व के अंतर्गत पुनरुद्धार की दैवी योजना

२.१ मूसा की अगवाई में दैवी योजना की समीक्षा

मूसा के नेतृत्व में पुनरुद्धार की दैवी योजना अब्राहम के परिवार के द्वारा डाली गई मसीह की नींव पर स्थापित की गई थी। तथापि, नियम की अपेक्षा के अनुसार मूसा को मसीह के लिए क्षतिपूर्ति के माध्यम से विश्वास की नींव और वास्तविक नींव स्वयं पुनःस्थापित करनी चाहिए। जब कभी दैवी योजना के लिए प्रमुख-व्यक्ति बदलता है, नया प्रमुख-व्यक्ति समान ज़िम्मेदारी को पूरी किए बिना दैवी इच्छा विरासत में प्राप्त नहीं कर सकता। इसके अतिरिक्त, क्योंकि दैवी योजना का दायरा अब परिवार से राष्ट्र तक विकसित हो गया है, इस स्थिति में, नींव नए सिरे से निर्धारित की जानी चाहिये। जैसा कि हम आगे देखेंगे, मूसा के नेतृत्व के अंतर्गत पुनरुद्धार की दैवी योजना में नींव रखने के लिए क्षतिपूर्ति की आवश्यक शर्तें, पहले से बिलकुल अलग थीं।

२.१.१ विश्वास की नींव

२.१.१.१ विश्वास की नींव पुनःस्थापित करने वाला प्रमुख-व्यक्ति

विश्वास की नींव पुनःस्थापित करने वाला प्रमुख-व्यक्ति मूसा था। प्रतीकात्मक भेंट चढ़ाने में अब्राहम की ग़लती के कारण दासत्व के चार सौ वर्ष समाप्त होने पर कनान वापस जाने की यात्रा शुरू करने से पहले विश्वास की नई नींव डालना आवश्यक थी। मूसा ने विश्वास की नींव किस प्रकार स्थापित की यह अध्ययन करने से पहले, आइये हम यीशु की समानता में मूसा के दैवी ओहदे की जाँच करें, और उसके बाद अगले खंड में हम यह जाँच करेंगे कि वह अपने से पहले के उन सब प्रमुख व्यक्तियों से जो विश्वास की नींव डालने के लिये बुलाए गए थे किस प्रकार अलग था।

प्रथम, मूसा परमेश्वर का प्रतिनिधित्व करने के लिए, परमेश्वर के स्थान में रखा गया था। परमेश्वर ने मूसा से कहा कि तू हारून के लिये परमेश्वर जैसा ठहरेगा।[४९५] परमेश्वर ने उससे यह भी कहा, "सुन, मैं तुझे फिरौन के सामने परमेश्वर सा ठहराता हूँ; और हारून, तेरा भाई तेरा भविष्यवक्ता होगा।"[४९६]

दूसरा, परमेश्वर ने मूसा को यीशु का आदिरूप होने के लिए नियुक्त किया। मूसा को हारून और फिरौन के सामने परमेश्वर की जगह पर खड़ा करके, परमेश्वर ने उसे यीशु का, जो परमेश्वर का एकमात्र मूर्तरूप था, आदिरूप होने के लिये ठहराया। यीशु का आदिरूप बनकर मूसा ने भविष्य में यीशु के चलने के लिये उसका पथप्रदर्शन किया। उसके बाद यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले की तरह[४९७] मूसा को यीशु के लिए मार्ग सीधा करना था।

---

[४९५] निर्गमन ४:१६
[४९६] निर्गमन ७:१
[४९७] यूहन्ना १:२३

याकूब का वंशज होने के नाते, जिसने मसीह की नींव की स्थापना की थी, मूसा पुनरुद्धार की दैवी योजना में प्रमुख व्यक्ति की हैसियत से सेवा कर सकता था। अपने दैवी पथ में मूसा ने अपने पूर्वज याकूब के कामों और परंपरा के आधार पर कार्य किया। उनकी कार्यवाहियाँ, बाद में यीशु के चलने के पथ के लिए नमूना बनी।

मिस्र में प्रवेश करने के बाद यूसुफ ने जो नींव डाली थी, उसपर भी मूसा खड़ा हुआ। यूसुफ का जीवन भी यीशु के जीवन का आदिरूप था। राहेल का पुत्र होने के नाते (राहेल, याकूब की पत्नी जो परमेश्वर के पक्ष का प्रतिनिधित्व करती है) और लिया (याकूब की पत्नी जो शैतान के पक्ष का प्रतिनिधित्व करती है) उसके पुत्रों का छोटा भाई होने के संबंध से, यूसुफ हाबिल के स्थान पर खड़ा हुआ। वह अपने भाइयों का उसे मारने की योजना से बाल, बाल बच कर निकला, और व्यापारियों को बेचे जाने के बाद उसने दास के रूप में मिस्र में प्रवेश किया। तो भी, वह तीस वर्ष की आयु में प्रधान मंत्री के पथ पर चढ़ा। उसके भाई और पिता मिस्र में आए और उसके सामने नम्रतापूर्वक झुके, इस प्रकार उन्होंने उसके बचपन के भविष्य सूचक स्वप्न को पूरा किया।[४९८] इस दैवी विजय के आधार पर, इस्राएलियों ने मिस्र में प्रवेश किया और शैतान से अलग होने के उद्देश्य से उन्होंने कठिनाइयों का दौर आरंभ किया। यूसुफ की कार्यवाही यीशु की कार्यवाही के लिए, जिसपर वह बाद में चलने वाला था, पूर्व चित्रण किया। शैतान की दुनिया में आने के बाद यीशु कठिनाइयाँ सहकर तीस वर्ष की आयु में राजाओं के राजा के रूप में उभरा। उसे सारी मानवता को, अपने पूर्वजों सहित, अधीनता में लाना था, उनके शैतानी दुनिया के सारे बंधनों को काटना था और उन्हें परमेश्वर के दायरे में पुनःस्थापित करना था।

मूसा की शिशु अवस्था, बचपन और मृत्यु भी यीशु की कार्यवाही का पूर्व चित्रण करती है। अपने जन्म पर मूसा फिरौन के हाथों मारे जाने के जोखिम में था। उसकी माँ ने छुप कर उसे पाला, इसके बाद मूसा फिरौन के महल में दाख़िल हुआ, फिर दुश्मनों के बीच सुरक्षित रूप से उसका पालन पोषण हुआ। उसी प्रकार, यीशु भी ऐसी परिस्थिति में पैदा हुआ जहाँ वह हेरोदेस के हाथ मारे जाने के ख़तरे में था। यीशु की माँ उसे लेकर मिस्र भाग गई, और वहाँ उसने उसे छुप कर पाला। बाद में वह फिर उसे राजा हेरोदेस के क्षेत्र में लाई जहाँ वह दुश्मनों के बीच सुरक्षित पल कर बड़ा हुआ। मूसा की मृत्यु के बाद, किसी को भी उसके शव के बारे में कि वह कहाँ गया पता नहीं था;[४९९] यह घटना यीशु की मृत्यु के बाद उसके शरीर का क्या होगा पूर्व चित्रण करती है।

इन सभी तरीकों से, कनान की प्राप्ति के लिए मूसा की राष्ट्रीय कार्यवाही यीशु के लिए कनान को विश्वीय स्तर पर बहाल करने के लिए नमूना थी। और जैसा कि हम पहले बयान कर चुके हैं, मूसा के शब्दों[५००] से बाईबल इस बात की पुष्टि करती है कि परमेश्वर ने यीशु के लिए[५०१] मूसा के जीवन का नमूना, जिस पथ पर यीशु भविष्य में चलेगा, पूर्व नियोजित किया।

---

[४९८] उत्पत्ति ३७:५-११

[४९९] व्यवस्थाविवरण ३४:६

[५००] व्यवस्थाविवरण १८:१८-१९

[५०१] यूहन्ना ५:१९

२.१.१.२ विश्वास की नींव के पुनःस्थापन के लिये शर्त की वस्तु

मूसा का स्थान पहले के प्रमुख व्यक्तियों से, जिनको विश्वास की नींव डालने का कार्य सौंपा गया था, अलग था। हाबिल, नूंह और अब्राहम की तरह, मूसा को प्रतीकात्मक भेंट चढ़ाने की आवश्यकता नहीं थी। बल्कि, वह केवल परमेश्वर के वचन की आज्ञाकारिता के बल पर, *शैतान से अलग होने की चालीस के विधान* को पूरा करते हुए, विश्वास की नींव पुनः स्थापित कर सकता है।[५०२]
इस अंतर के तीन कारण हैं।

पहला, मूसा—हाबिल, नूंह और इज़हाक द्वारा स्थापित की हुई तीन सफल प्रतीकात्मक भेंट की नींव पर खड़ा था। उन्होंने प्रतीकात्मक भेंट के आधार पर दैवी योजना संपन्न की थी।

दूसरा, प्रतीकात्मक भेंट के लिए शर्त की वस्तुएं रखी जातीं थीं जो वचन के स्थानापन्न के लिए आवश्यक थीं, क्योंकि पतन के समय पहले मानव पूर्वजों ने परमेश्वर का वचन खो दिया था, इसलिए लोग परमेश्वर का वचन सीधे प्राप्त करने में सक्षम नहीं थे। अतः, पुनरुद्धार की नींव डालने की दैवी योजना के युग के दौरान (आदम से अब्राहम तक के युग में), विश्वास की नींव डालने के लिए शर्त की वस्तुएं बलिदान के रूप में भेंट की जाती थीं। तथापि, मूसा के समय यह युग समाप्त हो गया। मानवता ने एक नए युग में प्रवेश किया, पुनरुद्धार की दैवी योजना का युग (पुराने नियम का युग), जब वे एक बार फिर परमेश्वर का वचन सीधे प्राप्त कर सकते हैं। इस प्रकार, अब विश्वास की नींव डालने के लिए प्रतीकात्मक भेंट चढ़ाने की कोई आवश्यकता नहीं थी।

तीसरा, आदम के परिवार से आरंभ हुई दैवी योजना बार-बार प्रवर्धित हुई थी, इसलिए, दैवी अवधियाँ जो शैतान ने दूषित कर दी थीं उन्हें पुनःस्थापित करने के लिए विशेष क्षतिपूर्ति की शर्तों की आवश्यकता थी। जब नूंह विश्वास की नींव डाल रहा था, तो उसे जहाज़ में रहते हुए शैतान से अलग होने के लिए चालीस के विधान के माध्यम से पारित होना आवश्यक था। अब्राहम, पिछले चार सौ वर्ष की अवधि बहाल करने के बाद ही विश्वास की नींव डालने के लिए प्रतीकात्मक भेंट चढ़ा सका, और इस तरह वह शैतान से अलग होने के चालीस के विधान की नींव पर खड़ा हुआ। इस्राएलियों को शैतान से अलग होने के चालीस के विधान को पूरा करने के लिए मिस्र में चार सौ वर्ष गुलामी के दुःख का सामना करना पड़ा, और इस तरह अब्राहम की ग़लती के कारण विश्वास की नींव को, जिसपर शैतान ने दावा किया था, पुनः स्थापित किया। इसी तरह, पुनरुद्धार की दैवी योजना के युग में कोई भी प्रमुख व्यक्ति विश्वास की नींव डाल सकता था यदि वह शैतान से अलग होने के चालीस के विधान को पूरा करने पर, परमेश्वर के वचन की पुष्टि करते हुए, दृढ़ता से खड़ा रहे, अतएव, उसके एवज़ में अब शर्त की वस्तु की

---

[५०२] वस्तुतः. इस पारिभाषिक शब्द को “शैतान से अलग होने की चालीस-दिन की नींव” पढ़ा जा सकता है । स्पष्टता के लिए, हम इसे “शैतान से अलग होने के चालीस का विधान” निम्नलिखित कारणों से कहते हैं। पहला, "चालीस दिन" नूंह की बाढ़ का ज़िक्र करता है जो पहले पहल इस शर्त के लिए रखा गया था (प्रति-संदर्भ नींव २.१.२), और इसे पूरा करने की आवश्यक अवधि के लिए नहीं, जिसे ४० वर्ष या यहाँ तक कि ४०० वर्ष भी लग सकते हैं। दूसरा, हालांकि परिणाम स्वरूप एक नींव डाली गई है, यह व्याख्यान इस पारिभाषिक शब्द का उपयोग एक निश्चित लंबाई की व्यवस्था पर चर्चा करने के लिए करता है।

कोई आवश्यक नहीं रहती।

२.१.२ वास्तविक नींव

दैवी योजना के युग में पुनरुद्धार की नींव खड़ी करने के लिये, परमेश्वर ने परिवार की वास्तविक नींव रखने का कार्य किया। पुनरुद्धार की दैवी योजन के युग में प्रवेश करने पर, परमेश्वर ने राष्ट्रीय वास्तविक नींव खड़ी करने का कार्य किया। चूँकि मूसा, इस्राएलियों के लिये परमेश्वर के स्थान पर था और यीशु का प्रतिनिधित्व करता था, जब वह विश्वास की राष्ट्रीय नींव डाल रहा था इस्राएलियों के लिए वह माता-पिता के स्थान पर था। साथ-साथ, मूसा एक नबी भी था जिसका मिशन यीशु के लिए रास्ता तैयार करना था। इसलिए, वह यीशु के समक्ष, जो सच्चे माता पिता के रूप में आने वाला था, बच्चे के स्थान पर था, इसलिए, इस्राएलियों के संबंध से मूसा राष्ट्रीय वास्तविक नींव के लिये प्रमुख व्यक्ति के रूप में हाबिल के स्थान पर खड़ा था।

हमें स्मरण है कि हाबिल ने आदम की जगह माता पिता के स्थान से प्रतीकात्मक भेंट चढ़ाई और इस तरह वह एक बच्चे की हैसियत से वास्तविक भेंट चढ़ाने का हकदार था। इसी प्रकार, मूसा माता पिता और बच्चे दोनों पदों में खड़ा था। जब उसने क्षतिपूर्ति के माध्यम से विश्वास की नींव पुनः स्थापित की वह माता-पिता के स्थान पर खड़ा था। फलस्वरूप उसने वास्तविक नींव के लिए हाबिल का स्थान अधिकार में ले लिया, जिसके लिए वह बच्चे के स्थान पर खड़ा हुआ था।

एक बार जब मूसा ने हाबिल का स्थान सुरक्षित कर लिया, तो इस्राएली जो कैन के स्थान पर खड़े थे, उन्हें मूसा की आज्ञाकारिता में रहकर पतित प्रवृत्ति निकालने के लिये राष्ट्रीय क्षतिपूर्ति शर्त पूरी करनी चाहिए थी। ऐसा करने के बाद वे राष्ट्रीय वास्तविक नींव डाल सकेंगे।

२.१.३ मसीह के लिये नींव

मूसा को क्षतिपूर्ति के माध्यम से राष्ट्रीय विश्वास की नींव पुनः स्थापित करनी थी, और मूसा के नेतृत्व के तहत इस्राएलियों को क्षतिपूर्ति के माध्यम से राष्ट्रीय वास्तविक नींव पुनः स्थापित करनी चाहिए थी। यह मसीह के लिये राष्ट्रीय नींव का गठन और एक स्वतंत्र राष्ट्र के लिए आधार होती, जहाँ मसीह आ सकता था। तब इस्राएली लोग मसीह को ग्रहण करते, उसके द्वारा पुनर्जीवित होते, अपने मूल पाप से शुद्ध किए जाते, और परमेश्वर के हृदय के साथ एकजुट होकर अपनी मूल प्रवृत्ति बहाल कर लेते। इस तरह, वे पूर्ण मूर्तरूप बनने का अंतिम लक्ष्य प्राप्त कर लेते।

२.२ मूसा के नेतृत्व के अंतर्गत कानन की प्राप्ति के लिए राष्ट्रीय कार्यवाहियाँ

मूसा इज़राएलियों को चमत्कार और चिह्नों के साथ, मिस्र, शैतानी दुनिया के बाहर लाया, उन्हें लाल सागर पार करने में उनकी अगुआई की, और कनान, प्रतिज्ञा के देश में प्रवेश करने से पहले उसने

उन्हें जंगल में घुमाया। यह उस कार्यवाही की पूर्वलक्षणना करती है जिसपर यीशु को एक दिन ईसाइयों का, जो दूसरा इस्राएल कहलाता है, नेतृत्व करना होगा। चमत्कार और चिह्नों के साथ, यीशु ईसाइयों को पाप के जीवन से बाहर ले आएगा और उन्हें बुराई के कष्टमय समुद्र के पार सुरक्षित लाएगा। वह उन्हें जीवन के पानी से विहीन रेगिस्तान से निकाल कर, और परमेश्वर की प्रतिज्ञा के अनुसार अदन की वाटिका में लाने में उनकी अगवाई करेगा। जिस तरह से मूसा के नेतृत्व में कनान की प्राप्ति के लिए राष्ट्रीय कार्यवाही इस्राएलियों के अविश्वास के कारण तीन कार्यवाहियों में प्रवर्द्धित हो गई थी, इसी तरह यीशु के नेतृत्व में यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले और उस समय के इस्राएली लोगों के अविश्वास के कारण कनान की प्राप्ति की विश्वव्यापी कार्यवाही का बेड़ा तीन बार उठाया गया। अधिक ब्योरे से बचने के लिए, मूसा की कार्यवाही और यीशु की कार्यवाही के बीच एक करीबी तुलना यहाँ नहीं की जा सकती, फिर भी, जब इस अनुभाग की तुलना अगले के साथ की जाएगी तो समानताएं स्पष्ट हो जाएंगी।

२.२.१ कानन की प्राप्ति के लिए पहली राष्ट्रीय कार्यवाही

२.२.१.१ विश्वास की नींव

अब्राहम की गलती के कारण इस्राएलियों के लिए आवश्यक क्षतिपूर्ति की अवधि मिस्र में गुलामी के चार सौ वर्षों के बाद पूरी हुई। मूसा को विश्वास की नींव पुनः स्थापित करने के लिए और इस्राएलियों को मिस्र से बाहर ले जाने के नेतृत्व के योग्य प्रमुख व्यक्ति बनने के लिए, उसे व्यक्तिगत तौर पर चार सौ वर्ष की राष्ट्रीय क्षतिपूर्ति अवधि मिरास में प्राप्त करनी थी और शैतान से अलग होने के लिए चालीस के विधान को पूर्ण करना आवश्यक था। इसके अतिरिक्त, मूसा को क्षतिपूर्ति के माध्यम से संख्या चालीस पुनः स्थापित करना पड़ी, जो पतन से पहले के आदम को विश्वास की नींव की स्थापना करके पूरा करना चाहिए था।[५०३] इन उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए, मूसा फिरौन के महल यानी शैतानी दुनिया के केंद्र में लाया गया, और वहाँ उसने चालीस वर्ष बिताए।[५०४]

महल में मूसा ने अपनी माँ के द्वारा शिक्षा पाई, जो वहाँ किसी के जाने बिना उसकी दाई के काम के लिए रखी गई थी। उसने छुपे-चुपके उसे चुने हुए लोगों से संबंधित गौरव और चेतना से पूरित किया। महल के जीवन के सुख आराम के बावजूद भी मूसा ने इस्राएल की वंशावली के लिए कट्टर वफादारी और निष्ठा बनाए रखी। चालीस वर्ष के बाद, उसने महल छोड़ दिया, “पाप के आमोद-प्रमोद के बजाए उसने परमेश्वर के चुने हुए लोगों के साथ दुर्व्यवहार सहना स्वीकार किया।”[५०५] इस तरह, फिरौन के महल में अपने जीवन के चालीस वर्षों के दौरान, मूसा ने शैतान से अलग होने की चालीस की व्यवस्था को पूरा किया और विश्वास की नींव पुनः स्थापित की।

[५०३] प्रति-संदर्भ—काल २.४

[५०४] प्रेरितों ७:२३

[५०५] इब्रानियों ११:२५

२.२.१.२ वास्तविक नींव

मूसा माता पिता और बच्चों दोनों स्थानों में खड़ा था। जब उसने विश्वास की नींव डाली, तो उसने वास्तविक नींव के लिए हाबिल का स्थान भी सुरक्षित कर लिया। इस्राएली लोग जो कैन के स्थान में थे, उन्हें विश्वास के साथ मूसा की आज्ञा पालन करके उसके पीछे चलना चाहिए था, मूसा से परमेश्वर की इच्छा विरासत में प्राप्त करके अच्छाई बढ़ाने से वे पतित प्रवृत्ति निकालने के लिए राष्ट्रीय क्षतिपूर्ति शर्त को पूरा कर लेते और राष्ट्रीय वास्तविक नींव खड़ी कर लेते। इस्राएली लोगों के मिस्र छोड़ने के समय से लेकर उनके कनान प्रतिज्ञा के देश में प्रवेश करने तक, उनको मूसा के पीछे चल कर वास्तविक नींव खड़ी कर लेनी चाहिए थी।

मूसा का मिस्री की हत्या करने की घटना से परमेश्वर ने व्यवस्था की कार्यवाही का आरंभ किया। जब मूसा ने एक मिस्री सरदार को अपने भाइयों में से एक के साथ दुर्व्यवहार करते देखा, तो अपने लोगों के लिए उसके दिल के दहकते हुए प्रेम से भड़क कर उसने उस आदमी को मार डाला।[५०६] एक तरह से परमेश्वर का पृथ्वी पर अपने लोगों को दुख उठाते देखने से यह उसके हृदय के जलते हुए क्रोध की अभिव्यक्ति थी।[५०७] उस पल में इस्राएली लोग मूसा के साथ एकजुट होते हैं या नहीं, इससे यह निश्चित हो जात कि यदि वे सफलतापूर्वक कनान वापस जाने की कार्यवाही शुरु करेंगे।

जब मूसा ने उस मिस्री को घात किया, तो परमेश्वर ने इस कार्य को निम्नलिखित प्राप्ति के लिए इस्तेमाल किया: पहला, महा दूत ने पहले मानव पूर्वजों को पतित होने के लिए और कैन को हाबिल की हत्या के लिए प्रेरित किया; यह वह तथ्य थे जिनके द्वारा शैतान ने बड़े बेटे के स्थान से पापी इतिहास का विकास अपने वश में किया। इसलिए, इससे पहले कि परमेश्वर कनान की प्राप्ति के लिए दैवी योजना शुरू करे, परमेश्वर की ओर खड़े हुए किसी व्यक्ति को किसी अन्य पर, जो शैतान की तरफ से जेष्ठ बेटे के स्थान पर हो, उस पर प्रबल होकर इस शर्त को क्षतिपूर्ति के द्वारा पूरी करके बहाल करना चाहिए। दूसरा, यह काम मूसा का फिरौन के महल के साथ जुड़े बाकी सारे बंधनों को पूरी तरह से काटेगा और उसे ऐसी स्थिति में डाल देगा जहां से वह फिर कभी न लौट सके। अंत में, यह परमेश्वर की इच्छा थी कि वह इस काम के द्वारा, इस्राएलियों को यह दिखा सके कि मूसा इस्राएली देशभक्त है और उन्हें मूसा पर भरोसा रखने के लिए प्रेरित करे। जैसा कि हम देखेंगे, कि इन तुलनीय कारणों से कनान (परमेश्वर का राज्य) की प्राप्ति के लिए दूसरी राष्ट्रीय कार्यवाही में परमेश्वर ने मिस्रियों के सारे पहलौठों और उनके पशुओं को क्यों मारा।

इस्राएली लोगों का, मूसा को मिस्री की हत्या करते हुए देखने से, जो मूसा का इज़राएलियों के प्रति घनिष्ठ प्रेम को दिखाती है, इसका उनपर गहरा असर होना चाहिए था। यदि उन्होंने ऐसा महसूस किया होता तो वे मूसा का सम्मान करते और बड़ी सरगर्मी के साथ उसके पीछे चलते। तब मूसा के

---

[५०६] निर्गमन २:११-१२

[५०७] निर्गमन ३:७

नेतृत्व में परमेश्वर उन्हें सीधे कनान देश में ले गया होता, जहाँ उन्होंने वास्तविक नींव स्थापित कर ली होती। वास्तव में, उन्हें लाल सागर पार करके सिनाई के रेगिस्तान में भटकना नहीं पड़ता, परंतु पलिश्तियों के देश से होकर सीधे कनान का मार्ग पकड़ लिया होता। इक्कीस दिन के मार्ग से उन्होंने हारान में याकूब के इक्कीस वर्षों को बहाल कर लिया होता।

बाद में, दूसरी राष्ट्रीय कार्यवाही के समय परमेश्वर का इस्राएलियों पर भरोसा न करने का कारण बनता था, क्योंकि पिछली बार वे मूसा का अनुसरण करने में विफल हुए थे इस कारण पहली राष्ट्रीय कार्यवाही निष्फल हो गई थी। जैसा कि लिखा है: “जब फिरौन ने लोगों को जाने की आज्ञा दे दी, तब यद्यपि पलिश्तियों के देश से होकर जो मार्ग जाता है वह छोटा था, तो भी परमेश्वर ने यह सोचकर उनको उस मार्ग से नहीं ले गया कि कहीं ऐसा न हो कि जब यह लोग लड़ाई देखें तब पछताकर मिस्र को लौट आएं।”[५०८] कनान की प्राप्ति के लिए, दूसरी राष्ट्रीय कार्यवाही के दौरान परमेश्वर लोगों को लाल सागर के पार जंगल के रास्ते घुमा कर इसलिए ले गया, क्योंकि उसे डर था कि कहीं इस्राएली फिर से विश्वासघाती न हो जाएं और यात्रा पूरी किए बिना मिस्र वापस लौट जाएं।

२.२.१.३ कानन की प्राप्ति (परमेश्वर के राज्य की पुनःस्थापना) के लिए पहली राष्ट्रीय कार्यवाही की विफलता

यदि इस्राएली (कैन) लोग दिल से मूसा (हाबिल) के आज्ञाकारी बनकर उसका अनुगमन करते और उसके साथ कनान जाते तो वे पतित प्रवृत्ति निकालने के लिए राष्ट्रीय क्षतिपूर्ति शर्त को पूरा कर लेते और वास्तविक नींव खड़ी कर लेते। तथापि, इसके विपरीत, जब उन्होंने मूसा को मिस्री को मारते देखा, तो उन्होंने उसे गलत समझा और उसके बारे में बुरी बातें कहीं:

> दूसरे दिन बाहर जाकर उसने देखा कि दो इब्री पुरुष आपस में मारपीट कर रहे हैं। उसने अपराधी से कहा, “तू अपने भाई को क्यों मारता है?” उसने कहा, “किसने तुझे हम लोगों पर हाकिम और न्यायी ठहराया है, जिस भाँति तूने मिस्री को घात किया, उसी भाँति क्या तू मुझे भी घात करना चाहता है?” तब मूसा यह सोच कर डर गया “निश्चय यह बात खुल गई है” जब फिरौन ने यह बात सुनी तब उसने मूसा को घात करने की युक्ति की। निर्गमन २:१३-१५

फिरौन से बच कर भागने के अलावा मूसा के पास और कोई चारा नहीं था, अनिच्छापूर्वक उसे इस्राएलियों को छोड़ कर मिद्यान के जंगल में भाग जाना पड़ा। वास्तविक नींव टूट कर बनने से रह गई, और मूसा के नेतृत्व में कनान की प्राप्ति करने के लिए इस्राएलियों की कार्यवाही दूसरी और अंततः तीसरी बार दोहराई गई।

---

[५०८] निर्गमन १३:१७

२.२.२ कानन की प्राप्ति के लिए दूसरी राष्ट्रीय कार्यवाही

२.२.२.१ विश्वास की नींव

कनान की प्राप्ति के लिए पहली राष्ट्रीय कार्यवाही जब इस्राएलियों के अविश्वास के कारण असफल होकर समाप्त हो गई, तो शैतान ने है मूसा के जीवन के चालीस वर्ष, जो उसने फिरौन के महल में बिताए थे जिसके दौरान उसने विश्वास की नींव डाली थी, उन पर दावा कर लिया। इसलिए, कनान की प्राप्ति के लिए मूसा को नए सिरे से विश्वास की नींव डालनी पड़ी, और दूसरी राष्ट्रीय कार्यवाही शुरू करने के लिए उसे महल में खोए हुए चालीस वर्ष की अवधि क्षतिपूर्ति के माध्यम से दोबारा पूरी करनी पड़ी। यह मिद्यान के जंगल में मूसा के चालीस वर्ष के निर्वासन का उद्देश्य था।[५०१] मूसा पर उनके अविश्वास के कारण दंड के रूप में इन चालीस वर्षों की अवधि के दौरान, इस्राएलियों का जीवन मिस्र में और भी दुखी हो गया।

इन चालीस वर्षों के दौरान, जो उसने मिद्यान के जंगल में बिताए, मूसा ने शैतान से अलग होने के लिए दूसरा चालीस का विधान पूरा किया। यहाँ उसने कनान की प्राप्ति के लिए विश्वास की नींव, जो दूसरी राष्ट्रीय कार्यवाही को शुरू करने के लिए आवश्यक थी, पुनः स्थापित की। तब परमेश्वर मूसा को प्रकट हुआ, और कहा:

> “मैंने अपनी प्रजा के लोग जो मिस्र में हैं, उनके दु:ख को निश्चय देखा है; और उनकी जो चिल्लाहट परिश्रम कराने वालों के कारण होती है उसको भी मैंने सुना है और उनकी पीड़ा पर मैंने चित्त लगाया है; इसलिये अब मैं उतर आया हूँ कि उन्हें मिस्रियों के वश से छुड़ाऊँ, और उस देश से निकाल कर एक अच्छे बड़े देश में, जिस में दूध और मधु की धाराएँ बहतीं हैं, अर्थात कनानी, हित्ती, एमोरी, परिज्जी, हिब्बी, और यबूसी लोगों के स्थान में पहुँचाऊँ। इसलिए अब सुन, इज़राएलियों की चिल्लाहट मुझे सुनाई पड़ी है, और मिस्रियों का अन्धेर करना भी मुझे दिखाई पड़ा है। इसलिए आ, मैं तुझे फिरौन क पास भेजता हूँ कि तू मेरी इस्राएली प्रजा को मिस्र से निकाल ले आए।” निर्गमन ३:७-१०

२.२.२.२ वास्तविक नींव

मूसा का मिद्यान के जंगल में विश्वास की नींव पुनः स्थापित कर लेने से उसने हाबिल के स्थान को भी सुरक्षित कर लिया। तदनुसार, जैसा कि कनान की प्राप्ति की पहली राष्ट्रीय कार्यवाही में यह संभाव्य था, यदि इस्राएली लोग, जो कैन के स्थान पर थे, बिना किसी प्रश्न के विश्वास और आज्ञाकारिता के साथ मूसा का अनुसरण करते, तो वे प्रतिज्ञा के देश, दूध और मधु के देश में प्रवेश कर लते। ऐसा करने से, वे पतित प्रवृत्ति को निकालने की क्षतिपूर्ति शर्त को पूरा कर लेते और वास्तविक नींव स्थापित

---

[५०१] प्रेरितों ७:३०

कर लेते।

जब मूसा ने एक मिस्री की हत्या की, परमेश्वर ने कनान की प्राप्ति की पहली राष्ट्रीय व्यवस्था के लिए काम किया। उसी तरह, कनान की प्राप्ति की दूसरी राष्ट्रीय व्यवस्था का काम शुरू करने के लिए, परमेश्वर ने मिस्रियों पर प्रबल होने के लिए मूसा को तीन चिह्न और दस महामारी का दान प्रदान किया। जैसा कि पहले भी स्पष्ट किया गया है, परमेश्वर का मूसा को शैतानी पक्ष पर प्रहार करने की अनुमति देने के कारण थे: पहला, क्षतिपूर्ति के माध्यम से जेष्ठ पुत्र का स्थान पुनः स्थापित करना था, जो शैतान ने दूषित किया था; दूसरा, इज़राएलियों का मिस्रियों के साथ लगाव काटने के लिए; तीसरा, इज़राएलियों को यह बताने के लिए कि मूसा परमेश्वर के द्वारा भेजा गया था।[५१०] मूसा का मिस्री पर प्रहार करने का एक और भी कारण था। यद्यपि, इस्राएली लोगों ने पहले से ही मिस्र में दास के रूप में चार सौ वर्ष की क्षतिपूर्ति अवधि को पूरा किया था, उनको और तीस वर्षों की पीड़ा का दुख भोगना था।[५११] परमेश्वर ने उनका रोना और कराहना सुना और उन को दया के साथ उत्तर दिया।[५१२]

परमेश्वर ने मूसा और हारून को तीन सामर्थ्य प्रदान किए थे जो यीशु के कामों का पूर्वाभास करते हैं। पहला सामर्थ्य, जब परमेश्वर ने मूसा को अपनी लाठी नीचे डालने की आज्ञा दी और वह सर्प बन गई।[५१३] फिर जब हारून ने मूसा की आज्ञा पर फिरौन के सामने पहले सामर्थ्य का प्रदर्शन किया, तो फिरौन ने अपने जादूगरों को बुलाया और उन्हें अपनी लाठियाँ फेंकने के लिए कहा, और वह भी सांप बन गईं; परंतु, हारून के सर्प ने उनके सांपों को खा लिया।[५१४] यह सामर्थ्य प्रतीकात्मक रूप से यीशु के कार्यों की पूर्वलक्षणना है कि वह उद्धारकर्ता के रूप में आएगा और शैतानी दुनिया को नष्ट करेगा।

लाठी यीशु का प्रतीक है। जिस प्रकार लाठी मूसा के, जो परमेश्वर का प्रतिनिधित्व करता था, सामने चमत्कारी क्षमता प्रदर्शित करती है, यीशु भी वैसी ही सामर्थ्य के साथ आने वाला था और परमेश्वर के सामने चमत्कार के काम करने वाला था। इसके अतिरिक्त, लाठी लोगों के लिए सुरक्षा प्रदान करती है और टेकने के लिए सहारा; वह अन्याय को दण्ड देती है, और लोगों को सही रास्ते पर ले जाती है। मूसा की लाठी, यीशु का प्रतीक होकर उसके मिशन को दिखाती है जो यीशु को उसके आने पर पूरा करना है।

मूसा की लाठी का सर्प में परिवर्तन होना भी यीशु के काम का प्रतीक है। यीशु ने अपने आप की समानता सर्प से की और कहा, "और जिस रीति से मूसा ने जंगल में साँप को ऊँचे स्थान पर चढ़ाया, उसी रीति से अवश्य है कि मनुष्य का पुत्र भी ऊँचे पर चढ़ाया जाएगा।"[५१५] उसने अपने चेलों से यह भी कहा, "साँप के समान बुद्धिमान बनो।"[५१६] इससे यीशु का तात्पर्य था कि वह अच्छे ज्ञान के साँप के रूप में आया

---

[५१०] निर्गमन ४:१

[५११] निर्गमन १२:४१`

[५१२] निर्गमन २:२४-२५

[५१३] निर्गमन ४:३-९

[५१४] निर्गमन ७:१०-१२

[५१५] यूहन्ना ३:१४

[५१६] मत्ती १०:१६

है, जो पतित लोगों को अच्छाई के रास्ते पर चलने के लिए उकसाता है। इस प्रकार उसे पतन को, जो बुरे साँप ने पहले पूर्वजों को चालाकी से बहका कर करवाया था, क्षतिपूर्ति के द्वारा बहाल करना था। इसलिए, उसके शिष्यों को यीशु की बुद्धिमत्ता सीखनी थी और पापी लोगों को अच्छाई के रास्ते पर मार्गदर्शन करना था। इसके अतिरिक्त, मूसा के साँप का जादूगरों के साँपों को निगल जाना इस बात का प्रतीक है कि यीशु स्वर्गीय सर्प बन कर आएगा और शैतान को जो बुरा साँप है निगल जाएगा और नष्ट करेगा।

दूसरा सामर्थ्य जो मूसा को मिला था, परमेश्वर के आदेश पर उसने जब अपना हाथ अपनी छाती में डाला तो वह कोढ़ी बन गया। फिर परमेश्वर ने उसे आज्ञा दी कि अपना हाथ दुबारा अपनी छाती में डाल, और वह चंगा हो गया।[५१७] यह चमत्कार प्रतीकात्मक तौर पर यीशु के बारे में पहले से घोषित करता है कि वह दूसरे आदम के रूप में अपनी भविष्य की दुलहन दूसरी हव्वा के साथ, (बाद में जो पवित्र आत्मा के रूप में प्रकट हुई)[५१८] मोचन के कार्य करने के लिए आएगा। पहली बार जब मूसा ने अपनी छाती में अपना हाथ डाला था और वह कोढ़ी बन गया था, यह प्रधान दूत का हव्वा को अपनी छाती से लगाने का प्रतीक है, यह वह कर्म है जिसके कारण मानवता असाध्य पाप के साथ दागी हो गई। दूसरी बार जब मूसा ने अपनी छाती में अपना हाथ डाला और वह चंगा हो गया, यह इस बात की पूर्वलक्षणना करता है कि यीशु, सत-पिता बनकर आएगा और अपनी दुल्हन, सत-माता, को फिर से जिलाएगा, और यह कि वे मानवता को अपनी छाती से लगाकर उन्हें पुनर्जन्म देंगे, "जैसे कि मुर्गी अपने चूज़ों को अपने पंख में छिपाती है।"[५१९] तब पूर्ण पुनरुद्धार होगा।

तीसरा सामर्थ्य दिखाने के लिए, परमेश्वर ने मूसा को निर्देश दिया कि जमीन पर नील नदी का पानी डालो और यह रक्त में बदल जाएगा।[५२०] इस चिह्न का प्रतीक पानी में निहित है, एक अजीव पदार्थ, रक्त में परिवर्तित हो गया, जो सजीव पदार्थ है। पानी बाईबल का चिह्न है जो पतित लोगों[५२१] के लिए प्रयोग किया गया है, जिन में जीवन नहीं है। इस प्रकार, यह चिह्न यह पूर्वलक्षणना करता है कि यीशु और पवित्र आत्मा आएंगे और पतित मानवता को, जो जीवन से वंचित हैं, फिर से जिलाएंगे ताकि वे परमेश्वर के जीवते बच्चे बन सकें। परमेश्वर ने मूसा और हारून से यह तीन सामर्थ्य इस उद्देश्य से प्रदर्शित कराए ताकी वे उन क्षतिपूर्ति की शर्तों को प्रतीकात्मक रूप से पूरा करें, जिन पर यीशु और पवित्र आत्मा बाद में सच्चे माता-पिता के रूप में इस्राएल में आएंगे। वे मूल चार-दशा-आधार, जो शैतान के हाथ लग गई थी, पुनःस्थापित करेंगे और मानवता को अपने बच्चों के रूप में पुनर्जन्म देंगे।

जब मूसा ने, जो सुवक्ता नहीं था, परमेश्वर से पूछा कि वह किसी को उसकी ओर से बात करने

---

[५१७] निर्गमन ४:६-७

[५१८] प्रति-संदर्भ—ख्रीस्त-बोध ४:१, जब यीशु की कार्यवाही की पूर्वलक्षणना का वर्णन किया जाता है, तो कोरिया का मूलपाठ, "पवित्र आत्मा" के लिए यीशु की दुलहन का हवाला देता है। परन्तु, परमेश्वर की मूल दैवी योजना के पूरे हुए बिना, यीशु के क्रूस पर चढ़ाए जाने के बाद पवित्र आत्मा, यीशु की आत्मिक जोड़ी बन गई, जो पृथ्वी पर दुलहन लेने के बराबर है। यीशु अपनी भविष्य की दुलहन के साथ मेमने के विवाह को पूरा करेगा और वे सच्चे माता-पिता बनेंगे। स्पष्टता के लिए, जब यह लेख पृथ्वी पर यीशु की मंगेतर का हवाला देता है हम इसे "भविष्य की दुलहन" कहेंगे।

[५१९] मत्ती २३:३७

[५२०] निर्गमन ४:९

[५२१] प्रकाशितवाक्य १७:१५

के लिए ठहराए, तो परमेश्वर ने मूसा को उसका बड़ा भाई हारून[५२२] और हारून की बहिन मिरयम, जो भविष्यवक्ता थी,[५२३] दिए। यह पूर्वलक्षणना करता है कि यीशु और उसकी होने वाली दुल्हन, प्रतीकात्मक रूप से वचन के मूर्तरूप [५२४] बनकर आएंगे और मनुष्य का, जिन्होंने पतन के समय वचन खो दिया था, उनका पुनरुद्धार वचन के मूर्तरूप में करेंगे। कनान की प्राप्ति की कार्यवाही के दौरान हारून और मिरयम को मूसा की इच्छा का, जो परमेश्वर के स्थान पर था, पालन करने का मिशन दिया गया था, और कि वे उसकी ओर से लोगों का नेतृत्व करें। भविष्य में कनान की प्राप्ति के लिए यीशु और पवित्र आत्मा, विश्वव्यापी कार्यवाही में परमेश्वर की इच्छा का पालन करेंगे और हमारे पापों के मोक्ष का मिशन पूरा करेंगे।

परमेश्वर के आदेश के अनुसार मूसा फिरौन से मिलने के लिए गया। रास्ते में, यहोवा उसके सामने प्रकट हुआ और उसे मार डालना चाहा। मूसा मरने से बच गया जब उसकी पत्नी सिपोरा ने अपने बेटे का खतना किया।[५२५] उसने इस परीक्षण पर प्रबल होने में मूसा की मदद की और अपने परिवार को बचाया। इस खतने के कारण इस्राएलियों का मिस्र से मुक्त होना संभव हुआ। यह पहले से प्रगट करता है कि जब यीशु आएगा, परमेश्वर का मोक्ष का काम पूरा नहीं हो सकेगा जब तक लोगों का आंतरिक खतना न हो जाए।

आइए हम ख़तने के गहरे महत्व की जाँच करें। पहले मानव पूर्वजों का पतन शैतान के साथ यौन संबंध से हुआ, उन्होंने पुरुष लिंग के द्वारा मौत का ख़ून विरासत में पाया। पतित लोगों का परमेश्वर के बच्चों के रूप में पुनरुद्धार के लिए, परमेश्वर ने क्षतिपूर्ति की शर्त के रूप में खतना के अनुष्ठान की स्थापना की: पुरुष लिंग के सामने की चमड़ी काट कर उसमें से ख़ून को बहने देना। खतना करना मौत के खून को निकालने का महत्व रखता है। खतना पुरुष के प्रभुत्व के अधिकार को पुनः स्थापित करने और परमेश्वर का लोगों को अपने सच्चे बच्चों के रूप में बहाल करने की प्रतिज्ञा को भी संकेत करता है। तीन प्रकार के ख़तने होते हैं: हृदय का ख़तना[५२६], लिंग की ऊपरी चमड़ी का ख़तना[५२७], और सर्व वस्तुओं का ख़तना[५२८]।

दस विपत्तियों के माध्यम से परमेश्वर ने मूसा के द्वारा इस्राएलियों को मिस्र से स्वतंत्र किया[५२९]। यह भी, पूर्वलक्षणना करता है कि भविष्य में यीशु चमत्कार और चिह्न के साथ आएगा और परमेश्वर के चुने हुए लोगों को बचाएगा। जब याकूब इक्कीस वर्ष तक हारान में दुख और कठिनाइयाँ उठा रहा था,

---

522 निर्गमन ४:१४
५२३ निर्गमन १५:२०
५२४ यूहन्ना १:१४
५२५ निर्गमन ४:२४-२६
५२६ व्यवस्थाविवरण १०:१६
५२७ उत्पत्ति १७:१०
५२८ लैव्यव्यवस्था १९:२२-२३
५२९ निर्गमन ७:१४, १२:३६

तब लाबान ने याकूब को दस बार धोखा दिया और उसे उसकी मजदूरी नहीं दी[५३०]। इसी तरह, मूसा की कार्यवाही जो याकूब की कार्यवाही के नमूने के अनुकूल थी, फिरौन ने न केवल पूर्व निर्धारित समय की अवधि से अधिक समय तक इस्राएलियों को पीड़ित किया, पर उसने उनको स्वतंत्र करने का झूठा वादा करके दस बार धोखा दिया। इसके प्रतिफल के रूप में, परमेश्वर फिरौन पर दस विपत्तियों के साथ प्रहार करने का हकदार था। उनमें नौवें और दसवें क्लेश का विशेष महत्व था।

नौवें क्लेश में, परमेश्वर ने तीन दिन तक बड़े अंधकार से मिस्र को ढांका, जबकि उन स्थानों में जहाँ इज़राएली लोग रहते थे प्रकाश था।[५३१] यह पूर्वाभासना करता है कि जब यीशु आएगा, शैतान के दायरे में अंधेरा छाएगा जबकि परमेश्वर के लोगों पर प्रकाश चमकेगा, और दोनों पक्ष एक दूसरे से अलग किए जाएंगे। दसवें क्लेश में परमेश्वर ने मिस्री लोगों के और उनके पशुओं के सभी पहलौठों को मार डाला, परन्तु इज़राएलियों को निर्देश दिया गया कि वे अपने घरों के दरवाजों और चौखटों को मेम्ने के रक्त से रंग दें ताकि मौत का दूत उन पर से हानि किए बिना गुज़र जाए। मिस्र के पहलौठे, शैतान की ओर के थे और कैन के स्थान में थे। परमेश्वर ने उनको मारा ताकि वह इज़राएली लोगों को, जो दूसरे बेटे हाबिल के स्थान पर थे, जेष्ठ बेटे के स्थान पर पुनः स्थापित कर सके। शैतान ने जेष्ठ बेटे का स्थान जब्त कर लिया था और इस तरह इतिहास में अगुआई कर रहा था और परमेश्वर को पीछे कर दिया था।[५३२] यह विपत्ति पूर्वलक्षणना करती है कि जब यीशु आएगा शैतान का पक्ष नाश होगा, जबकि परमेश्वर का पक्ष, जो दूसरे बेटे के स्थान पर है, यीशु के ख़ून के मोचन के द्वारा बचाया जाएगा। मूसा मिस्र से प्रचुर मात्रा में धन लाया था।[५३३] यह यीशु के आने पर सर्व वस्तुओं के जीर्णोद्धार की पूर्वलक्षणना करता है।

प्रत्येक क्लेश के बाद, परमेश्वर ने फिरौन के हृदय को कठोर किया।[५३४] इसके अनेक कारण थे। पहला, बारंबार अपनी शक्तियों को प्रकट करके, परमेश्वर इज़राएली लोगों को दिखाना चाहता था कि वह परमेश्वर है।[५३५] दूसरा, परमेश्वर चाहता था कि फिरौन इज़राएलियों को रोकने का भरसक प्रयास करे इससे पहले कि उन्हें छोड़ने के लिए वह मजबूर हो जाए; तब फिरौन को यह एहसास होगा कि वह कितना शक्तिहीन है और जब वे चले जाएंगे तो इस्राएलियों के प्रति उसको कोई भी लगाव बाकी न रहेगा। तीसरा, परमेश्वर यह चाहता था कि वह इज़राएलियों के दिल में फिरौन के विरुद्ध कट्टर दुश्मनी की भावनाओं को मज़बूत करे ताकि वे मिस्र के साथ सारा लगाव काट डालें।

जब मूसा ने मिस्री को मारा परमेश्वर ने कनान की प्राप्ति की पहली राष्ट्रीय कार्यवाही शुरू करने के लिए व्यवस्था का काम किया। परन्तु यह कार्यवाही रद्द हो गई जब लोगों ने मूसा का विश्वास नहीं किया। व्यवस्था की दूसरी राष्ट्रीय कार्यवाही शुरू करने के लिए, परमेश्वर ने इज़राएलियों को तीन चिह्न

---

[५३०] उत्पत्ति ३१:७

[५३१] निर्गमन १०:२१-२३

[५३२] प्रति-संदर्भ—समानांतर ७

[५३३] निर्गमन १२:३५-३६

[५३४] निर्गमन ४:२१, १०:२७

[५३५] निर्गमन १०:१-२

और दस विपत्तियाँ दिखाईं। जब इज़राएलियों ने इन चमत्कारों को देखा, तो वे मान गए कि वास्तव में परमेश्वर ने मूसा को उनके लिए नेता के रूप में भेजा है। उन्होंने मूसा पर, जो हाबिल-वर्ग का व्यक्ति था और जिसने विश्वास की राष्ट्रीय नींव डाली थी, विश्वास किया। इसलिए, अब इज़राएली लोग कनान की प्राप्ति के लिए दूसरी राष्ट्रीय कार्यवाही शुरू कर सकते हैं।

हालाँकि, पतित प्रवृत्ति निकालने के लिए इज़राएलियों को, जब मूसा चमत्कार दिखा रहा था, मूसा पर अल्पकालिक निष्ठा और आज्ञाकारिता की तुलना में अब अधिक क्षतिपूर्ति का भुगतान देने की आवश्यकता थी। क्योंकि इस शर्त को पूरी करने में उनकी पिछली विफलता के कारण शैतान ने कनान की प्राप्ति की कुल दैवी कार्यवाही पर दावा कर लिया था। अब इज़राएलियों को अपनी शेष यात्रा में मूसा का वफादार और आज्ञाकारी रहकर वह दौर पुनःस्थापित करना होगा। केवल इसी तरह से अब वे पतित प्रवृत्ति निकालने की राष्ट्रीय क्षतिपूर्ति शर्त को पूरा कर सकेंगे। जब तक वे मूसा में अटूट विश्वास के साथ जंगल की यात्रा पूरी करके कनान देश में प्रवेश न कर लें, राष्ट्रीय वास्तविक नींव स्थापित नहीं की जा सकती।

कनान की प्राप्ति के लिए दूसरी राष्ट्रीय कार्यवाही शुरू करने की व्यवस्था पहली कार्यवाही की तुलना में अधिक अनुग्रह के साथ आयोजित की गई थी। फिर भी, चूँकि कार्यवाही में प्रवर्धन उनके अविश्वास के कारण हुआ था, परिणामस्वरूप, क्षतिपूर्ति शर्त जो इज़राएलियों को अब पूरी करनी थी वह तुलना में अधिक भारी होगी। पहली कार्यवाही में, यदि इज़राएली लोगों ने मूसा का अनुगमन किया होता तो उन्हें पलिश्तियों के देश में सीधे मार्ग से ले जाया गया होता और वे इक्कीस दिन में कनान में प्रवेश कर लेते, जो हारान में याकूब के इक्कीस वर्ष की कार्यवाही की अवधि के समतुल्य होती। परन्तु, दूसरी कार्यवाही के दौरान, परमेश्वर उन्हें सीधे मार्ग से नहीं ले गया। उसे डर था कि जब उन्हें जंगी पलिश्तियों का सामना करना पड़ेगा तो हो सकता है कि वे फिर से विश्वास खो बैठें और मिस्र को लौट जाएं।[५३६] बजाय इसके, परमेश्वर उन्हें लाल सागर से पार जंगल के रास्ते लंबे चक्कर से घुमा कर ले गया। परमेश्वर ने उन्हें कनान में ले जाने के लिए इक्कीस महीनों की योजना बनाई।

इस प्रकार, इज़राएलियों ने मूसा के नेतृत्व में इक्कीस महीनों की जंगल की कार्यवाही शुरू की। आईये हम इस कार्यवाही का अध्ययन करें और जांच करें कि कनान की प्राप्ति लिए यह कार्यवाही, किस प्रकार यीशु को उसकी विश्वव्यापी कार्यवाही में मानवता का नेतृत्व करने के लिए, एक नमूने के रूप में काम आई।

जब फिरौन ने अनिच्छापूर्वक इज़राएलियों को मिस्र में बलिदान करने के लिए मूसा को अनुमति दे दी, तो मूसा ने यह कह कर और अधिक मांग की:

> "ऐसा करना उचित नहीं है; क्योंकि हम अपने परमेश्वर यहोवा के लिए मिस्रियों की घृणित वस्तु बलिदान करेंगे; और यदि हम मिस्रियों के देखते उनकी घृणित वस्तु बलिदान करें तो क्या वह हम पर पथराव न करेंगे? हम जंगल में तीन दिन के मार्ग पर जाकर अपने परमेश्वर यहोवा के

[५३६] निर्गमन १३:१७

लिए जैसा वह हम से कहेगा वैसा ही बलिदान करेंगे।" निर्गमन ८:२६-२७

मूसा ने लोगों को पूरी तरह से मिस्र छोड़ कर मिस्र के बाहर ले जाने के अभिप्राय से फिरौन को धोखा दे कर तीन दिन की मांग की।

यह तीन दिन की अवधि अब्राहम के मोरिय्याह पहाड़ पर जाने की तीन दिन की यात्रा का महत्व रखती है, जो शैतान से संबंधों को तोड़ने के लिए आवश्यक थी इससे पहले कि वह इज़हाक को बलिदान के रूप में भेंट करे। अब्राहम के समय से, दैवी कार्यवाही शुरू करने से पहले शैतान से अलग होने के लिए क्षतिपूर्ति की यह अवधि आवश्यक रही है। जब याकूब ने कनान की प्राप्ति के लिए कार्यवाही शुरू की, वहाँ भी शैतान के बंधनों को तोड़ने और लाबान को धोका देकर हारान छोड़ने के लिए तीन दिन की अवधि थी।[537] उसी तरह, मूसा ने राष्ट्रीय कार्यवाही के शुरू करने के लिए, फिरौन को धोखा देकर अपने लोगों को दासता के बंधन से मुक्त करने के अभिप्राय से तीन दिन के समय की मांग की। यीशु भी, अपने विजयी पुनरुत्थान से पहले, शैतान से अलग होने के लिए तीन दिन के माध्यम से गुज़रने के बाद ही आत्मिक पुनरुद्धार की कार्यवाही शुरू करेगा।

यहूदी तालिका के अनुसार इज़राएलियों ने, जो बाईबल के अनुसार कुछ ६००,००० गिने गए हैं, पहले महीने के पन्द्रहवें दिन पर रामसेस से प्रस्थान किया।[538] उन्होंने अपने पहले शिविर-स्थल, सुकोट तक जाने की तीन दिन की यात्रा भर परमेश्वर की इच्छा बनाए रखी। उस समय से आगे, परमेश्वर ने अपने अनुग्रह से उनका मार्गदर्शन दिन में बादल के स्तंभ और रात में आग के स्तंभ द्वारा किया।[539] बादल का स्तंभ (यांग) जिसने इस्राएल के लोगों का दिन में नेतृत्व किया वह यीशु का प्रतीक है, जो एक दिन विश्वव्यापी कार्यवाही में कनान की प्राप्ति के लिए इज़राएल के लोगों का नेतृत्व करेगा। रात में आग का स्तंभ (यिन), पवित्र आत्मा का प्रतीक है, जो ज़नाना आत्मा के रूप में उनका मार्गदर्शन करेगी।

लाल सागर के किनारे, परमेश्वर के आदेश से मूसा ने अपनी लाठी बढ़ाकर समुद्र के जल को हटा कर दो भागों में विभक्त किया; तब वह इज़राएलियों को सूखी भूमि पर से पार ले गया। मिस्री जो रथों पर उनका पीछा कर रहे थे उनपर पानी आकर बंद हो गया और वे सब पानी में डूब गए।[540] जैसा कि पहले बताया गया है कि मूसा फिरौन के सामने परमेश्वर का प्रतिनिधित्व करता था[541], और मूसा की लाठी यीशु का प्रतीक है, जो भविष्य में परमेश्वर की शक्ति का प्रदर्शन करेगा। इसलिए, यह चमत्कार यीशु के आने पर क्या होगा पूर्वलक्षणना करता है। शैतान वफादार लोगों का, जो कनान की प्राप्ति के लिए विश्वव्यापी कार्यवाही के दौरान यीशु के पीछे चलेंगे उनका पीछा करेगा, परन्तु यीशु लोहे का राजदण्ड[542]

---

[537] उत्पत्ति ३१:१९-२२

[538] निर्गमन १२:३७, गिनती ३३:३

[539] निर्गमन १३:२१

[540] निर्गमन १४:२१-२८

[541] निर्गमन ७:१

[542] प्रकाशितवाक्य २:२७, भजन संहिता २:९—लोहे का राजदण्ड का अर्थ है परमेश्वर का वचन, प्रति-संदर्भ—अंतिम दिन संबंधी उपदेश ३.२.२

उठाकर दुनिया के कष्टमय दरिया[५४३] पर प्रहार करेगा। पानी विभाजित होगा और एक सीधा रास्ता प्रगट होगा जिस पर विश्वासी लोग चलेंगे, जबकि पीछा करता हुआ शैतान नाश होगा।

इज़राएलियों ने लाल सागर पार किया और दूसरे महीने के पन्द्रहवें दिन वे सीने नामक जंगल में पहुंचे। तब से वे जिस दिन तक वे उस भूमि पर पहुंचे जहाँ उन्हें बसना था, परमेश्वर ने उन्हें मन्ना और बटेर खिलाईं।[५४४] मन्ना और बटेर यीशु का जीवन देने वाला मांस और लहू का प्रतीक है, जो कनान की प्राप्ति के लिये परमेश्वर अपनी विश्वव्यापी कार्यवाही के दौरान प्रदान करेगा। इसलिए यीशु ने कहा:

> तुम्हारे बापदादों ने जंगल में मन्ना खाया और मर गए। यह वह रोटी है जो स्वर्ग से उतरती है ताकि मनुष्य उसमें से खाए और न मरे। जीवन की रोटी जो स्वर्ग से उतरती है वह मैं हूँ। यदि कोई इस रोटी में से खाए तो सदा जीवित रहेगा; और जो रोटी मैं जगत के जीवन के लिए दुँगा वह मेरा मांस है...जब तक तुम मनुष्य के पुत्र का मास न खाओ और उसका लहू न पीओ तुम में जीवन नहीं। यूहन्ना ६:४९-५३

जब इज़राएलियों की सारी मंडली सीनै के जंगल से निकली और रपीदीम में डेरा डाला, वहाँ लोगों को पीने के लिए पानी नहीं मिला। तब परमेश्वर ने मूसा को होरेब की चट्टान को लाठी से मारने का आदेश दिया है ताकि उसमें से पानी निकले। मूसा ने ऐसा किया और लोगों को पानी पीने को मिला और वे प्यासे मरने से बच गए।[५४५] संत पौलूस ने लिखा, "वह चट्टान मसीह था।"[५४६] तदनुसार, चट्टान से पानी निकलने का चमत्कार पूर्वलक्षणना करता है कि मसीह आएगा और जीवन के पानी से सारी मानवता को बचाएगा, "परन्तु जो कोई उस जल में से पीएगा जो मैं उसे दुँगा वह फिर अनंतकाल तक प्यासा न रहेगा।"[५४७] मूसा ने जो पत्थर की दो पट्टियाँ प्राप्त की थी वे यीशु और उसकी होने वाली दुलहन की पूर्वलक्षणना करतीं हैं; चट्टान जो, पत्थरों की पट्टियों का मूल आधार थी, परमेश्वर का प्रतीक थीं। जब मूसा ने चट्टान को मारा और लोगों को पानी दिया, यह करने से मूसा ने पत्थर की पट्टियाँ प्राप्त करने के लिये नींव स्थापित की और वाचा का संदूक और निवासस्थान बना सका।

रपीदीम में यहोशू अमालेकियों के साथ लड़ा। जब भी मूसा ने अपना हाथ उठा कर रखा, इज़राएलियों की जीत हुई; और जब मूसा ने अपना हाथ नीचे किया उनको हार का सामना करना पड़ा। हारून और हूर ने मूसा को पत्थरों के एक ढेर पर बैठाया और उसके दाएं और बाएं हाथ पकड़ कर ऊपर उठा कर रखा, इस प्रकार यहोशू अमालेकियों के राजा और उसके सैनिकों को परास्त करने में सक्षम हुआ।[५४८] यह भी, यीशु के आने पर क्या होगा, पूर्वाभासना करता है। यहोशू विश्वासियों का प्रतीक है, अमालेकी शैतानी दुनिया के प्रतीक हैं और हारून और हूर यीशु और पवित्र आत्मा के प्रतीक हैं। हारून

---

[५४३] बाईबल, पानी पापी संसार का प्रतीक है, बताती है। (प्रकाशितवाक्य १७:१५) इसलिए यह संसार को कष्टमय दरिया का नाम देती है
[५४४] निर्गमन १६:१३-३५
[५४५] निर्गमन १७:६
[५४६] १ कुरिंथियों १०:४
[५४७] यूहन्ना ४:१४
[५४८] निर्गमन ११७:१०-१३

और हूर ने मूसा का हाथ पकड़ कर रखा था ताकि यहोशू अमालेकियों को परास्त कर सके, यह पूर्वलक्षणना करता है कि वफादार लोग, जो ट्रिनिटी यानी परमेश्वर, यीशु और पवित्र आत्मा, में विश्वास विश्वास रखते हैं, शैतान को, जो उनका विरोध करता है, परास्त करेंगे।

२.२.२.३ पुनरुद्धार की दैवी योजना और निवासस्थान

इज़राएलियों ने पत्थर की पट्टियाँ, निवासस्थान और वाचा का संदूक प्राप्त किया। आइये हम पहले यह जांच करते हैं कि यह उन्होंने कैसे प्राप्त किए। अमालेकियों को जीतने के बाद इज़राएली लोग तीसरे महीने के शुरू में, सीनै के जंगल में पहुँचे।[५४९] मूसा ने तब ७० पुरनिए साथ में लिये और परमेश्वर से मिलने के लिए सीनै के पहाड़ पर चढ़ गए। मूसा अकेले पहाड़ की शिखर पर बुलाया गया, जहां परमेश्वर ने उसे पत्थर की पट्टियों पर खुदी दस आज्ञाएं प्राप्त करने के लिए ४० दिनों के लिए उपवास रखने का आदेश दिया।[५५०] अपने उपवास के दौरान मूसा ने परमेश्वर से वाचा के संदूक और निवासस्थान के विषय में निर्देश प्राप्त किया।[५५१] जब ४०-दिन का उपवास समाप्त हो गया, मूसा को पत्थर की दो पट्टियों पर परमेश्वर की उंगली से लिखीं हुई दस आज्ञाएं मिलीं।[५५२]

जब मूसा पत्थर की दो पट्टियों के साथ सिनाई पहाड़ से नीचे उतरा और इज़राएली लोगों के पास आया तो उसने उन्हें एक सोने के बछड़ा की पूजा करते हुए पाया। मूसा की अनुपस्थिति में उन्होंने हारून को यह बनाने के लिए कहा, और जब वह बना चुका, तो लोगों ने यह घोषणा की कि यह वही परमेश्वर है जो उन्हें मिस्र के बाहर लेकर आया है। यह देखकर मूसा का क्रोध भड़क उठा। उसने पत्थर की पट्टियों को पहाड़ के नीचे फेंक कर तोड़ दिया।[५५३] मूसा को परमेश्वर फिर से दिखाई दिया और उससे कहा कि पत्थर की पट्टियों की पहली जोड़ी के समान एक और जोड़ी बना ले और उससे यह वादा किया है कि वह उन पर फिर से दस आज्ञाएं लिखेगा। मूसा पहाड़ पर परमेश्वर के सामने प्रस्तुत हुआ और दूसरी बार फिर ४० दिन का उपवास रखा। परमेश्वर ने मूसा को दस आज्ञाएं बोलीं और मूसा ने उन्हें पट्टियों पर लिखा।[५५४] मूसा उन पट्टियों को इज़राएलियों के पास फिर से लाया। इस बार उन्होंने मूसा का सम्मान किया। उसके निर्देशों के अनुसार उन्होंने वाचा का संदूक बनाया और निवासस्थान का निर्माण किया।[५५५]

२.२.२.३.१ पत्थर की पट्टियों, निवासस्थान और वाचा के संदूक का महत्व और उद्देश्य

पत्थर की पट्टियों का क्या महत्व था? मूसा का पत्थर की पट्टियों पर खुदा हुआ परमेश्वर का

---

[५४९] निर्गमन १९:१
[५५०] निर्गमन २४:९-१०. १८
[५५१] निर्गमन २५:३१
[५५२] निर्गमन ३१:१८
[५५३] निर्गमन ३२:१-१९
[५५४] निर्गमन ३४:१, २७-२८
[५५५] निर्गमन ३५:४०

वचन प्राप्त करना दैवी योजना के पुनःस्थापन की नींव डालने के युग की समाप्ति दर्शाती है, जब पतित लोग परमेश्वर से केवल बलिदान के माध्यम से ही संबंध रख सकते थे। अब वे दैवी योजना के पुनःस्थापन के इस युग की शुरुआत में परमेश्वर के साथ, उसके प्रगट किए हुए वचन के माध्यम से, संबंध रख सकेंगे। यह पहले बताया गया था कि यदि आदम और हव्वा, जिनकी सृष्टि वचन के द्वारा की गई थी, पूर्णता प्राप्त कर लेते तो वे वचन के मूर्तरूप बन जाते। परन्तु वे पतित हो गए और उन्होंने वचन गंवा दिया।[५५६] मूसा ने शैतान से अलग होने के लिए चालीस दिन की अवधि के अंत में परमेश्वर के वचन से खुदी हुई दो पट्टियाँ प्राप्त कीं। यह आदम और हव्वा के वचन का मूर्तरूप बनने की प्रतीकात्मक बहाली का महत्व रखता है। तदनुसार, यह दो पट्टियाँ आदम और हव्वा की बहाली का प्रतीक हैं, और यीशु और उसकी होने वाली दुलहन का भी प्रतीक हैं जो वचन के मूर्तरूप के रूप में आने वाले थे। बाईबल में मसीह श्वेत पत्थर का प्रतीक बताया गया है[५५७], और लिखा है “वह चट्टान मसीह था”[५५८]। पत्थर की पट्टियाँ यीशु और उसकी होने वाली दुल्हन, और स्वर्ग और पृथ्वी का भी चिह्न थीं।

आगे, निवासस्थान का क्या महत्व है? यीशु ने अपने शरीर की तुलना यरूशलेम में मंदिर के साथ की है।[५५९] हम को जो उस पर विश्वास करते हैं परमेश्वर का मंदिर कहा जाता है।[५६०] मंदिर यीशु का छवि में निरूपण है। यदि इज़राएली मूसा के नेतृत्व के अंतर्गत कनान को बहाल करने की पहली कार्यवाही में सफल रहे होते, तो जैसे ही वे कनान की भूमि में प्रवेश करते वे मंदिर का निर्माण कर लेते और मसीह को ग्रहण करने के लिए तैयार हो जाते। परन्तु, उनके अविश्वास के कारण पहली कार्यवाही शुरू ही में विफल हो कर समाप्त हो गई थी। दूसरी कार्यवाही में परमेश्वर उन्हें लाल सागर के पार घुमा कर जंगल के रास्ते से ले गया। इस परिस्थिति में परमेश्वर नहीं चाहता था कि वे मंदिर का निर्माण करें, परन्तु, इसके बदले वह निवासस्थान बनाने के लिए तैयार हुआ, जो जगह-ब-जगह ले जाया जा सकता है। मंदिर की तरह निवासस्थान भी यीशु का निरूपण करता है, लेकिन चिह्न के रूप में। जब परमेश्वर ने मूसा को निवासस्थान बनाने के लिए आज्ञा दी तो उसने कहा: “और वे मेरे लिए एक पवित्र स्थान बनाएं कि मैं उनके बीच निवास करूँ।”[५६१]

निवासस्थान दो भागों में विभाजित किया गया था: पवित्र स्थान (मंदिर) और अति पवित्र स्थान (परम-पवित्र स्थान)। केवल याजक ही परम-पवित्र स्थान में प्रवेश कर सकता था, और वर्ष में केवल एक बार, जब वह प्रायश्चित्त के दिन का बलिदान चढ़ाता है। परम-पवित्र स्थान वह स्थान था जहाँ वाचा का संदूक रखा गया था। यह वह स्थान था जहाँ परमेश्वर स्वयं उपस्थित था। यह यीशु की आत्मा का प्रतीक

---

[५५६] प्रति-संदर्भ—पुनरुद्धार १.२.१

[५५७] प्रकाशितवाक्य २:१७

[५५८] १कुरिंथियों १०:४

[५५९] यूहन्ना २:१९-२१

[५६०] १कुरिंथियों ३:१६

[५६१] निर्गमन २५:८

था। पवित्र स्थान में एक खड़ा-दीवट रखा था, एक धूप की वेदी और भेंट की रोटी के लिए एक मेज़, जो याजकों के नित्य भोजन के लिए थी। यह यीशु के शरीर की प्रतीक थी। इसके अतिरिक्त, परम-पवित्र स्थान स्वर्ग का प्रतीक था, जबकि पवित्र स्थान भौतिक दुनिया का प्रतीक था। जब यीशु क्रूस पर चढ़ाया गया था, तब परम-पवित्र स्थान और पवित्र स्थान के बीच का पर्दा ऊपर से नीचे तक फट गया था[५६२]। इसका अर्थ यह हुआ, कि यीशु के क्रूस पर चढ़ाए जाने से आत्मिक उद्धार की नींव रखी गई, जब आत्मा और शरीर के बीच का द्वार, या स्वर्ग और पृथ्वी के बीच का द्वार खोला गया था।

वाचा का संदूक किस बात का प्रतीक था? परम पवित्र स्थान में रखे गए संदूक में परमेश्वर की वाचा का प्रमाण रखा था। उसमें पत्थर की दो पट्टियाँ रखीं थीं, जो यीशु और उसकी होने वाली दुलहन, स्वर्ग और पृथ्वी का प्रतीक थीं। उसमें मन्ना, इज़राएलियों के जंगल की कार्यवाही के समय का मुख्य आहार, भी रखा था, जो यीशु के शरीर का प्रतीक था। मन्ना एक स्वर्ण कलश में, जो परमेश्वर की महिमा का प्रतीक है, रखी गई थी। वाचा के संदूक में हारून की लाठी भी रखी थी, जिसके अंकुरित होने से परमेश्वर की शक्ति का प्रदर्शन हुआ।[५६३] इस प्रकार संदूक जगत का प्रतीक है, और उसी समय, निवासस्थान का छोटा प्रतिरूप है।

प्रायश्चित का ढक्कन वाचा के संदूक के ऊपर रखा गया था। सोना ढलवाकर बनाए गए दो करूब प्रायश्चित के ढक्कन के दोनों ओर रखे गए थे, जो करूबों के परों से ढंका हुआ था। परमेश्वर ने यह वादा किया था कि वह स्वयं करूबों के बीच प्रायश्चित के ढक्कन के ऊपर प्रगट होगा, जहाँ से वह इज़राएलियों का मार्गदर्शन करेगा।[५६४] यह पूर्वलक्षणना करता है कि जब यीशु और उसकी होने वाली दुलहन, जो पत्थर की दो पट्टियों के प्रतीक हैं, आएंगे और लोगों को उनके पाप से शुद्ध करेंगे, परमेश्वर दया के आसन प्रायश्चित के ढक्कन के ऊपर प्रगट होगा और करूबों के बीच से जीवन के वृक्ष का मार्ग खोलेगा जो अदन की वाटिका में बंद कर दिया गया था।[५६५] तब हर कोई यीशु, जीवन के वृक्ष, के पास आ सकेगा और परमेश्वर का वचन पूर्णतः प्राप्त कर सकेगा।

किस उद्देश्य से परमेश्वर ने पत्थर की पट्टियाँ, निवासस्थान और वाचा का संदूक दिया था? अब्राहम की बलिदान में भूल के कारण इज़राएली लोग चार सौ वर्ष की क्षतिपूर्ति की अवधि समाप्त करके जब जंगल के रास्ते रवाना हुए, परमेश्वर ने मिस्रियों को चिह्नों और विपत्तियों द्वारा मारा और मिस्री सैनिकों को जो इज़राएलियों का लाल सागर पार करते समय पीछा कर रहे थे डुबा दिया। इज़राएली लोग मिस्र वापस नहीं लौट सके, केवल इसलिये नहीं कि यह परमेश्वर की इच्छा के विरुद्ध था, परन्तु इसलिए क्योंकि इज़राएली लोग अब मिस्रियों के कट्टर शत्रु बन गए थे। अब यात्रा पूरी करने के सिवाय उनके पास और कोई चारा नहीं रहा; वे वापस न लौट सकें इसमें परमेश्वर ने कोई कसर नहीं छोड़ी। तो भी, अपनी यात्रा के दौरान इज़राएली लोग लगातार अविश्वास में गिरे। अंत में मूसा का भी अविश्वास में गिरने की

---

[५६२] मत्ती २७:५१

[५६३] इब्रानियों ९:४

[५६४] निर्गमन २५:१७-२२

[५६५] उत्पत्ति ३:२४

संभावना हुई। इस स्थिति से निबटने के लिए परमेश्वर ने एक विश्वास की वस्तु की स्थापना की, जो हमेशा अपरिवर्तित रहेगी, भले ही लोग क्यों न बदल जाएं। जब तक कि एक भी व्यक्ति उस वस्तु का पूर्ण विश्वास के साथ सम्मान करेगा, परमेश्वर अपनी दैवी इच्छा उसके द्वारा जारी रखेगा। वह व्यक्ति उस विश्वास की वस्तु की परिचर्या करने का मिशन विरासत में पाएगा, जिस प्रकार चौकी दौड़ में अगले धावक को बल्ला सौंपा जाता है।

निवासस्थान, जिसमें वाचा का संदूक और पत्थर की पट्टियाँ रखी हुई थीं, यह विश्वास की वस्तु थी। चूँकि निवासस्थान मसीह का प्रतिनिधित्व करता है, जब इज़राएलियों ने निवासस्थान बनाया, तो यह मसीह का प्रतीक हुआ, जो प्रतीकात्मक अर्थ में आ चुका है। इज़राएलियों को चाहिए था कि वह निवासस्थान को श्रद्धापूर्वक सम्मान दें, और उसे मसीह मान कर मूसा के नेतृत्व में कनान प्रतिज्ञा के देश में जाएं। इस प्रकार, वे राष्ट्रीय वास्तविक नींव डाल सकेंगे। यद्यपि, मार्ग में सारे इज़राएली लोग अविश्वासी क्यों न बन जाएं, जब तक मूसा निवासस्थान को उत्कृष्ट करता रहेगा, तब तक लोगों को उनकी अविश्वासता की क्षतिपूर्ति भरने के लिए अनुमति दी जाएगी और वे मूसा की अखंड नींव के आधार पर पुनः स्थापित किए जाएंगे। इसके अतिरिक्त, यदि मूसा भी अविश्वासी बन जाए, जब तक मूसा की जगह कोई भी एक इज़राएली निवासस्थान को उत्कृष्ट करेगा, परमेश्वर उस व्यक्ति के द्वारा काम करके लोगों को बहाल करेगा।

यदि इज़राएलियों ने मूसा पर भरोसा रख कर प्रथम राष्ट्रीय कार्यवाही में कनान में प्रवेश किया होता, तो मूसा का परिवार निवासस्थान का कृत्य निभाता, और स्वयं मूसा पत्थर की पट्टियों और वाचा के संदूक के स्थान पर उनकी भूमिका निभाता। मूसा का परिवार स्वर्गीय कानून का धारक बन गया होता। तब इज़राएली लोग वाचा के संदूक और निवासस्थान की आवश्यकता के बिना ही कनान की भूमि पर मंदिर बना लेते। यह केवल लोगों के अविश्वास में गिरने के बाद उनके उद्धार के साधन के रूप में दिए गए थे। निवासस्थान, जो चिह्न के रूप में यीशु और उसकी होने वाली दुलहन का प्रतिनिधित्व करता था, उसकी आवश्यकता केवल मंदिर के निर्माण के कार्य तक ही थी। मंदिर, जो यीशु और उसकी होने वाली दुलहन का छवि के रूप में प्रदर्शन करता है, उसकी आवश्यकता केवल मसीह के मंदिर के मूर्तरूप में आने तक ही थी।

२.२.२.३.२ निवासस्थान के लिये नींव

जिस प्रकार हमें मसीह को ग्रहण करने से पहले नींव डालना आवश्यक है, उसी तरह, इससे पहले कि इस्राएली लोग निवासस्थान को, जो मसीह का प्रतीकात्मक अभिवेदन है, उत्कृष्ट करें या उसका निर्माण करें, नींव की स्थापना करना आवश्यक है। यह कहना आवश्यक नहीं है, कि निवासस्थान की नींव डालने से पहले विश्वास की नींव और वास्तविक नींव डालना आवश्यक है। आइए हम यह जाँच करते हैं कि मूसा के नेतृत्व में इस्राएलियों को किस प्रकार से यह दो नींव डालनी थीं।

मूसा को परमेश्वर के अनुदेश का पालन करना था और निवासस्थान बनाने के लिए, शैतान से

अलग होने की अवधि, चालीस दिन के उपवास और प्रार्थना के द्वारा विश्वास की नींव डालनी चाहिए थी। निवासस्थान के लिए विश्वास की इस नींव के ऊपर, इस्राएलियों को मूसा का, जो निवासस्थान के आदर्श को कार्यविन्त करने के लिए काम कर रहा था, वफादारी के साथ आज्ञाकारी बन कर साथ देना चाहिए था। इस तरह से वे पतित प्रवृत्ति निकालने के लिए क्षतिपूर्ति की शर्त पूरी करके निवासस्थान के लिए वास्तविक नींव डाल सकेंगे। निवासस्थान की इस चर्चा में पत्थर की पट्टियाँ और वाचा का संदूक शामिल हैं।

निवासस्थान के लिए पहली नींव

वचन का अवतरण बनने के लिए मनुष्य की सृष्टि छठवें दिन में हुई थी।[५६६] अतः, पतित लोगों के पुनरुद्धार के लिए सृष्टि का वचन पुनः देने के लिए, परमेश्वर को संख्या छह, वह अवधि जो शैतान ने दूषित कर दी थी, पुनः स्थापित कर पड़ी। इस कारण, परमेश्वर ने सीनै के पर्वत को पवित्र करने के लिए उसे छह दिन तक बादलों से ढाँपे रखा और सातवें दिन मूसा को प्रगट हुआ और बादलों के बीच से उसे पुकारा। उस क्षण से मूसा ने चालीस दिन और चालीस रात का उपवास शुरू किया।[५६७] निवासस्थान के लिए, जो मसीह का प्रतीकात्मक रूप है, विश्वास की नींव की स्थापना करने के लिए परमेश्वर ने मूसा को शैतान से अलग होने की चालीस दिन की अवधि रखने का निर्देश दिया। परमेश्वर ने यह देखा कि यह आवश्यक है, क्योंकि इस्राएली लोग लाल सागर पार करने के बाद अविश्वास में पड़ गए थे।[५६८]

जैसा कि ऊपर बताया गया है, कि कनान की प्राप्ति की कार्यवाही के दौरान इस्राएलियों का मूसा पर जब तक उसने परमेश्वर की शक्ति का प्रदर्शन किया थोड़े ही समय तक विश्वास करके उस के पीछे चलने से पतित प्रवृत्ति निकालने के लिए क्षतिपूर्ति की शर्त पूरी नहीं हो सकी। इसके पूरे होने के लिए लोगों को जब तक वे कनान में प्रवेश न कर लेते और मंदिर बनाकर मसीह को ग्रहण न कर लेते, आस्था और आज्ञाकारिता बरकरार रखना आवश्यक था। इसी तरह, पतित प्रवृत्ति निकालने की क्षतिपूर्ति की शर्त पूरी करने के लिए और निवासस्थान के लिए वास्तविक नींव डालने के लिए, जब मूसा चालीस दिन का उपवास रखने के लिए पर्वत पर चढ़ा उस क्षण से ले कर और जब तक वे निवासस्थान को बनाना समाप्त नहीं कर लेते, इस्राएलियों को वफादारी से मूसा की आज्ञा का पालन करना चाहिए था। परन्तु, जब मूसा पर्वत पर उपवास और प्रार्थना कर रहा था, लोग अपने विश्वास से गिर गए और सोने के बछड़े की पूजा करने लगे। फलस्वरूप, निवासस्थान के लिए वास्तविक नींव स्थापित नहीं हो सकी।

चूँकि मनुष्य ने वचन का आधार स्वयं गवाँ दिया था, इसलिए, यह उनकी अपनी ज़िम्मेदारी बनती है कि वे उस आधार को वापस बहाल करें और इस बल पर वे उसे फिर से प्राप्त कर सकें। इसलिये, जब लोग वचन को बहाल करने का कार्य करते हैं परमेश्वर उनकी कार्यवाही में हस्तक्षेप नहीं करता है। यही कारण था, यद्यपि परमेश्वर ने चिह्न और चमत्कारों के साथ इस्राएलियों का नेतृत्व किया, परन्तु जब

---

[५६६] यूहन्ना १:३
[५६७] निर्गमन २४:१६-१८
[५६८] निर्गमन १६:१-१२, १७;२-४

उन्होंने पाप किया तो उसने हस्तक्षेप नहीं किया।

जब मूसा ने देखा कि लोग मूर्ति की पूजा कर रहे हैं और उसके चारों ओर नाच रहे हैं तो उसका कोप भड़क उठा। उसने पट्टियाँ नीचे फेंक कर उन्हें तोड़ डाला।[५६९] परिणामस्वरूप, शैतान ने निवासस्थान की विश्वास की नींव पर दावा किया। जैसा कि ऊपर स्पष्ट किया गया है, पत्थर की दो पट्टियाँ यीशु और उसकी होने वाली दुलहन का प्रतीक थीं, जो बहाल किए गए दूसरे आदम और हव्वा के रूप में आने वाले थे। यह पूर्वलक्षणना करता है कि यदि यीशु ने आकर यहूदियों को विश्वास से वंचित पाया तो हो सकता है कि उसे परमेश्वर का दिया हुआ अपना यह मूल मिशन, उसकी होने वाली दुलहन के साथ पूरा किए बिना सूली पर मरना होगा।

सीनै पर्वत पर इस्राएलियों की विश्वासहीनता के कारण निवासस्थान की नींव स्थापित करने की परमेश्वर की दैवी योजना डांवांडोल हो गई। इस वजह से, परमेश्वर का लोगों को शैतान से अलग करने का कठिन प्रयास और लोगों में मूसा के प्रती आज्ञाकारी होना खंडित हो गया। उनकी बेवफाई लगातार जारी रही, निवासस्थान के लिए नींव स्थापित करने का परमेश्वर की दैवी योजना का प्रयास दूसरी और तीसरी बार तक प्रवर्धित हुआ।

निवासस्थान के लिए दूसरी नींव

इस्राएली लोग पट्टियाँ प्राप्त करने की व्यवस्था में विश्वासघाती साबित हुए, और इसलिए निवासस्थान बनाने के लिए भी, परन्तु चूँकि उन्होंने रपीदीम की चट्टान, जो पट्टियों के मूल का प्रतीक है, उससे निकला हुआ पानी पिया था, इस वजह से उनको दूसरा अवसर मिला। मूसा का पट्टियाँ तोड़ने के बाद परमेश्वर उसके सामने प्रगट हुआ और उससे वादा किया कि वह उसको अपने वचन का दूसरा शिलालेख देगा। इस बार, परमेश्वर ने मूसा से पत्थर की कोरी पट्टियाँ बनवा कर लीं जिन पर वह लेख नक्ष करेगा। इसके अतिरिक्त, मूसा पत्थर की पट्टियाँ और निवासस्थान की स्थापना नहीं कर सकता था जब तक वह पहले विश्वास की नींव पुनः स्थापित करने के लिए एक बार फिर शैतान से अलग होने का चालीस का विधान पूरा न कर ले। इसलिए, मूसा को और चालीस दिन का उपवास रखना पड़ा इससे पहले कि वह दस आज्ञाओं का दूसरा शिलालेख प्राप्त कर सके[५७०] और विश्वास की वस्तु के रूप में निवासस्थान की स्थापना कर सके। इस बार इस्राएली लोगों ने वफादारी के साथ मूसा की वापसी की प्रतीक्षा की।

मूसा का दूसरी बार चालीस दिन के उपवास के फलस्वरूप तोड़ी हुई पट्टियों की पुनःस्थापना के सफल प्रयासों, और इस्राएलियों का उस पर विश्वास रखना, पूर्वलक्षणना करता है कि यीशु, यद्यपि वह सूली पर चढ़ाया जाएगा, वापस आ सकेगा और नए सिरे से उद्धार का कार्य शुरू करेगा, यदि विश्वासी लोग प्रभु के पुनरुत्थान के चालीस दिन, शैतान से अलग होने के चालीस के विधान, के दौरान श्रद्धा के

[५६९] निर्गमन ३२:१९
[५७०] निर्गमन ३४:२८

साथ उसे ग्रहण करने के लिए क्षतिपूर्ति की शर्त पूरी करेंगे।

मूसा के पर्वत पर उपवास के दौरान उनका वफादार रहना, और फिर निवासस्थान के बनाने के लिए उसके निर्देशों को मानने के द्वारा इस्राएली लोगों ने पतित प्रवृत्ति निकालने की क्षतिपूर्ति की शर्त पूरी की। यह निवासस्थान के लिए वास्तविक नींव का डालना हुआ, इस तरह निवासस्थान के लिए नींव डाली गई। निवासस्थान दूसरे वर्ष के पहले महीने के पहले दिन बन कर तैयार हुआ।[५७१] तथापि, जैसा पहले स्पष्ट किया गया है, कनान की प्राप्ति के लिए दूसरी राष्ट्रीय कार्यवाही में वास्तविक नींव डालने के लिए केवल निवासस्थान का निर्माण-कार्य ही काफी नहीं था उससे अधिक की आवश्यकता थी। वास्तव में, उनके कनान में प्रवेश करने और मंदिर का निर्माण करने के बाद तक इस्राएलियों को चाहिए था कि वे निवासस्थान को हमेशा अपने जीवन से अधिक मान देते रहें, और यही विश्वास उन्हें मसीह को ग्रहण करने तक रखना चाहिए था।

दूसरे वर्ष के दूसरे महीने के बीसवें दिन, इस्राएली लोग सीनै के जंगल से निकले, निवासस्थान के चारों ओर कतारों में तैनात वे बादलों के मार्गदर्शन के द्वारा चलाए चले।[५७२] इस पर भी वे अपनी कठिनाइयों के विषय में शीघ्र ही कुड़कुड़ाने लगे और मूसा से शिकायत करने लगे। यहाँ तक कि परमेश्वर ने क्रोध में आकर उनके शिविर नष्ट करने के पश्चात भी उन्होंने पश्चाताप नहीं किया। वे यह कह कर असंतोष प्रगट करते रहे कि खाने के लिए उनके पास मन्ना के सिवाय और कुछ नहीं है। वे मूसा के लिए द्वेषपूर्ण थे और मास, फल और सब्जी जैसी मिस्र की सुविधाएं चाहते थे।[५७३] इस तरह इज़राएली लोग निवासस्थान की दूसरी नींव बरकरार नहीं रख सके, और उस पर शैतान ने दावा कर लिया। इस प्रकार, नींव के पुनःस्थापन की यह दैवी व्यवस्था तीसरे प्रयास के लिए दीर्धीकृत हो गई।

निवासस्थान के लिए तीसरी नींव

यद्यपि शैतान ने निवासस्थान की दूसरी नींव विकृत कर दी थी, निवासस्थान के लिए मूसा की आस्था और भक्ति अपरिवर्तित रही। इसलिए, निवासस्थान, मूसा की डाली गई विश्वास की नींव पर दृढ़ता से स्थिर रहा, जबकि इस्राएली लोग रपीदीम की चट्टान से निकले हुए पानी को पीने की नींव पर खड़े थे।[५७४] हमें याद है कि चट्टान पट्टियों का मूल तत्व थी, जो निवासस्थान के मध्य में था। इस नींव पर, इस्राएली लोगों को शैतान से अलग होने की चालीस के विधान की व्यवस्था के लिए एक बार फिर से प्रयास करने के लिए अनुमति दी गई थी। उन्हें मूसा का, जिसने अभी तक निवासस्थान को सम्मानित किया था, आज्ञाकारी बनकर, अपने तीसरे प्रयास में निवासस्थान की नींव को क्षतिपूर्ति के माध्यम से पुनः स्थापित करना था। इसे पूरा करने के लिए उन्हें कनान देश में चालीस दिन जासूसी करने का मिशन मिला था।

---

[५७१] निर्गमन ४०:१७

[५७२] गिनती १०:११-१२

[५७३] गिनती ११:१-६

[५७४] निर्गमन ७:१६

परमेश्वर ने मूसा से इस्राएलियों के बारह गोत्रों में से प्रति गोत्र में से एक-एक प्रधान पुरुष चुनवाए और उन्हें कनान देश में चालीस दिन जासूसी करने के लिए भेजा।[५७५] जब वे वापस आए, तो यहोशू और कालेब के सिवा सब गुप्तचरों ने अविश्वसनीय संदेश दिया:

> परन्तु उस देश के निवासी बलवान हैं और उनके नगर गढ़ वाले हैं और बहुत बड़े हैं, और फिर हमने अनाकवंशियों को भी देखा। और उन्होंने इस्राएलियों के सामने उस देश की जिसका भेद उन्होंने लिया था यह कह कर निंदा भी की, वह देश जिसका भेद लेने के लिए हम गए थे ऐसा है, जो अपने निवासियों को निगल जाता है। और जितने पुरुष हमने देखे हैं वह सब के सब बड़े डील डौल के हैं। फिर हमने नपीलों को अर्थात नपीली जाति वाले अनाकवंशियों को देखा और हम अपनी दृष्टि में उन के सामने टिड्डे के समान दिखाई पड़ते थे और ऐसे ही उनकी दृष्टि में मालूम पड़ते थे। गिनती १३:२८, ३२-३३

वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि वे कनान के गढ़ वाले नगरों पर कब्ज़ा नहीं कर सकते या उन लोगों को पराजित नहीं कर सकते। यह संदेश सुनकर इस्राएली लोग मूसा के विरोध में कुड़कुड़ाने लगे। उन्होंने किसी और को अपना प्रधान बना लेना चाहा जो उन्हें मिस्र वापस ले जाए। केवल यहोशू और कालेब ने लोगों से कहा कि मत डरो, परन्तु कनानियों पर परमेश्वर के आदेश के अनुसार हमला करो:

> केवल इतना करो कि तुम यहोवा के विरुद्ध बलवा न करो, और न उस देश के लोगों से डरो, क्योंकि वे हमारी रोटी ठहरेंग, छाया उन पर से हट गई है, और यहोवा हमारे संग है, उनसे न डरो। गिनती १४:९

इस्राएलियों ने यह प्रोत्साहन स्वीकार नहीं किया और यहोशु और कालेब पर पथराव करने की कोशिश की। उस समय परमेश्वर की महिमा सब लोगों पर प्रगट हुई, और परमेश्वर ने मूसा से कहा:

> वे लोग कब तक मेरा तिरस्कार करते रहेंगे? और मेरे सब आश्चर्यकर्म देखने पर भी कब तक मुझ पर विश्वास नहीं करेंगे? गिनती १४:११

> परन्तु तुम्हारे बालबच्चे, जिनके विषय में तुमने कहा कि वे लूट में चले जाएंगे, उनको मैं उस देश में पहुँचा दुंगा, और वे उस देश को जान लेंगे जिसको तुमने तुच्छ जाना है। परन्तु तुम लोगों के शव इसी जंगल में पड़े रहेंगे। और जब तक तुम्हारे शव जंगल में न गल जाएं तब तक अर्थात चालीस वर्ष तक तुम्हारे बच्चे जंगल में तुम्हारे व्यभिचार का फल भोगते हुए चरवाही करते रहेंगे। जितने दिन तुम उस देश का भेद लेते रहे अर्थात चालीस दिन, उनकी गिनती के अनुसार, दिन पीछे एक वर्ष, अर्थात चालीस वर्ष तक तुम अपने अधर्म का दण्ड उठाए रहोगे, तब तुम जान लोगे कि मेरा विरोध क्या है। गिनती १४:३१-३४

उनके विश्वास की कमी के फलस्वरूप, निवासस्थान की तीसरी नींव भी विफल हो गई। उनकी इक्कीस महीनों की कार्यवाही बढ़ कर चालीस वर्ष की हो गई।

---

[५७५] गिनती १३:१,२५

२.२.२.४ कानन की प्राप्ति के लिए दूसरी राष्ट्रीय कार्यवाही की विफलता

इस्राएली लोगों की अविश्वसनीयता के कारण, निवासस्थान के लिए नींव के कार्य में शैतान ने तीन बार धावा किया। इस वजह से पतित प्रवृत्ति निकालने की राष्ट्रीय क्षतिपूर्ति शर्त पूरी नहीं हो पाई, और कनान की प्राप्ति की दूसरी राष्ट्रीय कार्यवाही के लिए वास्तविक नींव नहीं डाली गई। फलस्वरूप, कनान की प्राप्ति की दूसरी सम्पूर्ण राष्ट्रीय कार्यवाही निष्फल हो गई। परमेश्वर की दैवी योजना, तीसरी राष्ट्रीय कार्यवाही के लिए प्रवर्धित हो गई।

२.२.३ *कानन की प्राप्ति के लिए तीसरी राष्ट्रीय कार्यवाही*

२.२.३.१ विश्वास की नींव

क्योंकि इस्राएली लोग विश्वास हीन गुप्तचरों का बयान सुनकर डर गए, कनान की प्राप्ति की दूसरी राष्ट्रीय कार्यवाही विफल हो गई। विश्वास की नींव बहाल करने के लिए मूसा ने जो चालीस वर्ष मिद्यान के जंगलों में बिताए थे वे शैतान के दावे में चले गए। देश की जासूसी के मिशन में विफल होने के फलस्वरूप, लोगों को चालीस वर्ष जंगल में भटकना पड़ा, जासूसी के मिशन के चालीस दिन के प्रत्येक दिन के लिए एक वर्ष, जब तक वे लौट कर कादेश-बरनिया नहीं आ गए। मूसा के लिए, यह चालीस वर्ष की अवधि शैतान से अलग होने के लिए थी, जिसने पिछली विश्वास की नींव पर दावा कर लिया था, और तीसरी कार्यवाही के लिए क्षतिपूर्ति द्वारा विश्वास की नींव पुन:स्थापित करने के लिए थी। मूसा ने पूरे चालीस वर्ष जंगल में भटकते समय विश्वास और वफादारी के साथ निवासस्थान का सम्मान किया। जब तक वह कादेश-बरनिया में वापस लौटा उसने कनान की प्राप्ति के लिए तीसरी राष्ट्रीय कार्यवाही पूरी कर ली थी। तदनुसार, उसने वास्तविक नींव के लिए हाबिल का स्थान भी सुरक्षित कर लिया था।

२.२.३.२ वास्तविक नींव

दूसरी कार्यवाही के लिए वास्तविक नींव विफल हो गई, क्योंकि लोगों के लगातार अविश्वास के कारण शैतान ने निवासस्थान की नींव विकृत कर दी थी। परन्तु, मूसा के निवासस्थान के प्रति निरंतर धर्मनिष्ठा के कारण कम से कम विश्वास की नींव सुरक्षित रही। यदि, इस नींव पर, इस्राएली लोग जंगल में भटकते समय चालीस वर्ष तक वफादारी के साथ मूसा का अनुसरण करते और इस तरह वे शैतान से अलग होने का आधार स्थापित कर लेते, तो वे निवासस्थान के लिए वास्तविक नींव खड़ी करने में सफल हो जाते और निवासस्थान की नींव स्थापित करने का कार्य पूरा कर लेते। यदि उन्होंने मूसा का आदर किया होता और विश्वास के साथ कनान में प्रवेश किया होता, तो कनान की प्राप्ति के लिए तीसरी राष्ट्रीय कार्यवाही के लिए वास्तविक नींव डालने का कार्य पूर्ण कर लेते।

मूसा के लिए, जंगल में चालीस वर्ष भटकने की अवधि तीसरी राष्ट्रीय कार्यवाही में विश्वास की नींव स्थापित करने के लिए आपेक्षित थी। इज़राएलियों के लिए, इस अवधि का लक्ष्य व्यवस्था को

कार्यान्वित करने के लिए तीसरी कार्यवाही शुरू करना था। यह उन्हें निवासस्थान की नींव स्थापित करके करना था, इस तरह वे अनुग्रह की उस दशा में लौट सकते थे, जिसका लाभ उन्होंने दूसरी कार्यवाही में उठाया था जब मूसा के निर्देशन में पहली बार उन्होंने निवासस्थान बनाया था।

२.२.३.२.१ मूसा पर केन्द्रित वास्तविक नींव

दूसरी कार्यवाही के लिए पट्टियाँ, निवासस्थान, और वाचा का संदूक, केवल इसलिए आवश्यक हो गए क्योंकि इज़राएलियों ने जंगल में विश्वास खो दिया था। लाल सागर को पार करने के तुरन्त बाद वे वह तीन चिह्न भूल गए जो परमेश्वर ने उन्हें व्यवस्था शुरू करने पर दिए थे। इसे क्षतिपूर्ति द्वारा बहाल करने के लिए परमेश्वर ने चालीस दिन की अवधि में, जब मूसा पर्वत पर था, लोगों की परीक्षा की। तब उसने उन्हें दैवी उपकार के तीन प्रत्यक्षीकरण प्रदान किए: पत्थर की पट्टियाँ, वाचा का संदूक और निवासस्थान। इसके अतिरिक्त परमेश्वर ने उन्हें दस विपत्तियों का चिह्न दिया, जो हारान में लाबान का याकूब के साथ दस बार छल के बदले में था। यह सब देखने के बावजूद भी जब इस्राएली लोगों ने विश्वास खो दिया तो परमेश्वर ने दस विपत्तियों को क्षतिपूर्ति द्वारा बहाल करने की कोशिश में उन्हें दस आज्ञाएं दीं। यदि इस्राएलियों ने इन तीन दैवी उपकारों के प्रत्यक्षीकरण को मान देकर और दस आज्ञाओं का पालन करके अपना विश्वास नवीकृत किया होता, तो उन्होंने अनुग्रह की उस दशा को फिर से प्राप्त कर लिया होता जिसका लाभ उन्होंने मिस्र छोड़ने के समय चमत्कार के कार्यों की शक्ति के अंतर्गत उठाया था।

तदनुसार, इस्राएली लोग तीसरी कार्यवाही की चालीस-वर्षीय क्षतिपूर्ति की अवधि को जंगल में शुरू से अंत तक मूसा में विश्वास बनाए रख कर उसकी आज्ञा का पालन करके पूरी कर लेते। कादेश-बरनिया में वापस लौटने के बाद उन्हें चाहिए था कि वह निवासस्थान की नींव पर मूसा के साथ खड़े रहकर पट्टियों, निवासस्थान और वाचा के संदूक को उत्कृष्ट करते। यदि उन्होंने ऐसा किया होता, तो वे उस स्थिति में खड़े होते जिसका लाभ उन्होंने, व्यवस्था के पूरे होने पर दूसरी कार्यवाही के शुरू होने के समय उठाया था, जब परमेश्वर ने मिस्रियों को तीन चिह्नों और दस विपत्तियों के साथ मारा था। पट्टियाँ, वाचा के संदूक का छोटा प्रतिरूप थीं; वाचा का संदूक निवासस्थान का छोटा प्रतिरूप था; अतः, पट्टियाँ निवासस्थान का छोटा प्रतिरूप हुईं। इस तरह, वाचा का संदूक और निवासस्थान, पट्टियों या पट्टियों का आधार चट्टान के द्वारा प्रदर्शित किया जा सकता है। इसलिए, कनान की प्राप्ति के लिए तीसरी राष्ट्रीय कार्यवाही चट्टान पर आधारित व्यवस्था के पूरे होने पर कादेश-बरनिया से शुरू होनी थी। इसके पश्चात, यदि इस्राएलियों ने विश्वास और भक्ति के साथ निवासस्थान का सम्मान किया होता और मूसा के पीछे चल कर कनान में गए होते, तो उन्होंने पतित प्रवृत्ति निकालने की क्षतिपूर्ति की शर्त पूरी कर ली होती, जो तीसरी राष्ट्रीय कार्यवाही में वास्तविक नींव डालने के लिये आवश्यक थी।

परमेश्वर ने किस अभिप्राय से चट्टान के आधार पर व्यवस्था का आरंभ किया था? इस्राएली लोग जंगल में चालीस वर्ष घूमने के दौरान फिर से उलाहना और अविश्वास में पड़ गए। उनको बचाने के लिए, परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा दी कि वह अपनी लाठी चट्टान पर मारे ताकि उसमें से पानी निकले और लोगों

को पीने के लिए दे।[५७६] मूसा को चट्टान पर केवल एक बार ही लाठी मारनी चाहिए थी। तब इस्राएली लोगों को चकित होकर उसके साथ एक हो जाना चाहिए था, इस प्रकार वे उसके साथ निवासस्थान की नींव पर खड़े होते। इस प्रकार, वे चट्टान पर आधारित व्यवस्था के आरंभ को पूरा कर लेते।

परंतु, जब मूसा ने लोगों को अपने विरोध में उलाहना देते हुए कुड़कुड़ाते सुना कि उनको पीने के लिए पानी नहीं मिला, यह सुनकर वह क्रोध में आकर अनियंत्रित हो गया और चट्टान को दो बार मार दिया। तब परमेश्वर ने उससे कहा:

> "तूने मुझ पर विश्वास नहीं किया, और मुझे इस्राएलियों की दृष्टि में पवित्र नहीं ठहराया इस लिये तू इस मण्डली को उस देश में पहुँचाने नहीं पाएगा, जो देश मैंने उन्हें दिया है। गिनती २०:१२

उसने चट्टान को दो बार मारा जब कि उसे एक ही बार मारना चाहिए था, ऐसा करके मूसा ने चट्टान पर आधारित व्यवस्था के आरंभ को अवमूल्यन किया। फलस्वरूप, उसे प्रतिज्ञा के देश में प्रवेश करने की अनुमति नहीं मिली। उसके जीवन के अंत में वह केवल दूर से ही उसे देख सका।[५७७]

आइए हम यह जाँच करें कि मूसा को क्यों चट्टान को एक ही बार मारना चाहिए था, और दो बार मारना क्यों पाप गिना गया। चट्टान यीशु मसीह का प्रतीक है।[५७८] चूँकि मसीह जीवन के वृक्ष के रूप में आया,[५७९] इसलिए चट्टान भी जीवन के वृक्ष के रूप में देखी जा सकती है। जीवन का वृक्ष, अदन की वाटिका में पूर्ण आदम का प्रतीक भी है; इस प्रकार, चट्टान आदम की पूर्णता का प्रतीकत्व करती है।

अदन की वाटिका में, आदम को परिपक्व होकर चट्टान के आदर्श को प्रदर्शित बनना चाहिए था। परन्तु जब शैतान ने उस पर वार किया और उसे पतित कर दिया, तब आदम जीवन का वह वृक्ष या चट्टान नहीं बन सका जो उसके वंश को अनंत जीवन का पानी प्रदान कर सके। इसलिए, पानी रहित चट्टान, जिसे मूसा ने पहली बार मारा, पतित आदम का प्रतीक है। शैतान का आदम को जीवन का पानी देने वाली चट्टान बनने से रोकने और उस पर वार करने की इस करतूत का दण्ड देने के लिए परमेश्वर चाहता था कि मूसा चट्टान को एक ही बार मारे। जब उसने चट्टान को एक बार मारा और पानी निकल गया, तो मूसा ने आदम को पानी देने वाली चट्टान के रूप में पुनःस्थापित करने के लिए क्षतिपूर्ति की शर्त पूरी की। एक बार वार की गई चट्टान यीशु का प्रतीक है, जो मानवता को जीवन का पानी देने के लिए आने वाला था। इसलिए यीशु ने कहा:

> "जो कोई उस जल में से पीएगा जो मैं उसे दुँगा वह फिर अनन्तकाल तक प्यासा न होगा, वरन् जो जल मैं उसे दुँगा वह उसमें एक सोता बन जाएगा जो अनंत जीवन के लिए उमड़ता रहेगा।" यूहन्ना ४:१४

---

[५७६] गिनती २०:४-५,८

[५७७] गिनती २७:१२-१४

[५७८] १कुरिंथियों १०:४, प्रकाशितवाक्य २:१७

[५७९] प्रकाशितवाक्य २२:१४, प्रति संदर्भ १.१.१.

इस प्रकार, परमेश्वर का इरादा था कि क्षतिपूर्ति शर्त के रूप में मूसा चट्टान को एक ही बार मारे, ताकि पतित आदम का पुनरुद्धार, दूसरे पूर्ण आदम—यीशु के व्यक्तित्व में हो सके। परन्तु, मूसा ने चट्टान को पहली बार मारने के बाद, जब उसमें से पानी निकल चुका था, दूसरी बार मारा, यह यीशु पर आघात होने की संभावना को प्रगट होता है। दूसरे शब्दों में, इज़राएलियों के अविश्वास के कारण मूसा का क्रोध में आकर चट्टान को दो बार मारने का कर्म यह शर्त खड़ी करता है कि जब यीशु, जो चट्टान की पूर्ति है, आएगा, यदि यहूदी लोगों ने उस पर विश्वास नहीं किया, तो यीशु का सामना करने के लिए शैतान के पास आधार बनता है। इस कारण, मूसा का यह कर्म पाप गिना गया।

यद्यपि, मूसा का पट्टियों को तोड़ना बर्दाश्त किया जा सकता था, परन्तु चट्टान को दूसरी बार मारने की ग़लती क्षमा नहीं की जा सकती थी। ऐसा क्यों? पुनरुद्धार की दैवी योजना के संदर्भ से, पत्थर की पट्टियाँ और चट्टान, बाह्य और आंतरिक संबंध से जुड़े थे। पत्थर की पट्टियों पर दस आज्ञाएं खुदी हुई थीं, वह मूसा के कानून का मर्म थीं और पुराने नियम का केन्द्र थीं। इस्राएली लोग पुराने नियम के युग में उपलब्ध उद्धार, इन पट्टियों पर लिखे आदर्शों को कायम रखने से प्राप्त कर सकते थे। इस मामले में, पत्थर की पट्टियाँ आने वाले यीशु का बाह्य चित्रण था।

दूसरी ओर, चट्टान, न केवल मसीह ही का प्रतीक हैं, पर पत्थर की पट्टियों के मूल तत्व के रूप में, वह परमेश्वर का भी प्रतीकत्व करती है, जो मसीह का आदि कारण है। पत्थर की पट्टियाँ बाह्य थीं; चट्टान आंतरिक थी। यदि हम पट्टियों को शरीर की उपमा दें, तो चट्टान मन के अनुरूप है; यदि हम पट्टियों को पवित्र स्थान की उपमा दें तो चट्टान परम पवित्र स्थान के अनुरूप है; यदि हम पट्टियों की तुलना पृथ्वी के साथ करते हैं तो चट्टान स्वर्ग के तुल्य है। संक्षिप्त में, मसीह के आंतरिक निरूपण के रूप में, चट्टान का पत्थर की पट्टियों से अधिक महत्व है।

मसीह के बाह्य निरूपण के रूप में, पत्थर की पट्टियाँ हारून का भी प्रतीकत्व करतीं हैं। हारून मूसा की हज़ूरी में यीशु का बाह्य प्रतिरूप था, जब कि मूसा परमेश्वर का प्रतिनिधि है।[५८०] जब इस्राएलियों ने सोने का बछड़ा बनाने के लिये हारून पर ज़ोर दिया,[५८१] तो हारून स्वयं अविश्वस्त हो गया, यह पट्टियों के तोड़ने का कारण बना। फिर भी, हारून बचाया जा सकता था क्योंकि जब वह रपीदीम की चट्टान का पानी पीने की नींव पर खड़ा था, उसने पश्चाताप किया।[५८२] जब उसने ऐसा किया, पत्थर की पट्टियाँ जो हारून का प्रतीक थीं, वह भी नए सिरे से फिर बनाई जा सकती थी और चट्टान के पानी की आंतरिक नींव के आधार पर पुनः स्थापित की जा सकती थीं। परन्तु, क्योंकि चट्टान—जो पट्टियों का मूल तत्व थी, न केवल यीशु ही का प्रतीक थी पर परमेश्वर का भी प्रतीक थी, जो उसका मूल है, इसलिए चट्टान को दूसरी बार मारना अकृत नहीं हो सकता।

चट्टान को दो बार मारने के क्या-क्या परिणाम हो सकते हैं? मूसा ने चट्टान को दो बार मारा क्योंकि

---

[५८०] निर्गमन ४:१६, ७:१
[५८१] निर्गमन ३२:४
[५८२] निर्गमन १७:६

वह लोगों के अविश्वास के कारण बेहद क्रोधित हो गया था।[५८३] यह उसने शैतान के दबाव में आकर, यहाँ तक कि शैतान की ओर से किया। परिणामस्वरूप, चट्टान के आधार पर व्यवस्था को आरंभ करने का परमेश्वर का इरादा शैतान ने भ्रष्ट कर दिया।

यद्यपि, मूसा का चट्टान को दूसरी बार मारना बाह्य रूप से शैतानी कार्य था, फिर भी गहरे आंतरिक अर्थ में उसने लोगों को उसमें से निकला हुआ पानी पीने के लिए दिया और उनकी जान बचाई। यह बात, परमेश्वर की पहले की दी गई भविष्यवाणी[५८४] कि बाहरी इस्राएली, जो मिस्र छोड़ने के समय युवा थे, यहोशू और कालेब के अतिरिक्त, वायदे के अनुसार कनान में प्रवेश नहीं कर सकते थे, पुनः पुष्टि करती है। मूसा भी, प्रतिज्ञा के देश में प्रवेश करने का अपना अभिलषित स्वप्न पूरा किए बिना मर जाएगा।[५८५] दूसरी ओर, आंतरिक इस्राएली, जो मिस्र से कूच करते समय बच्चे थे या वे जो जंगल यात्रा के दौरान पैदा हुए थे जब लोगों ने चट्टान का पानी पिया था और जिन्होंने निवासस्थान को सम्मान दिया था, वे यहोशू[५८६] के नेतृत्व में, जो मूसा के स्थान खड़ा था, कनान में प्रवेश करेंगे।[५८७]

चूँकि, मूसा के चट्टान को दो बार मारने से शैतान को दावा करने का अवसर मिला, तो हम यह अनुमान कर सकते हैं कि चट्टान से पानी नहीं निकलना चाहिए था। तो फिर उसमें से पानी निकलना कैसे संभव हुआ? मूसा ने पहले भी कनान की प्राप्ति के लिए दूसरी राष्ट्रीय कार्यवाही में रपीदीम में चट्टान से पानी निकाला था,[५८८] इस तरह चट्टान से पानी निकालने के लिए नींव खड़ी की गई थी। पत्थर की पट्टियाँ, निवासस्थान और वाचा का संदूक जिनका निर्माण इस नींव पर हुआ था, वह लोगों की अविश्वसनीयता के बावजूद तीसरी राष्ट्रीय कार्यवाही तक मूसा की अटल भक्ति के द्वारा स्थिर रहे। उसने निवासस्थान के लिए विश्वास की नींव दृढ़ता से कायम रखी, जो उसने अपने चालीस दिन के उपवास के दौरान खड़ी की थी। यद्यपि, मूसा का विश्वास क्षण भर के क्रोध के कारण हिल गया था फिर भी उसका हृदय परमेश्वर की ओर अपरिवर्ती रहा। इसके अतिरिक्त, यहोशू ने जासूसी के चालीस दिन के दौरान अपने पूर्ण विश्वास के साथ निवासस्थान के लिए नींव खड़ी की थी और उसने पट्टियाँ, निवासस्थान और वाचा के संदूक को उस समय से आगे लगातार उत्कृष्ट किया था। इसलिए, यहोशू पर केन्द्रित चट्टान से पानी निकालने की नींव, जो रपीदीम में स्थापित की गई थी, बरकरार रही। संक्षेप में, यद्यपि चट्टान पर आधारित दूसरी व्यवस्था, जो मूसा के ऊपरी अविश्वसनीयता के काम के कारण बाह्य रूप से शैतान के दावे में चली गई, आंतरिक रूप से सुदृढ़ रही। मूसा और यहोशू के आंतरिक अटल विश्वास और भक्ति की प्रवृत्ति के कारण लोगों के लिए चट्टान से पानी निकला।

जब मूसा ने चट्टान को दूसरी बार मारा, तो वस्तुतः उसने शैतान के स्थान पर होकर मारा। इसलिए

---

[५८३] भजन संहिता १०६:३२-३३
[५८४] गिनती १४:२८-३४
[५८५] व्यवस्थाविवरण ३४:४-५
[५८६] गिनती ३२:११-१२
[५८७] गिनती २७:१८-२०
[५८८] निर्गम १७:६

शैतान ने चट्टान हथिया ली थी। तदनुसार, यीशु के समय जब लोगों ने उसपर विश्वास नहीं किया, तो चट्टान की पूर्ति के रूप में, यीशु को चट्टान पर अधिकार प्राप्त करने के लिए व्यक्तिगत रूप से जंगल में जाना पड़ा। उसकी पहली परीक्षा के पीछे, जब शैतान ने उसे पत्थरों को रोटी बनाने के लिए उकसाया, यही कारण है।

इस्राएलियों के अविश्वास के कारण, मूसा को क्रोध आया और उसने चट्टान को दो बार मारा। इस स्थिति के कारण शैतान को मूसा के शरीर पर अधिकार प्राप्त हुआ, इस वजह से मूसा को प्रतिज्ञा के देश से बाहर मरना पड़ा। फिर भी, वह अपने अटल विश्वास के बल पर आत्मा में कनान में प्रवेश कर सका। यह पूर्वलक्षणना करता है कि यीशु, जब चट्टान की सच्ची अभिव्यक्ति के रूप में आएगा तो क्या होगा। यदि यहूदी लोगों ने विश्वास नहीं किया, तो यीशु का शरीर भी शैतान के आक्रमण के कारण दुःख उठाएगा, यहाँ तक कि सूली पर लटकाया जाएगा। वह कनान की प्राप्ति की विश्वव्यापी कार्यवाही पूरी तरह से बहाल करने से पहले ही मर जाएगा। फिर भी, वह पुनरुद्धार का आत्मिक भाग अपने पुनरुत्थान के द्वारा कार्यान्वित कर सकेगा।

इस घटना के तुरंत बाद, इस्राएली लोग रास्ते में फिर कुड़कुड़ाने लगे, और परमेश्वर ने तेज़ विषवाले सांप भेजे जिन्होंने बहुतों को डस कर मार डाला। जब उन्होंने पश्चाताप किया, तब परमेश्वर ने मूसा को काँसे का सांप बना कर खंबे पर लटकाने के लिए कहा, कि जो कोई उसे देखेगा बच जाएगा।[५८९] तेज़ विष वाले सांप शैतान के प्रतीक थे[५९०], प्राचीन सांप वह था जिसने हव्वा को पतित किया था; काँसे का सांप जो खंबे पर लटकाया गया था यीशु का प्रतीक था, जो स्वर्गीय सांप के रूप में आने वाला था। यीशु के समय में क्या होने वाला है, यह पूर्वलक्षणना करता है, जैसा कि उसने कहा: "और जिस रीति से मूसा ने जंगल में सांप को ऊँचे पर चढ़ाया, उसी रीति से अवश्य है कि मनुष्य का पुत्र भी ऊँचे पर चढ़ाया जाए।"[५९१] जब कि इस्राएलियों की बेवफाई के कारण परमेश्वर ने उन्हें शैतानी सांपों का शिकार बना दिया था, परंतु जब वे पछताए और अपना विश्वास ताज़ा किया तो उसने काँसे के सांप द्वारा उनकी जान भी बचाई। इसी तरह से, यीशु के समय, यदि लोग अविश्वास में पड़ेंगे, तो परमेश्वर को उन्हें शैतान के आक्रमण के लिए खुला छोड़ देना पड़ेगा, और मानवता को बचाने के लिए यीशु को सलीब पर स्वर्गीय सांप के समान लटकाना पड़ेगा। तब जब कोई भी पश्चाताप करेगा और क्रूस के द्वारा उद्धार पर विश्वास करेगा वह बचाया जाएगा। यथार्थ में, आत्मिक उद्धार की कार्यवाही शुरू करने के लिए यह तेज़ विषवाले सांपों की घटना यीशु को सूली पर चढ़ाए जाने का दूरवर्ती कारण था।

जब इस्राएली लोग अविश्वस्त हो गए और मूसा ने चट्टान को दो बार मारा, तो परमेश्वर ने यह घोषणा की कि मूसा को कनान देश में प्रवेश करने की अनुमति नहीं दी जाएगी।[५९२] यद्यपि, मूसा ने परमेश्वर

---

[५८९] गिनती २१:६-९
[५९०] प्रकाशितवाक्य १२:९
[५९१] यूहन्ना ३:१४
[५९२] गिनती २०:१२

से हताशापूर्ण प्रार्थना की और निवेदन किया कि उसे कनान में प्रवेश करने की अनुमति दी जाए,[५९३] परन्तु उसके लिए प्रवेश स्वीकार नहीं किया गया और उसकी मृत्यु सरहद के बाहर ही हो गई। उसकी मृत्यु के बाद, मोआब देश की घाटी में उसके शव का शवाधान किया गया, परन्तु उसकी कब्र का पता किसी को मालूम नहीं था।[५९४] यह भी यीशु के बारे पूर्वलक्षणना करता है: कि यदि लोग उसे अस्वीकार करेंगे, तो उसे क्रूस पर चढ़ाया जाएगा। यद्यपि, वह इस दुर्भाग्य से बचने के लिए और स्वर्ग का राज्य स्थापित करने के लिए गिड़गिड़ा कर प्रार्थना करेगा—जैसा कि उसने वास्तव में गतसमनी के बाग में प्रार्थना की, "यह कटोरा मुझ से टल जाए"—परन्तु वह अपना लक्ष्य पूरा किए बिना ही मर जाएगा। इसके अतिरिक्त, उसकी मृत्यु के बाद उसकी देह का क्या हुआ किसी को मालूम नहीं होगा।

२.२.३.२.२ यहोशू पर केन्द्रित वास्तविक नींव

जब कादेश-बरनिया में मूसा ने चट्टान को दो बार मारा, कनान की यात्रा शुरू करने की व्यवस्था, जो चट्टान पर आधारित होनी थी, वह पूरी नहीं हो सकी। यद्यपि, शैतान ने बाह्य रूप से दावा कर लिया था, तथापि मूसा ने रपीदीम में चट्टान से पानी निकाल कर जो आंतरिक नींव डाली थी, वह बरकरार रही, और वह कादेश-बरनिया में चट्टान से लोगों के पीने के लिए पानी निकाल सका। आगे क्या होने वाला है यह एक उदाहरण बन गया। मिस्र में पैदा हुए बाह्य इस्राएली, जो जंगल में अविश्वस्त हो गए थे, जिन्होंने चालीस दिन उस देश की जासूसी करने के मिशन में दृढ़ विश्वास का प्रदर्शन नहीं किया था, यहोशु और कालेब को छोड़, बाकी सब मर गए।[५९५] आंतरिक इस्राएली लोग वे थे जो अगली पीढ़ी में जंगल में पैदा हुए और बड़े हुए थे, और जिन्होंने चट्टान का पानी पिया था और जिन्होंने निवासस्थान को उत्कृष्ट किया था, उन्होंने यहोशु के नेतृत्व में कनान देश में प्रवेश किया। परमेश्वर ने मूसा को निर्दिष्ट किया कि वह यहोशु को अपने बदले में अगुवा ठहराए:

> तू नून के पुत्र यहोशू को लेकर उस पर हाथ रख; वह ऐसा पुरुष है जिसमें मेरा आत्मा बसा है, और उसको एलीआज़ार याजक के और सारी मण्डली के सामने खड़ा करके उसे आज्ञा दे, और अपनी महिमा में उसे कुछ दे, जिससे इस्राएलियों की सारी मण्डली उसकी माना करे। गिनती २७:१८-२०

जब लोग जासूसों की ख़बर सुन कर डर गए, तो मूसा के द्वारा निवासस्थान के लिए स्थापित की गई नींव पर केवल यहोशू और कालेब अपने विश्वास में कायम रहे। उन्होंने इस तरह पूर्ण विश्वास और वफादारी के साथ निवासस्थान की नींव स्थापित की और अंत तक उसको सम्मान दिया। यद्यपि, मूसा का विश्वास बाद में डांवांडोल हुआ, फिर भी पत्थर की पट्टियाँ, वाचा का संदूक और निवासस्थान, सब निवासस्थान की इस नींव पर जिसे यहोशू ने स्थापित की थी, बरकरार रहे। इसलिए, परमेश्वर ने व्यवस्था की कार्यवाही

---

५९३ निर्गमन ३:२५

५९४ निर्गमन ३४:६

५९५ गिनती ३२:११-१२

का काम नए सिरे से आरम्भ किया, इस बार चट्टान से निकले हुए पानी के आधार पर यहोशू को मूसा के स्थान पर बैठा कर और भीतरी इस्राएलियों को उसकी आज्ञा मनवा कर निवासस्थान की नींव पर उसके साथ खड़ा किया। इस आधार पर उनको कनान देश में प्रवेश करना था, जहाँ उनको पतित प्रवृत्ति निकालने के लिए क्षतिपूर्ति की शर्त पूरी करनी थी। इस प्रकार से, परमेश्वर का इरादा था कि वह तीसरी राष्ट्रीय कार्यवाही में यहोशू पर केन्द्रित वास्तविक नींव स्थापित करेगा।[५९६]

जब मूसा ने मिद्यान के जंगल में चालीस वर्ष की अवधि यथेष्टतापूर्वक व्यतीत की, तब परमेश्वर मूसा के सामने प्रगट हुआ और उसको आदेश दिया कि वह इस्राएलियों को कनान देश में, जहाँ दूध और मधु की नदियाँ बहतीं हैं, ले जाने के लिए उनका नेतृत्व करे।[५९७] उसी प्रकार, जब यहोशू ने विश्वास और भक्ति के साथ चालीस वर्ष जंगल भटकने की अवधि पूरी की, तो परमेश्वर ने स्वयं उसे मूसा की जगह पर सेवा के लिए बुलाया, और आदेश दिया:

> मेरा दास मूसा मर गया है, इसलिए अब तू उठ, कमर बांध, और इस सारी प्रजा समेत यरदन के पार होकर उस देश को जा, जिसे मैं उनको अर्थात इस्राएलियों को देता हूँ।...जैसा मैं मूसा के संग रहा वैसे ही तेरे संग भी रहूँगा; और न तो मैं तुझे धोका दूँगा और न तुझे छोड़ूँगा। इसलिए हियाव बाँध कर दृढ़ हो जा, क्योंकि जिस देश के देने की शपथ मैंने इन लोगों के पूर्वजों से खाई थी, तू इन्हें उसका अधिकारी करेगा। यहोशू १:२, ५-६

परमेश्वर से यह आदेश मिलने के बाद, यहोशू ने लोगों के सारे सरदारों को बुलाया और उनको परमेश्वर का आदेश सुना दिया।[५९८] उन्होंने उत्तर दिया:

> जो कुछ तूने हमें करने की आज्ञा दी है वह हम करेंगे, और जहाँ कहीं तू हमें भजेगा वहाँ हम जाएंगे...कोई क्यों न हो जो तेरे विरुद्ध बलवा करे, और जितनी आज्ञाएं तू दे उनको न माने तो वह मार डाला जाएगा। यहोशू १:१६-१८

यहोशु का अनुगमन करने के लिए उन्होंने अपने जीवन की शपथ खाई। कनान की प्राप्ति के लिए मूसा के मिशन का उत्तराधिकारी बनने से यहोशू ने दूसरी आगमन के मसीह को पूर्वचित्रित किया, जो यीशु का अधूरा मिशन पूरा करने के लिए आएगा। जिस प्रकार यहोशू की कार्यवाही मूसा की कार्यवाही को क्षतिपूर्ति द्वारा बहाल करने लिए थी, दूसरे आगमन के दौर में मसीह को यीशु के आत्मिक पुनरुद्धार की कार्यवाही दोनों शारीरिक और आत्मिक तौर पर क्षतिपूर्ति द्वारा बहाल करनी चाहिए।

दूसरी राष्ट्रीय कार्यवाही में, मूसा ने कनान में बारह जासूस भेजे थे।[५९९] दो जासूसों द्वारा डाली हुई हार्दिक नींव पर जिन्होंने अपना मिशन वफादारी से पूरा किया था, यहोशु ने दो जासूस यरीहो के आरक्षित

---

[५९६] निर्गमन ३:२८
[५९७] निर्गमन ३:८-१०
[५९८] यहोशू १:१०
[५९९] गिनती १३:१-२

नगर में भेजे।[६००] जब दोनों जासूस यरीहो से वापस आए तो उन्होंने खरी सूचना दी: "निःसंदेह यहोवा ने वह सारा देश हमारे हाथ कर दिया है, इसके अतिरिक्त हमारे कारण वहाँ के निवासी घबरा रहे हैं।"[६०१] दूसरी पीढ़ी के इस्राएलियों ने, जो जंगल में पले थे, जासूसों की बातों पर विश्वास किया, और इस विश्वास के द्वारा उन्होंने अपने माता-पिता के पापों का क्षतिपूर्ति द्वारा भुगतान किया, जिन्होंने चालीस दिन की देश की जासूसी का मिशन उचित रीति से नहीं निभाया था।

यहोशु के साथ, जो निवासस्थान की नींव पर खड़ा था, अपने जीवन की शपथ खाने से भीतरी इस्राएली उसके साथ इस नींव पर खड़े हो सकते हैं। चट्टान के पानी के आधार पर व्यवस्था के प्रारंभ को पुनः स्थापित करने से वे वह स्थान प्राप्त कर सके जिस स्थान पर मूसा के नेतृत्व में उनके माता-पिता ने मिस्र से कूच करते समय व्यवस्था को आरम्भ करने के लिए भाग लिया था, जब परमेश्वर ने तीन चिह्न और दस विपत्तियाँ के द्वारा उनके लिए काम किया था। जिस प्रकार मूसा के नेतृत्व में इस्राएलियों ने लाल सागर पार करने से पहले तैयारी की तीन दिन की अवधि समाप्त की थी, यहोशु के नेतृत्व में इस्राएलियों ने यरदन नदी को पार करने से पहले तीन दिन की अवधि समाप्त की।[६०२] दूसरी राष्ट्रीय कार्यवाही में, तीन दिन की अवधि समाप्त होने के बाद, इस्राएली लोगों ने बादल के स्तंभ और आग के स्तंभ की अगुआई में लाल सागर पार किया। उसी तरह, जब इस्राएलियों ने यहोशू की अगुआई में तीन दिन की अवधि समाप्त कर ली थी, तो वाचा का संदूक उन्हें यरदन नदी तक लाया।[६०३] पट्टियाँ जो वाचा के संदूक में रखी हुई थीं, बादल और आग के स्तंभ दोनों यीशु और उसकी होने वाली दुलहन के प्रतीक थे।

मूसा ने अपनी लाठी रास्ता दिखाने और लाल सागर को दो भागों में विभाजित करने के लिए उपयोग की। उसी तरह, यहोशु ने वाचा का संदूक लोगों के सामने मार्गदर्शन के लिए रखा। जब वाचा का संदूक उठाए हुए याजकों ने यरदन नदी में प्रवेश किया, उसका पानी दो भागों में बट गया, और वाचा के संदूक के पीछे नदी के तले पर लोगों के चलने के लिए के लिए रास्ता खुल गया।[६०४] मूसा की लाठी यीशु का प्रतीक थी; उसी तरह, वाचा का संदूक जिसमें पत्थर की पट्टियाँ रखी हुई थीं, मन्ना और हारून की लाठी, यीशु और उसकी होने वाली दुलहन का प्रतीक थीं। इसलिए, वाचा के संदूक के सामने यरदन नदी का दो भागों में विभाजित किया जाना, जिसके कारण इस्राएली लोग सुरक्षित कनान देश में प्रवेश हुए, पूर्वलक्षणना करता है कि यीशु और उसकी दुलहन की उपस्थित में क्या होने वाला है: पतित मानवता, जो पानी का प्रतीक है,[६०५] सदाचारी और दुष्टों के बीच विभाजित हो जाएंगे और न्याय का सामना करेंगे। फिर सभी वफादार विश्वासी विश्वव्यापी स्तर पर कनान को बहाल करेंगे।

यरदन नदी पर पहुँचकर, परमेश्वर ने यहोशु से कहा, प्रजा में से बारह पुरुष चुनकर यह आज्ञा दे, तुम

---

[६००] यहोशू २:१
[६०१] यहोशु २:२४
[६०२] यहोशु ३:२
[६०३] यहोशु ३:३,६
[६०४] यहोशु ३:१६-१७
[६०५] प्रकाशितवाक्य १७:१५

यरदन के बीच में जहाँ याजकों ने पांव धरे थे

> वहाँ से बारह पत्थर उठाकर अपने साथ पार ले चलो, और जहाँ आज की रात पड़ाव होगा वहीं उनको रख देना। यहोशु ४:२-३

लोगों ने ऐसा ही किया:

> पहले महीने के दसवें दिन को प्रजा के लोगों ने यरदन में से निकल कर यरीहो की पूर्वी सीमा पर गिलगाल में अपने डेरे डाले, और जो बारह पत्थर यरदन में से निकाले गए थे, उनको यहोशु ने गिलगाल में खड़े कर दिए। यहोशु ४:१९-२०

यह क्या पूर्वलक्षणना करता है? जैसे कि पहले यह चर्चा की गई है कि चट्टान यीशु का प्रतीक है। तदनुसार, जब बारह प्रधान, जो बारह गोत्रों का प्रतिनिधित्व करते हैं, जब यरदन नदी का पानी वाचा के संदूक के द्वारा विभाजित हुआ था, उसके बीच में से बारह पत्थर लेकर चले थे, यह पूर्वलक्षणना करता है कि यीशु के बारह चेलों को, जो बारह गोत्रों को दर्शाते हैं, उसके आने पर क्या करना चाहिए: जहाँ कहीं उस का वचन इस पतित संसार में भले और बुरे को विभाजित करके न्याय करता है, हर जगह उन्हें यीशु का समर्थन करना चाहिए।

उन्होंने बारह पत्थर लिए और कनान देश में गिलगाल के पड़ाव में खड़े कर दिए, यहोशु ने कहा, "इसलिए कि पृथ्वी के सब लोग जान लें कि यहोवा का हाथ बलवन्त है, और तुम हमेशा अपने परमेश्वर यहोवा का भय मानते रहो।"[६०६] यह पूर्वलक्षणना करता है कि यीशु के बारह चेलों को भी एक मत होना चाहिए; तब ही वे विश्वव्यापी कनान का पुनरुद्धार पूरा कर सकेंगे, ताकि संसार भर में लोग परमेश्वर की शक्ति की निरंतर प्रशंसा करते रहें।

जिस प्रकार, याकूब ने जहाँ कहीं भी वह गया पत्थर की वेदी बनाई, उसी तरह याकूब के बारह पुत्रों के वंश के बारह गोत्रों के प्रतिनिधियों ने परमेश्वर की महिमा के लिए बारह पत्थर इकट्ठे करके एक वेदी बनाई। उन्हें अंततः मंदिर बनाना था। यह पूर्वलक्षणना करता है कि यीशु के बारह चेलों को एक होकर यीशु को मंदिर के रूप में मान देना चाहिए था। इसी वजह से, जब यीशु के चेले एक जुट नहीं हो रहे थे, यीशु ने कहा, "इस मंदिर को ढा दो, और मैं तीन दिन में इसे खड़ा कर दुँगा।"[६०७] वास्तव में बारह चेले एक साथ संगठित नहीं हो सके, और उनमें से एक, यहूदा इस्करियोती ने तो यीशु को उसके दुश्मनों के हाथ बेच डाला था। यीशु के सूली पर चढ़ाए जाने के बाद ही, और उसके पुनरुत्थान के तीन दिन बाद, वह अपने बिखरे हुए चेलों को वापस एक साथ कर सका। तब चेलों ने पुनर्जीवित यीशु को आत्मिक मंदिर के रूप में मान्यता दी। उसके दूसरे आगमन पर ही उसके अनुयाई उसकी सेवा साक्षात् मंदिर के रूप में कर सकेंगे।

इस्राएली लोग जब मिस्र से कूच करके कनान के देश के लिए रवाना हुए, उन्होंने पहले महीने के

---

[६०६] यहोशु ४:२४
[६०७] यूहन्ना २:१९

चौधवें दिन बिना ख़मीर की रोटी का पर्व मनाया।[६०८] उसी तरह यहोशू के नेतृत्व में इस्राएलियों ने भी, जिन्होंने गिलगाल में पड़ाव डाला था, उस वर्ष के पहले महीने के चौधवें दिन फसह का पर्व मनाया। उसके बाद वे यरीहो के नगर की ओर रवाना हुए। जब वे वहाँ की भूमि की उपज पर निर्भर रहने लगे, तो परमेश्वर ने मन्ना, जो वह उन्हें चालीस वर्ष से देता आया था, देना बन्द कर दी। उस समय से उन्हें अपने पसीने की मेहनत करके अपनी जीविका कमानी थी। इसके अतिरिक्त, जब तक उन्होंने शैतान के कब्ज़े के आख़िरी शहर का अंत नहीं कर डाला, तब तक उन्हें अपना उत्तरदायित्व भरसक प्रयत्न से पूरा करना था।

जैसे ही वे यरीहो के पास पहुँचे, परमेश्वर के आदेशानुसार इस्राएलियों ने चालीस हज़ार सैनिक आगे कर दिए, जबकि याजकों ने, जो सैनिकों के पीछे चल रहे थे, सात तुरहियाँ फूँक कर बजाईं। उनके पीछे लेवी याजक वाचा का संदूक लिए हुए चले, और बाकी सारी सेना पीछे चल रही थी। इस्राएली इस क्रम से गढ़ वाले नगर के चारों ओर दिन में एक बार छः दिन तक घूमें, परन्तु इससे नगर पर कोई असर नहीं पड़ा। धैर्य और आज्ञाकारिता के साथ लोग, सृष्टि के छः दिन जो शैतान के कब्ज़े में चले गए थे, बहाल कर रहे थे। जब उन्होंने वफादारी से छः दिन झेले, सातवें दिन सात याजकों ने तुरही बजाते हुए सात बार नगर की दीवारों के चारों ओर चक्कर लगाए, और यहोशू ने लोगों से कहा "जयजयकार करो, क्योंकि यहोवा ने यह नगर तुम्हें दे दिया है।"[६०९] लोगों ने ज़ोर से चिल्लाया और नगर की दीवारें नीचे गिर गईं। यरीहो की विजय[६१०] पूर्वलक्षणना करती है कि मसीह की शक्ति और उसके अनुयाइयों के कामों से, स्वर्ग और पृथ्वी के बीच के शैतानी नाके टूट जाएंगे। एक बार गिराए जाने के बाद यह दीवार फिर कभी नहीं बनेगी। यहोशू ने इस प्रकार घोषणा की:

> "जो मनुष्य उठकर इस नगर यरीहो को फिर से बनाए वह यहोवा की ओर से शापित हो। जब वह उसकी नींव डालेगा तब उस का जेठा पुत्र मरेगा, और जब वह उसके फाटक लगवाएगा तब उसका छोटा पुत्र मरेगा" यहोशु ६:२६

यहोशु ने तब शत्रु पर भयंकर शक्ति के साथ आक्रमण किया। उसने सब मिलाकर इकत्तीस राजाओं को परास्त किया।[६११] यह पूर्वलक्षणना करता है कि मसीह पृथ्वी पर स्वर्ग का संयुक्त राज्य स्थापित करने के लिए राजाओं का राजा बन कर आएगा, और अन्य जाति के राजाओं का पूर्ण समर्पण करवाएगा और उनके लोगों के दिलों को जीतेगा।

२.२.३.३ मसीह के लिये नींव

हमने यह सीखा है कि जब इस्राएली लोग देश की जासूसी के चालीस दिन का मिशन पूरा नहीं

---

[६०८] निर्गमन १२:१७-१८
[६०९] यहोशु ६:१६
[६१०] यहोशु ६
[६११] यहोशु १२:९-२४

कर सके, जो उन्हें शैतान से अलग होने के लिए शर्त के रूप में दिया गया था, वे कनान की प्राप्ति के लिए दूसरी राष्ट्रीय कार्यवाही में विफल हुए। तीसरी राष्ट्रीय कार्यवाही में इस विफलता के लिए उन्हें क्षतिपूर्ति के भुगतान के रूप में चालीस वर्ष तक जंगल में भटकना पड़ा। इस दौरान मूसा ने तीसरी कार्यवाही के लिए विश्वास की नींव डाली, अब निवासस्थान की इस नींव पर इस्राएली खड़े थे। तो भी, लोगों की अविश्वसनीयता और मूसा का चट्टान को दो बार मारने के कारण शैतान ने यह दो नींव भ्रष्ट कर दीं। फलस्वरूप, यहोशु और कालेब के सिवा पुरानी पीढ़ी के सारे इस्राएली जंगल में मर गए। केवल यहोशु और कालेब ने दूसरी कार्यवाही में विश्वास की नींव और निवासस्थान की नींव पर, जो मूसा ने स्थापित की थी, खड़े होकर वफादारी के साथ चालीस दिन का जासूसी का मिशन पूरा किया। फलस्वरूप, उन्होंने निवासस्थान के लिए नींव स्थापित कर ली। दूसरी पीढ़ी के इस्राएलियों ने यहोशू के नेतृत्व में, जो अब मूसा के स्थान पर था, पूरे विश्वास के साथ वाचा का संदूक उठाए हुए यरदन नदी पार की। तब, गढ़ वाले नगर यरीहो पर विजय पाकर उन्होंने प्रतिज्ञा के देश कनान में प्रवेश किया। इस विजय के आधार पर तीसरी राष्ट्रीय कार्यवाही में उन्होंने वास्तविक नींव डाली और इस कार्यवाही में, हालांकि, बिना राजसत्ता की प्रजा के रूप में, मसीह की नींव स्थापित की। अब्राहम के दिनों में मसीह के लिए पारिवारिक नींव स्थापित हो चुकी थी। उसके वंश ने कनान में प्रवेश करने से पहले मिस्र में दास के रूप में चार सौ वर्ष क्षतिपूर्ति की अवधि व्यतीत की और वहाँ मसीह के लिए राष्ट्रीय नींव पूरी की। यह करने के लिए केवल कनान में घुसना और उसपर विजय प्राप्त करना ही काफी नहीं था। जैसा कि पहले ब्योरे में यह चर्चा की गई है,[६१२] पतित लोगों ने पहले ही मिस्र जैसे शक्तिशाली राष्ट्र स्थापित कर लिए थे, जो शैतानी शासकों द्वारा चलाए जाते थे और परमेश्वर के पुनरुद्धार की दैवी योजना का विरोध करते थे। इसलिए, यद्यपि यहोशू के नेतृत्व में मसीह के लिए राष्ट्रीय नींव स्थापित हो गई थी, फिर भी यह आवश्यक था कि एक अधिपति राज्य स्थापित किया जाए जहाँ से मसीह दुनिया के शैतानी देशों का सामना कर सके। परन्तु, नई पीढ़ी के इस्राएली भी कनान में प्रवेश करते ही अविश्वासी हो गए। इसलिए, परमेश्वर की दैवी योजना फिर से प्रवर्धित हो गई, और यीशु के आने तक अनेक बार बाधा का कारण बनी।

२.३ मूसा की कार्यवाही से सीखे गए कुछ पाठ

संपूर्ण इतिहास में धार्मिक लोगों ने मूसा के बारे में बाईबल में पढ़ा और सोचा कि यह केवल मूसा के जीवन की कथा और इस्राएलियों के इतिहास का अभिलेख है। कोई भी वस्तुतः यह नहीं समझ सका कि इन विवरणों से परमेश्वर का इरादा पुनरुद्धार की एक विशेष योजना को प्रदर्शित करना था। यीशु ने तो केवल अनुसरण किया, और यह कहा, "पुत्र अपने आप कुछ नहीं कर सकता, केवल वह जो पिता को करते देखता है, क्योंकि जिन-जिन कामों को वह करता है उन्हें पुत्र भी उसी रीति से करता है।"[६१३] वह मूसा की कार्यवाही के सच्चे महत्व को प्रकाशित किए बिना ही चल बसा।[६१४]

[६१२] प्रति-संदर्भ—नींव ३.३
[६१३] यूहन्ना ५:१९
[६१४] यूहन्ना १६:१२

इन पन्नों पर हमने यह प्रदर्शित किया है कि मूसा पुनरुद्धार की दैवी योजना के लिए किस प्रकार उदाहरण बनकर आदर्श पथ पर चला। इस संभाग और अगले संभाग के बीच तुलना करके पाठकों को यह स्पष्ट हो जाएगा कि परमेश्वर ने मूसा की कार्यवाही के द्वारा पहले से यह दिखाया कि यीशु को किस पथ पर चलना होगा। तथापि, केवल मूसा पर केन्द्रित दैवी योजना के पठन के द्वारा ही हम इस निष्कर्ष पर नहीं पहुँच सकते हैं कि परमेश्वर का अस्तित्व है, और कि वह एक पूर्ण उद्देश्य को संपन्न करने के लिए मानव इतिहास का मार्ग दर्शन करता आ रहा है।

मूसा की कार्यवाही यह भी प्रमाणित करती है कि किसी के जीवन का यथार्थ परिणाम, उसके लिए परमेश्वर की पूर्वनिर्धारित योजना होने के बावजूद भी, उस व्यक्ति का अपने हिस्से की ज़िम्मेदारी पूरी करने या ना करने पर निर्भर होता है। परमेश्वर की पूर्वनिर्धारित इच्छा की प्राप्ति नहीं की जा सकती, यदि कोई व्यक्ति जिसे वह तृप्ति के लिए सौंपी गई हो अपने हिस्से की ज़िम्मेदारी पूरी नहीं करता। विशेष रूप से, परमेश्वर ने पहले से यह कहा था कि मूसा इस्राएलियों को दूध और मधु की भूमि, कनान, में ले जाएगा, और उसको यह करने का आदेश भी दिया था। तथापि, जब मूसा और लोगों ने अपनी ज़िम्मेवारी पूरी नहीं की तो पहली पीढ़ी के सारे लोग जंगल में मर गए, केवल यहोशु और कालेब ही ने कनान में प्रवेश किया।

इसके अतिरिक्त, मनुष्य की अपने हिस्से की ज़िम्मेदारी में परमेश्वर हस्तक्षेप नहीं करता, परन्तु केवल उनके कार्य के परिणाम के आधार पर निपटारा करता है। यद्यपि परमेश्वर अद्भुत चिह्नों और चमत्कारों के द्वारा लोगों का मार्ग दर्शन करता है, उसने उनके करतूतों में कभी हस्तक्षेप नहीं किया, जब मूसा पर्वत पर गया था और उन्होंने सोने के बछड़े की पूजा की और उसने मूसा को चट्टान को दो बार मारने से नहीं रोका। जब उन्होंने ऐसा किया, तो वे अपने हिस्से की ज़िम्मेदारी निभा रहे थे, जिसे पूरा करना केवल उन्हीं का काम था। हालाँकि, जब उन्होंने अपनी ज़िम्मेवारी को पूरा कर लिया या पूरा करने में विफल हुए, तो परमेश्वर ने उनके परिणाम ही को देखा और उसके अनुकूल उनको निपटारा दिया।

मूसा की कार्यवाही परमेश्वर की पूर्व नियत इच्छा की दृढ़ता को दर्शाता है। परमेश्वर अपनी इच्छा का पूरा होना सर्वथा पूर्वनिर्धारित करता है और उसे कार्याविन्त करने का प्रयास करता है जब तक वह पूरी न हो। इस प्रकार, जब मूसा अपनी ज़िम्मेवारी पूरी नहीं कर सका, तो परमेश्वर ने उसका उत्तराधिकारी ढूँढ लिया, यहोशु, और उसके द्वारा अपनी इच्छा पूरी करने के लिए दृढ़ता से उसके साथ काम किया। साधारणतः, जब कोई हाबिल के स्थान पर खड़ा है, जिसे परमेश्वर ने चुना हो, वह अपना दिया हुआ मिशन पूरा नहीं करता, तो अन्य कोई कैन के स्थान पर क्यों न हो, और जिसने पूर्ण भक्ति दिखाई हो, वह हाबिल वर्ग के व्यक्ति के बदले में नियुक्त किया जाएगा और उसके मिशन का उत्तराधिकारी बनेगा। यीशु ने एक ऐसी ही तुलनात्मक स्थिति का वर्णन किया है, जब उसने कहा, "यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के दिनों से अब तक स्वर्ग के राज्य में बलपूर्वक प्रवेश होता रहा है और बलवान उसे छीन लेते हैं।"[६१५]

[६१५] मत्ती ११:१२, संदर्भ—मसीह २:३

मूसा की कार्यवाही यह दर्शाती है कि किसी का मिशन जितना महान हो उसे उतने बड़े परीक्षण का सामना करना पड़ता है। क्योंकि हमारे पहले पूर्वज पतित हुए और उन्होंने परमेश्वर से मुंह मोड़ लिया था, इसलिए मुख्य व्यक्तियों को, जिन्हें विश्वास की नींव बहाल करनी होती है, ऐसे ही एक परीक्षण पर प्रबल होना पड़ता है कि जब परमेश्वर उन्हें त्याग देता है। मूसा को, इससे पहले कि वह इस्राएलियों की अगवाई करने के पद पर चढ़ सके, एक ऐसे ही परीक्षण पर प्रबल होना पड़ा जब परमेश्वर ने उसे मार डालने की कोशिश की।[६१६]

पतन के कारण शैतान ने शर्त के रूप में मनुष्य को अपने साथ रिश्ते में बांध लिया था। परिणाम स्वरूप परमेश्वर मनुष्य को आवश्यक शर्त के बिना अनुग्रह प्रदान नहीं करता, यदि उसने ऐसा किया तो शैतान दोष लगाएगा। इसलिये, जब परमेश्वर अनुग्रह प्रदान करने जा रहा हो तो शैतान को दोष लगाने से रोकने के लिए अनुग्रह देने से पहले या बाद, उस व्यक्ति की परीक्षा लेता है। मूसा की कार्यवाही इसके लिए उदाहरण बताती है। परमेश्वर ने मूसा को, फिरौन के महल में चालीस वर्ष बिताने की परीक्षा के बाद ही, पहली कार्यवाही शुरू करने और मिस्र को रवाना होने के लिए अनुग्रह प्रदान किया। परमेश्वर ने उसे मिद्यान के जंगल में चालीस वर्ष रहने की परीक्षा के बाद ही मिस्र से कूच करने और दूसरी कार्यवाही शुरू करने के लिए अनुग्रह प्रदान किया।[६१७] मूसा को मार डालने की परीक्षा[६१८] देने के बाद ही परमेश्वर ने उसे तीन चिह्न और दस विपत्तियों[६१९] का अनुग्रह प्रदान किया। तीन दिन[६२०] की कार्यवाही की परीक्षा देने के बाद ही परमेश्वर ने बादल के स्तंभ और अग्नि स्तंभ प्रदान किए[६२१]। लाल सागर[६२२] पार करने के बाद ही परमेश्वर ने मन्ना और बटेर[६२३] का अनुग्रह प्रदान किया। अमालेकियों[६२४] से युद्ध करने की परीक्षा लेने के बाद ही परमेश्वर ने उन्हें पत्थर की पट्टियाँ, निवासस्थान और वाचा का संदूक का अनुग्रह प्रदान किया।[६२५] जंगल में चालीस वर्ष भटकने के बाद ही उन्हें चट्टान से पानी[६२६] का अनुग्रह प्राप्त हुआ था। जब परमेश्वर ने तेज़ विष वाले सांप भेजे थे, तो लोगों के पश्चाताप की शर्त के बाद ही उन्हें कांसे के सांप[६२७] का अनुग्रह मिला था। मूसा की कार्यवाही हमें यह सब सबक सिखाती है।

---

[६१६] निर्गमन ४:२४
[६१७] निर्गमन ४:२-९
[६१८] निर्गमन ४:२५
[६१९] निर्गमन ७:१०
[६२०] निर्गमन १०:२२
[६२१] निर्गमन १३:२१
[६२२] निर्गमन १४:२१-२२
[६२३] निर्गमन १६:१३
[६२४] निर्गमन १७:१०
[६२५] निर्गमन ३१:१८
[६२६] गिनती २०:९
[६२७] गिनती २१:६-९

संभाग ३

यीशु की अगवाई के अंतर्गत पुनरुद्धार की दैवी योजना

आदि में, आदम को दूतों पर शासन करना चाहिए था;[६२८] परन्तु उसके पतन के कारण, मनुष्य शैतान के राज्य के अधीन हो गए और दुनिया में नरक बना दिया। इसे क्षतिपूर्ति द्वारा बहाल करने के लिए यीशु दूसरे आदम के रूप में, शैतान को स्वयं वश में करने और स्वर्ग का राज्य स्थापित करने के लिए आया। परन्तु, शैतान जो परमेश्वर के आगे भी नहीं झुकता, वह यीशु और विश्वासी लोगों के सामने कदापि नहीं झुकेगा। चूँकि, परमेश्वर ने मनुष्य की रचना की इसलिए परमेश्वर ने यह ज़िम्मेवारी अपने हाथ में ली, याकूब और मूसा को बढ़ाकर उनके ज़रिये नमूने के तौर पर एक ऐसी कार्यवाही प्रकट की जिसकी नकल करके यीशु शैतान को वश में कर सके।[६२९]

शैतान को अधीन करने के लिए, याकूब प्रतीकात्मक मार्ग पर चला, जबकि मूसा ने छवि कार्यवाही के पथ का उपयोग किया। उनकी कार्यवाहियाँ यीशु को ठीक मार्ग पर चलने के लिए पथ प्रदर्शक बनीं। कनान के पुनरुद्धार की विश्वव्यापी कार्यवाही में यीशु ने उस नमूने का अनुसरण किया जो मूसा ने कनान की प्राप्ति के लिए राष्ट्रीय कार्यवाही के दौरान शैतान को अधीन करने का कार्य करके प्रदर्शित किया था।

परमेश्वर ने मूसा से कहा, "इसलिए मैं उनके लिए उनके भाइयों के बीच में से तेरे समान एक नबी को उत्पन्न करूँगा और अपना वचन उसके मुंह में डालूँगा, और जिस-जिस बात की मैं उसे आज्ञा दुंगा वही वह उनको कह सुनाएगा।"[६३०] "तेरे समान एक नबी को" यह परमेश्वर ने यीशु की ओर संकेत करते हुए कहा, जो उसी पथ पर चलेगा जिसपर मूसा चला। जब यीशु ने कहा, "पुत्र आप से कुछ नहीं कर सकता, केवल वह जो पिता को करते देखता है, क्योंकि जिन-जिन कामों को वह करता है उन्हें पुत्र भी उसी रीति से करता है,"[६३१] उसके कहने का अर्थ था कि परमेश्वर ने मूसा के ज़रिए आदर्श पथ प्रकट किया है और वह मूसा के पद चिह्नों पर चल रहा है। आइए हम यीशु पर केन्द्रित पुनरुद्धार की दैवी योजना की जाँच करें, और मूसा के नेतृत्व के अंतर्गत कनान की प्राप्ति के लिए तीन राष्ट्रीय कार्यवाहियाँ और यीशु की अगवाई में कनान की प्राप्ति के लिए तीन विश्वव्यापी कार्यवाहियों के बीच प्रासंगिक तुलना करें।

३.१ कनान की प्राप्ति के लिये पहली विश्वव्यापी कार्यवाही

३.१.१ विश्वास की नींव

कनान की प्राप्ति की पहली विश्वव्यापी कार्यवाही में विश्वास की नींव पुनःस्थापित करने का मिशन जिसे सौंपा गया था वह प्रमुख व्यक्ति यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला था। यूहन्ना किस स्थान पर

---

[६२८] १कुरिंथियों ६:३

[६२९] संदर्भ—मूसा और यीशु १.१

[६३०] व्यवस्थाविवरण १८:१८

[६३१] यूहन्ना ५:१९

खड़ा होकर यह मिशन पूरा करने वाला था? मूसा के नेतृत्व में कनान की प्राप्ति के लिए राष्ट्रीय कार्यवाही में मूसा ने पत्थर की पट्टियाँ तोड़ दी थीं और चट्टान को दो बार मारा था। इन घटनाओं के परिणाम स्वरूप, यदि उन दिनों के यहूदी लोगों ने यीशु पर विश्वास नहीं किया तो शैतान को यीशु के शरीर पर, जो पट्टियों और चट्टान की परिपूर्णता दर्शाता है, वार करने की शर्त बनती है।

यीशु को इस शर्त से छूट उसी समय मिल सकती थी जब चुने हुए लोगों को, जिन्हें उसके आगमन की तैयारी का मिशन सौंपा गया था, मंदिर पर जो आने वाले मसीह का छवि निरूपण है केंद्रित होकर एक साथ संगठित होना चाहिए। परन्तु वर्षों से इस्राएली लोग लगातार अविश्वास में गिरते रहे, यथा शैतान को यीशु पर हमला करने की शर्तें बढ़तीं गईं। इन शर्तों को मिटाने के लिए, परमेश्वर ने एलिय्याह नामक भविष्यद्वक्ता को भेजा। एलिय्याह ने अशेरा और बाल के कुल ८५० नबियों को पराजित करके शैतान से अलग होने का कार्य किया,[६३२] और तब स्वर्ग पर चढ़ गया।[६३३] परंतु, चूँकि एलिय्याह ने अपना सम्पूर्ण मिशन पूरा नहीं किया था इस लिए उसे वापस आना पड़ा।[६३४] यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला वह भविष्यद्वक्ता था जो एलिय्याह[६३५] के रूप में, शैतान को अलग करने और उसके अधूरे मिशन को पूरा करने के लिए आया था और कि वह प्रभु का रास्ता सीधा करे।[६३६]

इस्राएलियों ने मिस्र में चार सौ वर्ष किसी भविष्यद्वक्ता के मार्गदर्शन के बिना कठिनाइयाँ और दुख सहे थे। अंततः उन्हें मूसा मिला, यह वह आदमी था जो उन्हें एक राष्ट्र के रूप में मसीह को ग्रहण करने की तैयारी में कनान ले जा सकता था। उसी प्रकार, यहूदी लोगों ने मसीह के आगमन की तैयारी के चार सौ वर्ष की अवधि में, जो मलाकी नबी के समय में शुरू हुई, किसी भविष्यद्वक्ता के मार्गदर्शन के बिना अन्य जातियों के देश फारस, यूनान, मिस्र, सीरिया और रोम में अनेक प्रकार के क्लेश और अत्याचार सहे।[६३७] अंत में वे यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले से मिले, यह वह आदमी था जो उन्हें मसीह के पास ले जाएगा, मसीह, जो विश्वव्यापी कनान का पुनरुद्धार करने के लिए आ रहा था।

इस प्रकार, यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला, मूसा की तरह, शैतान से अलग करने की चार सौ वर्ष की अवधि की नींव पर बुलाया गया था। मूसा जब वह महल ही में था अपने भाइयों से और अपने बापदादों की परम्परा से प्रेम करना सीख गया था। उसी प्रकार, यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने जब वह जंगल में टिड्डियों और जंगली मधु खा कर रहता था परमेश्वर पर विश्वास और आज्ञाकारिता का मार्ग सीखा। उस का जीवन इतना आदर्श था कि याजक, लेवी और बहुत से लोगों को संदेह था कि वह मसीह तो नहीं है।[६३८] इस प्रकार से यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने सफलतापूर्वक शैतान से अलग होने का चालीस का

---

[६३२] १राजाओं १८:१९
[६३३] २राजाओं २:११
[६३४] मलाकी ४:५
[६३५] मत्ती ११:१४, १७:१३
[६३६] यूहन्ना १:२३
[६३७] संदर्भ—काल ३:६
[६३८] यूहन्ना १:१९, लूक ३:१५

विधान स्थापित किया और कनान के पुनरुद्धार की पहली विश्वव्यापी कार्यवाही के लिए विश्वास की नींव खड़ी की।

३.१.२ *वास्तविक नींव*

चूँकि यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला मूसा के स्थान पर खड़ा था, इसलिए वह माता-पिता और बच्चे की युगल स्थिति में था। माता-पिता के स्थान से उसने क्षतिपूर्ति द्वारा विश्वास की नींव पुनःस्थापित की। बच्चे के स्थान पर खड़े होकर उसने पतित प्रवृत्ति निकालने की क्षतिपूर्ति की शर्त पूरी करने के लिए हाबिल का स्थान सुरक्षित किया।[६३९] यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने विश्व स्तर पर एक नींव वापस बरामद की जो तुलना में मूसा के द्वारा डाली गई नींव के बराबर थी, जो उसने फिरौन के महल में चालीस वर्ष रहने के बाद पहली राष्ट्रीय कार्यवाही के दौरान डाली थी।

मूसा के दिनों में, पहली व्यवस्था शुरू करने के समय जब लोगों ने मूसा को मिस्री सरदार को घात करते हुए देखा था तो परमेश्वर चाहता था कि इस घटना से इस्राएली लोग मूसा पर अपने भरोसे को बढ़ाएं। इस्राएली लोग उस समय मिस्र की शैतानी दुनिया को छोड़ कर कनान देश की यात्रा पर जा रहे थे। परंतु, यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के समय यहूदी लोगों को रोमी साम्राज्य छोड़ कर किसी अन्य देश में नहीं जाना था। उन्हें उसी साम्राज्य में रह कर उसके लोगों को राज़ी करके उस साम्राज्य को परमेश्वर के पक्ष में करना था। परमेश्वर ने यहूदी लोगों को यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के जीवन के चमत्कारों के द्वारा उत्साहित करके व्यवस्था का आरम्भ किया।

यूहन्ना के जन्म पर एक दूत ने बच्चे के संबंध में अद्भुत भविष्यवाणी की। जब उसके पिता ज़करयाह ने विश्वास नहीं किया, तो वह गूंगा कर दिया गया, उस का मुंह उसी समय खुला जब उसने बच्चे का ख़तना किया और उसका नाम रखा। इन सब बातों और अन्य चमत्कारों के द्वारा, इस्राएली लोगों ने प्रतीति की कि यूहन्ना परमेश्वर द्वारा भेजा गया भविष्यद्वक्ता था:

> "उसके आस पास के सब रहने वालों पर भय छा गया, और उन सब बातों की चर्चा यहूदिया के सारे पहाड़ी देश में फैल गई और सब सुनने वालों ने अपने-अपने मन में विचार करके कहा, 'यह बालक कैसा होगा' क्योंकि प्रभु का हाथ उसके साथ था।" लूक १:६५-६६

इसके अतिरिक्त, यूहन्ना जंगल में टिड्डे और मधु खा कर वैराग्य और प्रार्थना का महान जीवन व्यतीत करता था। आम जनता और यहाँ तक कि याजक लोग उसे इतना आदर और सम्मान देते थे कि बहुत लोग मन में विचार करते थे कि क्या यही मसीह तो नहीं है।[६४०]

जब मूसा ने फिरौन के महल में चालीस वर्ष रह कर क्षतिपूर्ति की अवधि समाप्त की और एक मिस्री को मार डाला, तो इस घटना से इस्राएली लोगों को अपने प्रति उसका प्रेम देख कर बहुत उत्प्रेरित

---

[६३९] संदर्भ—मूसा और यीशु २.१.२

[६४०] लूक ३:१३, यूहन्ना १:१९

होना चाहिए था और उसपर विश्वास करके उसके पीछे चलना चाहिए था। तब वे लोग लाल समुद्र पार करके जंगल में भटकने के बजाए सीधे कनान में चले जाते, और उन्हें पत्थर की पट्टियों, वाचा के संदूक और निवासस्थान की कोई आवश्यकता नहीं होती। उसी तरह, यीशु के समय के यहूदी लोगों को यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले पर, जिसे परमेश्वर ने उनके विश्वास का केन्द्र-बिन्दु के रूप में चिह्न और चमत्कारों के साथ बढ़ाया था, विश्वास करके उसके पीछे चलना चाहिए था। इस तरह, वे पतित प्रवृत्ति निकालने की क्षतिपूर्ति की शर्त पूरी कर लेते और वास्तविक नींव खड़ी कर लेते, फलस्वरूप, वे तत्काल ही मसीह के लिए नींव खड़ी कर लेते।

३.१.३ कानन के प्राप्ति की पहली विश्वव्यापी कार्यवाही का विफल होना

यहूदी लोग यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की डाली हुई विश्वास की नींव पर खड़े थे और उसके पीछे ऐसे चलते थे जैसे कि वह मसीह के पीछे चल रहे हों।[६४१] इस तरह उन्होंने पुराने नियम के युग का अंत किया और वे विश्वव्यापी कनान की प्राप्ति की नई कार्यवाही आरंभ करने के लिए तैयार थे। तथापि, जैसे कि पहले बताया गया है,[६४२] यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले को यीशु के बारे में कुछ संदेह था, हालांकि, उसने यीशु के बारे में गवाही दी थी। उसने अपने प्रतिनिधि भेज कर यीशु से पूछा, “क्या आनेवाला तू ही है, या हम किसी दूसरे की बाट जोहें”?[६४३] यद्यपि, वह वास्तव में एलिय्याह का मिशन पूरा करने के लिए आया था[६४४] फिर भी उस ने इनकार किया कि वह एलिय्याह है। इससे न केवल यहूदियों का यीशु के पास जाने का रास्ता बंद हुआ उलटा उसका विरोध करने का अवसर खुल गया। वस्तुतः, यूहन्ना ने हाबिल का स्थान त्याग दिया, और यहूदी लोगों को प्रमुख व्यक्ति की अगवाई से, जिसके द्वारा वे पतित प्रवृत्ति निकालने की क्षतिपूर्ति की शर्त पूरी कर सकते थे, वंचित कर दिया। यह घटना उन्हें मसीह के लिए वास्तविक नींव पूरी करने के लिए रुकावट का कारण बनी। परिणामस्वरूप, कनान के पुनरुद्धार की पहली विश्वव्यापी कार्यवाही निष्फल हो गई। जिस प्रकार मूसा के समय में हुआ था कि वह दूसरी और तीसरी कार्यवाही तक प्रवर्धित हुई।

३.२ कानन की प्राप्ति की दूसरी विश्वव्यापी कार्यवाही

३.२.१ विश्वास की नींव

३.२.१.१ यीशु का यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का मिशन धारण करना

यीशु की तुलना में, जो पूर्ण आदम था, यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला वापस जिलाए गए आदम के

---

[६४१] यूहन्ना १:१९, लूक ३:१५
[६४२] संदर्भ—मसीह २
[६४३] मत्ती ११:३
[६४४] यूहन्ना १:२१

स्थान पर आया था। उसे मसीह की नींव स्थापित करनी थी, इस प्रकार, उसे अतीत के सारे प्रमुख व्यक्तियों के अधूरे मिशनों को पूरा करना था, जिन्होंने विश्वास की नींव और वास्तविक पुनःस्थापित करने के लिए मेहनत की थी। इस नींव पर उसे दैवी योजना के इतिहास के सारे फल यीशु को प्रस्तुत करने थे और यहूदी लोगों का, जो उसपर विश्वास करते थे और उसके पीछे चलते थे, यीशु को ग्रहण करने के लिए मार्गदर्शन करना था। अंततः, उसे स्वयं विश्वास और भक्ति के साथ यीशु की सेवा में आना था।

यद्यपि यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले को इस का ज्ञान नहीं था, जो बपतिस्मा उसने यरदन नदी[६४५] में यीशु को दिया था, वास्तव में वह परमेश्वर की इच्छा के हेतु, यूहन्ना के पूर्ण जीवन की उपलब्धियों का यीशु को भेंट का धर्माचार था।

तथापि, क्योंकि यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने उत्तरोत्तर यीशु पर संदेह किया, और अंततः उसके कामों का भी अवमूल्यन किया, इस तरह यहूदी लोगों को, जो यूहन्ना को अत्यधिक मान्यता देते थे, यीशु पर विश्वास न करने के लिए मजबूर कर दिया।[६४६] परिणाम स्वरूप, विश्वास की नींव, जो यूहन्ना ने कनान की प्राप्ति की पहली विश्वव्यापी कार्यवाही के लिए खड़ी की थी, शैतान के दावे में चली गई। अब यीशु को ख़ुद ही यूहन्ना के मिशन का बेड़ा उठाना पड़ा और कनान के प्राप्ति की दूसरी विश्वव्यापी कार्यवाही का काम करने के लिए क्षतिपूर्ति द्वारा विश्वास की नींव बहाल करने का काम शुरू किया। जब यीशु ने जंगल में चालीस दिन का उपवास रखा, वह केवल विश्वास की नींव बहाल करने के उद्देश्य से शैतान को विलग करने के लिए ही था; परन्तु इसके लिए उसे यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का स्थान ग्रहण करके अपने आप को नीचा करना पड़ा।

यीशु जो परमेश्वर का इकलौता पुत्र और महिमा का प्रभु बन कर आया था, उसे दुख के मार्ग पर चलना आवश्यक नहीं था।[६४७] बजाए इसके, यह यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का मिशन था कि वह क्लेश उठा कर यीशु के लिये रास्ता सीधा करे।[६४८] परन्तु, क्योंकि यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने अपनी ज़िम्मेवारी पूरी नहीं की, यीशु को यूहन्ना की जगह दुःख उठाना पड़ा। यीशु ने पतरस को आदेश दिया कि वह यहूदियों को यह न बताए कि वह मसीह है[६४९] क्योंकि, यद्यपि वह मसीह था, उसने दैवी योजना के इस पहलू को शुरू करने के उद्देश्य से यूहन्ना की भूमिका निबाहने का बेड़ा उठाना पड़ा था।

३.२.१.२ यीशु का जंगल में चालीस दिन का उपवास और तीन प्रलोभन

आइए हम यीशु के चालीस दिन के उपवास और उसके तीन प्रलोभनों के दूरवर्ती और समीपवर्ती मूल कारणों की जाँच करें। कनान के पुनरुद्धार की राष्ट्रीय कार्यवाही में, जब मूसा चट्टान के सामने खड़ा

---

[६४५] मत्ती ३:१६
[६४६] संदर्भ—मसीह २.२
[६४७] १कुरिन्थियों २:८
[६४८] यूहन्ना १:२३, लूक १:७६
[६४९] मत्ती १६:२०

हुआ, वह विश्वास में अस्थिर हो गया और उसने चट्टान को दो बार मारा दिया। परिणाम स्वरूप, चट्टान, जो यीशु का प्रतीक थी,[६५०] शैतान के द्वारा भ्रष्ट की गई। यह घटना इस संभावना की पुष्टि करती है कि सदियों बाद, जब यीशु मूसा के नक्शे कदम पर चलेगा, हो सकता है कि यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला अविश्वासी बन जाए और शैतान यीशु पर, जो चट्टान की पूर्ति है, हमला करे। मूसा की यह ग़लती इस संभावना की भी पुष्टि करती है कि शैतान यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के द्वारा डाली गई विश्वास की नींव पर भी दावा करेगा। तथापि, यदि यूहन्ना विश्वास खो देता है तो मूसा का चट्टान को दो बार मारने का कृत्य दूरवर्ती कारण बनता है, जिसकी वजह से यीशु को विवश होकर विश्वास की नींव पुनःस्थापित करने के उद्देश्य से जंगल में चालीस दिन का उपवास और तीन प्रलोभन भुगतने पड़ेंगे।

यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला वास्तव में अविश्वासी हो गया[६५१] और शैतान ने विश्वास की नींव पर, जो यूहन्ना ने डाली थी, धावा बोल दिया। यह, शैतान से अलग होने के लिए यीशु का चालीस-का-विधान और तीन प्रलोभनों पर विजय प्राप्त करने का समीपवर्ती मूल कारण था। इस तरह यूहन्ना के स्थान पर खड़े होकर यीशु ने क्षतिपूर्ति द्वारा विश्वास की नींव पुनःस्थापित की।

यह लिखा है कि चालीस दिन के बाद शैतान ने यीशु की तीन बार परीक्षा ली। पहली बार, उसने यीशु को पत्थर दिखा कर उन्हें रोटी में बदल देने के लिए कह कर उसे परखा। फिर उसने यीशु को मंदिर की चोटी पर खड़ा करके आह्वान दिया कि अपने आप को नीचे गिरा दे। अंत में, वह यीशु को बहुत बड़े पहाड़ पर ले गया और यीशु को संसार के सारे राज्य दिखाकर कहा कि यदि तू गिर कर मेरी उपासना करे, तो मैं यह सब कुछ तुझे दे दुँगा।[६५२]

शैतान ने किस उद्देश्य से यीशु को तीन प्रलोभनों द्वारा परखा? आदि में, परमेश्वर ने मनुष्य की रचना की और उन्हें तीन महान आशीर्वाद दिए—व्यक्तिगत चरित्र को पूर्ण करना, बच्चे पैदा करना और प्राकृतिक संसार पर प्रभुता करना[६५३]—जिसके द्वारा वे सृष्टि का उद्देश्य पूरा कर सकें। हमारे पहले पूर्वजों को पतन के लिए उकसा कर शैतान ने उन्हें तीन महान आशीषों से वंचित कर दिया और उन्हें सृष्टि के उद्देश्य की पूर्ति करने से रोक दिया। यीशु तीन आशीषों को पुनःस्थापित करके सृष्टि का उद्देश्य पूरा करने के लिए दुनिया में आया था। इसलिए शैतान ने यीशु को तीन बार परख कर, तीन आशीर्वादों को पुनःस्थापित करने और सृष्टि का उद्देश्य पूरा करने से रोकने का प्रयास किया।

तो फिर, यीशु ने तीन प्रलोभनों का सामना किस प्रकार किया और उन पर कैसे प्रबल हुआ? पहले, आइए हम इस बात की जाँच करें कि शैतान किस प्रकार ऐसे स्थान तक पहुँचा कि वह यीशु को परख सके। शैतान ने कनान की प्राप्ति की राष्ट्रीय कार्यवाही के समय चट्टान और पत्थर की पट्टियों को, जो यीशु और उसकी होने वाली दुलहन का प्रतीक थीं, पहले ही हथिया कर प्रभावशाली स्थान पकड़ लिया था। यह तभी संभव हुआ जब मूसा ने लोगों की बेवफाई के कारण पत्थर की पट्टियाँ तोड़ डालीं

---

[६५०] १कुरिंथियों १०:४
[६५१] प्रति संदर्भ—मसीह २:३
[६५२] मत्ती ४:१-१०
[६५३] उत्पत्ति १:२८

और चट्टान को क्रोध में आकर दो बार मारा था। विश्वव्यापी कार्यवाही में जब यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला अपनी ज़िम्मेवारी में विफल हुआ, यहूदी लोग उतने अविश्वासी और हठीले हो गए जितने इस्राएली लोग मूसा के समय में हुए थे। इसलिए, जैसे कि परमेश्वर ने मूसा की कार्यवाही के दौरान पहले ही यह पूर्वलक्षणना की थी, शैतान अब ऐसी क्षमता के स्थान पर चढ़ गया था जहाँ से वह यीशु पर उसको परखने का अधिकार जमा सके।

यीशु ने जंगल में चालीस दिन का उपवास समाप्त किया उसके बाद, शैतान उसके सामने आया और उसे यह कह कर परखने लगा, "यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो कह दे कि ये पत्थर रोटियाँ बन जाएँ।"[६५४] पत्थर शैतान के कब्ज़े में था। उसने पहले ही मूसा की ग़लती के आधार पर जल देने वाली चट्टान और पत्थर की पट्टियों पर दावा कर लिया था, जो बाद में यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के विश्वासघात का कारण बनी। मूसा ने जंगल में शैतान से अलग होने के लिए चालीस का विधान पूरा करके पत्थर को अर्जित किया था। पत्थर को शुद्ध करने और पुनः प्राप्त करने के लिए यीशु ने चालीस दिन जंगल में उपवास किया। शैतान को यह अच्छी तरह से मालूम था कि यीशु जंगल में इसी उद्देश्य से गया था, और पहली परीक्षा से उसका आशय पत्थर पर अपना अधिकार बरकरार रखना था। यीशु ने जंगल में भूखा रह कर दुख उठाया, जिस तरह मूसा के दिनों में इस्राएली लोगों ने दुख उठाया था। जब इस्राएली जंगल में भूख सह नहीं सके और अविश्वासी बन गए, इस घटना के कारण अंततः शैतान ने चट्टान पर कब्ज़ा कर लिया था। उसी तरह, यदि यीशु अपना विश्वास खो बैठता और पत्थर को पुनः स्थापित करने का प्रयास बंद करके पत्थरों को रोटी में बदल कर अपनी भूख मिटा लेता, तो फिर शैतान हमेशा के लिए पत्थर का हकदार बन जाता।

यीशु ने इस परीक्षा के जवाब में कहा, "मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं परन्तु हर एक वचन जो परमेश्वर के मुख से निकलता है, जीवित रहेगा।"[६५५] आरंभ में, मनुष्य दो प्रकार के पुष्टिकारक भोजन पर जीवित रहने के लिए रचे गए थे। शरीर भौतिक संसार से उपलब्ध भोजन से जीवित रहता है, जबकि आत्मा परमेश्वर के प्रेम और सत्य से जीवित रहती है। हालाँकि, पतित लोग परमेश्वर का वचन परमेश्वर से सीधे प्राप्त नहीं कर सकते हैं, उनकी आत्मा यीशु के वचन के द्वारा, जो परमेश्वर के वचन[६५६] का मूर्तरूप बन कर आया, जीवन पाती है। यीशु ने कहा, "जीवन की रोटी मैं हूँ...जब तक तुम मनुष्य के पुत्र का मांस न खाओ और उसका लहू न पीओ तुम में जीवन नहीं है।"[६५७] उसका कहने का मतलब यह था कि कोई व्यक्ति केवल रोटी खाकर अपने शरीर को जीवित रखने से ही पूर्ण और स्वास्थ्यकर जीवन नहीं जी सकता। उसका जीवन संपूर्ण नहीं है जब तक वह यीशु के साथ नहीं जीए, यीशु जो आत्मा को जीवन-दायक भोजन देने के लिए आया।

निःसंदेह, शैतान के हाथ में पत्थर—यह दर्शाता है कि चट्टान और पत्थर की पट्टियाँ जो मूसा ने

---

[६५४] मत्ती ४:३
[६५५] मत्ती ४:४
[६५६] यूहन्ना १:१४
[६५७] यूहन्ना ६:४८-५३

गवां दीं थीं, वे यीशु का प्रतीक थीं[६५८] जो परीक्षा का पात्र बना। इसके जवाब में यीशु के कहने का मतलब था, कि यद्यपि वह भूखा है, पर वह रोटी के बारे में चिंतित नहीं था जो केवल उसके शरीर को जीवित रख सकती है, वरन् परमेश्वर के वचन का मूर्तरूप बनने के लिए था जो उसकी आत्मा को जीवन देकर सुदृढ़ रख सकता है। ऐसी दिली अपेक्षा के साथ यीशु शैतान पर प्रबल होने के लिए दृढ़ रहा। इसके अतिरिक्त यह परीक्षा इसलिए भी रखी गई थी कि यीशु, मसीह का स्थान पुनः स्थापित कर सके, और कि वह ऐसा व्यक्ति बने जिसने यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के स्थान से इस परीक्षा में विजय पाकर अपने व्यक्तिगत चरित्र को पूर्ण कर लिया हो। यीशु, शैतान को इसलिए पराजित कर सका क्योंकि उसके संवाद और कार्य पूरी तरह से नियम के अनुसार थे। इस प्रलोभन पर विजय के द्वारा, यीशु ने व्यक्तिगत स्वभाव की परिपूर्णता को बहाल करने की शर्त को पूरा किया और इस तरह परमेश्वर के पहले आशीर्वाद की नींव पुनः स्थापित की।

फिर शैतान यीशु को मंदिर की शिखर पर ले गया और उसे यह कह कर ललकारा, "यदि तू परमेश्वर का पुत्र है तो अपने आप को नीचे गिरा दे।"[६५९] यीशु ने अपने आप को मंदिर के रूप में निर्दिष्ट किया था,[६६०] और यह लिखा है कि ईसाई लोग परमेश्वर के मंदिर हैं[६६१] और मसीह की देह के अंग हैं।[६६२] इस कथन से हम यह समझ सकते हैं कि यीशु मुख्य मंदिर है और हम जो विश्वासी हैं मंदिर की शाखा की तरह हैं। यीशु मंदिर का प्रभु बन कर आया था। यहाँ तक कि शैतान को भी उसके पद को मान देना पड़ा, इसलिए वह यीशु को मंदिर की चोटी पर ले गया। जब शैतान ने यीशु से यह कहने की हिम्मत की कि अपने आप को नीचे गिरा दे, इसका अर्थ हुआ कि शैतान उसे अपने स्थान से नीचे एक पतित मनुष्य की दशा में गिरने के लिए उकसा रहा था और स्वयं मंदिर का प्रभु बनकर यीशु का स्थान छीनना चाहता था।

उस क्षण यीशु ने उसे उत्तर दिया, "तू प्रभु अपने परमेश्वर की परीक्षा न कर।"[६६३] आदि में स्वर्गदूत, मनुष्यों के द्वारा जिन्होंने परमेश्वर के दिए हुए व्यक्तित्व को साधित कर लिया है, शासित किए जाने के लिए रचे गए थे। इस तरह पतित दूतों को भी यीशु के आगे, जो उनका प्रभु है, यथोचित झुकना चाहिए। तदनुसार, यह एक दूत के लिए अनियमी कार्य था कि उसने मंदिर के प्रभु यीशु का स्थान छीनने की कोशिश की। यीशु के प्रत्युत्तर का अर्थ था कि शैतान को यीशु की, जो परमेश्वर का मूर्तरूप था, परीक्षा लेकर परमेश्वर को परखना नहीं चाहिए था, जो अपनी दैवी योजना को कड़े नियम के अनुसार चलाता है। इसके अतिरिक्त, पहले प्रलोभन पर प्रबल होकर यीशु ने मंदिर के प्रभु का स्थान पहले ही सुरक्षित कर लिया था। इसलिये, शैतान के पास यीशु को फिर से और परखने की कोई शर्त बाकी नहीं थी, उसे उसी समय पीछे हट जाना चाहिए था। दूसरी परीक्षा में विजयी होने के बाद, यीशु जो मुख्य मंदिर था, दुल्हा

---

[६५८] १कुरिंथियों १०:४, प्रकाशितवाक्य २:१७
[६५९] मत्ती ४:६
[६६०] यूहन्ना २:१९
[६६१] १कुरिंथियों ३:१६
[६६२] १कुरिंथियों १२:२७
[६६३] मत्ती ४:७

और मानवता का सच्चा माता-पिता था, उसने विश्वासियों को मंदिर की शाखाओं, दुलहन और सच्चे-बच्चों के स्थान पर पुनः स्थापित करने के लिए, मार्ग खोल दिया था। इस प्रकार, यीशु ने एक नींव स्थापित कर दी जिस पर परमेश्वर के दूसरे आशीर्वाद को बहाल किया जा सकता है।

अंत में, शैतान यीशु को एक बड़े पहाड़ पर ले गया और उसे गगन के नीचे पृथ्वी का सारा वैभव दिखा कर कहा, "यदि तू गिर कर मुझे प्रणाम करे, तो मैं यह सब कुछ तुझे दे दुँगा।"[६६४] आदम के पतन के कारण, मनुष्य ने सृष्टि के प्रभु होने का ओहदा खो दिया था। वे शैतान के प्रभुत्व के नीचे गिर गए, जिसने ने आदम का सृष्टि का प्रभु होने का ओहदा हड़प लिया था। यीशु जो पूर्ण आदम की हैसियत से आया था, सृष्टि का प्रभु था, जैसे कि लिखा है, परमेश्वर ने "सब कुछ उसके पांव के तले कर दिया।"[६६५] क्योंकि शैतान नियम की समझ रखता है, इसलिए सृष्टि का प्रभु होने की हैसियत से वह यीशु को पहाड़ के ऊपर ले गया था। शैतान ने तब यीशु को परखा, इस आशा से कि यीशु, दूसरा आदम, भी उसके आगे शायद झुक जाए, जिस तरह आरंभ में आदम झुका था।

यीशु ने उत्तर दिया, "हे शैतान दूर हो जा, क्योंकि लिखा है, 'तू अपने प्रभु परमेश्वर को प्रणाम कर और केवल उसी की उपासना कर।'"[६६६] स्वर्गदूत सेवा करने वाली आत्माओं के रूप में,[६६७] परमेश्वर, जो सर्जक है उसकी सेवा करने और उसको सम्मान देने के लिए रची गईं थीं। उसके उत्तर से, यीशु ने यह संकेत किया कि नियम के अनुसार शैतान जैसे पतित दूत को भी परमेश्वर की उपासना करनी चाहिए; उसी प्रकार, उसे यीशु की भी, जो सर्जक की देह धारण करके आया, सेवा करनी चाहिए और उसको सम्मान देना चाहिए। इसके अतिरिक्त, पहले के दो प्रलोभनों पर प्रबल होने के द्वारा, यीशु पहली और दूसरी आशीष को पुनःस्थापित करने की बुनियाद पहले ही डाल चुका था। स्वाभाविक रूप से वह इस नींव पर परमेश्वर की तीसरी आशीष पुनःस्थापित कर सकता है और सृष्टि का शासन कर सकता है। यीशु ने कहा, "शैतान दूर हो जा!" क्योंकि यीशु के साथ उसका प्राकृतिक दुनिया पर विवाद करने का अब और कोई आधार बाकी नहीं था, जो पहले ही विजय की दृढ़ नींव पर खड़ा था। तीसरे प्रलोभन पर प्रबल होने से, यीशु ने परमेश्वर की तीसरी आशीष, प्राकृतिक दुनिया पर प्रभुत्व करने की शर्त को पुनःस्थापित कर लिया था।

३.२.१.३ चालीस दिन के उपवास और तीन प्रलोभनों का परिणाम

सृष्टि के नियम के अनुसार, परमेश्वर का सृष्टि का उद्देश्य उसी समय साधित हो सकता है जब मनुष्य आदि-विभाजन-संघटन के तीन चरण से होकर गुज़रता है, और चार-दशा-आधार स्थापित करता है। परन्तु, शैतान ने पहले मानव पूर्वजों को चार-दशा-आधार बनाने की प्रक्रिया के दौरान ही इस आदर्श के पूरा होने में बाधा डाल कर रोक दिया था। इसलिए, पुनरुद्धार की दैवी योजना के दौरान, उसका तीन

---

[६६४] मत्ती ४:९
[६६५] कुरिंथियों १५:२७ इफिसियों १:२२
[६६६] मत्ती ४:१०
[६६७] इब्रानियों १:४

चरण में प्रवर्धित होने के साथ शैतान से अलग होने के चालीस के विधान को परिपूर्ण करने की क्रिया में परमेश्वर ने क्षतिपूर्ति द्वारा जो कुछ खो गया था बहाल करने का प्रयास किया। यीशु तीन प्रलोभनों पर विजयी हुआ और शैतान से अलग होने के लिए चालीस के विधान के रूप में चालीस दिन का उपवास पूरा किया। तत्पश्चात, यीशु ने क्षतिपूर्ति द्वारा एक ही बार में निम्न लिखित शर्तों को पुनः प्रचलित किया, जो सारे इतिहास में सभी चालीस के विधानों के द्वारा शैतान को अलग करने के लिए परमेश्वर पूरा करना चाहता था।

पहला, यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के स्थान से, यीशु ने कनान की प्राप्ति के लिए क्षतिपूर्ति द्वारा विश्वास की नींव डाल कर दूसरी विश्वव्यापी कार्यवाही पुनःस्थापित की। ऐसा करने से, यीशु ने परमेश्वर की दैवी योजना के दौरान विश्वास की नींव डालने के उद्देश्य से जो कुछ भी परमेश्वर को अर्पित किया गया था, जिनमें सम्मिलित हैं—कैन और हाबिल के बलिदान, नूंह का जहाज़, अब्राहम का बलिदान, मूसा का निवास स्थान, राजा सुलेमान का मंदिर—यह सब बहाल किया। इसके अतिरिक्त, यीशु ने एक ही बार में शैतान से अलग होने के सारे चालीस के विधान, जो आदम से लेकर चार हज़ार वर्ष के दौरान संचालित किए गए थे, परन्तु प्रमुख व्यक्तियों के विश्वास की नींव डालने के कठिन प्रयासों के बावजूद भी खो गए थे, क्षतिपूर्ति के द्वारा बहाल किए। इसमें, नूंह का चालीस दिन का न्याय, मूसा के जीवन में तीन चालीस दिन की अवधियाँ और दो चालीस दिन के उपवास, देश की जासूसी का चालीस दिन का मिशन, इस्राएलियों का चालीस वर्ष जंगल में भटकना, नूंह से अब्राहम तक चार सौ वर्ष, मिस्र में चार सौ वर्ष की दासता और वह सारी अवधियाँ जो निर्गमन के बाद घटीं और संख्या चालीस से चिह्नित की जाती हैं खो जो गईं थीं, शामिल हैं।

दूसरा, यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के पद से मसीह के पद पर उठकर यीशु ने परमेश्वर के तीन महान आशीर्वादों की पूर्ति और चार-दशा-आधार की बहाली का मार्ग प्रशस्त किया। अपनी भेंट सफलतापूर्वक अर्पण करके, यीशु पत्थर की पट्टियाँ, वाचा के संदूक, निवासस्थान, चट्टान और मंदिर की पूर्ति के रूप में खड़ा हुआ।

३.२.२ वास्तविक नींव

यीशु मानवता का सच्चा माता-पिता बन कर आया था, तो भी उसने यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के स्थान पर खड़ा होकर शैतान से अलग होने के लिए चालीस का विधान क्षतिपूर्ति द्वारा फिर से बहाल किया। इसलिए, विश्वास की नींव पुनःस्थापित करने के बाद (मसीह और सच्चे माता-पिता की पदवी पर अभ्युदय हुआ) वह माता-पिता के स्थान पर खड़ा हुआ। उसी समय, जब उसने पतित प्रवृत्ति को निकलने की क्षतिपूर्ति की शर्त पूरी करके हाबिल का स्थान सुरक्षित किया तब वह (उस शर्त के संबंध में अभी भी यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की भूमिका निभाते हुए) बच्चे के स्थान पर खड़ा था। उसी क्षमता के साथ, यीशु ने अपने चालीस दिन के उपवास के द्वारा विश्व स्तर पर वही स्थान प्राप्त कर लिया जो मूसा ने विश्वास की नींव डालने के तुरंत बाद कनान की प्राप्ति के लिए मिद्यान के जंगल में चालीस वर्ष के

निर्वासन का समय भोग कर दूसरी राष्ट्रीय कार्यवाही के दौरान प्राप्त किया था।

कनान की प्राप्ति के लिए परमेश्वर ने दूसरी राष्ट्रीय कार्यवाही को आरम्भ करने के लिए तीन चिह्न और दस विपत्तियाँ देकर व्यवस्था संचालित की। कनान की प्राप्ति के लिए तीसरी राष्ट्रीय कार्यवाही को आरंभ करने के समय परमेश्वर ने लोगों को दैवी अनुग्रह के तीन प्रकटीकरण—पत्थर की पट्टियाँ, वाचा का संदूक और निवास स्थान—इन को थामें रहने और दस आज्ञाओं का पालन करने का अनुदेश देकर व्यवस्था संचालित की। जैसे कि हमें स्मरण है कि यह सब, तीन चिह्न और दस विपत्तियों के महत्व को, जो इस्राएलियों की अविश्वसनीयता के कारण डूब गया था, पुनःस्थापित करने के लिए दिए गए थे। यीशु तीन अनुग्रह और दस आज्ञाओं के प्रकटीकरण की पूर्ति था। इसलिए यीशु के अपने वचन और उसके आश्चर्य कर्मों के आधार पर परमेश्वर ने कनान की प्राप्ति की दूसरी विश्वव्यापी कार्यवाही का आरंभ करने के लिए व्यवस्था संचालित की। यदि यहूदी लोग (कैन) मन से यीशु के पीछे, जो यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले (हाबिल) के स्थान पर था, चलने के लिए राज़ी हो जाते तो वे शैतान से अलग होने की क्षतिपूर्ति की शर्त पूरी कर लेते और वास्तविक नींव पुनःस्थापित कर लेते। इस तरह मसीह के लिए नींव खड़ी हो जाती। इस नींव पर खड़े होकर, यीशु यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के पद से ऊपर उठ कर मसीह के पद पर चढ़ जाता। फिर वह सभी लोगों को अपने आप में आरोपित कर लेता,[६६८] मानवता मूल पाप से शुद्ध हो कर पुनर्जीवित हो जाती और परमेश्वर के साथ एक हो जाती। उन्होंने परमेश्वर का दिया हुआ अपना मूल व्यक्तित्व फिर से प्राप्त कर लिया होता और वे यीशु के दिनों में ही परमेश्वर का राज्य स्थापित कर लेते।

३.२.३ कानन की प्राप्ति के लिए दूसरी विश्वव्यापी कार्यवाही का विफल होना

यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के अविश्वास के कारण जब कनान की प्राप्ति की पहली विश्वव्यापी कार्यवाही विफल हो गई, यीशु ने यूहन्ना का मिशन अपने कंधों पर ले लिया और जंगल में चालीस दिन तक दुख और कठिनाइयाँ उठाईं। इस तरह, यीशु ने कनान की प्राप्ति की दूसरी विश्वव्यापी कार्यवाही के लिए क्षतिपूर्ति द्वारा विश्वास की नींव पुनःस्थापित की। यह लिखा है कि शैतान, जो तीन प्रलोभनों में पराजित किया गया था, उपयुक्त समय[६६९] तक के लिए यीशु से दूर हो गया था, यह संकेत करता है कि वह हमेशा के लिए यीशु से दूर नहीं हुआ था परन्तु भविष्य में वह फिर उसका सामना करेगा। शैतान ने मुख्यतः, यहूदी अगुआ याजकों और शास्त्री लोगों के द्वारा जो यीशु पर विश्वास नहीं करते थे फिर से यीशु का सामना किया। विशेषकर के शैतान ने यहूदा इस्करियोती, जिस चेले ने उसे धोखा दिया था, उसके द्वारा शैतान ने यीशु का सामना किया।

ऐसे लोगों की अविश्वसनीयता के कारण यीशु दूसरी विश्वव्यापी कार्यवाही में कनान की प्राप्ति के लिये ना तो वास्तविक नींव और ना ही मसीह की नींव डाल सका। इस तरह, दूसरी विश्वव्यापी

[६६८] रोमियों ११:१७

[६६९] लूक ४:१३

कार्यवाही दु:ख भरी विफलता में तमाम हुई।

३.३ कानन की प्राप्ति की तीसरी विश्वव्यापी कार्यवाही

३.३.१ यीशु के नेतृत्व में कानन की प्राप्ति की आत्मिक कार्यवाही

कनान के प्राप्ति की तीसरी विश्वव्यापी कार्यवाही की चर्चा करते समय हमें पहले यह समझना चाहिए कि यह कार्यवाही कनान की प्राप्ति की तीसरी राष्ट्रीय कार्यवाही से किस प्रकार भिन्न थी। जैसा कि पहले यह ब्योरे में समझाया गया है, कि तीसरी राष्ट्रीय कार्यवाही में इस्राएलियों के विश्वास का केन्द्र निवास स्थान था, जो मसीह का प्रतीक था। यदि इस्राएली लोगों ने विश्वास खो भी दिया, तो भी निवास स्थान अक्षत रहता है, क्योंकि यह लोग निवास स्थान के लिए विश्वास की नींव पर खड़े थे, जो मूसा ने चालीस दिन के उपवास के दौरान डाली थी। जब मूसा भी अविश्वासी हो गया, तब निवास स्थान यहोशू के प्रबंधन के द्वारा अक्षत रहा और चालीस दिन की जासूसी के मिशन के दौरान डाली गई निवास स्थान की नींव के आधार पर संरक्षित रहा।

परन्तु, कनान की प्राप्ति की विश्वव्यापी कार्यवाही में यहूदी लोगों के विश्वास का केन्द्र स्वयं यीशु ही था, जो निवास स्थान की पूर्ति बन कर आया था। परंतु जब उसके चेले भी अविश्वासी हो गए, तब यीशु को मृत्यु का रास्ता तय करना पड़ा और वह सूली पर चढ़ाया गया, जैसे कि उसने पहले से यह बताया था, "और जिस रीति से मूसा ने जंगल में सांप को ऊँचे पर चढ़ाया, उसी रीति से अवश्य है कि मनुष्य का पुत्र भी ऊँचे पर चढ़ाया जाए।"[६७०] परिणाम स्वरूप, यहूदी लोगों ने वह खोया जो उनका आत्मिक और शारीरिक विश्वास का केन्द्र होना चाहिए था। अब उनके पास कोई ऐसा आधार बाकी नहीं था जिसके बल पर वे कनान के प्राप्ति की तीसरी विश्वव्यापी वास्तविक कार्यवाही शुरू करें। बजाए इसके इस कार्यवाही को ईसाई लोग, दूसरे इस्राएल के स्थान पर, आत्मिक कार्यवाही के रूप में पुनर्जीवित यीशु को ऊँचा उठा कर अपने विश्वास का केन्द्र बना कर शुरू करने वाले थे। यीशु ने यह पहले ही से जान कर कहा, "इस मंदिर को ढा दो और मैं इसे तीन दिन में खड़ा कर दुँगा।"[६७१]

तब, जिस प्रकार यहोशू ने मूसा का मिशन उत्तराधिकार में प्राप्त किया और तीसरी राष्ट्रीय कार्यवाही पूरी की, उसी तरह, दूसरी आगमन का मसीह, यीशु का मिशन उत्तराधिकार में प्राप्त करेगा। वह कनान के प्राप्ति की विश्वव्यापी कार्यवाही दोनों आध्यात्मिक और शारीरिक तौर से पूरा करेगा। तदनुसार, जब तक पुनरागमन का मसीह शरीर में नहीं आता, जैसे कि यीशु आया था, वह यीशु का मिशन उत्तराधिकार में नहीं प्राप्त कर सकता और ना ही पुनरुद्धार की दैवी योजना का उद्देश्य पूरा कर सकता है।

---

[६७०] यूहन्ना ३:१४

[६७१] यूहन्ना २:१९

३.३.१.१ विश्वास की आत्मिक नींव

जब यहूदी लोगों ने यीशु का बहिष्कार किया तो दूसरी विश्वव्यापी कार्यवाही विफल हो गई, और विश्वास की नींव जो यीशु ने यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के स्थान पर खड़े हो कर अपने चालीस दिन के उपवास के दौरान डाली थी, वह शैतान के कब्ज़े में चली गई। जब यीशु ने सूली पर अपना शरीर त्याग दिया, तब उसने आत्मिक रूप से यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का मिशन फिर से शुरू किया। पुनरुत्थान से लेकर अपने स्वर्ग में आरोहण के दौरान, यीशु ने शैतान पर विजय पाई और उसके सारे बंधन तोड़ डाले। यह करने से यीशु ने कनान की प्राप्ति की तीसरी विश्वव्यापी आत्मिक कार्यवाही के लिए विश्वास की नींव पुनःस्थापित की। यीशु के चालीस दिन की अवधि के पीछे यह अर्थ है जो अब तक अज्ञात था। तो फिर यीशु ने विश्वास की आत्मिक नींव कैसे डाली?

यीशु का मसीह के रूप में प्रगट होने तक परमेश्वर अपने प्रिय लोगों का स्वयं मार्गदर्शन करता था। तथापि, जिस क्षण से वे उसके इकलौते पुत्र का विरोध करने लगे, परमेश्वर को उनसे अपना मुंह मोड़ना पड़ा और उन्हें शैतान के दावे के लिए छोड़ दिया। फिर भी, मसीह को भेजने का परमेश्वर का उद्देश्य यहूदी लोगों और सारी मानवता को शैतान के हाथ से बचाने का था। इसके लिए भले ही उसे यीशु को शैतान के हाथ में क्यों न छोड़ना पड़े, मानवता को बचाने का परमेश्वर का निश्चय दृढ़ था। दूसरी तरफ, शैतान यीशु मसीह को मारना चाहता था, जिसके लिए भले ही उसे यहूदी लोगों के साथ सारी मानवता को परमेश्वर को क्यों न वापस करना पड़े। शैतान को यह मालूम था कि चार-हज़ार-वर्ष की पुनरुद्धार की दैवी योजना का परमेश्वर का परम लक्ष्य मसीह को भेजने का था। उसका अनुमान था कि यीशु को मार कर वह परमेश्वर की सारी दैवी योजना को नष्ट कर सकता है। अंत में, परमेश्वर ने सारी मानवता को, यहूदी लोगों के समेत जो शैतान के दायरे में पड़कर यीशु के विरोध में हो गए थे, बचाने के लिए क्षतिपूर्ति की शर्त के रूप में यीशु को शैतान के हवाले कर दिया।

शैतान ने यीशु को सूली पर चढ़ाने में पूरा ज़ोर लगा दिया, इस तरह उसने अपना लक्ष्य जिसकी तलाश उसने चार-हज़ार वर्ष के इतिहास के दौरान की थी प्राप्त कर लिया। दूसरी ओर, पापी मानवता को बचाने के लिए परमेश्वर ने क्षतिपूर्ति की शर्त के रूप में यीशु को शैतान के हवाले कर दिया। परमेश्वर ने यह कैसे सिद्ध किया? क्योंकि शैतान ने यीशु को मार देने के लिए पूरा ज़ोर लगा दिया था, क्षतिपूर्ति द्वारा पुनरुद्धार के नियम के अनुसार, परमेश्वर को भी अपनी पूरी शक्ति लगाने का अधिकार था। जबकि शैतान घात करने के लिए अपनी शक्ति का उपयोग करता है परमेश्वर अपनी शक्ति मरे हुओं को जिलाने में लगाता है। यीशु को मार डालने के लिए परमेश्वर ने शैतान को क्षतिपूर्ति के रूप में पूरा ज़ोर लगाने का अधिकार देकर, यीशु को फिर से जिलाने के लिए अपनी पूरी शक्ति का उपयोग किया। इस तरह, परमेश्वर ने मानवता को बचाने का रास्ता खोला ताकि लोग पुनर्जीवित यीशु के साथ रोपे जा सकें और इस तरह उद्धार और पुनर्जीवन प्राप्त कर सकें।

बाईबल के लिखित प्रमाण से यह स्पष्ट होता है कि पुनर्जीवित यीशु ठीक वही यीशु नहीं था जो सूली पर चढ़ाए जाने से पहले अपने शिष्यों के साथ रहता था। पुनर्जीवित यीशु मनुष्य नहीं था जो शारीरिक

आँखों से देखा जा सकता हो, क्योंकि वह समय और अंतराल को पार कर चुका था। वह उसके शिष्यों को बंद दरवाज़े से कमरे में से घुस कर प्रकट हुआ।[६७२] वह इम्माऊस की ओर जाते हुए दो शिष्यों के साथ दूर तक चला। फिर भी उन्होंने उसे बाद में पहचाना, जब उसने अपने आप को उन पर ज़ाहिर किया, उस समय वह यकायक ग़ायब हो गया।[६७३] अपने पुनरुत्थान के चालीस दिन की अवधी पार करने पर और इस तरह शैतान से अलग होकर यीशु ने आत्मिक कार्यवाही के लिए विश्वास की नींव डाली। इस तरह उसने मानवता को पापों से मुक्त करने का मार्ग खोला।

३.३.१.२ आत्मिक वास्तविक नींव

अपने पुनरुत्थान के बाद के प्रकटन के द्वारा, यीशु ने शैतान से अलग होने के लिए आत्मा में यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के स्थान पर खड़ा होकर चालीस का विधान पूरा किया। इस प्रकार उसने आत्मिक सच्चे माता-पिता के स्थान से आत्मिक कार्यवाही के लिए विश्वास की नींव डाली। उसी समय, उसने बच्चे के स्थान से पतित प्रवृत्ति को निकालने की क्षतिपूर्ति की शर्त को पूरा करके हाबिल का स्थान सुरक्षित किया। यह विश्वास की आत्मिक नींव जो यीशु ने कनान की प्राप्ति की तीसरी विश्वव्यापी कार्यवाही के लिए डाली थी, तुलना में उस विश्वास की नींव के बराबर थी जो मूसा ने तीसरी राष्ट्रीय कार्यवाही के लिए जंगल में चालीस वर्ष रह कर डाली थी।

परमेश्वर ने मूसा के दिनों में उससे निवास स्थान की नींव डलवा कर व्यवस्था का काम शुरू करने के लिए कार्य किया। परन्तु, पुनर्जीवित यीशु स्वयं ही पत्थर की पट्टियों, वाचा का संदूक और निवास स्थान की पूर्ति था। उसने अपने शिष्यों को जो सारे गलील में बिखरे हुए थे इकट्ठा करके चिह्नों और अलौकिक कार्य करने की शक्ति दे कर व्यवस्था को शुरू करने का कार्य किया।[६७४]

पुनर्जीवित यीशु आत्मिक रूप से यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले और हाबिल के स्थान पर खड़ा था। वफादार विश्वासी लोग कैन के स्थान पर खड़े थे। यीशु पर विश्वास करके और भक्तिपूर्वक उसके पीछे चल कर उन्होंने पतित प्रवृत्ति को निकालने की शर्त पूरी की और आत्मिक वास्तविक नींव पुनः स्थापित की।

३.३.१.३ मसीह के लिये आत्मिक नींव

यीशु के क्रूस पर चढ़ाए जाने पर उसके शेष ग्यारह शिष्य हतोत्साहित हो कर तितर-बितर हो गए। परन्तु, उसके पुनरुत्थान के बाद, यीशु ने उन्हें एक जगह इकट्ठा किया और दैवी योजना का एक नया पहलू शुरु किया: आत्मिक कनान की पुनःस्थापना। शिष्यों ने मथियास को यहूदा इस्करियोती की जगह चुना और बारह के एक खाली स्थान को भरा। यीशु पर विश्वास करके और अपने जीवन को जोखिम में डाल

---

[६७२] यूहन्ना २०:१९

[६७३] लूक २४:१५-३१

[६७४] मत्ती २८:१६-२०, मरकुस १६:१५-१८

कर उसके पीछे चल कर उन्होंने आत्मिक वास्तविक नींव और मसीह के लिए आत्मिक नींव डाली। इस नींव पर खड़ा होकर यीशु ने यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का आत्मिक मिशन-धारक की जगह से आत्मिक मसीह के स्थान पर चढ़ कर आरोहण किया और पवित्र आत्मा को भेजा। तत्पश्चात, यीशु और पवित्र आत्मा सच्चे माता-पिता बन गए और पुनरुज्जीवन देने का कार्य आरंभ किया। जब से पवित्र आत्मा पिन्तेकुस्त के दिन से उतरा है,[६७५] पुनर्जीवित यीशु आत्मिक पिता के रूप में और पवित्र आत्मा आत्मिक माँ के रूप में एक होकर विश्वासियों को आत्मिक रूप से अपने आप में रोप कर पुनर्जीवन देने का काम करते आए हैं। यह आत्मिक उद्धार का कार्य है,[६७६] जिससे पुनरुत्थान का दायरा स्थापित हुआ जो शैतान भ्रष्ट नहीं कर सकता।

भले ही हम विश्वास के द्वारा यीशु के साथ एक हो जाएं, तब भी हमारा शरीर शैतान के वार का शिकार बनता है, जिस प्रकार स्वयं यीशु के शरीर के साथ हुआ। दूसरे शब्दों में हमारा दैहिक उद्धार पूरा होने के लिए अभी भी बाकी है। तो भी, यदि हम पुनर्जीवित यीशु पर विश्वास करते हैं, तो यीशु आत्मिक रूप से अपने पुनरुत्थान में प्रवेश करने के लिए हमारा मार्गदर्शन करेगा, जो शैतान के हमले से सुरक्षित है। अब हम शैतान के अभियोग की शर्त से मुक्त हो गए और आत्मिक तौर से बचाए जाएंगे।

३.३.१.४ आत्मिक कनान की पुनःस्थापना

पुनर्जीवित यीशु पर, जो मसीह की आत्मिक नींव पर खड़ा है, विश्वास करके और उसकी सेवा में आकर, मसीही लोग आत्मिक कनान की पुनःस्थापना कर सकते हैं और उसके अनुग्रह में प्रवेश कर सकते हैं। दूसरी ओर, ईसाइयों की देह उसी स्थिति में है जिस तरह यीशु की थी, जिस पर शैतान ने प्रहार किया और क्रूस पर चढ़ाया। ईसाई लोग अब भी मूल पाप से दोषी ठहरते हैं[६७७] और उन्हें शैतानी प्रभावों से शुद्ध होने की उतनी ही आवश्यकता है जितनी यीशु से पहले के लोगों को थी। इसलिए, ईसाई लोगों को दूसरे आगमन के मसीह[६७८] की तैयारी के लिए शैतान से अलग होने के उसी रास्ते पर चलना होगा।

पुनर्जीवित यीशु मंदिर की आत्मिक पूर्ति है। उसने निवास स्थान के विश्वव्यापी आदर्श को साधित किया, जिसे मूसा ने कनान की प्राप्ति की राष्ट्रीय कार्यवाही में परिपुष्ट किया था। अति पवित्र और पवित्र स्थान, जो यीशु के आत्मा और शरीर को दर्शाते हैं, वह यीशु और पवित्र आत्मा के द्वारा आत्मिक वास्तविकता के रूप में पूरे हुए। प्रायश्चित के ढक्कन का आदर्श यीशु और पवित्र आत्मा के द्वारा किए हुए उद्धार के कामों से साधित हुआ, जिससे परमेश्वर उनके कामों में प्रगट हुआ और अपना वचन दे सका। प्रायश्चित के ढक्कन के ऊपर जहाँ परमेश्वर के वचन की घोषणा होती है, हमारा वह रास्ता जो पतन के बाद करूबों ने बंद किया था खुल गया, जिससे वाचा के संदूक में प्रवेश करने का रास्ता खुला, ताकि हम यीशु को जो जीवन का वृक्ष है, ग्रहण कर सकें। वहाँ हम परमेश्वर की दी हुई मन्ना के सेवन में

---

[६७५] प्रेरितों २:१-४
[६७६] प्रति-संदर्भ—मसीह १.४
[६७७] रोमियों ७:२५
[६७८] प्रति-संदर्भ—मसीह १:४

सम्मिलित हो सकते हैं और परमेश्वर की महान शक्ति को देख सकते हैं जिसके द्वारा हारून की लाठी अंकुरित हुई थी।[६७९]

मूसा की कार्यवाही के द्वारा हम ने सीखा है, कि परमेश्वर की दैवी योजना में जो विलंब हुआ है वह पूर्वनिश्चित नहीं था, परंतु वे लोगों की बेवफाई के कारण हुआ था। उसी तरह आदि में, यीशु का क्रूस पर चढ़ाया जाना और उसका फिर वापस आना परमेश्वर के द्वारा पूर्वनिश्चित नहीं किया गया था।

३.३.२ दूसरे आगमन पर मसीह की अगवाई के अंतर्गत वास्तविक कानन की पुन:स्थापना की कार्यवाही

हमने पहले स्पष्ट किया है कि कनान की प्राप्ति की तीसरी विश्वव्यापी कार्यवाही आत्मिक कार्यवाही के रूप में क्यों शुरू हुई, वास्तविक कार्यवाही की तरह नहीं जैसे कि कनान की प्राप्ति की तीसरी राष्ट्रीय कार्यवाही आरंभ हुई थी। यह आत्मिक दैवी योजना उस समय आरंभ हुई जब यीशु, मसीह की आत्मिक नींव के ऊपर आत्मिक मसीह के रूप में खड़ा हुआ और उसके अनुयाइयों ने उसपर विश्वास किया और उसकी आज्ञा का पालन किया। दैवी योजना, विश्वव्यापी आत्मिक राज्य बनाने के लिए विकसीत होकर इतिहास के एक लम्बे दो हज़ार वर्ष के अरसे से गुज़री है।

जबकि मूसा कनान में केवल आत्मा में प्रवेश कर सका, यहोशु ने राष्ट्रीय कार्यवाही को वास्तविक कार्यवाही के रूप में कार्याविन्त किया, और वस्तुतः प्रतिज्ञा के देश पर विजय प्राप्त की। जिस तरह यीशु कनान को विश्वव्यापी आत्मिक क्षेत्र के रूप में बहाल करने का कार्य करता आया है, उसी तरह मसीह को अपने दूसरे आगमन पर इसी विश्वव्यापी कार्यवाही को वास्तविक कार्यवाही के रूप में पूरा करना है और पृथ्वी पर वास्तविक स्वर्ग का राज्य स्थापित करना है। मसीह को दूसरे आगमन पर परमेश्वर का आदर्श जो पहले आगमन के समय पृथ्वी पर अधूरा रह गया था पूरा करना है। इस कारण उसे पृथ्वी पर शरीर लेकर पैदा होना है।[६८०]

चूँकि दूसरे आगमन पर मसीह को पुनरुद्धार की दैवी योजना, जो यीशु के आने के समय पर अधूरी रह गई थी, क्षतिपूर्ति शर्त के द्वारा बहाल करना है, इसलिये, उसे भी उसी पथ पर चलना होगा। यीशु ने यहूदी लोगों के बीच अविश्वास पाया और उसे दुख भरी राह पर चलना पड़ा। उसी तरह, यदि ईसाई लोग, जो दूसरा इस्राएल हैं, दूसरे आगमन के मसीह का तिरस्कार करेंगे, तो उसे भी उसी तरह के क्लेश उठाने पड़ेंगे जिस प्रकार यीशु ने उठाए थे। परंतु इस बार उसे यीशु के दुख भरे दौर को अपने पार्थिव जीवन के दौरान में ही फिर से क्षतिपूर्ति के द्वारा भोगना पड़ेगा। इसी कारण यीशु ने कहा, "परंतु पहले अवश्य है कि वह बहुत दुख उठाए और इस युग के लोग उसे तुच्छ ठहराएं।"[६८१] पहले आगमन पर, यीशु को अंत में पहले इस्राएल को त्यागना पड़ा, जो उसके लिए बुलाए गए थे, और नई आत्मिक कार्यवाही

---

[६७९] इब्रानियों ९:४-५

[६८०] प्रति-संदर्भ—ख्रीस्त-बोध ४.१.१

[६८१] लूक १७:२५

शुरू करने के लिए ईसाइयों को दूसरे इस्राएल के रूप में चुना। उसी प्रकार, मसीह अपने दूसरे आगमन पर, यदि ईसाई लोग उस पर विश्वास न करके उसे अस्वीकार करें, तो वह उन्हें त्याग देगा, फिर वह तीसरा इस्राएल बनाएगा और उनके साथ काम करके दैवी योजना को पृथ्वी पर पूरा करेगा। यदि प्रभु के अग्रदूत, जिनको यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का मिशन सौंपा गया है, अपनी ज़िम्मेवारी पूरी नहीं करेंगे, तो उसे अपने आप को नीचे उतार कर स्वयं यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले की भूमिका निभानी पड़ेगी और कनान की प्राप्ति की तीसरी विश्वव्यापी कार्यवाही में वास्तविक कार्यवाही के लिए विश्वास की नींव स्थापित करनी होगी। ऐसी संभावित परिस्थिति में उसे दु:ख उठाना पड़ेगा।

उसे चाहे कितना ही कठिन मार्ग क्यों ना चलना पड़े, दूसरे आगमन के मसीह की मृत्यु पुनरुद्धार की दैवी योजना को पूरा किए बिना नहीं होगी। यह इसलिए कि मानवता के लिए सच्चे माता-पिता[६८२] को स्थापित करके उनके द्वारा सृष्टि का उद्देश्य पूरा करने की परमेश्वर की दैवी योजना का यह तीसरा प्रयास सफल होगा। यह दैवी योजना आदम से आरंभ हुई, यीशु के समय प्रवर्द्धित हुई, और दूसरे आगमन पर नि:संदेह फलवान होगी। हम आगे इस की चर्चा करेंगे,[६८३] इसके अतिरिक्त, परमेश्वर के पुनरुद्धार की आत्मिक दैवी योजना ने यीशु से लेकर दो हज़ार वर्ष के दौरान में प्रजातंत्रवादी सामाजिक और कानूनी वातावरण तैयार किए हैं, जो मसीह के दूसरे आगमन पर उसकी रक्षा करेंगे। यहूदियों ने यीशु पर धर्म विरोधी होने के कलंक का टीका लाया गया था और रोमियों ने उस पर राज द्रोही का आरोप लगाया था, इसी लिए वह मारा गया था। इसकी तुलना में, यदि मसीह अपने दूसरे आगमन पर विधर्मी होने के रूप में सताया भी जाए तो भी प्रजातांत्रिक समाज में, जिसमें वह आएगा, ऐसे आरोप मृत्यु दंड के लिए काफी नहीं हैं।

इसलिए, यातनाएं चाहे कितनी कठिन क्यों न हों, दूसरे आगम का मसीह पृथ्वी पर विश्वास की नींव डाल सकेगा। इस पर खड़ा होकर, वह अटूट विश्वास रखने वाले शिष्यों को इकट्ठा करेगा। वह उन अनुयाइयों को अपनी पतित प्रवृत्ति निकालने की शर्त को पूरा करने में और वास्तविक नींव डालने में उनका मार्गदर्शन करेगा। तीसरी विश्वव्यापी कार्यवाही में वास्तविक कार्यवाही के लिए मसीह की नींव अवश्य स्थापित की जाएगी।

कनान की प्राप्ति के लिए तीसरी राष्ट्रीय कार्यवाही में जब मूसा मुख्य व्यक्ति था, परमेश्वर ने चट्टान के आधार पर विधान आरंभ करने का कार्य किया। जब यहोशू मुख्य व्यक्ति था, परमेश्वर ने चट्टान के पानी के आधार पर विधान आरंभ करने के लिये काम किया। उसी तरह, यीशु के आने पर, परमेश्वर ने विधान को आरंभ करने के लिए आश्चर्य कर्म और चिह्नों के द्वारा कार्य किया, परन्तु मसीह के दूसरे आगमन पर परमेश्वर वचन के आधार पर विधान आरंभ करने के लिए काम करेगा, जो आश्चर्य कर्म और चिह्नों से अधिक आंतरिक है। जैसे कि पहले यह बताया गया था,[६८४] यद्यपि मनुष्य की रचना वचन

---

[६८२] प्रतिसंदर्भ—ख्रीस्त विद्या ४.१.१

[६८३] प्रति-संदर्भ—समानांतर ७:२.६

[६८४] प्रति-संदर्भ—अंतिम दिन संबंधी उपदेश ३.२

के द्वारा की गई थी,[६८५] परन्तु पतन के कारण वे उसका उद्देश्य पूरा नहीं कर सके। वचन का उद्देश्य पूरा करने के लिए, परमेश्वर वचन की आज्ञाकारिता की बाह्य शर्तें स्थापित करके पुनरुद्धार की दैवी योजना का कार्य करता आया है। अंततः, दैवी योजना के इतिहास की समाप्ति पर, परमेश्वर वचन के देहधारी मसीह को फिर से भेजेगा, और वचन के आधार पर उद्धार की दैवी योजना को पूरा करेगा।

परमेश्वर की सृष्टि के उद्देश्य की गहरी व्याख्या दिल के रिश्तों में प्रकट होती है। हमारे अदृश्य, आंतरिक पिता परमेश्वर ने मनुष्य को अपने शारीरिक बच्चों के रूप में सृजा। आदम और हव्वा शारीरिक पात्र साझी के रूप में परमेश्वर के स्वरूप उसके द्वैत अभिलक्षण के नमूने पर रचे गए थे। परमेश्वर के शारीरिक पात्र साझी के रूप में वे मानवता के माता-पिता बनने के लिए रचे गए थे। उनका ध्येय पति-पत्नी बनकर बच्चे पैदा करना और उनका पालन-पोषण करने के लिए था। और माता-पिता का दिल, पति-पत्नी का दिल, भाई और बहन का दिल और बच्चों के दिलों में गुथा हुआ एक परिवार बनाना था। उनका परिवार माता-पिता का सच्चा प्रेम, पति-पत्नी का सच्चा प्रेम और सच्चे बच्चों का सच्चा प्रेम अभिव्यक्त करता। यह चार-दशा आधार होता है जो तीन-पात्र-प्रयोजन साधित करता है।[६८६] इस रीति से, परमेश्वर की इच्छा थी कि वह स्वर्गीय वंश में पैदा हुए अपने बच्चों के द्वारा पृथ्वी पर स्वर्ग का राज्य बनाए।

पतन का मुख्य अर्थ यह था कि हमारे पहले पूर्वजों ने प्रधान स्वर्गदूत के साथ ख़ून का रिश्ता बांध लिया था, इसलिए, सारी मानवता शैतान के वंश से बंध गई।[६८७] इस तरह प्रत्येक मनुष्य शैतान के बच्चे के रूप में जन्म लेता है।[६८८] पहले पूर्वज ऐसी परिस्थिति में पड़ गए कि उनका परमेश्वर के वंश से कोई रिश्ता नहीं रहा। तदनुसार, परमेश्वर के पुनरुद्धार की दैवी योजना का परम उद्देश्य पतित मानवता को, जिनका परमेश्वर के वंश से कोई संबंध नहीं है, अनुवांशिक रूप में बदल कर परमेश्वर के प्रत्यक्ष वंश में जन्म देना है। आईये हम आगे बाईबल में परमेश्वर की इस दैवी योजना के पीछे छिपे उद्देश्य का प्रमाण देखें।

आदम के परिवार में, जिसके सदस्यों ने पतन का पाप और पहली हत्या की थी, वे परमेश्वर के सारे संबंधों से वंचित थे। नूंह के समय उसके दूसरे पुत्र, हाम की ग़लती के कारण परमेश्वर के साथ प्रत्यक्ष संबंध स्थापित नहीं किया जा सका। फिर भी, चूँकि नूंह ने परमेश्वर के प्रति अत्यंत भक्ति दिखाई थी इसलिए उसका परिवार परमेश्वर के साथ सेवकों का सेवक के रूप में अप्रत्यक्ष संबंध से जुड़ सका।[६८९] पुराने नियम के युग से पहले परमेश्वर के साथ मनुष्य का संबंध केवल यहाँ तक ही प्राप्य किया जा सकता था।

अब्राहम, विश्वास के पिता ने अपने परिवार के साथ मसीह के लिए नींव स्थापित की थी। वे और

[६८५] यूहन्ना १:३
[६८६] प्रति-संदर्भ—सृष्टि २.३.३
[६८७] प्रति-संदर्भ—पतन १.३.३
[६८८] मत्ती ३:७, २३:३३, यूहन्ना ८:४४
[६८९] उत्पत्ति ९:२५

उनका वंश चुने हुए लोग थे, जो परमेश्वर के सेवक के पद तक उठाए गए थे।[६९०] पुराने नियम के समय मनुष्य का परमेश्वर के साथ संबंध यहाँ तक ही प्राप्य किया जा सकता था।

यीशु के दिनों में, उसके शिष्य जो, यीशु के द्वारा यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के स्थान से बनाई हुई विश्वास की नींव पर खड़े थे, वे सेवक के स्थान से दत्तक बच्चों के स्थान तक ऊपर उठाए गए थे। इस स्थिति से ऊपर परमेश्वर की प्रत्यक्ष संतान के पद तक उठने के लिए पहले उन्हें यीशु का पूर्णतः आज्ञाकारी बनकर और उसकी सेवा करके वास्तविक नींव और मसीह के लिए नींव स्थापित करनी चाहिए थी। यदि यीशु, मसीह के रूप में उस नींव पर खड़ा होता, तो वे दोनों आत्मिक और शारीरिक तौर पर उसके साथ रोपे जा सकते थे और उसके साथ पूर्ण रूप से एक हो जाते।

यीशु परमेश्वर का इकलौता पुत्र है, निष्पाप और परमेश्वर के प्रत्यक्ष वंश में जन्मा था। वह सच्चा जलपाई का वृक्ष है जो सभी लोगों को, जो जंगली जैतून के वृक्ष हैं, अपने आप में रोपने के लिए आया था।[६९१] इस प्रकार, वह उनको अपने आप में एक साथ जोड़ कर मूल पाप से शुद्ध करने वाला था और परमेश्वर के वंश में जन्में बच्चों के रूप में उनको बहाल करने वाला था। यह पुनर्जन्म का कार्य है, जो यीशु को उसकी पत्नी के साथ करना चाहिए था।[६९२]

दुर्भाग्यवश, यीशु के अपने शिष्यों ने भी विश्वास खो दिया, और यीशु, यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के स्थान से ऊपर उठ कर मसीह के स्थान से अपने उचित कर्तव्यों को शुरू किए बिना क्रूस पर मारा गया। अपने पुनरुत्थान के बाद यीशु ने अपनी आत्मिक कार्यवाही शुरू की। उसने अपने पुनरुत्थान से लेकर अपने उठाए जाने तक के चालीस दिन में, शैतान से अलग होने की अवधि, आत्मिक यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के स्थान पर खड़े रह कर आत्मिक विश्वास की नींव स्थापित की। उसके शिष्यों ने पश्चाताप किया और उसकी सेवा करने के लिए वापस आए; इस प्रकार, यीशु और उसके शिष्यों ने आत्मिक वास्तविक नींव और मसीह के लिए आत्मिक नींव स्थापित की। इस नींव पर यीशु आत्मिक मसीह के रूप में खड़ा हुआ और अपने विश्वासी अनुयाइयों को अपने में रोपने का कार्य करता आया है—यद्यपि केवल आत्मा में। परिणाम स्वरूप, विश्वासी ईसाई लोग परमेश्वर के आत्मिक संतान बनने के स्थान पर चढ़ सके। यीशु से लेकर अब तक मानवता के पास परमेश्वर के साथ रिश्ता जोड़ने की यही एक शैली प्राप्य है।

पुनरुद्धार की इस आत्मिक दैवी योजना में, आत्मिक लोक पहले बहाल किया गया है, जिस प्रकार सृष्टि के अनुक्रम में परमेश्वर ने आत्मा लोक पहले बनाया। मानवता परमेश्वर के पात्र साझी के स्थान पर ऊँचे उठाई गई है, परन्तु केवल आत्मिक तौर से। इस तरह हर कोई ईसाई भक्त, चूँकि उसका मूल पाप उसके शरीर से निकाला नहीं किया गया है, वह पुराने नियम के युग के वफादार लोगों से फर्क नहीं है, इस अर्थ से दोनों शैतानी वंश से अभी भी जुड़े हैं।[६९३] ईसाई लोग अधिक से अधिक परमेश्वर के दत्तक

---

[६९०] लैव्यव्यवस्था २५:५५
[६९१] रोमियों ११:१७
[६९२] प्रति-संदर्भ—ख्रीस्त बोध ४
[६९३] प्रति-संदर्भ—मसीह १.४

बच्चे है, क्योंकि वे उसके वंश के नहीं हैं। यह इस बात को स्पष्ट करता है कि संत पौलूस ने क्यों शोक प्रकट किया, “और केवल वही नहीं पर हम भी जिनके पास आत्मा का पहला फल है, आप ही अपने में कराहते हैं, और लेपालक होने की, अर्थात अपनी देह के छुटकारे की बाट जोहते हैं।”[६९४]

मसीह वापस आएगा और सारी मानवता को परमेश्वर के सच्चे बच्चे बनाएगा। वह पृथ्वी पर शरीर में जन्म लेकर लौटेगा, जैसे कि वह अपने पहले आगमन में आया था। वह अपने पहले आगमन की कार्यवाही के पथ पर चल कर उसे क्षतिपूर्ति द्वारा पुनः स्थापित करेगा। जैसा कि पहले स्पष्ट किया गया था, दूसरी आगमन का मसीह वचन के आधार पर विधान को आरंभ करके कार्य करेगा और तब मसीह की नींव को दोनों आत्मिक रूप से और शारीरिक रूप से पूरा करेगा। उस नींव पर वह सारी मानवता का मूल पाप धोकर उन्हें अपने आप में रोपेगा और परमेश्वर के वंश में पैदा हुए बच्चे बनाकर पुनःस्थापित करेगा।

पहले आगमन पर यीशु ने बारह शिष्यों को चुन कर और उनमें से तीन शिष्यों को अपना मुख्य शिष्य बनाकर पारिवारिक नींव डाली थी। इस में उसकी मंशा थी कि याकूब के स्थान को, जो मसीह की पारिवारिक नींव का मुख्य व्यक्ति था, क्षतिपूर्ति द्वारा पुनः स्थापित करे। सत्तर अनुयायी बना कर, यीशु ने नींव के कार्यक्षेत्र को गोत्र के स्तर तक बढ़ाया। इसी तरह से, मसीह अपने दूसरे आगमन पर दोनों आत्मिक और शारीरिक रूप में मसीह के लिए पारिवारिक नींव डालना आरंभ करेगा। तब वह उसका कार्यक्षेत्र गोत्र, समाज, राष्ट्र, दुनिया और जगत तक विकसित करेगा। जब यह नींव सुरक्षित हो जाएगी, तब वह अंततः परमेश्वर का राज्य स्थापित कर सकेगा।

पहले इस्राएल को बढ़ाकर परमेश्वर का तात्पर्य यीशु के लिए नींव तैयार करने का था, ताकि वह उसके आने पर स्वर्ग का राज्य बनाने का ध्येय पूरा कर सके। जब उन्होंने उसका विरोध किया, परमेश्वर ने ईसाइयों को दूसरे इस्राएल के स्थान पर चुना। उसी तरह, स्वर्ग का राज्य स्थापित करने के ध्येय को पूरा करने के लिए ईसाई-मत को बढ़ावा देने में परमेश्वर का तात्पर्य था कि वह मसीह के दूसरे आगमन के लिए नींव तैयार करे सके। यदि ईसाइयों ने भी उसी तरह उसका विरोध किया तब परमेश्वर के पास उन्हें भी त्यागने और तीसरे इस्राएल को चुनने के सिवा और कोई चारा बाकी नहीं रहेगा। इसलिए, यद्यपि ईसाई लोग अंतिम दिनों में भले ही परमेश्वर के अनुग्रह में खुशहाल हों, फिर भी वास्तव में, यीशु के दिनों के यहूदी लोगों की तरह, उनकी परिस्थिति बहुत ही दुविधा में होगी। वे स्वयं बड़ी आपत्ति और दुर्भाग्य में पड़ने के लिए जवाबदेह होंगे।

३.४. यीशु की कार्यवाही से सीखे हुए कुछ पाठ

पहला, यीशु की कार्यवाही हमें परमेश्वर की इच्छा की पूर्वनियति के बारे में सिखाती है। परमेश्वर अपनी इच्छा का पूरा होना बिलकुल पूर्वनिर्धारित करता है कि उसकी इच्छा पूरी हो और तब उसके लिए लगातार काम करता है जब तक वह पूरी न हो जाए। जब यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला अपने मिशन में

[६९४] रोमियों ८:२३

असफल हुआ, तो यीशु ने परमेश्वर की इच्छा हर कीमत पर पूरी करने की कोशिश की, यहाँ तक कि उसने यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के मिशन की ज़िम्मेदारी अपने सिर पर ली। जब यहूदियों के अविश्वास के कारण स्वर्ग का राज्य स्थापित करने का प्रयास कुंठित हुआ, यीशु फिर भी अपने दृढ़ संकल्प में सर्वथा बना रहा और अपनी वापसी पर परमेश्वर की इच्छा पूरी करने की प्रतिज्ञा की।

आगे, यीशु की कार्यवाही यह दर्शाती है कि परमेश्वर की इच्छा की नियति किस व्यक्ति या किस देश के द्वारा पूरी होगी, शर्तबन्ध है निरपेक्ष नहीं है। कहने का अर्थ यह हुआ कि भले ही परमेश्वर ने पुनरुद्धार की दैवी योजना में किसी व्यक्ति या देश को एक उद्देश्य को पूरा करने के लिए चुना हो, यदि वह अपनी ज़िम्मेदारी निभाने में विफल हुआ, तो परमेश्वर अपने काम को जारी रखने के लिए अवश्य ही दूसरा व्यक्ति या दूसरा देश चुनेगा। यीशु ने यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले को अपना मुख्य शिष्य होने के लिए चुना, परन्तु जब वह अपनी ज़िम्मेदारी पूरी करने में विफल हुआ, यीशु ने पतरस को उसकी जगह पर चुना। यीशु ने यहूदा इस्करियोती को अपने बारह शिष्यों में से एक होने के लिए चुना, परन्तु जब यहूदा विफल हुआ तो उसकी जगह पर मत्तियाह को चुना गया।[६९५] उसी तरह, परमेश्वर ने अपने पुनरुद्धार की दैवी योजना में यहूदी लोगों को मुख्य ज़िम्मेदारी पूरा करने के लिए चुना, परन्तु जब वे असफल हुए, तब उनका मिशन अन्य जातियों को सौंपा गया।[६९६] ये दृष्टांत यह व्यक्त करते हैं कि जब परमेश्वर किसी एक व्यक्ति या देश को अपनी इच्छा पूरी करने के लिए चुनता है, तो वह व्यक्ति या देश, वास्तव में, उसकी इच्छा पूरी करेगा, यह वह पूर्ण रूप से कदापि पूर्वनिर्धारित नहीं करता।

यीशु की कार्यवाही यह भी प्रदर्शित करती है कि परमेश्वर किसी व्यक्ति के अपने हिस्से की ज़िम्मेदारी पूरी करने के प्रयासों में कभी हस्तक्षेप नहीं करता, परन्तु उसके कार्यों के परिणामों के अनुसार उससे व्यवहार करता है। परमेश्वर को अवश्य यह बोध हो गया होगा कि यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला और यहूदा इस्करियोती अपना विश्वास खो रहे हैं। उसके पास उन्हें पाप करने से रोकने की शक्ति अवश्य थी। तो भी परमेश्वर ने उनके विश्वास में हस्तक्षेप नहीं किया, परंतु उनके किए हुए के परिणाम के आधार पर उन से संबद्ध हुआ।

अंततः, यीशु की कार्यवाही यह दिखाती है कि जितना बड़ा किसी का मिशन होगा उतनी ही बड़ी परीक्षा से उसे गुज़रना पड़ेगा। यीशु दूसरे आदम के रूप में आया। अपने मिशन को पूरा करने के लिए, उसे आदम के उस स्थान को, जो पतन से पहले था, क्षतिपूर्ति द्वारा पुनःस्थापित करना पड़ा। चूँकि आदम बेवफा हो गया और उसने परमेश्वर को त्याग दिया, यीशु को आदम की इस ग़लती को सुधाने के लिए—उसका परमेश्वर के द्वारा त्यागा जाना—इस पूरी घटना को उसने अंत तक अपरिवर्तनशील विश्वास के साथ भोगा। इसी लिए, यीशु जंगल में शैतान के द्वारा भरमाया गया और सलीब पर परमेश्वर के द्वारा त्यागा गया।[६९७]

---

[६९५] प्रेरितों १:२५
[६९६] प्रेरितों १३:४६ मत्ती २१:३३-४३
[६९७] मत्ती २७:४०

दिव्य नियम प्रतिपादन

भाग २

अध्याय ३

दबी इतिहास में कालावधियाँ और उनकी लंबाई का निर्धारण

विषय सूची

पृष्ठ

संभाग १
समानांतर दैवी कालावधि ३१२

संभाग २
पुनरुद्धार की नींव डालने के लिये दैवी योजना के
युग की अवधियों में वर्ष या पीढ़ियों की संख्या ३१४
२.१ पुनरुद्धार की दैवी योजना क्यों और किस प्रकार प्रवर्धित होती है ३१४
२.२ लंब क्षतिपूर्ति की शर्तें और क्षतिपूर्ति द्वारा क्षैतिज पुनरुद्धार ३१५
२.३ क्षतिपूर्ति द्वारा क्षैतिज पुनरुद्धार लंब रूप से निष्पन्न किया गया ३१६
२.४ विश्वास की नींव पुनःस्थापित करने के लिये संख्यात्मक क्षतिपूर्ति की कालावधियाँ ३१६
२.५ पीढ़ियों की संख्या के द्वारा समानांतर कालों का निर्धारित किया जाना ३२१
२.६ क्षैतिज पुनरुद्धार की दैवी अवधियाँ क्षतिपूर्ति द्वारा लंब रूप से संपन्न किए गईं ३२२

संभाग ३
पुनरुद्धार की दैवी योजना के युग में कालावधियाँ और उनकी लंबाई ३२५
३.१ मिस्र में दासता के चार-सौ-वर्ष ३२५
३.२ न्यायियों के चार-सौ-वर्ष ३२५
३.३ संयुक्त राज्य की एक सौ बीस वर्ष की अवधि २२६
३.४ उत्तर और दक्षिण के विभाजित राज्यों के चार सौ वर्ष ३२७
३.५ इज़राएलियों का देशनिकाला जाना और वापसी के दो सौ दस वर्ष की अवधि ३२८
३.६ मसीह के आगमन के लिये चार सौ वर्ष की तैयारी का काल ३२९

संभाग ४
पुनरुद्धार की दैवी योजना के प्रवर्धन के युग की अवधियाँ और उनकी लंबाई ३३०
४.१ रोमी साम्राज्य में अत्याचार के चार-सौ-वर्ष का समय ३३०
४.२ प्रादेशिक चर्च की अगवाई के चार-सौ-वर्ष की अवधि ३३०
४.३ ईसाई साम्राज्य की एक-सौ-बीस वर्ष की अवधि ३३१
४.४ पूर्व और पश्चिम के विभाजित राज्यों के चार-सौ-वर्ष की अवधि ३३१
४.५ पोप के निर्वासन और वापसी के दो-सौ-दस वर्ष की अवधि ३३१
४.६ मसीह के दूसरे आगमन के लिये चार-सौ-वर्ष की तैयारी की अवधि ३३२

रेखा चित्र २ समानांतर दैवी अवधियाँ ३३३

संभाग १

समानांतर दैवी कालावधि

मानव इतिहास के प्रवाह की जाँच करते समय, बहुधा हम ऐसी घटनाएँ पाते हैं जहाँ इतिहास की एक अवधि की अनेक परिस्थितियाँ समान रूप में अगले युग के दौरान दोहराई गई हैं। कुछ इतिहासकार इन घटनाओं को देखकर बहुत प्रभावित हुए हैं और कहते हैं कि इतिहास की प्रगति चक्राकार गति में होती है। तथापि, वे इसका अंतर्निहित मूल कारण नहीं समझते हैं। जब इतिहास का एक काल पिछली अवधि की घटनाएँ फिर से दोहराता है, हालाँकि उसके लक्ष्य और कोटि में अंतर क्यों ना हो, तो यह दो अवधियाँ समानांतर दैवी कालावधियाँ कही जाती हैं। जैसा कि आगे यह स्पष्ट किया जाएगा, इस पारिभाषिक कथन को प्रयोग करने का मूल कारण यह है कि इन समानांतर घटनाओं के पीछे परमेश्वर के पुनरुद्धार की दैवी योजना का भेद छुपा है।

समानांतर दैवी कालावधियाँ किस प्रकार घटित होतीं हैं? इतिहास का युग पुनरुद्धार की दैवी योजना की विभिन्न घटनाओं के आधार पर विकसित होता है, जो इतिहास को एक निश्चित लक्ष्य की ओर बाध्य करता है। दैवी योजना में जब कोई मुख्य व्यक्ति मसीह के लिए नींव पुनःस्थापित करने में विफल होता है, तो उस मुख्य व्यक्ति से संबंधित दैवी कालावधि समाप्त हो जाती है। तो भी, चूँकि परमेश्वर ने अंत में अपनी इच्छा का पूरा होना बिलकुल पूर्वनिश्चित किया है,[६९८] वह उसके मिशन को चलाने के लिए दूसरे व्यक्ति को चुनता है, और मसीह की नींव को क्षतिपूर्ति द्वारा पुनःस्थापित करने के लिए अगला ऐतिहासिक काल खोलता है। चूँकि यह नया काल क्षतिपूर्ति द्वारा पिछला काल पुनःस्थापित करता है, इसलिए समान घटनाओं की एक अवधि दुबारा घटित होती है। इस प्रकार कालावधियाँ एक दूसरे के समानांतर हो जातीं हैं।

परन्तु, समानांतर अवधियाँ एक दूसरे से शैली और अंतर्वस्तु के संबंध से ठीक-ठीक मिलती जुलती नहीं हैं, क्योंकि किसी एक विशेष कालावधि में मुख्य व्यक्ति को अपने समय में पिछले काल की अधूरी लंब क्षतिपूर्ति की शर्तों को क्षैतिज रूप से पुनःस्थापित करना चाहिए। पुनरुद्धार की दैवी योजना जितनी अधिक प्रवर्धित होती जाती है उतनी पिछली क्षतिपूर्ति की शर्तें संचित होती जातीं हैं, नए मुख्य व्यक्ति को उतनी ही भारी क्षतिपूर्ति की शर्तें पूरी करनी पड़तीं हैं। परिणाम स्वरूप, नए समानांतर काल पिछले समानांतर कालों से अंतर्वस्तु और विस्तार में भिन्न होते हैं।

विकास काल के तीन चरणों को विभिन्न दर्जों के प्रत्यक्षीकरण के अनुसार वर्गीकृत किया जा सकता है: गठन-चरण—चिह्न में प्रत्यक्षीकरण है, विकास-चरण—छवि में और निष्पत्ति-चरण—वास्तविक वस्तु में। इसी तरह, इतिहास के विकास में पुनरुद्धार की दैवी योजना के समानांतर काल इस पद्धति के अनुसार एक जैसी घटनाएं दोहराते हैं। इस प्रकार, पुनरुद्धार की दैवी योजना का कुल इतिहास समानांतर कालों की शैली के अनुसार विभाजित किया जा सकता है: पुनरुद्धार की नींव डालने के लिए दैवी योजना का युग प्रतीकात्मक समानांतर कालों का युग है, पुनरुद्धार की दैवी योजना का युग छवि

[६९८] प्रति-संदर्भ—पूर्वनियति १

समानांतर कालों का युग है और पुनरुद्धार की दैवी योजना के प्रवर्धन का युग वास्तविक समानांतर कालों का युग है।

आगे, आइए हम उन मुख्य कारकों की जाँच करते हैं जो समानांतर दैवी कालावधि का बनना निश्चित करते हैं। समानांतर दैवी कालावधियाँ दुबारा इसलिए घटतीं हैं क्योंकि मसीह के लिए नींव की बहाली की व्यवस्था दुबारा घटित होतीं है। तदनुसार, समानांतर दैवी कालावधियों का गठन निर्धारित करने वाले कारक यह हैं: पहला, विश्वास की नींव डालने के लिए तीन आवश्यक शर्तें (मुख्य व्यक्ति, शर्त की वस्तु, और क्षतिपूर्ति की संख्यात्मक अवधि) और दूसरा, पतित प्रवृत्ति को निकालने की शर्त जो वास्तविक नींव की बहाली के लिए आवश्यक है।

इन कारकों के आधार पर, समानांतर दैवी कालावधियों की दो विशेषताएं स्पष्ट होतीं हैं। पहली, समानांतर दैवी योजना की अवधियों की लंबाई, पीढ़ियों की निश्चित संख्या या विश्वास की नींव डालने के लिए क्षतिपूर्ति की अवधि के आवश्यक वर्षों के आधार पर निर्धारित की जाती है। पुनरुद्धार की दैवी योजना में जब एक मुख्य व्यक्ति अपनी ज़िम्मेदारी पूरी करने में विफल होता है और इच्छा के प्रवर्धन का कारण बनता है, तो परमेश्वर अपने कार्य को, जब तक खोई हुई विश्वास की नींव बहाल नहीं की जाती दूसरे मुख्य व्यक्तियों के द्वारा दुबारा करता है। प्रत्येक व्यवस्था में, नींव के पुनःस्थापन के लिए क्षतिपूर्ति की संख्यात्मक अवधि किसी भी रूप में दोहराई जानी चाहिए। इसी करण से इतिहास में समानांतर अवधियों की लंबाई एक समान होती है, प्रत्येक वही निर्धारित संख्या या पीढ़ियाँ प्रदर्शित करतीं हैं। इस अध्याय का उद्देश्य इस विषय पर ब्योरे में चर्चा करना है।

दूसरा, इतिहास में समानांतर काल अन्य तीन दैवी कारकों के द्वारा गढ़े जाते हैं: मुख्य व्यक्ति और विश्वास की नींव डालने के लिए भेंट की गई शर्त की वस्तु, और वास्तविक नींव के लिए पतित प्रवृत्ति को निकालने की क्षतिपूर्ति की शर्त। पुनरुद्धार की दैवी योजन का लक्ष्य अंत में मसीह के लिए नींव पुनःस्थापित करना है। तदनुसार, जब दैवी योजना प्रवर्धित होती है, तो बहुत सी व्यवस्थाएं जो इस नींव की बहाली से संबद्ध होतीं हैं फिर से दोहराई जातीं हैं। चूँकि मसीह के लिए नींव तभी स्थापित की जा सकती है जब प्रतीकात्मक भेंट के द्वारा पहले विश्वास की नींव डाली जाए और फिर वास्तविक भेंट के द्वारा वास्तविक नींव डाली जाए, इन दो बलिदानों को पुनःस्थापित करने के लिए दैवी इतिहास व्यवस्थाओं को दोहराता आया है। इन व्यवस्थाओं ने दैवी कालावधियों के बीच समानांतर काल गढ़े हैं। अगले अध्याय में हम इस मामले पर सविस्तार चर्चा करेंगे।

संभाग २

पुनरुद्धार की नींव डालने के लिये दैवी योजना के युग की अवधियों में वर्ष या पीढ़ियों की संख्या

२.१ पुनरुद्धार की दैवी योजना क्यों और किस प्रकार प्रवर्धित होती है

मानवता के लिए परमेश्वर की दैवी योजना मसीह के लिए नींव डालना, मसीह को ग्रहण करना, और पुनरुद्धार का अंतिम लक्ष्य प्राप्त करना है, परन्तु यह योजना आदम से लेकर नूंह, अब्राहम, मूसा और अंत में यीशु तक प्रवर्धित हुई। लोगों के अविश्वास के कारण जब यीशु अपना अंतिम उद्देश्य पूरा किए बिना मारा गया, पुनरुद्धार की दैवी योजना दूसरे आगमन के समय तक फिर से प्रवर्धित हो गई।

पुनरुद्धार की दैवी योजना क्यों प्रवर्धित हुई? इस प्रश्न का उत्तर पूर्वनियति के नियम की जानकारी से दिया जा सकता है। इस नियम के अनुसार, चूँकि परमेश्वर अपनी इच्छा सर्वथा पूर्वनिर्धारित करता है, वह एक दिन उसे अवश्य पूरा करेगा। परंतु, परमेश्वर की इच्छा का किसी विशेष व्यक्ति के द्वारा पूरा होना, परमेश्वर की अपने हिस्से की ज़िम्मेदारी के अलावा उसकी अपने हिस्से की ज़िम्मेदारी पूरी करने की शर्त पर निर्भर होता है। तदनुसार, क्योंकि जब कोई उत्तरदायी व्यक्ति अपनी ज़िम्मेदारी पूरी करने में विफल होता है और परमेश्वर की इच्छा पूरी नहीं होती है तो उसकी जगह परमेश्वर अन्य युग में दूसरा व्यक्ति चुन लेता है। इस तरह परमेश्वर अपना काम जब तक उसका निपटाव न हो जाए जारी रखता है, इस प्रक्रिया से दैवी योजना प्रवर्धित होती जाती है।

आइए हम आगे यह जाँच करें कि पुनरुद्धार की दैवी योजना किस प्रकार प्रवर्धित होती है। सृष्टि के नियम के अनुसार परमेश्वर संख्या तीन का परमेश्वर है। उसकी समानता में निर्मित सभी वस्तुएं अपने अस्तित्व के संबंध से अपनी गति और विकास के तीन चरण की प्रक्रिया के माध्यम से खुद को प्रकट करती हैं। किसी भी सत्त्व को अपनी गोलाकार गति के साथ चार-दशा-आधार स्थापित करके सृष्टि का उद्देश्य पूरा करने के लिए, उसे आदि-विभाजन-मिलन क्रिया के तीन चरणों के माध्यम से गुज़र कर तीन-पात्र-साझियों के साथ पारस्परिक क्रिया में संबद्ध होकर तीन-वस्तु-प्रयोजन की प्राप्ति करनी चाहिए। सृष्टि का उद्देश्य बहाल करने की दैवी योजना वचन पर आधारित पुनः निर्माण की योजना होती है। इसलिए, जब कभी पुनरुद्धार की दैवी योजना प्रवर्धित होती है, वह अधिक से अधिक तीन चरण तक विस्तृत हो सकती है। सृष्टि के नियम के आधार पर इसे तीन प्रयासों की स्वीकृति है।

उदाहरण के तौर पर, आदम के परिवार में जब कैन और हाबिल वास्तविक भेंट चढ़ाने में विफल हुए, तो यह व्यवस्था नूंह और अब्राहम के परिवारों में फिर से दोहराई गई, और तीसरे प्रयास में सफल हुई। जब अब्राहम ने अपने प्रतीकात्मक बलिदान में गलती की, तो यह व्यवस्था प्रवर्धित होकर इज़हाक के बाद याकूब के द्वारा पुरी हुई। मूसा और यीशु के नेतृत्व में कनान की प्राप्ति की कार्यवाहियाँ, प्रत्येक तीन कार्यवाहियों में विस्तृत हुईं। जब राजा शाऊल मंदिर बनाने में असफल हुआ, तो यह व्यवस्था अगले दो राजाओं तक प्रवर्धित हुई: दाऊद और सुलेमान। परमेश्वर की सृष्टि का आदर्श जो आदम के समय

पूरा नहीं हुआ था, वह पूरा होने के लिए दूसरी और तीसरी दैवी योजना: यीशु के आने तक, जो दूसरा आदम था, और फिर दूसरे आगम के मसीह के आने तक रुका रहा। आम कहावतें, जैसे कोरिया की एक कहावत है "जो पहले प्रयास में सफल नहीं हो सका वह अवश्य ही तीसरी बार पूर्ण होगा," नियम का यह उदाहरण हमें रोजमर्रा का ज्ञान सिखाता है।

२.२ लंब क्षतिपूर्ति की शर्तें और क्षतिपूर्ति द्वारा क्षैतिज पुनरुद्धार

दैवी इतिहास में अपने पूर्वाधिकारी का मिशन विरासत में प्राप्त करने और उसे पूरा करने के लिए, एक मुख्य व्यक्ति को जो पुनरुद्धार की दैवी योजना का ज़िम्मेदार है, थोड़े समय में, उन सभी क्षतिपूर्ति की शर्तों को जिन्हें उसके पूर्वाधिकारियों ने पूरा करने का प्रयत्न किया था, अवश्य पूरा करना चाहिए। यदि यह मुख व्यक्ति भी अपने मिशन में विफल होता है, तो क्षतिपूर्ति की सभी शर्तें, जो उसने पूरी करने की कोशिश की थीं दूसरे व्यक्ति को जिसे वही ज़िम्मेदारियाँ सौंपी जाएगी, पारित हो जाती हैं। दैवी इतिहास की कार्यवाही में मुख्य व्यक्तियों की विफलता से जो शर्तें पूरी न होने के कारण संचित हो जातीं हैं, वे *लंब क्षतिपूर्ति की शर्तें* कहलातीं हैं। इन्हें थोड़े समय में पूरा करने के लिए मुख्य व्यक्ति के कार्य को *क्षतिपूर्ति द्वारा क्षैतिज पुनःस्थापन* कहा जाता है।

उदाहरण के तौर पर, अब्राहम को क्षैतिज रूप से क्षतिपूर्ति द्वारा वे सब लंब क्षतिपूर्ति की शर्तें जो पहले आदम के परिवार और नूंह के परिवार ने पूरी करने का प्रयत्न किया था, पुनःस्थापित करनी पड़ीं। अब्राहम को एक ही समय एक ही वेदी पर तीन बलिदान चढ़ा कर क्षैतिज रूप से क्षतिपूर्ति द्वारा वे सब लंब क्षतिपूर्ति की शर्तें जो तीन व्यवस्थाओं के दौरान प्रवर्धित दैवी योजना में संचित हुईं थीं पुनःस्थापित करनी थीं। तीन बलिदान उन सभी शर्तों को द्योतित करते हैं जो आदम और नूंह पूरा नहीं कर सके और वे जो अब्राहम को नए मुख्य व्यक्ति होने के रूप में पूरी करनी चाहिए थीं।

याकूब को अपनी कार्यवाही के थोड़े समय में क्षैतिज रूप से क्षतिपूर्ति के द्वारा वह सब शर्तें जो नूंह से लेकर बारह पीढ़ियों में संचित हुईं थीं पुनःस्थापित करनी पड़ीं। इसी वजह से उसे बारह पुत्र दिए गए थे जिन से इस्राएल के बारह गोत्र निकले हुए।

यीशु ने अपने समय तक की सभी संचित लंब शर्तों को जो उसके पूर्वजों, भविष्यद्वक्ताओं और राजाओं ने, जिन्होंने चार हज़ार वर्ष तक बाईबल के इतिहास की दैवी योजना में अगवाई की थी, अधूरी छोड़ी थीं, क्षैतिज रूप से क्षतिपूर्ति द्वारा बहाल करने के लिए इस युक्ति का उपयोग किया। उदाहरण की तौर पर, यीशु ने थोड़े समय में सभी लंब क्षतिपूर्ति की शर्तें, जो याकूब की कार्यवाही के दौरान संचित हुई थीं, बहाल करने के लिए बारह शिष्य और सत्तर अनुयाई चुने, जिस में परमेश्वर ने याकूब के बारह पुत्र और सत्तर संबंधियों के साथ काम किया, और मूसा की कार्यवाही से परमेश्वर ने इस्राएल के बारह गोत्रों और सत्तर पितरों के साथ काम किया। इसके अतिरिक्त, यीशु ने व्यवस्था के रूप में शैतान को अलग करने के लिए सभी लंब क्षतिपूर्ति की शर्तें क्षैतिज रूप से पुनःस्थापित करने के लिए चालीस दिन का उपवास किया जो विश्वास की नींव के लिए आवश्यक था। इस अर्थ से, हम यह समझ सकते हैं कि पुनरुद्धार की दैवी

योजना में प्रत्येक मुख्य व्यक्ति व्यक्तिगत रूप से केवल अपने लिए ही नहीं काम करता है, परन्तु वह सभी पूर्वजों, भविष्यद्वक्ताओं और संतों का, जिनका अतीत में वही मिशन था, प्रतिनिधित्व करता है। वह स्वयं इतिहास में उनके परिश्रम के फल का लाभ प्राप्त करता है।

२.३ क्षतिपूर्ति द्वारा क्षैतिज पुनरुद्धार लंब रूप से निष्पादित किया गया

कभी-कभी क्षैतिज पुनरुद्धार लंब व्यवस्था के द्वारा जो कई पीढ़ियों तक विस्तृत हो सकता है, प्राप्त किया जाता है। पुनरुद्धार की दैवी योजना में अब्राहम के परिवार के साथ ऐसा ही हुआ। स्वीकार्य प्रतीकात्मक बलिदान करके, अब्राहम को क्षैतिज रूप से क्षतिपूर्ति द्वारा सभी लंब क्षतिपूर्ति की शर्तों को जो आदम के परिवार और नूंह के परिवार की गलतियों के कारण संचित हुईं थीं पुनःस्थापित करना चाहिए था। परंतु बलिदान में उसकी ग़लती एक और विफलता का कारण बनी और दैवी योजना विलंबित हो गई। जैसा कि ऊपर बताया गया है, क्योंकि दैवी योजना में मसीह के लिए पारिवारिक नींव डालने का यह तीसरा प्रयास था, नियम के अनुसार उसके परिवार को बिना चूके परमेश्वर की इच्छा पूरी करनी चाहिए थी। इसलिए, उसकी विफलता के बावजूद परमेश्वर ने ऐसा रास्ता निकाला जिसके बल पर वह उसकी ग़लती की उपेक्षा कर सका, परंतु लंब क्षतिपूर्ति की शर्तें उसने क्षैतिज रूप से बिना किसी प्रवर्धन के पुनःस्थापित कीं। इस तरह, परमेश्वर ने विशेष व्यवस्था तैयार की: उसने अब्राहम, इज़हाक और याकूब से क्षतिपूर्ति की आवश्यक शर्तें पूरी करवाईं और अपनी इच्छा के आधार पर तीन व्यक्तियों को एक मान कर गिना। इसलिए, तीन पीढ़ियों तक लंब प्रवर्धन के बावजूद, याकूब की विजय और इज़हाक की विजय अब्राहम की अपनी विजय बन गई, जैसे कि उसने अपनी पीढ़ी ही में बिना विलंब के प्राप्त की गईं हों।[६९९] तीन पीढ़ियों की एकात्मकता का अभिप्राय परमेश्वर का अपने आप को "अब्राहम का परमेश्वर, इज़हाक का परमेश्वर और याकूब का परमेश्वर" की उपाधि देना हुआ।[७००]

इस तरह, परमेश्वर अब्राहम को, उन क्षैतिज क्षतिपूर्ति की शर्तों के लिए जिन्हें वह अपनी पीढ़ी में पूरा करने में असफल रहा, इज़हाक और याकूब की पीढ़ियों के द्वारा लंब रूप में पूरा हुआ मान कर श्रेय दे सका। इस प्रकार का पुनरुद्धार *क्षतिपूर्ति द्वारा लंब रूप में किया हुआ क्षैतिज पुनरुद्धार* कहलाता है।

२.४ विश्वास की नींव पुनःस्थापित करने के लिये संख्यात्मक क्षतिपूर्ति की कालावधियाँ

किसी भी प्रमुख व्यक्ति को विश्वास की नींव पुनःस्थापित करने के लिए एक या अधिक संख्यात्मक क्षतिपूर्ति की कालावधियों को पूरा करना होता है।[७०१] आइए हम इसका कारण मालूम करें। परमेश्वर अपने नियमों पर, जिसका एक पहलू संख्यात्मक है, विद्यमान है। जगत, जिसका केन्द्र मनुष्य

---

[६९९] प्रति-संदर्भ—नींव ३.१.२.३, नींव ३.३

[७००] निर्गमन ३:६

[७०१] प्रति-संदर्भ—पुनरुद्धार १.२.१

है, संख्यात्मक सिद्धांतों के आधार पर बनाया गया था, और वास्तविक पात्र-साझी के रूप में अदृश्य परमेश्वर के द्वैत अभिलक्षणों को प्रकट करता है। यही कारण है कि विज्ञान, बाहरी सिद्धांतों की जो जगत का संचालन करते हैं, खोज करता है और गणित की सहायता से किए गए शोध के माध्यम से प्रगति करता है। पहले पूर्वजों को पूर्ण बनने के लिए विकास काल से गुज़रना चाहिए था, जो संख्या तीन में चित्रण किया गया है, इस प्रकार वे विश्वास की नींव डाल सकते थे। उन्हें अपनी पूर्णता में इन संख्याओं के गुणों का मूर्त रूप बनना चाहिए था। हमें इस विषय-वस्तु की जाँच करनी चाहिए क्योंकि विश्वास की नींव के पुनःस्थापन के लिए हमें ना ही केवल शर्त की वस्तु की भेंट करने की आवश्यकता है, जो यह दर्शाती है कि जगत शैतान की दासता में है, परन्तु हमें वह संख्या भी जो शैतान ने भ्रष्ट की है उसे पुनःस्थापित करने के लिए क्षतिपूर्ति की एक संख्यात्मक अवधि से पारित होना पड़ता है।

पतन से पहले, पहले मानव पूर्वजों को किस संख्या के आधार पर विश्वास की नींव डालनी चाहिए थी? अपनी पूर्णता में उन्हें किन संख्याओं का मूर्त रूप बनना चाहिए था? हमने सृष्टि के नियम में यह सीखा है कि कोई भी सत्त्व चार-दशा-आधार बनाए बिना न तो बढ़ सकता है और ना अपना अस्तित्व बनाए रख सकता है। तदनुसार, आदम और हव्वा प्रत्येक को अपनी अपरिपक्व अवस्था ही में अपने ख़ुद के जीवन के लिए चार-दशा-आधार बना लेनी चाहिए थी। चार-दशा-आधार में प्रत्येक दशा को विकास काल के तीन चरणों से पारित होना चाहिए, जो सब मिला कर बारह होते हैं। इसके अतिरिक्त, चार-दशा-आधार में प्रत्येक दशा को तीन-पात्र-साझी बनाकर तीन-वस्तु-प्रयोजन पूरा करना होता है, जो कुल मिलाकर बारह पात्र-साझी बनते हैं और बारह वस्तु-प्रयोजन पूरे किए जाते हैं। इस प्रकार, जिस विकास काल में आदम को विश्वास की नींव डालनी चाहिए थी वह संख्या बारह को पूरी करने की अवधि थी। अपनी अपरिपक्व अवस्था में, प्रत्येक पहले मानव पूर्वजों को संख्या बारह के आधार पर विश्वास की नींव डालनी चाहिए थी, वह संख्या बारह को पूरी करने की अवधि थी, और अपनी पूर्णता में उन्हें बारह-वस्तु-प्रयोजन प्राप्त कर लेना चाहिए था और इस प्रकार संख्या बारह के गुणों का मूर्त रूप बनना चाहिए था। उनके पतन के कारण शैतान ने इस संख्या को दूषित कर दिया था। इसलिए, पुनरुद्धार की दैवी योजना में प्रमुख व्यक्ति को विश्वास की नींव डालने के समय संख्या बारह को पुनःस्थापित करने के लिए क्षतिपूर्ति की अवधि से अवश्य गुज़रना चाहिए। केवल उसी आधार पर वह संख्या बारह की गुणवत्ता के पूर्ण मूर्त रूप की बहाली के लिए वास्तविक नींव डाल सकता है।

संख्या बारह को पुनःस्थापित करने के लिए क्षतिपूर्ति की अवधि के कुछ उदाहरण: नूंह को जहाज़ बनाने के लिए १२० वर्ष लगे, मूसा के नेतृत्व में कनान की प्राप्ति के लिए दैवी योजना के १२० वर्ष, और अब्राहम का परमेश्वर द्वारा बुलाए जाने के बाद से जब याकूब ने एसाव को रोटी और मसूर की दाल देकर पहलौठे का अधिकार मोल लेने तक १२० वर्ष। जैसे कि हम नीचे चर्चा करेंगे, कि यह अंतिम अवधि पुराने नियम के युग के संयुक्त राज्य की १२० वर्ष की अवधि और नए नियम के युग के ईसाई राज्य में शारलेमेन और उसके पुत्रों के अंतर्गत समतुल्य १२० वर्ष की अवधि के द्वारा पुनःस्थापित हो जानी चाहिए थी।

परिपक्वता प्रक्रिया के दौरान जिसमें आदम और हव्वा विश्वास की नींव डाल रहे थे उसमें उन्हें

संख्या चार की एक और अपेक्षित अवधि पूरी करनी थी। विकास की अवधि के तीन-चरणों से पारित होकर उन्हें परमेश्वर के सीधे प्रभुत्व के क्षेत्र में प्रवेश करना चाहिए था, जो कि चौथा चरण है। यहाँ उन्होंने चार-दशा-आधार संपन्न कर लिया होता। इस प्रकार संख्या चार को पूरा करने पर पहले मानव पूर्वज उसके पूर्ण मूर्त रूप बन जाते। पतन के कारण, यह संख्या शैतान के द्वारा भ्रष्ट हो गई। इसलिए, दैवी योजना में प्रमुख व्यक्तियों को विश्वास की नींव पुनःस्थापित करने के लिए क्षतिपूर्ति शर्त की यह अवधि अवश्य पूरी करनी चाहिए। केवल इसी आधार पर वे संख्या चार के गुणों के पूर्ण मूर्त रूप पुनः बनने के लिए वास्तविक नींव डाल सकते हैं।

यह पहले बताया गया है कि संख्या चार को पुनःस्थापित करने की क्षतिपूर्ति की अवधियाँ विश्वास की नींव पुनःस्थापित करने के लिए आवश्यक हैं।[७०२] इसके उदाहरण यह हैं: नूंह का चालीस दिन की बाढ़ का न्याय, मूसा का चालीस दिन का उपवास, कनान के देश में जासूसी के चालीस दिन, यीशु का चालीस दिन का उपवास, और पुनरुत्थान के बाद यीशु की चालीस दिन की सेवकाई।

विकास काल संख्या इक्कीस को पूरा करने की अवधि भी है। पहले पूर्वजों को संख्या इक्कीस की अवधि के आधार पर विश्वास की नींव डाल कर संख्या इक्कीस का पूर्ण मूर्त रूप बनना चाहिए था, और तब सृष्टि का उद्देश्य साकार करना चाहिए था। परन्तु, पतन के कारण, यह संख्या शैतान ने भ्रष्ट कर दी थी। इसलिए, इतिहास में प्रमुख व्यक्तियों को विश्वास की नींव डालने के लिए संख्या इक्कीस को पुनःस्थापित करने की क्षतिपूर्ति की अवधि पूरी करनी चाहिए। केवल इसी आधार पर वे संख्या इक्कीस की गुणवत्ता का पूर्ण मूर्त रूप बनकर वास्तविक नींव डाल सकते हैं।

संख्या इक्कीस का महत्व समझने के लिए, हमें पहले परमेश्वर के नियम में संख्या तीन, चार और सात का महत्व समझना चाहिए। परमेश्वर, जिसके द्वैत अभिलक्षण सामंजस्यपूर्ण एकता में विद्यमान हैं, वह संख्या तीन का परमेश्वर है। सृष्टि जब चार-दशा-आधार में परमेश्वर के साथ एक हो जाती है तो संपन्न हो जाती है। इस तरह, किसी व्यक्ति को पूर्ण होने के लिए उसे अपने आप में चार-दशा-आधार स्थापित करनी चाहिए, जिसमें मन और शरीर परमेश्वर के साथ मिलकर ट्रिनिटी का निर्माण करते हैं, जिसका केन्द्र परमेश्वर होता है। पुरुष और स्त्री को पूर्ण पति और पत्नी बनने के लिए, चार-दशा-आधार स्थापित करनी चाहिए जिसमें वे परमेश्वर के साथ मिलकर ट्रिनिटी का निर्माण करते हैं और उनका केन्द्र परमेश्वर होता है। जगत को निपुण बनने के लिए, उसे मनुष्य के साथ चार-दशा-आधार स्थापित करना चाहिए, जिसमें मनुष्य और प्राकृतिक दुनिया परमेश्वर के साथ मिलकर ट्रिनिटी का निर्माण करते हैं और उनका केन्द्र परमेश्वर होता है। इसके अतिरिक्त, सृजित प्राणियों को एक होकर परमेश्वर पर केन्द्रित चार-दशा-आधार साकार करने के लिए विकास काल के तीन चरण से पारित होना चाहिए, और तीन-वस्तु-प्रयोजन पूरा करना चाहिए। इन कारणों से संख्या तीन स्वर्गीय संख्या है अर्थात यह पूर्णता की संख्या है।

जब एक कर्ता साझी और एक पात्र साझी परमेश्वर पर केन्द्रित होकर एक हो जाते हैं तो वे ट्रिनिटी

[७०२] प्रति-संदर्भ—२.१.२

का निर्माण करते हैं, यह परिणामी संघटन सत्य का व्यक्तिगत मूर्त रूप होता है जो चार-दशा-आधार पूरा करता है। इस प्रकार परमेश्वर की सृष्टि की रचना की प्रतिष्ठा प्राप्त कर लेने पर यह चार दिशाओं: उत्तर, दक्षिण, पूर्व और पश्चिम में स्थिति और विस्तार के लिए आता है। इस अर्थ में, संख्या चार पृथ्वी की संख्या है। इस प्रकार परमेश्वर की सृष्टि की रचना की प्रतिष्ठा सुरक्षित करके, वह चार दिशाओं उत्तर, दक्षिण, पूर्व और पश्चिम में अपना स्थान और आयतन हस्तगत करती है। इस अर्थ में संख्या चार पृथ्वी की संख्या है।

जब कोई सृजित प्राणी विकास काल के तीन चरण से गुज़रता है और चार-दशा-आधार बनाता है, तो वह क्रमशः समय और अंतरिक्ष के गुणात्मक पहलुओं में पूर्ण रूप से स्थापित हो जाता है। इस प्रकार, सृष्टि की प्रत्येक वस्तु संख्या सात का पूर्ण मूर्त रूप बन जाती है, जो कि स्वर्ग की संख्या और पृथ्वी की संख्या का कुल जोड़ है। यही कारण है कि बाईबल स्वर्ग और पृथ्वी की रचना में लगे सात दिन का वर्णन करती है। जिस प्रकार से सृष्टि की अवधि संख्या सात को परिपूर्ण करती है, पूर्णता प्राप्त करने के लिए कोई भी अवधि संख्या सात को पूरा करने की अवधि समझी जा सकती है। विकास काल के तीन चरण पर इस प्रकार से ध्यान देने से, गठन चरण को पूरा करने की अवधि, विकास चरण को पूरा करने की अवधि, और निष्पत्ति चरण को पूरा करने की अवधि, प्रत्येक अवधि संख्या सात को पूरा करने की अवधि होती है। कुल मिलाकर संपूर्ण विकास काल संख्या इक्कीस को पूरा करने की अवधि समझी जा सकती है।

संख्या इक्कीस की क्षतिपूर्ति अवधि के यह निम्नलिखित उदाहरण हैं: परमेश्वर ने बाढ़ के बाद नूंह से तीन बार फाक्ता को बाहर भिजवा कर अपनी दैवी योजना को, जो वह तीन चरण में कार्यविन्त करने वाला था, पहले से प्रगट किया। फाक्ता सात दिन के अंतर में भेजी गई थीं इस तरह पूरा समय कुल इक्कीस दिन का होता है।[७०३] हारान के निर्वासन के समय जब याकूब ने पारिवारिक कार्यवाही में कनान की प्राप्ति के लिए तीन सात वर्षीय कठोर श्रम का समय झेला, यह अवधि कुल मिलाकर इक्कीस वर्ष की थी। पुराने नियम के युग में, इस्राएलियों का बेबीलोन में निर्वासन और उनके वापस इस्राएल लौटने तक की २१० वर्ष की अवधि याकूब की इस इक्कीस वर्ष की कार्यवाही को क्षतिपूर्ति द्वारा पुनःस्थापित करने के लिए थी। नए नियम के युग में, कथौलिक पोप की अविंगटन में कैद से लेकर ईसाई संप्रदाय के शोधन की शुरूआत तक के २१० वर्ष की अवधि भी याकूब की इक्कीस वर्ष की कार्यवाही को क्षतिपूर्ति द्वारा पुनःस्थापित करने के लिए थी।

विकास काल भी संख्या चालीस को पूरा करने की अवधि है। पहले पूर्वजों को संख्या चालीस के आधार पर विश्वास की नींव डाल कर पूर्ण रूप से संख्या चालीस के गुणों का मूर्तरूप बनना चाहिए था और फिर सृष्टि का उद्देश्य साधित करना चाहिए था। पतन के समय इस संख्या को शैतान ने दावा करके विकृत कर दिया। इसलिए, दैवी योजना में प्रमुख व्यक्तियों को क्षतिपूर्ति द्वारा विश्वास की नींव डाल कर संख्या चालीस को पुनःस्थापित करना चाहिए। केवल इसी आधार पर वे संख्या चालीस के गुणों का पूर्ण

---

[७०३] उत्पत्ति ७:४, ८:१०, १२

मूर्त रूप बनने के लिए वास्तविक नींव डाल सकते हैं।

संख्या चालीस को किस प्रकार से पूरा किया जाता है यह समझने के लिए पहले हमें संख्या दस का महत्व जानना चाहिए। यदि हम विकास काल के प्रत्येक तीन-चरणों को तीन उप-चरण में विभाजित करते हैं, तो हमें कुल नौ स्तर मिलते हैं। यहाँ नियम में हम संख्या नौ का महत्व देखते हैं। अदृश्य परमेश्वर के द्वैत अभिलक्षणों की संख्यात्मक अभिव्यक्ति के रूप में परमेश्वर की प्रत्येक रचना विकास काल के नौ स्तरों से पारित होती है। जब वह परमेश्वर के साथ उसके सीधे प्रभुत्व के क्षेत्र में एक हो जातीं हैं तो दसवाँ स्तर बनता है, तब प्रत्येक अपना सृष्टि का उद्देश्य पूरा करती है। इसी कारण हम संख्या दस को एकता की संख्या कहते हैं। परमेश्वर ने नूंह को बुलाने से पहले संख्या दस को पुनःस्थापित करने के लिए आदम के बाद दस पीढ़ियों की क्षतिपूर्ति की अवधि रखी। इस शर्त के द्वारा, परमेश्वर यह चाहता था कि नूंह परमेश्वर की इच्छा जो आदम ने अधूरी छोड़ी थी पूरी करे, तभी वह परमेश्वर के साथ एक हो सका।

आदम और हव्वा जिनको चार-दशा-आधार स्थापित करनी चाहिए थी, उनके प्रौढ़ होने की यात्रा में प्रत्येक दशा संख्या चालीस को पूरा करने के लिए दस स्तरों से होकर पारित होनी चाहिए थी, फिर संख्या चालीस पूरी हो जाती। इस प्रकार उनकी प्रौढ़ता की दौड़ संख्या चालीस को पूरी करने की अवधि होती, और उनका चार-दशा-आधार संख्या चालीस का पूर्ण मूर्त रूप बन जाता। इस नींव को पुनः स्थापित करने के लिए संख्या चालीस की क्षतिपूर्ति की अवधि के कुछ उदाहरण रखे गए हैं: नूंह के जहाज़ का अरारात नामक पहाड़ पर टिक जाने के चालीस दिन बाद उसने फाक्ता को बाहर उड़ाया, मूसा का फिरौन के महल में चालीस वर्ष का जीवन, उसका मिद्यान के जंगलों में चालीस वर्ष का निर्वासन, और कनान की प्राप्ति के लिए राष्ट्रीय कार्यवाही के दौरान उसका चालीस वर्ष तक जंगल में रहना।

हम यह अनुमान लगा सकते हैं कि पुनरुद्धार की दैवी योजना में संख्या चालीस की दो भाँति की अवधियाँ होतीं हैं। एक प्रकार की संख्या है जो संख्या चार को पुनःस्थापित करने के लिए क्षतिपूर्ति की अवधि है; पूर्वावस्था की प्राप्ति के लिए संख्या चालीस बनाने की यह संख्या, जो एकता की संख्या है, दस से गुणा की जाती है। दूसरे प्रकार की क्षतिपूर्ति की अवधि स्वयं संख्या चालीस को पुनः स्थापित करने के लिए है, जैसा कि अभी वर्णन किया गया है, जो आदम को पतन से पहले पूरी करनी चाहिए थी। जंगल में कनान की प्राप्ति के लिए चालीस वर्ष की राष्ट्रीय कार्यवाही इस भाँति की दोनों अवधियों को एक ही समय में पुनः स्थापित करने के लिए तैयार की गई थी। इसके द्वारा चालीस दिन की जासूसी का मिशन और मूसा का चालीस दिन का उपवास क्षतिपूर्ति के द्वारा पुनः स्थापित हुआ, यह वह अवधियाँ हैं जो संख्या चार को पुनः स्थापित करने के लिए थीं। इससे मूसा का फिरौन के महल में चालीस वर्ष और मिद्यान के जंगल में चालीस वर्ष भी क्षतिपूर्ति द्वारा पुनः स्थापित हुए, यह अवधियाँ संख्या चालीस को पुनः स्थापित करने के लिए रखी गईं थीं। जब विश्वास की नींव के लिए प्रमुख व्यक्ति क्षतिपूर्ति द्वारा क्षैतिज रूप से सभी लंब क्षतिपूर्ति की शर्तों को पुनःस्थापित करता है तो ऐसी असाधारण घटनाएं घटतीं हैं।

ऐसी व्यवस्था को क्षैतिज रूप से बहाल करने के लिए जब संख्या चालीस की अवधियाँ फिर से प्रवर्धित की जाती हैं, तो इसे दस के गुणन के नियम के अनुसार बढ़ाया जाता है, क्योंकि क्षतिपूर्ति की

अपेक्षित अवधि दस चरण तक विस्तृत की जा सकती है। इस प्रकार, चालीस वर्ष की अवधि चार सौ वर्ष या चार हज़ार वर्ष तक प्रसारित की जा सकती है। इसके उदाहरण यह हैं: नूंह से अब्राहम तक के चार-सौ-वर्ष की अवधि, मिस्र में चार सौ वर्ष की दासता और बाईबल के अनुसार आदम से यीशु तक के चार हज़ार वर्ष।

आइए हम क्षतिपूर्ति की संख्यात्मक अवधियों को, जिन्हें एक प्रमुख व्यक्ति को दैवी योजना में विश्वास की नींव पुनःस्थापित करने के लिए पूरी करनी चाहिए, संक्षिप्त में प्रस्तुत करते हैं। यदि पहले मानव पूर्वजों का पतन नहीं हुआ होता, तो वे कई महत्वपूर्ण संख्याओं के आधार पर विश्वास की नींव डालते, जिनमें सम्मिलित हैं बारह, चार, इक्कीस और चालीस। जब वे सृष्टि का उद्देश्य पूरा कर लेते, तो वे इन संख्याओं के गुणों का पूर्ण मूर्त रूप बन जाते। तथापि, पतन के कारण, यह सब संख्याएं शैतान के दावे में चली गईं। इसलिए, दैवी इतिहास में प्रमुख व्यक्तियों को इससे पहले कि वे विश्वास की नींव पुनःस्थापित कर सकें क्षतिपूर्ति की बारह, चार, इक्कीस और चालीस की संख्यात्मक अवधियों को पूरा करना आवश्यक है। केवल इसी आधार पर वे इन संख्याओं की गुणवत्ता का पूर्ण मूर्त रूप बनकर वास्तविक नींव डाल सकते हैं।

२.५ पीढ़ियों की संख्या के द्वारा समान्तर कालों का निर्धारित किया जाना

बाईबल के अनुसार, परमेश्वर ने आदम से दस पीढ़ियों और सोलह सौ वर्ष के बाद नूंह को दैवी योजना का भार उठाने के लिए चुना। आइए हम यह जाँच करें कि वह कौन सी महत्वपूर्ण संख्याएं थीं जो सोलह सौ वर्ष और दस पीढ़ियों के द्वारा पुनःस्थापित की गईं थीं।

संख्या दस परमेश्वर के साथ एकता की संख्या है। प्रौढ़ता की प्राप्ति के लिए विकास के मार्ग को संख्या दस पूरी करने के लिए एक अवधि की आवश्यकता होती है, जिसके द्वारा आदम और हव्वा को संख्या दस का आदर्श मूर्त रूप बनना चाहिए था। पतन के कारण जब यह संख्या शैतान ने दूषित कर दी, तो परमेश्वर ने इस संख्या को पुनःस्थापित करने के लिए एक प्रमुख व्यक्ति की खोज की और लोगों को संख्या दस के गुणों का आदर्श मूर्त रूप के रूप में बदल कर अपने साथ एक करने का कार्य आरंभ किया। इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए, परमेश्वर को एक ऐसे प्रमुख व्यक्ति की आवश्यकता होगी जो संख्या दस को पुनःस्थापित करने के लिए क्षतिपूर्ति को पूरा करे। इसी कारण परमेश्वर ने आदम से दस पीढ़ियों के बाद नूंह को बुलाया।

पहले यह चर्चा की गई थी कि पहले मानव पूर्वज परिपक्वता प्राप्त करने के लिए ऐसे मार्ग से पारित होने वाले थे जो संख्या चालीस को पूरा करे और इस तरह वे संख्या चालीस के आदर्श मूर्त रूप बन जाएं। पतित लोगों को प्रमुख व्यक्ति बनने के लिए, जो संख्या चालीस का आदर्श मूर्त रूप बनकर बहाली के रास्ते में अगवाई करें, चार-दशा-आधार स्थापित करना आवश्यक है, और तब उन्हें संख्या चालीस को पूरा करने के लिए क्षतिपूर्ति की अवधि पूरी करनी चाहिए। संख्या चालीस पुनःस्थापित करने के लिए चार-दशा-आधार के प्रत्येक स्थान को क्षतिपूर्ति की अवधि पूरी करना चाहिए, जो संख्या १६० को पुनः

स्थापित करने के लिए क्षतिपूर्ति की एक अवधि प्रस्तुत करे। इसके अतिरिक्त, चूँकि पतित लोगों को यह संख्या दस पीढ़ियों में पूरी करना चाहिए थी—दस परमेश्वर के साथ एकता दर्शाता है—उन्हें संख्या १६०० की एक क्षतिपूर्ति अवधि पूरी करनी पड़ी। यही कारण है कि बाईबल में आदम से लेकर नूंह तक १६०० वर्ष की अवधि का लेखा है।

नूंह के परिवार में पुनरुद्धार की दैवी योजना की विफलता के बाद, परमेश्वर ने चार सौ वर्ष तक प्रतीक्षा की, जब तक और दस पीढ़ियाँ बीत गईं इससे पहले कि उसने अब्राहम को दैवी योजना का भार उठाने के लिए बुलाया। पीढ़ियों की संख्या के अनुसार, नूंह से अब्राहम तक की अवधि आदम से नूंह तक की अवधि के समानांतर थी और पहले की उस अवधि को क्षतिपूर्ति द्वारा पुनःस्थापित करने के लिए थी।

पहले यह चर्चा की गई है कि यह अवधि चार सौ वर्ष की क्यों रखी गई थी।[७०४] पुनरुद्धार की दैवी योजना के लक्ष्य को पूरा करने के लिए परमेश्वर ने नूंह को चालीस दिन का जल-प्रलय का न्याय झेलने की व्यवस्था की, जो परमेश्वर ने दस पीढ़ियों और सोलह सौ वर्ष ठहरा कर प्राप्त करने की कोशिश की थी। जब इस चालीस दिन के जल-प्रलय के न्याय को शैतान ने हाम की ग़लती के कारण भ्रष्ट कर दिया था, तो उसे पुनःस्थापित करने के लिए परमेश्वर ने दूसरे प्रमुख व्यक्ति के द्वारा कार्य किया। आदम से नूंह तक की दस पीढ़ियों की प्रत्येक पीढ़ी में परमेश्वर ने संख्या १६० को पुनःस्थापित करने के लिए क्षतिपूर्ति की अवधियों को पूरा करने का कार्य किया। नूंह से अब्राहम तक की दस पीढ़ियों की समानांतर अवधियों में, परमेश्वर ने संख्या चालीस को पुनःस्थापित करने के लिए प्रत्येक पीढ़ी क्षतिपूर्ति की एक अवधि के रूप में रखी, जो कि जल-प्रलय के न्याय की घटना से लिया गया है।

चालीस दिन के जल प्रलय की विफलता को संख्या चालीस की अवधि के द्वारा ही पुनःस्थापित करना था। चूँकि अनुवर्ती पीढ़ियों को उनकी पूरी लंबाई तक फैलना चाहिए, इसलिए वे चालीस दिन में पूरी नहीं हो सकती थीं। अतः परमेश्वर ने क्षतिपूर्ति की अवधि को प्रत्येक पीढ़ी के द्वारा चालीस वर्ष में पूरा करने के लिए रखा। जल प्रलय का एक दिन एक वर्ष की क्षतिपूर्ति द्वारा पूरा किया गया। ठीक उसी तरह जब मूसा के समय चालीस दिन देश की जासूसी के मिशन की विफलता के लिए चालीस वर्ष जंगल में भटकना पड़ा।[७०५] क्योंकि व्यवस्था जिसमें प्रत्येक पीढ़ी चालीस वर्ष की क्षतिपूर्ति की अवधि के रूप में रखी गई थी और वह दस पीढ़ियों तक जारी रही, इसलिए क्षतिपूर्ति का कुल विस्तार चार सौ वर्ष का हुआ।

२.६ क्षैतिज पुनरुद्धार की दैवी अवधियाँ क्षतिपूर्ति द्वारा लंब रूप से संपन्न किए गईं

जैसे कि पहले यह स्पष्ट किया गया है कि दैवी योजना का प्रत्येक प्रमुख व्यक्ति सभी ऊर्ध्वाधर क्षतिपूर्ति की शर्तों को जो उसके समय तक संचित हुईं थीं क्षैतिज रूप से पुनः स्थापित करने के लिए

---

[७०४] प्रति-संदर्भ—नींव ३.१.१

[७०५] गिनती १४:३४

बुलाया जाता है। अतः दैवी योजना जितनी अधिक प्रवर्धित होती है, अगली पीढ़ियों के प्रमुख व्यक्तियों को क्षतिपूर्ति की शर्तें क्षैतिज रूप से पूरी करनी पड़तीं हैं। पुनरुद्धार की दैवी योजना में आदम के परिवार में लंब क्षतिपूर्ति की शर्तें नहीं थीं क्योंकि दैवी योजना अभी चालू हुई थी। इसलिए, कैन और हाबिल के द्वारा प्रतीकात्मक और वास्तविक भेंट उचित रीति से चढ़ाई जाने से मसीह के लिए नींव बड़ी आसानी से डाली जा सकती थी। हाबिल का केवल एक बार परमेश्वर को स्वीकार्य भेंट चढ़ाने पर कैन को स्वीकार कर लेना चाहिए था और पतित प्रवृत्ति को निकालने की क्षतिपूर्ति की शर्त पूरी करने के लिए हाबिल पर आश्रित हो जाना चाहिए था। विश्वास की नींव पुनःस्थापित करने के लिए जहाँ तक संख्यात्मक क्षतिपूर्ति की अवधि का सवाल है, जो प्रतीकात्मक और वास्तविक भेंट चढ़ाने के लिए आवश्यक है, यह थोड़े ही समय में पूरी की जा सकती थीं। परन्तु, जब पुनरुद्धार की दैवी योजना आदम के परिवार की विफलता के कारण प्रवर्धित हो गई, तो क्षतिपूर्ति की लंब शर्तें बहुत सी संख्यात्मक क्षतिपूर्ति की अवधियों के रूप में संचित होने लगीं। इसलिए, विश्वास की नींव पुनःस्थापित करने के लिए, आदम के दिनों से प्रमुख व्यक्तियों को संख्यात्मक क्षतिपूर्ति की अवधियाँ जैसे संख्या बारह, चार, इक्कीस और चालीस पूरी करनी पड़ीं।

नूंह के मामले में, उसे क्षतिपूर्ति की सभी लंब शर्तों को अपने ही समय में पूरी करना चाहिए था। विश्वास की नींव पुनः स्थापित करने के लिए, उसे अनेक संख्यात्मक क्षतिपूर्ति की अवधियों को पूरा करना पड़ा: जहाज़ बनाने के लिए १२० वर्ष, चालीस दिन का जल-प्रलय का न्याय, इक्कीस दिन जिसमें उसने सात-दिन के अंतर में तीन बार फाक्ता उड़ाईं, और जहाज़ का अरारात पर्वत पर टिक जाने के बाद चालीस दिन तक की अवधि जब उसने फाक्ता को बाहर छोड़ा।

नूंह ने यह सब संख्यात्मक क्षतिपूर्ति की अवधियाँ ध्यान से पूरी कीं, परन्तु हाम की गलती के कारण शैतान ने उन पर धावा बोल दिया। फलस्वरूप यह सब लंब क्षतिपूर्ति की शर्तों के रूप में पीछे रह गईं। अब्राहम को उन सब को एक ही बार में अपनी प्रतीकात्मक भेंट के द्वारा सुधारने का अवसर मिला था। परंतु चूँकि अब्राहम भेंट चढ़ाने में असफल रहा, क्षतिपूर्ति की अवधियाँ क्षैतिज रूप से सुधारी नहीं जा सकीं। इस वजह से उन्हें फिर लंब रीति से सुधारना पड़ा: अर्थात अपनी इच्छा की पूर्ति को इज़हाक और याकूब तक प्रवर्धित करके परमेश्वर ने क्षतिपूर्ति की अवधियों को संख्या बारह, चार, इक्कीस और चालीस के अनुक्रम में पुनःस्थापित करके पूरा करने के लिए काम किया।

अब्राहम के परिवार में दैवी योजना में विश्वास की नींव डालने के लिए निम्न लिखित क्षतिपूर्ति की अवधियाँ, जो क्षैतिज रूप से पूरी होने के बजाए लंब अनुक्रम में कार्यान्वित की गईं: अब्राहम के हारान छोड़ने के समय से लेकर याकूब का एसाव को रोटी और मसूर की दाल देकर पहलौठे का अधिकार मोल लेने तक १२० वर्ष, याकूब को उसके पिता इज़हाक से जेष्ठ पुत्र का आशीर्वाद मिलने और हारान के रास्ते पर परमेश्वर से आशीष प्राप्त कर लेने तक चालीस वर्ष;[७०६] इस समय से हारान में कठिन परिश्रम सहने

[७०६] उत्पत्ति २७: १-२९, २८:१०-१४

के बाद जब याकूब अपने परिवार और धन के साथ कनान वापस आया इक्कीस वर्ष,[७०७] और याकूब के कनान वापस आने के बाद यूसुफ के आमंत्रण पर उसके परिवार का मिस्र में प्रवेश करने तक, चालीस वर्ष। इस प्रकार, क्षतिपूर्ति की शर्तें जो क्षैतिज रूप से बहाल नहीं की जा सकतीं थीं वह नियत लंबाई की बढ़ाई हुई लंब अवधियों के रूप में पूरी की गईं ।

[७०७] उत्पत्ति ३१:४१

संभाग ३

पुनरुद्धार की दैवी योजना के युग में कालावधियाँ और उनकी लंबाई

पुनरुद्धार की दैवी योजना के युग की अवधि, जो छवि-समानांतर काल का युग था, उसे पुनरुद्धार की नींव डालने के दैवी कार्य के युग को, जो प्रतीकात्मक समानांतर काल का युग था, क्षतिपूर्ति द्वारा पुनःस्थापन करना था। आइए हम इस युग की कालावधियों की जाँच करें कि उनकी लंबाई कैसे निर्धारित की गई थी।

३.१ मिस्र में दासता के चार-सौ-वर्ष

नूंह ने शैतान से अलग होने के लिए चालीस दिन के जल-प्रलय का न्याय पूरा किया जिसके बाद उसने विश्वास की नींव डाली थी। जब यह नींव हाम की गलती के कारण ध्वस्त हो गई, परमेश्वर ने नूंह के स्थान पर अब्राहम को खड़ा किया, और उसे चार सौ वर्ष की मध्यवर्ती अवधि के समय में डाली गई नींव पर खड़ा होकर प्रतीकात्मक भेंट चढ़ाने का आदेश दिया। परंतु, अब्राहम की गलती के कारण यह नींव शैतान ने भ्रष्ट कर दी। इन चार सौ वर्ष की नींव को पुनः प्राप्त करने के लिए, परमेश्वर ने इस्राएलियों को मिस्र में चार सौ वर्ष की दासता भोगना ठहराया और एक बार फिर शैतान से अलग किया।[७०८] मिस्र में दासता की यह अवधि आदम से नूंह तक सोलह सौ वर्ष की प्रतीकात्मक अवधि के युग की बराबरी में छवि-समानांतर अवधि थी। यह पूर्व अवधि को समानांतर क्षतिपूर्ति शर्तों के द्वारा पुनःस्थापित करने के लिए थी।

३.२ न्यायियों के चार-सौ-वर्ष

यह अभिलिखित है कि इस्राएलियों के मिस्र से कूच करने के ४८० वर्ष बाद राजा सुलेमान ने अपने राज्य के चौथे वर्ष में मंदिर का निर्माण आरंभ किया।[७०९] चूँकि राजा सुलेमान ने राजा शाऊल[७१०] के राज्य के चालीस वर्ष पश्चात और राजा दाऊद के राज्य के चालीस वर्ष बाद राज किया, इससे हम यह अनुमान लगा सकते हैं कि इस्राएलियों के कनान में प्रवेश करने के बाद से राजा शाऊल के राज्याभिषेक तक लगभग चार सौ वर्ष की अवधि थी। यह न्यायियों की कालावधि थी।

मूसा के अधीन इस्राएलियों को चाहिए था कि वे मिस्र की दासत्व के द्वारा शैतान से पृथक होने की नींव सुरक्षित कर लें, इस प्रकार जिस नींव पर मूसा खड़ा था, शैतान से पृथक होने की वह नींव जो नूंह से अब्राहम तक चार सौ वर्ष के दौरान डाली गई थी, उसे राष्ट्रीय स्तर पर पुनःस्थापित करें। परन्तु, मूसा के उत्तराधिकारी यहोशु के नेतृत्व के अंतर्गत कनान में प्रवेश करने के बाद वे फिर कृतघ्न हो गए,

---

[७०८] उत्पत्ति १५:१३, प्रति-संदर्भ नींव ३.१.२.१

[७०९] १राजाओं ६:१

[७१०] प्रेरितों १३:२१

और इस प्रकार शैतान को इस चार सौ वर्ष की नींव को भी भ्रष्ट करने का मौका दिया। इसलिए इस्राएलियों को शैतान से पृथक होने की एक और अवधि को पार करना आवश्यक हो गया इससे पहले कि वे क्षतिपूर्ति द्वारा इस नींव को पुनःस्थापित कर सकें। न्यायियों की अवधि, जो लोगों के कनान देश में प्रवेश करने के समय से राजा शाऊल के राज्याभिषेक तक लगभग चार सौ वर्ष की थी, इस उद्देश्य के लिए ठहराई गई थी। न्यायियों की अवधि प्रतीकात्मक समानांतर युग में नूंह से अब्राहम तक की चार सौ वर्ष की अवधि के तुल्य छवि समानांतर थी। यह पूर्व अवधि को समानांतर क्षतिपूर्ति की शर्तों द्वारा बहाल करने के लिए थी।

३.३ संयुक्त राज्य की एक सौ बीस वर्ष की अवधि

पुनरुद्धार की दैवी योजना का युग, क्षतिपूर्ति द्वारा पुनरुद्धार की नींव डालने की दैवी योजना के युग को पुनःस्थापित करने के लिए निर्धारित किया गया था। इसलिए, अब्राहम, जिसने इस दैवी योजना को आरंभ किया था, आदम के स्थान पर था; मूसा नूंह के स्थान पर था; और राजा शाऊल अब्राहम के स्थान पर था। अब्राहम एक संक्रमणकालीन व्यक्ति था; जिस पर दोनों पुनरुद्धार की नींव डालने के युग को पूरा करने और पुनरुद्धार की दैवी योजना को आरंभ करने का दायित्व था। अब्राहम मसीह की पारिवारिक नींव डालने के लिए बुलाया गया था जो राष्ट्रीय नींव के लिए आधार के रूप में होती। परमेश्वर के लिए अब्राहम के समय ही में बिना विफल हुए मसीह के लिए पारिवारिक नींव डालना आवश्यक था क्योंकि यह उसका तीसरा प्रयास था। इसी तरह, राजा शाऊल के दिनों में परमेश्वर मसीह की राष्ट्रीय नींव स्थापित करने के लिए तीसरी बार काम कर रहा था। तथापि परमेश्वर को एक बार फिर बिना विफल हुए यह दैवी कार्य पूरा करना आवश्यक था।

प्रतीकात्मक भेंट में उसकी गलती के कारण, अब्राहम ने नूंह की कार्यवाही से विरासत में पाई हुई शर्तों को एक ही बार में पुनःस्थापित नहीं किया था, जो अनेक संख्यात्मक अवधियों के रूप में थीं और विश्वास की नींव पुनःस्थापित करने के लिए आवश्यक थीं, विशेष करके: १२० वर्ष, चालीस दिन, इक्कीस दिन और चालीस दिन। इसलिए, इन अवधियों का क्षैतिज पुनःस्थापन लंब रूप में बढ़ाया जाना आवश्यक था। वे अब्राहम के परिवार के वंश में एक के बाद एक १२० वर्ष, चालीस वर्ष, इक्कीस वर्ष और चालीस वर्ष की क्षतिपूर्ति की अवधियाँ बन गईं।

राजा शाऊल को चाहिए था कि वह अब्राहम के स्थान को राष्ट्रीय स्तर पर पुनःस्थापित करे। मंदिर बना कर राजा शाऊल को थोड़े समय में सभी क्षतिपूर्ति की शर्तें, जो मूसा के समय में विश्वास की नींव को पुनःस्थापित करने के लिए रखी गईं थीं, संख्यात्मक क्षतिपूर्ति के रूप में पुनःस्थापित करना चाहिए था। इन में सम्मिलित हैं: १२० वर्ष, (मूसा के समय की तीन चालीस वर्ष की कार्यवाहियाँ), चालीस दिन (मूसा के उपवास की अवधि), इक्कीस दिन (कनान की प्राप्ति के लिए पहली राष्ट्रीय कार्यवाही), और चालीस वर्ष (कनान की प्राप्ति के लिए राष्ट्रीय कार्यवाही में वनवास की अवधि)। तथापि, राजा शाऊल

अवज्ञाकारी हो गया[७११] और परमेश्वर की इच्छा पूरी करने में विफल हुआ। जैसाकि अब्राहम के समय में हुआ, इन क्षतिपूर्ति की अवधियों का क्षैतिज पुनःस्थापन लंब रूप से क्रमागत अवधियों में बढ़ाया गया—संयुक्त राज्य के १२० वर्ष, उत्तर और दक्षिण के विभाजित राज्य के चार सौ वर्ष, इस्राएल के निर्वासन और वापस लौटने तक २१० वर्ष, और मसीह के आगम की तैयारी के चार सौ वर्ष। इन सभी अवधियों के बाद अंत में इस्राएल के लोग मसीह को ग्रहण करने के लिए तैयार हुए।

संयुक्त राज्यों की अवधि मूसा के जीवन के १२० वर्षों को पुनःस्थापित करने के लिए थी, जिसके दौरान उसने राष्ट्रीय कार्यवाही में कनान की प्राप्ति के लिए विश्वास की नींव डालने के तीन प्रयास किए। आइए हम इस समानता की करीब से जाँच करें। इस्राएलियों का शैतान से पृथक होने के लिए दासत्व के चार सौ वर्ष का कष्ट झेलने के बाद, मूसा ने फिरौन के महल में चालीस वर्ष रह कर विश्वास की नींव कायम की। उसने तब कनान देश जाने के लिए लोगों का नेतृत्व करने का प्रयत्न किया, जहाँ वह मंदिर का निर्माण करने वाला था। परन्तु, लोगों की कृतघ्नता के कारण यह कार्यवाही दो बार दीर्घीकृत हुई। मूसा ने विश्वास की नींव डालने के लिए मिद्यान के जंगल में चालीस वर्ष बिताए और उसके बाद फिर उसे जंगल में चालीस वर्ष के दौर में भटक कर नए सिरे से विश्वास की नींव डालनी पड़ी। उसी प्रकार, इस्राएलियों का न्यायियों के चार सौ वर्ष की अवधि के माध्यम से मिस्र की गुलामी के चार सौ वर्ष की अवधि पुनःस्थापित करने के बाद शाऊल इस्राएल के राजा के रूप में विराजमान हुआ। अपने चालीस वर्ष के राज काल के दौरान राजा शाऊल को मूसा के फिरौन के महल के जीवन के चालीस वर्ष क्षतिपूर्ति द्वारा पुनःस्थापित करके विश्वास की नींव डालनी थी। तब उसे मंदिर बनाना था। परंतु राजा शाऊल जब अविश्वासी हो गया, तो परमेश्वर की मंदिर बनाने की अभिलाषा राजा दाऊद और राजा सुलेमान के दो चालीस वर्ष के राज कालों तक प्रवर्धित हो गई, इस तरह संयुक्त राज्य के कुल १२० वर्ष बनते हैं।

यह अवधि, प्रतीकात्मक समान्तर युग में अब्राहम के हारान से कूच करने के बाद से लेकर याकूब का अपने भाई से जन्मसिद्ध अधिकार मोल ले लेने तक १२० वर्ष के तुल्य छवि समान्तर अवधि थी। वह उस पूर्व अवधि को समान्तर क्षतिपूर्ति की शर्तों के द्वारा बहाल करने के लिए थी। जिस प्रकार जो व्यवस्था अब्राहम से शुरू हुई और प्रवर्धित होकर इज़हाक और याकूब के द्वारा पूरी हुई, मंदिर बनाने की परमेश्वर की व्यवस्था, जो राजा शाऊल से शुरू हुई, प्रवर्धित होकर राजा दाऊद और राजा सुलेमान के समय में पूरी हुई।

३.४ उत्तर और दक्षिण के विभाजित राज्यों के चार सौ वर्ष

यदि राजा शाऊल ने मंदिर बनाने की व्यवस्था अपने चालीस वर्ष के राजकाल में पूरी कर ली होती, तो क्षतिपूर्ति की अवधियों में से जो उसे क्षैतिज रूप से पुनःस्थापित करनी थी, वह मूसा का चालीस दिन का उपवास था, जो वचन की पुनः प्राप्ति के लिए, जैसा कि पत्थर की पट्टियों द्वारा प्रकट है, पूरा किया गया था। राजा शाऊल ने जब विश्वास खो दिया, इस क्षतिपूर्ति की अवधि को क्षैतिज बहाली के लंब विस्तार

[७११] शमुएल १५:११-२३

के रूप में बहाल करना पड़ा। यह अवधि उत्तर और दक्षिण के विभाजित राज्य की शुरूआत थी, जो लगभग चार सौ वर्ष तक बने रहे। यह उस समय आरंभ हुआ जब संयुक्त राज्य, उत्तर में इस्राएल और दक्षिण में जूडिया के नाम से विभाजित हुआ, और यह उस समय तक कायम रहा जब जूडिया के लोग बेबीलोन में निर्वासन के लिए ले जाए गए। यह अवधि, याकूब के एसाव से जन्मसिद्ध अधिकार मोल लेने के समय से लेकर उसका इज़हाक और परमेश्वर का आशीर्वाद प्राप्त करने के बाद हारान चले जाने तक[७१२], प्रतीकात्मक समान्तर युग के चालीस वर्ष के लिए छवि समान्तर अवधि थी। यह पहले की उस अवधि को समानांतर क्षतिपूर्ति शर्तों के द्वारा पुनःस्थापित करने के लिये थी।

३.५ इज़राएलियों का देशनिकाला जाना और वापसी के दो सौ दस वर्ष की अवधि

इस्राएल के उत्तरी राज्य के लोगों ने परमेश्वर के साथ की गई वाचा तोड़ डाली, फलस्वरूप, असीरया के लोग उन्हें बंदी बना कर निर्वासन में ले गए। जूडिया के दक्षिण राज्य के लोगों ने भी परमेश्वर के सामने पाप किया। परिणाम-स्वरूप, बेबीलोन का राजा नबूकदनेस्सर उन्हें बंदी बनाकर निर्वासन में ले गया। लगभग सत्तर वर्ष बंदी रहने के पश्चात, बेबीलोन को फारस के राजा कुस्रू ने परास्त करके अपने अधीन कर लिया, और इस्राएलियों को स्वतंत्र करने का राजसी आदेश दिया। उस समय से यहूदी लोग क्रमशः यरूशलेम लौटे और मंदिर का निर्माण किया। एज्रा लेवीय ने यहूदियों के अंतिम दल का जो यरूशलेम लौट रहे थे नेतृत्व किया और नहेम्याह ने शहर पनाह दुबारा बनाई। मलाकी की भविष्यवाणी[७१३] से प्रभावित हो कर, लोग मसीह का स्वागत करने की तैयारी करने लगे। यह अवधि यहूदियों का बेबीलोन निर्वासन में ले जाने के समय से लेकर लगभग २१० में और फारसियों के द्वारा स्वतंत्र होने के लगभग १४० वर्ष बाद समाप्त हुई। यह इस्राएलियों के निर्वासन और उनकी वापसी की अवधि थी।

यदि राजा शाऊल ने मंदिर के निर्माण की व्यवस्था पूरी कर ली होती, तो क्षतिपूर्ति की अवधियों में से एक अवधि जो वह क्षैतिज रूप से बहाल कर लेता, इक्कीस दिन की अवधि थी जिसमें मूसा पहली राष्ट्रीय कार्यवाही में इस्राएलियों को मिस्र से कनान ले जाने में नेतृत्व करने वाला था। शाऊल का विश्वास खो देने के बाद जब यह व्यवस्था विफल हो गई, तो इस क्षतिपूर्ति अवधि को क्षैतिज बहाली की लंब विस्तृति के रूप में पुनःस्थापित करना पड़ा। इस्राएल के निर्वासन के २१० वर्ष की अवधि इस उद्देश्य से निर्धारित की गई थी।

प्रतीकात्मक समान्तर युग में यह अवधि इक्कीस वर्ष की अवधि के तुल्य छवि समान्तर थी, जो याकूब को जेष्ठ पुत्र का आशीर्वाद मिलने के बाद उसके कनान लौटने तक विस्तीर्ण हुई, और उस पिछली अवधि को समान्तर क्षतिपूर्ति की शर्तों द्वारा बहाल करने के लिए थी। वह तीन-सात-वर्षीय अवधियों को पुनःस्थापित करने के लिए थी: हारान पहुँचने के बाद याकूब ने राहेल से विवाह करने के लिए सात वर्ष तक काम किया, पर उसे विवाह में लिआ मिली, उसने और सात वर्ष राहेल के लिए काम किया, फिर

---

[७१२] उत्पत्ति २८:१३

[७१३] मलाकी ४:५

कनान लौटने से पहले उसने और सात वर्ष धन कमाने के लिए काम किया।[७१४]

३.६ मसीह के आगमन के लिये चार सौ वर्ष की तैयारी का काल

यहूदियों का निर्वासन से स्वदेश इस्राएल लौटने के बाद, उन्होंने अपने विश्वास को फिर से दृढ़ किया, शहर की दीवार बनाई और मलाकी की भविष्यवाणी के आधार पर, एक राष्ट्र के रूप में मसीह के लिए तैयारी की। उस समय से लेकर मसीह के जन्म लेने तक की अवधि चार सौ वर्ष की थी, जो मसीह के आगमन के लिए तैयारी की अवधि थी।

यदि राजा शाऊल ने मंदिर के निर्माण की व्यवस्था पूरी कर ली होती, तो क्षतिपूर्ति की अवधियों में से एक अवधि जो उसे क्षतिपूर्ति द्वारा क्षैतिज रूप से पुनःस्थापित करनी थी वह तीसरी राष्ट्रीय कार्यवाही में चालीस वर्ष वन में भटकने की अवधि थी। राजा शाऊल के विश्वास खो देने और इस व्यवस्था के विफल होने के बाद, चालीस वर्ष की इस क्षतिपूर्ति की अवधि की क्षैतिज बहाली को लंब विस्तृति के रूप में पुनः स्थापित करनी पड़ी। मसीह के आगमन की तैयारी के चार सौ वर्ष की अवधि इसी उद्देश्य से निर्धारित की गई थी।

यह अवधि, प्रतीकात्मक समान्तर युग में जो याकूब के कनान देश वापस लौटने के समय से लेकर उसके पुत्र यूसुफ के आमंत्रण पर जब उसके परिवार ने मिस्र देश में प्रवेश किया तब तक, चालीस वर्ष की अवधि के छवि समान्तर थी। यह उस पूर्वकालीन अवधि को समान्तर क्षतिपूर्ति शर्तों द्वारा पुनःस्थापित करने के लिए थी।

---

[७१४] उत्पत्ति ३१:४१

संभाग ४

पुनरुद्धार की दैवी योजना के प्रवर्धन के युग की अवधियाँ और उनकी लंबाई

पुनरुद्धार की दैवी योजना के प्रवर्धन का युग, वास्तविक समानांतर कालों के द्वारा पुनरुद्धार की दैवी योजना के युग को बहाल करने के लिए छवि समानांतर अवधि का युग था। क्योंकि इस युग की अवधियाँ क्षतिपूर्ति द्वारा पिछले युग की समतुल्य अवधियों को पुनःस्थापित करने के लिए थीं, यह अवधियाँ दोनों क्रमबद्धता और लंबाई में समानांतर शैली में आगे बढ़ीं।

४.१ रोमी साम्राज्य में अत्याचार के चार-सौ-वर्ष का समय

अब्राहम को जो विश्वास का पिता है और जिसने पुराने नियम का आरंभ किया था, परमेश्वर की जो इच्छा उसे पूरी करने के लिए दी गई थी, यीशु उसे पूरी करने के लिए नए नियम के आरंभ में आया। हमें याद है कि अब्राहम की प्रतीकात्मक भेंट में की गई गलती के कारण विश्वास की नींव टूट गई थी, उसे राष्ट्रीय स्तर पर पुनः स्थापित करने के लिए इस्राएलियों को मिस्र में दासत्व के चार सौ वर्ष बिताने पड़े। प्रारंभिक ईसाई लोगों को भी इस अवधि के समतुल्य मियाद में क्षतिपूर्ति द्वारा विश्वास की नींव पुनःस्थापित करने के लिए दुख उठाने पड़े, यह यहूदी लोगों की गलती के कारण हुआ जिन्होंने उचित रीति से यीशु का जीवित बलिदान के रूप में अनुसरण नहीं किया। यह चार सौ वर्ष की अवधि थी जिसमें ईसाई लोगों ने रोमी साम्राज्य में दुख उठाए। यह अत्याचार सन ३१३ ईसवी में समाप्त हुआ, जब सम्राट कॉन्सटैनटीन ने औपचारिक रूप से ईसाई मत को वैधिक धर्म की मान्यता दी। सन ३९२ ईसवी में, सम्राट थ्योडस १ ने ईसाई मत को राष्ट्रीय धर्म घोषित किया। यह अवधि इस्राएलियों के मिस्र में चार-सौ वर्ष के दासत्व की अवधि के प्रति वास्तविक समानांतर थी, और इसका उद्देश्य पूर्वकालीन अवधि को समानांतर क्षतिपूर्ति की शर्तों के द्वारा पुनःस्थापित करना था।

४.२ प्रादेशिक चर्च की अगवाई के चार-सौ-वर्ष की अवधि

पुनरुद्धार की दैवी योजना के युग में अगली चार-सौ वर्ष की अवधि न्यायियों की थी, जब न्यायियों ने इस्राएल के गोत्रों की अगवाई की। चूँकि पुनरुद्धार की दैवी योजना के प्रवर्धन का युग वास्तविक समानांतर युग था, इसलिए इसमें न्यायियों की अवधि के तुल्य चार-सौर वर्ष की अवधि होनी चाहिए। यह जो प्रादेशिक चर्च की अगवाई की अवधि कहलाती है, रोमी साम्राज्य में जब ईसाई मत राष्ट्रीय धर्म घोषित किया गया था तब आरंभ हुई थी और सन ८०० ईसवी में राजा शारलेमेन का राज्याभिषेक होने के बाद समाप्त हो गई। इस अवधि में, लोग प्रादेशिक चर्च के मार्ग-दर्शकों—कुलपतियों, धर्माध्यक्षों और महन्तों—के द्वारा चलाए गए, जो इस्राएल के न्यायियों की विभिन्न भूमिकाओं के समतुल्य हैं। यह अवधि न्यायियों के चार-सौ वर्ष की अवधि के प्रति वास्तविक समान्तर थी, और इसका उद्देश्य उस पूर्वकालीन अवधि को समान्तर क्षतिपूर्ति की शर्तों द्वारा पुनःस्थापित करना था।

४.३ ईसाई साम्राज्य की एक-सौ-बीस वर्ष की अवधि

जब इस्राएल के लोग राजा शाऊल के नेतृत्व में एक राष्ट्र के रूप में संगठित हुए, उन्होंने संयुक्त राज्य की १२० वर्ष की अवधि आरंभ की, जो राजा दाऊद और राजा सुलेमान के राज्यों तक जारी रही। ईसाई साम्राज्य की १२० वर्ष की समान्तर अवधि, जो कैरोलिंगियन साम्राज्य के नाम से भी जानी जाती है, सन ८०० ईसवी में शारलेमेन के राज्याभिषेक होने पर आरंभ हुई। वह सन ९१९ ईसवी में समाप्त हुई जब जर्मन देश के पूर्वी भाग में राज वंश समाप्त हुआ और हेनरी १ जर्मन देश का राजा चुना गया। यह अवधि १२० वर्ष की संयुक्त राज्य की अवधि के प्रति वास्तविक समान्तर थी, और इसका उद्देश्य पहले की अवधि को समान्तर क्षतिपूर्ति शर्तों द्वारा पुनःस्थापित करना था।

४.४ पूर्व और पश्चिम के विभाजित राज्यों के चार-सौ-वर्ष की अवधि

क्योंकि संयुक्त राज्य में मंदिर की पवित्रता का मान उचित रीति से समर्थित नहीं किया गया था, यह राज्य अंत में दो भागों में विभाजित किया गया: उत्तर में इस्राएल और दक्षिण में यहूदा। इस तरह, उत्तर और दक्षिण के विभाजित राज्यों की चार-सौ वर्ष की अवधि आरंभ हुई। पुनरुद्धार की दैवी योजना के प्रवर्धन के युग में, कैरोलिंगियन साम्राज्य दो राज्यों में विभाजित हुआ: पूर्व में पवित्र रोमी साम्राज्य और पश्चिम में फ्रांस। यद्यपि पहले पहल जब कैरोलिंगियन साम्राज्य विभाजित किया गया था, वह पूर्वी फ्रैंक, पश्चिमी फ्रैंक और इटली में खंडित हुआ था, इटली जल्द ही पूर्वी फ्रैंक के साथ मिल गया था और दोनों मिल कर पवित्र रोमी साम्राज्य बन गया, जबकि पश्चिमी फ्रैंक फ्रांस का राज्य बन गया था। यह विभाजित पूर्वी और पश्चिमी राज्यों की चार-सौ वर्ष की अवधि ९१९ के ईसाई साम्राज्य के विभाजन से आरंभ हुई और १३०९ में समाप्त हुई, जब पोप का कार्यालय एविंगटन स्थानांतरित हुआ, जो आज दक्षिणी फ्रांस के नाम से जाना जाता है। यह अवधि उत्तर और दक्षिण के चार-सौ वर्ष की अवधि के विभाजित राज्यों के प्रति वास्तविक समानांतर थी, और इसका उद्देश्य पहले की अवधि को समानांतर क्षतिपूर्ति की शर्तों द्वारा पुनः स्थापित करना था।

४.५ पोप के निर्वासन और वापसी के दो-सौ-दस वर्ष की अवधि

उत्तर और दक्षिण के विभाजित राज्यों की अवधि के दौरान, इस्राएल का राज्य असीरयाई लोगों के हाथों बरबाद हो गया, क्योंकि इस के लोग मूर्ति पूजा और व्यभिचार में पड़ गए थे। दक्षिण राज्य में यहूदा के लोग भी अविश्वासी हो गए और मंदिर की पवित्रता को बनाए रखने में विफल हुए; फलस्वरूप, यह लोग बेबीलोन, शैतानी दुनिया, में निर्वासित किए गए। अगले २१० वर्ष तक निर्वासन में दुःख झेलने के बाद वे इस्राएल वापस आए, मंदिर का पुनः निर्माण किया और वाचा को फिर से नवीकृत किया। पोप के निर्वासन और वापस लौटने की समानांतर अवधि भी लगभग २१० वर्ष तक चली। यह सन १३०९ ईसवी में आरंभ हुई, पर जब पोप का कार्यालय भ्रष्ट हो गया, पोप क्लेमेंन्ट ५ को पोप का कार्यालय रोम

से एविंगटन ले जाना पड़ा और फ्रांस के अधीन रहना पड़ा। यह अवधि पोप के कार्यालय के रोम वापस लौटने के बाद भी, १५१७ में ईसाई धर्म-शोधन-आंदोलन (प्रौटेस्टैन्ट रेफरमेशन) के आरंभ होने तक जारी रही। यह २१० वर्ष की अवधि इस्राएल के निर्वासन और वापसी के २१० वर्ष की अवधि के प्रति वास्तविक समानांतर थी, और इसका उद्देश्य उस पूर्वकालीन अवधि को समानांतर क्षतिपूर्ति शर्तों द्वारा पुनः स्थापित करने के लिए था।

४.६ मसीह के दूसरे आगमन के लिये चार-सौ-वर्ष की तैयारी की अवधि

यहूदी लोगों का बेबीलोन के निर्वासन से स्वतंत्र होने के बाद जब वे वापस यरूशलेम लौटे, उन्होंने अपने धार्मिक और राजनैतिक जीवन का सुधार किया। मलाकी की भविष्यवाणी के आधार पर वे मसीह को ग्रहण करने की तैयारी करने में व्यस्त हो गए। मसीह के आगमन की तैयारी के चार-सौ वर्ष की अवधि के बाद यीशु यहूदी लोगों के पास आया। पुनरुद्धार की दैवी योजना के प्रवर्धन के युग में उस अवधि को क्षतिपूर्ति द्वारा पुनःस्थापित करने के लिए, हम मसीह के दूसरे आगमन के लिए भी एक समान्तर चार-सौ वर्ष की तैयारी की अवधि की आशा करते हैं। वास्तव में, यह १५१७ में मार्टीन लूथर और ईसाई धर्म-शोधन-आंदोलन के साथ आरंभ हुई और पृथ्वी पर मसीह के दूसरे आगमन के शुभ अवसर तक जारी रही। यह मसीह के आगमन के चार-सौ वर्ष की तैयारी की अवधि के तुल्य वास्तविक समानांतर थी, जिसका उद्देश्य पहले की अवधि को समानांतर क्षतिपूर्ति की शर्तों के द्वारा पुनःस्थापित करना था।

रेखा-चित्र २

समान्तर दैवी अवधियाँ

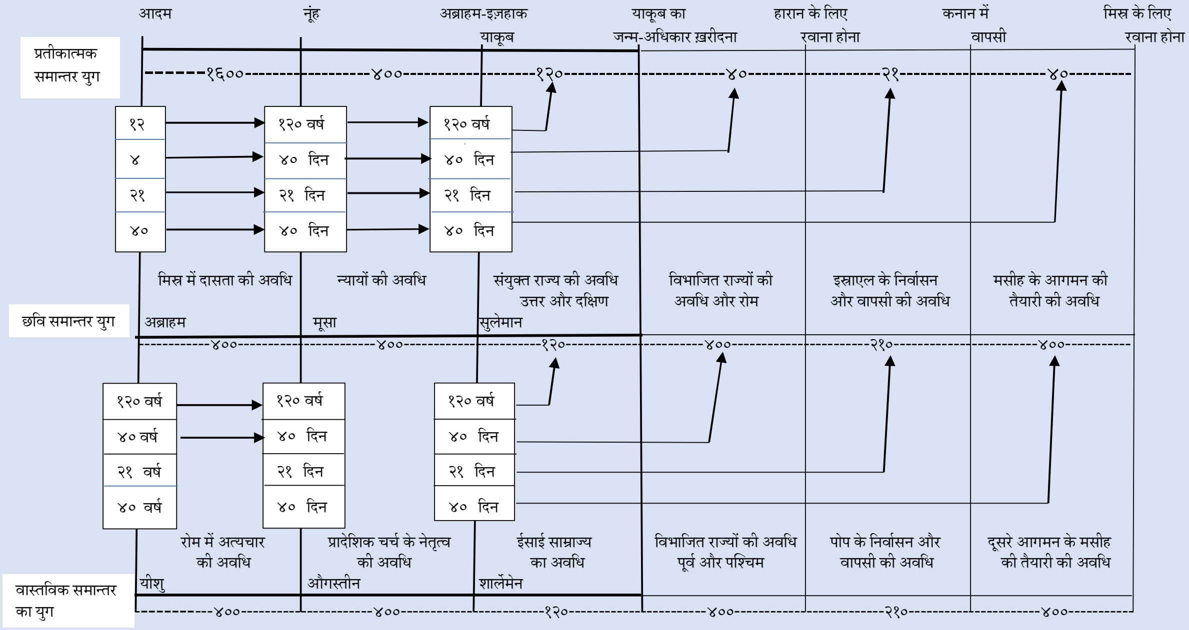

दिव्य नियम प्रतिपादन

भाग २

अध्याय ४

पुनरुद्धार की दबी योजना में दो युगों के मध्य समानांतर

विषय सूची

पृष्ठ

पुनरुद्धार की दैवी योजना में दो युगों के मध्य समानांतर काल ३३६

संभाग १

मिस्र देश में दासत्व के काल और रोमी साम्राज्य में क्लेश के काल ३३८

संभाग २

न्यायियों का काल और प्रादेशिक चर्च के नेतृत्व का काल ३४०

संभाग ३

संयुक्त राज्य का काल और ईसाई साम्राज्य का काल ३४२

संभाग ४

उत्तर और दक्षिण के विभाजित राज्यों के काल और
पूर्व और पश्चिम के विभाजित राज्यों के काल ३४५

संभाग ५

इस्राएल का निर्वासन और वापसी का काल और
पोप का निर्वासन और वापसी का काल ३४७

संभाग ६

मसीह के आगमन की तैयारी का काल और
मसीह के दूसरे आगमन की तैयारी का काल ३५०

संभाग ७

पुनरुद्धार की दैवी योजना और इतिहास की प्रगति ३५३

७.१ पुनरुद्धार की दैवी योजना में इतिहास की प्रगति ३५४
७.२ पुनरुद्धार की दैवी योजना के प्रवर्धन के युग में इतिहास की प्रगति ३५६
७.२.१ पुनरुद्धार की दैवी योजना और पश्चिमी देशों का इतिहास ३५७
७.२.२ धार्मिक इतिहास, आर्थिक इतिहास और राजनीतिक इतिहास के बीच पारस्परिक संबंध ३५७
७.२.३ परिजन समाज ३५९
७.२.४ सामंतवादी समाज ३२४
७.२.५ राजकीय समाज और साम्राज्यवाद ३६१
७.२.६ लोकतंत्र और समाजवाद ३६३
७,२,७ परस्पर निर्भरता, अन्योन्य समृद्धि और सर्वत्र सहभाजी
मान्यताओं के आदर्शों की तुलना में साम्यवाद ३६६

रेखा-चित्र ३ इतिहास की प्रगति का मार्गदर्शन पुनरुद्धार की दैवी योजना की नींव द्वारा ३६८

पुनरुद्धार की दैवी योजना में
दो युगों के मध्य समानांतर काल

क्योंकि पुनरुद्धार की दैवी योजना का मुख्य उद्देश्य मसीह के लिए नींव तैयार करना है, तो यदि यह प्रवर्धित होती है तो इस नींव को पुनःस्थापित करने की व्यवस्था दोहराई जानी चाहिए। हम यह जानते हैं कि मसीह के लिए नींव डालने के लिए एक प्रमुख व्यक्ति को शर्त की एक वस्तु नियोजित करके अपेक्षित समय से पारित होकर परमेश्वर को स्वीकार्य प्रतीकात्मक भेंट चढ़ाना आवश्यक है। इसके साथ-साथ उसे पतित प्रवृत्ति निकालने की क्षतिपूर्ति की शर्त पूरी करके ग्रहणीय वास्तविक भेंट चढ़ानी चाहिए। दैवी योजना के दौरान, मसीह के लिए नींव पुनःस्थापित करने की व्यवस्था जब दुबारा घटित होती है तो प्रतीकात्मक भेंट और वास्तविक भेंट को क्षतिपूर्ति द्वारा पुनःस्थापित करने की व्यवस्था भी वस्तुतः दोहराई जाती है। ऐतिहासिक अभिलेख, व्यवस्थाओं की पुनरावृत्ति के कारण होने वाली दैवी अवधियों के बीच समानताएं दर्शाते हैं, जो क्षतिपूर्ति के माध्यम से मसीह की नींव को बहाल करती हैं। पुनरुद्धार की दैवी योजना के प्रवर्धन का युग, पुनरुद्धार की दैवी योजना के युग को समानांतर क्षतिपूर्ति की वास्तविक प्रकार की शर्तों द्वारा बहाल करने के लिए था। आइए हम दैवी योजना की प्रत्येक अवधि की तुलनीय विशेषताओं की इस दृष्टिकोण से जाँच करें।

पहला, परन्तु हमें यह पहचाने की आवश्यकता है कि वे कौन से समुदाय के लोग थे जिनके कंधों पर परमेश्वर की दैवी योजना की प्रमुख ज़िम्मेवारी थी और ऐतिहासिक स्रोत जो उनके इतिहास पर प्रकाश डाल सकते हैं। मानव इतिहास में अनगणित लोगों के इतिहास का विवरण है। परन्तु, मसीह की नींव डालने के लिए परमेश्वर ने विशेष रूप से कुछ ख़ास लोगों को पुनरुद्धार के एक नमूने के पथ पर चलने के लिए चुना है। उनको परमेश्वर अपनी दैवी योजना के मध्य में रखता है और अपने नियमों के माध्यम से उनका मार्गदर्शन करता है। फिर उनका इतिहास पूर्णरूप से मानव इतिहास के प्रवाह को चलाता है। वह देश या लोग जिनको ऐसे मिशन सौंपे जाते हैं वे परमेश्वर के चुने हुए लोग कहलाते हैं।

परमेश्वर के चुने हुए पहले लोगों में से अब्राहम, इज़हाक और याकूब का वंश था, जिन्होंने मसीह की पारिवारिक नींव स्थापित की थी। इसलिए, जो देश, पुनरुद्धार की दैवी योजना के युग में परमेश्वर की दैवी योजना का प्रमुख उत्तरदायी देश था, वह इस्राएल था। पुराना नियम जिसमें इस्राएल का इतिहास पंजीकृत है, दैवी योजना के युग के इतिहास के अध्ययन के लिए स्रोत विषयवस्तु प्रदान करता है।

परंतु, जिस समय से यहूदी लोगों ने यीशु का बहिष्कार किया, उन्होंने परमेश्वर की दैवी योजना का प्रमुख उत्तरदायी होने का अधिकार खो दिया। यह पूर्वानुमान करके यीशु ने दाख की बारी का दृष्टांत यह कह कर सुनाया:

> इसलिए मैं तुम से कहता हूँ कि परमेश्वर का राज्य तुम से ले लिया जाएगा और ऐसी जाति को जो उसका फल लाए, दिया जाएगा।—मत्ती २१:४३

संत पौलूस ने व्यथा पूर्ण अपने संबंधी बंधु यहूदियों के लिए यूँ कहा:

> परंतु यह नहीं कि परमेश्वर का वचन टल गया, इसलिए कि जो इस्राएल के वंश के हैं, वे सब इस्राएली नहीं, और न अब्राहम के वंश के होने के कारण सब उसकी संतान ठहरे, परन्तु (लिखा है) इज़हाक ही से तेरा वंश कहलाएगा, अर्थात् शरीर की सन्तान परमेश्वर की सन्तान नहीं, परन्तु प्रतिज्ञा की सन्तान वंश गिने जाते हैं।—रोमियों ९:६-८

वास्तव में, जो लोग पुनरुद्धार की दैवी योजना के प्रवर्धन के युग में दैवी योजना के प्रमुख उत्तरदायी बने वह यहूदी लोग नहीं थे, बल्कि ईसाई लोग थे। जिन्होंने परमेश्वर के पुनरुद्धार की दैवी योजना का अपूरित मिशन का भार अपने ऊपर ले लिया। तदनुकूल, ईसाई मत का इतिहास इस युग में दैवी योजना को समझने के लिए विषयवस्तु का साधन प्रस्तुत करता है। इस विचार से, पुराने नियम में अब्राहम का वंश कदाचित पहला इस्राएल कहा जा सकता है, और नए नियम में ईसाई लोग दूसरा इस्राएल कहलाए जा सकते हैं।[७१५]

जब हम पुराने नियम की तुलना नए नियम से करते हैं, तो कानून की पहली पाँच पुस्तकें (उत्पत्ति से लेकर व्यवस्थाविवरण), इतिहास की बारह पुस्तकें (यहोशू से लेकर एस्तेर), कविता और ज्ञान की पाँच पुस्तकें (अय्यूब से लेकर सुलेमान के श्रेष्ठगीत) और भविष्यवाणी की सत्रह पुस्तकें (यशायाह से लेकर मलाकी), नए नियम की पुस्तकों के अनुरूप हैं, जो क्रमशः सुसमाचार, प्रेरितों, प्रेरितों के पत्र और प्रकाशितवाक्य। हालाँकि, जबकि पुराने नियम के इतिहास की पुस्तकों के लगभग सभी अभिलेख इस्राएल के दो हज़ार वर्ष के इतिहास की चर्चा करते हैं, प्रेरितों की पुस्तक केवल यीशु के देहांत के बाद की पीढ़ी के प्रथम ईसाई लोगों के इतिहास का वर्णन करतीं हैं। परमेश्वर के पुनरुद्धार के कार्य से संबंधित नए नियम के युग में, पुराने नियम के तुलनीय, ऐतिहासिक अभिलेख की जानकारी के लिए हमें यीशु के समय से लेकर आज तक के संपूर्ण इतिहास से परामर्श लेना चाहिए। इस आधार पर, हम पहले और दूसरे इस्राएल के इतिहास और दोनों दैवी युगों में प्रत्येक अवधि की भूमिका पर उनके प्रभाव की तुलना कर सकते हैं। समानांतर अवधियों के नमूने को पहचान कर हमें यह स्पष्ट रूप से ज्ञात होता है कि इतिहास जीवित परमेश्वर की सुव्यवस्थित और नियमानुकूल दैवी योजना के द्वारा गढ़ा गया है।

---

[७१५] तीतुस २:१४, पतरस २:९-१०

मिस्र देश में दासत्व के काल और रोमी साम्राज्य में क्लेश के काल

याकूब का अपने बारह पुत्रों और सत्तर संबंधियों के साथ मिस्र में प्रवेश करने के बाद, उसके वंश को चार सौ वर्ष तक मिस्रियों के भारी हाथों के नीचे कठोर दुर्व्यवहार सहना पड़ा। यह नूंह से अब्राहम तक की अवधि के चार सौ वर्ष को पुनःस्थापित करने के लिए शैतान से अलग होने की अवधि थी, जो अब्राहम की भेंट चढ़ाने में गलती के कारण भ्रष्ट हो गई थी। रोमी साम्राज्य में अत्याचार की समतुल्य अवधि इस पिछली अवधि को समानांतर क्षतिपूर्ति की शर्त के द्वारा पुनःस्थापित करने के लिए थी। रोमी साम्राज्य में चार सौर वर्ष की अवधि में ईसाई लोगों की अनेक पीढ़ियों में सब से पहले यीशु के बारह प्रेरित और सत्तर शिष्यों ने कठोर अत्याचार भोगा। इस दुःख को भोग कर, उन्होंने क्षतिपूर्ति के द्वारा चार सौ वर्ष मसीह के आगमन की तैयारी की अवधि को बहाल किया। यह, यहूदी लोगों का यीशु को जीवित बलिदान के रूप में सम्मान न देने की गलती की वजह से, जिसके कारण यीशु को सूली पर जाना पड़ा, शैतान से अलग होने की अवधि थी।

मिस्र के दासत्व की अवधि में, पहले इस्राएल के चुने हुए लोगों ने ख़तने[७१६] के द्वारा बलिदान का चढ़ावा देकर[७१७], और जब उन्होंने मिस्र को छोड़ा विश्रामदिन को पवित्र मान कर[७१८] पवित्र जीवन व्यतीत किया। उसी तरह रोमी साम्राज्य में अत्याचार के दौरान, ईसाई लोगों ने, जो दूसरे इस्राएल के रूप में थे, बपतिस्मा लेकर और प्रभु यीशु के स्मरण के पवित्र भोज में सम्मिलित होकर, बलिदान के रूप में अपने आप को अर्पण करके और विश्राम दिन को पवित्र मान कर खरा विश्वास प्रकट किया। दोनों अवधियों में उन्हें शैतान से अलग होने के लिए, जो अब्राहम और यहूदी लोगों की पिछली ग़लतियों के बल पर उनपर लगातार हमला करता था, आस्थावान जीवन व्यतीत करना पड़ा।

मिस्र में इस्राएलियों के दासत्व के समाप्त होने पर, मूसा ने तीन चिह्न और दस विपत्तियों के सामर्थ्य के द्वारा फिरौन को उसके घुटनों पर लाकर पराजित किया। तब वह इस्राएलियों को मिस्र से बाहर निकाल लाया और कनान देश के लिए रवाना हुआ। उसी तरह, रोमी साम्राज्य के अत्याचार की अवधि की समाप्ति पर जब ईसाई लोग अत्याचार से अत्यधिक दुखद हो चके थे, यीशु ने अपने अनुग्रह के सामर्थ्य से उनका दिल जीत कर विश्वासियों कि संख्या बढ़ाई। सम्राट कॉन्सटेनटीन का दिल जीत कर, यीशु ने उसे सन ३१३ ईसवी में ईसाई मत को मान्यता देने के लिए विवश किया। फिर ईसाई मत को राष्ट्रीय धर्म स्थापित करने के लिए यीशु ने सन ३९२ ईसवी में थ्योडियस १ को प्रेरित किया। इस प्रकार ईसाई लोगों ने रोमी साम्राज्य में, यानी शैतानी राज्य में आध्यात्मिक रूप से कनान प्राप्त किया। पुराने नियम में, परमेश्वर ने बाह्य क्षतिपूर्ति की शर्तों से जो मूसा के कानून के द्वारा नियत की गईं थी कार्य किया; उसी

[७१६] यहोशू ५:२-५
[७१७] निर्गमन ५:३
[७१८] निर्गमन १६;३

रीति से, परमेश्वर ने मूसा के चमत्कार के बाह्य सामर्थ्य से फिरौन को परास्त किया। नए नियम के युग में, जब परमेश्वर ने विश्वास की आंतरिक क्षतिपूर्ति की शर्तों द्वारा कार्य किया, उसने लोगों का मन जीत कर अपना सामर्थ्य आंतरिक रूप से प्रकट किया।

जब मिस्र में दासत्व की अवधी समाप्त हुई, मूसा ने सीनै के पहाड़ पर दस आज्ञाएं प्राप्त कीं और परमेश्वर का वचन विधान में प्रकाशित हुआ, जिससे पुराने नियम के धर्मशास्त्र का मर्म गठित हुआ। पत्थर की पट्टियों को स्थापित करके, वाचा का संदूक और निवास-स्थान को मान देकर, उसने इस्राएलियों के लिए मसीह के आगमन का मार्ग तैयार किया। उसी तरह, रोमी साम्राज्य में अत्याचार की अवधि की समाप्ति पर, ईसाइयों ने प्रेरितों और ईसाई मत के प्रचारकों के लिखे हुए लेख इकट्ठे किए और नए नियम का अधिनियम स्थापित किया। इन लेखों पर आधारित, उन्होंने परमेश्वर के आदर्श को, जो पुराने नियम की दस आज्ञाओं और निवास-स्थान में प्रतिष्ठापित है, आत्मिक रूप से साधित करने का प्रयत्न किया। उन्होंने हर जगह बहुत से चर्च बनाए और मसीह के आगमन की तैयारी में अपनी नींव को प्रसारित किया। यीशु के आरोहण के बाद, पुनर्जीवित यीशु और पवित्र आत्मा ने ईसाई लोगों का सुगम मार्गदर्शन किया। इसी वजह से, परमेश्वर ने किसी एक व्यक्ति को जो सारी दैवी योजना की ज़िम्मेदारी का बेड़ा उठाए प्रमुख व्यक्ति के रूप में नहीं बढ़ाया, जिस प्रकार उसने पहले किया था।

संभाग २

न्यायियों का काल और प्रादेशिक चर्च के नेतृत्व का काल

मूसा का मिशन विरासत में प्राप्त करने के पश्चात, यहोशू ने कनान देश की यात्रा में इस्राएलियों की अगवाई की। अगले चार सौ वर्ष तक, पंद्रह न्यायियों ने इस्राएल के गोत्रों का शासन किया: जैसाकि न्यायियों की पुस्तक में पंजीकृत है ओत्नीएल से शिमशोन तक तेरह न्यायी थे, एली और शमुएल को मिलाकर पंद्रह। न्यायी लोगों ने भविष्यद्वक्ताओं, याजकों और राजाओं की ज़िम्मेदारियों के अनेक स्थानों को भरा, जो अगली अवधियों में पृथक कार्यालयों में बट गए। इस अवधि में इस्राएल बिना किसी केन्द्रीय राजनीतिक सत्ता का सामंतवादी समाज था। नए नियम के युग में, न्यायियों की अवधि को समान्तर क्षतिपूर्ति की शर्तों के द्वारा पुन:स्थापित करने के लिए प्रादेशिक चर्चों का नेतृत्व स्थापित किया गया था। इस अवधि में प्रादेशिक चर्च के अगुवे, कुलपति, बिशप और महंतों ने ईसाई समाज की अगवाई की। पुराने नियम के युग के न्यायियों की तरह, उनके काम भी भविष्यद्वक्ताओं, याजकों और राजाओं के समान थे। न्यायियों के समय के समान, इस अवधि में ईसाई समाज स्थानीय अधिकारियों के अधीन सामंतवादी समाज था।

यीशु के युग से पहले, जब परमेश्वर पहले इस्राएल के साथ मसीह के लिए दोनों आत्मिक और शारीरिक राष्ट्रीय नींव स्थापित करने का काम कर रहा था, उन दिनों राष्ट्रीय रवैये का केन्द्र-बिंदु राजनीति, अर्थनीति और धर्म की तरफ था। यीशु के युग में, मसीही लोग जो आत्मिक नींव पर खड़े थे, यीशु के नेतृत्व में आत्मिक राज्य बना रहे थे। उनकी निष्ठा राष्ट्रीय सीमा से बाहर तक फैल गई थी, क्योंकि वे पुनर्जीवित यीशु की राजाओं के राजा के रूप में सेवा कर रहे थे। इसलिए, यीशु का आत्मिक राज्य किसी एक देश तक सीमित नहीं था, परन्तु दुनिया के दूर-दूर कोनों में फैला हुआ था।

न्यायियों की अवधि इस्राएलियों के मिस्र की दासत्व से छूटने के बाद शुरू हुई जब नई पीढ़ी के लोग यहोशु और कालेब के नेतृत्व में कनान देश में प्रवेश करने के लिए दृढ़ता पूर्वक संगठित हुए। उन्होंने देश को आपस में अपने गोत्रों और जनजातियों के बीच बाँट लिया। न्यायियों के साथ एक जुट होकर लोग बस्तियों में बस गए और चुने हुए देश में संगठित होकर एक सामंतवादी समाज की स्थापना की। उसी तरह, रोमी साम्राज्य, शैतानी दुनिया के अत्याचार से छुटकारा पाने के बाद ईसाई युग में प्रादेशिक चर्चों के नेतृत्व की अवधि का आरंभ हुआ। ईसाइयों ने जर्मन के लोगों में सुसमाचार फैलाया, उनमें बहुत से लोग हन जाति के लोगों के आक्रमणों से बच कर चौथी सदी में पश्चिमी यूरोप चले आए थे। अपने नए देश पश्चिमी यूरोप में परमेश्वर ने जर्मन जाति के लोगों को नए चुने हुए लोगों के रूप में बढ़ाया और प्रारंभिक प्रकार का सामंतवादी समाज स्थापित किया, जो बाद में मध्य युग के सामंतवाद में परिपक्व हो गया।

जैसे कि हमने पहले यह चर्चा की है, जब इस्राएली लोग कनान के लिए रवाना हुए, उन्होंने पहले मसीह के प्रतीक के रूप में निवास स्थान का निर्माण किया और यह निश्चित करने के लिए कि वास्तविक

नींव के लिए हाबिल के स्थान पर कौन खड़ा होगा शर्त की वस्तु ठहराई।[७१९] न्यायियों की अवधि में, इस्राएलियों को उचित था कि वह निवास स्थान को उत्कृष्ट करें और न्यायियों के आदेशों का पालन करें। परंतु, कनान की सात जातियों को नष्ट करने के बजाए, इस्राएली लोग उनके बीच रहने लगे और उनके रीति-रिवाज से प्रभावित हुए। वे उनकी मूर्तियों की पूजा भी करने लगे, इस तरह उन्होंने अपने धर्म में बहुत भ्रांति पैदा की। उसी तरह, प्रादेशिक चर्च के नेतृत्व की अवधि में, ईसाई लोगों को उचित था कि वह चर्च को उत्कृष्ट करें, जो मसीह की छवि के रूप में था, और बिशप और महंतों के आदेशों का पालन करें। चर्च शर्त की वस्तु थी, जिसके आधार पर हाबिल के स्थान पर कौन खड़ा होगा यह तय किया जा सकता था। परन्तु जर्मन मूर्तिपूजक जाति के धर्म और संस्कृति का प्रभाव पड़ने के कारण ईसाई धर्म में बहुत अस्तव्यस्तता पैदा हो गई।

[७१९] प्रति-संदर्भ—मूसा और यीशु २.२.२.३

संभाग ३

संयुक्त राज्य का काल और ईसाई साम्राज्य का काल

जब न्यायियों की अवधि समाप्त होने पर आई और पहले इस्राएल ने संयुक्त राज्य के काल में प्रवेश किया, तो न्यायियों के कार्य भविष्यवक्ता, याजक और राजा के कार्यालय को सौंपे गए। भविष्यवक्ता लोग सीधे परमेश्वर से निर्देश प्राप्त करते थे, याजक निवास स्थान और बाद में मंदिर के उत्तरदायी थे, और राजा देश का शासन करते थे। पुनरुद्धार की दैवी योजना का लक्ष्य पूरा करने और इस्राएलियों का मार्गदर्शन करने के लिए प्रत्येक अपने-अपने पृथक मिशन का भार संभालते थे। ईसाई साम्राज्य का उद्देश्य संयुक्त राज्य की अवधि को समानांतर क्षतिपूर्ति की शर्तों द्वारा पुनःस्थापित करना था। इस प्रकार, जब प्रादेशिक चर्च के नेतृत्व की अवधि समाप्त होने पर आई, इन अगुवा लोगों का मिशन अगुआ महंत लोगों के कार्यालय को सौंप दिया गया, जो भविष्यवक्ताओं के समतुल्य था, पोप का स्थान जो महायाजक के समतुल्य था, और सम्राट, जो लोगों पर राज्य करता था। वे पुनरुद्धार की दैवी योजना के लक्ष्य को पूरा करने के लिए दूसरे इस्राएल का मार्गदर्शन करने के उत्तरदायी थे। पिछली अवधि में, ईसाई चर्च यरूशलेम के पाँच कुलपतियों के बीच विभाजित किया गया था, अंताकिया, सिकन्दरिया, कांस्टेंटिनोपल और रोम, रोम जो पश्चिम में प्रभावी था। पोप, जो रोमी कुलपति कहलाता था, पश्चिमी यूरोप के सभी बिशप और महंतों की देख-भाल करता था।

संयुक्त राज्य की अवधि में, राजाओं ने मंदिर के चारों तरफ इस्राएल का राज्य स्थापित किया था, इसलिए यह मूसा के निवास स्थान का आदर्श व्यक्त करता है, जो आरंभ में निर्गमन के समय प्रतिष्ठित किया गया था। यह यीशु द्वारा शासित स्वर्ग के राज्य की संरचना के लिए छवि योजना थी, जिसे स्थापित करने के लिए वह एक दिन राजाओं के राजा के रूप में आएगा।[७२०] इसी प्रकार, ईसाई साम्राज्य की अवधि में शारलेमेन के साम्राज्य ने ईसाई राष्ट्र का आदर्श साधित किया, और संत ऑगस्टीन ने इसे परमेश्वर की नगरी के रूप में स्थापित किया—वह, रोमी साम्राज्य के अत्याचार के तुरंत बाद के समय जब ईसाई लोग स्वतंत्र हुए थे, रहता था, यह समय मूसा के युग के समानांतर था। यह एक बार फिर, परमेश्वर के राज्य के निर्माण के लिए छवि योजना थी, जो मसीह, राजाओं के राजा के रूप में एक दिन अपने वापस आने पर स्थापित करेगा। तदनुसार, इस अवधि में, सम्राट और पोप परमेश्वर की इच्छा का अनुसरण करने के लिए पूरे दिल से एक जुट होकर आदर्श ईसाई राष्ट्र साधित करने वाले थे। पोप द्वारा शासित आध्यात्मिक साम्राज्य को, जो मसीह की आत्मिक नींव पर स्थापित किया गया था, और सम्राट द्वारा शासित पार्थिव साम्राज्य को मसीह की शिक्षा के आधार पर एकजुट हो जाना चाहिए था। यदि उन्होंने ऐसा किया होता, तो धर्म, राजनीति और अर्थनीति संगठित हो जाते, और मसीह के दूसरे आगमन की नींव उस समय ही स्थापित हो जाती।

इस्राएल के संयुक्त राज्य की अवधि में, विश्वास की नींव पुनःस्थापित करने के लिए राजा प्रमुख व्यक्ति था। वह परमेश्वर के वचन को कार्यान्वित करने के लिए ज़िम्मेवार था, जो भविष्यवक्ताओं के

---

[७२०] यशायाह ९:६

द्वारा दिया जाता था। इससे पहले कि राजा अभिषिक्त किया जाए, भविष्यवक्ता और महायाजक परमेश्वर का वचन सिखाने के लिए उपस्थित होते थे, इस प्रकार वे हाबिल के स्थान पर खड़े होते थे। उनका मिशन, जैसे कि पुनरुद्धार की दैवी योजना के लिए अपेक्षित है, आत्मा लोक का प्रतिनिधित्व करते हुए महादूत के स्थान से भौतिक संसार को बहाल करना था। परन्तु, उस नींव को जिस पर राजा खड़ा हो सके स्थापित करके, राजा का अभिषेक करके और उसे आशीर्वाद देने के पश्चात, उन्हें उसके सामने कैन की भूमिका अदा करनी चाहिए थी। राजा को अपने राज्य का शासन भविष्यवक्ताओं के मार्गदर्शन के अनुसार करना चाहिए था, और भविष्यवक्ताओं को राजा का उसकी प्रजा और सलाहकारों के रूप में आदेश माना चाहिए था।

अब्राहम के वंश का मिस्र में प्रवेश करने के लगभग आठ सौ वर्ष बाद, परमेश्वर के आदेश से भविष्यवक्ता शमुएल ने राजा शाऊल का इस्राएल के पहले राजा के रूप में अभिषेक किया।[७२१] राजा शाऊल न्यायियों के अंतर्गत चार सौ वर्ष की नींव पर खड़ा था। यदि उसने परमेश्वर के मनोरथ के अनुसार चालीस वर्ष का राज्य पूरा किया होता, तो वह मूसा के फिरौन के महल में चालीस वर्ष और मिस्र की दासत्व के चार सौ वर्ष को क्षतिपूर्ति द्वारा पुनःस्थापित कर लेने के स्थान पर खड़ा होता। यह होने के बाद, राजा शाऊल शैतान से अलग होने के लिए चालीस की व्यवस्था पूरी कर लेता और विश्वास की नींव डाल लेता। यदि, इस नींव पर, राजा शाऊल ने मंदिर का निर्माण किया होता, जो मसीह की छवि के रूप में था, और उसे उत्कृष्ट करके सम्मानित किया होता, तो वह मूसा के स्थान पर खड़ा हो सकता था। यह वह स्थान था जिसे मूसा को, यदि वह कनान की प्राप्ति के लिए पहली राष्ट्रीय कार्यवाही में विफल न हुआ होता और कनान में मंदिर का निर्माण करके उसकी महिमा करता, अधिकृत करना चाहिए था। यदि इस्राएली लोग उस समय विश्वास की इस नींव पर खड़े होते और वफादारी के साथ राजा शाऊल का जिसने मंदिर को सम्मानित किया था अनुसरण करते, तो वे वास्तविक नींव डाल लेते। इस तरह मसीह के लिए नींव उसी समय स्थापित हो गई होती।

परन्तु राजा शाऊल ने भविष्यवक्ता शमुएल के द्वारा दिए गए परमेश्वर के आदेश का उल्लंघन किया।[७२२] इसलिए वह किसी भी हालत में मंदिर बनाने के योग्य नहीं ठहरा। उसकी इस विफलता पर, राजा शाऊल ने अपने आप को उसी स्थिति में पाया जिसमें मूसा था जब वह कनान की प्राप्ति के लिए पहली राष्ट्रीय कार्यवाही में विफल हुआ था। जिस प्रकार मूसा के मामले में हुआ, राजा शाऊल के कारण भी पुनरुद्धार की दैवी योजना प्रवर्धित हुई। राजा दाऊद के राज्य के चालीस वर्ष और राजा सुलेमान के राज्य के चालीस वर्ष बीत जाने के बाद ही विश्वास की नींव डाली गई और मंदिर का निर्माण किया गया। इसके अतिरिक्त, जैसे कि हम पहले यह चर्चा कर चुके हैं, राजा शाऊल अब्राहम के दर्जे पर था। परमेश्वर की इच्छा जो अब्राहम को सौंपी गई थी वह अंततः इज़हाक और याकूब से होकर गुज़री, उसी रीति से राजा शाऊल के द्वारा मंदिर का निर्माण करने की परमेश्वर की इच्छा राजा दाऊद के राज्य तक जारी रही

[७२१] १शमुएल ८:१९-२२, १०:१-२४
[७२२] १शमुएल १५:१-२३

और अंत में राजा सुलेमान के राज्य के दौरान पूरी हुई। तथापि, राजा सुलेमान ने भी हाबिल का स्थान जो वास्तविक भेंट के लिए आवश्यक था त्याग दिया, जब वह विदेशी पत्नियों की काम-वासना में पड़ गया, जिन्होंने उसे परमेश्वर से भटका दिया था।[७२३] इसलिए, इस्राएल के पास वास्तविक नींव स्थापित करने के लिए और कोई भी उपाय बाकी नहीं रहा। मसीह के लिए नींव, जो संयुक्त राज्य की अवधि में डाली जानी चाहिए थी वह कार्यान्वित नहीं की जा सकी।

ईसाई साम्राज्य की अवधि में, संयुक्त राज्य के संबंध की सारी शर्तों को समानांतर क्षतिपूर्ति की शर्तों द्वारा पुनःस्थापित करना आवश्यक हो गया। एक बार फिर, विश्वास की नींव पुनःस्थापित करने के लिए प्रमुख व्यक्ति सम्राट था। वह प्रधान महंतों और पोप के द्वारा निर्धारित ईसाई आदर्शों को कार्याविन्त करने के लिए उत्तरदायी था। पोप अपनी ओर से, इस्राएल के महायाजक के तुलनीय दर्जे पर खड़ा था, जो परमेश्वर के आदेशों को भविष्यवक्ताओं के द्वारा प्राप्त करता था। वह आत्मिक नींव डालने के लिए ज़िम्मेवार था जिस पर चल कर सम्राट आदर्श ईसाई राष्ट्र साकार कर सकता था। सम्राट का अभिषेक करने और उसे आशीर्वाद देने के पश्चात, पोप को, पार्थिव मामलों में एक नागरिक के रूप में उसके अधीन रह कर उसके आदेशों का पालन करना चाहिए था। सम्राट के लिए यह उचित था कि वह पोप के कार्यालय के क्षेत्र के आध्यात्मिक कार्यों को ऊँचा करके आगे बढ़ाए।

पोप लियो ३ ने शारलेमेन का सन ८०० ईसवी में ईसाई जगत के सम्राट के रूप में अभिषेक किया और आशीर्वाद दिया। शारलेमेन प्रादेशिक चर्च के चार सौ वर्ष की अवधि के नेतृत्व की नींव पर खड़ा था, जिसके द्वारा न्यायियों के चार सौ वर्ष की अवधि वास्तविक समानांतर के रूप में क्षतिपूर्ति द्वारा पुनःस्थापित की गई थी। इसलिए, राजा शाऊल की तरह, वह शैतान से अलग होने की चालीस की व्यवस्था की नींव पर खड़ा था। यीशु के शिक्षण के अनुसार सच्चाई से रह कर अपने कामों से ईसाई राष्ट्र का आदर्श साकार करके उसे विश्वास की नींव स्थापित करनी थी। सचमुच, जब शारलेमेन सम्राट बना, उसने यह नींव प्राप्त कर ली थी। यदि दूसरे इस्राएल ने शारलेमेन पर पूरा भरोसा करके उसका साथ दिया होता, तो वास्तविक नींव स्थापित हो जाती, फलस्वरूप, मसीह की नींव भी स्थापित हो जाती। दूसरे शब्दों में, यदि आत्मिक राज्य जो पोप चला रहा था और पार्थिव राज्य जो सम्राट चला रहा था मसीह की विद्यमान आत्मिक नींव पर पूर्ण रूप से संगठित हो जाते, तब मसीह इस ठोस आधार पर वापस आ गया होता और अपना राज्य स्थापित कर लेता। परन्तु सम्राट लोग परमेश्वर की इच्छा के आज्ञाकारी नहीं रहे और उन्होंने वास्तविक भेंट के लिए हाबिल का स्थान त्याग दिया। अतः ना तो वास्तविक नींव और ना ही दूसरे आगमन के मसीह की नींव स्थापित हो सकी।

---

[७२३] १ राजाओं ११:३-७

संभाग ४

उत्तर और दक्षिण के विभाजित राज्यों के काल और पूर्व और पश्चिम के विभाजित राज्यों के काल

क्योंकि राजा सुलेमान अपनी पत्नियों और रखेलों के दबाव में आकर मूर्ति पूजा में पड़ गया, इस्राएल का संयुक्त राज्य उसकी मृत्यु पर विभाजित हो गया, वह केवल तीन पीढ़ियों तक ही चला।[७२४] इस्राएल के उत्तर के राज्य में, जो बारह में से दस गोत्रों ने स्थापित किया गया था, कैन के स्थान पर था, और दक्षिण का राज्य, जो बाकी दो गोत्रों द्वारा स्थापित किया गया था, हाबिल के स्थान पर था। इस प्रकार उत्तर और दक्षिण के विभाजित राज्यों की अवधि का आरंभ हुआ।

ईसाई साम्राज्य भी तीसरी पीढ़ी में विभाजित होना शुरू हो गया। शारलेमेन के नवासों ने इसे तीन भागों में बांट दिया: पूर्वी फ्रैन्कस, पश्चिमी फ्रैन्कस और इटली। शारलेमेन के वंश आपस में लगातार कठोर संघर्ष करते रहे। अवशेष ईसाई साम्राज्य शीघ्र ही दो राज्यों में संगठित हो गए, इटली पूर्वी फ्रैंकस के शासन में वापस चला गया। पूर्वी फ्रैंकस का राज्य जो औटो १ (पवित्र रोमी सम्राट) के साम्राज्य के अधीन था बहुत ही संपन्न हो गया और उन से अलग हो गया और पवित्र रोमी साम्राज्य के नाम से जाना जाने लगा। रोमी साम्राज्य का उत्तराधिकारी होने का दावा करके, उसने पश्चिम यूरोप के कुछ भागों पर राज्य किया और धर्म और राजनीति दोनों पर प्रभुत्व जमा लिया। फ्रांस के संबंध में पवित्र रोमी साम्राज्य हाबिल के स्थान पर था, इस तरह बह पश्चिमी फ्रैंकस के राज्य के नाम से कहलाया गया।

इस्राएल का उत्तर का राज्य जेरोबोम ने स्थापित किया था, जो राजा सुलेमान के दिनों में निर्वासन में रहता था। इस पर उन्नीस राजाओं ने २१० वर्ष शासन किया था। कपटवध के अनेक बार वार होने के कारण अल्पकालिक राजपरिवार नौ बार बदले; एक भी राजा परमेश्वर की दृष्टि में सदाचारी नहीं था। तथापि, परमेश्वर ने एलिय्याह भविष्यवक्ता को भेजा, जो कर्मेल नामक पहाड़ पर, ८५० बाल और अशेरा के नबियों के साथ बखेड़े में प्रबल हुआ जब परमेश्वर ने वेदी पर आग भेजी।[७२५] दूसरे भविष्यवक्ताओं ने जिसमें एलीशा, योना, होशे और आमोस शामिल थे, परमेश्वर का वचन अपनी जान पर खेल करके फैलाया। इस पर भी चूँकि उत्तर के राज्य के लोग विदेशी देवी देवताओं की पूजा करते रहे और पश्चाताप नहीं किया, तो परमेश्वर ने उन्हें असीरिया के लोगों के द्वारा नष्ट कर दिया और उन से चुने हुए लोग की विशिष्टता हमेशा के लिए छीन ली।[७२६]

दक्षिण में यहूदा का राज्य सुलेमान के पुत्र रहूबियाम ने स्थापित किया। यह राज घर एक राज वंश में दाऊद से लेकर सिदकिय्याह तक चला, इनमें बहुत से सदाचारी राजा हुए जिन्होंने लगभग चार सौ वर्ष राज्य किया। तथापि, बुरे राजाओं के सिलसिले के साथ उत्तरी राज्य का प्रभाव मिला कर मूर्ति पूजा और भ्रष्टाचार बहुत बढ़ गया। फलस्वरूप, दक्षिण राज्य के लोग भी बेबीलोन में निर्वासित किए गए।

---

[७२४] १ राजाओं ११:५-१३
[७२५] १ राजाओं १८:१९-४०
[७२६] २ राजाओं १७:७-२३

उत्तर और दक्षिण के विभाजित राज्यों की अवधि में, जब कभी इस्राएलियों ने परमेश्वर की वाचा का उलंधन किया और मंदिर के आदर्श से दूर हो गए, तो परमेश्वर ने उन्हें ताड़ना दी, और उन्हें अंदर से बदलने के लिए बहुत से भविष्यवक्ता—जैसे एलिय्याह, यशायाह और यर्मयाह, भेजे। परन्तु, क्योंकि राजा और लोगों ने भविष्यवक्ताओं की चेतावनी नहीं सुनी और पश्चाताप नहीं किया, परमेश्वर ने उन्हें बाहरी तौर पर सबक सिखाने के लिए अन्य जाति, सीरिया, असीरिया और बेबीलोन देशों को उनपर आक्रमण करने के लिए भेजा।

पूर्व और पश्चिम के विभाजित राज्यों की समानांतर अवधि के दौरान, पोप का कार्यालय भ्रष्टाचार में पड़ गया। परमेश्वर ने पोप और उसके कार्यालय को ताड़ना देने के लिए और चर्च को अन्दर से सुधारने के लिए प्रतिष्ठित महंत जैसे संत, थौमस एक्वानस और असीसी के संत फ्रांसिस भेजे। क्योंकि पोप और उसका कार्यालय और चर्च ने पश्चाताप नहीं किया, परमेश्वर ने उन्हें बाहरी तौर पर दण्ड देने के लिए उनके लोगों को मुसलमानों से भिड़ा दिया। ईसाइयों के धर्मयुद्ध के पीछे यह दैवी कारण था। जब यरूशलेम और पवित्र देश अब्बासिद ख़ालीफा के अधीन थे, ईसाई पथिक अतिथियों का सत्कार और स्वागत किया जाता था। जब ख़ालीफा का शक्तिपात हुआ और पवित्र भूमि को सेलजुक के तुर्की लोगों ने परास्त किया, तो आपत्ति-सूचना का कोलाहल मच गया कि ईसाई पथिक तंग और परेशान किए जा रहे हैं। पोप लोग इस बात से अत्यंत क्रोधित हुए और पवित्र भूमि पुनः प्राप्त करने के लिए धर्मयुद्ध आरंभ किया। सन १०९५ से शुरू होकर बीच-बीच में कुछ अरसे छोड़ कर लगभग दो सौ वर्ष तक आठ धर्म युद्ध हुए। हालांकि शुरू में कुछ सफलता हुई परन्तु धर्मयुद्ध करने वाले बारंबार पराजित हुए।

उत्तर और दक्षिण के विभाजित राज्यों की अवधि समाप्त हुई जब अन्य जातियों के देश इस्राएल और यहूदा को बंदी बना कर निर्वासन में ले गए। उन्होंने इस्राएल के राजवाद को समाप्त कर डाला। इसी प्रकार, पूर्व और पश्चिम के विभाजित राज्यों की अवधि की समाप्ति के समय, पोप और उसके कार्यालय ने धर्मयुद्ध में लगातार पराजित होने के बाद अपनी ख्याति और प्रत्यय बिलकुल खो दिया। ईसाई मत ने इस प्रकार आत्मिक राजत्व का केन्द्र खो दिया। इसके अतिरिक्त, चूँकि नायक और नाईट लोगों को, जो सामंत समाज को चलाते थे धर्मयोद्धाओं ने बिलकुल नष्ट कर दिया, सामंत समाज ने राजनीतिक क्षमता और जोश खो दिया। चूँकि पोप और उसके कार्यालय और सामंत सरदार लोगों ने इन असफल युद्धों पर बहुत सा धन लगाया था, वे अब आर्थिक रूप से दरिद्र बन गए थे। राजकीय ईसाईयत ख़त्म होने लगी।

संभाग ५

इस्राएल का निर्वासन और वापसी का काल और पोप का निर्वासन और वापसी का काल

बिना पश्चाताप किए इस्राएली लोग अविश्वसनीयता में पड़े रहे और मंदिर पर आधारित परमेश्वर के देश का आदर्श साकार करने में विफल हुए। एक बार और अपनी इच्छा पूरी करने के प्रयास में, परमेश्वर ने लोगों को बेबीलोन में निर्वासन में दु:ख और कठिनाइयाँ झेलने के लिए भेज दिया। यह उसी घटना के समान था जब अब्राहम की प्रतीकात्मक भेंट की ग़लती को क्षतिपूर्ति के द्वारा पुनःस्थापित करने के लिए परमेश्वर ने इस्राएलियों को मिस्र में दासत्व का दु:ख उठाने के लिए छोड़ा था।

ईसाई साम्राज्य की अवधि में, परमेश्वर ने पोप और सम्राट के द्वारा मसीह के दूसरे आगमन की तैयारी के लिए राज्य स्थापित करने का कार्य किया। परमेश्वर की मंशा थी कि उस नींव पर वे अंत में मसीह को राज्य और सिंहासन सौंप देंगे, जब वह राजाओं का राजा के रूप में आएगा और परमेश्वर का राज्य स्थापित करेगा।[७२७] परंतु, सम्राट और पोप लोग भ्रष्टाचार में पड़े रहे और उन्होंने प्रायश्चित नहीं किया। पोप लोगों ने आध्यात्मिक नींव नहीं स्थापित की जिसपर सम्राट प्रमुख व्यक्ति की हैसियत से खड़े हो कर वास्तविक नींव डाल सके। इसलिए, मसीह के दूसरे आगम के लिए नींव स्थापित नहीं हो सकी। नई दैवी व्यवस्था शुरू करने के लिए परमेश्वर ने इस नींव को पुनःस्थापित करने के लिए पोप लोगों को निर्वासन की कैद में दु:ख उठाने के लिए छोड़ दिया।

पहले की समानांतर अवधि में, जब बेबीलोन के राजा नेबूकदनेस्सर ने इस्राएल के राजा यहोयाकीम को उसके राज घराने समेत, भविष्यद्वक्ताओं के साथ, जिसमें दानिय्येल, यहेजकेल, याजक, अधिकारी लोग शामिल हैं और बहुत से कारीगरों को भी बंदी बना कर ले गया; इस घटना के लगभग सत्तर वर्ष बीतने के बाद जब बेबीलोन का पतन हुआ तब जा के राजा कुस्रू की राजाज्ञा से उनका छुटकारा हुआ।[७२८] निर्वासन के बाद यह तीन टुकड़ियों में स्वदेश वापस लौटे, जिसमें और १४० वर्ष लगे, जब तक इन लोगों ने अपने आप को पूरी तरह से सुधार लिया और भविष्यवक्ता मलाकी की घोषणा के अनुसार परमेश्वर की इच्छा पर केन्द्रित होकर एक देश के रूप में संगठित हुए। इसके बाद से, इन लोगों ने मसीह के आगमन की तैयारी शुरू की। पोप के निर्वासन और वापसी की अवधि में, जो इस अवधि को वास्तविक समानांतर के रूप में क्षतिपूर्ति द्वारा पुनःस्थापित करने के लिए थी, पश्चिमी ईसाई लोगों को समान पथ पर चलना पड़ा।

पोप और धर्माध्यक्ष पादरी लोगों ने, जो व्यभिचार में डूबे हुए थे, यथाक्रम लोगों का भरोसा गवाँ दिया। धर्मयुद्ध में बारंबार पराजय के कारण पोप का प्राधिकरण और अधिक नीचे गिर गया। धर्मयुद्ध की समाप्ति ने यूरोप में सामंतवादी समाज की व्यवस्था का धीरे-धीरे विनाश होते और आधुनिक राष्ट्र-सरकार का उत्थान होते देखा। जैसे-जैसे धर्मनिरपेक्ष राजतंत्र का बल बढ़ा, पोप और राजाओं के बीच प्रतिद्वंद्व

[७२७] यशायाह ९:६, लूक १:३३

[७२८] २राजाओं २४:२५, इतिहास ३६, यर्मयाह २९:१०, ३९:१-१०

उतना तीव्र होता गया। एक ऐसे ही झगड़े में, फ्रांस के राजा फिलिप ५ "द फेयर" ने पोप बोनीफेस ८ को कुछ समय के लिए बंदी बनाकर कैद कर लिया। सन १३०९ में राजा फिलिप ने बलपूर्वक पोप क्लेमेंट ५ के कार्यालय को रोम से अविंगटन दक्षिणी फ्रांस में हटा दिया। तब से ७० वर्ष तक क्रमागत पोप फ्रांस के राजाओं के अधीन सन १३७७ तक रहे, तब पोप ग्रेगरी ११ ने पोप का निवास स्थान रोम को वापस दे दिया।

ग्रेगरी की मृत्यु के बाद, प्रधानों ने बारी इटली के मुख्य धर्माध्यक्ष को पोप अरबन ६ के नाम से चुना। परन्तु, प्रधानों की एक मण्डली ने, जो अधिक संख्या में फ्रांसीसी थे, उसे रद्द किया और दूसरे पोप क्लेमेंट ७ को चुना, और एविंगटन में एक प्रतिरोधी पोप कार्यालय स्थापित किया। यह विशेष विच्छेद अगली शताब्दी तक चला। इस कठिन समस्या के समाधान के लिए, दोनों संप्रदायों के प्रधानों ने सन १४०९ में पीसा इटली में एक महासभा रखी, जिसके फैसले के अनुसार दोनों रोमी और एविंगटन के पोपों को पदच्युत किया गया और एलेक्सज़ेन्डर ५ को वैध पोप के रूप में नियुक्त किया। परन्तु दोनों पोपों ने अपना पद त्यागने से इनकार किया, और कुछ समय के लिए तीन प्रतिस्पर्धी पोप हो गए। उसके थोड़े समय बाद, प्रधान, बिशप, धर्मशास्त्री, राजसी सत्ता और उनके प्रतिनिधि (१४१४-१४१७) में एक सार्वजनिक महासभा 'काउँसिल औफ कॉन्सटैंस' में एकत्र हुए। उन्होंने तीनों पोपों को पदच्युत किया और मार्टीन ५ को नए पोप के रूप में चुना, जिसके कारण यह बड़ा विधर्म सफलतापूर्वक समाप्त हुआ।

काउँसिल औफ कॉन्सटैंस ने दृढ़ता पूर्वक कहा कि चर्च की सार्वजनिक महासभा को पोप से अधिक सर्वोच्च प्राधिकार है, वह पोप चुन सकती है और उनको पदच्युत भी कर सकती है और यह कि आगामी सभाएं नियत कालिक अंतराल में आयोजित की जाएं। इस प्रकार, उसने रोमी कैथलिक चर्च को संवैधानिक राजस्व की मान्यता देने का प्रयत्न किया। तो भी, सन १४३१ में अगली सभा के लिए जब प्रतिनिधि एकत्र हुए, जो बेसल स्विटज़रलैंड में आयोजित की गई, पोप ने बैठक स्थगित करने की कोशिश की। अंत में प्रतिनिधियों ने वहाँ से हटना अस्वीकार किया और पोप की अनुपस्थिति में सभा चलाई, परन्तु इससे कोई लाभ नहीं हुआ; और अंत में सन १४४९ में वे बरख़ास्त हो गए। संवैधानिक राजस्व को रोमी चर्च के अंदर संस्थापित करने की योजना व्यर्थ हो गई, और पोप के कार्यालय ने अपना प्राधिकार जो सन १३०९ में खो दिया था पुनः प्राप्त कर लिया।

पंद्रहवीं सदी में परिषदी आंदोलन के नेताओं ने एक प्रतिनिधि सभा बनाई जिसमें बिशप और सामान्य जनों को सर्वोच्च प्राधिकारी पद पर रखकर भ्रष्टाचारी पोप के कार्यालय का शोधन करने का प्रयास किया। तब भी, अंत में पोप ही अपना पूर्ण प्राधिकार जमाए रखने में सफल हुए, जैसे कि उन्हें निर्वासन के पहले से था। इसके अतिरिक्त, इन समितियों ने जॉन वाईक्लिफ (१३३०-१३८४) और जैन हस (१३७३-१४१५) के द्वारा प्रोत्साहित और अधिक मौलिक सुधार को रद्द किया, और उनको व्यक्तिगत रूप से काउँसिल औफ कॉन्सटेंस में उपस्थित होने के लिए आमंत्रित किया और फिर उन्हें जलाकर उनकी हत्या कर दी। इस घटना ने ईसाई धर्म-शोधन प्रोटेस्टेंट आंदोलन के बीज बोए और इसके शुरू होने का कारण बनी।

यह अवधि लगभग २१० वर्ष तक चली, सन १३०९ पोप के कार्यालय की एविंगटन में सत्तर वर्ष निर्वासन से लेकर, जटिल सांप्रदायिकता से होकर, परिषदी आंदोलन और रोमी चर्च में पोप के प्राधिकार

की पुनःस्थापना और अंततः सन १५१७ में मार्टीन लूथर के नेतृत्व के अंतर्गत ईसाई धर्म-शोधन प्रोटेस्टेंट आंदोलन के आरंभ होने तक चली। इसका उद्देश्य, इस्राएल के २१० वर्ष की अवधि के निर्वासन और वापसी—बेबीलोन में इस्राएल की सत्तर वर्ष के निर्वासन से लेकर लोगों का एक के बाद एक झुंडों में इस्राएल वापसी और मंदिर के पुनः निर्माण से लेकर एज्ऱा, नहेम्याह और भविष्यवक्ता मलाकी तक की अवधि को वास्तविक समानांतर काल के रूप में क्षतिपूर्ति द्वारा पुनःस्थापित करने के लिए था।

संभाग ६

मसीह के आगमन की तैयारी का काल और मसीह के दूसरे आगमन की तैयारी का काल

इस्राएल के निर्वासन और वापसी की अवधि के बाद, यीशु के आने तक और चार सौ वर्ष बीत गए। यह मसीह के आगमन की तैयारी की अवधि थी। उसी तरह, ईसाई धर्म को अगले चार सौ वर्ष की तैयारी के समय के बीतने के बाद, जो पोप के निर्वासन और वापसी की अवधि के बाद था, अपने दूसरे आगमन के मसीह से मिलना था। इसे मसीह के आगमन की तैयारी की अवधि को वास्तविक समानांतर के रूप में क्षतिपूर्ति द्वारा पुनःस्थापित करना चाहिए।

आदम से यीशु तक परमेश्वर की पुनरुद्धार की दैवी योजना के चार हज़ार वर्ष के दौरान, शैतान से अलग होने की अवधि के माध्यम से विश्वास की नींव को बहाल करने की व्यवस्था को शैतान ने अनेक बार दूषित किया, जिसकी वजह से लंब क्षतिपूर्ति की शर्तें संचित हो गईं थीं। मसीह के आगमन की तैयारी की अवधि दैवी इतिहास की अंतिम अवधि मानी जाती है, जिसमें यह सारी शर्तें क्षैतिज रूप से क्षतिपूर्ति द्वारा पुनःस्थापित होने वाली थीं। उसी तरह, मसीह के दूसरे आगमन की तैयारी की अवधि भी दैवी इतिहास की अंतिम अवधि मानी गई है, जब आदम के दिनों से लेकर सारी लंब क्षतिपूर्ति की शर्तें जो पुनरुद्धार की दैवी योजना के छः हज़ार वर्ष के इतिहास में संचित हुईं हैं, क्षैतिज रूप से पुनःस्थापित की गई हैं।

बेबीलोन के निर्वासन से लौटने के बाद, इस्राएलियों ने अपने मूर्तिपूजा के पापों का पश्चाताप किया और मंदिर का पुनः निर्माण करके,[७२९] जो राजा नबूकदनेस्सर ने नष्ट कर दिया था, मूसा के विधान के आधार पर एज्रा लेखक के मार्गदर्शन से अपने विश्वास का सुधार किया, इस तरह उन्होंने विश्वास की नींव स्थापित की।[७३०] तब वे भविष्यवक्ता मलाकी के वचन के अनुसार मसीह के आगमन की तैयारी में लग गए। उसी तरह, पोप के रोम लौटने के बाद, मध्यकालीन ईसाइयों ने रोमी चर्च में सुधार करने का प्रयास करके विश्वास की नींव स्थापित की, यह कोशिशें मार्टीन लूथर की अगुआई में प्रोटेस्टेंट धर्म-शोधन आंदोलन के साथ समाप्त हुईं। इस आंदोलन ने मध्यकालीन यूरोप के अंधकार को सुसमाचार की ज्योति से रोशन किया और विश्वास के नए पथ-प्रदर्शक का काम किया।

मसीह के आगमन की तैयारी की अवधि का एक और उद्देश्य याकूब की मिस्र में प्रवेश करने की तैयारी के लगभग चालीस वर्षों को छवि समानांतर के रूप में क्षतिपूर्ति द्वारा पुनःस्थापित करने के लिए था। उसके जीवन की यह अवधि हारान से कनान लौटने के बाद से उसके परिवार के साथ मिस्र में प्रवेश करने तक की थी। दूसरे आगमन के मसीह की तैयारी की अवधि वास्तविक समानांतर के रूप में क्षतिपूर्ति द्वारा इस अवधि को पुनःस्थापित करने के लिए थी। तदनुसार, इस अवधि में ईसाइयों को कष्ट और कठिनाइयाँ उठानी पड़ीं जैसे कि याकूब के परिवार ने उठाईं जबतक वे मिस्र में यूसुफ को नहीं मिले या

[७२९] एज्रा ३:७-१३ एज्रा ६:१-१५
[७३०] एज्रा ७:१-१० नहेम्याह ८

जैसे कि यीशु से मिलने से पहले यहूदियों ने उठाईं। विशेष करके, पुनरुद्धार की दैवी योजना के युग में, लोग बाह्य शर्तों के द्वारा जैसे कि मूसा के विधान पर चलने और बलिदान चढ़ाने के द्वारा परमेश्वर के सामने धर्मी ठहराए जाते थे। इसलिए, मसीह के आगमन की तैयारी की अवधि के दौरान, पहले इस्राएल को अन्य-जाति के देशों, फारस, यूनान, मिस्र, सीरिया और रोम के हाथों बाहरी कठिनाइयाँ और दुख उठाना पड़ा। पुनरुद्धार की दैवी योजना के प्रवर्धन के युग के दौरान, ईसाई लोग आंतरिक शर्तों के द्वारा जैसे यीशु की शिक्षाओं के अनुसार प्रार्थना और विश्वास के द्वारा, परमेश्वर के सामने धर्मी ठहराए जाते थे। अथवा, मसीह के दूसरे आगम की तैयारी की अवधि में, दूसरे इस्राएल को आंतरिक कष्टों के पथ पर चलना पड़ा। पुनर्जागरण मानववाद और प्रबोधन-काल की विचारधाराएं, और धार्मिक स्वतंत्रता की मांग जो ईसाई धर्म-शोधन आंदोलन से उठी, इन सब दर्शनों और विचारधाराओं की प्रचुरता के कारण ईसाई धर्म में काफी भ्रांति फैली और लोगों के आत्मिक जीवन में बड़ी खलबली सी मची।

मसीह के दूसरे आगमन की तैयारी की अवधि, उसके विश्वव्यापी स्वागत के लिए आत्मिक तैयारी और बाह्य वातावरण को वास्तविक प्रकार की समानांतर क्षतिपूर्ति की शर्तों के द्वारा, जो पहले चार सौ वर्ष की अवधि के दौरान स्थापित की गईं थीं, पुनःस्थापित कर रही है।

मसीह के पहले आगमन की तैयारी में, परमेश्वर ने ४३० वर्ष पहले अपने चुने हुए लोगों के दिलों में तीव्र मसीही प्रत्याशा जाग्रत करने के लिए मलाकी भविष्यवक्ता को भेजा। उसी समय, मसीह को ग्रहण करने की आंतरिक तैयारी करने के लिए परमेश्वर ने यहूदियों को अपने धर्म में सुधार लाने और अपने विश्वास को और गहरा करने के लिए उत्साहित किया। इसी दौरान, परमेश्वर ने दुनिया के लोगों में उनके क्षेत्र और संस्कृति के अनुकूल अनेक धर्म संस्थापित किए, जिससे वे मसीह को ग्रहण करने के लिए आंतरिक तैयारी कर सकें। भारतवर्ष में परमेश्वर ने हिंदु धर्म में से नए विकास के रूप में सन ५६५-४८५ ई.पू. गौतम बुद्ध के द्वारा बौद्ध धर्म स्थापित किया। यूनान में, परमेश्वर ने सन ४७०-३९९ ई.पू. में सुकरात को प्रभावित कर के एक प्रतिभाशाली शास्त्रीय यूनानी सभ्यता के युग का आरंभ किया। दूरतम पूर्व में परमेश्वर ने सन ५५२-४७९ ई.पू. कन्फ्यूशियस को उठाया, जिसकी कन्फ्यूशीवाद की शिक्षा ने मानवीय आचारनीति का मानक स्थापित किया। यीशु, इस विश्वव्यापी तैयारी की नींव पर आनेवाला था, और उसकी शिक्षा के द्वारा वह यहूदी धर्म, यूनानी विचारधारा, बौद्ध धर्म और कन्फ्यूशियस धर्मों को एक साथ एक रास्ते पर लाने वाला था। वह ईसाई सुसमाचार के आधार पर सब धर्मों और सभ्यताओं को एक विश्वव्यापी सभ्यता के रूप में संगठित करने वाला था।

पुनर्जागरण के समय से परमेश्वर, धार्मिक, राजनीतिक और अर्थशास्त्री वातावरण जो दूसरे आगमन के मसीह के कार्य में सहायक हो, बना रहा है। यह युग पहले की अवधि को, जब परमेश्वर ने यीशु के आगमन लिए विश्वव्यापी वातावरण तैयार किया था, वास्तविक समानांतर काल के रूप में क्षतिपूर्ति द्वारा पुनःस्थापित करने का युग रहा है। पुनर्जागरण से आरंभ हो कर मानव प्रयास के वस्तुतः हर क्षेत्र में, राजनीति, अर्थनीति, सभ्यता और विज्ञान, बड़ी तेज़ी से उन्नति हुई है। आज, यह सभी क्षेत्र अपनी पराकाष्ठा पर पहुँच गए हैं और एक ऐसे विश्वीय वातावरण का निर्माण हुआ है जो मसीह के कार्य में सहायक होगा। यीशु के दिनों में, रोमी राज्य भूमध्यसागर के चारों ओर विशाल शासन-क्षेत्र में फैला

हुआ था, जो एक अग्रवर्ती और विशाल परिवहन योजना के द्वारा संकलित सब दिशाओं में जाता था। यह यूनानी भाषा पर आधारित विशाल यूनानी सभ्यता का केन्द्र था। इस प्रकार, इस्राएल से, जहाँ यीशु रहता था, मसीह की शिक्षा का रोम और दुनिया भर में शीघ्रगामी प्रसारण के लिए सभी आवश्यक तैयारियाँ हो चुकीं थी। इसी प्रकार, दूसरी आगमन के वर्तमान काल में पश्चिमी शक्तियों की प्रभावशीलता से प्रजातांत्रिक राजनीतिक क्षेत्र दुनिया भर में प्रसारित हो गया है। परिवहन और संवाद की तीव्र प्रगति ने पूर्व और पश्चिम का अंतर बहुत ही कम कर दिया है, और भाषाओं और सभ्यताओं में आपस के संपर्क की अत्यधिक बढ़ती ने दुनिया में लोगों को एक दूसरे के समीप कर दिया है। इन कारकों ने पुनरागमन के मसीह की शिक्षा को स्वतंत्रतापूर्वक और तीव्रता से सकल मानवता के दिलों तक पहुँचाने के लिए पूरी तरह से वातावरण तैयार कर दिया है। यह उनकी शिक्षा को पूरी दुनिया में तीव्र और गहन परिवर्तन लाने में सक्षम करेगा।

संभाग ७

पुनरुद्धार की दैवी योजना और इतिहास की प्रगति

पृथ्वी पर स्वर्ग का राज्य एक समाज के समान है जिसकी संरचना पूर्ण व्यक्ति की प्रतिमा के रूप में की गई है।[७३१] उसी प्रकार यह माना जा सकता है कि पतित समाज पतित व्यक्ति की समानता में है। हम पतित व्यक्ति के आंतरिक जीवन की जांच करके मानवता द्वारा निर्मित समाजों के इतिहास को और अधिक अच्छी तरह समझ सकते हैं।

एक पतित व्यक्ति के पास दो मन होते हैं, एक मौलिक मन, जो उसे अच्छाई का अनुसरण करने के लिए उत्साहित करता है, और एक बुरा मन, जो उसे बुरी लालसाओं से भर देता है और मौलिक मन के प्रोत्साहन का विरोध करता है। इसमें कोई भी शक नहीं है कि दोनों मन आपस में लगातार संघर्ष करते रहते हैं और हमें परस्पर विरोधी स्वभाव की ओर झुकाते हैं। चूँकि मानव समाज में संघर्ष लगातार लोगों के अंदर होता रहता है, इसलिए, उनके बीच का वार्तालाप भी विसंगति और संघर्ष के अतिरिक्त और कुछ नहीं हो सकता। मानव इतिहास संघर्ष से ग्रस्त सामाजिक संबंधों से भरा है जो समय के साथ लगातार बदलता रहता है। इसलिए, यह अनिवार्यतः लड़ाई-झगड़े और युद्ध में व्यक्त होता आया है।

तथापि, मौलिक मन और बुरे मन के बीच लगातार संघर्ष होने के बावजूद भी लोग हमेशा बुराई का प्रतिरोध करते हैं और अच्छाई के रास्ते पर चलने की कोशिश करते हैं। क्योंकि जैसे-जैसे वे अपने प्रयासों में सफल होते हैं उनकी कोशिशें भले कामों में फलवान होती हैं। उनके अंदर मौलिक मन की गतिविधि के कारण, एक पतित व्यक्ति भी अच्छाई के लक्ष्य को बढ़ावा देने के लिए परमेश्वर के पुनरुद्धार की दैवी योजना के साथ सहभागी हो सकता है। इस तरह, इतिहास की प्रगति उन व्यक्तियों से आरंभ होती है जो, भले और बुरे की भँवर के बीच में भी, बुराई को त्यागने और अच्छाई का समर्थन करने के लिए दृढ़ प्रयत्न करते हैं। अतएव, यह दुनिया जिस इतिहास की ओर प्रगति कर रही है वह स्वर्ग का राज्य है, जहाँ अच्छाई का लक्ष्य साधित किया जाएगा।

हमें यह समझना चाहिए कि इस अंतिम लक्ष्य की तलाश में संघर्ष और युद्ध अंतरिम घटनाएं हैं जो भलाई को बुराई से अलग करने के लिए होतीं हैं। भले ही बुराई कभी-कभी जीतती है, परमेश्वर उसका उपयोग इतिहास को और अधिक अच्छाई की पूर्ति की ओर बढ़ाने के लिए करता है। इस संबंध से, हम यह समझ सकते हैं कि पुनरुद्धार की दैवी योजना के अनुसार अच्छाई की ओर इतिहास की प्रगति अच्छाई को बुराई से लगातार अलग करने की प्रतिक्रिया से होती है।

इसी दौरान, पहले मानव के साथ रक्त-संबंध स्थापित करने के कारण, शैतान ने पतित लोगों के माध्यम से, जिस आदर्श समाज को परमेश्वर ने साकार करने का इरादा किया था, उसको परमेश्वर से पहले ही एक विकृत रूप में संगठित करने का काम किया है। परिणामस्वरूप, हमने मानव इतिहास में विकृत आदर्शों के आधार पर बनाए गए सिद्धांतहीन समाजों का उत्थान होते देखा है। मानव इतिहास के अंत में, इससे पहले कि परमेश्वर स्वर्ग का राज्य पुनःस्थापित करे, शैतान स्वर्ग के राज्य की विकृत प्रतिमा

---

[७३१] प्रति-संदर्भ—सृष्टि ३:२

की सिद्धांतहीन दुनिया बनाएगा: यह दुनिया और दूसरी कोई नहीं बल्कि साम्यवादी दुनिया है। यह एक उदाहरण है कि शैतान, जिसने इतिहास को स्वयं आरंभ करने का अधिकार हथिया लिया था, किस तरह परमेश्वर से पहले उसकी योजनाओं की नकल करता है। पुनरुद्धार की दैवी योजना के दौरान, सत्य के प्रगट होने से पहले उसकी समानता में एक झूठी प्रतिछाया प्रगट होती है।[७३२] यीशु ने यह भविष्यद्वाणी की, कि मसीह के दूसरे आगमन[७३३] से पहले झूठे मसीह प्रगट होंगे, यह नियम के इस पहलू से स्पष्ट किया जा सकता है।

७.१ पुनरुद्धार की दैवी योजना में इतिहास की प्रगति

कुछ इतिहासकारों की धारणा के अनुसार पतित लोगों का बनाया गया पहला समाज आदिकालीन सामूहिक समाज था। परमेश्वर की दैवी योजना के दृष्टिकोण से, आदिकालीन सामूहिक समाज जो पतित लोगों ने बनाया था वह शैतान पर केन्द्रित था। भले ही, शैतान ने ऐसा सामूहिक समाज, जिसमें लोग अपनी वस्तुएं दूसरों के साथ बांट सकें, बनाने का प्रयत्न किया होगा, फिर भी वह परमेश्वर के इच्छित समाज का एक दोषपूर्ण प्रतिरूप ही होता। जो समाज परमेश्वर, निष्कलंक आचरण के लोगों के द्वारा बनाना चाहता है: वह अन्योन्याश्रितता, पारस्परिक-समृद्धि और सार्वभौम सहभाजी मूल्य के द्वारा चित्रण किया जाता है। इस शैतानी आदिकालीन समाज का रूप चाहे कैसा ही क्यों न हुआ हो, वह संघर्ष और फूट से वंचित नहीं था। यदि ऐसा न होता, तो वह बिना बदले सदैव स्थाई रहता, और परमेश्वर की पुनरुद्धार की दैवी योजना कभी पूर्ण नहीं हो पाती।

वास्तव में, पतित व्यक्ति के दो मनों के बीच का प्रतिद्वंद्व आंतरिक संघर्ष को बढ़ावा देता है जो उसके कामों में प्रगट होता है और उसे दूसरों के साथ लड़ाई-झगड़ा करने के लिए विवश करता है। इसलिए, शैतानी आदिकालीन समाज अपने सामूहिक जीवन के लक्ष्य को कभी बरकरार नहीं रख सका और ना ही शांति बनाए रख सका। जैसे-जैसे आदिकालीन समाज अलग-अलग अर्थशास्त्री और सामाजिक संबंधों के साथ बड़े पैमाने के समाजों में विकसित हुए, अनिवार्यतः उनके साथ-साथ यह प्रतिद्वंद्व तदनुसार विकसित होते गए। मौलिक मन की गतिविधि के कारण जो लोगों को परमेश्वर के पुनरुद्धार की दैवी योजना की ओर बुलाता है, शैतान की प्रभुता के अधीन आदिकालीन समाजों में आपेक्षिक अच्छाई और बुराई के बीच विभाजन अवश्य उठे।

जब हम शैतान के मार्गदर्शन के अंतर्गत सामाजिक विकास के दौर की जाँच करते हैं, हम देखते हैं कि आदिकालीन समाजों में लोगों के बीच मतभेद के परिणाम से कबीला समाज निकले हैं। इन समाजों ने क्षेत्र में विस्तार करना शुरू किया, कबीले समाज फैल कर सामंतवादी समाजों में और बाद में अपने प्रभाव और क्षेत्रों को और बढ़ा कर राजसी समाजों में बदल गए। शैतान ने इस नमूने को पहले ही हथिया लिया, क्योंकि उसने परमेश्वर की योजना को पहले ही से जान लिया था कि वह पतित संसार से अच्छे व्यक्तियों को बुलाकर उनसे अच्छे कबीले समाज को फैलाने वाला है, तब अच्छे सामंतवादी समाज को

---

[७३२] प्रति-संदर्भ—तैयारी ३:२, तैयारी ४:१

[७३३] मत्ती २४:२३-२४, १ यूहन्ना २:१८

बढ़ाएगा और अंत में अच्छे साम्राज्य के स्तर तक पहुँचाएगा, जो क्षेत्र और राजकीय सत्ता के महत्व से मसीह के आने और उसके कार्य को पूरा करने के लिए यथेष्ट हो।

परमेश्वर ने अब्राहम को पतित संसार में से चुनकर बुलाया ताकि वह अच्छाई का मान-धारक हो और उसे उसके वंश के साथ, जो उस की इच्छा की पुष्टि करेंगे, आशीष दी। परमेश्वर ने अब्राहम के वंश को पहले इस्राएली गोत्र समाज के रूप में बढ़ाया। उन्होंने मिस्र में गोत्र के रूप में प्रवेश किया, परन्तु जब उन लोगों ने मिस्र छोड़ा और कनान जाने के लिए रवाना हुए तब तक वे जनजातीय समाज के रूप में बढ़ गए थे। न्यायियों की अवधि में इस्राएली समाज सामंतवादी समाज बन गया था। इस चर्चा में सामंतवादी समाज वह समाज है जिसकी राजनीतिक व्यवस्था मालिक और नौकर, सेवा और आज्ञापरता के रूप में बताई गई है, और अर्थशास्त्री व्यवस्था अलग-अलग बिखरे हुए क्षेत्रों में स्वावलंबी टुकड़ियों से बनी है। न्यायियों की अवधि में, इस्राएली समाज की ऐसी विशेषताएं थीं। जब इस्राएली लोगों ने कनान में प्रवेश किया, तो प्रत्येक गोत्र को भूमि का एक हिस्सा बांटा गया। न्यायी लोग जो इन राज्य क्षेत्रों का प्रशासन करते थे वे, प्रारंभिक मध्यकालीन यूरोप में जैसे बिशप और सामंतवादी स्वामी हुआ करते थे, उसी हैसियत से कार्य करते थे।

सामंतवादी समाज के लोगों की ऐसी प्रवृत्ति है कि उसके लोग अपने स्वामी की धारणाओं को मान्यता देते हैं और उसकी आज्ञाओं का पालन करते हैं। जब तक स्वामी परमेश्वर की इच्छाओं के लिए वफादार रहता है, उसके लोग जो उसके पीछे चलते हैं और परमेश्वर के पक्ष में खड़े होते हैं। स्वामी और सेवक के संबंध के आधार पर बने हुए समाज में और मुख्य रूप से बाहरी दुनिया से वियुक्त स्वावलंबी अर्थनीति पर आश्रित राजनीतिक व्यवस्था में रहने के कारण उनमें बाहर से शैतान के आक्रमणों को झेलने की पर्याप्त क्षमता होती है। गोत्र समाज का सामंतवादी समाज में विकसित होने का मुख्य कारण यह है कि लोग और उनकी संपत्ति, जो पहले शैतान के कब्ज़े में थी, वापस परमेश्वर के अधिकार में आए। परमेश्वर की प्रभुता के नीचे क्षेत्र को विस्तृत करने से, वे शैतान के हमले से अधिक सुरक्षित रहते हैं। इस दैवी योजना को समझ कर शैतान ने अपने शासन को सुरक्षित रखने के लिए कई शताब्दी पहले से ही अपना सामंतवादी समाज स्थापित करने का प्रयास किया।

प्रारंभिक इस्राएल के सामंतवादी समाज का दैवी उद्देश्य, राजकीय समाज के लिए बड़े क्षेत्र के साथ अधिक शक्तिशाली साम्राज्य की नींव स्थापित करने के लिए था। राजतंत्रवादी समाज ने, छोटी राजनीतिक और आर्थिक सत्ताओं को जो पहले के सामंतवादी समाज के हाथों में थी और जो बड़ी जन-समुदाय वाली मज़बूत अर्थव्यवस्था और भली भाँति रक्षित थीं, उन्हें एक क्षेत्र में मिला दिया। इस्राएल का यह संयुक्त राज्य राजा शाऊल ने स्थापित किया था।

यीशु राजाओं का राजा बन कर आनेवाला था।[७३४] परमेश्वर ने उसे मसीह और राजाओं के राजा के रूप में आ कर राज्य करने के लिए इस्राएल में राजतंत्रवादी समाज की मज़बूत नींव तैयार की।

इससे बहुत पहले, शैतान ने दैवी योजना समझ कर कि मसीह की आमद राजकीय सत्ता में होगी

---

[७३४] प्रकाशितवाक्य ११:१३

उसने परमेश्वर की दैवी योजना में बाधा डालने के लिए स्वयं अपने बहुत से राजकीय समाज बना लिए थे। इस्राएल के संयुक्त राज्य की स्थापना से बहुत सी सदियों पहले, मिस्र का पहला राजवंश स्थापित हो गया था, और मिस्र में फिरौन का राज्य लगभग तीस राजवंश तक चलता रहा। प्राचीन बेबीलोन के राज्य ने समस्त मेसोपोटामिया पर राजा हमुराबी के राज्य के दौरान ईसा पूर्व अठारहवीं सदी में राज्य किया, और हित्तियों ने ईसा पूर्व चौधवीं सदी में सीरिया के नज़दीकी पूर्व के अधिकतम क्षेत्रों में राज्य किया। शैतानी दुनिया में भी, आपेक्षित अच्छे राज्यों और आपेक्षित बुरे राज्यों के बीच लगातार युद्ध होता रहा था, यह अच्छे को बुरे में से अलग करने में परिणामी हुआ। अच्छाई की ओर यह अभियान मौलिक मन में जड़ा हुआ है, जो परमेश्वर के पुनरुद्धार की दैवी योजना की पुकार को प्रत्युत्तर देता है।

यदि राजा सुलेमान अंत तक परमेश्वर की इच्छा पर चला होता, तो वह परमेश्वर की दी हुई राजनीतिक प्रवीणता का प्रयोग करके करीबी पूर्वी देशों को संगठित कर लेता। वह मिस्री, मिनोआ और मेसोपोटामिया की सभ्यताओं को, जो उस समय कमज़ोर थीं आत्मसात कर सकता था। इस तरह वह सार्वभौमिक साम्राज्य बना सकता था जिस में मसीह आ सकता था और पृथ्वी पर परमेश्वर का राज्य साकार कर सकता था। दुर्भाग्यवश, सुलेमान मूर्तिपूजा में पड़ गया। फलस्वरूप, परमेश्वर को अपनी व्यवस्था दुबारा शुरू करने के लिए बड़े दुख के साथ राजकीय समाज को, जिसे उसने बड़े दुख से बनाया था, विघटित करना पड़ा।

चूँकि इस्राएल के संयुक्त राज्य के राजाओं ने मसीह के लिए नींव नहीं डाली, और ना ही उन्होंने वह मूल-कार्य जिसपर परमेश्वर अपना राज्य पुनःस्थापित कर सकता था पूरा किया, इसलिए अंत में परमेश्वर ने राज्यों को दो भागों में बांट दिया: उत्तर में इस्राएल और दक्षिण में यहूदा। जब वे परमेश्वर के विरोध में सतत पाप करते रहे तो परमेश्वर ने उत्तरी राज्य को असीरया के हाथों में देकर बरबाद कर दिया। असीरिया के लोगों ने ईसा पूर्व आठवीं सदी में पहला विश्व साम्राज्य बनाने के लिए मिस्र समेत समस्त प्राचीन करीबी पूर्व देशों को जीत लिया। यहूदा के राज्य ने उस समय परमेश्वर की इच्छा को बरकरार रखा, पर बाद में उसके विरोध में बग़ावत की। इसलिए, परमेश्वर ने उन्हें नए-बेबीलोन के साम्राज्य के हाथों में कर दिया, जो असीरिया की जगह पर दूसरा विश्व साम्राज्य बना।

यहूदा के पतन के पश्चात, परमेश्वर ने इस्राएल की राजगद्दी खाली रखी और यहूदियों को, उस अवधि के अधिकतम समय तक जो मसीह के आगमन तक थी, अन्य जातियों के क्रमागत साम्राज्य के अधीन रखा। विशेषतः, परमेश्वर ने उन्हें यूनानी सांस्कृतिक क्षेत्र में रखा, जिन्होंने लोकतंत्र की वैचारिक रूपरेखा की नींव डाली। परमेश्वर ने इस्राएल के समाज को प्रजातंत्र के रूप में ढाला, ताकि जब मसीह आए तो प्रजा के लोगों की पूर्ण इच्छानुसार, उसका अभिवादन राजा के रूप में हो सके। परंतु यहूदी लोगों ने यीशु को ऊँचा उठा कर उसका स्वागत नहीं किया। प्रजा के समर्थन के बिना उसे सूली पर चढ़ा दिया गया। परिणामस्वरूप, दैवी योजना का उद्देश्य, जो दो हज़ार वर्ष पहले अब्राहम और उसके वंशज को पतित संसार से बाहर निकालने के बुलावे से शुरू हुई था, केवल आत्मिक रूप से प्राप्त हुआ।

७.२ पुनरुद्धार की दैवी योजना के प्रवर्धन के युग में इतिहास की प्रगति

७.२.१ पुनरुद्धार की दैवी योजना और पश्चिमी देशों का इतिहास

रोमी राज्य, जिसने ईसाइयों को सताया था, अंत में चौथवीं सदी में सूली पर चढ़े यीशु के आगे झुक गया और ईसाई मत को राष्ट्रीय धर्म की मान्यता दी। हालाँकि, रोमी राज्य का मूल दैवी कृत्य, जिसने भूमध्य सागर के चारों ओर की प्राचीन दुनिया को संगठित किया था, पृथ्वी पर मसीह के राज्य की नींव डालना था। यदि यहूदी लोगों ने यीशु को मसीह मानकर उसपर विश्वास किया होता और उसके साथ एक हो जाते, तो रोमी राज्य यीशु के जीवनकाल ही में जीता जा सकता था और यीशु सारे साम्राज्य में राजाओं के राजा के रूप में सम्मानित किया गया होता। और उसने विश्वव्यापी साम्राज्य, जिसकी राजधानी यरूशलेम होती, स्थापित कर लिया होता। परंतु, चूँकि यहूदियों ने अविश्वास किया, इसलिए यहूदिया बरबाद किया गया और रोमी राज्य का अस्तगमन दैवनिर्दिष्ट हो गया। लगभग एक सदी के लगातार अशिष्ट लोगों के आक्रमणों के कारण पश्चिमी रोमी साम्राज्य का सदी ४७६ ई. में सूर्यास्त हो गया।

इस प्रकार से, परमेश्वर की पुनरुद्धार की दैवी योजना का केन्द्र यहूदिया, परमेश्वर के दुख की भूमि, से स्थानांतरित हो कर पश्चिमी यूरोप हो गया, जो पहले पश्चिमी रोमी साम्राज्य का क्षेत्र था, पर अब जर्मन जनजाति के कब्ज़े में है। तदनुसार, ईसाइयत पर आधारित पुनरुद्धार की आत्मिक दैवी योजना मुख्यतः पश्चिमी यूरोप में संचालित हुई। केवल पश्चिमी यूरोप में ही पुनरुद्धार की दैवी योजना द्वारा निर्धारित नमूने के अनुसार इस युग के इतिहास ने दृढ़ता से प्रगति की।[७३५] पश्चिमी यूरोप का ईसाई इतिहास हमें उन घटनाओं की जानकारी देता है जिनके द्वारा पुनरुद्धार की दैवी योजना के प्रवर्धन का युग बना है।

७.२.२ धार्मिक इतिहास, आर्थिक इतिहास और राजनीतिक इतिहास के बीच पारस्परिक संबंध

आत्मालोक और पृथ्वी लोक दोनों पर राज्य करने के लिए परमेश्वर ने मनुष्य को आत्मिक देह और भौतिक देह के द्वैत अस्तित्व के रूप में रचा है।[७३६] यदि मनुष्यों का पतन नहीं हुआ होता, उनकी आत्मिक देह और शरीर दोनों ने एक साथ पूर्णता प्राप्त कर ली होती। उनकी आत्मिक बुद्धि और शारीरिक बुद्धि उनके जीवनकाल ही में पूर्ण सामंजस्य के साथ आपस में मिल जातीं। मनुष्य के पतन के पश्चात जब वे दोनों आत्मिक और शारीरिक दुनिया के ज्ञान से अनभिज्ञ हो गए, परमेश्वर ने आत्मिक अनभिज्ञता को धर्म के द्वारा और भौतिक अनभिज्ञता को विज्ञान के द्वारा जीतने का प्रयास किया।[७३७]

धर्म ने पतित लोगों के निष्क्रिय मौलिक मन को प्रोत्साहन द्वारा सक्रिय करके उनकी आत्मिक अनभिज्ञता को क्रमशः वशीभूत करने में सहायता की। वह लोगों को सिखाता है कि वे अपने जीवन में

---

[७३५] इसी प्रकार, ऐतिहासिक विकास का दौर, जैसा कि मार्क्सवादी सिद्धांत के ऐतिहासिक भौतिकवाद में चर्चा की गई है, यह केवल पश्चिमी यूरोप के इतिहास के लिए ही उचित है।

[७३६] प्रति-संदर्भ—सृष्टि ६.२

[७३७] अंतिम दिन संबंधी उपदेश ५:१

अदृश्य वस्तुओं, परमेश्वर की कारणात्मक दुनिया पर ध्यान दें। चूँकि हर किसी को धर्म की तुरन्त आवश्यकता महसूस नहीं होती, कुछ ही विशिष्ट लोग आत्मिक ज्ञान शीघ्रता से प्राप्त कर पाते हैं। अधिकतम लोगों के लिए आत्मिक संवृद्धि धीमी प्रतिक्रिया होती है। हम आज भी इस बात को इस तथ्य से समझ सकते हैं, हालाँकि धर्म आज सारी दुनिया में व्यापक हैं तो भी लोगों का आत्मिक स्तर प्राचीन काल के लोगों से अधिक अच्छा नहीं है।

अपितु, विज्ञान के अन्वेषणों से तो हर कोई परिचित है, जिससे हमारे भौतिक दुनिया के ज्ञान को बहुत बढ़ावा मिला है। चूँकि विज्ञान वास्तविक वस्तुओं से व्यवहार करता है, इसलिए सभी को इसकी अधिक आवश्यकता महसूस होती है। इस प्रकार, मनुष्य के भौतिक दुनिया के ज्ञान में वृद्धि प्रायः बड़े पैमाने पर और अधिक तेज़ी से होती है। इसके अतिरिक्त, जबकि धार्मिक अध्ययन की विषय वस्तुएं, अमूर्त गूढ़ कारण की उत्कृष्ट दुनिया से संबंध रखती है, वैज्ञानिक खोज परिणामी दुनिया में मूर्त भौतिक वस्तुओं की जाँच करता है। अतः, आज तक धर्म और विज्ञान सैद्धांतिक रूप से परस्पर-विरोधी रहे हैं। इसके अलावा, क्योंकि शैतान समस्त विश्व पर राज्य करता है, और दुनिया में लोगों पर आजीवन हमला करता रहता है और उन्हें विकृत करता है, जबकि धर्म लोगों को दुनिया नकारना सिखाता है। इस कारण, धर्म आसानी से विज्ञान के साथ सामंजस्य स्थापित नहीं कर सकता है, जो दुनिया में जीवन को बेहतर बनाना चाहता है। हम यह जानते हैं कि आरंभ में परमेश्वर ने मनुष्य में उसकी अंदरूनी आत्मा डालने से पहले उसका शरीर पहले बनाया।[७३८] पुनरुद्धार की दैवी योजना भी जो पुनः निर्माण का कार्य है, उसी नमूने पर चलती है, बाहर से अंदर। इस दैविक दृष्टिकोण से यह स्पष्ट है कि उनके विकास के दौरान धर्म और विज्ञान के बीच आपस में बहुधा विवाद और संघर्ष तक होता है।[७३९]

वही मतभेद लोगों के धार्मिक और आर्थिक जीवन के संबंध में भी पाया जाता है। विज्ञान की तरह, आर्थिक गतिविधियाँ वास्तविक दुनिया से वास्ता रखती है। निःसंदेह, आर्थिक उन्नति का विज्ञान के विकास के साथ करीबी रिश्ता है। तदनुसार, धार्मिक इतिहास परमेश्वर की दैवी योजना के आंतरिक विकास के आधार पर, और अर्थशास्त्री इतिहास दैवी योजना के बाह्य विकास के आधार पर विभिन्न दिशाओं में बढ़े हैं, और अलग-अलग अनुपात में उन्नत हुए हैं। इसलिए, पश्चिम के इतिहास की प्रगति समझने के लिए, जिसने परमेश्वर के पुनरुद्धार की दैवी योजना द्वारा नियत नमूने का अनुकरण किया है, हमें ईसाई मत के इतिहास और पश्चिम के आर्थिक इतिहास की अलग-अलग जाँच करनी चाहिए।

जैसा संबंध धर्म और विज्ञान के बीच होता है, उसी तरह धर्म और अर्थव्यवस्था भी पतित लोगों के जीवन के आंतरिक और बाह्य पहलू को पुनःस्थापन के उत्तरदायित्व से संबंध रखते हैं। यद्यपि धर्म और अर्थव्यवस्था, धर्म और विज्ञान की तरह एक-दूसरे के साथ रद्दोबदल करते प्रतीत होते हैं, वे समाज के जीवन से संबंधित हैं। इस प्रकार, ईसाई मत का इतिहास और आर्थिक इतिहास परस्पर एक दूसरे से थोड़ा बहुत प्रभावित हुए हैं। धर्म और अर्थव्यवस्था, समाज में राजनीति के द्वारा हमारे जीवन से जुड़े हुए

[७३८] उत्पत्ति २:७
[७३९] प्रति-संदर्भ—तैयारी १

हैं। विशेष करके पश्चिमी यूरोप में राजनीति ने, ईसाई धर्म के पथ के साथ जिसमें बहुधा दैवी निर्देशों के विषय में स्पष्ट बोध का अभाव रहा है, आर्थिक विकास को जोड़ने की मांग की है। पश्चिमी राजनीतिक इतिहास ने एक ऐसा रास्ता अपनाया है जो धर्म और अर्थनीति के बीच सामंजस्य स्थापित करता है। इसलिए, इतिहास की प्रगति को ठीक से समझने के लिए, जैसे-जैसे वह पुनरुद्धार की दैवी योजना की ओर बढ़ती है, हमें अलग से राजनीति के इतिहास को भी जांचना चाहिए।

धार्मिक, राजनीतिक और आर्थिक विकास के दौर ने अलग-अलग कैसे प्रगति की है, एक उदाहरण के रूप में आइए हम सत्रहवीं शताब्दी के अंत के दौरान की पश्चिमी यूरोप की ऐतिहासिक स्थिति का रेखाचित्र बनाएं। धर्म के इतिहास के संबंध में, इस अवधि की ईसाइयत में लोकतांत्रिक मूल्यों ने पहले ही जड़ पकड़ ली थी। पोप के शासन के तहत ईसाई धर्म की राजशाही राजनीति, १५१७ में प्रोटेस्टेंट धर्म-शोधन-अभियान के साथ खंडित हो गयी थी। मध्ययुगीन काल में यूरोप के लोगों के उपासना का जीवन पोप के पदानुक्रम के अधीन था, वे धीरे-धीरे स्वयं बाईबल पढ़ कर ईसाई जीवन जीने के लिए स्वतंत्र रूप से मुक्त हो गए। इस अवधि की राजनीति के संबंध से पूर्ण राजशाही अपनी ऊंचाई पर थी। आर्थिक रूप से, जागीर प्रणाली पर आधारित सामंती समाज यूरोप के कई हिस्सों में जारी रहा। इस प्रकार, एक ही यूरोपीय समाज, धार्मिक जीवन के संबंध से लोकतांत्रिक बनता जा रहा था, जबकि राजनीतिक जीवन के संबंध से राजशाही और आर्थिक जीवन के संबंध में सामंती बनता जा रहा था।

हमें यह भी स्पष्ट करना चाहिए कि पुराने नियम के अधिकांश युग के इतिहास का विकास अलग-अलग विकास की इस पद्धति से क्यों नहीं देखा गया था। प्राचीन इस्राएल में विज्ञान की प्रगति बहुत ही मंद थी। इसलिए उनके आर्थिक जीवन का विकास नहीं हुआ, और उनके समाज में बहुत थोड़ी विशेषज्ञता थी। लोग एक सामाजिक व्यवस्था के अंतर्गत साधारण सा जीवन व्यतीत करते थे जिसमें धर्म उनके दैनिक जीवन का अनिवार्य भाग था। मूसा के कानून स्वामी और दास के संबंध के सख़्त नियम से बाध्य, उन्हें अपने नेताओं का दोनों धार्मिक और राजनीतिक मामलों में आज्ञा पालन करना पड़ता था। उस युग में धर्म, राजनीति और अर्थनीति की उन्नति अलग-अलग नहीं हुई।

७.२.३ परिजन समाज

आइए हम धर्म, राजनीति और अर्थनीति के संबंध से नए नियम के दौरान के युग के इतिहास की प्रगति की जाँच करें। परमेश्वर की पुनरुद्धार की दैवी योजना के अनुकूल मौलिक मन का झुकाव साधारणतः शैतान पर केन्द्रित समाज में विभाजन लाता है। जो लोग परमेश्वर की इच्छा का अनुकरण करते हैं वे इस प्रक्रिया में अकेले पड़ जाते हैं और परमेश्वर के पक्ष में एकत्र होकर कभी-कभी एक परिजन समाज बना लेते हैं। ईसाई परिजन समाज की उत्पत्ति इस नमूने पर हुई। यीशु को क्रूस पर चढ़ाने के बाद यहूदी राष्ट्र शैतान के कब्ज़े में आ गया, ऐसी परिस्थितियों में परमेश्वर उस समाज में अपनी पुनरुद्धार की दैवी योजना जारी नहीं रख सका। फलस्वरूप, परमेश्वर ने वह समाज नष्ट कर दिया, और उनमें से धर्मनिष्ठ विश्वासियों को ईसाई समाज स्थापित करने के लिए बुलाया।

पुराने नियम के युग की इस दैवी योजना में याकूब के बारह पुत्र अपने सत्तर बंधुओं के साथ इस्राएली परिजन समाज बनाने के लिए चल पड़े। उसी प्रकार, नए नियम के युग में, यीशु के बारह शिष्यों ने ईसाई परिजन समाज बनाने के लिए अपने सत्तर अनुयायियों का नेतृत्व किया और परमेश्वर की नई दैवी योजना का आरंभ किया। ईसाई परिजन समाज अल्पसंख्य सम्प्रदायों से बना था जिनकी कोई संरचित राजनीतिक या आर्थिक व्यवस्था नहीं थी। इस अवधि में धर्म, राजनीति और अर्थव्यवस्था की प्रगति स्वतंत्र रूप से नहीं हुई।

अत्यधिक अत्याचार के बावजूद भी, ईसाई परिजन समाज रोमी साम्राज्य में भूमध्यसागर के इर्द-गिर्द यथाक्रम उन्नति करता रहा और ईसाई जनजातीय समाज में विकसित हो गया। चौथी शताब्दी के उत्तरार्ध में शुरू हुए जन प्रवास से क्षतिग्रस्त, पश्चिमी रोमन साम्राज्य ४७६ ईसवी में नष्ट हो गया। जब जर्मनी के लोग इस क्षेत्र में आकर बस गए तो उनका परिचय ईसाई धर्म से हुआ, जिससे ईसाई समाज और प्रसारित हुआ।

७.२.४ सामंतवादी समाज

इतिहास की प्रगति के साथ, परिजन समाज सामंतवादी समाज में विकसित हुआ। यूरोप में, रोमी राज्य के पतन के समय जब शाही प्राधिकरण क्षीण हो गया और साम्राज्य अराजकता में डूब गया, सामंतवादी समाज पैदा हुआ। इस समाज में अंततः धर्म, राजनीति और अर्थनीति विभाजित होंगे और अलग-अलग रास्तों पर चलेंगे।

सामंतवादी समाज के शुरू के दिनों में, विशेष करके जर्मन जनजाति के बीच नए-नए ईसाई बने हुए लोग, स्वतंत्र किसान और योद्धा स्थानीय राजाओं के अधीन थे। राजनीतिक शक्ति कई सामंतों के बीच विसरित थी, राष्ट्रीय अधिकारियों की अनुपस्थिति में प्रत्येक अपने-अपने क्षेत्र पर राज्य करते थे। यूरोप में सामंती समाज तब क्रमशः राजनीतिक व्यवस्था में विकसित हुआ और हर स्तर पर स्वामी-दास के संबंध पर आधारित था, जैसे कि विभिन्न दर्जों के स्वामी उनके योद्धाओं और गढ़ व्यवस्था की स्वावलंबी अर्थव्यवस्था के बीच होता है। कैरोलिंगियन साम्राज्य के पतन के पश्चात, परिपक्व सामंतवाद यूरोप में हर जगह फैल गया। भूमि कई गढ़ों में विभाजित की गई, प्रत्येक सामंती प्रभु के द्वारा शासित की जाती थी। ये सामंत अपने गढ़ वालों के जीवन के सभी पहलुओं के लिए जिम्मेदार थे और इन को सर्वोच्च न्यायिक अधिकार प्राप्त था। कृषक अपनी निजी ज़मीन के लिए सैन्य रक्षण के बदले सामंती प्रभुओं या ईसाई मठों के साथ सौदा करते थे और उनकी ज़मीन मिल्कियत की तौर पर उन्हें लौटा दी जाती थी। जागीरदार योद्धाओं को अपने सामंती स्वामियों से उनके निजी सैनिक होने के रूप में सेवा के बदले गढ़ प्राप्त होते थे। जबकि कम दर्जे के सैनिक केवल एक गढ़ के मालिक हो सकते थे, प्रत्येक राजा या बड़े सामंत ऐसे सैकड़ों या हज़ारों गढ़ों के मालिक होते थे, और अपने नौकरों को मिल्कियत के रूप में वितरित कर देते थे। राजाओं के पास सीमित शक्ति होती थी और वे बड़े सामंती स्वामियों से अधिक बड़े नहीं होते थे।

प्रादेशिक चर्च के नेतृत्व की अवधि के दौरान यूरोप में धार्मिक जीवन उसी प्रारंभिक सामंतवादी राजनीतिक और आर्थिक पद्धति के अनुसार विकसित हुआ; इसलिए यह सामंती ईसाई धर्म कहा जा सकता है। कुलपतियों, प्रधान बिशप और बिशप लोगों ने प्रमुख, मध्यम और छोटे सामंती स्वामियों के जैसे पद ग्रहण किए। राजा केवल बड़े सामंतों में से एक हुआ करता था, पोप केवल पांच कुलपतियों में से एक था। रोमन कैथोलिक चर्च की राजनीतिक संरचना की स्थापना स्वामी और सेवक के बीच सख्त पदानुक्रमित संबंधों पर की गई थी। बिशप या मठाधीश का सामाजिक दर्जा होता था और सामंती स्वामी के बराबर शक्ति होती थी। अपने चर्च संपदा के स्वामी के रूप में कार्य करते हुए, यदि आवश्यक हो, तो वह अपने जागीरदारों के दर्जों में से सेना उठा सकता था।

आर्थिक जीवन के संबंध से, यह अवधि प्राचीन रोम के दास समाज से जागीर व्यवस्था में परिवर्तन के समय शुरू हुई। इस अवधि में कुछ भूमि के मालिक स्वयं स्वतंत्र किसान होने लगे। भूमि के स्वामित्व के संदर्भ में, इस अवधि में लोगों की स्थिति को चार श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है: कुलीन, स्वतंत्र किसान, कृषि मज़दूर और दास।

इस तरह, पश्चिमी रोमन साम्राज्य के खंडरों में से परमेश्वर ने जर्मनी के हाल में बने नए ईसाई लोगों के बीच एक सामंती समाज उठाया, जिन्हें उसने दैवी योजना का नेतृत्व करने के लिए चुना था। धार्मिक, राजनीतिक और आर्थिक जीवन के क्षेत्रों में ईश्वरीय प्रभुत्व के तहत छोटी इकाइयों को मजबूत करके, परमेश्वर ने एक ईश्वरीय राज्य स्थापित करने के लिए नींव रखी।

७.२.५ *राजकीय समाज और साम्राज्यवाद*

इतिहास की प्रगति के साथ, सामंतवादी समाज राजकीय समाज में विकसित हुआ। राजनीतिक रूप से, यूरोपीय साम्राज्यवादी समाज किस प्रकार पैदा हुआ? पश्चिमी यूरोप में जर्मनी के लोगों द्वारा बनाए गए सभी राज्य, फ्रैंक्स के साम्राज्य को छोड़कर, अल्पकालिक थे। मेरोविनगियन राजवंश के फ्रैंकिश राजाओं ने ईसाई धर्म ग्रहण किया और पश्चिमी यूरोप में एक जर्मनिक-रोमन दुनिया बनाने के लिए रोमन सभ्यता की विरासत को अवशोषित किया। मेरोविनगियन राजाओं के सत्ता खो देने के बाद, चार्ल्स मार्टेल फ्रैंक्स का समर्थ शासक बन गया। उसने मूर लोगों को, जिन्होंने दक्षिण-पश्चिम से आक्रमण किया था, हराकर राज्य प्रसारित किया। उसका बेटा, 'पेपिन द शॉर्ट', जो शारलेमेन का पिता था पहला कैरोलिंगियन राजा बन गया। शारलेमेन ने संेट आगस्टीन की ईसाई साम्राज्य की परिकल्पना पर अत्यधिक विचार किया और उसे अपने राज्य का मार्गदर्शक सिद्धांत बना दिया। शारलेमेन के साम्राज्य ने पश्चिमी और मध्य यूरोप को संगठित किया और उन क्षेत्रों में, जो पूर्वकाल में बड़े पैमाने पर प्रवास के कारण कोलाहल में थे, स्थायित्व लाया।

धर्म के क्षेत्र में, राजतंत्रवादी ईसाई धर्म, जो सामंतवादी ईसाई धर्म के बाद आया, एक आध्यात्मिक साम्राज्य था जो राष्ट्रीय सीमाओं के आगे तक फैलने वाला था। यह पोप के शासन के अंतर्गत मसीह की आध्यात्मिक नींव पर स्थापित किया गया था। पोप लियो-३ ने सन ८०० ई. में शारलेमेन को सम्राट का

ताज पहनाया और उसे चर्च का आशीर्वाद दिया। ऐसा करने से, पोप ने उसे दैवी योजना के लिए केंद्रीय जिम्मेदारी सौंप दी। पोप के अधिकार में आध्यात्मिक राज्य और फ्रैंक्स का राज्य शारलेमेन के तहत एकजुट हुआ और इस प्रकार ईसाई साम्राज्य का गठन हुआ।

ईसाई साम्राज्य की अवधि पुराने नियम के युग में इस्राएल के संयुक्त राज्य की अवधि के समानांतर थी। दोनों घटनाओं में, साम्राज्यवादी समाज सामंतवादी समाज के बाद आया जो बड़ी राजकीय सत्ता, आबादी और क्षेत्र को परमेश्वर के पक्ष में समेकित करने के उद्देश्य से था। पहले यह समझाया जा चुका है कि पोप ने एक सांसारिक राज्य का मार्ग प्रशस्त करने के उद्देश्य से प्रधान स्वर्गदूत के स्थान से चर्च की अगवाई की। परन्तु सम्राट को ताज पहनाने और परमेश्वर का आशीर्वाद देने के पश्चात, पोप को कैन के स्थान पर खड़ा होकर उसकी सहायता करनी चाहिए थी।[७४०] बदले में, सम्राट को चाहिए था कि वह पोप की शिक्षाओं का पालन करे और मसीह को ग्रहण करने योग्य राज्य साकार करने के लिए राजनीतिक कार्य करे। यदि उन्होंने इस प्रकार ईसाई साम्राज्य को ईश्वर की पूर्ण इच्छा के अनुरूप बनाया होता, तो यह समय मानव इतिहास के अंतिम दिन होते, जब मसीहा आ गया होता। तब नया-सत्य धर्म और विज्ञान की समस्याओं को हल करने के लिए, संपूर्ण मानवीय प्रयास के रूप में प्रगट होता, और परमेश्वर के आदर्श के आधार पर धर्म, राजनीति और अर्थव्यवस्था की एक दिशा में प्रगति के लिए मार्गदर्शन करता। इस आधार पर, मसीह के दूसरे आगमन के लिए नींव स्थापित की जानी चाहिये थी। इसके अलावा, ईसाई साम्राज्य की अवधि की शुरुआत के साथ, सामंतवाद को पूरी तरह समाप्त होना चाहिए था।

परंतु, पोप और सम्राट परमेश्वर की इच्छा से विचलित हो गए। इस समस्या ने शारलेमेन के बुनियादी आदर्शों को साकार करना असंभव कर दिया। फलस्वरूप, सामंतवादी समाज ध्वस्त नहीं किया गया; इसके विपरीत, यह अगले कई शताब्दियों के दौरान और मजबूत हो गया। धर्म, राजनीति और अर्थव्यवस्था विभाजित रहे, साथ में पोप के द्वारा शासित आध्यात्मिक राज्य के राजवंशों द्वारा शासित दुनियावी राज्यों के बीच बहुधा संघर्ष होता रहा।

ईसाई साम्राज्य, मसीह के आने के लिए एक संगठित राज्य बनाने में असफल रहा। शारलेमेन ने अपने साम्राज्य का निर्माण किया, जब प्रारंभिक सामंती समाज की नींव मजबूत राजशाही में समेकन के लिए परिपक्व हो गई थी। परन्तु, उसने सामंती स्वामियों की निहित शक्तियों को पूरी तरह से अधीन नहीं किया। बजाय इसके, सामंती व्यवस्था और मजबूत हो गई, और पवित्र रोमन सम्राट बड़े सामंतों में से केवल एक जैसा बन कर रह गया।

यूरोप में सामंती व्यवस्था सत्रहवीं शताब्दी में पूर्ण राजवाद के उदय होने तक हावी रही। उस समय सामंतवाद के अस्तगमन के साथ, सामंती स्वामियों की पिछली विकेन्द्रित शक्तियां बड़े राज्यों के राजाओं के हाथों में आ गईं। राजाओं ने अपने पूर्ण सामर्थ्य का उपयोग किया और 'राजाओं का दिव्य अधिकार' के सिद्धांत द्वारा इसे उचित ठहराया। पूर्ण राजतंत्र फ्रांस की १७८९ की क्रांति तक संपन्न रहा।

---

[७४०] प्रति-संदर्भ—समांतर ४

धार्मिक इतिहास के क्षेत्र में, पोप के नेतृत्व में जब ईसाई धर्म की राजकीय संरचना थी, उस दौरान क्या विचारधाराएं थीं? पोप लोगों ने परमेश्वर की इच्छा को त्याग दिया और धर्मनिरपेक्ष हो गए; वे आध्यात्मिक पतन के रास्ते पर चले। धर्मयुद्ध में बार-बार पराजय के कारण, पोप के कार्यालय ने अपना अधिकार खो दिया है, और एविंगटन में अपने निर्वासन के दौरान, उन्हें सत्ता और प्रतिष्ठा से वंचित किया गया था। १५१७ में प्रोटेस्टेंट धर्म-शोधन के साथ पश्चिमी ईसाई धर्म, जो ऐकिक आध्यात्मिक राजतंत्र के रूप में था, समाप्त हो गया।

जब हम आर्थिक जीवन की प्रगति की जांच करते हैं, तो हम यह देखते हैं कि जब राजनीतिक सामंतवाद पूर्ण राजवाद के द्वारा बदला जा रहा था सामंतवादी अर्थव्यवस्था बनी रही। शहरों और कस्बों में पूंजीवाद बढ़ रहा था, जहां कारख़ानेदार और व्यापारी लोग राजाओं के साथ मिलकर बाधा डालने वाली सामंती व्यवस्था के खिलाफ लड़े। ग्रामीण इलाकों में नई कृषि व्यवस्थाएं उठी, जहां स्वतंत्र किसानों ने सामंती स्वामियों के शासन का विरोध करने के लिए राजा की सहायता की मांग की। फिर भी, इन आर्थिक विकासों में से कोई भी सामंतवाद को पूरी तरह से विस्थापित न कर सका, जो फ्रेंच क्रांति तक जारी रहा।

पूंजीवाद, आर्थिक इतिहास की प्रगति में, सामंतवाद के पश्चात औपनिवेशिक विस्तरण के युग के साथ आया। जैसा कि पूर्ण राजतंत्र का लक्ष्य राजनीतिक सत्ता का संगठन था, वित्त और पूंजी का एकाधिकार, शक्तिशाली पूंजीपतियों का लक्ष्य था। पूंजीवाद पूर्ण राजशाही के साथ-साथ सत्रहवीं शताब्दी में उदय हुआ और औद्योगिक क्रांति के दौरान और बाद में फला फूला। दैवी योजना में पूंजीवाद का उद्देश्य पूंजी के संग्रह को बढ़ावा देना था और आर्थिक गतिविधि का इस हद तक केंद्रीकरण करना था जो सामंतवाद के तहत असंभव था, साम्राज्यवाद के मामले में यह और अधिक सच था।

औपनिवेशिक विस्तरण का अभियान, जो इस अवधि में शुरू हुआ, उसका दैवी उद्देश्य एक विश्वव्यापी आर्थिक, राजनीतिक और धार्मिक नींव की स्थापना करना था। यह चर्चा केवल यूरोपीय साम्राज्यवाद पर केंद्रित है, क्योंकि परमेश्वर के पुनरुद्धार की दैवी योजना की कार्यवाही पश्चिमी यूरोप पर केंद्रित थी। विश्व युद्ध से पहले पूरे विश्व में उपनिवेशों की प्राप्ति के लिए प्रतिद्वन्दता पश्चिमी यूरोप के राष्ट्रों के बीच छीना-झपटी का कारण बनी। परंतु इस वृत्तांत ने पूरी दुनिया को पश्चिमी ईसाई सभ्यता में प्रगति के लिए सक्षम किया।

७.२.६ लोकतंत्र और समाजवाद

राजशाही युग के बाद लोकतंत्र का युग आया। हमें याद है कि राजशाही समाज का उद्देश्य एक ऐसे राज्य का निर्माण करना था जो मसीह और उसके शासन का समर्थन करे। जब यह दैवी व्यवस्था ईसाई साम्राज्य के दौरान पूरी नहीं हुई, तो परमेश्वर ने ऐसी कार्यविधि शुरू की जिस के द्वारा उसने अंततः राजशाही समाजों को उखाड़ फेंका और उनके स्थान पर प्रजातंत्र राज्य पैदा किया ताकि मसीहा का स्वागत करने के लिए एक योग्य अधिराष्ट्र का पुनर्निर्माण हो सके।

लोकतंत्र व्यवस्था लोगों की प्रभुता पर आधारित है; यह सरकार लोगों के लिए, लोगों के द्वारा है और लोगों की है। इसका अभिप्राय राजशाही के राजनीतिक एकाधिकार को नष्ट करना है, जो ईश्वर की इच्छा से भटक गया था, और एक नई राजनीतिक व्यवस्था को स्थापित करना था जो दैवी योजना के लक्ष्य को पूरा करने में सक्षम हो, अर्थात, जो मसीह का समर्थन करे और उसे राजाओं के राजा के रूप में ग्रहण करे।

लोकतंत्र अपने उद्देश्य को कैसे पूरा कर सकता है? इतिहास के प्रवाह के साथ, पुनरुद्धार की दैवी योजना में युग के अनुग्रह के कारण मानव जाति की आध्यात्मिकता प्रबुद्ध हो गई है। लोगों का मौलिक मन दैवी योजना को बढ़ावा देता है और धर्म की तलाश करता है, लोग बहुधा यह नहीं जानते हैं कि वे ऐसा क्यों करते हैं। अंततः, लोग ईसाई धर्म ग्रहण करेंगे, जिसे परमेश्वर सर्वोच्च धर्म होने के लिए बढ़ा रहा है। इस तरह, आज दुनिया ईसाई आदर्शों पर आधारित एकल सभ्यता बनाने की ओर बढ़ रही है।

जैसे-जैसे इतिहास अपनी समाप्ति के करीब आ रहा है, लोगों का मन ईसाई आदर्शों की ओर बढ़ रहा है। लोकतांत्रिक सरकारें, जो लोगों की इच्छाओं को मान देती हैं, वह धीरे-धीरे ईसाई आदर्शों को ग्रहण रही हैं। इस प्रकार, लोकतांत्रिक सरकारों के शासन के अधीन समाजों में जब मसीह लौटेगा, जो ईसाई धर्म के सिद्धांतों में पूरी तरह से परिपक्व हो गई हैं, तो वह लोगों के पूर्ण समर्थन से पृथ्वी पर परमेश्वर की प्रभुसत्ता स्थापित करने में सक्षम हो जाएगा। यह पृथ्वी पर स्वर्ग का राज्य होगा। हमें यह समझने की आवश्यकता है कि लोकतंत्र का उत्थान शैतानी एकाधिकार की शक्तियों को ख़त्म करने और लोगों की इच्छा के द्वारा लौटने वाले मसीह के नेतृत्व में परमेश्वर की अंतिम दैवी योजना का उद्देश्य स्वर्गीय प्रभुसत्ता को पुनःस्थापित करने के लिए था।

सत्रहवीं और अठारहवीं शताब्दियों में पूर्ण राजशाही के विरूद्ध उठने वाले लोकतांत्रिक आंदोलनों ने इंग्लैंड, अमेरिका और फ्रांस में क्रांतियों को जन्म दिया। इन क्रांतियों ने राजशाही समाज नष्ट कर दिया और आज के लोकतांत्रिक समाज को जन्म दिया। यहूदी धर्म और यूनानी मत के भव्य रुझानों के अनुसार लोकतंत्र द्वारा उठाए गए विभिन्न रूपों पर अगले अध्याय में चर्चा की जाएगी।[७४१]

राजशाही ईसाई धर्म को १५१७ के प्रोटेस्टेंट-धर्म-शोधन अभियान ने नष्ट कर दिया उसके बाद धार्मिक क्षेत्र में इतिहास की प्रगति लोकतांत्रिक ईसाई धर्म के स्तर पर आ गई। धर्म-शोधन के माध्यम से, ईसाई धर्म की भीतरी लोकतांत्रिक शक्तियों ने आध्यात्मिक साम्राज्य को जिसके ऊपर पोप का एकमात्र अधिकार था ख़त्म कर दिया। ईश्वर की मूल इच्छा यह थी कि ईसाई साम्राज्य, उस राज्य का निर्माण करने के लिए जिसके लिए मसीह आने वाला था, राजसी पोप के ईसाई धर्म के साथ एक हो जाए। परन्तु जब पोप अपनी ज़िम्मेदारियों में विफल हो गए, तब राजसी ईसाई धर्म को जिस पर उन सभों का अधिकार था, नष्ट किया जाना पड़ा। यह लोकतांत्रिक ईसाई धर्म का मिशन रहा है जिस प्रकार राजनीतिक लोकतंत्र का मिशन पूर्ण राजशाही के संसारी राजतंत्र को नष्ट करना था। तदनुसार, प्रोटेस्टेंट धर्म-शोधन के बाद, लोगों के लिए स्वतंत्र रूप से अपनी बाईबल पढ़ने के माध्यम से परमेश्वर की तलाश करने का मार्ग खुल गया

[७४१] प्रति-संदर्भ—तैयारी ३.१-३.२

था, लोगों को पोप की मध्यस्थता की आवश्यकता नहीं रही। लोगों को अब अपने धार्मिक जीवन में दूसरों के अधिकार के अधीन रहने की ज़रूरत नहीं रही और स्वतंत्र रूप से विश्वास के साथ स्वयं अपने पथ की तलाश कर सकते थे। इस प्रकार लोकतांत्रिक ईसाई धर्म ने एक सामाजिक वातावरण बना दिया है, जिस की वजह से सभी लोगों को मसीह की वापसी पर स्वतंत्रता से उसकी तलाश करने की अनुमति मिलती है, भले ही वे किसी भी रीति से वापस आए।

इसी तरह, आर्थिक इतिहास की प्रगति के साथ, समाजवादी आदर्श उठे, जिसने साम्राज्यवाद को कमज़ोर किया और लोकतांत्रिक रूप की अर्थव्यवस्था को बढ़ावा दिया। हालांकि कुछ इतिहासकारों का मानना है कि प्रथम विश्व-युद्ध उपनिवेशों के लिए साम्राज्यवादी राष्ट्रों के बीच लड़ा गया युद्ध है, पर वास्तव में इसके समाप्त हो जाने के तुरंत बाद लोकतांत्रिक आत्मा ख्याति की ऊँचाइयों पर चढ़ी और उपनिवेशवादी नीति को दुर्बल बनाने लगी। दूसरे विश्व युद्ध के अंत में, महान शक्तियों ने खुद को अपने उपनिवेशों से वंचित करना शुरू कर दिया और राष्ट्रों को उनके अपने नियंत्रण के नीचे स्वतंत्र कर दिया। साम्राज्यवाद के पतन के बाद, पूंजीवाद एक ऐसी अर्थव्यवस्था के रूप में विकसित होने लगा जो समान और सामान्य समृद्धि को बढ़ावा देता है।

शैतानी दायरे के लिए यह स्वाभाविक ही है, जो साम्यवाद के द्वारा अपनी पराकाष्ठा तक पहुंच गया है, कि वह समाजवाद को बढ़ावा दे। इसका कारण यह है कि शैतान हमेशा परमेश्वर से पहले उसकी दैवी योजना की दोषपूर्ण नकल करने का प्रयास करता है। यद्यपि परमेश्वर की योजना एक समाजवादी अर्थव्यवस्था विकसित करना है, परंतु वह उस राष्ट्र समाजवाद से जो साम्यवाद ने वास्तव में स्थापित किया है, रूप और अंतर्निहित वस्तु में बिलकुल फर्क होगा।

परमेश्वर के सृष्टि के आदर्श के अनुसार, परमेश्वर प्रत्येक व्यक्ति को एक ही मौलिक मूल्य प्रदान करता है। जिस प्रकार माता-पिता अपने सभी बच्चों को एक बराबर प्यार करते हैं, वैसे ही परमेश्वर अपने सभी बच्चों के लिए सुखद वातावरण और रहने के लिए समान स्थिति प्रदान करना चाहता है। इसके अलावा, आदर्श समाज में, उत्पादन, वितरण और खपत के बीच वैसा ही जैविक संबंध होना चाहिए जो मानव शरीर में पाचन, संचलन और चयापचय के कार्यों के बीच विद्यमान है। इस प्रकार, अधिक उत्पादन के कारण विनाशकारी प्रतियोगिता नहीं होनी चाहिए, न ही अनुचित वितरण होना चाहिए जिसकी वजह से अत्यधिक संचय और खपत होती है, यह सार्वजनिक भलाई के उद्देश्य के विपरीत है। आवश्यक और उपयोगी वस्तुओं का जो सार्वजनिक उद्देश्य के अनुरूप हैं पर्याप्त उत्पादन, कुशल वितरण और उचित खपत होनी चाहिए। जिस प्रकार कलेजा मानव शरीर के लिए पोषक तत्वों का रक्षित संचय बना कर रखता है, पूरी अर्थव्यवस्था के सुनिश्चित सुचारु संचालन के लिए पूंजी का पर्याप्त भंडार होना चाहिए।

क्योंकि मनुष्य एक आदर्श समाज में रहने के लिए बनाये गए हैं, वे अनिवार्यतः एक समाजवादी आदर्श की मांग करते हैं क्योंकि वे स्वतंत्रता और लोकतंत्र के लिए प्रयास करते हैं और अपनी मौलिक प्रकृति की और अधिक खोज में रहते हैं। विशेष रूप से यह दैवी इतिहास की समाप्ति पर अधिक यथार्थ होगा, जब यह आदर्श वास्तव में साकार किया जा सकता है। चूंकि यह स्वाभाविक इच्छा भीतर से उदित

होती है, लोकतंत्र में राजनीति, जो लोगों की इच्छा के अनुसार गढ़ी जाती है, वह भी उसी दिशा में आगे बढ़ेगी। अंततः, एक समाजवादी समाज जो परमेश्वर के आदर्श का प्रतीक है, स्थापित किया जाएगा। प्रारंभिक ईसाई लोग कुछ हद तक अपनी सारी वस्तुओं को आपस में बांट कर इस आदर्श के अनुसार रहते थे।[७४२] इंग्लैंड में सोलहवीं सदी में लिखे गए थॉमस मोर के आदर्श-राज्य, और इंग्लैंड में औद्योगिक क्रांति के दौरान रॉबर्ट ओवेन का मानववादी समाजवाद, प्रत्येक ने समाजवाद के आदर्श का एक दर्शन व्यक्त किया। कैथोलिक और प्रोटेस्टेंट समाजवादी आंदोलन भी इस परिकल्पना में सहभाजी हैं, मध्य उन्नीसवीं सदी के इंग्लैंड में चार्ल्स किंग्सले की ईसाई समाजवाद का पक्षसमर्थन एक और उदाहरण है। समाजवाद की ओर उनका झुकाव उनके मौलिक मन की प्राकृतिक लालसा से उत्पन्न हुआ था क्योंकि यह सृष्टि के आदर्श का अनुकरण करता है।

७.२.७ परस्पर निर्भरता, अन्योन्य समृद्धि और सर्वत्र सहभाजी मान्यताओं के आदर्शों की तुलना में साम्यवाद

परमेश्वर के पुनरुद्धार की दैवी योजना में युग के अनुग्रह ने मनुष्य की मूल प्रकृति के विकास को आगे बढ़ाया है, जो मानव जीवन में शैतान की पकड़ के कारण प्रकट नहीं हुआ था। अपने अंतरतम हृदय की प्रेरणा को सुनकर हर जगह लोगों ने उत्साह पूर्वक परमेश्वर के आदर्श की दुनिया के लिए, जहां सृष्टि का उद्देश्य पूरा होता है, आकांक्षा की है। स्वर्ग के पक्ष की समाजवादी समाज की तलाश में, उनके मौलिक मन ने उन्हें परस्पर निर्भरता, अन्योन्य समृद्धि और सर्वत्र सहभाजी मूल्यों के आदर्शों के लिए आकर्षित किया है। इन आदर्शों को अंततः जिस दुनिया में साकार किया जाएगा, वह लौटने वाले मसीह के नेतृत्व में पृथ्वी पर स्वर्ग के राज्य के अलावा अन्य कोई नहीं है।

चूंकि शैतान पहले ही परमेश्वर की दैवी योजना की नकल करता है, शैतानी पक्ष ने द्वंद्वात्मक और ऐतिहासिक भौतिकवाद के सिद्धांतों के आधार पर "वैज्ञानिक समाजवाद" की वकालत की है और साम्यवादी दुनिया का निर्माण किया है। ऐतिहासिक भौतिकवाद के सिद्धांत का दावा है कि मानव इतिहास प्रारंभिक सामूहिक समाज के रूप में शुरू हुआ और एक आदर्श साम्यवादी समाज के निर्माण के साथ संपन्न होगा। इस सिद्धांत की स्पष्ट त्रुटियां इस तथ्य का कारण हैं कि इसने ऐतिहासिक प्रगति के मौलिक कारणों पर ध्यान नहीं दिया है। मनुष्यों की रचना करने के बाद, परमेश्वर ने स्वर्ग के राज्य को साधित करने का वादा किया था। परमेश्वर पृथ्वी पर एक आदर्श दुनिया बनाना चाहता था, परन्तु, क्योंकि शैतान ने परमेश्वर से पहले ही लोगों के साथ रक्त-संबंध स्थापित कर लिया था, इसलिए परमेश्वर को उसे पतित लोगों के द्वारा विकृत नमूने पर अनियमी दुनिया निर्माण करने की अनुमति देनी पड़ी। शैतान की बनाई हुई यह अनियमी दुनिया, कम्युनिस्ट दुनिया है।

पूर्ण राजशाही को खत्म करने के लिए और लोगों के हाथ में राजसत्ता स्थानांतरित करने के उद्देश्य से दो प्रकार के लोकतांत्रिक समाज उठे। इसी तरह, परमेश्वर के पक्ष में परस्पर निर्भरता, अन्योन्य

[७४२] प्रेरितों ४:३-३५

समृद्धि और सर्वत्र सहभाजन के आदर्शों को आगे बढ़ाने के लिए आंदोलन उठे, जबकि साम्यवाद शैतान के पक्ष में पैदा हुआ, ताकि वह उस आर्थिक व्यवस्था को ध्वस्त कर सके जो समाज का धन कुछ विशेषाधिकार प्राप्त लोगों के हाथों में केंद्रित करता है। इन आंदोलनों में से प्रत्येक ने एक ऐसी व्यवस्था स्थापित करने की मांग की जो लोगों के बीच अधिक समान रूप से धन वितरित कर सके। समाजवाद के पक्ष में दोनों पक्षों ने अपनी दिव्य प्रेरणाओं से सच्ची लोकतांत्रिक आर्थिक व्यवस्था पर आधारित समाज साधित करने का प्रयास किया।

यह पहले समझाया गया था कि पुनरुद्धार की दैवी योजना द्वारा परिचालित, पश्चिमी यूरोप के इतिहास में धर्म, राजनीति और अर्थव्यवस्था के तीन पहलुओं ने विकास के अपने अलग-अलग रास्तों के माध्यम से प्रगति की है। मसीह के दूसरे आगमन की नींव रखने के लिए, इतिहास के समापन पर वे किस तरह एक मुद्दे पर एक साथ आ सकते हैं? इस अलग-अलग विकास का मूल कारण धर्म और विज्ञान का विचलन था, जो मानवता की आध्यात्मिक और भौतिक अज्ञानता को वशीभूत करने के प्रयास के लिए थी। धर्म, राजनीति और अर्थव्यवस्था को एक पथ पर समागम होने के लिए और परमेश्वर के आदर्श को साधित करने के लिए सत्य की एक नई अभिव्यक्ति उभरनी चाहिए जो पूरी तरह से धर्म और विज्ञान को संघटित कर सके। इस सच्चाई पर जो धर्म स्थापित होगा वह सारी मानवता को परमेश्वर के साथ दिल से एक बनने के लिए नेतृत्व करेगा। ऐसे लोग दिव्य आदर्श के अनुसार एक अर्थव्यवस्था का निर्माण करेंगे। यह नई राजनीतिक व्यवस्था की नींव होगी जो सृष्टि के आदर्श को साधित कर सकेगी। यह मसीही साम्राज्य होगा जो परस्पर निर्भरता, अन्योन्य समृद्धि और सर्वत्र सहभाजन के सिद्धांतों पर निर्मित होगा।

लेखा चित्र ३: पुनरुद्धार की दैवी योजना के मार्गदर्शन में इतिहास की प्रगति

पुनरुद्धार की दैवी योजना के लिए नींव डालने का युग

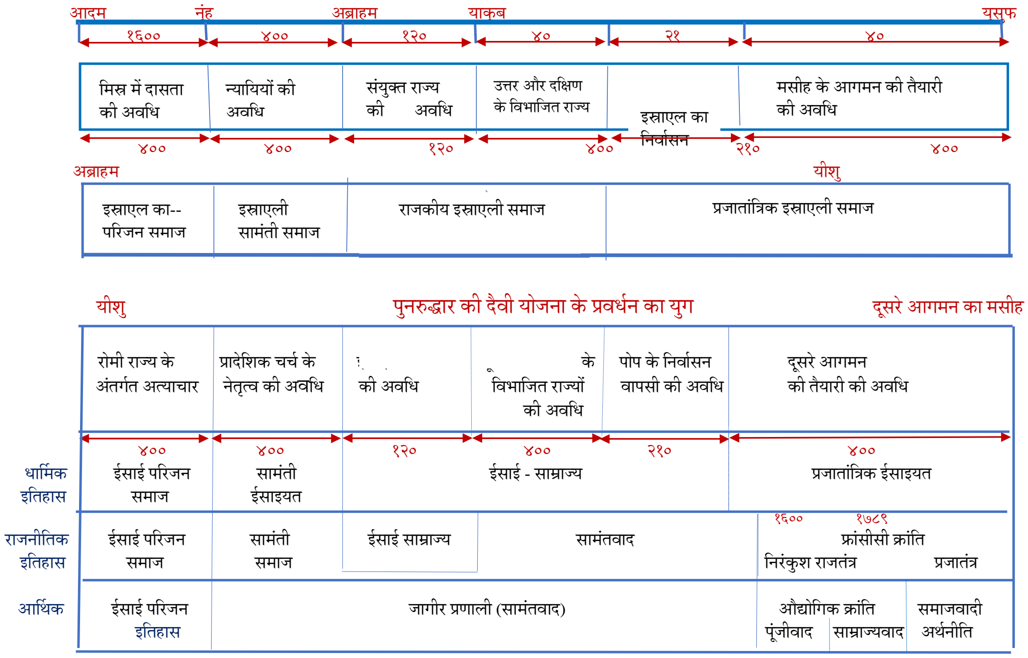

दिव्य नियम प्रतिपादन

भाग २

अध्याय ५

मसीह के दूसरे आगमन की तैयारी की अवधि

विषय सूची

पृष्ठ

अध्याय ५

मसीह के दूसरे आगमन की तैयारी की अवधि ३६९

संभाग १

धर्म-शोधन की अवधि (१५१७-१६४८) ३७२

१.१ नवजागरण ३७६

१.२ धर्म-शोधन ३७७

संभाग २

धार्मिक और वैचारिक संघर्ष के काल (१६४८-१७८९) ३७९

२.१. कैन वर्गीय जीवन धारणा ३७९

२.२ हाबिल वर्गीय जीवन धारणा ३८१

संभाग ३

राजनीति, अर्थनीति और सैद्धांतिक विचारधाराओं के
परिपक्व होने की अवधि (१७८९-१९१८) ३८४

३.१ लोकतंत्र ३८४

३.१.१ कैन वर्गीय लोकतंत्र ३८५

३.१.२ हाबिल वर्गीय लोकतंत्र ३८६

३.२ शक्तियों के पृथक्करण का महत्व
३८७

३.३ औद्योगिक क्रांति का महत्व ३८९

३.४ महान शक्तियों का उत्थान ३९०

३.५ नवजागरण के बाद धार्मिक शोधन, राजनीतिक और औद्योगिक क्रांति ३९०

संभाग ४

विश्व युद्ध ३९२

४.१ विश्व युद्ध के दैवी कारण ३९२

४.२ पहला विश्व महायुद्ध ३९३

४.२.१ पहले विश्व महायुद्ध में दैवी-योजना का संक्षिप्त विवरण ३९३
४.२.२ परमेश्वर का पक्ष और शैतान का पक्ष, यह कैसे निश्चित किया जाता है? ३९४
४.२.३ पहले विश्व युद्ध के पीछे दैवी कारण ३९५
४.२.४ पहले विश्व युद्ध के दैवी परिणाम ३९६

४.३ दूसरा विश्व युद्ध ३९७
४.३.१ दूसरे विश्व युद्ध में दैवी योजना का संक्षिप्त विवरण ३९७
४.३.२ फासिस्टवाद का स्वभाव ३९८
४.३.३ दूसरे विश्व युद्ध में वह देश जो परमेश्वर के पक्ष में थे और वे जो शैतान के पक्ष में थे ३९८
४.३.४ परमेश्वर के पक्ष और शैतान के पक्ष के तीन देशों की दैवी भूमिका ३९८
४.३.५ दूसरे विश्व युद्ध के पीछे दैवी कारण ४००
४.३.६ दूसरे विश्व युद्ध के दैवी परिणाम ४०१

४.४ तीसरा विश्व युद्ध ४०२
४.४.१ क्या तीसरा विश्व युद्ध अनिवार्य है? ४०२
४.४.२ तीसरे विश्व युद्ध में दैवी योजना का संक्षिप्त विवरण ४०३
४.४.३ तीसरे विश्व युद्ध के पीछे दैवी कारण ४०४
४.४.४ तीसरे विश्व युद्ध के दैवी परिणाम ४०५

मसीह के दूसरे आगमन की तैयारी की अवधि

मसीह के दूसरे आगमन की तैयारी की अवधि सन १५१७ के प्रोटेस्टेंट धर्म-शोधन आंदोलन से लेकर सन १९१८ में प्रथम विश्व युद्ध के अंत तक चार-सौ वर्ष की अवधि थी। इस अवधि की विशेषता मसीह के आगमन की तैयारी की समानांतर अवधि की तुलना के साथ सारांश में पहले भी बताई जा चुकी है, परंतु अब इसकी जाँच सविस्तार की जाएगी। पुनरुद्धार की दैवी योजना के संबंध से, यह अवधि तीन अवधियों में विभाजित की गई है: धर्म-शोधन की अवधि, धार्मिक और वैचारिक संघर्ष की अवधि, और राजनीति, अर्थनीति और वैचारिकी की परिपक्वता की अवधि।

संभाग १

धर्म-शोधन की अवधि (१५१७-१६४८)

जब मार्टीन लूथर ने जर्मनी में सन १५१७ में प्रोटेस्टेंट धर्म-शोधन के झंडे गाड़े, धर्म-शोधन की १३०-वर्ष की अवधि आरंभ हुई, यह धर्म-युद्ध सन १६४८ की वेस्टफालिया की संधि द्वारा फैसला होने तक चले। इस अवधि की विशेषता नवजागरण और प्रोटेस्टेंट धर्म-शोधन के द्वारा गढ़ी गई थी, और यह दोनों मध्ययुगीन सामंती समाज के उत्पाद हैं। जब परमेश्वर की दैवी योजना का उद्देश्य मध्ययुगीन समाज के माध्यम से पूरा नहीं हुआ तो दैवी इतिहास की दिशा बदल गई और परमेश्वर ने मसीह के दूसरे आगमन की नई नींव डालने का कार्य नवजागरण और धर्म-शोधन के द्वारा किया। इसलिए, हम इन दो घटनाओं का अध्ययन किए बिना इस अवधि की प्रकृति को नहीं समझ सकते हैं।

आइए हम मध्ययुगीन समाज को फिर से देखें और यह जांच करें कि उस युग के लोगों की मूल प्रकृति पर इसका कैसा प्रभाव पड़ा, जिसने उन्हें नवजागरण और प्रोटेस्टेंट धर्म-शोधन की ओर प्रेरित किया। अतिकाल मध्य युग में मनुष्य की मूल प्रकृति को दमित कर दिया गया था, इसका स्वतंत्र विकास सामंतवाद के सामाजिक वातावरण और रोमन चर्च के भ्रष्टाचार द्वारा अवरुद्ध किया गया था। विश्वास वह मार्ग है जिसपर प्रत्येक व्यक्ति को परमेश्वर की खोज में चलना चाहिए। विश्वास का पोषण ईश्वर और प्रत्येक व्यक्ति के बीच लम्बवत् संबंध के माध्यम से होना चाहिए। परंतु उस युग में पोप और पादरी लोगों ने अपने अनुष्ठानों और हठधर्मिता से लोगों के धार्मिक जीवन को बाध्य कर दिया था। इसके अतिरिक्त, सामंतवाद के कड़े सामाजिक विभाजन ने धार्मिक स्वतंत्रता को फलने नहीं दिया। इसी बीच, धार्मिक कार्यालय खरीदे और बेच गये। बिशप और पादरियों ने बहुधा अपनी पदवी का सुखसाधन और नाश का जीवन बिताने के लिए शोषण किया। फलस्वरूप, पोप की पदवी ने अपनी पवित्रता खो दी और अन्य सांसारिक संस्थानों के समान बन गया। और लोगों के आध्यात्मिक जीवन का मार्गदर्शन करने की क्षमता खो दी। इस तरह, अतिकाल मध्य युग में सामाजिक वातावरण ने उस रास्ते को अवरुद्ध कर दिया जिसके माध्यम से लोगों की मूल प्रकृति को बहाल किया जा सकता था। ऐसी परिस्थितियों से विवश मध्ययुगीन यूरोपीय लोगों ने सामाजिक वातावरण पर काबू पाने के लिए, अपने दिलों की मूल प्रेरणा से प्रोत्साहित होकर, अपनी मौलिक प्रकृति की प्राप्ति के लिए रास्ता खोला।

हमारी मौलिक प्रकृति को दो पहलुओं में विभाजित किया जा सकता है: आंतरिक और बाहरी। आइए हम सृष्टि के नियम के संदर्भ से इसकी जाँच करें। परमेश्वर के वास्तविक पात्र-साझी के रूप में हम छवि में उसके द्वैत अभिलक्षणों के साथ अनुनाद करते हैं और उसके आंतरिक स्वभाव और बाह्य रूप की समानता को प्रदर्शित करते हैं। हमारा अस्तित्व, हमारी आंतरिक प्रकृति और बाह्य रूप के बीच आदान-प्रदान के आधार पर साध्य होता है और विकसित होता है। तदनुसार, हमारी मौलिक प्रकृति दो प्रकार की इच्छाओं को पूरा करना चाहती है: आंतरिक और बाहरी। हमारे पुनरुद्धार के लिए जब परमेश्वर अपनी दैवी योजना का आयोजन करता है वह हमारी मूल प्रकृति के इन दो पहलुओं को संवारता है।

परमेश्वर ने मनुष्य की आत्मा बनाने से पहले उसके भौतिक शरीर की रचना की।[७४३] तदनुसार, पुनरुद्धार की दैवी योजना में, परमेश्वर हमारे शरीर को जो बाहरी है पहले बहाल करता है, फिर जो आंतरिक है। पहले समझाया जा चुका है[७४४] कि हम पतित लोग प्रतीकात्मक भेंट, जो बाहरी है, सफलतापूर्वक चढ़ाने के बाद ही वास्तविक भेंट, जो आंतरिक है, चढ़ा सकते हैं। यह उपलब्ध किए जाने के बाद ही हम मसीह के लिए नींव स्थापित करते हैं, जो और भी अधिक आंतरिक है।

परमेश्वर के साथ पतित लोगों के संबंध को पुनःस्थापित करने की प्रक्रिया बाहर से अंदर की ओर बढ़ती है। पुराने नियम के युग की अवधि से पहले परमेश्वर ने लोगों को बलिदान चढ़ाने के द्वारा, पहले दासों के दास[७४५] के स्थान पर बहाल किया। इसके बाद, उसने लोगों को पुराने नियम में मूसा के नियम के माध्यम से दासों[७४६] के स्थान पर बहाल किया। नए नियम के युग में, परमेश्वर ने हमें अपने विश्वास के माध्यम से दत्तक बच्चों के स्थान पर बहाल किया है[७४७]। अंत में, परिपूरित नियम के युग में, वह हमें हृदय के माध्यम से सच्चे बच्चों के स्थान पर बहाल कर देगा।[७४८]

उसी तरह, परमेश्वर ने पहले हमारे बाहरी सामाजिक वातावरण को विज्ञान के माध्यम से बहाल किया और फिर धर्म के माध्यम से हमारी आध्यात्मिकता को बहाल करने के लिए कार्य किया। सृष्टि की रचना के क्रम में, उसने स्वर्गदूतों को, जो बाह्य हैं, मनुष्यों से जो आंतरिक हैं, पहले रचा। पूर्वावस्था की प्राप्ति के लिए, परमेश्वर पहले स्वर्गदूतों की दुनिया को, जो बाह्य है उठाता है, फिर इसे भौतिक दुनिया का जो बाहरी और मानव शरीर पर केन्द्रित है जीर्णोद्धार करने के लिए उपयोग करता है, और तब आंतरिक आत्मालोक के लिए जो मनुष्य की आत्मा पर केंद्रित है बहाली का कार्य करता है।

जब पोप का कार्यालय अनैतिकता में डूब गया और विश्वास की नींव को पुनःस्थापित करने की आंतरिक जिम्मेदारी में विफल हुआ, तो मध्ययुगीन यूरोपीय लोगों को चाहिए था कि वे पहले परमेश्वर द्वारा दिए गए स्वभाव को बहाल करने के लिए अपने आप को शैतान के संबंधों से अलग करें, जिसने समाज को अपवित्र किया था। अतीत की परम्परा में सुधार लाने के लिए जैसे-जैसे लोगों ने अपने मूल स्वभाव के आंतरिक और बाहरी पहलुओं को पुनः प्राप्त करने की कोशिश की, युग के मनन से दो अलग आंदोलन निकले, जिनकी पहचान हम हाबिल-वर्गीय और कैन-वर्गीय संबंध बोधक शब्दों में करते हैं। कैन-वर्गीय आंदोलन 'हेलेनिज़्म' यूनानवाद, प्राचीन यूनान और रोम की संस्कृति और दर्शन के पुनर्जागरण के रूप में शुरू हुआ। इसने 'रेनेसांस' नवजागरण को जन्म दिया,[७४९] जिसका मौलिक आदर्श मानववाद था। हाबिल-वर्गीय आंदोलन इस्राएल की प्राचीन यहूदी सांस्कृतिक विरासत और प्रारंभिक

---

[७४३] उत्पत्ति २:७
[७४४] प्रति-संदर्भ—नींव १.३
[७४५] उत्पत्ति ९:२५
[७४६] लैव्यव्यवस्था २५:५५
[७४७] रोमियों ८.२३
[७४८] प्रति-संदर्भ—मूसा और यीशु ३.३.२
[७४९] रेनेसांस फ्रांस भाषा का शब्द है जिसका अर्थ पुनर्जागरण है

ईसाई चर्च की नवचेतना के रूप में शुरू हुआ। इसने प्रोटेस्टेंट धर्म-शोधन को जन्म दिया, जिसका मौलिक आदर्श परमेश्वर में विश्वास रखना था।

यहूदी धर्म और मानववाद के रुझान बहुत पहले प्राचीन काल में पैदा हुए और पूर्व इतिहास में इन्हें कई बार एक दूसरे का सामना करना पड़ा था। सन २००० ई.पू. से मिनोवा सभ्यता क्रेट द्वीप पर फली फूली, इस के बाद यूनान की मुख्य भूमि पर मासीनियन सभ्यता समृद्ध हुई। ग्यारहवीं शताब्दी तक, इन सभ्यताओं ने एक कैन-वर्गीय यूनानी सभ्यता बनाई, जिसकी मार्गदर्शक विचारधारा मानववाद थी। लगभग उसी समय निकटतम पूर्व में, हाबिल-वर्गीय यहूदी सभ्यता का जन्म हुआ, जिसकी मार्गदर्शक विचारधारा यहूदी एकेश्वरवाद थी। यह संयुक्त राज्य की अवधि थी। यदि उस अवधि में इस्राएल के राजाओं ने मसीहा की नींव डाली होती और उसे ग्रहण कर लिया होता, तो यह समृद्ध यहूदी सभ्यता यूनानी सभ्यता को आत्मसात् करके एक विश्वव्यापी सभ्यता बनाने में सफल हो जाती। परंतु, जब इन राजाओं ने परमेश्वर की इच्छा का पालन नहीं किया, तो यह दैवी योजना पूरी नहीं हुई। इसके बजाय, यहूदी लोग बेबीलोन में निर्वासन में ले जाए गए, वहाँ से लौटने के बाद, उन्हें सन ३३३ ई.पू. में यूनानियों के अधीन और फिर सन ६३ ई.पू. में रोम के अधीन रहना पड़ा। इस प्रकार, इन सदियों के दौरान यीशु के आने के समय तक यहूदी धर्म यूनानी मानववाद के प्रभुत्व में रखा गया था।

यदि यहूदी लोगों ने यीशु का सम्मान किया होता और उसके साथ एकजुट हो जाते, तो रोमन साम्राज्य मसीह के शासन के अंतर्गत मसीही राज्य बन गया होता, और यहूदी धर्म मानववाद को आत्मसात् करके विश्वव्यापी यहूदी सभ्यता बना लेता। बजाय इसके, जब यीशु बहिष्कृत कर दिया गया और यह दैवी योजना कुंठित हो गई, यहूदी धर्म यूनानी सभ्यता मानववाद के अधीन बना रहा। सन ३१३ ईसवी में, सम्राट कॉन्स्टैंटिन ने आधिकारिक रूप से मिलान के आज्ञापत्र के द्वारा ईसाई धर्म को मान्यता दी। उस समय से, यहूदी धर्म धीरे-धीरे यूनानी सभ्यता पर विजय पाने लगा। आठवीं शताब्दी के शुरू होने तक, इसने दो सभ्यताओं का गठन किया: पूर्वी-रूढ़िवाद और रोमन कैथलिक ईसाइयत।

यदि पोप और सम्राट, जिन्हें कैरोलिंगियन अवधि में विश्वास की नींव पुनःस्थापित करने की ज़िम्मेदारी थी अविश्वासी नहीं बनते, तो मसीह के दूसरे आगमन की नींव उसी समय स्थापित हो जाती। विश्वव्यापी सभ्यता बनाने के लिए यहूदी धर्म मानववाद को पूरी तरह से आत्मसात कर लेता। इसके बजाय, उनकी अविश्वसनीयता और अनैतिकता ने शैतान को इस मध्यकालीन मार्गदर्शी विचारधारा को जो यहूदी धर्म पर स्थापित की गई थी, भ्रष्ट करने की छूट दे दी। परिणामस्वरूप, शैतान को अलग करने के लिए परमेश्वर को एक नई व्यवस्था का कार्य करना पड़ा। जिस प्रकार परमेश्वर ने शैतान को अलग करने के लिए आदम को कैन और हाबिल में विभाजित कर दिया था, परमेश्वर ने मध्ययुगीन प्रचलित विचारधारा के विचार को दो रुझानों में विभाजित किया: कैन-वर्गीय मानववाद और हाबिल-वर्गीय यहूदी धर्म की सभ्यता। यह क्रमशः पुनर्जागरण और धर्म-शोधन के आंदोलनों को बढ़ाने में सफल हुए।

नवजागरण के मानववाद द्वारा नवीनीकृत यूनानी विचारधारा के प्रवाह ने जल्द ही प्राचीन यहूदी रुझान पर एक प्रभावशाली स्थान बना लिया। इस अवधि को समानांतर क्षतिपूर्ति के द्वारा तैयारी की

अवधि के उस पहलू को पुन:स्थापित करना था जब यहूदी लोग यूनान के अधीन थे और यहूदीवाद मानववाद के अधीन था। हमें याद है कि कैन का अपने आप को केवल हाबिल के सामने समर्पण करने से ही शैतान को आदम से अलग किया जा सकता था, जिससे आदम के परिवार में मसीह को ग्रहण करने के लिए आवश्यक वास्तविक नींव रखी जा सकती थी। इसी प्रकार, केवल कैन-वर्गीय मानववाद का हाबिल-वर्गीय यहूदीवाद को समर्पण करने से ही शैतान को उस युग की प्रबल भावना से अलग किया जा सकता था। तब ही दूसरे आगमन में मसीह को प्राप्त करने के लिए आवश्यक वास्तविक नींव पूरे विश्व में स्थापित की जा सकती थी।

१.१ नवजागरण (रेनेसॉन्स)

ऊपर यह बताया गया है कि नवजागरण मनुष्य की मूल प्रकृति के बाहरी उद्यमो से निकला था। मध्ययुगीन आवाम किन मूल्यों की खोज करते थे? और उन्होंने उन मूल्यों का अनुसरण क्यों और कैसे किया?

सृष्टि के नियम के अनुसार हम, परमेश्वर की सीधी सहायता के बिना दी गई ज़िम्मेदारी को अपनी स्वतंत्र इच्छा से पूरी करके पूर्णता प्राप्त करने के लिए रचे गए हैं। तब हम ईश्वर के साथ एकता प्राप्त कर सकेंगे और वास्तविक स्वायत्तता प्राप्त कर सकते हैं। इसलिए यह, स्वतंत्रता और स्वायत्तता को अनुसरण करने के लिए हमारी मौलिक प्रकृति का आह्वान है। पूर्ण चरित्र का व्यक्ति परमेश्वर की इच्छा को समझता है और परमेश्वर के प्रकटीकरण की आवश्यकता के बिना अपनी अंतर्दृष्टि और तर्क शक्ति के माध्यम से अभ्यास में लाता है। इसलिए, हमारा तर्क शक्ति और समझ का उपयोग करना प्राकृतिक है। हमें, प्राकृतिक दुनिया पर महारत प्राप्त करने और विज्ञान के माध्यम से प्रकृति के छिपे नियमों की जांच करके अपने रहन-सहन के वातावरण को सुखद बनाने के लिए, उसे साधने और खेती करने के लिए, परमेश्वर द्वारा दिए गए स्वामित्व के अधिकार से सम्मानित किया गया है। इसलिए, हम विज्ञान की खोज करते हैं, प्राकृतिक दुनिया को महत्व देते हैं, और क्रियात्मक जीवन को मान देते हैं।

मध्ययुगीन सामंती समाज में मनुष्य की मौलिक प्रकृति को लंबे समय से दमन किया गया था। इसलिए, लोग इन मूल्यों के लिए, जो उनकी मूल प्रकृति के बाह्य प्रोत्साहन से उत्पन्न हुए थे, अपने प्रयास में अधिक उत्साहित थे। धर्मयुद्ध के बाद उन्होंने यूनानी सभ्यता की पारम्परिक विरासत की जांच शुरू की, जो उन्हें पूर्व में फैले हुए संपर्कों के परिणामस्वरूप मुसलमानों से प्राप्त हुई थी। पारम्परिक यूनानी और रोमी लोगों ने मनुष्य की मौलिक प्रकृति की बाहरी आकांक्षाओं का अनुसरण किया। उन्होंने स्वतंत्रता, स्वायत्तता, तर्क शक्ति, प्राकृतिक दुनिया और क्रियात्मक जीवन को महत्व दिया। उन्होंने विज्ञान को यथेष्ट विकसित किया। चूंकि ये पूरी तरह से मध्ययुगीन व्यक्ति की मूल प्रकृति की चाह के अनुसार थे, इसलिए यूनान की प्राचीन सभ्यता की विरासत को पुनर्जीवित करने का आंदोलन सुलग गया। इस प्रकार नवजागरण मानववाद प्रख्याति की ऊँचाइयों पर उठा।

नवजागरण चौदहवीं शताब्दी में इटली में पैदा हुआ, जो शास्त्रीय यूनानी मीरास के अध्ययन का

केंद्र था। यद्यपि यह प्राचीन यूनान और रोम के विचार और जीवन का अनुकरण करने के आंदोलन के रूप में शुरू हुआ था, परन्तु, जल्द ही यह एक व्यापक आंदोलन के रूप में विकसित हुआ जिसने मध्ययुगीन जीवन के तौर-तरीकों को बदल दिया। यह समाज के हर पहलू में राजनीति, आर्थिक जीवन और धर्म समेत, सांस्कृतिक क्षेत्र से आगे बढ़ गया। वास्तव में, यह आधुनिक दुनिया के निर्माण का बाहरी प्रेरक बल बन गया।

१.२ धर्म-शोधन

मध्ययुगीन पोप के कार्यालय पर केंद्रित पुनरुद्धार की दैवी योजना चर्च के अगवा लोगों की धर्मनिरपेक्षता और क्षय के कारण फल नहीं लाई। फलस्वरूप, जैसे-जैसे लोगों ने मानववाद का समर्थन किया, उन्होंने चर्च के अनुष्ठान और नियमों के खिलाफ भी विद्रोह किया जो उनकी स्वतंत्र भक्ति को बाधित कर रहे थे। वे स्तरीकृत सामंती व्यवस्था और पोप के प्राधिकरण के विरोध में लड़े जिन्होंने उन्हें स्वायत्तता से वंचित कर दिया था। उन्होंने इस मध्ययुगीन विचार का विरोध किया जिसके अंतर्गत उन्हें विश्वास के लिए आवश्यक रूप से जीवन के सभी क्षेत्रों में चर्च के निर्देशों को निर्विवाद आज्ञाकारिता से पालन करना है, और जो उन्हें अपने विवेक के निर्देशों के अनुसार बाईबल के आधार पर परमेश्वर की उपासना करने के अधिकार से वंचित करता था। उन्होंने अलौकिक और तपस्वी मठ संबंधी आदर्शों पर भी सवाल उठाए जिसने प्राकृतिक दुनिया, विज्ञान और जीवन के व्यावहारिक मामलों को अवमूल्य कर दिया था। इन अन्यायों के कारण, कई मध्ययुगीन ईसाइयों ने पोप के शासन का विरोध किया।

तदनुसार, मध्ययुगीन यूरोपीय लोगों ने अपनी मूल प्रकृति की बाहरी आकांक्षाओं को साकार करने की मांग की, और अपनी शोषित आंतरिक आकांक्षाओं की तृप्ति के लिए भी कदम उठाए। उन्होंने प्रारंभिक ईसाई धर्म की भावना के पुनः प्रचलन की मांग की, जब विश्वासी लोग यीशु और प्रेरितों के सुसमाचार के मार्गदर्शन से बड़े उत्साहित होकर परमेश्वर की इच्छा के लिए जीते थे। यहूदी धर्म को पुनर्जीवित करने के लिए यह मध्ययुगीन आंदोलन ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी में आध्यात्मविद्या के प्राध्यापक जॉन वाईक्लिफ (सन १३२४-१३८४) के साथ शुरू हुआ, जिन्होंने बाईबल का अंग्रेजी में अनुवाद किया। उन्होंने जोर देकर कहा कि न तो पोप और न ही याजक विश्वास के मानक को निर्धारित कर सकता है, परन्तु केवल बाईबल ही। यह दिखाते हुए कि चर्च के कई सिद्धांत, अनुष्ठानों और नियमों का पवित्रशास्त्र में कोई आधार नहीं है, उसने पुरोहिताई को ह्रास और शक्ति के दुरुपयोग के लिए दोषी ठहराया।

इस प्रकार प्रोटेस्टेंट धर्म-शोधन की जड़ें चौदहवीं शताब्दी इंग्लैंड में पड़ीं थीं, जब पोप की गरिमा अधम हो चुकी थी। पंद्रहवीं शताब्दी बोहेमिया और इटली में भी इसी तरह के सुधार के लिए आंदोलन उठे, लेकिन उन्हें कुचल दिया गया और उनके नेताओं को मार डाला गया। संट पीटर की बेसिलिका बनाने के संबंध में धन जुटाने के लिए, पोप लियो एक्स ने अनुग्रह बेचना शुरू किए, जिसकी कैथोलिक सिद्धांत ने पुष्टि की, कि अगले जीवन में पाप के दंड को क्षमा किया जाएगा। जर्मनी में जब इस अनुग्रह की घोषणा की गई, तो इस दुर्व्यवहार का विरोध करने के लिए १५१७ में एक आंदोलन ने जन्म लिया जो

प्रोटेस्टेंट धर्म-शोधन के नाम से मार्टिन लूथर (१४८३-१५४६), विटनबर्ग विश्व-विद्यालय में बाईबल के आध्यात्मविद्या के प्राध्यापक के नेतृत्व में लोकप्रिय हुआ। धर्म-शोधन की ज्वाला मजबूत होती गई और जल्द ही स्विट्जरलैंड में सन (१५०९-१५६४) हूलड्रिक ज़िंग्ली के नेतृत्व में, फ्रांस में सन (१४८४-१५३१) जॉन कैल्विन के नेतृत्व में, इंग्लैंड और नेदरलैंड जैसे देशों में फैल गई।

प्रोटेस्टेंट आंदोलन पर आधारित धर्म युद्ध एक सौ वर्ष से अधिक सन १६४८ तक जारी रहे, जब तक वेस्टफालिया की संधि ने तीस वर्ष के युद्ध की समाप्ति न कर दी। उत्तरी यूरोप के लोगों में प्रोटेस्टेंट धर्म की विजय हुई, जबकि दक्षिणी यूरोप में रोमन कैथोलिक चर्च ने अपना प्रभाव दृढ़ किया।

प्रोटेस्टेंट और कैथोलिक लोगों के बीच तीस साल का युद्ध जर्मनी की मिट्टी पर लड़ा गया था। हालांकि, यह संघर्ष केवल एक धार्मिक युद्ध नहीं था। इससे अधिक, यह नागरिक और राजनीतिक संघर्ष था जिसने जर्मन राज्यों के भाग्य का फैसला किया। वेस्टफालिया की संधि, जिसने इस युद्ध को समाप्त किया, दोनों धार्मिक, प्रोटेस्टेंट और कैथोलिक लोगों के बीच, राजनीति के बीच स्थापित किए गए समझौते थे, जिन्होंने ऑस्ट्रिया, फ्रांस, स्वीडन और स्पेन जैसे देशों के बीच अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्रीय विवादों को हल किया।

संभाग २

धार्मिक और वैचारिक संघर्ष के काल

(१६४८-१७८९)

धार्मिक और वैचारिक संघर्ष की अवधि १४० वर्ष का वर्णन करती है जो प्रोटेस्टेंट धर्म की सुरक्षित स्थापना के साथ १६४८ में वेस्टफालिया की संधि से शुरू हुई और १७८९ में फ्रांसीसी क्रांति के साथ समाप्त हुई। क्योंकि आधुनिक लोगों ने अपनी मौलिक प्रकृति से निकलने वाली आंतरिक और बाहरी इच्छाओं की पूर्ति के लिए कोशिश जारी रखी, वे धर्म और विचारों की स्वतंत्र अभिव्यक्ति से उठने वाले धर्म और दर्शनशास्त्र के विवादों और आध्यात्मविद्या के विभाजन से नहीं बच सके।

जैसा कि पहले चर्चा की गई थी, परमेश्वर ने अपनी पुनरुद्धार के दैवी योजना में व्यक्तिगत स्तर से लेकर विश्व स्तर तक, सारे इतिहास में बार-बार कैन पक्ष का प्रतिनिधित्व करने वालों को हाबिल पक्ष का प्रतिनिधित्व करने वालों से अलग करने का कार्य किया। अंतिम दिनों में, यह पतित संसार कैन-वर्गीय कम्युनिस्ट दुनिया और हाबिल-वर्गीय लोकतांत्रिक दुनिया में विभाजित हो गया। जिस तरह से आदम के परिवार में यदि कैन ने हाबिल के सामने आत्मसमर्पण किया होता और उसका आज्ञाकारी बन जाता तो वास्तविक नींव डाली जा सकती थी, अंतिम दिनों में विश्वव्यापी वास्तविक नींव डालने के लिए कैन-वर्ग की दुनिया को हाबिल-वर्ग की दुनिया के सामने आत्मसमर्पण करना आवश्यक है इससे पहले कि हम दूसरे आगमन के मसीह को ग्रहण करें और एक संयुक्त दुनिया साकार कर सकें। ऐसा होने के लिए, जीवन की इन दोनों धारणाओं का, जो बाद में दो दुनियाओं में परिपक्व हो जाएंगी, इस अवधि में विकसित होना आवश्यक है।

२.१. कैन वर्गीय जीवन धारणा

मूल प्रकृति के बाहरी पहलुओं की खोज ने यूनानी सभ्यता हेलेनिज़्म की प्राचीन विरासत को पुनर्जीवित करने के लिए पहले एक आंदोलन उठाया और नवजागरण के मानववाद को जन्म दिया। नवजागरण मानववाद ने परमेश्वर की भक्ति और धार्मिक समर्पण से अधिक मनुष्यों की गरिमा और प्राकृतिक दुनिया के मूल्य को बढ़ावा देकर मध्ययुगीन संस्कृति का विरोध किया। मध्ययुगीन विचार ने परमेश्वर की आज्ञा मानने को अधिकतम महत्व दिया जबकि प्राकृतिक दुनिया को लघुतम मूल्य दिया और यहां तक कि मानव शरीर को अधम और पापी प्रमाणित किया। नवजागरण ने जीवन का एक नया दृष्टिकोण स्थापित किया, जिसने मनुष्यों और प्रकृति के मूल्य को बढ़ाया और उन्हें तर्क शक्ति और अनुभव, तर्कशास्त्र और प्रयोग के माध्यम से समझने का प्रयत्न किया। प्राकृतिक विज्ञान की प्रगति से प्रेरित, जीवन के इस दृष्टिकोण ने आधुनिक दर्शन की दो प्रमुख धारणाओं को जन्म दिया: तर्कवाद, निगमनात्मक विधि के आधार पर, और अनुभववाद, आगमनात्मक प्रेरक विधि के आधार पर।

तर्कवाद, फ्रांसीसी दार्शनिक रेने डेस्कार्टेस (१५९६-१६५०) द्वारा स्थापित हुआ, उसने कहा कि सत्य की जांच केवल मनुष्यों की सूझ-बूझ से ही स्थापित की जा सकती है। इतिहास और परंपरा से

प्राप्त हर सच्चाई पर संदेह करने के बाद, डेस्कार्टेस केवल अपने तर्क के सहारे टिका रहा, जैसा कि उसने अपने प्रस्ताव में व्यक्त किया गया है, “मैं सोचता हूँ, इसलिए मैं हूँ।” इस पहले सिद्धांत से, उसने बाहरी दुनिया के बारे में ज्ञान की पुष्टि करने के लिए निगमनात्मक विधि का उपयोग किया। यद्यपि डेस्कार्टेस ने स्वीकार कर लिया और यहां तक कि तर्क के आधार पर परमेश्वर के अस्तित्व को प्रमाणित करने की कोशिश भी की, परंतु बाद में तर्कवादियों ने संदेह व्यक्त किया और यहाँ तक कि परमेश्वर के अस्तित्व को मानने से इनकार कर दिया।

अंग्रेजी दार्शनिक फ्रांसिस बेकन (१५६१-१६२६) ने अनुभववाद की स्थापना की, जिसमें कहा गया कि सत्य की जांच केवल किसी के अनुभव के माध्यम से की जा सकती है। इस दर्शन ने जोर देकर कहा कि मानव मस्तिष्क (टैबुला रासा) कागज के एक खाली पन्ने की तरह है। इसका मानना था कि नए ज्ञान को प्राप्त करने के लिए, किसी को अपनी सभी पूर्व धारणाओं को मिटा देना चाहिए और बाहरी दुनिया के अनुभव और अवलोकन के माध्यम से सत्य को समझने की कोशिश करनी चाहिए। तर्कवाद, जिसने परमेश्वर से मुंह मोड़ कर मानव तर्क-शक्ति को महत्व दिया, और अनुभववाद ने मानव अनुभव और प्रयोगात्मक विज्ञान को महत्व दिया, दोनों ने रहस्यवाद और अंधविश्वास का त्याग किया। मानव जीवन के मार्गदर्शन के लिए चाहे उन्होंने तर्क-शक्ति या आनुभविक अवलोकन का उपयोग किया, फिर भी वे दोनों मनुष्य और प्राकृतिक दुनिया को परमेश्वर से अलग कर देने के लिए प्रतिबद्ध थे।

नवजागरण ने इन दो विचार-धाराओं को प्रक्षेपित किया, जो मानववाद में निहित थीं। परमेश्वर की तलाश करने के लिए आंतरिक झुकाव को सहज करने के बजाय, इसने जीवन के एक नए दृष्टिकोण को जन्म दिया जिसने लोगों को केवल बाहरी वस्तुओं की खोज करने के लिए प्रोत्साहित किया। इस तरह इसने परमेश्वर के मार्ग को अवरुद्ध कर दिया और लोगों को शैतान के दायरे में ढकेल दिया। इस कारण से, इसे जीवन का कैन-वर्गीय दृष्टिकोण कहा जाता है। अठारहवीं शताब्दी के अंत तक, जीवन के कैन-वर्गीय दृष्टिकोण ने इतिहास और परंपरा द्वारा स्थापित सत्यों को तोड़ दिया। मानव जीवन के सभी मामलों का तर्क या अनुभाविक अवलोकन द्वारा निर्णय लिया जाने लगा। बाकी सब कुछ जो विवेकहीन या अन्य-सांसारिक प्रतीत होता था, जिसमें बाईबल के परमेश्वर पर विश्वास करना भी शामिल है, इन सब का पूरी तरह से अवमूल्यन कर दिया गया। लोगों के दिल और दिमाग़ को बारीकी से प्रायौगिक जीवन की ओर निर्देशित किया गया। प्रबोधन एक ऐसी विचारधारा थी, जो अनुभववाद और तर्कवाद के दो रुझानों से विकसित हुई थी। फ्रांसीसी क्रांति के पीछे प्रबोधन प्रेरक शक्ति थी।

आस्तिकता, जीवन के कैन-वर्गीय दृष्टिकोण की प्रवक्ता थी जो अंग्रेजी दार्शनिक एडवर्ड हरबर्ट (१५८३-१६४८) द्वारा स्थापित की गयी थी। आस्तिकता की आध्यात्मविद्या मानव विचार-शक्ति में पूरी तरह से स्थापित थी। आस्तिक वाद ने इस धारणा को खारिज कर दिया कि आकाशवाणी और तर्क के बीच भी कोई सद्भाव हो सकता है, जो थॉमस एक्विनास के समय से पारंपरिक दृष्टिकोण था। उन्होंने निर्माता परमेश्वर को सीमित कर दिया था, जिसने विश्व को गति में नियत करके, प्रकृति के नियमों के अनुसार जो उसने स्वयं निश्चित किए थे, अपने आप चलने के लिए छोड़ दिया। उन्होंने इस बात को

मानने से इनकार किया कि लोगों को दिव्य प्रकटन या चमत्कार की आवश्यकता है।

उन्नीसवीं शताब्दी की शुरुआत में, जर्मन दार्शनिक जी. डब्ल्यू. एफ. हेगेल (१७७०-१८३१) ने अठारहवीं सदी के आदर्शवाद का व्यापक संश्लेषण किया। परंतु, हेगेल के कई अनुयायी फ्रांसीसी प्रबोधन की नास्तिकता और भौतिकवाद से प्रभावित थे और उन्होंने वाम-पक्ष हेगेलियनवाद के अनुयायी वर्ग का प्रचार किया, जिसने हेगेल के द्वंद्वात्मक तर्कसंगत को पलट दिया। डी. एफ. स्ट्रॉस (१८०८-१८७४), जो वाम-पक्ष हेगेलियनवादी था उसने *'लाइफ ऑफ जीसस'* पुस्तक लिखी, जिसमें उसने बाईबल में यीशु के चमत्कारों को निषेद किया और अपने भरोसेमंद अनुयायियों द्वारा उन्हें बनावट के रूप में अस्वीकार कर दिया। लुडविग फ्यूअरबाख़ ने (१८०४-१८७२) *ईसाई धर्म की प्राथमिक शिक्षा* पर यह कह कर तर्क-वितर्क किया कि परमेश्वर लोगों के आंतरिक मनोवैज्ञानिक प्रकृति के प्रक्षेपण के अलावा और कुछ नहीं है। उनके तर्क आधुनिक नास्तिकता और भौतिकवाद के लिए आधारभूत बन गए।

कार्ल मार्क्स (१८१८-१८८३) और फ्रेडरिक एंगल्स (१८२०-१८९५) ने हेगेल के वाम-पक्षीय तर्क को द्वंद्वात्मक भौतिकवाद के रूप में व्यवस्थित किया। वे स्ट्रॉस और फ्यूअरबाख़ और फ्रांस के समाजवाद से भी प्रभावित थे। उन्होंने साम्यवाद की विचारधारा बनाने के लिए नास्तिकता और समाजवाद के साथ द्वंद्वात्मक भौतिकवाद को जोड़ा। इस तरह, जीवन के कैन-वर्ग का दृष्टिकोण, जो नवजागरण के बाद प्रबोधन के द्वारा नास्तिकता और भौतिकवाद में फला और मार्क्सवाद की अनीश्वरवादी विचारधारा में परिपक्व हो गया, जो आज की कम्युनिस्ट दुनिया का आधार बन गया।

२.२ हाबिल वर्गीय जीवन धारणा

कुछ लोग मध्यकालीन युग से लेकर आधुनिक दुनिया तक इतिहास की प्रगति को एक प्रक्रिया के रूप में देखते हैं जिसने लोगों को ईश्वर और धर्म से अलग कर दिया है। ऐसा इसलिए है क्योंकि वे इतिहास को जीवन के कैन-वर्गीय दृष्टिकोण के अनुसार ही देखते हैं। मूल प्रकृति, जबकि न केवल बाहरी मूल्यों को ही खोजती है; पर वह आंतरिक मूल्य भी तलाशती है। अपनी मूल प्रकृति से प्रेरित होकर मध्ययुगीन लोगों ने जब आंतरिक मूल्यों की खोज की तब यहूदी धर्म को पुनर्जीवित करने के लिए एक आंदोलन का जन्म हुआ जो प्रोटेस्टेंट धर्म-शोधन में फलित हुआ। धर्म-शोधन ने दर्शनशास्त्र और धार्मिक शिक्षाओं को जन्म दिया जिसने मनुष्यों की परमेश्वर द्वारा दी गई मूल प्रकृति को समझने के लिए जीवन के बहु-आयामी दृष्टिकोण को विकसित किया। हम इसे जीवन के हाबिल-वर्गीय दृष्टिकोण कहते हैं। जबकि जीवन के कैन-वर्गीय दृष्टिकोण से लोगों में परमेश्वर पर विश्वास की घटी हुई, जीवन के हाबिल-वर्गीय दृष्टिकोण ने आधुनिक लोगों को गहरे और अधिक विचारशील तरीके से परमेश्वर की तलाश करने के लिए निर्देशित किया।

जर्मन दार्शनिक इमानुएल कांट ने (१७२४-१८०४) दार्शनिक रूप से मनुष्य की मूल प्रकृति के आंतरिक और बाहरी लक्ष्यों का विश्लेषण किया, इस प्रकार दार्शनिक क्षेत्र में जीवन के हाबिल-वर्ग के

दृष्टिकोण को अग्रणी बनाया।[७५०] अपने आलोचनात्मक दर्शन में उसने अनुभववाद और तर्कवाद के विरोधाभासी सिद्धांतों का समर्थन किया। कांट के अनुसार, हमारे विभिन्न इन्द्रियबोध बाहरी वस्तुओं के संपर्क से होते हैं। यह हमें केवल अनुभूति की अंतर्वस्तु ही दे सकते हैं लेकिन अनुभूति को यथार्थ नहीं बना सकते। पूर्ण अनुभूति के लिए एक निश्चित अंतर्ज्ञान और विचार होने चाहिए (*जो प्राथमिक* और *अनुभवातीत* हैं), जिनसे हम विभिन्न अंतर वस्तुओं को (जो *उत्तरकालीन* और आनुभविक हैं) कृत्रिम निर्णय के द्वारा एकजुट कर सकें। अंतर्ज्ञान और विचार के ये रूप ही स्वयं की विशिष्टता हैं। इसलिए अनुभूति तब ही कार्यान्वित हो सकती है जब बाहरी वस्तुओं से आनेवाली विभिन्न संवेदनाओं को समेकित करके सोच और समझ की सहज क्रिया के द्वारा व्यक्तिपरक रूपों के साथ संयुक्त किया जाता है। इस प्रकार, कांट ने अनुभववाद को उलट दिया, जिसमें कहा गया था कि अनुभूति बाहरी वस्तुओं द्वारा निर्धारित होती है, और एक नई परिकल्पना स्थापित की, कि अनुभूति आत्मपरक मन के द्वारा नियंत्रित की जाती है। कांट के दर्शन के बाद कई आदर्शवादी दार्शनिक आए: जोहान जी फिच (१७६२-१८१४), फ्रेडरिक शेलिंग (१७७५-१८५४) और जी.डब्ल्यू. एफ. हेगेल। हेगेल ने विशेष रूप से, हेगेलियन डायलेक्टिक (हेगेल के तर्कशास्त्र) के आधार पर एक नए दर्शन की अग्रगामी की। उनके आदर्शवाद ने दर्शन के क्षेत्र में जीवन के हाबिल-वर्गीय दृष्टिकोण को मजबूत किया।

धार्मिक क्षेत्र में, नए आंदोलन उभरे जिन्होंने धर्म में तर्कवाद के प्रबल प्रभाव का विरोध किया और धार्मिक उत्साह और आंतरिक जीवन के महत्व पर ज़ोर दिया। उन्होंने मत और अनुष्ठानों से अधिक रहस्यमय अनुभव की सराहना की। उदाहरण के लिए, फिलिप स्पेसनर (१६३५-१७०५) के नेतृत्व में जर्मनी में भक्तिवाद निकला। इस आंदोलन में एक सबल रूढ़िवादी झुकाव था और इसने परंपरागत विश्वास को पालन करने के साथ-साथ आध्यात्मिक अनुभव पर भी जोर दिया।

भक्तिवाद इंग्लैंड में फैल गया और वहां विश्वासी लोगों के बीच फला और नए चर्च के आंदोलनों को जन्म दिया, जिसमें मेथोडिस्ट धर्म भी शामिल था, जो वेस्ले भाइयों (जॉन, १७०३-१७९१), और चार्ल्स, (१७०७-१७८८) द्वारा स्थापित किया गया था। इंग्लैंड में जो आध्यात्मिक निष्क्रियता की स्थिति में था, उनके कामों ने महान पुनर्जागरण लाया।

जॉर्ज फॉक्स (१६२४-१६९१), अंग्रेजी रहस्यवादी ने क्वेकर्स की स्थापना की, जिन्होंने जोर देकर कहा कि मसीह आंतरिक प्रकाश है जो विश्वासियों की आत्माओं को प्रकाशित करता है। उन्होंने आग्रह किया कि जब तक कि कोई व्यक्ति पहले पवित्र आत्मा प्राप्त नहीं करता है, तब तक वह यीशु के साथ रहस्यमय संघ में शामिल होकर और मसीह के आंतरिक प्रकाश का अनुभव नहीं करता है, तब तक वह

---

[७५०] कांट के नैतिक सिद्धांत ने इस मुद्दे को और स्पष्ट रूप से लागू किया, कांट का मानना है कि न तो कारण और न ही आलोचना परमेश्वर के ज्ञान के लिए एक पक्का आधार प्रदान कर सकता है। उन्होंने तर्क दिया कि हम नैतिक सिद्धांत के माध्यम से परमेश्वर की वास्तविकता को सबसे ज्यादा समझ सकते हैं, जो हर व्यक्ति की अंतरात्मा में काम करता है। इस प्रकार, उसने जीवन के हाबिल-वर्गीय दृष्टिकोण के लिए तार्किक आधार दिया। ई.डी.

बाईबल के वास्तविक अर्थ को समझ नहीं सकता। क्वेकर्स ने इंग्लैंड में गंभीर उत्पीड़न का सामना किया लेकिन अंततः अमेरिका में समृद्ध हुए।

इमानुएल स्वीडनबोर्ग (१६८८-१७७२) एक प्रसिद्ध वैज्ञानिक थे जिनकी आध्यात्मिक इंद्रियाँ जाग्रत हो गईं थीं; उन्होंने आत्मा-लोक की व्यवस्थित जांच शुरू की और उसके कई रहस्यों की जानकारी की। यद्यपि उनकी शोध को बहुत अरसे तक धर्मशास्त्रियों ने उपेक्षित किया, परंतु हाल ही में, क्योंकि बहुत से लोग आत्मा-लोक के साथ संपर्क स्थापित कर रहे हैं, इसका महत्व धीरे-धीरे पहचाना जा रहा है। इन विविध तरीकों से, आज के लोकतांत्रिक दुनिया बनाने के लिए जीवन का हाबिल-वर्गीय दृष्टिकोण परिपक्व हो रहा है।

संभाग ३

राजनीति, अर्थनीति और सैद्धांतिक विचारधाराओं के परिपक्व होने की अवधि (१७८९-१९१८)

पिछली अवधि में धार्मिक और दार्शनिक संघर्षों के फलस्वरूप जीवन के कैन-वर्गीय और हाबिल-वर्गीय विचार धाराओं की शुरुआत हुई। इस नई अवधि के आरंभ में अपने अलग-अलग रास्ते लेकर—राजनीति, अर्थव्यवस्था और वैचारिकी (धर्म और दर्शन का क्षेत्र)—जीवन के दो दृष्टिकोण परिपक्व हुए। जैसे-जैसे वे परिपक्व हुए, उन्होंने दो विभिन्न रूपों के साथ दो विविध सामाजिक रूपों की स्थापना की: एक कैन-वर्गीय समाज और दूसरा हाबिल-वर्गीय समाज। उसी समय, राजनीति, अर्थव्यवस्था और वैचारिकी आदर्श दुनिया में कदम रखने से ठीक पहले मंच पर आ गए। यह अवधि फ्रांसीसी क्रांति से लेकर औद्योगिक क्रांति से होती हुई प्रथम विश्व युद्ध के अंत तक चली।

३.१ लोकतंत्र

इतिहास की प्रगति के संदर्भ में लोकतंत्र के बारे में पहले की गई चर्चा, जिसके कारण इसका उदय हुआ,[७५१] सामाजिक परिवर्तनों तक ही सीमित थी। यहां हम विचारधारात्मक ज्वार पर सवार होकर आज के लोकतंत्र के उदय होने के पीछे आंतरिक विकास की, विशेष रूप से यह इतिहास की किन लहरों और भंवरों में से निकली, जांच करेंगे।

नौवीं शताब्दी के ईसाई साम्राज्य की अवधि में, परमेश्वर का इरादा था कि पोप द्वारा शासित आध्यात्मिक साम्राज्य और सम्राट द्वारा शासित सांसारिक साम्राज्य संयुक्त होकर एक मसीही साम्राज्य की नींव के रूप में ईसाई राजशाही समाज की स्थापना करें। तब मसीह के लिए नींव स्थापित हो जाती। एक पुष्ट मसीही साम्राज्य की स्थापना यूरोप में जल्द ही सामंतवाद का अंत ला सकती थी। परंतु, चूँकि यह दैवी योजना साकार नहीं हुई, सामंतवाद जारी रहा, और यूरोप के राजनीतिक, धार्मिक और आर्थिक इतिहास ने विकास के अलग-अलग मार्ग लिए। धर्मयुद्ध के बाद सामंती प्रभुओं की राजनीतिक शक्ति खत्म होने लगी, नवजागरण और धर्म-शोधन के दौरान यह और गिरती गई और प्रबोधन काल तक बिलकुल कमजोर हो गई। सत्रहवीं शताब्दी तक, सामंती प्रभुओं ने राजाओं को अपनी राजनीतिक शक्ति काफी हद तक दे दी, जिन्होंने केंद्रीकृत राष्ट्र-राज्यों का निर्माण किया और पूर्ण राजशाही के रूप में उनका शासन किया। राजाओं ने राजाओं के दैवी अधिकार के सिद्धांत द्वारा अपनी सर्वोच्च शक्ति को सही ठहराया।

पूर्ण राजशाही के उदित होने के सामाजिक कारणों में, पहला, नए नागरिक वर्गों का उभरना शामिल था, जो सामंती प्रभुओं से लड़ने के लिए राजाओं के साथ मिल गए थे। दूसरा, आर्थिक क्षेत्र में, शक्तिशाली राज्यों के लिए व्यापार की आर्थिक कूट-नीति की आवश्यकता उत्पन्न हुई जो अपने राष्ट्रीय

[७५१] समान्तर ७.२

आर्थिक हितों को आगे बढ़ाने के लिए व्यापार की रक्षा और नियंत्रण कर सके। सामंतवाद को ख़त्म करने और व्यापार के आधार पर टिकाऊ अर्थव्यवस्था बनाने के लिए राष्ट्र-राज्य की शक्तिशाली नींव की आवश्यकता थी।

पूर्ण राजशाही का उदित होना दैवी इतिहास की प्रगति से भी जुड़ा हुआ है, जिसके लिए सामंतवादी समाज का राजशाही में समेकित होना आवश्यक है। तथापि, कैरोलिंगियन काल में परमेश्वर की अपने राज्य को स्थापित करने की दैवी योजना के विफल हो जाने के बाद, क्योंकि उस समय पोप और सम्राट एकजुट नहीं हुए, फल स्वरूप पोप के शासन के तहत आने वाला सामंती समाज भ्रष्ट हो गया। इस तरह शैतान की विकासशील कार्रवाई के अनुसार, जो उसने पहले ही स्थापित कर ली थी, शैतान ने अपने पक्ष में राजशाही समाजों को जन्म दिया।

आइए अब हम पुनरुद्धार की दैवी योजना के संबंध में पूर्ण राजशाही की समाप्ति के पीछे वैचारिक प्रवृत्तियों की जांच करें, जो जीवन के कैन-वर्गीय दृष्टिकोण के आधार पर कम्युनिस्ट दुनिया के उदय होने की ओर और जीवन के हाबिल-वर्गीय दृष्टिकोण के आधार पर लोकतांत्रिक दुनिया की ओर बढ़ रही थीं। चूंकि मध्ययुगीन सामंती समाज यहूदी धर्म और यूनानी सभ्यता दोनों के विरोध में था, इन दोनों विचारधाराओं ने, एक के बाद एक, इसे तोड़ने का काम किया और जीवन के कैन-वर्गीय और हाबिल-वर्गीय दृष्टिकोण पर बने समाजों की स्थापना की। उसी तरह, प्रोटेस्टेंट धर्म-शोधन के बाद पूर्ण राजशाही ने लोगों को धर्म की स्वतंत्रता से वंचित किया, जो लोकतांत्रिक ईसाई धर्म द्वारा प्रस्तावित मूल्य था। इस प्रकार पूर्ण राजशाही ने जीवन के हाबिल-वर्गीय दृष्टिकोण के लक्ष्य के विरोध में काम किया। इसके अतिरिक्त, उस समाज में सामंतवाद का प्रभाव, मुख्य नास्तिक और भौतिकवादियों के पक्षसमर्थन के परिणामस्वरूप, नागरिक वर्ग की प्रगति में बाधा बन गया, इस प्रकार से उन्होंने जीवन के कैन-वर्गीय दृष्टिकोण के लक्ष्य का खण्डन किया। इस तरह, जीवन के इन दो दृष्टिकोण ने एक के बाद एक पूर्ण राजशाही को गिराने का काम किया। उन्होंने कैन-वर्गीय और हाबिल-वर्गीय लोकतंत्र स्थापित किए, जो अंततः कम्युनिस्ट दुनिया और लोकतांत्रिक दुनिया में परिपक्व होने वाले थे।

३.१.१ कैन-वर्गीय लोकतंत्रवाद

कैन-वर्गीय लोकतंत्र फ्रेंच क्रांति से निकला। फ्रांसीसी क्रांति के समय फ्रांस प्रबोधन (एनलाईटेनमेंट) की पकड़ में था। प्रबोधन की विचारधारा जीवन के कैन-वर्गीय दृष्टिकोण में निहित थी और नास्तिकता और भौतिकवाद में विचलित हो रही थी। प्रबोधन से प्रभावित होकर, फ्रांसीसी नागरिक पूर्ण राजशाही की त्रुटियों के प्रति जागृत हुए। उनमें सामंती व्यवस्था के अवशेषों को भी तोड़ डालने की व्यापक इच्छा थी, जो अभी भी समाज में गड़ी हुईं थीं।

प्रजातंत्र की लोकप्रिय मांग के कारण फ्रांसीसी क्रांति ने १७८९ में जड़ पकड़ी, इसका प्रशिक्षण उस समय के नागरिकों ने प्रबोधन से प्राप्त किया था। उन्होंने सत्तारूढ़ वर्ग की शक्ति को खत्म करने,

सामंतवाद के अवशेषों को मिटाने और सामान्य नागरिकों के लिए स्वतंत्रता और समानता स्थापित करने की मांग की। फ्रांसीसी क्रांति ने मनुष्यों के अधिकारों की घोषणा के साथ लोकतंत्र की स्थापना की। फिर भी, फ्रांसीसी क्रांति से पैदा हुआ लोकतंत्र कैन-वर्गीय लोकतंत्र था। यद्यपि उसने निरपेक्षता को नष्ट किया, लेकिन उसने जीवन के कैन-वर्गीय दृष्टिकोण को दृढ़ता से सुरक्षित करने की मांग की। फ्रांसीसी क्रांति के पीछे प्रमुख विचारक प्रबोधन की हस्तियाँ थीं, जैसे डेनिस डाइडरोट (१७१३-१७८४) और जीन ले रोन्ड डी' एलेम्बर्ट (१७१७-१७८३), जो नास्तिकता या भौतिकवाद से जुड़े रहे। इसके अतिरिक्त, इनकी व्यक्तिगत स्वतंत्रता और समानता के आदर्शों के बावजूद, फ्रांसीसी लोकतंत्र के वास्तविक पथ का रुख़ क्रांति के दौरान और बाद में सर्वसत्तावाद की ओर रहा।

इस तरह, जीवन के कैन-वर्गीय दृष्टिकोण को बढ़ावा देने वालों ने प्रबोधन का समर्थन किया, फ्रांसीसी क्रांति को जन्म दिया और कैन-वर्गीय लोकतंत्र की स्थापना की। परंतु इसने परमेश्वर को तलाश करने की मानव भावना के झुकाव को बिलकुल अवरुद्ध कर दिया। चूंकि यह अपने एकमात्र ध्यान के साथ जीवन के बाहरी पहलुओं पर विकसित होता रहा था, इसे आग चलकर जर्मनी में मार्क्सवाद और रूस में लेनिनवाद में व्यवस्थित किया गया, अंत में इससे कम्युनिस्ट दुनिया का निर्माण किया गया।

३.१.२ हाबिल वर्गीय लोकतंत्र

अपनी उत्पत्ति से, इंग्लैंड और संयुक्त राज्य अमेरिका में उभरे लोकतंत्र फ्रांसीसी क्रांति से पैदा हुए लोकतंत्र से पृथक थे। पिछला लोकतंत्र कैन-वर्गीय लोकतंत्र था जो नास्तिकों और भौतिकवादियों द्वारा स्थापित किया गया था, जो जीवन के कैन-वर्गीय दृष्टिकोण से उठा था, उन्होंने निरंकुशता और सामंतवाद को अंत करने का प्रयास किया। दूसरी तरफ, अंग्रेज़ी और अमेरिकी लोकतंत्र, सच्चे ईसाइयों द्वारा स्थापित किए गए थे, जो जीवन के हाबिल-वर्गीय दृष्टिकोण के फल थे, और वे धार्मिक स्वतंत्रता के लिए निरंकुशता के साथ विजयी लड़ाई से पैदा हुए थे। इसलिए यह हाबिल-वर्गीय प्रजातंत्र राज्य थे।

आइए हम देखते हैं कि इंग्लैंड और संयुक्त राज्य अमेरिका में हाबिल-वर्गीय प्रजातंत्र राज्य कैसे स्थापित किया गया। इंग्लैंड में जेम्स प्रथम (राजपरिवार १६०३-१६२५) ने निरंकुश राजवाद और राज्य-चर्च को मज़बूत किया और प्यूरिटन्स (नैतिकवादी) और अन्य असहमत ईसाइयों को सताया, जिनमें बहुत से लोग धार्मिक स्वतंत्रता की तलाश में अन्य यूरोपीय देशों या अमेरिकी महाद्वीप में भाग गए थे। उसके बेटे चार्ल्स प्रथम (राजपरिवार १६२५-१६४९) ने १६४० में स्कॉटलैंड के प्रेस्बिटेरियन लोगों के विद्रोह का सामना किया जो राष्ट्रीय वाचा के हक में लड़ रहे थे। प्यूरिटन लोग, जो अंग्रेजी संसद के मूल सदस्य थे, उन्होंने तब १६४२ में ओलिवर क्रॉमवेल के नेतृत्व में प्यूरिटन क्रांति की शुरुआत की।

बाद में, चार्ल्स द्वितीय ने (राजपरिवार १६६०-१६८५) निरंकुश राजवाद को बहाल किया और अन्य सभी ईसाइयों के विरोध में एंग्लिकन चर्च को मजबूत किया, और उसके बेटे जेम्स द्वितीय (राजपरिवार १६८५-१६८८) ने खुद को कैथोलिक घोषित कर दिया। प्रोटेस्टेंट नेताओं ने विलियम ऑफ़ ऑरेंज (राजपरिवार १६८८-१७०२), और उनके दामाद को, जो उस समय नीदरलैंड के प्रमुख न्यायाधीश

थे, इस संघर्ष में हस्तक्षेप करने के लिए निमंत्रित किया। सन १६८८ में, धार्मिक स्वतंत्रता और नागरिक अधिकारों की रक्षा के लिए विलियम इंग्लैंड में अपने सैनिकों के साथ उतरे। उसके राज्याभिषेक के बाद, विलियम ने संसद द्वारा उसे दिए गए अधिकारों की घोषणा को स्वीकृति दी, जिससे संसद के स्वतंत्र अधिकारों को मान्यता मिली। यह अंग्रेजी संवैधानिक राजशाही के लिए आधारभूत बन गया। चूँकि, १६८८ की क्रांति रक्तपात के बिना पूरी की गई थी, इसलिए इसे महान क्रांति के रूप में जाना जाने लगा।

यद्यपि इन अंग्रेजी क्रांतियों के बाहरी कारण थे, जैसे कि शासक वर्ग से नागरिकों की राजनीतिक स्वतंत्रता की इच्छा, जिसमें एंग्लिकन पुरोहिताई सहित कुलीन लोग भी शामिल थे, इससे अधिक धार्मिक स्वतंत्रता प्राप्त करने की प्रबल प्रेरणा के आंतरिक कारण भी थे।

कई प्यूरिटन लोग और असंतुष्ट ईसाइयों ने जिन्हें इंग्लैंड में सताया गया था, धार्मिक स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए अमेरिकी महाद्वीप में उत्प्रवास कर किया। उन्होंने एक स्वतंत्र राष्ट्र स्थापित किया और १७७६ में अमेरिकी लोकतंत्र की स्थापना की। जीवन के हाबिल-वर्ग के दृष्टिकोण से पैदा हुए हाबिल-वर्गीय लोकतंत्र, इन शुरुआतों से आज की लोकतांत्रिक दुनिया में विकसित हो गया है।

३.२ शक्तियों के अलगाव का महत्व

सरकार की शक्ति की तीन शाखाओं को अलग करने की अवधारणा के अभिवक्ता मोंटेस्क्यू (१७८९-१७५५) थे, जो प्रबोधन के मुख्य विचारक थे। इन्होंने एक व्यक्ति या संस्था के हाथों में राजनीतिक शक्ति के केन्द्रीकरण को रोकने की मांग की, जैसा कि राजनीतिक निरंकुशता के मामले में था। यह अवधारणा फ्रांसीसी क्रांति के दौरान मनुष्य के अधिकारों की घोषणा में घोषित की गई थी।

आरंभ से ही शक्तियों के अलगाव की विशेषता उस आदर्श समाज की राजनीतिक संरचना थी जिसे साकार करने के लिए परमेश्वर काम कर था। फिर भी, जैसा कि हमने समस्त दैवी योजना के दौरान देखा है कि शैतान, परमेश्वर के सिद्धांत के किसी भी एक पहलू के साकार होने से पहले, उसकी दोषपूर्ण नकल करता आया है। इसलिए आइए हम आदर्श दुनिया की राजनीतिक संरचना की संक्षेप में जांच करें।

जैसा कि हमने देखा है कि विश्व एक पूर्ण मनुष्य की संरचना के नमूने पर बनाया गया है। उसी तरह, एक आदर्श दुनिया जो पूरी तरह से परिपक्व लोगों द्वारा बनाई जाने वाली है वह भी आदर्श व्यक्ति की संरचना और उसके कार्यों के सदृश्य है।[७५२] मानव शरीर की उपमा में, जिसके अंग मस्तिष्क के सूक्ष्म आदेशों के अनुसार कार्य करते हैं, आदर्श वैश्विक समाज के सभी संस्थानों को परमेश्वर की इच्छाओं का पालन करना होता है। जैसे ही मस्तिष्क के आदेश रीढ़ की हड्डी के माध्यम से परिधीय तंत्रिका तंत्र के द्वारा शरीर के हर हिस्से में फैल जाते हैं, आदर्श दुनिया में परमेश्वर के मार्गदर्शन को पूरे समाज में मसीह के माध्यम से व्यक्त किया जाता है, जो रीढ़ की हड्डी के अनुरूप होता है, और परमेश्वर से प्रेम करने वाले नेता परिधीय तंत्रिका तंत्र के समान होते हैं। परिधीय तंत्रिका तंत्र जो रीढ़ की हड्डी से निकल कर सारे शरीर में फैल जाता है यह देश के राजनीतिक दलों के अनुरूप है। इस प्रकार, यीशु मसीह के नेतृत्व में आदर्श

[७५२] प्रति-संदर्भ १.१, १.२, ३.२

दुनिया में परमेश्वर के लोग आज के राजनीतिक दलों के समान संगठन बनायेंगे।

मानव शरीर में, फेफड़े, दिल और पेट, मस्तिष्क के निर्देशों के अनुसार सामंजस्यपूर्ण परस्पर क्रिया बनाए रखते हैं जो रीढ़ की हड्डी और परिधीय तंत्रिका तंत्र के माध्यम से प्रसारित होते हैं। इसकी तुलना, आदर्श दुनिया में सरकार की तीन शाखाओं से की जा सकती है—वैधानिक, नियामक और प्रबंधक शाखाएं—मसीह और परमेश्वर के लोगों के द्वारा दिए गए परमेश्वर के निर्देशन से एक दूसरे के साथ सैद्धांतिक और सामंजस्यपूर्ण संबंध बनाकर कार्य करेंगी। जिस प्रकार, शरीर के चार अंग पूरे व्यक्ति के कल्याण के लिए मस्तिष्क के आदेशों के अनुसार काम करते हैं, आदर्श दुनिया के आर्थिक संस्थान जो अंगों के अनुरूप हैं परमेश्वर की इच्छा को बनाए रखेंगे और संपूर्ण विश्व के कल्याण को बढ़ावा देंगे। जैसे कि जिगर पूरे शरीर के लिए पोषण संचय करता है, आदर्श दुनिया में हमेशा सार्वजनिक भलाई के लिए एक आरक्षित संचय होगा जो आवश्यकता पड़ने पर काम आ सकता है।

चूंकि मानव शरीर के हर हिस्सों का मस्तिष्क के साथ लंबवत संबंध होता है, इसलिए एक क्रियाशील शरीर बनाने के लिए विभिन्न अंगों के बीच क्षैतिज रिश्ते स्वाभाविक रूप से स्थापित होते हैं। उसी प्रकार, आदर्श दुनिया में, चूँकि लोगों के एक-दूसरे के साथ क्षैतिज रिश्ते परमेश्वर के साथ लंबवत संबंध में निहित होंगे, वे एक संगठित और अन्योन्याश्रित समाज बनाएंगे जिसमें वे अपनी सभी खुशियाँ और दुख बाटेंगे। इस समाज में, किसी दूसरे को चोट पहुंचाना स्वयं को चोट पहुंचाने के रूप में अनुभव किया जाएगा। इसलिए, इसके नागरिक अपराध करने की सोच भी नहीं सकते।

आइए अब हम यह जांच करें कि, पुनरुद्धार की दैवी योजना में, परमेश्वर इस आदर्श सामाजिक संरचना को बहाल करने के लिए किस प्रकार काम कर रहा है। पाश्चात्य इतिहास के दौरान, एक समय था जब सरकार और राजनीतिक दलों की तीन शाखाओं के कार्यों को एक व्यक्ति, राजा पर केंद्रित किया गया था। जब राजा का सरकार पर प्रभुत्व होता था यह समय-समय पर संशोधित किया जाता था, जबकि पोप के नेतृत्व में चर्च ने राजनीतिक दल के समान भूमिका निभाई। राजनीतिक व्यवस्था में फ्रांसीसी और अमरीकी क्रांति के समय एक मुख्य परिवर्तन हुआ जब सरकार को तीन शाखाओं, वैधानिक, नियामक और प्रबंधक में विभाजित किया गया, और राजनीतिक दलों ने अलग-अलग भूमिकाएं निभाई। संवैधानिक लोकतंत्र की स्थापना के साथ, आदर्श राजनीतिक व्यवस्था के लिए ढांचा स्थापित हो गया।

इस प्रकार, इतिहास के दौरान राजनीतिक व्यवस्था बदलती रही, क्योंकि पतित समाज को आदर्श मानव समाज में पुनःस्थापित किया जा रहा था, जिसकी संरचना और कार्य एक पूर्ण व्यक्ति के नमूने पर बनाई जाएगी। आज के लोकतंत्र की विशेषता यह है कि वह सरकार की तीन अलग-अलग शाखाओं और राजनीतिक दलों में फैला हुआ है, जो कुछ हद तक एक स्वस्थ मानव शरीर की संरचना जैसा है। फिर भी, पतन के कारण, आजकल का लोकतंत्र वास्तव में एक बीमार या घायल व्यक्ति के शरीर के समान है। वे अपने मूल गुणों और कार्यों को अपनी पूर्ण क्षमता के साथ प्रदर्शित नहीं कर सकते। चूंकि राजनीतिक दल ईश्वर की इच्छा से अनजान हैं, इसलिए उनकी तुलना एक तंत्रिका तंत्र से की जा सकती है जो मस्तिष्क से निर्देशों को पूरे शरीर में भेजने में असमर्थ है। चूंकि संविधान परमेश्वर के वचन के

अनुसार नहीं लिखे गए हैं, इसलिए वर्तमान में सरकार की तीन शाखाएं ऐसे आंतरिक अंगों की तरह काम करती हैं जिनकी परिधीय नसें टूट गईं हैं और मस्तिष्क के आदेशों को समझ नहीं सकतीं या प्रतिक्रिया नहीं दे सकतीं हैं। उनमें व्यवस्था और सामंजस्य की कमी है, और अपने आप में लगातार संघर्ष का सामना करतीं हैं।

इसलिए, दूसरे आगमन में मसीह वर्तमान राजनीतिक व्यवस्था की बीमारी का समाधान करेगा, वह परमेश्वर के साथ लोगों के लंब संबंध को बहाल करेगा ताकि वे परमेश्वर के उद्देश्य को प्रतिबिंबित कर सकें। यह समाज की वास्तविक क्षमता को उजागर करेगा।

३.३ औद्योगिक क्रांति का महत्व

परमेश्वर का सृष्टि का आदर्श केवल एक निष्पाप दुनिया बनाकर ही पूरा नहीं किया जा सकता है। परमेश्वर ने मनुष्यों को विश्व पर प्रभुत्व करने का आशीर्वाद दिया है।[७५३] हमें रहने के लिए एक सुखद वातावरण बनाने के लिए प्रकृति के छिपे कानूनों और अग्रिम विज्ञान और प्रौद्योगिकी की तलाश करना चाहिए। धर्म और विज्ञान ने लोगों के आंतरिक और बाहरी पहलुओं की अज्ञानता को दूर करने के लिए संबंधित जिम्मेदारियों को निभाया है और उनकी मदद के लिए कंधा दिया है। इसलिए, इतिहास के अंतिम दिनों में, हमें न केवल सच्चाई के उत्थान की उम्मीद करना चाहिए जो लोगों को उनकी आध्यात्मिक अज्ञानता को पूरी तरह से कम करने के लिए मार्गदर्शन करे; पर हमें भौतिक विश्व के सभी रहस्यों को हल करने के लिए विज्ञान की प्रगति की उम्मीद भी करनी चाहिए।[७५४] वे मानव समाज को एक साथ आदर्श दुनिया की प्राप्ति से पहले इस स्तर पर लाएंगे। इस प्रकार, हम यह समझ सकते हैं कि इंग्लैंड में शुरू हुई औद्योगिक क्रांति, आदर्श दुनिया के लिए जीवन निर्वाह के वातावरण को उपयुक्त बनाने के लिए, परमेश्वर की प्रत्यावर्तन की दैवी योजना से उत्पन्न हुई थी।

आदर्श समाज की आर्थिक संरचना भी एक स्वस्थ मानव शरीर की संरचना के सदृश्य है। उत्पादन, वितरण और खपत के बीच ऐसा जैविक अन्योन्याश्रित संबंध होना चाहिए जैसे कि पाचन, परिसंचरण और चयापचय प्रणालियों के बीच होता है। अत्यधिक उत्पादन के कारण विनाशकारी प्रतियोगिता नहीं होनी चाहिए; न ही अनुचित वितरण के कारण अत्यधिक संचय या अतिउपभोग होना चाहिए, जो सार्वजनिक कल्याण के विपरीत होगा। आवश्यक और उपयोगी सामानों का पर्याप्त उत्पादन होना चाहिए, लोगों की जरूरतों की आपूर्ति करने के लिए यथेष्ट मात्रा में उचित वितरण, और सार्वजनिक उद्देश्य के अनुरूप खपत में उचित संतुलन होना चाहिए।

औद्योगिक क्रांति से निकले हुए बड़े पैमाने पर उत्पाद के कारण इंग्लैंड को कच्चे माल और माल के लिए बाज़ार के स्रोत के रूप में बहुत से उपनिवेशों पर अधिकार की मांग करने का अवसर मिला। इस तरह, औद्योगिक क्रांति ने सुसमाचार के प्रसार के लिए एक विशाल क्षेत्र खोला। तदनुसार, इसने पुनरुद्धार

---

[७५३] उत्पत्ति १:२८

[७५४] प्रति-संदर्भ—प्रलयोत्तर ४.३

की दैवी योजना के आंतरिक और बाहरी दोनों पहलुओं में योगदान किया।

३.४ महान शक्तियों का उत्थान

हमने देखा है कि नवजागरण के बाद, मध्ययुगीन यूरोप का संगठित विश्वावलोकन जीवन के कैन-वर्ग और हाबिल-वर्ग के विचारों में बांट गया था। इससे दो प्रकार की राजनीतिक क्रांति हुई और दो प्रकार के लोकतंत्र स्थापित हुए, दोनों औद्योगिक क्रांति के परिणामस्वरूप काफी मजबूत हुए। लोकतांत्रिक और कम्युनिस्ट दुनिया बनाने के लिए दो प्रकार के लोकतंत्र खड़े हुए।

औद्योगिक क्रांति के बाद, विज्ञान की तीव्र प्रगति से प्रेरित, औद्योगिकीकरण ने ऐसी अर्थ-व्यवस्थाओं का निर्माण किया, जिनकी विशेषता अत्यधिक उत्पादन से जानी जाती है। यूरोप की महान शक्तियों को, जिन्हें अपने उत्पादों के लिए बाज़ार, और अपने कारखानों के लिए कच्चे माल के स्रोत के लिए नई भूसंपत्ति प्राप्त करने की तत्काल आवश्यकता महसूस हुई, यह आवश्यकता और अधिक तीव्र होती गई जैसे-जैसे उन्होंने उपनिवेशों की प्राप्ति के लिए एक दूसरे के साथ प्रतिस्पर्धा की। इस प्रकार, दो कारक—दो विचारधाराएं और विज्ञान की प्रगति के बाद आर्थिक विकास—जिसने बाद में दुनिया को राजनैतिक मतभेद के दो खंडों में बांट दिया: लोकतांत्रिक दुनिया और कम्युनिस्ट दुनिया।

३.५ पुनर्जागरण के बाद धार्मिक सुधार, राजनीतिक और औद्योगिक क्रांति

कैन-वर्गीय आंदोलन जो यूनानी मत के जागरण के साथ शुरू हुआ, उसने मध्ययुगीन दुनिया को खत्म कर दिया और नवजागरण के मानववाद को जन्म दिया। जब इस आंदोलन ने विकास किया और शैतान की ओर झुका तो इसने प्रबोधन को जन्म दिया, जो प्रचलित विचारधारा में दूसरा पुनर्जागरण माना जा सकता है। प्रबोधन विचारधारा अंततः जब शैतानी दिशा की ओर पुष्ट हुई तो इसने ऐतिहासिक भौतिकवाद को जन्म दिया, जो कम्युनिस्ट विचारधारा का केंद्र है। इसे तीसरे नवजागरण के रूप में माना जा सकता है।

चूंकि शैतानी पक्ष हमेशा परमेश्वर की दैवी योजना की नकल पहले ही करता है, इसलिए हम यह अपेक्षा कर सकते हैं कि परमेश्वर की दैवी योजना, धर्म, राजनीति और अर्थव्यवस्था के प्रत्येक क्षेत्र में क्रांति के तीन चरणों की मांग करती है। धर्म के क्षेत्र में, पहले नवजागरण के बाद पहला धर्म-शोधन मार्टिन लूथर के नेतृत्व में हुआ था। दूसरे पुनर्जागरण के बाद दूसरा धर्म-शोधन वेस्ले भाइयों, फॉक्स और स्वीडनबोर्ग जैसे लोगों के नेतृत्व में आध्यात्मिक आंदोलनों के द्वारा आरम्भ किया गया। हमारी इतिहास की प्रगति की परीक्षा से यह स्पष्ट है, कि तीसरे पुनर्जागरण के बाद तीसरा धर्म-शोधन होगा। निःसंदेह, आज के ईसाई धर्म की स्थिति इस तरह के सुधार के लिए ठोस रूप से मांग करती है।

राजनीतिक क्षेत्र में भी, हम अनुमान लगा सकते हैं कि सुधार तीन चरणों में हो रहा है। पहला मध्ययुगीन सामंती समाज, पहले नवजागरण और पहले धार्मिक संशोधन के प्रभाव से नाश हो गया। फिर,

निरपेक्ष राजवाद दूसरे पुनर्जागरण और दूसरे धर्म-संशोधन से निकली हुई शक्तियों के द्वारा नष्ट किया गया। अंत में, साम्यवादी दुनिया का गठन तीसरे पुनर्जागरण द्वारा लाए गई राजनीतिक क्रांतियों के द्वारा किया गया था। आने वाले तीसरे धर्म शोधन के माध्यम से, लोकतांत्रिक दुनिया, जो परमेश्वर के पक्ष में है, वैचारिक युद्ध में विजय प्राप्त करेगी और कम्युनिस्ट दुनिया को, जो शैतान के पक्ष में है, घुटनों पर लाएगी। तब दोनों संसार परमेश्वर के अधीन धरती पर एक स्वर्ग के राज्य में संगठित हो जाएंगे।

आर्थिक परिवर्तन जो धार्मिक और राजनीतिक सुधारों के बाद आए, उन्होंने तीन औद्योगिक क्रांतियों में प्रगति की। पहली औद्योगिक क्रांति इंग्लैंड में हुई थी और वह भाप इंजन पर आधारित थी। एक शताब्दी बाद, दूसरी औद्योगिक क्रांति बिजली और पेट्रोलियम इंजन के आधार पर कई उन्नत देशों में हुई। तीसरी औद्योगिक क्रांति परमाणु की शक्ति को सुरक्षित रूप से दोहन करके आगे बढ़ेगी; यह आदर्श दुनिया के लिए एक सुखद रहने का वातावरण बनाएगी। मसीह के दूसरे आगमन से पहले तैयारी की सदियों में क्रांति के तीन चरणों के तीन क्षेत्र, धर्म, राजनीतिक और उद्योग, जो तीन पुनर्जागरणों के बाद आए, यह कार्यवाही विकास के नियम के अनुसार तीन चरणों में आदर्श दुनिया के निर्माण के लिए आवश्यक रही है।

संभाग ४

विश्व युद्ध

४.१ विश्व युद्ध के दैवी कारण

युद्ध, राजनीतिक और आर्थिक हितों और विचारधारा के संघर्ष जैसे कारकों के कारण होते हैं। परंतु ये केवल बाहरी कारण हैं। युद्धों के आंतरिक कारण भी हैं, जिस तरह हर मनुष्य के कार्यों के आंतरिक और बाहरी उद्देश्य होते हैं। मनुष्य की करनी का निर्णय उस व्यक्ति की स्वतंत्र इच्छा से किया जाता है, जो एक स्थिति का जवाब, जिसका वह सामना कर रहा है, दोनों बाहरी रूप से और परमेश्वर की इच्छा और उसकी दैवी योजना की प्रगति के लिए, अपनी आंतरिक प्रवृत्ति से देने की कोशिश कर रहा है। इसलिए, मनुष्य की कार्रवाई के अच्छे या बुरे होने का फैसला केवल बाहरी उद्देश्यों के द्वारा ही नहीं किया जा सकता है। विश्व युद्धों के बारे में भी यही कहा जा सकता है, कि यह समस्त संसार में कई व्यक्तियों के बीच उनके स्वतंत्र इच्छा से किए गए कार्यों से उत्पन्न होने वाले संघर्ष का परिणाम होता है। तदनुसार, हम केवल राजनीतिक और आर्थिक हितों, विचारधारात्मक संघर्षों और ऐसे अन्य बाहरी कारणों पर ध्यान देकर विश्व युद्धों के दैवी महत्व को नहीं समझ सकते हैं।

विश्व युद्ध के आंतरिक, दैवी कारण क्या हैं? पहला, विश्व युद्ध शैतान का अपनी प्रभुता को बनाए रखने के लिए उसके आखिरी हताश संघर्ष के परिणाम स्वरूप हुए हैं। जब से पहले मानव पूर्वजों का पतन हुआ है शैतान परमेश्वर की आदर्श दुनिया की दोषपूर्ण नकल करके सिद्धांतहीन दुनिया बनाता आया है। अपने सिद्धांत की आदर्श दुनिया को बहाल करने के लक्ष्य के अनुसार परमेश्वर सिद्धांतहीन दुनिया को जो शैतान के बंधन के तहत है बहाल करने के लिए धीरे-धीरे अपने प्रभुत्व का विस्तार बढ़ाता है।[७५५] तदनुसार, पुनरुद्धार की दैवी योजना के दौरान, आदर्श की वास्तविक अभिव्यक्ति के उत्थान से पहले उसका झूठा नमूना प्रकट होता है। बाईबल की भविष्यवाणी कि मसीह की वापसी से पहले मसीह का विरोधी प्रगट होगा इस सत्य का एक उदाहरण है।

मसीह के दूसरे आगमन के साथ शैतान की दुष्ट संप्रभुता के तहत मानव इतिहास समाप्त होगा। तब यह परमेश्वर की अच्छी संप्रभुता के दायरे में रहने वाली मानवता के इतिहास में परिवर्तित हो जाएगा। उस समय, शैतान अंतिम लड़ाई लड़ने के लिए उतर आएगा। जब इस्राएली कनान की प्राप्ति के लिए राष्ट्रीय स्तर पर मिस्र छोड़ने वाले थे, तो शैतान ने उन्हें अपने बंधन में बनाए रखने के लिए फिरौन के द्वारा अंतिम घोर जद्दोजहद किया। इस आधार पर, परमेश्वर का पक्ष उसे तीन अलौकिक चमत्कारों के साथ मारने का हकदार बना। इसी प्रकार, अंतिम दिनों में, शैतान परमेश्वर के पक्ष को डांवांडोल करने के लिए अपना आखिरी संघर्ष कर रहा है और अब कनान की प्राप्ति के लिए वह अपनी विश्वव्यापी कार्यवाही के लिए तैयार हो रहा है। शैतान के आक्रमण के जवाब में परमेश्वर के तीन प्रत्याक्रमण तीन विश्व युद्धों के रूप में प्रकट हुए हैं।

---

[७५५] प्रति-संदर्भ—समानान्तर ७.१

दूसरा, तीन महान आशीर्वादों की बहाली के लिए विश्वव्यापी स्तर पर क्षतिपूर्ति शर्त पूरा करने के लिए तीन विश्व युद्ध होने ही थे। मनुष्यों की रचना करने के बाद परमेश्वर ने उन्हें तीन आशीर्वाद दिए: व्यक्तिगत पूर्णता प्राप्त करना, आदर्श परिवार बनाकर प्रजनन करना और सृष्टि पर प्रभुत्व करना।[७५६] इन आशीर्वादों को पूरा करके, हमारे पहले पूर्वजों को धरती पर स्वर्ग का राज्य बनाना था। चूंकि परमेश्वर ने स्वयं मनुष्यों को बनाया और उन्हें आशीर्वाद दिया, इस वजह से उसने केवल उनके पतन के कारण इन आशीर्वादों को रद्द नहीं किया। इसलिए पतित लोगों को शैतान के नेतृत्व में सिद्धांतहीन दुनिया निर्माण करने के लिए, गोकि दोषपूर्ण रूप में, परमेश्वर ने स्वीकृति दी। तदनुसार, यह सिद्धांतहीन दुनिया मानव इतिहास के अंत में उभरी है, जिसने तीन आशीर्वादों को बाहरी दोषपूर्ण रूप से साकार किया है: एक व्यक्ति का शैतान के ध्येय का समर्थन करना, शैतानी वंश प्रजनन करना और शैतान के प्रभुत्व के तहत दुनिया पर विजयी होना। परमेश्वर के तीन महान आशीर्वादों की बहाली और विश्वव्यापी स्तर पर क्षतिपूर्ति शर्तों को पूरा करने के लिए, तीन विश्व युद्ध होने आवश्यक हैं जिससे परमेश्वर इन शैतानी संसार पर गठन, विकास और निष्पत्ति के तीन चरणों के माध्यम से विजय प्राप्त कर सके।

तीसरा, तीन विश्व युद्ध इसलिए भी हुए हैं ताकि सारी मानवता विश्व स्तर पर उन तीन प्रलोभनों पर विजय प्राप्त कर सकें जिनके द्वारा शैतान ने यीशु की परीक्षा ली थी। ईसाइयों को यीशु के चेलों के रूप में, अपने शिक्षक का अनुकरण करना चाहिए और उन तीन प्रलोभनों का जिनका उसने जंगल में सामना किया था व्यक्तिगत, परिवार, राष्ट्र और विश्व स्तर पर सामना करना चाहिए।

चौथा, विश्व युद्ध विश्वव्यापी स्तर पर क्षतिपूर्ति की शर्तें पूरी करने और परमेश्वर की संप्रभुता पुनःस्थापित करने के लिए हुए हैं। यदि पहले मानव पूर्वजों का पतन नहीं हुआ होता,और वे विकास काल के तीन चरणों से गुज़रकर पूर्णता तक पहुंच जाते, तो वे परमेश्वर की संप्रभुता की दुनिया साकार कर सकते थे। इसी प्रकार, विश्वव्यापी पुनरुद्धार को भी तीन चरणों से गुज़रना चाहिए। इस दुनिया के पुनरुद्धार के लिए आवश्यक है कि पहले इसे कैन-वर्गीय और हाबिल-वर्गीय दुनिया में विभाजित किया जाना चाहिए, और तीन अंतिम युद्ध होने चाहिए जिनमें स्वर्गीय, हाबिल-वर्ग की दुनिया, शैतानी कैन-वर्गीय दुनिया पर प्रबल हो। यह कैन द्वारा हाबिल की हत्या को विश्वव्यापी क्षतिपूर्ति के माध्यम से बहाल करने की शर्त है। उसके बाद, परमेश्वर की संप्रभुता की दुनिया स्थापित की जा सकती है। तदनुसार, मानव इतिहास में विश्व युद्ध अंतिम वैश्विक संघर्ष हैं, जो परमेश्वर की संप्रभुता को दैवी योजना की लंबवत कार्यवाही में सभी युद्धों के उद्देश्य को क्षतिपूर्ति द्वारा क्षैतिज रूप से बहाल करने के लिए लड़े गए हैं।

४.२ पहला विश्व युद्ध

४.२.१ पहले विश्व युद्ध में दैवी-योजना का संक्षिप्त विवरण

कैन-वर्ग और हाबिल-वर्ग के लोकतांत्रिक क्रांति के परिणामस्वरूप निरंकुश राजतंत्र समाप्त

[७५६] उत्पत्ति १:२८

हुआ, जो जीवन के कैन-वर्गीय और जीवन के हाबिल-वर्गीय दृष्टिकोण से उत्पन्न हुए थे। इसके बाद औद्योगिक क्रांति ने अवशेष सामंतवाद को नष्ट किया, और पूंजीवाद को प्राबल्य किया। इसके बाद साम्राज्यवाद का युग आया।

राजनीतिक क्षेत्र में, प्रथम विश्व-युद्ध हाबिल-वर्गीय लोकतंत्र राज्यों के बीच संघर्ष था, जिसने पुनरुद्धार की दैवी-योजना के लक्ष्य का अनुसरण किया; और सत्तावादी राज्य जहाँ कैन-वर्ग के लोक-तांत्रिक आदर्श संपन्न हो रहे थे, पुनरुद्धार की दैवी योजना के लक्ष्यों का विरोध किया। यह युद्ध परमेश्वर के पक्ष के साम्राज्यवादी राष्ट्रों और शैतान के पक्ष के साम्राज्यवादी राष्ट्रों के बीच लड़ा गया था। आर्थिक हितों के संदर्भ में, यह युद्ध उपनिवेशों की प्राप्ति के लिए नए औद्योगीकृत पूंजीवादी और अधिक मज़बूती से स्थापित राष्ट्रों के बीच था। धर्म और विचारधारा के क्षेत्र में, कैन-वर्ग के राष्ट्रों में तुर्की, एक मुस्लिम राष्ट्र था जो ईसाई धर्म के लोगों पर जुल्म करता था, और इसके सहयोगियों में, जर्मनी, ऑस्ट्रिया और हंगरी शामिल थे। इन सभों ने हाबिल-वर्ग के राष्ट्रों के साथ, जैसे ग्रेट ब्रिटेन, संयुक्त राज्य अमेरिका, फ्रांस और रूस जो आम तौर पर ईसाई धर्म का समर्थन करते थे, युद्ध किया। प्रथम विश्व युद्ध की समाप्ति पर, हाबिल-वर्ग के लोकतंत्र राज्यों ने गठन-चरण के स्तर की विजय प्राप्त की।

४.२.२ परमेश्वर का पक्ष और शैतान का पक्ष, यह कैसे निश्चित किया जाता है?

कौन से राष्ट्र परमेश्वर की तरफ हैं और कौन से शैतान की तरफ हैं, यह सवाल परमेश्वर के पुनरुद्धार की दैवी योजना के लक्ष्य के आधार पर तय किया जाता है। जो लोग परमेश्वर की दैवी योजना के पक्ष में हैं या उसके निर्देशों के अनुसार काम कर रहे हैं यहां तक कि यदि वे परोक्ष रूप ही से परमेश्वर के पक्ष में क्यों न हों तो भी वे परमेश्वर के पक्ष में गिने जाते हैं, दूसरी तरफ वे लोग हैं जो परमेश्वर का विरोध करते हैं वे शैतान के पक्ष में होते हैं। इसलिए, किसी व्यक्ति या राष्ट्र का संबंध परमेश्वर से है या शैतान से, यह हमेशा हमारे सामान्य ज्ञान या विवेक के फैसले पर निर्भर नहीं होता है। उदाहरण के लिए, जब कोई परमेश्वर की दैवी योजना से अनजान है, तो वह यह निर्णय ले सकता है कि मूसा के द्वारा की गई मिस्र के कर्मचारी की हत्या पाप थी। फिर भी, इसे एक अच्छा कार्य भी माना जा सकता है क्योंकि यह परमेश्वर की दैवी योजना के अनुरूप था। इसी प्रकार, इस्राएलियों का कनान देश पर हमला करना और बिना किसी औचित्य के बहुत से कनानी लोगों को मार डालना, जो परमेश्वर की दैवी योजना से अनजान हैं उनको यह कार्रवाई बुरी और क्रूर लग सकती है; फिर भी, यह केवल परमेश्वर की दृष्टि से ठीक था। यहां तक कि यदि इस्राएली लोगों की तुलना में कनानियों के बीच अधिक अच्छे दिल वाले लोग होते, तब भी उस समय कनानी सामूहिक रूप से शैतान के पक्ष में थे, जबकि इस्राएली सामूहिक रूप से परमेश्वर के पक्ष में थे।

आइए हम धर्म के क्षेत्र में इस अवधारणा की और जांच करें। चूंकि हर धर्म का लक्ष्य भलाई होता है, उनमें से हर एक परमेश्वर के पक्ष में है। हालांकि, जब एक धर्म दूसरे धर्म के मार्ग को बाधित करता है जो दूसरे से अधिक परमेश्वर की दैवी योजना के केंद्र के करीब है, तो वह स्वयं अपने आप को शैतान के

पक्ष में पाता है। किसी भी धर्म को उसके युग के लिए एक मिशन दिया जाता है, परन्तु, उसकी जिम्मेदारी का समय बीतने के बाद, यदि वह एक उभरते धर्म के लिए बाधा बनता है जो अगले युग के लिए एक नए मिशन के साथ आया है, तो फिर वह शैतान के पक्ष में खड़ा होता है। यीशु के आने से पहले, यहूदी धर्म और उसके विश्वासी लोग परमेश्वर के पक्ष में खड़े थे। परन्तु, जब उन्होंने यीशु को सताया, जो एक नए मिशन के साथ आया था और अन्य चीज़ों के साथ यहूदी धर्म के उद्देश्य को पूरा करने वाला था, तो वे शैतान के पक्ष में चले गए, भले ही उन्होंने अतीत में आस्था के साथ परमेश्वर की सेवा की थी।

आधुनिक दुनिया में, जो व्यवस्थाएं जीवन के हाबिल-वर्ग के दृष्टिकोण का समर्थन करती हैं, वे परमेश्वर के पक्ष में होतीं हैं, और जो लोग जीवन के कैन-वर्गीय दृष्टिकोण का समर्थन करते हैं, वे शैतान के पक्ष में होते हैं। उदाहरण के लिए, जीवन के कैन-वर्गीय दृष्टिकोण पर आधारित भौतिकवादी विचार मानववाद की दृष्टि से भले ही कितना नैतिक और त्यागी क्यों न लगता हो, फिर भी वह शैतान के पक्ष का होता है। इस कारण से, साम्यवादी दुनिया शैतानी दुनिया मानी जा सकती है। दूसरी तरफ, चूँकि लोकतांत्रिक दुनिया, जो धार्मिक स्वतंत्रता प्रदान करती है, वह जीवन के हाबिल-वर्ग के दृष्टिकोण पर आधारित है, यह परमेश्वर के पक्ष में मानी जा सकती है।

ईसाई धर्म सभी धर्मों के लक्ष्यों को पूरा करने के अंतिम मिशन के साथ केंद्रीय धर्म के रूप में स्थापित किया गया था।[७५७] इसलिए, कोई भी राष्ट्र जो ईसाई धर्म को सताता है या उसकी प्रगति को प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से बाधित करता है तो वह शैतान के पक्ष का होता है। प्रथम विश्व युद्ध में, ग्रेट ब्रिटेन के नेतृत्व में सहयोगी शक्तियां, संयुक्त राज्य अमेरिका, फ्रांस और रूस ईसाई राष्ट्र थे; इसके अलावा, वे तुर्की में सताए जाने वाले ईसाइयों को मुक्त करने के लिए लड़ रहे थे। इस प्रकार, वे परमेश्वर के पक्ष में थे। दूसरी तरफ, जर्मनी, ऑस्ट्रिया और हंगरी, प्रमुख केंद्रीय शक्तियों ने तुर्की, एक मुस्लिम राष्ट्र का समर्थन किया, जो ईसाई धर्म को सताता था। इसलिए, तुर्की के साथ, वे सब शैतान की ओर थे।

४.२.३ पहले विश्व युद्ध के पीछे दैवी कारण

प्रथम विश्व युद्ध के दैवी, आंतरिक कारण क्या थे? पहले विश्व युद्ध के होने का पहला कारण, परमेश्वर के तीन महान आशीर्वादों को गठन चरण में बहाल करने के उद्देश्य से, विश्वव्यापी स्तर पर क्षतिपूर्ति की शर्त को पूरा करने के लिए पहला विश्व युद्ध हुआ। परमेश्वर आदम के द्वारा एक आदर्श दुनिया स्थापित करने वाला था, इसलिए शैतान पहले से ही परमेश्वर की आदर्श दुनिया की एक दोषपूर्ण नकल की दुनिया का निर्माण करने का कार्य कर रहा था। यही कारण है कि इतिहास के अंत में एक सिद्धांतहीन दुनिया प्रगट हुई, जिसने शैतान के पक्ष के एक नकली आदम के नेतृत्व में गठन चरण पर तीन आशीर्वादों को विकृत, बाहरी रूप से साकार किया। परमेश्वर के पक्ष को तब क्षतिपूर्ति की शर्त को पूरा करने के लिए इस सिद्धांतहीन दुनिया पर विजयी होना चाहिए।

---

[७५७] प्रति-संदर्भ—प्रलयोत्तर २.३

वास्तव में, जर्मनी के कैसर विल्हेम द्वितीय (१८५९-१९४१), जिसने प्रथम विश्व युद्ध शुरू किया था, वह शैतान के पक्ष में आदम का नकली रूप था। वह उस व्यक्ति की गठन-चरण की समानता में था, जिसने व्यक्तिगत पूर्णता प्राप्त कर ली हो। उसने सर्व-जर्मनवाद (पैन-जर्मनवाद) का समर्थन करके दूसरे वरदान प्रजनन का ढोंग रचा, और विश्व पर आधिपत्य की नीति लागू करके तीसरे वरदान के अनुकूल प्रकृति पर अपना प्रभुत्व प्रदर्शित करने की कोशिश की। इस तरह, कैसर ने तीन महान वरदानों को शैतानी नकली रूप में मुकम्मल करके गठन चरण पर एक सिद्धांतहीन दुनिया साकार की। पहला विश्व युद्ध विश्वव्यापी स्तर पर गठन चरण की क्षतिपूर्ति की शर्त को पूरा करने के लिए था, और भविष्य में वह दुनिया पुनःस्थापित करने के लिए हुआ था, जहाँ परमेश्वर पर केंद्रित तीन महान वरदान वास्तव में पूरे किए जाएंगे।

दूसरा कारण, पहला विश्व युद्ध परमेश्वर के पक्ष के लोगों के लिए विश्व स्तर पर सामूहिक रूप से यीशु के पहले प्रलोभन पर प्रबल होने के लिए हुआ था। यीशु के तीन प्रलोभनों के अर्थ के प्रकाश में, हम यह जाँच सकते हैं कि पहले विश्व युद्ध में परमेश्वर के पक्ष को विश्वव्यापी स्तर पर परमेश्वर को पहले वरदान को क्षतिपूर्ति की शर्त के द्वारा बहाल करने के लिए जीतना था। जंगल में अपने पहले प्रलोभन पर प्रबल होने से यीशु ने जो चट्टान का प्रतीक था, अपने आप को बचा लिया, और व्यक्तिगत चरित्र की पूर्णता प्राप्त करने के लिए नींव डाली। इसी प्रकार, प्रथम विश्व युद्ध में विजयी होने के कारण, परमेश्वर के पक्ष ने न केवल शैतान की दुनिया और उसके केंद्र को हराया, बल्कि, यह भी कि उसे परमेश्वर की दुनिया स्थापित करके अपने केंद्र की और दूसरे आगमन के मसीह की नींव डालना था। यह वह आधार था जिस पर लौटने वाले मसीह का जन्म हो सके और कि वह अपने व्यक्तिगत चरित्र को पूर्ण कर सके।

तीसरा कारण, पहला विश्व युद्ध परमेश्वर की संप्रभुता को पुनःस्थापित करने के लिए गठन-चरण की नींव डालने के प्रयोजन से हुआ था। लोकतंत्र, सत्ताधारी राजशाही शासनों को खत्म करने के लिए और अंतिम राजनीतिक व्यवस्था के रूप में परमेश्वर की संप्रभुता को पुनःस्थापित करने के मिशन के साथ उभरा था।[७५८] प्रथम विश्व युद्ध में परमेश्वर का पक्ष विजेता बनकर दुनिया में अपने राजनीतिक क्षेत्र को विस्तृत करके ईसाई धर्म फैलाने के लिए जिम्मेदार था। इस प्रकार एक विशाल और दृढ़ राजनीतिक और आर्थिक नींव की स्थापना करके, यह लोकतांत्रिक दुनिया के लिए गठन-चरण नींव को सुरक्षित करता और साथ ही साथ परमेश्वर की संप्रभुता बहाल करने के लिए गठन-चरण की नींव डालता।

४.२.४ पहले विश्व युद्ध के दैवी परिणाम

प्रथम विश्व युद्ध में सहयोगी शक्तियों की जीत ने दुनिया भर में परमेश्वर के तीन महान वरदानों को पुनःस्थापित करने के लिए गठन-चरण क्षतिपूर्ति की शर्त पूरी की। विश्वव्यापी स्तर पर यीशु के पहले प्रलोभन पर प्रबल होने से, उन्होंने दुनिया में परमेश्वर के पहले वरदान को पुनःस्थापित करने के लिए क्षतिपूर्ति की शर्त पूरी की। लोकतंत्र की जीत ने भी परमेश्वर की संप्रभुता को पुनःस्थापित करने के लिए

[७५८] प्रति-संदर्भ—समान्तर ७.२.६

गठन-चरण की नींव स्थापित की। शैतानी दुनिया और उसके शासक कैसर की हार के साथ, परमेश्वर के पक्ष की दुनिया ने गठन-चरण में विजय प्राप्त की और लौटने वाले मसीह के जन्म के लिए नींव रखी, जो परमेश्वर की दुनिया का प्रभु होने के लिए नियुक्त किया गया है।

इसके समकालीन, रूस में साम्यवाद स्थापित किया गया था। शीघ्र ही, मसीह के दूसरे आगमन पर शैतान के पक्ष में स्टालिन मसीह विरोधी सत्ता के साथ उठा। चूंकि मसीह पृथ्वी पर स्वर्ग के राज्य के इन आदर्श के साथ आता है—परस्पर निर्भरता, पारस्परिक समृद्धि और सार्वभौमिक मूल्यों की सहभागिता—शैतानी पक्ष दूसरे आगमन पर नकली ख्राईस्ट की अगवाई में इन आदर्शों को पहले ही साकार करके पृथ्वी पर नकली स्वर्ग के राज्य का निर्माण करने की कोशिश करता है।

अंत में, प्रथम विश्व युद्ध ने परमेश्वर के पक्ष की विजय के साथ, मसीह के दूसरे आगमन के लिए नींव डाली गई। उस समय से, दूसरे आगमन की व्यवस्था का आरंभ गठन-चरण में हुआ।

४.३ दूसरा विश्व युद्ध

४.३.१ दूसरे विश्व युद्ध में दैवी योजना का संक्षिप्त विवरण

आधुनिक लोकतंत्र का आध्यात्मिक स्रोत लोगों का हाबिल-वर्गीय जीवन के मूल्यों को साकार करने के प्रयास में निहित है। लोकतंत्र मूल मानव प्रकृति की आंतरिक और बाहरी आकांक्षाओं का अनुकरण करता है इसलिए निश्चित रूप से वह परमेश्वर की आदर्श दुनिया की ओर बढ़ेगा। दूसरी तरफ, फासिस्टवाद, लोगों को अपनी मूल प्रकृति की आकांक्षाओं का अनुकरण करने से रोकता है। द्वितीय विश्व युद्ध में लोकतंत्र ने, प्रथम विश्व युद्ध की गठन-चरण की जीत पर खड़े हो कर, फासिस्टवाद को पराजित किया और विकास-चरण में जीत प्राप्त की।

४.३.२ फासिस्टवाद का स्वभाव

सन १९३० के आर्थिक विषाद ने जब दुनिया को अभिभूत कर दिया था, तो कुछ राष्ट्रों ने इससे बचने के लिए फासिस्टवाद को अपनाने की कोशिश की। तंगहाली और एकाकी से लाचार होकर जर्मनी, जापान और इटली ने इस पथ को चुना।

तो फिर, फासिस्टवाद क्या है? फासिस्टवाद आधुनिक प्रजातंत्र के मौलिक आदर्शों को, जैसे लोगों का व्यक्तिगत मूल अधिकार, भाषण की स्वतंत्रता, छापाखाना, संगत और संसदीय व्यवस्था सहित वैयक्तिक सम्मान से भी वंचित करता है। इसमें, जाति या राष्ट्रीयता परम मूल्य है जो कि एक मज़बूत राष्ट्र-राज्य को समर्थित करना चाहिए। व्यक्ति और संस्थान केवल राज्य के लाभ के लिए होते हैं। फासिस्टवाद के तहत, कोई व्यक्ति स्वतंत्रता जैसे अधिकार का अटूट-अधिकार की तरह दावा नहीं कर सकता; उन्हें अपनी स्वतंत्रता बलिदान करके राज्य की सेवा करना अपना कर्तव्य समझना चाहिए। फासिस्टवाद के मार्गदर्शक राजनीतिक सिद्धांत के अनुसार सभी शक्तियों और अधिकारों को लोगों के बीच वितरित करने

के बजाय एक सर्वोच्च नेता के हाथ सौंपा जाना चाहिए। नेता की व्यक्तिगत इच्छा पूरे देश के लिए शासकीय विचारधारा होती है। इटली में मुसोलिनी, जर्मनी में हिटलर, और जापान की सैन्यवादी सरकार के नेता फासिस्टवादी प्रकार के तानाशाह थे।

४.३.३ दूसरे विश्व युद्ध में वह देश जो परमेश्वर के पक्ष में थे और वे जो शैतान के पक्ष में थे

द्वितीय विश्व युद्ध में, संयुक्त राज्य अमेरिका के लोकतांत्रिक राष्ट्रों के गठबंधन, ग्रेट ब्रिटेन और फ्रांस ने परमेश्वर के पक्ष में राष्ट्रों का नेतृत्व किया। शैतान के पक्ष के फासिस्टवादी राष्ट्रों के गठबंधन में: जर्मनी, जापान और इटली थे। यह कैसे नियत किया जाता है कि पहला परमेश्वर के पक्ष में है और दूसरा शैतान के पक्ष का है? जो सहयोगी राष्ट्र परमेश्वर के पक्ष में थे, क्योंकि उनकी राजनीतिक व्यवस्था लोकतंत्र थी, वे पुनरुद्धार की दैवी योजना में राजनीतिक व्यवस्था के अंतिम चरण में जीवन के हाबिल-वर्ग के दृष्टिकोण पर संस्थापित थे। दूसरी तरफ, शैतान के पक्ष की शक्तियां थीं क्योंकि उन्होंने फासिस्टवाद को बरकरार रखा था, जो लोकतंत्र के विरोधी थे, वे जीवन के कैन-वर्ग के दृष्टिकोण से निकले थे। इसके अलावा, सहयोगी राष्ट्र जो ईसाई धर्म का समर्थन करने वाले थे वे परमेश्वर के पक्ष में थे और शैतान के पक्ष की शक्तियों वे थीं जिन्होंने ईसाई धर्म का विरोध किया और सताया था।

जर्मनी ने, जो शैतानी शक्तियों का नेतृत्व करता था, लोगों को उनकी मूल स्वतंत्रताओं से वंचित कर दिया था, और इसके वैचारिक अत्याचार ने उन्हें धार्मिक स्वतंत्रता से रिक्त कर दिया था। इसके अतिरिक्त, हिटलर ने छह करोड़ यहूदियों की हत्या की। पोप के साथ धर्मसन्धि करने के बाद, हिटलर ने सहकारी बिशप लोगों के नियंत्रण में चर्चों को अधीनस्थ करने का प्रयास किया, और ईसाई धर्म को आदिवासी जर्मन धर्म पर आधारित राष्ट्रवादी नव-मूर्तिपूजकवाद में ढकेल कर भ्रष्ट किया। विरोध में, कुछ प्रोटेस्टेंट और कैथोलिक लोगों ने इसका कटु प्रतिरोध किया।

द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान जापानी सैन्यवादियों ने कोरिया में हर चर्च को जापानी शिंतो देवताओं के लिए *कामिदाना* मूर्ति की वेदी स्थापित करने के लिए मजबूर किया, और कोरियाई ईसाइयों को शिंतो मंदिरों में पूजा करने के लिए मजबूर किया। जिन ईसाइयों ने पालन नहीं किया उन्हें कैद किया गया या मार डाला गया। कोरिया के ईसाई लोग जो धार्मिक स्वतंत्रता की तलाश में मंचूरिया भाग गए थे, उनका क्रूरता से नरसंहार किया गया। कोरियाई ईसाई धर्म के विरोध में इन युक्तियों को युद्ध के अंतिम दिनों में और अधिक बढ़ा दिया गया।

इटली ने जो धुरी-शक्तियों में से एक था जर्मनी के आंदोलन का समर्थन किया। परमेश्वर की दैवी योजना के सामान्य ज़ोर के विरुद्ध, मुसोलिनी ने कैथोलिक धर्म को अपने स्वार्थी अभिप्राय से राज्य धर्म के रूप में फैसिस्ट शासन के तहत लोगों को एकजुट करने के लिए उपयोग किया। युद्ध के दौरान जर्मनी, जापान और इटली को इन आधारों पर शैतान के पक्ष के राष्ट्रों के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है।

४.३.४ परमेश्वर के पक्ष और शैतान के पक्ष के तीन देशों की दैवी भूमिका

दूसरे विश्व युद्ध के पीछे एक और उद्देश्य था, परमेश्वर के तीन महान वरदानों को, जो यीशु के समय के दौरान स्थापित होने चाहिए थे, उन्हें क्षतिपूर्ति की विश्वव्यापी शर्त को पूरी करने के द्वारा, विकास चरण में पुनःस्थापित करना था। आरंभ में, यह आदम, हव्वा और प्रधान स्वर्गदूत के पतन का कारण था कि परमेश्वर के तीन महान वरदान साधित नहीं हो सके। इसलिए, तीन वरदानों के पुनःस्थापन से संबंधित भूमिकाओं को निबाहने वाले तीन अभिनेता होने आवश्यक हैं। इस प्रकार, आध्यात्मिक उद्धार की दैवी योजना में पुनर्जीवित यीशु जो दूसरे आदम की जगह पर था, पवित्र आत्मा जिसने हव्वा का प्रतिनिधित्व किया और स्वर्गदूतों के संयुक्त प्रयासों के माध्यम से परमेश्वर ने तीन वरदानों को आध्यात्मिक रूप से बहाल किया[७५९]। तदनुसार, द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान, परमेश्वर के पक्ष के तीन राष्ट्र जो आदम, हव्वा और प्रधान स्वर्गदूत को दर्शाते हैं इन्होंने, शैतान के पक्ष के तीन राष्ट्रों के विरोध में युद्ध किया, ये भी आदम, हव्वा और प्रधान स्वर्गदूत का प्रतिनिधित्व करते हैं। परमेश्वर के पक्ष के राष्ट्रों की जीत ने तीन महान वरदानों की बहाली के लिए विकास-चरण क्षतिपूर्ति की शर्त स्थापित की। शैतान ने, जो इस दैवी योजना से अवगत था, अपने पक्ष के आदम, हव्वा और प्रधानदूत का प्रतिनिधित्व करने वाले तीन राष्ट्रों को परमेश्वर के पक्ष के तीन राष्ट्रों पर हमला करने के लिए उकसाया ।

संयुक्त राज्य अमेरिका ने, जो एक मर्दाना प्रकार के राष्ट्र का रूप है, परमेश्वर के पक्ष में आदम का प्रतिनिधित्व किया। ग्रेट ब्रिटेन ने, एक स्त्री प्रकार के राष्ट्र का रूप में, परमेश्वर के पक्ष में हव्वा का प्रतिनिधित्व किया। फ्रांस ने, एक मिश्रित नस्ल प्रकार के राष्ट्र के रूप में, परमेश्वर के पक्ष में महादूत का प्रतिनिधित्व किया। शैतान की तरफ से, जर्मनी ने, एक मर्दाना राष्ट्र के रूप में, आदम का प्रतिनिधित्व किया; जापान ने, एक स्त्री प्रकार के राष्ट्र के रूप में, हव्वा का प्रतिनिधित्व किया; और इटली ने, एक मिश्रित नस्ल प्रकार के राष्ट्र के रूप में, प्रधान स्वर्गदूत का प्रतिनिधित्व किया। प्रथम विश्व युद्ध में संयुक्त राज्य अमेरिका, ग्रेट ब्रिटेन और फ्रांस ने परमेश्वर के पक्ष में इन तीन पदों पर गठन चरण में प्रतिनिधित्व किया, जबकि जर्मनी, ऑस्ट्रिया और तुर्की इन पदों पर शैतान के पक्ष में थे।

सोवियत संघ ने, जो राष्ट्र शैतान के पक्ष में था, दूसरे विश्व युद्ध में परमेश्वर के पक्ष में भाग लिया। यह कैसे संभव था? जब मध्ययुगीन समाज अपना दैवी उद्देश्य को पूरा नहीं कर सका, तो यह परमेश्वर और शैतान दोनों के लिए बाधा बन गया, तब वह लोकतांत्रिक दुनिया और कम्युनिस्ट दुनिया में विभाजित हुआ और उसके विकास की परिपक्वता का आरंभ हुआ। मध्ययुगीन सामंती समाज और बाद में, पूर्ण राजशाही और साम्राज्यवाद को तोड़ने के लिए जीवन के कैन-वर्गीय और हाबिल-वर्गीय विचारों ने एक के पीछे एक काम किया। जिस तरह परमेश्वर की दैवी योजना समय की धाराओं के साथ प्रगति करती आई, वर्तमान समय में शैतान भी आदर्श दुनिया का एक सिद्धांतहीन प्रतिरूप बनाने का प्रयास आवश्यक करेगा। जब मौजूदा सामाजिक व्यवस्था नए समाजों के गठन में बाधा डालती है, जिसमें शैतान के लक्ष्यों को आगे बढ़ाने वाले लोग भी शामिल हैं, तो शैतान इसे नष्ट करने के लिए लड़ाई में शामिल हो जाता है।

---

[७५९] प्रति-संदर्भ—ख्रीस्त-बोध ४.१

इस प्रकार, फासिस्टवाद शैतान के पक्ष और परमेश्वर के पक्ष दोनों में बाधा बन गया था। क्योंकि क्षतिपूर्ति के माध्यम से पुनरुद्धार की दैवी योजना के लिए आवश्यक है कि परमेश्वर अस्थायी रूप से कम्युनिस्ट दुनिया बनाने के लिए शैतान के पक्ष को अनुमति दे, दूसरे विश्व युद्ध में फासिस्टवाद को नष्ट करने के लिए सोवियत संघ को परमेश्वर के पक्ष के राष्ट्रों के साथ शामिल होने की अनुमति दी गई थी, ताकि वह जल्दी से कम्युनिस्ट राज्य का निर्माण कर सके। तथापि, जैसे ही दूसरा विश्व युद्ध समाप्त हुआ, कम्युनिस्ट दुनिया और लोकतांत्रिक दुनिया तेल और पानी की तरह अलग हो गईं।

४.३.५ दूसरे विश्व युद्ध के पीछे दैवी कारण

द्वितीय विश्व युद्ध के पीछे आंतरिक, दैवकृत कारण इस प्रकार थे: पहला, विश्वव्यापी क्षतिपूर्ति की शर्त को विकास-चरण में पूरा करने के लिए युद्ध चालू हुआ ताकि परमेश्वर के तीन महान वरदान पुनःस्थापित किए जा सकें। आदर्श दुनिया जहां परमेश्वर के तीन वरदान पूरे होते हैं, जो पतन के कारण आदम के द्वारा साकार नहीं किए जा सके, वे यीशु के द्वारा साकार किए जाने चाहिए थे, जिसे परमेश्वर ने दूसरे आदम के रूप में भेजा था। परन्तु यह आदर्श केवल आध्यात्मिक रूप से साधित किया गया क्योंकि यीशु क्रूस पर मरा गया था। चूँकि शैतान आदर्श दुनिया की एक दोषयुक्त नकल पहले ही साकार करने की कोशिश करता है, इसलिए इतिहास के अंत में निश्चित रूप से एक सिद्धांतहीन दुनिया उभर कर सामने आएगी, जिसे यीशु का शैतानी प्रतिरूप शैतान के नेतृत्व के अंतर्गत तीन महान आशीर्वादों के बाहरी रूप के आधार पर विकास चरण में एक दोषयुक्त दुनिया साधित करेगा। परमेश्वर के पक्ष को निश्चित ही इस दुनिया पर विजय प्राप्त करनी होगी और इस प्रकार आदर्श दुनिया की पुनःस्थापना के लिए विकास चरण में विश्वव्यापी क्षतिपूर्ति की आवश्यक शर्त पूरी होगी, जहाँ परमेश्वर पर केंद्रित तीन महान वरदान पूरी तरह से साधित किए गए हैं।

हिटलर यीशु का शैतानी प्रतिरूप था। यद्यपि उसकी इच्छा यीशु के बिलकुल विपरीत थी, हिटलर ने अपने जीवन के कुछ पहलुओं द्वारा, यीशु के जीवन की कुछ घटनाओं का विकृत तरीके से अनुकरण किया है: उदाहरण की तौर पर उसकी भव्य परिकल्पना, उसका एकल जीवन और उसकी शव का गायब होना। हिटलर विकास-चरण में पूर्ण आदम का भी शैतानी प्रतिरूप था। उसने बच्चों के प्रजनन के वरदान को उपहास का विषय बनाया और जर्मन जाति को प्रधान-जाति के रूप में ठहरा कर उसके लोगों की शुद्धता का दावा किया, और विश्व विजय की राज-नीति के आधार पर तीसरे वरदान प्रकृति पर प्रभुत्व की नकल की। इस तरह, हिटलर ने तीन वरदानों को शैतानी रूप में ढाल कर एक सिद्धांतहीन दुनिया साकार की, जो विकास-चरण में परिपूर्ण हुई। द्वितीय विश्व युद्ध में विजयी होकर, परमेश्वर के तीन वरदानों की आदर्श दुनिया पुनःस्थापित करने के लिए परमेश्वर के पक्ष ने विकास-चरण में विश्वव्यापी स्तर पर क्षतिपूर्ति की शर्त को पूरा किया।

युद्ध के पीछे दूसरा मुख्य कारण यह था कि परमेश्वर के पक्ष के लोग विश्व स्तर पर यीशु के दूसरे प्रलोभन पर प्रबल हो सकें। यीशु के तीन प्रलोभनों के अर्थ के खुलासे से हम यह मान सकते हैं कि

परमेश्वर के पक्ष के लिए दूसरे वरदान को क्षतिपूर्ति की शर्त द्वारा सारे विश्व में पुनःस्थापित करने के लिए दूसरे विश्व युद्ध में विजयी होना आवश्यक था। जिस तरह यीशु ने जंगल में दूसरे प्रलोभन पर प्रबल होकर बच्चों की बहाली की नींव रखी, परमेश्वर के पक्ष को लोकतंत्र के लिए विश्वव्यापी विकास-चरण की नींव रखने के लिए दूसरे विश्व युद्ध में जीतना आवश्यक था।

युद्ध के पीछे तीसरा दैवी कारण परमेश्वर की संप्रभुता को पुनःस्थापित करने के लिए विकास-चरण की नींव डाली जानी चाहिए। प्रथम विश्व युद्ध में परमेश्वर के पक्ष की विजय से, लोकतांत्रिक दुनिया ने अपनी गठन-चरण नींव सुरक्षित कर ली थी। प्रथम विश्व युद्ध के दौरान कैन-वर्ग की दुनिया बनाने का कार्य करते हुए शैतान के पक्ष को ज़ारवादी तानाशाही के पतन से भी लाभ हुआ और कम्युनिस्ट दुनिया के लिए गठन-चरण में नींव स्थापित कर ली। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान, कम्युनिस्ट दुनिया और लोकतांत्रिक दुनिया ने अलग होने से पहले युद्ध के समापन पर अलग-अलग विकास-चरण की नींव का निर्माण किया। लोकतांत्रिक दुनिया के लिए इस विकास-चरण की नींव डालने से परमेश्वर की संप्रभुता की विकास-चरण नींव पुनःस्थापित हुई।

४.३.६ दूसरे विश्व युद्ध के दैवी परिणाम

द्वितीय विश्व युद्ध में परमेश्वर के पक्ष की जीत से सारी दुनिया में तीन महान वरदानों को बहाल करने के लिए विकास-चरण में क्षतिपूर्ति की शर्त पूरी हो गई। विश्व स्तर पर यीशु के दूसरे प्रलोभन पर प्रबल होने के महत्व से, इस विजय ने सारी दुनिया में परमेश्वर के दूसरे वरदान को बहाल करने के लिए क्षतिपूर्ति की शर्त पूरी की। अंत में, लोकतांत्रिक दुनिया के लिए विकास-चरण की नींव डालने से इस विजय ने परमेश्वर की संप्रभुता को पुनःस्थापित करने के लिए विकास-चरण की नींव डाली।

जबकि हिटलर शैतान के पक्ष में यीशु का विरोधी था, स्टालिन शैतान के पक्ष में यीशु के दूसरे आगमन का मसीह-विरोधी था। यह तथ्य कि हिटलर और उसके देश को नष्ट कर दिया गया था, जबकि स्टालिन और विश्वव्यापी साम्यवाद की नींव मज़बूत होती गई, इस घटना ने यह संकेत किया कि पुनर्जीवित यीशु के नेतृत्व में आध्यात्मिक साम्राज्य का निर्माण करने का समय बीत चुका है, और दूसरे आगमन के मसीह के नेतृत्व में एक नया स्वर्ग और नई धरती के निर्माण करने का युग[७६०] आरंभ हो गया है।

द्वितीय विश्व युद्ध के समापन पर, दूसरे आगमन की व्यवस्था का विकास-चरण आरंभ हुआ। बहुत से ईसाई लोगों ने यीशु की वापसी के बारे में प्रकाशन प्राप्त करना शुरू किए, और परमेश्वर के आध्यात्मिक कार्य पूरे विश्व में होने लगे हैं। तब से, स्थापित चर्च उत्तरोत्तर भ्रमित, विभाजित और धर्मनिरपेक्ष होते गए हैं; वे धीरे-धीरे अपने आध्यात्मिक जीवन में कमज़ोर हो रहे हैं। ये अंतिम दिनों की घटनाएं हैं, जो कि

[७६०] प्रकाशितवाक्य २१:१-७

सच्चाई की नई अंतिम अभिव्यक्ति के माध्यम से सभी धर्मों को एकजुट करने के लिए परमेश्वर की अंतिम दैवी योजना के कारण हो रही हैं।

४.४ तीसरा विश्व युद्ध

४.४.१ क्या तीसरा विश्व युद्ध अनिवार्य है?

हम जानते हैं क्योंकि परमेश्वर ने पहले मानव पूर्वजों को विश्व पर शासन करने का वरदान दिया था, जब शैतान पतित लोगों के द्वारा ऐसी एक सिद्धांतहीन नकली दुनिया बनाने के लिए काम करता है, जहाँ यह वरदान पूरा किया जाता है, तो परमेश्वर को उसे अनुमति देनी पड़ती है। उसी समय शैतान के पीछे-पीछे परमेश्वर शैतान की दुनिया और उसके फलों पर दावा करने के लिए अपनी दैवी योजना का आयोजन करता है। मानव इतिहास के समापन पर, शैतान का पक्ष और परमेश्वर का पक्ष दोनों तब तक प्रयास करेंगे, जब तक वे एक ऐसी ही दुनिया पर प्रभुता प्राप्त न कर लें। यही कारण है कि लोकतांत्रिक दुनिया और कम्युनिस्ट दुनिया एक-दूसरे का सामना कर रही है। परिणामस्वरूप, विश्व युद्ध का होना अनिवार्य है, पहले विभाजित करने के लिए और फिर इन दो संसारों को एकजुट करने के लिए।

प्रथम और द्वितीय विश्व युद्धों का दैवी उद्देश्य दुनिया को कम्यूनिस्ट दुनिया और लोकतांत्रिक दुनिया में विभाजित करने था। इसके बाद, एक और युद्ध उनके एकीकरण के लिए होना चाहिए। यह संघर्ष तीसरा विश्व युद्ध है। तीसरा विश्व युद्ध अनिवार्यतः होगा; हालांकि यह दो संभावित तरीकों से लड़ी जा सकतीं हैं।

एक तरीका यह है कि शैतान के पक्ष को सशस्त्र संघर्ष के माध्यम से आत्मसमर्पण में लाया जाए। हालांकि, संघर्ष के समापन पर, एक आदर्श दुनिया आनी चाहिए जिसमें सभी मानवता एक साथ खुश रहें। परंतु यह दुश्मनों को युद्ध में परास्त करके नहीं बनाई जा सकती। इसके बाद, उन्हें आंतरिक रूप से आत्मसमर्पण करना आवश्यक है, ताकि सब अपने दिल से सामंजस्य स्थापित करें और निष्कपटता से आनंद प्राप्त करें। इसे उपलब्ध करने के लिए, एक आदर्श विचारधारा आनी चाहिए जो सभी लोगों की मौलिक प्रकृति की आकांक्षाओं को तृप्त कर सके।

शैतान की दुनिया को थोड़े समय में आत्मसमर्पण करने और सशस्त्र शत्रुता फैलाए बिना एकीकरण करने के लिए, इस युद्ध को लड़ने का दूसरा तरीका पूर्ण रूप से एकमात्र आंतरिक विचारधाराओं का संघर्ष हो सकता है। लोग विवेकशील प्राणी हैं। इसलिए, एक परिपूर्ण संगठित दुनिया केवल तभी स्थापित की जा सकती है जब लोग एक दूसरे का मान रखें और गहन नए-जागरण द्वारा संगठन में भाग लें।

इन दो तरीकों में से किस एक तरीके से तीसरा विश्व युद्ध वास्तव में लड़ा जाएगा? यह मानवता की अपने हिस्से की ज़िम्मेदारी को पूरा करने की सफलता या विफलता पर निर्भर करता है।

इस संघर्ष के समाधान के लिए और नई दुनिया की स्थापना के लिए विचारधारा कहां से आएगी? निश्चित रूप से यह कम्युनिस्ट दुनिया से, जो जीवन के कैन-वर्ग के दृष्टिकोण में निहित है, नहीं आ सकती, क्योंकि जीवन का कैन-वर्ग का दृष्टिकोण मानव की मौलिक प्रकृति की आंतरिक आकांक्षाओं का विरोध करता है। इसके बजाय, यह विचारधारा लोकतांत्रिक दुनिया से उत्पन्न होनी चाहिए, जो जीवन के हाबिल-वर्गीय दृष्टिकोण में निहित है। फिर भी, यह इतिहास का एक तथ्य है कि लोकतांत्रिक दुनिया में औपचारिक विचारधाराओं के बीच कोई भी विचारधारा नहीं है जो कम्युनिस्ट विचारधारा को प्रभावी ढंग से पराजित कर सकती है। इसलिए, अब लोकतांत्रिक दुनिया से एक अज्ञात विचारधारा उभरेगी।

नई विचारधारा पैदा होने के लिए पहले, सत्य की एक नई अभिव्यक्ति उत्पन्न होनी चाहिए। यह नया सत्य जीवन के हाबिल-वर्ग के दृष्टिकोण का सार और लोकतंत्र का मर्म है। जैसा कि अतीत में हुआ है, जब सत्य की नई अभिव्यक्ति प्रकट होती है, तो यह सत्य की पुरानी अभिव्यक्तियों का खंडन कर सकती है जिस पर बहुत से लोगों ने विश्वास किया है। इस वजह से, यहां तक कि लोकतांत्रिक दुनिया भी दो शिविरों में विभाजित हो जाएगी, जैसे कैन और हाबिल, और एक-दूसरे के खिलाफ खड़ी होंगी। जब नया सत्य लोकतांत्रिक दुनिया में विजय की नींव सुरक्षित कर लेगा और फिर कम्युनिस्ट विचारधारा पर विजय प्राप्त करेगा, तब एक सत्य के आधार पर दुनिया का एकीकरण हो सकेगा।

शैतान ने परमेश्वर की इस योजना को जान लिया था कि वह इस एकाकी सत्य के माध्यम से दुनिया को संगठित करेगा, इसलिए उसने अपने आप पर केंद्रित मानवता को संगठित करने के लिए सत्य की एक झूठी नकल प्रस्तुत की। यह झूठी सच्चाई द्वंद्वात्मक भौतिकवाद है। द्वंद्वात्मक भौतिकवाद किसी भी आध्यात्मिक वास्तविकता के अस्तित्व को मानने से इनकार करता है और विश्व की विद्यमानता के स्पष्टीकरण को पूर्ण भौतिकवादी तर्क के आधार पर स्थापित करने की कोशिश करता है। परमेश्वर के अस्तित्व को नकारने के साथ शैतान का अपना अस्तित्व है इससे भी इनकार करता है। इस प्रकार, द्वंद्वात्मक भौतिकवाद को बढ़ावा देकर शैतान प्रभावी रूप से अपनी खुद की वास्तविकता को अस्वीकार करता है, यहां तक कि अपने स्वयं के निधन को भी खतरे में डालता है। शैतान यह समझता है कि मानव इतिहास के अंत में क्या होने वाला है और यह अच्छी तरह जानता है कि वह निश्चित रूप से नष्ट हो जाएगा। यह जानते हुए कि यह समय अपनी पूजा करवाने का नहीं है, उसने अपने आप को भी दांव पर लगा दिया और परमेश्वर को ज़ोर-शोर से नकारने के लिए उठेगा। यह द्वंद्वात्मक भौतिकवाद की आध्यात्मिक जड़ है। जब तक लोकतांत्रिक दुनिया में ऐसे सत्य की कमी रहेगी जो इस दुष्ट सिद्धांत को खत्म कर सके, यह हमेशा कमजोर और रक्षात्मक रहेगी। इस कारण से, परमेश्वर के पक्ष में अब किसी को यथार्थ सत्य घोषित करना चाहिए।

४.४.२ तीसरे विश्व युद्ध की दैवी योजना का संक्षिप्त विवरण

तीसरा विश्व युद्ध पुनरुद्धार की दैवी योजना में अंतिम संघर्ष है। इस युद्ध के माध्यम से, परमेश्वर यह चाहता है कि लोकतांत्रिक दुनिया, कम्युनिस्ट दुनिया को आत्मसमर्पण करने के लिए मजबूर करे और

एक आदर्श दुनिया बनाए। प्रथम विश्व युद्ध के आरंभ तक परमेश्वर के पक्ष के राष्ट्रों ने दुनिया भर में उपनिवेशों का दावा करके अपने राजनीतिक और आर्थिक प्रभुत्व का विस्तार बढ़ाया, जिसका उपयोग परमेश्वर की दैवी योजना के लिए किया जाना था। युद्ध के समापन पर, इन राष्ट्रों ने लोकतंत्र के लिए विश्वव्यापी स्तर पर गठन-चरण की नींव रखी। दूसरे विश्व युद्ध के माध्यम से, उन्होंने लोकतंत्र के लिए विश्वव्यापी स्तर पर विकास-चरण की नींव डाली, इस तरह लोकतांत्रिक दुनिया को दृढ़ता से संगठित किया गया। तीसरे विश्व युद्ध के दौरान, परमेश्वर का पक्ष जीवन के हाबिल-वर्ग के पूर्ण दृष्टिकोण से नए सत्य के आधार पर लोकतंत्र के लिए विश्वव्यापी स्तर पर निष्पत्ति-चरण की नींव को पूरी करेगा। तब परमेश्वर का पक्ष सारी मानवता को एक संयुक्त दुनिया में ले जाने के लिए मार्गदर्शन करेगा। संक्षेप में, इतिहास के समापन पर तीसरा विश्व युद्ध अंतिम महायुद्ध होगा, जब परमेश्वर का पक्ष, क्षैतिज रूप से क्षतिपूर्ति के माध्यम से तीनों चरण की संपूर्ण प्रवर्धित दैवी योजना में वह सब जो शैतान के हाथ लग गया था, पुनर्स्थापित करेगा।

४.४.३ तीसरे विश्व युद्ध के पीछे दैवी कारण

जैसा ऊपर बताया गया था कि तीसरा विश्व युद्ध चाहे हथियारों के बल से लड़ा जाए या वैचारिक संघर्ष के रूप में किया गया जाए, यह परमेश्वर की दैवी योजना में सेवा करने वाले लोगों की ज़िम्मेदारी पर निर्भर करता है। फिर भी, विश्वव्यापी संघर्ष अपरिहार्य है।

तीसरे विश्व युद्ध के पीछे आंतरिक, दैवी कारण क्या हैं? पहला, परमेश्वर के तीन महान वरदानों को पुनःस्थापित करने के लिए और निष्पत्ति-चरण में विश्वव्यापी क्षतिपूर्ति की शर्त को पूरा करने के लिए यह युद्ध अवश्य होगा। लोगों के अविश्वास के कारण जब यीशु केवल आध्यात्मिक रूप से पुनरुद्धार की दैवी योजना को पूरा कर सका, तो यह आवश्यक हो गया कि वह परमेश्वर के आदर्श की दुनिया को दोनों आध्यात्मिक और शारीरिक रूप से बहाल करने के लिए वापस आए। फिर भी, चूंकि शैतान पहले से ही परमेश्वर के आदर्श की दोषपूर्ण नकल कार्यान्वित करता है, इतिहास के समापन पर दूसरे आगमन के समय एक सिद्धांतहीन दुनिया उभरेगी, और मसीह-विरोधी, शैतान के नेतृत्व के अंतर्गत तीन महान वरदानों को दिखावे के रूप में बहाल करेगा। इस शैतानी दुनिया पर प्रबल होने से, परमेश्वर का पक्ष निष्पत्ति-चरण में विश्वव्यापी क्षतिपूर्ति की शर्त को पूरा करके आदर्श दुनिया को पुनःस्थापित करने के लिए ज़िम्मेदार है, जिसमें परमेश्वर पर केंद्रित तीन महान वरदान परितोषित होंगे।

दूसरे आगमन के समय स्टालिन मसीह का शैतानी प्रतिरूप था। जिसे लोग आदर्श इनसान के रूप में सम्मान देते थे। लोकतांत्रिक दुनिया के विरोध में उसने किसानों और श्रमिकों के लिए ऐक्यभाव का समर्थन करके उसने शिशु प्रजनन के वरदान की नकल की, और विश्वव्यापी कम्युनिस्ट प्रभुत्व की नीति के द्वारा सृष्टि पर प्रभुत्व के वरदान की बाहरी समानता प्राप्त की। इस प्रकार स्टालिन ने एक विशाल कम्युनिस्ट दुनिया बनाई जिस में उसने तीन महान वरदानों के बाहरी रूप को दोषपूर्ण रूप से साकार किया। हमें यह बात समझनी चाहिए कि कम्युनिस्ट दुनिया परमेश्वर के आदर्श की दुनिया का सिद्धांतहीन

और दोषपूर्ण अनुकरण है, जिसका चित्रण परमेश्वर के द्वारा स्थापित, परस्पर निर्भरता, पारस्परिक समृद्धि और सार्वभौमिक मूल्यों की सहभागिता से किया गया है।

दूसरा, तीसरे विश्व युद्ध का होना आवश्यक है ताकि परमेश्वर का पक्ष विश्व स्तर पर यीशु के तीसरे प्रलोभन पर प्रबल हो सकें। यीशु के तीन प्रलोभनों के अर्थ के प्रकाश में, हम यह स्वीकार करते हैं हैं कि सारे विश्व में परमेश्वर के तीसरे वरदान को बहाल करने के लिए क्षतिपूर्ति की शर्त पूरी करके परमेश्वर के पक्ष को तीसरे विश्व युद्ध में अवश्य ही विजयी होना चाहिए। जिस तरह यीशु ने जंगल में तीसरे प्रलोभन पर प्रबल होने के द्वारा सृष्टि पर प्रभुत्व बहाल करने की नींव की स्थापना की, मनुष्य के प्रभुत्व को पूरे विश्व में बहाल करने के लिए परमेश्वर के पक्ष को तीसरे विश्व युद्ध में जीतना होगा।

तीसरा, परमेश्वर की प्रभुता को पुनःस्थापित करने के लिए और निष्पत्ति-चरण की नींव रखने के लिए तीसरा विश्व युद्ध होना ही चाहिए। कम्युनिस्ट दुनिया को नष्ट करने और परमेश्वर की प्रभुता का सारा अधिकार उसे वापस करने के लिए इस युद्ध में परमेश्वर के पक्ष को विजयी होना चाहिए। फिर स्वर्ग और पृथ्वी के सिद्धांतों के आधार पर आदर्श दुनिया स्थापित की जाएगी।

४.४.४ *तीसरे विश्व युद्ध के दैवी परिणाम*

बहुत पहले, आदम के परिवार में कैन और हाबिल के द्वारा काम करके परमेश्वर चाहता था कि वह पुनरुद्धार की दैवी योजना समाप्त करे। परन्तु, कैन ने हाबिल की हत्या कर दी, जिससे मानवता का पापी इतिहास शुरू हुआ। परमेश्वर ने व्यक्तिगत स्तर पर आदम के परिवार की विफलता को बहाल करने और इसे परिवार, वंश, समाज, आवाम और राष्ट्र के स्तर पर विकसित करने के लिए अच्छे और बुरे को विभाजित करने की व्यवस्था शुरू की। वह समय आ गया है जब परमेश्वर विश्व स्तर पर इस व्यवस्था को आयोजित करे। दैवी इतिहास के अंतिम अध्याय से संबंधित, तीन विश्व युद्धों में विजय के द्वारा, परमेश्वर का इरादा है कि संपूर्ण दैवी योजना को जो तीसरे चरण तक प्रवर्धित हो गई थी, क्षतिपूर्ति द्वारा पुनःस्थापित करे।

आरंभ में, पहले मानव पूर्वजों ने शैतान के मोहक शब्दों का शिकार होकर परमेश्वर के साथ अपना दिली रिश्ता खो दिया था। आंतरिक आध्यात्मिक पतन और बाहरी भौतिक पतन के कारण, उन्हें शैतान की वंशावली विरासत में मिली। इसलिए, पुनरुद्धार की दैवी योजना उसी समय पूरी हो सकती है जब पतित लोग अपने दिलों को परमेश्वर के जीवन देने वाले वचन के माध्यम से बहाल करें, तब वे दोनों आध्यात्मिक और शारीरिक रूप से बचाए जा सकते हैं, और परमेश्वर का वंश प्राप्त कर सकते हैं।[७६१]

तीन विश्व युद्धों में परमेश्वर के पक्ष की जीत पुनरुद्धार की दैवी योजना के सभी पहलुओं को क्षतिपूर्ति के माध्यम से पूरी तरह से बहाल करेगी। वे परमेश्वर की आदर्श दुनिया की प्राप्ति को संभव बनाएंगे, जिसके लिए परमेश्वर ने पतन के बाद से सदियों मानवता के दुख और क्लेश को दूर करने के लिए निरंतर आँसुओं और परिश्रम के साथ काम किया है।

---

[७६१] प्रति-संदर्भ—मूसा और यीशु ३.३.२

दिव्य नियम प्रतिपादन

भाग २

अध्याय ६

दूसरा आगमन

विषय-सूची

		पृष्ठ
अध्याय ६		४०६
दूसरा आगमन		४०८
संभाग १	मसीह कब लौटेगा	४१०
संभाग २	मसीह किस रीति से वापस लौटेगा	४११
२.१	बाईबल का दृष्टिकोण	४११
२.२	मसीह बच्चे के रूप में दुनिया में आयेगा	४१३
२.३	बाईबल के इस अनुवाक्य का क्या अर्थ है कि मसीह बादलों पर वापस आएगा	४२१
२.४	यीशु ने ऐसा क्यों कहा कि प्रभु बादलों पर आएगा?	४२२
संभाग ३	मसीह कहाँ वापस आएगा	४२५
३.१	क्या मसीह यहूदी लोगों के बीच वापस आएगा?	४२१
३.२	क्या मसीह किसी पूर्वी देश में वापस आएगा?	४२७
३.३	पूर्व दिशा में कोरिया का देश है	४२८
	३.३.१ राष्ट्रीय क्षतिपूर्ति की शर्त	४२८
	३.३.२ परमेश्वर के मोर्चे की पंक्ति और शैतान के मोर्चे की पंक्ति	४३०
	३.३.३ परमेश्वर का हार्दिक पात्र साझी	४३१
	३.३.४ मसीह के विषय में भविष्यवाणी	४३३
	३.३.५ सभ्यताओं की पराकाष्ठा	४३५
संभाग ४	यीशु के दिनों और वर्तमान दिनों में समानांतर	४३७
संभाग ५	भाषाओं का अव्यवस्थात्मक प्राचुर्य और उनके संगठन की आवश्यकता	४४०

दूसरा आगमन

यीशु ने स्पष्ट रूप से अपनी वापसी की भविष्यवाणी की थी।[७६२] फिर उसने यह भी कहा कि कोई भी उसकी वापसी के दिन और घड़ी के बारे में नहीं जानता है, न स्वर्गदूत, ना ही वह स्वयं।[७६३] इसलिए, आमतौर पर दूसरे आगमन की तिथि, स्थान और किस ढंग से वह आएगा यह अनुमान लगाना मूर्खता समझा जाता है।

फिर भी, यीशु के इन शब्दों से, "लेकिन उस दिन और घंटे के बारे में कोई भी नहीं जानता...परंतु केवल पिता,"[७६४] और यह पद्य, "प्रभु यहोवा अपने दास भविष्यद्वक्ताओं पर अपना मर्म प्रगट किए बिना कुछ भी नहीं करता है"[७६५], हम अनुमान लगा सकते हैं कि परमेश्वर, जो वह दिन और घड़ी जानता है निश्चित रूप से अपना काम करने से पहले दूसरे आगमन के बारे में भविष्यद्वक्ताओं को अपने सभी रहस्य प्रकट करेगा।

यद्यपि यीशु ने कहा था कि प्रभू चोर की तरह आएगा,[७६६] पर यह भी लिखा है कि प्रकाश में रहने वालों के लिए, प्रभु चोर की तरह गुप्त रूप से नहीं आएगा।[७६७] जब हम यीशु के पहले आगमन की घटनाओं पर ध्यान करते हैं, तो हम महसूस करते हैं कि वह उन फरीसियों और शास्त्रियों के लिए चोर की तरह आया जो अंधेरे में थे, लेकिन यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के परिवार के लिए, जो प्रकाश में थे, परमेश्वर ने यीशु के जन्म के बारे में पहले ही से स्पष्ट रूप से बताया। जब यीशु का जन्म हुआ था तो परमेश्वर ने इस रहस्य को तीन ज्योतिषियों, शमौन, अन्ना और चरवाहों के सामने प्रकट किया। यीशु ने कहा:

> इसलिए सावधान रहो, ऐसा न हो कि तुम्हारे मन खुमार, और मतवालेपन, और इस जीवन की चिन्ताओं से सुस्त हो जाएँ, और वह दिन तुम पर फंदे के समान अचानक आ पड़े। क्योंकि वह सारी पृथ्वी के सब रहनेवालों पर इसी प्रकार आ पड़ेगा। इसलिए जागते रहो और हर समय प्रार्थना करते रहो कि तुम इन सब आनेवाली घटनाओं से बचने और मनुष्य के पुत्र के सामने खड़े होने के योग्य बनो। लूक २१:३४-३६

इस प्रकार, यीशु ने दृढ़ता से सुझाव दिया कि उसकी वापसी का समय, स्थान और ढंग का रहस्य उन विश्वासयोग्य लोगों को जो सतर्क हैं प्रकट किया जाएगा, ताकि वे दूसरे आगमन के दिन तैयार हो

---

[७६२] मत्ती १६:२७
[७६३] मत्ती २४:३६
[७६४] इबिद
[७६५] आमोस ३:७
[७६६] प्रकाशितवाक्य ३.३
[७६७] थिस्सलुनीकियों ५:४

सकें। पुनरुद्धार की दैवी योजना में, परमेश्वर ने हमेशा अपने भविष्यद्वक्ताओं को पहले से बताया कि वह क्या करने वाला है। नूंह के दिनों में बाढ़ का निर्णय, सदोम और गमोराह का विनाश, और यीशु का जन्म ऐसे कुछ उदाहरण हैं। तदनुसार, प्रभु के दूसरे आगमन के बारे में, परमेश्वर निश्चित रूप से उन विश्वासयोग्य विश्वासियों को जो प्रकाश में हैं भविष्यवाणियों के द्वारा बताएगा, जिन के पास सुनने के लिए कान हैं। जैसा लिखा है:

> परमेश्वर कहता है कि अन्त के दिनों में ऐसा होगा कि मैं अपना आत्मा सब मनुष्यों पर उँडेलूँगा, और तुम्हारे बेटे और तुम्हारी बेटियाँ भविष्यद्वाणी करेंगी, और तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे, और तुम्हारे पुरनिए स्वप्न देखेंगे। प्रेरितों २:१७

संभाग १

मसीह कब लौटेगा?

मसीह के दूसरे आगमन के समय को हम अंतिम दिन कहते हैं। जैसा कि पहले समझाया गया था, हम आज अंतिम दिनों में रह रहे हैं।[७६८] इस प्रकार हम समझ सकते हैं कि यह वास्तव में मसीह की वापसी का समय है। दैवी इतिहास के दृष्टिकोण से, यीशु दो हज़ार वर्षीय पुराने नियम के युग के समापन पर, जो पुनरुद्धार की दैवी योजना का युग है, आया था। क्षतिपूर्ति द्वारा पुनरुद्धार का नियम हमें यह अनुमान लगाने के लिए प्रेरित करता है कि मसीह को दो-हजार-वर्षीय लंबे नए नियम के युग के अंत में वापस लौटना है, पुनरुद्धार की दैवी योजना के प्रवर्धन का यह युग पिछले युग को वास्तविक समानांतर क्षतिपूर्ति की शर्त के द्वारा बहाल करता आया है।

जैसा कि प्रथम विश्व युद्ध के संदर्भ में विस्तार से चर्चा की गई है, जर्मनी और कैसर (शैतान के पक्ष में आदम-के-प्रतिरूप) की हार के तुरंत बाद, स्टालिन (शैतान के पक्ष में दूसरे आगमन के मसीह-का-प्रतिरूप) की शक्ति बढ़ी और उसने कम्युनिस्ट दुनिया का निर्माण किया।[७६९] इसका अर्थ यह था कि मसीह के आने का समय निकट आ रहा था और वह क्षतिपूर्ति के माध्यम से आदर्श दुनिया, जो परस्पर निर्भरता, पारस्परिक समृद्धि और सार्वभौम सहभाजी मूल्यों से चित्रित किया गया है, पुनःस्थापित करेगा। इस प्रकार हम निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि प्रथम विश्व युद्ध के अंत के बाद शीघ्र दूसरे आगमन की अवधि शुरू हुई।

[७६८] प्रति-संदर्भ—प्रलयोत्तर ४

[७६९] प्रति-संदर्भ—तैयारी ४.२.४

संभाग २

मसीह किस रीति से वापस लौटेगा?

२.१ बाईबल का दृष्टिकोण

परमेश्वर अपनी इच्छा की सभी आवश्यक घटनाओं को पहले से ही दृष्टांत और प्रतीकों में प्रकट करता है, ताकि किसी भी युग में रहने वाले लोग अपनी बुद्धि और आध्यात्मिकता के स्तर के अनुसार अपने समय और भविष्य के लिए दैवी योजना की मांग को समझ सकें। यह तथ्य कि परमेश्वर ने बाईबल में दृष्टान्तों और प्रतीकों का उपयोग किया है, अनिवार्य रूप से यह कई विभिन्न व्याख्याओं में अंकित हुआ है। चर्चों का विभाजित होने का यह एक प्रमुख कारण है। इसलिए, बाईबल की व्याख्या करने के लिए सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इसे सही दृष्टिकोण से समझना चाहिए।

उदाहरण के लिए, यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले पर विचार करें। दो हज़ार वर्ष से हम बाईबल को इस पूर्वकल्पना के साथ पढ़ते आए हैं कि यूहन्ना ने अपना दिया हुआ मिशन पूरा किया है; इसलिए इसके अनुच्छेद इस विचार का समर्थन करते हुए प्रतीत होते हैं। परन्तु जब हमने बाईबल की एक अलग दृष्टिकोण से अधिक बारीकी से जांच की, तो हमने स्पष्ट रूप से देखा कि वास्तव में यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने अपना मिशन पूरा नहीं किया।[७७०]

आज तक हम में से बहुतों ने पूर्वकल्पित धारणा के साथ बाईबल पढ़ी है कि यीशु बादलों पर चिह्नों और चमत्कार के साथ आएगा। यह यीशु के इस तरह के शब्दों पर आधारित है:

> तब मनुष्य के पुत्र का चिह्न आकाश में दिखाई देगा, और तब पृथ्वी के सब कुलों के लोग छाती पीटेंगे, और पुत्र को बड़ी सामर्थ्य और ऐश्वर्य के साथ बादलों पर आता देखेंगे, वह तुरही के बड़े शब्द के साथ आपने दूतों को भेजेगा और वे आकाश के इस छोर से उस छोर तक, चारों दिशाओं से उसके चुने हुओं को इकट्ठा करेंगे। मत्ती २४:३०-३१

यदि हम इस व्याख्यान की शाब्दिक रूप में व्याख्या करते हैं, तो हमें यह आभास होगा कि बाईबल के सबूत ठीक इसी दिशा की ओर इंगित करते हैं। जबकि, यह विचार कि मसीह बादलों पर वापस आ जाएगा आधुनिक युग के वैज्ञानिक दिमाग के लिए बिलकुल अस्वीकार्य है। इस तरह के छंदों के वास्तविक अर्थ को समझने के लिए हमें बाईबल के एक और दृष्टिकोण से अधिक गहराई से इसकी जांच करना आवश्यक लगता है।

यह नया दृष्टिकोण यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले से संबंधित बाईबल के छंदों की हमारी पूर्व जांच द्वारा व्यक्त किया गया है। भविष्यवक्ता मलाकी ने भविष्यवाणी की थी कि मसीह के आने से पहले एलिय्याह

---

[७७०] प्रति-संदर्भ—मसीह २.३

वापस आएगा।[७७१] वे बड़ी उत्सुकता से उस दिन की प्रतीक्षा कर रहे थे, कई यहूदियों का मानना था कि एलिय्याह, जिस प्रकार वह स्वर्ग पर चढ़ गया था, उसी प्रकार वह स्वर्ग से नीचे उतरेगा। हालांकि, उनकी अपेक्षाओं के विपरीत, यीशु ने दृढ़तापूर्वक दावा किया कि ज़कर्याह का पुत्र यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला एलिय्याह था।[७७२] यीशु की गवाही के अनुसार, एलिय्याह की वापसी चमत्कारी तरीके से होने वाली नहीं थी जैसा कि बहुत से यहूदी लोगों की अपेक्षा थी। लेकिन वास्तव में, यह एक बच्चे के जन्म के माध्यम से हुआ। इसी तरह, आज तक ईसाई लोग मानते हैं कि यीशु बादलों पर वापस आ जाएगा। परन्तु, एलिय्याह की वास्तविक वापसी के बारे में हमने जो कुछ सीखा है, जो एक अन्य संभावना का सुझाव देता है: कि मसीह की वापसी एक बच्चे के जन्म के माध्यम से पूरी हो सकती है, जिस तरह से पहले आगमन पर हुआ था।

इस नए परिप्रेक्ष्य से, आइए हम दूसरे आगमन से संबंधित बाईबल के छंदों की बारीकी से जांच करें। यीशु के पहले आगमन के बारे में इस्राएल के बहुत से विद्वान लोग यह सोचते थे कि मसीहा का जन्म बेतलहेम में राजा दाऊद के वंशज में होगा।[७७३] फिर भी, निस्संदेह बहुत से अन्य यहूदी मसीह की बादलों पर आने की उम्मीद रखते थे। यह विश्वास दानिय्येल की भविष्यवाणी पर आधारित था, "मैंने रात में स्वप्न देखा, और देखो, मनुष्य की संतान-सा कोई आकाश के बादलों समेत आ रहा है"[७७४] इसके अतिरिक्त अंतिम दिनों में अलौकिक घटनाओं की अन्य भविष्यवाणियां[७७५] भी हैं। इसलिए, फरीसी और सदूकी लोगों ने यीशु से पूछा, कि वह उन्हें उसके मसीह होने का स्वर्ग से कोई चिह्न दिखाए।[७७६] जैसा बाईबल में पहले बताया गया है कि वे उसे स्वर्ग के अलौकिक चिह्न के बिना, जिसकी प्रतीक्षा वे एक लंबे समय से कर रहे थे, आसानी से स्वीकार नहीं कर सके। यह विश्वास कि मसीह अलौकिक रूप से आएगा यीशु की मृत्यु के बाद भी कायम रहा, यहां तक कि कुछ विधर्मी ईसाई भी यही मानते थे कि वह भौतिक शरीर में नहीं आया। प्रेरित यूहन्ना ने उन विश्वासियों को मसीह के विरोधी के रूप में दोषी ठहराया:

> क्योंकि बहुत से ऐसे भरमाने वाले जगत में निकल आए हैं, जो यह नहीं मानते हैं कि यीशु मसीह शरीर में होकर आया, भरमाने वाले और मसीह-विरोधी यही हैं।२यूहन्ना ७

बहुत से ईसाई यह दृढ़तापूर्वक कहते हैं कि दानिय्येल की भविष्यवाणी मसीह के दूसरे आगमन से संबंधित है। हालांकि परमेश्वर, यीशु के आगमन के लिए पुराने नियम के युग में पुनरुद्धार की दैवी योजना के संपूर्ण उद्देश्य को पूरा करने के लिए काम कर रहा था, बाईबल यह प्रमाणित करती है:

---

[७७१] मलाकी ४:५
[७७२] मत्ती ११:१४
[७७३] मत्ती २.५-६, मीका ५:२
[७७४] दानिय्येल ७:१३
[७७५] योएल २:३०-३१
[७७६] मत्ती १६:४

"व्यवस्था और सारे भविष्यद्वक्ताओं ने यूहन्ना तक भविष्यद्वाणी की,"[७७७] और "क्योंकि धार्मिकता के निमित्त हर एक विश्वास करने वाले के लिये मसीह व्यवस्था का अंत है।"[७७८] इस प्रकार, यीशु के स्वयं अपने दूसरे आगमन की बात करने से पहले किसी ने भी दूसरे आगमन के बारे में सोचा नहीं था यह साफ स्पष्ट है कि उस समय तक किसी भी यहूदी ने दानिय्येल की इस आयत के बारे में सोचा भी नहीं था, सिवाय इसके कि उनका विश्वास मसीह का केवल एक और पहली बार आने के संबंध से था।

बहुत से यहूदी विश्वासियों की अपेक्षा के विपरीत, जो बाईबल के आधार पर विश्वास करते थे कि मसीह बादलों पर स्वर्ग के चिह्न और अचंभे के साथ आएगा, यीशु पृथ्वी पर बच्चे के रूप में एक दीन-हीन परिवार में पैदा हुआ था। इसलिए, हमें बाईबल को इस नए दृष्टिकोण से दोबारा जांचना चाहिए कि हो सकता है कि मसीह का दूसरा आगमन चमत्कारी तरीके से न हो। बल्कि, वास्तव में पहले आगमन के समान ही हो।

२.२ मसीह बच्चे के रूप में दुनिया में आयेगा

यीशु ने अपने वापस आने के बारे में कि जब वह आएगा तो क्या-क्या होगा, बहुत सी भविष्यवाणियाँ कीं।

> परन्तु पहले अवश्य है कि वह बहुत दुःख उठाए और इस युग के लोग उसे तुच्छ ठहराएं।
> लूक १७:२५

यदि यीशु सचमुच स्वर्ग के बादलों पर शक्ति और महान महिमा और स्वर्गदूतों के तुरही के साथ वापस लौटता,[७७९] तो क्या यह पापी संसार उसे आसानी से स्वीकार करके सम्मानित नहीं करता? इस रीति से लौटने पर, यह कभी नहीं हो सकता कि वह दुःख उठाए या अस्वीकृति का सामना करे।

तो फिर यीशु ने ऐसी भविष्यवाणी क्यों की कि जब वह लौटेगा तो उसे इतनी कठिनाईयों का सामना करना पड़ेगा? उसके दिनों के यहूदी उत्सुकता से उस दिन की प्रतीक्षा कर रहे थे जब एलिय्याह स्वर्ग से नीचे आएगा। मलाकी की भविष्यवाणी के अनुसार एलिय्याह मसीह का संदेशवाहक था इसलिए उसे मसीह से पहले आना चाहिए।[७८०] बजाए इसके कि लोग पहले एलिय्याह की वापसी की खबर सुनें, यीशु का जन्म एक दीन-हीन व्यक्ति की तरह हो गया, वह एक चोर की तरह आया, और अपने मसीह होने का दावा करने लगा। इसलिए, वे यीशु से घृणा करने लगे और सताने लगे।[७८१] जब यीशु ने अपनी ख़ुद की परिस्थिति पर विचार किया, तो उसने यह पूर्वानुमान किया कि दूसरे आगमन में, जो ईसाई लोग उसकी वापसी का इंतजार करेंगे, वे भी आकाश पर नज़र लगा कर बैठेंगे। इसलिए, दूसरे आगमन पर

---

[७७७] मत्ती ११:१३
[७७८] मत्ती १०:४
[७७९] मत्ती २४: ३०-३१
[७८०] मलाकी ४:५
[७८१] प्रति-संदर्भ—२.२

यदि मसीह का जन्म शरीर में हुआ और वह यकायक चोर की तरह प्रगट हुआ तो लोग मसीह को सता सकते हैं। वे उसे अपराधी और विधर्मी ठहरा सकते हैं, जिस तरह यीशु को दोषी ठहराया गया था। इसीलिए उसने यह भविष्यवाणी की कि प्रभु दु:ख उठाएगा और इस पीढ़ी से बहिष्कृत किया जाएगा। यह भविष्यवाणी तभी पूरी हो सकती है जब मसीह शरीर में वापस लौटेगा, परन्तु यदि वह बादलों में आएगा तो यह सच नहीं होगा। यीशु ने कहा:

> मैं तुम से कहता हूँ, वह तुरन्त उनका न्याय चुकाएगा। तौ भी, जब मनुष्य का पुत्र आएगा, तो क्या वह पृथ्वी पर विश्वास पाएगा? लूक १८:८

जैसे-जैसे दुनिया अंतिम दिनों में प्रवेश कर रही है, ईसाइयों की बढ़ती संख्या अपने विश्वास को और मज़बूत करने का प्रयास कर रही है। अगर दूसरे आगमन का प्रभु सचमुच स्वर्ग के बादलों पर स्वर्गदूतों की तुरही की आवाज़ और परमेश्वर की महिमा के बीच आता है तो वे किस प्रकार अविश्वास में पड़ सकते हैं? यदि मसीह अलौकिक रूप से लौटता है तो यह भविष्यवाणी भी पूरी नहीं हो सकती है। यीशु के दिनों में, अनेक यहूदी लोग यह सोचते थे कि मसीह बेथलेहेम में पैदा होगा और उनके राजा के रूप में प्रगट होगा,[७८२] परन्तु केवल एलिय्याह के स्वर्ग से लौटने के बाद। उनकी इस उम्मीद के विपरीत, एलिय्याह के प्रकट होने से पहले, नाज़रत के एक बढ़ई का बेटा आगे बढ़कर ख़ुद को मसीह के रूप में प्रस्तुत करता है। इस प्रकार यह बात समझने योग्य है कि यीशु को यहूदियों के बीच कोई इतना विश्वासयोग्य और उत्साही नहीं मिला, जो मृत्यु तक उसके पीछे चल सके। यीशु इस स्थिति पर दुखित हुआ और शोक किया कि उसकी वापसी पर भी ऐसा हो सकता है। उसने पूर्वानुमान किया कि विश्वासी लोग यह सोचकर कि दूसरे आगमन पर मसीह बादलों पर महिमा के साथ वापस आ जाएगा वे स्वर्ग की ओर ही देखेंगे। इसलिए, जब मसीह वास्तव में दीन-हीन मनुष्य की तरह धरती पर लौटेगा, तो वह मनुष्यों में कोई विश्वास नहीं पाएगा, ठीक जैसा कि यीशु के दिनों में उसके साथ हुआ। लूक की यह भविष्यवाणी कभी पूरा नहीं हो सकती जब तक कि लौटने वाला मसीह पृथ्वी पर पैदा न होए।

कुछ विद्वान इस निम्नलिखित छंद की व्याख्या इस तरह से करते हैं कि अंतिम दिनों में कष्ट इतने कठोर हो जाएंगे कि सभी विश्वासियों के लिए ठोकर का कारण बनेंगे। फिर भी दैवी योजना के दौरान, कोई भी विपत्ति, चाहे कितनी कठोर क्यों न हों, विश्वासयोग्य लोगों को विचलित नहीं कर सकी। बजाए इसके अंतिम दिनों में यह कितना आसान होगा जब विश्वासयोग्य ईसाई स्वर्ग के अंतिम द्वार से गुजरने के लिए उत्सुक होंगे! यह विश्वास की सामान्य प्रकृति है कि हमारे परीक्षण और कष्ट जितने अधिक बड़े होते हैं, हम उतने ही उत्साह से परमेश्वर के उद्धार की तलाश करते हैं। यीशु ने कहा:

> उस दिन बहुत से लोग मुझ से कहेंगे, हे प्रभु हे प्रभु क्या हमने तेरे नाम से भविष्यवाणी नहीं की और तेरे नाम ले दुष्टात्माओं को नहीं निकाला, और तेरे नाम से बहुत से आश्चर्यकर्म नहीं

[७८२] मत्ती २:६

> किए? तब मैं उन से खुल कर कहूँगा, मैंने तुम को कभी नहीं जाना, मेरे पास से चले जाओ। मत्ती ७:२२-२३

यदि कोई ईसाई इतना विश्वासयोग्य है कि वह परमेश्वर के नाम पर चमत्कार के कार्य करे, तो वह और कितने अधिक उत्साह के साथ बादलों पर आने वाले प्रभु पर विश्वास करेगा और उसकी सेवा करेगा? फिर क्या यीशु को उन्हें प्रेम से स्वीकार नहीं करना चाहिए? तो फिर, यीशु ने इस तरह क्यों कहा, कि जब वह वापस आएगा तो ऐसे विश्वासयोग्य मसीहियों को अस्वीकार करेगा? यदि लौटने वाला मसीह ऐसे भक्त विश्वासियों को स्वीकार नहीं करेगा, तो फिर अंतिम दिनों में संभवतः कौन बचाया जा सकता है? यदि यीशु बादलों पर आता है तो यह भविष्यवाणी भी पूरी नहीं हो सकती।

यीशु के दिनों में भी बहुत से यहूदी अपने विश्वास में इतने प्रबल हो सकते थे कि वे परमेश्वर के नाम पर चमत्कार कर सकते थे। फिर भी, क्योंकि उनका मानना था कि मसीह के आने से पहले एलिय्याह स्वर्ग से उतरेगा, इसलिए उनके लिए यह स्वीकार करना मुश्किल था कि एलिय्याह उनके बीच यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के रूप में मौजूद था, और फिर यूहन्ना का अपने आप को एलिय्याह मानने से इनकार के कारण यह और भी कठिन हो गया।[७८३] इसलिए, उन्होंने यीशु को मसीह के रूप में स्वीकार नहीं किया और उसे अपने समुदाय से बहिष्कृत किया। फलस्वरूप, यीशु को उन्हें आँसुओं के साथ त्यागना पड़ा। इसी तरह, मसीह के दूसरे आगमन में, वे ईसाई जो उसकी महिमामय और चमत्कारी रूप से प्रगट होने की अपेक्षा करते हैं, यदि वह शरीर में एक दीन-हीन रूप में जन्म लेता है, तो वे उसे निःसंदेह अस्वीकार करेंगे। इसलिए वे चाहे कितने ही विश्वासयोग्य क्यों न हों, प्रभु के पास उन्हें त्यागने के सिवा और कोई चारा नहीं रहेगा, क्योंकि तब वे परमेश्वर के खिलाफ पाप करेंगे।

यदि मसीह अलौकिक तरीके से लौटता है तो लूक की पुस्तक के अध्याय १७ में अंतिम दिनों से संबंधित की गई भविष्यवाणियों की श्रृंखला संभवतः पूरी नहीं हो सकतीं हैं। इन छंदों को केवल इस आधार पर समझाया जा सकता है कि मसीह पृथ्वी पर पैदा हो कर वापस आ जाएगा। आइए हम उनमें से प्रत्येक की बारीकी से जांचें।

> जब फरीसियों ने उससे पूछा कि परमेश्वर का राज्य कब आएगा, तो उसने उनको उत्तर दिया, परमेश्वर का राज्य दृश्य रूप में नहीं आता। लूक १७:२०

यदि प्रभु बादलों पर या कोई अद्भुत तरीके से आता है, तो फिर परमेश्वर का राज्य हर किसी के लिए सुस्पष्ट रूप से आएगा। पहले आगमन में भी, परमेश्वर का राज्य यीशु के जन्म के साथ ही पृथ्वी पर आ गया था। फिर भी यहूदी लोग इसे नहीं देख सके, क्योंकि वे अभी भी स्वर्ग से एलिय्याह की वापसी की प्रतीक्षा कर रहे थे, इसलिए वे यीशु में विश्वास नहीं कर सके। इसी तरह, दूसरे आगमन में, यद्यपि परमेश्वर का राज्य पृथ्वी पर मसीह के जन्म के साथ आ जाएगा, तो भी ईसाई लोग जो यह मानते हैं कि वह बादलों पर अलौकिक घटनाओं के साथ आएगा, प्रभु पर विश्वास नहीं करेंगे और इस प्रकार परमेश्वर

---

[७८३] यूहन्ना १:२१

के राज्य को नहीं देख सकेंगे।[७८४]

> क्योंकि देखो, परमेश्वर का राज्य तुम्हारे बीच में है...लूक १७:२१

यीशु के दिनों में, जो लोग उस पर विश्वास करते थे और उसके पीछा चलते थे, वे पहले से ही अपने दिल में स्वर्ग के राज्य का हिस्सा बन चुके थे। इसी तरह, मसीह के दूसरे आगमन पर, क्योंकि वह धरती पर पैदा होगा, स्वर्ग का राज्य पहले उन लोगों के मन में वास्तविक बन जाएगा जो उस पर विश्वास करेंगे और उसके पीछे चलेंगे। जैसे-जैसे इन लोगों की संख्या बढ़ेगी और ये समाज और राष्ट्र का निर्माण करेंगे, तो स्वर्ग का राज्य धीरे-धीरे दुनिया में एक बाहरी, दृश्यमान वास्तविकता के रूप में प्रकट होगा। तदनुसार, यीशु का मतलब था कि प्रतिज्ञा किया गया स्वर्ग का साम्राज्य तत्काल साकार नहीं किया जा सकता, जैसे कि माना जाता है कि मसीह बादलों पर आने से होगा।

> वे दिन आएंगे जिनमें तुम मनुष्य के पुत्र के दिनों में से एक दिन को देखना चाहोगे और नहीं देख पाओगे। लूक १७:२२

यदि प्रभु बादलों पर स्वर्गदूतों की तुरही की आवाज़ के साथ आता है, तो हर कोई उसे देखेगा। तो, कौन मनुष्य के पुत्र के दिनों को देखना चाहेगा और देख नहीं सकेगा? फिर भी यीशु ने भविष्यवाणी की थी कि लोग वह दिन नहीं देखेंगे। यीशु के पहले आगमन में, मनुष्य के पुत्र का दिन पृथ्वी पर उसके जन्म के साथ आया, फिर भी अविश्वासी यहूदी लोग उस दिन को नहीं देख सके। इसी तरह, मसीह के दूसरे आगमन में, मनुष्य के पुत्र का दिन पृथ्वी पर उसके जन्म के साथ हो जाएगा। फिर भी बहुत से ईसाई उस दिन को देखने में सक्षम नहीं होंगे क्योंकि, वे इस बात से आश्वस्त हैं कि वह एक चमत्कारी तरीके से आएगा, वे उस पर विश्वास नहीं करेंगे या उसका सामना करने के बाद भी उसके पीछे नहीं चलेंगे। भले ही मनुष्य के पुत्र का दिन आ भी जाए, वे इसे देख पाएंगे।

> लोग तुम से कहेंगे, देखो वहाँ है! या देखो, यहाँ है! परन्तु तुम चले न जाना और उनके पीछे न हो लेना। लूक १७:२३

जैसा कि पहले यह चर्चा की गई थी,[७८५] कि आखिरी दिनों में कई ऐसे ईसाई होंगे जिन्होंने हो सकता है किसी विशेष आध्यात्मिक स्तर पर ऐसा दर्शन प्राप्त किया हो कि वे स्वयं प्रभु हैं। इस प्रकार के दर्शन के सिद्धांत का आधार न समझते हुए, वे संभवतः अपने आप को मसीह घोषित कर सकते हैं, और इस तरह मसीह-विरोधी बन सकते हैं। इसलिए, यीशु ने इन शब्दों को चेतावनी के रूप में कहा कि इस तरह के लोगों द्वारा हम गुमराह या भ्रमित न हो जाएं।

---

[७८४] किंग जेम्स संस्करण

[७८५] प्रति-संदर्भ—पुनरुत्थान २.२.६

क्योंकि जैसे बिजली आकाश के एक छोर से कौंध कर आकाश के दूसरे छोर तक चमकती है, वैसे ही मनुष्य का पुत्र भी अपने दिनों में प्रगट होगा। लूक १७:२४

जब यीशु का जन्म हुआ, तो यहूदियों के राजा के जन्म की खबर राजा हेरोदेस को पहुंची और सारा यरूशलेम व्याकुल हो गया।[७८६] दूसरे आगमन में, परिवहन और संचार में प्रगति की वजह से दूसरे आगमन की खबर बिजली की गति की तरह, पूर्व और पश्चिम तक, दुनिया के दूर-दूर के कोनों तक पहुँचेगी।[७८७]

जैसा नूंह के दिनों में हुआ था, वैसा ही मनुष्य के पुत्र के दिनों में भी होगा। लूक १७:२६

जब नूंह को यह ज्ञान हुआ कि बाढ़ का न्याय निकट है, तो उसने लोगों को अपने जहाज में प्रवेश करने के लिए बुलाया।[७८८] फिर भी उन्होंने उसके शब्दों पर ध्यान नहीं दिया, और सब डूब गए। इसी प्रकार आखिरी दिनों में भी मसीह शरीर में लौटेगा और लोगों को सच्चाई के जहाज़ में प्रवेश करने के लिए बुलाएगा। फिर भी ईसाई लोग जो अपनी हट से प्रभु के प्रगट होने के अद्भुत चिह्न देखने की उम्मीद से आकाश पर नजर लगाए बैठे होंगे, वे पृथ्वी पर घोषित किए गए सत्य के शब्दों पर ध्यान नहीं देंगे। इसके बजाय, वे प्रभु को एक विधर्मी के रूप में उपेक्षित करेंगे। नूंह के दिनों के लोगों की तरह वे प्रभु की दैवी इच्छा का अनुकरण करने में असफल होंगे।

जो कोई अपना प्राण बचाना चाहेगा वह उसे खोएगा और जो कोई उसे खोए वह उसे जीवित रखेगा। लूक १७:३३

क्या किसी को अपनी जान जोखिम में डालनी पड़ेगी यदि प्रभु बादलों पर स्वर्गदूतों की तुरही की आवाज़ के साथ आता है? क्योंकि यीशु शरीर के माध्यम से जन्म लेकर लौटेगा, वह ईसाइयों को जो उसके चमत्कारी रीति से आने की उम्मीद करते हैं एक विधर्मी प्रतीत होगा। इसलिए, जो लोग उसका अनुसरण करेंगे उन्हें मौत का सामना करने के लिए भी तैयार रहना चाहिए। इस छंद का अर्थ यह है कि यदि लोग उसपर विश्वास करेंगे और अपने जीवन को जोखिम में डालकर उसका अनुकरण करेंगे तो वे जीवित रहेंगे। दूसरी तरफ, यदि वे सांसारिक परिस्थितियों से प्रभावित हो कर, उसका विरोध करते हैं और अपनी जान बचाने के लिए पीछे हट जाते हैं, तो वे मृत्यु के भागीदार होंगे।

जहाँ लोथ है, वहाँ गिद्ध इकट्ठे होंगे। लूक १७:३७

इस प्रकार यीशु ने दूसरे आगमन के स्थान के बारे में एक प्रश्न का उत्तर दिया। हमें याद है कि शिकारी पक्षी कबूतर और पंडुकी पर उतरे थे जो अब्राहम की वेदी पर उचित रीति से विभाजित नहीं किए

---

[७८६] मत्ती २:२-३

[७८७] लूक १७:२६ इसकी चर्चा पहले की जा चुकी है।

[७८८] २पतरस २:५

गए थे।[७८९] यह हमें सिखाता है कि जो वस्तु पवित्र नहीं की गई है शैतान हमेशा उस पर दावा करने का मौका ढूंढता है। इस प्रकार हम यीशु के रहस्यपूर्ण उत्तर का अर्थ समझ सकते हैं: जैसे गिद्ध शव को खाने के लिए उसके चारों ओर इकट्ठा होते हैं, शैतान दावा डालने के लिए उन लोगों के चारों ओर घेरा डालता है जो आध्यात्मिक रूप से मरे हुए हैं, प्रभु, जो जीवन का स्रोत है, वह उस जगह जहाँ आध्यात्मिक जीवन प्रचुर मात्रा में है आएगा। यीशु का इन शब्दों से मतलब था कि प्रभु वफादार विश्वासियों के बीच प्रकट होगा। मसीह के दूसरे आगमन में, उत्साही विश्वासी लोग बहुत सी आत्माओं की सहायता से एक ही स्थान पर एकत्र होंगे।[७९०] यह जगह जीवन देने वाली जगह होगी जहां प्रभु प्रकट होगा। यीशु चुने हुए लोगों के बीच पैदा हुआ था, जो अति भक्ति के साथ परमेश्वर की उपासना करते थे। विशेष करके, उसने अपने आप को उन पर प्रगट किया जिन में उसके पीछे चलने का विश्वास था और वे उसके शिष्य बन गए थे।

चूंकि मसीह अपने दूसरे आगमन में पृथ्वी पर पैदा होगा, यह लिखा है: “वह एक बेटा जनी, जो लोहे का दण्ड लिए हुए सब जातियों पर राज करने पर था और वह बच्चा एकाएक परमेश्वर के पास और उसके सिंहासन के पास उठाकर पहुँचा दिया गया।”[७९१] लोहे का दण्ड यहां परमेश्वर के वचन को दर्शाता है, जिससे प्रभु पापी दुनिया का न्याय करेगा और धरती पर स्वर्ग का राज्य पुनःस्थापित करेगा। इसे पहले विस्तार से समझाया गया था[७९२] कि आग से न्याय का अर्थ वचन द्वारा न्याय होता है।[७९३] इसलिए, यीशु के वचन, जो अंतिम दिन हमारे न्यायाधीश होंगे,[७९४] यह वही वचन हैं जिनके द्वारा स्वर्ग और पृथ्वी को न्याय की आग में डाला जाएगा,[७९५] और प्रभु अपने मुंह की सांस के द्वारा दुष्ट व्यक्ति को मार डालेगा।[७९६] यीशु के वचन “उसके होंठों की सांस” और "उसके मुंह की छड़ी" भी कहे जाते हैं।[७९७] यह लोहे के दण्ड का प्रतीक है, जैसा लिखा है, “वह उन पर लोहे के दण्ड से राज्य करेगा, जैसे मिट्टी के बर्तन टुकड़े होकर टूट जाते हैं”।[७९८]

यह छंद एक नर बच्चे की बात करते हैं, जो एक महिला से पैदा होता है और वह परमेश्वर के पास उसके सिंहासन तक पहुँचा दिया जाता है। फिर, यह कौन है जो एक औरत से पैदा होता है और परमेश्वर के सिंहासन पर बैठने के योग्य है और परमेश्वर के वचन के साथ राज्य करता है? वह दूसरे आगमन के मसीह के अलावा अन्य कोई भी नहीं हो सकता है, वह पृथ्वी पर नए नाम के साथ, जो उसी को पता है,

---

[७८९] उत्पत्ति १५:११

[७९०] प्रति-संदर्भ—पुनरुत्थान २.३.२.२, ३.१,३.२

[७९१] प्रकाशितवाक्य १२:५

[७९२] प्रति-संदर्भ—प्रलयोत्तर ३.२.२

[७९३] यिर्मयाह २३:२९

[७९४] यूहन्ना १२:४८

[७९५] २पतरस ३:७

[७९६] थिस्सलुनिकियों २:८

[७९७] यशायाह ११:४

[७९८] प्रकाशितवाक्य २:७

पैदा होगा।[७९९] वह राजाओं के राजा के रूप में शासन करेगा और पृथ्वी पर स्वर्ग का राज्य बनायेगा। मत्ती के सुसमाचार के आरंभ में, यीशु के वंश में चार व्यभिचारिणी या अन्य जाति की महिलाओं का एक वर्णन है।[८००] वह यह दिखाता है कि सभी पापियों को बचाने के लिए मानव जाति का उद्धारकर्ता एक पापी वंश से पापहीन व्यक्ति के रूप में पैदा होगा। बहुत से ईसाई लोग ऊपर लिखे छंद की महिला की व्याख्या चर्च के रूप में करते हैं।[८०१] उन्होंने यह व्याख्या, दूसरे आगमन के मसीह का बादलों पर आने के आधार पर की है।

कुछ ईसाइयों का यह मानना हैं कि मसीह का दूसरा आगमन तब होता है जब यीशु[८०२] पवित्र आत्मा के द्वारा लोगों के दिलों में रहने के लिए आता है।[८०३] यीशु अपने पुनरुत्थान और पिन्तेकुस्त के समय पवित्र आत्मा के उतरने के बाद से वफादार विश्वासियों के दिल में रहता है।[८०४] यदि यह वास्तव में दूसरा आगमन था, तो यह दो हजार साल पहले ही हो गया था।

इसके अलावा, कुछ संप्रदाय यह सिखाते हैं कि यीशु आत्मा के रूप में वापस आएगा। हालांकि, अपने पुनरुत्थान के तुरंत बाद तीसरे दिन मकबरे से निकल कर यीशु अपने शिष्यों के सामने उसी रूप में जैसा वह धरती के जीवन के दौरान दिखता था प्रकट हुआ। उस समय से स्वतंत्र रूप से अपने दौरे के दौरान उसने कई ईसाई लोगों को सिखाया जिन्होंने उच्च आध्यात्मिक स्तर प्राप्त किया था। इस तरह का दूसरा आगमन भी दो हज़ार साल पहले घट चुका है। यदि ये जानकारियाँ सही हैं, तो हमारे पास उस ऐतिहासिक दूसरे आगमन की उम्मीद रखने का कोई कारण नहीं है और ना ही हमें उस दिन की प्रतीक्षा होनी चाहिये जब हमारी मन चाही आशाएं पूरी होंगी।

यद्यपि उसके पुनरुत्थान के बाद यीशु के चेलों की यीशु के साथ अनेक बार मुलाकात हुई थी, जो उनके सामने आत्मा में प्रकट हुआ था, फिर भी वे उसके दूसरे आगमन की प्रतीक्षा कर रहे थे। इससे हम यह समझ सकते हैं कि दूसरे आगमन में वे यीशु की वापसी की उम्मीद आत्मा के रूप में नहीं कर रहे थे। मिसाल के तौर पर, जब यीशु प्रेरित यूहन्ना को दर्शन में प्रकट हुआ, तो उसने उससे कहा, “निश्चित रूप से मैं जल्द ही आ रहा हूं,” जिस पर यूहन्ना ने उत्तर दिया, “आमीन, आओ, प्रभु यीशु!”[८०५] यहां, यीशु और यूहन्ना दोनों ने यीशु के आत्मिक प्रकटन और दूसरे आगमन में स्पष्ट रूप से अंतर किया है। इससे पता चलता है कि मसीह अपने दूसरे आगमन में आत्मा के रूप में नहीं आएगा। वह पृथ्वी पर एक बच्चे के रूप में पैदा होगा, जिस तरह पहले आगमन में हुआ था।

नियम कई कारण स्पष्ट करता है कि मसीह को सांसारिक मनुष्य के रूप में क्यों लौटना चाहिए।

---

[७९९] प्रकाशितवाक्य २:१७, १९:१२
[८००] मत्ती १:३,५,६
[८०१] “उसकी शेष संतान (प्रकाशितवाक्य १२:१७)” परमेश्वर की दत्तक संतान के रूप में गिने जा सकते हैं। (रोमियों ८:२३)
[८०२] यूहन्ना ४:२०
[८०३] प्रेरितों ८:१५-१७
[८०४] प्रेरितों २:४
[८०५] प्रकाशितवाक्य २२:२०

परमेश्वर ने पहले मूर्त और अमूर्त दोनों दुनिया बनाई हैं। फिर परमेश्वर ने मनुष्यों को आत्मा और शरीर दो पहलुओं के साथ बनाया, इस इरादे से कि वह उसकी आशीषों की पूर्ति के लिए दोनों दुनिया पर राज्य करेंगे।[८०६] आदम के पतन के कारण, मनुष्यों ने दोनों संसारों का प्रभु बनने की योग्यता खो दी। फलस्वरूप, सृष्टि अपने सच्चे स्वामी से वंचित हो गई है और तब से वह परमेश्वर के बच्चों के प्रगट होने के लिए, जो उसपर यथार्थतः राज्य कर सकते हैं, लालसा करती है और शोक मना रही है।[८०७] यीशु, पूर्ण आदम के रूप में दोनों संसारों का पूर्ण प्रभु बनकर आया था।[८०८] उसका इरादा था कि वह सभी विश्वासियों को अपने साथ साट[८०९] कर उन्हें अपने साथ एक करके विश्व का प्रभु होने के योग्य बनाए।

फिर भी, जब यहूदियों ने यीशु का विरोध किया, तो परमेश्वर को मानवता के उद्धार के लिए उसके शरीर को उद्धार के मूल्य के रूप में सलीब के हवाले कर देना पड़ा। चूंकि यीशु के पार्थिव शरीर को शैतान के हाथों में सौंप दिया गया था, इसलिए शारीरिक उद्धार अपूर्ण रह गया। यीशु इस धरती से इस वादे के साथ ऊपर चढ़ गया कि वह वापस लौट कर आएगा और उद्धार के कार्य को पूरा करेगा, जिसे उसने केवल आत्मिक रूप से पूरा किया था।[८१०] इसी बीच, धरती पर कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं हुआ जिसने आध्यात्मिक और शारीरिक दोनों स्तरों पर पूर्णता प्राप्त की हो, और आध्यात्मिक और भौतिक संसारों पर राज्य किया हो, और उन्हें सामंजस्य में लाया हो। यही कारण है कि मसीह केवल आत्मिक शरीर में वापस नहीं आ सकता। पहले आगमन की तरह उसे इंसान के रूप में आना चाहिए और आत्मा और शरीर दोनों में पूर्णता प्राप्त करनी चाहिए। फिर, सभी मानवता को आत्मिक रूप से और शारीरिक रूप से अपने आप में साट कर, उन्हें आत्मा और शरीर दोनों में पूर्णता प्राप्त करने के लिए मार्गदर्शन करेगा और उन्हें आत्मिक और भौतिक संसार दोनों का प्रभु बनने के योग्य बनाएगा।

स्पष्टतः, यीशु को पृथ्वी पर स्वर्ग का राज्य बहाल करना चाहिए था। उसे जिलाई हुई मानवता का सच्चा-माता-पिता और परमेश्वर के सांसारिक साम्राज्य का राजा बनना था।[८११] परन्तु वह लोगों के अविश्वास के कारण, परमेश्वर की इस मूल इच्छा को पूरा नहीं कर सका, और सूली पर चढ़ाया गया परन्तु उसने वादा किया कि वह वापस लौट कर आएगा और निश्चित रूप से इसे पूरा करेगा। तदनुसार, दूसरे आगमन में, मसीह पृथ्वी पर स्वर्ग के राज्य का निर्माण करने के लिए फिर से जिम्मेदार होगा और सभी मानवता का सच्चा माता-पिता और राजा बनेगा। यह एक और कारण है, जैसे उसके पहले आगमन पर हुआ था, मसीह को अपने दूसरे आगमन पर धरती पर पैदा होना चाहिए।

पापों का मोचन केवल पृथ्वी के जीवन के माध्यम से ही संभव है।[८१२] पृथ्वी पर हमें हमारे पापों से

---

[८०६] प्रति-संदर्भ—सृष्टि ६.३
[८०७] रोमियों ८:१९-२२
[८०८] कुरिंथियों १५:२७
[८०९] रोमियों ११:१७
[८१०] प्रति-संदर्भ—मसीह १.४
[८११] यशायाह ९:६, लूक १:३१-३३
[८१२] प्रति-संदर्भ—६.३.२

छुड़ाने के लिए, मसीह को पृथ्वी पर एक आदमी के रूप में आना चाहिए। यीशु ने क्रूस के माध्यम से जो उद्धार प्रदान किया वह आध्यात्मिक आयाम तक ही सीमित है। यह मूल पाप को हल नहीं करता है, जो हमारे भौतिक शरीर के माध्यम से फैलता है और हमारे भीतर सक्रिय रहता है। इसलिए, मानवता को पूर्ण मोक्ष प्रदान करने के लिए, जिसमें शारीरिक उद्धार भी शामिल है, मसीह को फिर से आना चाहिए। यदि वह केवल आत्मा में आता है तो निश्चित रूप से वह इसे पूरा नहीं कर सकता। उसे पार्थिव शरीर में आना चाहिए जैसे वह पहले आया था।

इस प्रकार हमने यह स्पष्ट किया है कि मसीह का दूसरा आगमन आत्मिक नहीं होगा, परन्तु पहले आगमन की तरह एक लौकिक आगमन होगा। चलिए यदि हम यह मान भी लेते हैं कि मसीह आत्मा में वापस आएगा, तो यह हैरानी की बात होगी कि आत्मा, जो समय और अंतरिक्ष से परे है और जो केवल आध्यात्मिक इंद्रियों से दृष्टिगोचर होती है वह पदार्थ से बने बादलों पर कैसे सवारी करेगी। दूसरी तरफ, यदि मसीह का दूसरा आगमन देह में होता है और वह यकायक बादलों पर सवार होकर प्रगट हो जाए, तो वह बादलों पर कैसे बैठ सकता है? वह अपने प्रकट होने से पहले कहाँ रहता था? कुछ लोगों को ऐसे प्रश्नों पर आपत्ति होती है, वह बहस करते हैं कि सर्वशक्तिमान परमेश्वर के लिए कुछ भी असंभव नहीं है। परन्तु, परमेश्वर अपने नियमों और सिद्धांतों को नज़र अंदाज़ नहीं कर सकता। मसीह जिसको हमारी तरह देह में वापस लौटना चाहिए, उसे बाहरी अंतरिक्ष से बादलों पर सवार करके भेज कर परमेश्वर को अपना दैवी कार्य करने के लिए अपने सिद्धांतों का उल्लंघन करने की कोई आवश्यकता नहीं है। अंत में, हमने बिना किसी संदेह के यह प्रदर्शित कर किया है कि दूसरे आगमन में मसीह का जन्म पृथ्वी पर शरीर के माध्यम से होगा।

२.३ बाईबल के इस अनुवाक्य का क्या अर्थ है कि मसीह बादलों पर वापस आएगा

चूंकि मसीह की वापसी उसके पृथ्वी पर जन्म के माध्यम से होगी, बाईबल की इस भविष्यवाणी का क्या अर्थ हो सकता है कि वह बादलों पर आएगा? इस मामले की जांच करने के लिए, हमें पहले यह जांच करनी चाहिए कि बादल क्या दर्शाते हैं। निम्नलिखित छंद अनूठा है:

> देखो वह बादलों के साथ आनेवाला है, और हर एक आंख उसे देखेगी, वरन् जिन्होंने उसे बेधा था वे भी उसे देखेंगे, और पृथ्वी के सारे कुल उसके कारण छाती पीटेंगे, हाँ आमीन! प्रकाशितवाक्य १:७

इस अनुवाक्य के अनुसार, जब वह लौटेगा तो हर कोई मसीह को देख सकेगा। जब संत स्टीफन शहीद हुआ, केवल वह और कुछ विश्वासयोग्य ईसाई जिनकी आत्मिक इंद्रियां खुली थीं, यीशु को परमेश्वर के दाहिने हाथ पर बैठा देखने में सक्षम थे।[८१३] इसी प्रकार, यदि यीशु आत्मा की दुनिया से आत्मा के रूप में उतरता है, तो केवल वह विश्वासी जिनकी आत्मिक इंद्रियां खुली हैं, उसे देख सकेंगे; इस प्रकार जब वह

[८१३] प्रेरितों ७:५५

फिर से आएगा तो हर आंख मसीह को नहीं देखेगी। बाईबल की यह भविष्यवाणी कि हर कोई प्रभु को देखेगा केवल तभी पूरी हो सकती हैं जब वह शरीर में लौटेगा। चूंकि मांस का शरीर बादलों पर सवारी नहीं कर सकता है, इसलिए इस छंद में बादल किसी और वस्तु का प्रतीक होना चाहिए।

उसी अनुच्छेद में यह भी लिखा गया है कि जिन लोगों ने यीशु को बेधा था वे भी उसकी वापसी पर उसे देखेंगे। जिन लोगों ने यीशु को बेधा वे रोमन सैनिक थे। परंतु, वे रोमन सैनिक उसकी वापसी पर प्रभु को देखने में सक्षम नहीं होंगे। लौटने वाले प्रभु को देखने के लिए, उन सैनिकों का पुनरुत्थान होना आवश्यक है; परन्तु बाईबल के अनुसार, जिन लोगों का मसीह की वापसी में पुनरुत्थान होगा वे केवल वफादार ईसाई लोग हैं जो पहले पुनरुत्थान में भाग लेते हैं। शेष आत्माएं "एक हजार वर्ष" बीतने के बाद ही परमेश्वर के राज्य में पुनर्जीवित की जाएंगी।[८१४] इसलिए, "हर कोई जिसने उसे बेधा था" एक उपमा होनी चाहिए जो किसी अन्य समूह के लोगों के लिए लिखा गया है, रोमन सैनिकों के लिए नहीं। वास्तव में, यह उन लोगों को संबोधित करता है जो दूसरे आगमन के समय जीवित थे और यह विश्वास करते हैं कि यीशु बादलों पर वापस आएगा। मसीह लौटने पर जब उसका जन्म उनकी अपेक्षा के विपरीत साधारण रूप से धरती पर होता है, तो वे उसे पहचान नहीं पाएंगे बल्कि उसे सताएंगे। यदि "हर कोई जिसने उसे बेधा था" एक रूपक है, तो उसी छंद में बादल भी रूपक होने चाहिए।

वास्तव में बादल क्या प्रतीकत्व करते हैं? बादल पृथ्वी के अशुद्ध पानी के वाष्पीकरण द्वारा बनते हैं। बाईबल में, पानी बहुधा पतित लोगों का प्रतीक बताया गया है।[८१५] इससे हम यह समझ सकते हैं कि बादल उन विश्वासयोग्य ईसाइयों का प्रतीक हैं जो दिल से स्वर्ग में रहते हैं पृथ्वी पर नहीं, क्योंकि वे पतित स्थिति से पुनर्जीवित किए गए हैं। बाईबल और अन्य पवित्र ग्रंथ भी लोगों को इंगित करने के लिए बादलों के प्रतीकों का उपयोग करते हैं।[८१६] कभी-कभी हम इस अलंकार का उपयोग अनौपचारिक बातचीत में भी पाते हैं। मूसा की कार्यवाही में, बादल के खंभे ने दिन में इस्राएलियों का मार्गदर्शन किया, जो यीशु का प्रतिनिधित्व करता है, जिसको इस्राएल के नेता के रूप में आना था; रात में आग का खंभा पवित्र आत्मा का प्रतिनिधित्व करता है, जिसने यीशु का प्रतिरूप बनकर, प्रेरणा की आग के समान इस्राएल का मार्गदर्शन किया था। हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि बादलों पर यीशु का आने का अर्थ है कि वह पुनर्जीवित विश्वासियों के समूह के बीच, ईसाइयों यानी दूसरे इस्राएल का नेता बनकर आएगा। याद करिए जब यीशु को उसकी वापसी के स्थान के बारे में पूछा गया था, तो उसने जवाब दिया, "जहां शरीर है, वहां गिद्ध इकट्ठे होते हैं"।[८१७] इससे यीशु का मतलब था कि वह उस स्थान पर लौट आएगा जहां वफादार विश्वासी इकट्ठे होंगे, मूल रूप से यह वही संकेत करता है जो बाईबल की भविष्यवाणी करती है, कि मसीह बादलों पर वापस आएगा।

इस तरह, जब हम बादलों की व्याख्या लाक्षणिक रूप से करते हैं, तो यह स्पष्ट है कि उसके पहले

---

[८१४] प्रकाशितवाक्य २०:४-५

[८१५] प्रकाशितवाक्य १७:१५, भजन संहिता १४४:७

[८१६] इब्रानियों १२:१, यहेजकेल ३८:९

[८१७] लूक १७:३७

आगमन पर भी यीशु स्वयं प्रतीकात्मक रूप से बादलों पर स्वर्ग से नीचे आया था। यह लिखा है, “प्रथम मनुष्य धरती से अर्थात मिट्टी का था, दूसरा मनुष्य स्वर्गीय है,”[८१८] और “कोई स्वर्ग पर नहीं चढ़ा है, केवल वही जो स्वर्ग से उतरा है अर्थात मनुष्य का पुत्र जो स्वर्ग में है”।[८१९] भले ही यीशु पृथ्वी पर पैदा हुआ था, दैवी परियोजना के दृष्टिकोण से और उसके यथार्थ मूल्य के संबंध से, वह वास्तव में स्वर्ग से आया था। यह दानिय्येल की[८२०] भविष्यवाणी का भी सही अर्थ है, जिसने भविष्यवाणी की थी कि यीशु बादलों पर आएगा।

२.४ यीशु ने ऐसा क्यों कहा कि प्रभु बादलों पर आएगा?

यीशु ने यह भविष्यवाणी क्यों की कि प्रभु बादलों पर वापस आ जाएगा, इसके दो कारण हैं। पहला, यह कि मसीह के विरोधी के भ्रम से विश्वासियों के बीच भ्रांति को रोकने के लिए था। यदि यीशु ने स्पष्ट रूप से खुलासा किया होता कि वह शारीरिक जन्म के द्वारा वापस आ जाएगा, तो झूठे मसीह का ढोंग करने वालों को भ्रम फैलाने से रोकना असंभव हो जाता। चूंकि जैसे यीशु एक विनम्र अवस्था से मसीह के रूप में आया, इसलिए कोई भी किसी भी सामाजिक स्तर से, एक निश्चित आध्यात्मिक स्तर के साथ खड़ा होकर अपना दूसरे आगमन होने का दावा कर सकता है और दुनिया को एक बड़े भ्रम के साथ चकित कर सकता है। सौभाग्य से, ऐसी हलचल से काफी हद तक दुनिया बच गई है, चूंकि अधिकांश ईसाइयों की आशा है कि मसीह बादलों पर वापस आएगा इसलिए वे अपनी नज़रें आकाश पर लगाए रखे हैं। अब, हालांकि, समय पूरा हो गया है, यह सत्य कि मसीह शारीरिक जन्म के माध्यम से वापस आएगा, प्रकट होना चाहिए।

दूसरा, यह उन ईसाइयों को प्रोत्साहित करने के लिए था जो विश्वास के कठिन रास्ते पर चल रहे थे। कई बार यीशु ने अपने अनुयायियों को जल्दी से जल्दी परमेश्वर की इच्छा पूरी करने के लिए प्रोत्साहन की तौर पर विरोधाभासी शब्दों का उपयोग किया। उदाहरण की तौर पर, उसने कहा, “मैं तुम से सच कहता हूँ कि तुम इस्राएल के सब नगरों में न फिर चुकोगे कि मनुष्य का पुत्र आ जाएगा।”[८२१] इस बात से उसके शिष्यों ने सोचा कि दूसरा आगमन निकट भविष्य में होगा। जब यीशु ने अपने सलीब पर बलिदान होने के समय के निकट आने पर पतरस को बताया तो पतरस ने उससे पूछा कि शिष्य यूहन्ना का क्या होगा। यीशु ने उत्तर दिया, “यीशु ने उससे कहा, यदि मैं चाहूँ कि वह मेरे आने तक ठहरा रहे तो तुझे इससे क्या?”[८२२] यीशु ने यह भी कहा, “मैं तुम से सच कहता हूँ कि जो यहाँ खड़े हैं उनमें से कुछ ऐसे हैं कि वे जब तक मनुष्य के पुत्र को उसके राज्य में आते हुए न देख लेंगे, तब तक मृत्यु का स्वाद कभी न चखेंगे।”[८२३]

---

[८१८] १ कुरिन्थियों १५:४७

[८१९] यूहन्ना ३:१३

[८२०] दानिय्येल ७:१३

[८२१] मत्ती १०:२३

[८२२] यूहन्ना २१:२२

[८२३] मत्ती १६:२८

इन कथनों ने शिष्यों को यह सोचने के लिए मजबूर किया कि वे अपने जीवनकाल ही में लौटने वाले यीशु से मिल सकेंगे। यीशु की निकटतम वापसी की आशा ने उसके शिष्यों के उत्साह को उजागर किया और उन्हें यहूदी धर्म और रोमन साम्राज्य द्वारा किए गए अत्याचार को सहन करने की ताकत दी। दूसरे आगमन की प्रचंड आशा से उत्साहित, वे पवित्र आत्मा से भरे गए थे[८२४] इस तरह उन्होंने बड़ी कठिनाईयों के बीच भी, प्रारंभिक ईसाई चर्चों की स्थापना की। यीशु अपने शिष्यों को प्रेरित और प्रोत्साहित करना चाहता था, जो भारी सलीब को लेकर चलने वाले थे। इस कारण से, उसने भविष्यवाणी की कि वह बादलों पर परमेश्वर की शक्ति और महिमा में आएगा और बिजली की गति की तरह हर कार्य को पूरा करेगा।

[८२४] प्रेरितों २:१-४

संभाग ३

मसीह कहाँ वापस आएगा

यदि मसीह मनुष्य के रूप में पृथ्वी पर पैदा होकर फिर से आता है, तो वह निश्चित रूप से उन लोगों के बीच पैदा होगा जो परमेश्वर के द्वारा उसकी पूर्वनियति के अनुसार चुने गए हैं। मसीह की वापसी के लिए परमेश्वर ने कौन सा स्थान चुना है? उसे ग्रहण करने के लिए कौन से लोग चुने गए?

३.१ क्या मसीह यहूदी लोगों के बीच वापस आएगा?

बाईबल के कई अनुच्छेदों के आधार पर कई ईसाई लोग उम्मीद करते हैं कि मसीह यहूदी लोगों के बीच फिर से आएगा: "जिन पर मुहर दी गई मैंने उनकी गिनती सुनी, अर्थात इस्राएल की सन्तानों के सब गोत्रों में से एक लाख चौवालीस हज़ार पर मुहर दी गई"।[८२५] "मैं तुम से सच कहता हूँ, तुम इस्राएल के सब नगरों में ना फिर चुकोगे कि मनुष्य का पुत्र आ जाएगा"।[८२६] परंतु, इन छंदों की व्याख्या यथाशब्द करना परमेश्वर की दैवी योजना को गलत समझना है।

इस विषय पर यीशु ने दाख की बारी का दृष्टांत सुनाया:

> "एक और दृष्टांत सुनो, एक गृहस्वामी था, जिसने एक दाख की बारी लगाई, उसके चारों ओर बाड़ा बांधा, उस में रस का कुंड खोदा और गुम्मट बनाया और किसानों को उसका ठेका देकर परदेश चला गया। जब फल का समय आया तब उसने अपने दासों को उसका फल लेने के लिए किसानों के पास भेजा। पर किसानों ने उसके दासों को पकड़ कर किसी को पीटा और किसी को मार डाला, और किसी पर पथराव किया। फिर उसने पहलों से अधिक और दासों को भेजा, और उन्होंने उनसे भी वैसा ही किया। अंत में उसने अपने पुत्र को उनके पास यह समझ कर भेजा कि वे मेरे पुत्र का आदर करेंगे। परंतु किसानों ने पुत्र को देखकर आपस में कहा, यह तो वारिस है, आओ, इसे मार डाले और इसकी मिरास ले लें। अतः उन्होंने उसे पकड़ा और दाख की बारी के बाहर निकालकर उसे मार डाला। इसलिए जब दाख की बारी का स्वामी आएगा तो उन किसानों के साथ क्या करेगा? उन्होंने उससे कहा, 'वह उन बुरे लोगों को बुरी रीति से नष्ट करेगा, और दाख की बारी का ठेका दूसरे किसानों को देगा, जो समय पर उसे फल दिया करेंगे।' यीशु ने उनसे कहा, '...इसलिए मैं तुम से सच कहता हूँ कि परमेश्वर का राज्य तुम से लेलिया जाएगा और ऐसी जाति को जो उसका फल लाए, दिया जाएगा।'" मत्ती २१:३३-४३

[८२५] प्रकाशितवाक्य ७:४
[८२६] मत्ती १०:२३

इस दृष्टांत में, गृहस्वामी परमेश्वर का प्रतिनिधित्व करता है, दाख की बारी परमेश्वर के काम को द्योतित करती है, किराएदार जिनको काम सौंपा गया था वह यहूदी लोगों का प्रतिनिधित्व करते हैं, सेवक लोग भविष्यद्वक्ताओं का प्रतिनिधित्व करते हैं, घर का पुत्र यीशु का प्रतिनिधित्व करता है, और अन्य किरायेदार जो फल की फसल की कटाई करते हैं किसी अन्य राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करते हैं जो दूसरे आगमन में मसीह को ग्रहण करेंगे और परमेश्वर की इच्छा पूरी करेंगे। इस दृष्टांत में, यीशु ने बताया कि वह उन लोगों के लिए फिर से नहीं आएगा जिन्होंने उसे सताया था। परमेश्वर उनसे जो मिशन उन्हें पहले सौंपा गया था वापस ले लेगा और ऐसे अन्य लोगों को दे देगा जो मसीह की वापसी पर अपने फल लाएं।

तो फिर, बाईबल ऐसा क्यों चित्रित करती है कि मसीह इस्राएल में लौटेगा? इस सवाल का जवाब देने के लिए, हमें सबसे पहले इस्राएल का अर्थ क्या है पूछना चाहिए। "इस्राएल" का अर्थ है जो प्रबल हुआ है। याकूब को यह नाम प्राप्त हुआ जब उसने दूत के साथ यब्बोक के घाट पर कुश्ती की थी।[८२७] याकूब ने हाबिल का स्थान सुरक्षित करने और वास्तविक नींव स्थापित करने के लिए दूत के साथ कुश्ती लड़ी थी। हाबिल का स्थान सफलतापूर्वक सुरक्षित करके और वास्तविक बलिदान चढ़ाने के बाद, याकूब ने मसीह के लिए पारिवारिक नींव स्थापित की। उसके वंशज, जिन्होंने इस नींव पर परमेश्वर की दैवी योजना की ज़िम्मेदारी विरासत में पाई, उन्हें इस्राएल या चुने हुए लोग कहा जाता है। इस प्रकार "इस्राएल" शब्द परमेश्वर के लोगों को दर्शाता है जिन्होंने अपने विश्वास के माध्यम से विजय प्राप्त की है, पर यह जरूरी नहीं है कि याकूब के वंश के हर किसी के लिए यह लागू हो। इसलिए, यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने यहूदियों से कहा, "और अपने-अपने मन में यह न सोचो कि हमारा पिता अब्राहम है, क्योंकि मैं तुम से कहता हूँ कि परमेश्वर इन पत्थरों से अब्राहम के लिए संतान उत्पन्न कर सकता है।"[८२८] इसके अतिरिक्त, संत पौलूस ने कहा, "क्योंकि वह सच्चा यहूदी नहीं जो केवल बाहरी तौर से यहूदी हो और ख़तना वह नहीं है केवल बाहरी और शारीरिक हो। यहूदी वही है जो हृदय से और आत्मा में यहूदी है, न कि केवल शाब्दिक है",[८२९] और "जो इस्राएल के वंश के हैं वे सब इस्राएली नहीं।"[८३०] उसने उन यहूदियों को अपमानित किया जिन्होंने दावा किया कि वे चुने हुए लोग थे, जो केवल अब्राहम के साथ उसके वंश से संबंधित थे, परन्तु वास्तव में वे परमेश्वर की इच्छा के अनुसार नहीं जीते थे।

यह कहा जा सकता है, कि मूसा के नेतृत्व में याकूब के वंश ने जब मिस्र से प्रस्थान किया उस समय वे इस्राएली कहलाते थे, लेकिन जब वे जंगल में परमेश्वर के विरुद्ध हो गए तब वे इस्राएली नहीं रहे। इसलिए, परमेश्वर ने उन्हें जंगल में अपने से दूर कर दिया और केवल युवा पीढ़ी को कनान में ले गया; परमेश्वर इन्हें सच्चे इस्राएली के रूप में मानता है। अब्राहम के वंश में से जिन्होंने कनान देश में प्रवेश किया, वे इस्राएल के उत्तरी साम्राज्य की दस जनजातियां थीं, जिन्होंने ईश्वर के विरूद्ध पाप किया, वे सब नष्ट हो गए क्योंकि उन्होंने परमेश्वर के चुने हुए लोगों की योग्यता खो दी। यहूदा के दक्षिणी राज्य

---

[८२७] उत्पत्ति ३२:२८

[८२८] मत्ती ३:९

[८२९] रोमियों २:२९-२९

[८३०] रोमियों ९:६

की केवल दो जनजातियां, जिन्होंने ईश्वर की इच्छा को कायम रखा, वे ही चुने हुए लोग बने रहे जो अंततः यीशु को प्राप्त कर सके। फिर भी, जब उन्होंने यीशु को क्रूस पर चढ़ा दिया, तो उन्होंने भी परमेश्वर की दैवी योजना की केंद्रीय ज़िम्मेदारी की योग्यता खो दी।

यीशु के क्रूस पर बलिदान के बाद कौन चुने हुए लोग बने? वे उन ईसाइयों के अलावा अन्य कोई नहीं थे जिन्होंने अब्राहम के विश्वास को विरासत में पाया और उस मिशन को प्राप्त किया जो अब्राहम के वंश ने पूर्ण नहीं किया था। संत पौलुस ने लिखा, “उनके अपराधों के कारण उद्धार अन्य जातियों का हुआ, ताकि इस्राएल को ईर्ष्या हो।”[८३१] यह इस बात का प्रमाण है कि परमेश्वर की दैवी योजना का केंद्र यहूदियों से हट कर अन्य जातियों को चला गया है।[८३२] इसलिए, चुने गए लोग जिन्हें दूसरे आगमन में मसीह के लिए नींव तैयार करनी चाहिए, वे अब्राहम का वंश नहीं है, बल्कि ईसाई लोग हैं जिन्होंने अब्राहम का विश्वास विरासत में पाया है।

३.२ मसीह किसी पूर्वी देश में वापस आएगा?

जैसा कि यीशु ने दाख की बारी के दृष्टांत के माध्यम से समझाया था,[८३३] कि जब यहूदी लोगों ने, इस दृष्टांत में किरायेदारों की तरह अपने स्वामी के पुत्र को मार डाला था, यीशु को क्रूस पर चढ़ाया, तो उन्होंने अपना दैवी मिशन खो दिया। तो कौन सा देश परमेश्वर के काम का वारिस होगा और उसका फल लाएगा? बाईबल बताती है कि यह देश पूर्व में है।
प्रकाशितवाक्य की किताब सात मुहरबंद पुस्तकों को खोलने का वर्णन करती है:

> जो सिंहासन पर बैठा था, मैंने उसके दाहिने हाथ में एक पुस्तक देखी जो भीतर और बाहर लिखी हुई थी, और सात मुहर लगा कर बंद की गई थी; फिर मैंने एक बलवन्त स्वर्गदूत को देखा जो ऊँचे शब्द से प्रचार कर रहा था, इस पुस्तक को खोलने और इसकी मुहरें तोड़ने के योग्य कौन है?" परन्तु न तो स्वर्ग में, न पृथ्वी पर न पृथ्वी के नीचे उस पुस्तक को खोलने या उस पर दृष्टि डालने के योग्य निकला। तब मैं फूट-फूट कर रोने लगा, क्योंकि उस पुस्तक को खोलने या उसपर दृष्टि डालने योग्य कोई न मिला। इस पर उन प्राचीनों में से एक ने मुझ से कहा, ‘मत रो, देख यहूदा के गोत्र का वह सिंह जो दाऊद का मूल है इस पुस्तक को खोलने और उनकी सातों मुहरें तोड़ने के लिए जयवन्त हुआ है’। प्रकाशितवाक्य ५:१-५

यह यहूदा के गोत्र के सिंह मसीह को दर्शाता है; यह वही है जो अंतिम दिनों में सात मुहरों को खोलेगा। छः मुहरों के खोले जाने के बाद:

---

[८३१] रोमियों ११:११
[८३२] प्रेरितों १३:४६
[८३३] मत्ती २१:३३-४३

> फिर मैंने एक और स्वर्गदूत को जीवते परमेश्वर की मुहर लिए पूरब से ऊपर की ओर आते देखा, उसने चारों स्वर्गदूतों से जिन्हें पृथ्वी और स्वर्ग की हानि करने का अधिकार दिया गया था, ऊँचे शब्द से पुकार कर कहा, जब तक हम अपने परमेश्वर के दासों के माथे पर मुहर न लगा दें तब तक पृथ्वी और पेड़ों को हानि न पहुँचाना। जिन पर मुहर दी गई मैंने उनकी गिनती सुनी, अर्थात इस्राएल की संतानों के सब गोत्रों में से एक सौ चालीस हज़ार पर मुहर दी गई। प्रकाशितवाक्य ७:२-४

यह इंगित करता है कि जीवित परमेश्वर की मुहर पूर्व में जहाँ सूर्य निकलता है १४४,००० के माथों पर लगाई जाएगी। ये चुने हुए लोग उसकी वापसी में मेम्ने के साथ होंगे।[८३४] इस प्रकार हम इस बात का अनुमान लगा सकते हैं कि वह देश जो परमेश्वर के कार्य का वारिस होगा और दूसरे आगमन के लिए फल लाएगा, वह पूर्व में है। वहां मसीह का जन्म होगा और परमेश्वर के १४४,००० चुने हुए लोगों द्वारा ग्रहण किया जाएगा। प्रभु को ग्रहण करने के लिए पूर्व के देशों में से कौन सा देश चुना गया है?

३.३ पूर्व में कोरिया का देश है

प्राचीन काल से, प्रथानुकूल पूर्व के देशों में कोरिया, जापान और चीन तीन देश गिने जाते हैं। उनमें से, जापान ने अपने पूरे इतिहास में सूर्य देवी, अमातेरासु-ओमी-कामी की पूजा की है। जापान ने दूसरे आगमन की अवधि में एक फासीवादी राष्ट्र के रूप में प्रवेश किया और कोरिया के ईसाई धर्म को बुरी तरह से सताया।[८३५] चीन, दूसरे आगमन के समय साम्यवाद का एक बड़ा हिस्सा था और एक कम्युनिस्ट राष्ट्र बनने जा रहा था। इस प्रकार, यह दोनों देश शैतान के पक्ष में थे। फिर कोरिया, वह पूर्वी देश है जहां मसीह वापस आ जाएगा। आइए हम सिद्धांत के दृष्टिकोण से जांच करें कि किन विभिन्न तरीकों से कोरिया दूसरे आगमन में मसीह को प्राप्त करने के लिए योग्य हुआ। कोरिया को, जिस देश में मसीह लौटाता है, निम्नलिखित योग्यताओं में खरा ठहरना चाहिए।

३.३.१ राष्ट्रीय क्षतिपूर्ति की शर्त

मसीह को प्राप्त करने के योग्य होने वाला राष्ट्र बनने के लिए कोरिया को, शैतान से अलग होने के लिए और लौकिक-स्तर पर कनान को प्राप्त करने के लिए चालीस के राष्ट्रीय विधान को पूरा करना पड़ा। कोरिया को यह क्षतिपूर्ति की शर्त क्यों दी गई थी? यदि मसीह कोरिया में लौटता है, तो इसका अर्थ है कि कोरिया के लोग तीसरा इस्राएल बनने के लिए पूर्वनिर्दिष्ट हैं। पुराने नियम में, अब्राहम के वंश जिन्होंने ईश्वर की इच्छा को बरकरार रखा और मिस्र में अत्याचार सहन किया, वह पहला इस्राएल था। ईसाई लोग जिन्हें यहूदियों ने विधर्मियों के रूप में सताया था क्योंकि उन्होंने पुनर्जीवित यीशु को सम्मानित

---

[८३४] प्रकाशितवाक्य १४:१

[८३५] प्रति-संदर्भ—तैयारी ४.३.३

किया और पुनरुद्धार की दैवी योजना को जारी रखा, दूसरा इस्राएल बन गए। इसी तरह मसीह पर, उसकी वापसी के समय के ईसाइयों के द्वारा, दोष लगाए जाने और उसे विधर्मी ठहराए जाने की संभावना है, भविष्यवाणी के अनुसार, वह इस पीढ़ी के द्वारा अस्वीकार किया जाएगा और सताया जाएगा,[८३६] जैसा कि नूंह अपने दिनों में था। यदि ऐसा हुआ तो परमेश्वर को उन मसीही लोगों को जो मसीह को सता रहे हैं त्यागना पड़ेगा, जिस तरह उसने उन यहूदियों के साथ किया था जिन्होंने यीशु को बहिष्कृत किया था।[८३७] तब कोरिया के लोग, जो लौटने वाले मसीह को ग्रहण करेंगे और दैवी योजना के तीसरे अध्याय को पूरा करने के लिए उसका समर्थन करेंगे, वे तीसरा इस्राएल बन जाएंगे।

पहले इस्राएल ने मिस्र में चार सौ वर्ष दुख उठाए। यह कनान की प्राप्ति के लिए चालीस का विधान था, जिसमें कनान की प्राप्ति की राष्ट्रीय कार्यवाही में प्रस्थान करने के लिए शैतान से अलग होना आवश्यक था। दूसरे इस्राएल को रोमी साम्राज्य में चार सौ वर्ष का कष्ट भोग कर विजय प्राप्त करनी पड़ी, जो कनान की प्राप्ति के लिए विश्वव्यापी कार्यवाही शुरू करने से पहले शैतान से अलग होने का चालीस के विधान के अनुसार अपेक्षित था। तीसरे इस्राएल के रूप में, कोरिया के लोगों को भी शैतान की तरफ खड़े हुए राष्ट्र के अधीन एक अवधि तक, जो संख्या-चालीस को पूरा करती है, दुख उठाना पड़ा। इस प्रकार, उन्होंने कनान की प्राप्ति के लिए लौकिक स्तर पर कार्यवाही शुरू करने से पहले शैतान को अलग करने के लिए चालीस का विधान पूरा किया। चालीस वर्ष की इस अवधि के दौरान कोरिया को, जापान का उपनिवेश के रूप में, अनगिनत कठिनाइयों का सामना करना पड़ा था।

कोरिया जापान की साम्राज्यवादी नीति का प्रारंभिक उद्देश्य था। जापानी संरक्षण सामर्थ्य से १९०५ में यूल्सा प्रोटेक्शन ट्रीटी जो जापान के हिरोहुमी इतो और कोरिया के वान-योंग ली[८३८] द्वारा निर्वाह की गई थी, कोरिया पर लागू कर दी गई। कोरिया के लोगों के सभी राजनयिक अधिकार जापान के विदेशी मामलों के मंत्रालय की देखभाल के लिए दे दिए गए थे। जापान ने कोरिया के सभी घरेलू मामलों को नियंत्रित करने के लिए प्रत्येक जिले में एक गवर्नर-जनरल और सैन्य अधिकारियों को नियुक्त किया। थोड़े ही समय में, जापान ने अपनी राजनीति, कूटनीति और आर्थिक मामलों में अपनी जबरन इच्छा कोरिया के लोगों पर से लागू कर दी।

जापान ने १९१० में बलपूर्वक कोरिया पर कब्जा कर लिया। जापानियों ने कोरिया के लोगों पर अत्याचार किया, कई देशभक्तों को कैद किया और मार डाला और लोगों को उनकी आज़ादी से वंचित कर दिया। जब, १ मार्च, १९१९ में आजादी के लिए एक आंदोलन उठा, तो जापानियों ने प्रायद्वीप के हर हिस्से में हजारों नागरिकों को मौत के घाट उतार दिया। भयानक कांतो भूकंप के समय, १९२३ में जापानियों ने टोक्यो में रहने वाले बहुत से निर्दोष कोरियाई लोगों का, बलिदान के बकरे की तरह, नरसंहार किया। इस बीच, बहुत से कोरिया के लोगों ने जो जापानी अत्याचार को सहन नहीं कर सके, अपने घरों को छोड़ कर स्वतंत्रता की तलाश में मंचूरिया के जंगलों में भाग गए। वहां उन्होंने अनगिनत कठिनाइयों का सामना

---

[८३६] लूक १७:२५

[८३७] मत्ती ७:२३

[८३८] जापान का समर्थक शिक्षण मंत्री

किया और अपने दिल और आत्माओं को अपनी मातृभूमि की स्वतंत्रता के लिए बलिदान किया। जापानी सेना ने कोरिया के इन देशभक्त लोगों के लिए हर गांव में खोज की। कुछ गांवों में, उन्होंने जवान और बूढ़ों को एक इमारत में इकट्ठा करके आग लगा दी, उन्हें जीवित जला दिया। जापान ने अपने पतन तक इस तरह के अत्याचार को जारी रखा।

कोरिया के लोग, जो १मार्च को स्वतंत्रता के आंदोलन में, और मांचुरिया के जंगल में मारे गए थे वे मुख्य रूप से ईसाई थे। औपनिवेशिक शासन के अंत में, जापान ने कोरिया में स्वतंत्र ईसाई धर्म को मिटाने के लिए एक कुख्यात नीति शुरू की। ईसाइयों को शिंतो मंदिरों में पूजा करने के लिए मजबूर किया गया; जो लोग यह आज्ञा पालन नहीं करते थे उन्हें कैद किया गया या मार डाला गया। जब दूसरे विश्व युद्ध के अंत में जापान के राजा हिरोहिटो ने आत्मसमर्पण किया, तब कोरिया के लोगों को अंततः उनके बंधन से मुक्त कर दिया गया।

कोरिया के लोगों ने १९०५ की उल्सा सुरक्षा संधि से लेकर १९४५ तक जब उन्हें मुक्ति मिली चालीस वर्ष तक कष्ट उठाए। उनकी पीड़ा पहले इस्राएल की मिस्र में और दूसरे इस्राएल की रोम के साम्राज्य के समान थी। कोरिया की स्वतंत्रता का आंदोलन मुख्य रूप से ईसाइयों के नेतृत्व में घरों और विदेशों में किया गया था; ईसाई लोगों ने जापानी अत्याचार के तहत सबसे अधिक पीड़ा उठाई।

३.३.२ परमेश्वर के मोर्चे की पंक्ति और शैतान के मोर्चे की पंक्ति

अंतिम दिनों में, दुनिया लोकतांत्रिक दुनिया और कम्युनिस्ट दुनिया में बंट गई है। क्योंकि परमेश्वर ने आदम को प्रभुत्व का आशीर्वाद दिया था, इसलिए उसे शैतान को भी आदम के वंशजों के माध्यम से एक अनियंत्रित दुनिया बनाने के लिए स्वतंत्र बाग-डोर देनी पड़ी। परमेश्वर को अनियंत्रित दुनिया को अपने पक्ष में बहाल करने के लिए साथ-साथ कार्य करना पड़ा। जब मसीह इस पतित संसार को उसकी अपनी मूल स्थिति में, जिसमें परमेश्वर ने उसे सृजा था, बहाल करने के लिए लौटता है, तो वह निश्चित रूप से कम्युनिस्ट दुनिया को बचाने के लिए भी काम करेगा। इसमें कोई संदेह नहीं है कि वह जिस राष्ट्र को लौटाता है वह राष्ट्र इस व्यवस्था में केंद्रीय भूमिका निभाएगा। कोरिया, वह देश है जहां मसीह वापस आएगा, यह वह स्थान है जो परमेश्वर के लिए सबसे प्रिय है और शैतान के लिए सबसे अधिक घृणित है। यह परमेश्वर और शैतान दोनों के लिए मोर्चे की पंक्ति है, एक ऐसा स्थान जहां लोकतंत्र की शक्तियों और साम्यवाद की सेनाओं की मुठभेड़ होती है। टकराव की यह रेखा कोरिया की थर्टीएट पैरलल (अड़तीस समानांतर) के नाम से जानी जाती है, जो परमेश्वर की दैवी योजना को पूरा करने के लिए तैयार की गई है।

परमेश्वर और शैतान के बीच मुकाबले के स्थान पर, उनके संघर्ष का परिणाम निर्धारित करने के लिए शर्त के रूप में बलिदान की भेंट चढ़ाई जानी चाहिए। यह बलिदान कोरिया के लोग थे, जो विश्व की बहाली के लिए युद्ध के इस मोर्चे पर रखे गए थे। इसलिए, परमेश्वर ने कोरिया के देश को विभाजित किया, जिस प्रकार अब्राहम के बलिदान को विभाजित किया जाना चाहिए था। कोरिया के विभाजन का

यही कारण है, इस विभाजन की परिसीमा अड़तीस समानांतर थी, जो एक देश को दो देशों में विभाजित करती है: एक कैन-वर्ग और अन्य हाबिल-वर्ग का।

अड़तीस-समानांतर परिसीमा लोकतंत्र और साम्यवाद के बीच युद्ध का मोर्चा है। साथ ही, यह परमेश्वर और शैतान के बीच युद्ध का मोर्चा है। कोरियाई युद्ध, जो अड़तीस-समानांतर पर हुआ, केवल गृहयुद्ध नहीं था; यह लोकतांत्रिक दुनिया और कम्युनिस्ट दुनिया के बीच संघर्ष था। इसके अतिरिक्त, यह परमेश्वर और शैतान के बीच संघर्ष था। चूंकि इस युद्ध का विश्वव्यापी महत्व पुनरुद्धार की दैवी योजना की उपलब्धि के लिए था, संयुक्त राष्ट्र के सदस्य देशों की सशस्त्र सेनाओं को पहली बार संगठित किया गया था। भले ही भाग लेने वाले राष्ट्रों ने इस दैवी महत्व को नहीं समझा हो, फिर भी वे आध्यात्मिक पितृभूमि की मुक्ति के लिए परमेश्वर की इच्छा के अनुरूप काम कर रहे थे।

पहले मानव पूर्वजों के पतन पर, परमेश्वर का पक्ष और शैतान का पक्ष अलग-अलग रास्तों पर हो गए। जीवन और मृत्यु, अच्छाई और बुराई, प्रेम और घृणा, खुशी और दुख, भाग्य और दुर्भाग्य, सभी एक ही बिंदु पर विभाजित हो गए और यह मानव इतिहास में एक-दूसरे के साथ लगातार संघर्ष करते आए हैं। यह विभाजित वास्तविकताएं अलग-अलग कैन-वर्ग और हाबिल-वर्ग की दुनिया में समेकित की गईं, और अंततः लोकतांत्रिक दुनिया और कम्युनिस्ट दुनिया बनने के लिए परिपक्व हो गईं। जब ये दो दुनिया कोरियाई प्रायद्वीप पर केंद्रित वैश्विक संघर्ष में आईं, तो धर्म, विचारधाराएं, राजनीतिक शक्तियाँ और आर्थिक प्रणालियाँ सभी में संघर्ष हुआ और कोरियाई समाज में बहुत भ्रम पैदा हो गया, जिसका प्रभाव सारी दुनिया पर पड़ा। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि जो घटनाएं परलोक में घटीं वे भौतिक वास्तविकता के रूप में कोरिया में घटीं, जो दैवी योजना का केंद्रीय देश है, और फिर वह दुनिया भर में फैल गईं। सामाजिक और वैचारिक अराजकता का यह एक स्पष्ट संकेत था कि एक नई विश्व व्यवस्था शीघ्र आ रहा थी। जैसा कि यीशु ने एक बार कहा था, “अंजीर के पेड़ से यह दृष्टांत सीखो, जब उसकी डालियाँ कोमल हो जातीं हैं और पत्ते निकलने लगते हैं तो जान लेते हो कि ग्रीष्म काल निकट है।”[८३९]

जब शिष्यों ने यीशु से उसकी वापसी के स्थान के बारे में पूछा, तो उसने कहा, “जहाँ लोथ है वहाँ गिद्ध इकट्ठे होंगे।”[८४०] कोरिया में अनंत जीवन और सनातन मौत की टक्कर हुई, जो परमेश्वर और शैतान के बीच युद्ध का मोर्चा है। गिद्ध दुष्ट आत्माओं के प्रतीक हैं, आध्यात्मिक रूप से मृत लोगों की खोज में इस भूमि पर इकट्ठे होते हैं, जबकि लौटने वाले प्रभु उन लोगों की तलाश में इस भूमि पर आता है जिन में बहुतायत से जीवन है।

३.३.३ परमेश्वर का हार्दिक पात्र साझी

परमेश्वर के दिल के पात्र साझी बनने के लिए, हमें पहले रक्त, पसीने और आंसुओं के मार्ग पर चलाना चाहिए। जब से मनुष्य शैतान के अधीन हुआ है और परमेश्वर का विरोध करने लगा है, परमेश्वर

---

[८३९] मत्ती २४:३२

[८४०] लूक १७:३७

एक ऐसे पिता की तरह दिल से दुखित है, जिसने अपने बच्चों को खो दिया है। मनुष्य अनैतिक और घृणास्पद हैं फिर भी वे उसके बच्चे हैं, उन्हें बचाने के लिए परमेश्वर इस पापी दुनिया में निरंतर काम करता आया है। इसके अतिरिक्त, अपने विद्रोही बच्चों को बचाने के लिए परमेश्वर ने अपने प्रयासों में अनेक बार सबसे धर्मी और अच्छे लोगों को शैतानी दुनिया में बलिदान किया, यहां तक कि यीशु को, उसके इकलौते पुत्र को क्रूस पर चढ़ाने के लिए दे दिया। मानव पतन के बाद परमेश्वर हर दिन इस तरह से दुखी रहा है।[८४१] तदनुसार, एक व्यक्ति, परिवार या राष्ट्र जो परमेश्वर की इच्छा के लिए शैतानी दुनिया से लड़ रहा है, रक्त, पसीने और आंसुओं के मार्ग से नहीं बच सकता है। वफादार और निष्ठावान बच्चों के रूप में हम कैसे सुखद और आत्मसन्तुष्ट हो कर अपने स्वर्गीय पिता के, जो अत्यंत दुखित है, पात्र साझी बन सकते हैं?

वह देश जो मसीह को प्राप्त कर सकता है उसे परमेश्वर का दिली पात्र साझी बन कर पुत्र की निष्ठा का प्रदर्शन करना चाहिए। यही कारण है कि इसे रक्त, पसीने और आंसुओं का मार्ग चलना चाहिए। पहला इस्राएल और दूसरा इस्राएल दोनों कष्ट के मार्ग पर चले। कोरियाई लोगों ने, जो तीसरा इस्राएल हैं, यही किया। उनका दुखी इतिहास परमेश्वर के चुने हुए लोगों के लिए आवश्यक मार्ग था। यह कोई भी नहीं जानता कि दुःख का ऐसा मार्ग अंततः कितनी बड़ी आशीषों का कारण बन सकता है।

जिस देश के लोग परमेश्वर के दिल के पात्र साझी बनने के योग्य हैं उन्हें अच्छे लोग होने चाहिए। कोरिया के लोग चार हजार वर्ष के इतिहास के एक समरूपी जाति के लोग हैं, जिन्होंने शायद ही कभी किसी अन्य देश पर हमला किया है। कोकुर्यो और सिला काल के दौरान भी, जब वे प्रभावशाली सैन्य शक्ति का गौरव करते थे, तो उन्होंने अपनी शक्ति को केवल आक्रांता को विफल करने के लिए उपयोग किया। यह तथ्य कि शैतान की मौलिक प्रकृति दूसरों पर आक्रामक रूप से अतिक्रमण करना है, यह स्पष्ट है कि कोरिया के लोग परमेश्वर के पक्ष में खड़े होने के योग्य हैं। परमेश्वर की रणनीति यह है कि जब उसके पक्ष पर पहले हमला किया जाता है तो वह जीत का दावा कर सकता है। यद्यपि अनगिनत भविष्यद्वक्ताओं और संतों को इतिहास के दौरान बलिदान किया गया है, और यहां तक कि यीशु को भी क्रूस पर चढ़ा कर मार दिया गया, फिर भी परमेश्वर ने हर बार अंत में जीत का दावा किया। हालांकि शैतान का पक्ष प्रथम और द्वितीय विश्व युद्धों में आक्रामक था, अंत में जीत परमेश्वर के पक्ष के देशों की हुई। इसी प्रकार, विदेशी शक्तियों ने कोरिया के लोगों पर कई बार हमला किया गया है। इन विपत्तियों से परमेश्वर का सच्चा इरादा उन्हें उसके पक्ष में खड़ा करना था ताकि अंतिम विजय प्राप्त कर सके।

कोरियाई लोग प्राकृतिक रूप से धार्मिक चरित्र से संपन्न हैं। उनके धार्मिक झुकाव ने उन्हें हमेशा उस मार्ग पर प्रयास करने के लिए प्रेरित किया है जो भौतिक वास्तविकता से परे हो और अत्यंत मूल्यवान हो। प्राचीन काल से, जब उनकी संस्कृति अभी भी असभ्य थी, कोरियाई लोगों ने परमेश्वर की उपासना करने की एक मज़बूत इच्छा प्रदर्शित की। उन्होंने ऐसे धर्मों को अधिक मान नहीं दिया जो अंधविश्वास के कारण प्रकृति को देवी मान कर पार्थिव जीवन की खुशी के लिए प्रयास करें। उन्होंने हमेशा वफादारी,

---

[८४१] उत्पत्ति ६:६

धर्मनिष्ठता के गुण और पवित्रता को सम्मानित किया। लोक कथाओं के लिए उनका वात्सल्य, जैसे "शिम-चोंग की कथा" और "छुन-हियांग" की कथा, जो इन गुणों को व्यक्त करता है उनकी शक्तिशाली संस्कृति के आधार से निकलते हैं।

३.३.४ मसीह के विषय में भविष्यवाणी

एक लंबे समय से कोरिया के लोगों की मसीह के लिए अभिलषित आशा, उनके भविष्यवक्ताओं की स्पष्ट गवाहियों से पोषित हुई है। पहले इस्राएल ने अपने भविष्यवक्ताओं की गवाही पर विश्वास किया[८४२] कि मसीह उनके राजा के रूप में आएगा, राज्य स्थापित करेगा और उनका उद्धार करेगा। दूसरा इस्राएल मसीह की वापसी के लिए विश्वास के कठिन रास्ते पर चला। इसी प्रकार, कोरिया के लोग, तीसरे इस्राएल ने इस भविष्यवाणी में विश्वास किया है कि पवित्र राजा प्रकट होगा और उनकी भूमि पर एक गौरवशाली और अनन्त राज्य स्थापित करेगा, इस आशा के ज़रिए उन्हें यातनाओं को सहन करने की शक्ति मिली। कोरिया के लोगों के बीच यह मसीह के आने का विचार चोंगगमनोक, भविष्यवाणी की एक पुस्तक के माध्यम से प्रकट हुआ था, जो यी वंश की शुरुआत में चौदहवीं शताब्दी में लिखी गई थी।

क्योंकि इस भविष्यवाणी के अनुसार एक नए राजा को आना है, तो शासक वर्ग के लोगों ने इसे दबाने की कोशिश की थी। जापानी औपनिवेशिक शासन ने पुस्तक को जला कर और उसके विश्वासियों पर अत्याचार करके इस धारणा को खतम करने की कोशिश की। ईसाई धर्म का व्यापक रूप से स्वीकार किए जाने के बाद, इस विचार को अंधविश्वास के रूप में उपहासित किया गया। फिर भी, यह मसीही आशा अभी भी कोरिया के लोगों की आत्मा में गहराई से जुड़ी हुई है। चोंगगमनोक में, धार्मिक राजा के आने की आशा की भविष्यवाणी में चोंगनगौमनौक को चोंगडोरीयोंग नाम दिया गया है (जो परमेश्वर के सच्चे वचन के साथ आता है) यह लिखा है। वास्तव में, यह कोरिया के लिए मसीह की भविष्यवाणी है जो कोरिया लौटेगा। कोरिया में ईसाई धर्म की शुरूआत से पहले, परमेश्वर ने चोंगगमनोक के माध्यम से प्रगट किया था कि मसीह उस देश में आएगा। आज, अनेक विद्वानों ने इस बात की पुष्टि की है कि भविष्यवाणी की इस पुस्तक के कई अनुच्छेद बाईबल की भविष्यवाणियों के साथ मेल खाते हैं।

इसके अतिरिक्त, कोरिया के हर धर्म के विश्वासी लोगों में ऐसे लोग हैं जिनको यह प्रकटीकरण प्राप्त हुआ है कि उनके धर्म के संस्थापक कोरिया में वापस आएंगे। हमने सांस्कृतिक क्षेत्रों की प्रगति के अध्ययन के माध्यम से सीखा[८४३] कि सभी धर्म एक धर्म की ओर बढ़ रहे हैं। अंतिम दिनों के ईसाई धर्म के लिए परमेश्वर की इच्छा है कि वह यह अंतिम धर्म बने जो इतिहास में कई धर्मों के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए जिम्मेदारी उठा सके। लौटने वाला मसीह, जो ईसाई धर्म के केंद्र के रूप में आता है, वह उन उद्देश्यों को पूरा करेगा जो अन्य धर्मों के संस्थापक पूरा करने के लिए प्रयास करते हैं। इसलिए, उसके

---

[८४२] मलाकी ४:२-५, यशायाह ६०:१-२२

[८४३] प्रति-संदर्भ—प्रलयोत्तर ४.२

मिशन के संबंध से, मसीह अपनी वापसी पर हर धर्म के संस्थापकों के दूसरे आगमन के रूप में माना जा सकता है।[८४४] जब विभिन्न धर्मों के संस्थापक दूसरे आगमन में अपने विभिन्न प्रकटीकरण की पूर्ति के लिए कोरिया में प्रगट होंगे, तो वे अलग-अलग व्यक्तियों के रूप में नहीं आएंगे। एक व्यक्ति, दूसरे आगमन का मसीह, इन सभी प्रकटन की पूर्ति के रूप में आएगा। वह प्रभु जिसका आगमन विभिन्न धर्मों के विश्वासियों को प्रकट हुआ है, जिसमें बौद्ध धर्म में मैत्रेय बुद्ध, कन्फ्यूशीवाद का सच्चा-पुरुष, लौटने वाला चोए सु-यून, जिसने चोंडोग्यो के धर्म की स्थापना की और चोंगगामनोक में आने वाला चोंगडोरोंग, वह दूसरे आगमन में मसीह के अलावा कोई नहीं होगा।

अंततः, जैसे बारिश में मशरूम बहुतायत से अंकुरित होने लगते हैं, हम इस बात के गवाह हैं कि कोरिया में बहुत से आध्यात्मिक रूप से प्रबुद्ध ईसाई लोगों को आकाशवाणी और चिह्न दिए गए है, जो मसीह के दूसरे आगमन की गवाही दे रहे हैं। परमेश्वर का वादा है कि वह सभी लोगों पर अपनी आत्मा उंडेलेगा,[८४५] यह कोरिया के लोगों के बीच अब पूरा हो रहा है। बहुत से मसीही भक्त आत्मिक दुनिया के निचले इलाकों से स्वर्ग तक, विभिन्न स्तरों पर आत्माओं से संपर्क कर रहे हैं, और स्पष्ट प्रकटन प्राप्त कर रहे हैं कि प्रभु कोरिया में आएगा। तो भी, कोरिया के ईसाई चर्चों का वर्तमान नेतृत्व गहरी नींद में हैं। आध्यात्मिक रूप से अनभिज्ञ, वे अपने मिशन के कार्य में ही व्यस्त हैं और समय के इन संकेतों से अनजान हैं। यीशु के समय में जैसा हुआ यह उसके समान है। याजक और शास्त्री लोग, जिन्हें मसीह के जन्म की जानकारी होनी चाहिए थी, वे पूरी तरह से इस बारे में अपरिचित थे, क्योंकि वे आध्यात्मिक रूप से अंधे थे। ज्योतिषी लोग और चरवाहों को जिन्हें प्रकटन मिला वही यीशु के जन्म के बारे में जानते थे।

यीशु ने कहा, “हे पिता स्वर्ग और पृथ्वी के प्रभु, मैं तेरा धन्यवाद देता हूँ कि तू ने इन बातों को ज्ञानियों समझदारों से छिपा रखा, और बालकों पर प्रगट किया है।”[८४६] वह उस समय के यहूदी नेतृत्व की आध्यात्मिक अज्ञानता पर शोक कर रहा था, और दूसरी तरफ, वह आभारी था कि परमेश्वर ने शुद्ध अशिक्षित विश्वासियों को अपनी दैवी योजना प्रगट करने की कृपा की। आज के कोरिया के ईसाई धर्म में, जो यीशु के दिनों का समानांतर समय है, इसी तरह की घटनाएं हो रही हैं, बल्कि और अधिक जटिल तरीकों से। शुद्ध और निर्दोष विश्वासियों के माध्यम से परमेश्वर अंतिम दिनों के बहुत से स्वर्गीय रहस्यों को प्रकट कर रहा है। हालांकि, यदि वे सार्वजनिक रूप से घोषित करें तो वे विधर्मी के रूप में दंडित किए जाएंगे, इसलिए वे इन सत्यों को अपने आप में रखते हैं। इस बीच, यीशु के समय के याजकों, यहूदी पादरी और शास्त्रियों की तरह, कई ईसाई पादरी बाईबल के बारे में अपने ज्ञान और बाईबल की व्याख्या करने की क्षमता पर गर्व करते हैं। वे अपने अनुयायियों से प्राप्त सम्मान में आनंद लेते हैं; और अपने कार्यालयों के कर्तव्यों को पूरा करके ही संतुष्ट हैं; फिर भी, परमेश्वर इस बात पर शोक करता है कि वे इन अंतिम दिनों में परमेश्वर की दैवी योजना से पूरी तरह से अनजान हैं।

---

[८४४] पुनरुत्थान २.४

[८४५] प्रेरितों २:१७

[८४६] मत्ती ११:२५

३.३.५ सभ्यताओं की पराकाष्ठा

धर्म और विज्ञान पर निर्मित आध्यात्मिक और भौतिक सभ्यता—मानव अज्ञानता के दो पहलुओं को दूर करने की तलाश—इन्हें सामंजस्य में लाया जाना चाहिए। तभी हम मानव जीवन की मौलिक समस्याओं को हल कर सकते हैं और परमेश्वर के आदर्श की दुनिया साकार कर सकते हैं।[८४७] मसीह जब दुनिया में आएगा उस समय विज्ञान अत्यधिक विकसित हुआ होगा। यह सभ्यता का उच्चतम स्तर वाला समाज होगा, जिसकी दैवी इतिहास की सारी सभ्यताएं जो लंब कार्यवाही के माध्यम से विकसित हुई थीं वे सब प्रभु के नेतृत्व में क्षैतिज रूप से पुनः स्थापित की जाएंगी। इसलिए, भौतिक और आध्यात्मिक सभ्यता के पहलू जो धर्म और विज्ञान से विकसित हुए हैं, और जो सारी दुनिया में प्रभावशाली हैं, नए सत्य द्वारा निर्देशित कोरिया में ग्रहण की जाएंगे और एक साथ सुसंगत किए जाएंगे। तब वे आदर्श दुनिया में परमेश्वर की गहन अभिलाषा के फल लाएंगे।

पहले, सभी सभ्यताओं के गुण तत्त्व जो पृथ्वी पर विकसित हुए हैं उन्हें कोरिया में फल लाना चाहिए। महाद्वीपीय सभ्यताएं जो मिस्र और मेसोपोटामिया में पैदा हुई उन्होंने यूनान, रोम और इबेरिया के प्रायद्वीपीय सभ्यताओं को फल दिए, फिर वहां से ग्रेट ब्रिटेन की द्वीप सभ्यता को अपने फल दिए। इस द्वीप सभ्यता ने अपनी संस्कृति संयुक्त राज्य अमेरिका, महाद्वीपीय सभ्यता को पारित की। फिर दिशा उलट दी गई, संयुक्त राज्य अमेरिका ने अपनी संस्कृति जापान की द्वीप सभ्यता को दी। अब यह फल कोरिया की प्रायद्वीपीय सभ्यता में एकत्र किए जाएंगे, जहां मसीह का जन्म होना है।

फिर, नदियों और समुद्रों के तट पर आरंभ हुई सभ्यताओं के गुणों को प्रशांत सभ्यता में जिससे कोरिया संबंधित है फल देना चाहिए। नील, टिग्रिस और यूफ्रेट्स नदियों के तट से निकली हुई सभ्यताओं ने भूमध्यसागरीय सागर के आसपास की सभ्यताओं में अपनी संस्कृतियों को पारित किया: यूनान, रोम, स्पेन और पुर्तगाल। इन सभ्यताओं ने अटलांटिक महासागर की सभ्यताओं को अपने फल दिए: विशेष रूप से, ग्रेट ब्रिटेन और संयुक्त राज्य अमेरिका। इन सभी फलों की कटाई प्रशांत महासागर की सभ्यता में की जाएगी, जो संयुक्त राज्य अमेरिका, जापान और कोरिया को एक साथ जोड़ता है।

अंत में, विभिन्न जलवायु क्षेत्रों में पैदा होने वाली सभ्यताओं को कोरिया में फल लाना चाहिए। मौसम के दौर में, सजीव वस्तुएं वसंत ऋतु में अपना जीवन और प्रजनन शुरू करती हैं, गर्मियों में उगती हैं, शरद् ऋतु में फल देतीं करती हैं, और सर्दियों में अपना भंडार संचित करती हैं। वसंत, गर्मी, शरद् ऋतु और सर्दी का चक्र न केवल प्रत्येक वर्ष दोहराया जाता है, बल्कि दिन-प्रतिदिन भी: सुबह वसंत, दोपहर गर्मियों, शाम शरद् ऋतु, और रात सर्दी की ऋतु के अनुरूप है। मानव जीवन के चार चरण भी—बचपन, युवा, मध्यम आयु, और बुढ़ापा—इस नमूने से मिलते-जुलते हैं। मानव इतिहास भी ऋतुओं के अनुसार प्रकट होता है, क्योंकि परमेश्वर की सृष्टि में अंतर्निहित उसके सिद्धांत का एक पहलू सामंजस्यपूर्ण, जीवन का मौसमी चक्र है।

---

[८४७] प्रलयोत्तर-विद्या ५.१

परमेश्वर ने आदम और हव्वा की रचना मानव इतिहास की वसंत ऋतु में की। तदनुसार, इतिहास को अदन के शीलवंत-क्षेत्र की सभ्यता से शुरू होना चाहिए था। फिर, उसे अपने गर्मियों के मौसम में उष्णकटिबंधीय सभ्यता में स्थानांतरित होना चाहिए था; फिर शरद् ऋतु से गुज़र कर शीतल-जलवायु में, और अंत में इसकी पराकाष्ठा शीत-क्षेत्र की सभ्यता में होनी चाहिए थी, जो सर्दियों के मौसम के अनुरूप है। परंतु, पतन के कारण, मनुष्य असभ्य जंगली लोगों के स्तर पर पदच्युत हो गया। शीलवंत-क्षेत्र सभ्यता का निर्माण करने के बजाय, वे समय से पूर्व उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में आदि वासियों के रूप में रहने लगा। अफ्रीका के महाद्वीप में उन्होंने मिस्र की उष्णकटिबंधीय सभ्यता का निर्माण किया। इस महाद्वीपीय सभ्यता ने अपनी संस्कृति प्रायद्वीप और द्वीपों को पारित की जहां शीतल-क्षेत्र की सभ्यताओं का विकास हुआ। जो आगे सोवियत संघ की शीत सभ्यता में फले। अब यह वर्तमान समय नए अदन की शीलवंत-क्षेत्र सभ्यता के गठन में समाप्त होगा। यह निश्चित रूप से कोरिया में होना चाहिए, जहां सभी सभ्यताओं को फलवान होना है।

संभाग ४

यीशु के दिनों और वर्तमान दिनों में समानांतर

दूसरे आगमन की अवधि यीशु के समय के समानांतर है। आज ईसाई धर्म में जो घटनाएं घट रही हैं यीशु के समय में यहूदी धर्म में भी घटी थीं। आइए इन समानांतरों में से कुछ की जांच करें। आज का ईसाई धर्म, यीशु के दिनों के यहूदी धर्म की तरह, संस्थागत अधिकार और अनुष्ठानों का बहुत सख़्ती से पालन करता है, जबकि आंतरिक रूप से यह भ्रष्ट है। यीशु के समय के, बहुत से याजक और शास्त्री लोग अनुष्ठानों और विधिवाद के दास बन गए थे, और उनका आध्यात्मिक जीवन भ्रष्ट था। इसलिए, सच्चे निष्कपट यहूदी विश्वासी जो यीशु के गिर्द जमा होते थे, अपनी आत्मिक प्यास बुझाने के लिए पाषंडियों पर आरोप लगाते थे। इसी प्रकार, आज के ईसाई धर्म में, कई प्रमुख पादरी और याजक अपने अधिकारियों के बंदी हैं और उनके धार्मिक कृत्यों से मोहित हैं जबकि उनकी आत्माएं हर दिन मंद होती जा रहीं हैं। इसलिए, ईसाई भक्त लोग सच्चे मार्ग की खोज में पहाड़ों और मैदानों में हर जगह घूम रहे हैं। वे नए नेतृत्व की तलाश कर रहे हैं जिनके मार्गदर्शन से वे इस आध्यात्मिक जंगल से बाहर निकल सकें और उन्हें आंतरिक प्रकाश के मार्ग दिखा सकते हैं।

ईसाई अगुवा लोग आज, यीशु के दिनों के यहूदी नेतृत्व की तरह, दूसरे आगमन में मसीह को सताने वालों में सबसे अव्वल होंगे। यीशु एक नया युग स्थापित करने के लिए आया और भविष्यवक्ताओं द्वारा घोषित पुराने नियम के वचन को पूरा किया। उसने पुराने नियम के शब्दों को नहीं दोहराया, परंतु नए युग के लिए सत्य के नए वचन दिए। यहूदी याजकों और शास्त्रियों ने पुराने नियम के वचन की अपनी संकीर्ण समझ के आधार पर यीशु के वचन और कार्यों की आलोचना की। उनके गलत निर्णय के कारण यीशु क्रूस पर चढ़ाया गया।

इसी प्रकार, दूसरे आगमन में मसीह का उद्देश्य नए नियम के युग में ईसाई धर्म द्वारा नियोजित आध्यात्मिक मोक्ष की नींव पर एक नया स्वर्ग और एक नई पृथ्वी[८४८] बनाना है। जब वह लौटेगा, तो वह केवल दो हजार साल पहले दिए गए नए नियम के वचन को नहीं दोहराएगा, लेकिन वह निश्चित रूप से एक नए स्वर्ग और नई पृथ्वी की स्थापना के लिए आवश्यक सत्य के नए वचन भी देगा। परंतु, आज के ईसाई, जिनके मन बहुत बारीकी से नए नियम के वचन से जुड़े हुए हैं, शास्त्रों की संकीर्ण समझ के आधार पर मसीह के शब्दों और कार्यों की आलोचना करेंगे। इसलिए, यह अपेक्षा की जा सकती है कि वे प्रभु पर एक पाषंडी का टीका लगा कर उसे कष्ट पहुँचाएंगे। यही कारण है कि यीशु ने भविष्यवाणी की थी कि दूसरे आगमन में, मसीह को पहले बहुत दु:ख उठाने पड़ेंगे और इस युग के लोग उसे तुच्छ ठहराएंगे।[८४९]

दूसरे आगमन पर जब लोग मसीह के बारे में प्रकटन प्राप्त करते हैं या उसके वचन को सुनते हैं, तो वे यीशु के दिनों के यहूदियों की तरह उसी तरीके से जवाब देंगे। परमेश्वर ने यीशु के जन्म का समाचार याजक और शास्त्रियों को नहीं दिया, बल्कि विनम्र ज्योतिषियों और शुद्ध दिल के चरवाहों को दिया। यह

---

[८४८] प्रकाशितवाक्य २१:१-४

[८४९] लूक १७:२५

एक ऐसे पिता की तरह है, जिसने अपने बच्चों की अज्ञानता के कारण, अपने सौतेले बच्चे पर अधिक विश्वास किया। इसी प्रकार, परमेश्वर, मसीह की वापसी की ख़बर पहले सामान्य लोगों को, छोटे आध्यात्मिक समूह और गिरजा घरों या शुद्ध अंतःकरण वाले अविश्वासियों को देगा जिन्हें मुख्य विचारधारा के लोग उपेक्षा की नज़रों से देखते हैं। केवल बाद में यह खबर मुख्य विचारधारा के ईसाई पादरी तक पहुंच सकती है जो बिना विचारे अपने विश्वास की औपचारिक विचारधारा को ही ध्यान में रखते हैं। यीशु के दिनों में, जो लोग सच्चे दिल से सुसमाचार सुना करते थे वे यहूदी अगुवे नहीं थे, लेकिन आम सामान्य लोग और गैर-यहूदी थे। इसी प्रकार, मसीह की वापसी पर, साधारण ईसाई और गैर-ईसाई लोग ईसाई नेतृत्व से पहले, जो अपने आप को परमेश्वर के चुने हुए मानते हैं, प्रभु के वचनों को स्वीकार करेंगे। यह यीशु का शादी की दावत के दृष्टांत का अर्थ है। जब आमंत्रित अतिथियों ने और समुदाय के प्रमुख पुरुषों ने राजा के निमंत्रण को अस्वीकार कर दिया:

> तब उसने अपने दासों से कहा, विवाह का भोज तैयार है परंतु निमंत्रित लोग योग्य नहीं ठहरे। इसलिए चौराहों पर जाओ और जितने लोग तुम्हें मिलें सब को विवाह के भोज में बुला लाओ। अतः उन दासों ने सड़कों पर जाकर क्या बुरे क्या भले, जितने मिले सब को इकट्ठा किया, और विवाह का घर अतिथियों से भर गया। मत्ती २२:८-१०

यीशु के दिनों के और दूसरे आगमन के दिनों में, कई ऐसे विश्वासी भक्त होंगे जो स्वर्ग में प्रवेश करने की आशा के साथ विश्वास के मार्ग पर चले परंतु वास्तव में उन्होंने अपने आप को नरक में पाया। यीशु के दिनों में, क्योंकि याजक और शास्त्रियों की ज़िम्मेदारी परमेश्वर के चुने हुए लोगों को मार्गदर्शन करने की थी, इसलिए उनको पहले मसीह को पहचाना चाहिए था कि मसीह आ गया, और यहूदियों को उसके पास ले जाना चाहिए था। उन्हें अपना मिशन पूरा करने में उनकी मदद के लिए, यीशु ने पहला कदम उठाया; उसने मंदिर का दौरा किया और दूसरों को सिखाने से पहले उन्हें सुसमाचार सुनाया।[८५०] परंतु, जब उन लोगों ने उसे ग्रहण नहीं किया, तो यीशु के पास गलील के किनारे मछुआरों के बीच शिष्यों को खोजने के अलावा और कोई विकल्प नहीं रहा। उसे समाज के तुच्छ लोगों की सेवा करने और पापियों, कर-संग्रहकर्ताओं और वेश्याओं के साथ संगत करनी पड़ी। अंत में, याजक और शास्त्रियों ने उसे इतना सताया कि उसे सलीब का भाग्य स्वीकार करना पड़ा। उन्होंने यह हत्या, यह मानते हुए की कि उन्होंने एक खतरनाक विधर्मी और ईश-निन्दक को मार कर एक धार्मिक कार्य किया है। फिर उन्होंने अपना बाकी जीवन आचारिक याजकीय कर्तव्यों का पालन करने में, पवित्र शास्त्रों का अनुवाचन, अपना दसवांश देने में और मंदिर में बलिदान का काम जारी रखने में बिताया, यह सब इसी आश्वासन के साथ किया कि वे स्वर्ग की ओर बढ़ रहे हैं। बजाए इसके, जब वे इस दुनिया से चल बसे, उन्होंने अपने आप को बड़े अनपेक्षित रूप से नरक में पाया। विडंबना यह है कि जिस मार्ग को उन्होंने स्वर्ग पहुंचने के लिए चुना था, उसी ने उन्हें भटका दिया।

---

[८५०] लूक २:४२-४७

यह जानते हुए कि इस तरह की घटनाएं अंतिम दिनों में हो सकती हैं, हम में से प्रत्येक को गंभीरता से जांच करनी चाहिए। आज बहुत से ईसाई लोग जिस मार्ग पर चल रहे हैं यह विश्वास करते हैं कि यह रास्ता स्वर्ग की ओर जाता है। फिर भी यदि वे गलत कदम उठाते हैं, तो उनका मार्ग वास्तव में उन्हें नरक में ले जा सकता है। यही कारण है कि यीशु ने एक बार कहा था कि वह अंतिम दिनों में बहुत से भक्त विश्वासियों को डांटेगा, उनको भी जिनके समर्पण इतने मजबूत हैं कि वे दुष्ट आत्माओं को बाहर निकाल सकते हैं और उसके नाम पर चमत्कार कर सकते हैं: "तब मैं उनसे खुल कर कहूँगा मैंने तुम को कभी नहीं जाना। 'हे कुकर्म करने वालो, मेरे पास से चले जाओ"।[८५१]

सच तो यह है, कि आज इतिहास के इस संक्रमण काल में रहने वाले विश्वासियों की तुलना में इससे अधिक अनिश्चित स्थिति का सामना और कोई नहीं करता है। हमने जीवन में चाहे कितना ही विश्वास क्यों ना दिखाया हो, अगर हम यीशु के दिनों के यहूदी अगुवा लोगों की तरह, लौटने वाले मसीह के खिलाफ मुड़ने का गलत कदम उठाते हैं, तो हमारे सभी प्रयास व्यर्थ हो जाएंगे। दानिय्येल ने इन लोगों के लिए कहा था, "बहुत से लोग ख़ुद को निर्मल करेंगे, और उजले करेंगे, और शुद्ध हो जाएंगे, परन्तु दुष्ट लोग बुराई ही करते रहेंगे, और दुष्टों में से कोई भी समझ नहीं पाएगा, परन्तु बुद्धिमान लोग ही समझेंगे"।[८५२]

---

[८५१] मत्ती ७:२३
[८५२] दानिय्येल १२:१०

संभाग ५

भाषाओं का अव्यवस्थात्मक प्राचुर्य और उनके संगठन की आवश्यकता

यदि मनुष्य का पतन नहीं हुआ होता, तो हम एक वैश्विक परिवार का गठन करते, जिसकी तुलना किसी ऐसे शरीर से की जा सकती है जिसके सभी अंग एक दूसरे के साथ जुड़े हुए हों और जिसका सिर परमेश्वर हो। तब सब की एक ही आम भाषा होती; बहुत सी भाषाएं नहीं होतीं जो एक-दूसरे के लिए अबोध्य हों। अनेक भाषाएं उत्पन्न होने से लोगों के बीच खुले संवाद में रुकावट पैदा हो गई, इसका कारण यह है क्योंकि पतन के बाद परमेश्वर के साथ हमारा लंब संबंध टूट गया, इसलिए लोगों के बीच के सभी क्षैतिज रिश्ते भी टूट गए। फलस्वरूप, मानवता बिखर गई, और विभिन्न भौगोलिक स्थानों में फैल गई, इस तरह अलग-अलग समुदायों का गठन हुआ।

बाईबल में एक ऐसी घटना का वर्णन है जिसमें विभिन्न भाषाओं के कारण बहुत गड़बड़ पैदा हो गई थी, यह घटना एक आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि प्रदान करती है। यह बाबुल के गुम्मट की कहानी है।[८५३] नूंह के वंशज एक सार्वजनिक भाषा बोलते थे। एक दिन, नूंह के दूसरे पुत्र हाम के, जिसने परमेश्वर के विरूद्ध पाप किया था, वंशजों ने बाबुल का गुम्मट बनाया ताकि वे स्वयं को परमेश्वर से भी ऊपर उठा सकें, इस प्रकार उन्होंने शैतान की इच्छा को आगे बढ़ाया। जब शेम और येपेत के वंशजों ने, जो परमेश्वर के पक्ष में थे, गुम्मट बनाने में उनकी मदद की, तब परमेश्वर ने उनकी भाषा में गड़बड़ी डाल दी ताकि वे अब शैतान की इच्छा को आगे बढ़ाने के लिए एक दूसरे के साथ संवाद नहीं कर सकें।

एक ही माता-पिता की संतान होने के कारण हम सभी को खुशी, क्रोध, दुख और आनन्द की भावनाएं होती हैं। फिर भी हम अपनी गहरी भावनाओं को एक दूसरे के साथ नहीं बांट सकते क्योंकि हम अलग-अलग भाषाएं बोलते हैं। क्या यह मानवता के सबसे बड़े दुर्भाग्य में से एक नहीं है? यदि हम एक वैश्विक परिवार की आदर्श दुनिया को साकार करें, जो दूसरे आगमन के मसीह को सच्चे माता-पिता के रूप में सम्मान करे, तो निश्चित रूप से हमारी भाषाएं संगठित होनी चाहिए। जैसा कि बाबुल के गुम्मट के निर्माण के वर्णन में व्यक्त किया गया था, कि जब हम शैतान की इच्छा को बढ़ाते थे तो हमारी भाषाओं में गड़बड़ पैदा की गई थी। क्षतिपूर्ति द्वारा पुनरुद्धार के नियम की मांग के अनुसार यह आवश्यक है कि हम परमेश्वर के गुम्मट का निर्माण करने के लिए और परमेश्वर की इच्छा की महिमा करने में भाग लें जिससे सभी भाषाएं संगठित की जा सकें।

किस भाषा के आधार पर सभी भाषाएं संगठित होंगी? इस सवाल का जवाब स्पष्ट है। बच्चों को अपने माता-पिता की भाषा सीखनी चाहिए। यदि मसीह वास्तव में कोरिया की भूमि पर वापस आ जाता है, तो वह निश्चित रूप से कोरियाई भाषा का उपयोग करेगा, तब वह सारी मानवता के लिए मातृ-भाषा बन जाएगी। अंत में, सभी लोगों को, उनकी मातृ-भाषा के रूप में, सच्चे माता-पिता की भाषा, बोलनी चाहिए। तब सकल मानवता एक हो जाएगी और एक भाषा का उपयोग करेगी, इस प्रकार परमेश्वर के अधीन एक वैश्विक राष्ट्र स्थापित होगा।

---

[८५३] उत्पत्ति ११:१-९

Unification Terminology Word List

यूनिफिकेशन पारिभाषिक शब्दावली

A-

Abel-type	हाबिल-वर्ग का
Abel figure	हाबिल-वर्ग का व्यक्ति
Abel-type/Cain type	हाबिल-वर्गीय, कैन-वर्गीय
Absolute Standard पूर्ण मानदंड	
Absolute standard of goodness	धर्म का पूर्ण मानक
Absolute standard of judgment	निर्धारण का पूर्ण मानक (निर्धारण=evaluation,
determination, assessment, definition)	
Age of Attendance	सेवा का युग
Age of symbolic parallels	प्रतीकात्मक समानांतर युग
Age of image parallels	छवि-समानांतर-युग
Age of substantial parallels	वास्तविक-समानांतर-युग
Age of the providence to lay the	
Foundation for restoration	पुनरुद्धार की नींव डालने की दैवी योजना का युग
Age of Providence of Restoration	पुनरुद्धार की दैवी योजना का युग
Old Testament age	पुराना नियम
New Testament age	नया नियम
Completed Testament age	परिपूरित नियम
Antichrist	मसीह विरोधी
Archangel	प्रधान स्वर्ग दूत
Ark of Covenant	वाचा का संदूक

B-

Blessed Couple (36 couples)	धन्य वर-वधू
Blessed family	धन्य परिवार
Blessed land of Cannan	कनान प्रतिज्ञा का देश
Blessed Children	धन्य संतान
Blessing of marriage	शुभाशीष-विवाह, विवाह-आशीर्वाद
Blessing (grace)	आशीर्वाद
First Blessing (Be fruitful)	पहला आशीर्वाद (पूर्णता प्राप्त करना)
Second Blessing (Multiply)	दूसरा आशीर्वाद (प्रजनन करना)
Third Blessing (Have dominion over creation)	तीसरा आशीर्वाद (प्रकृति पर प्रभुत्व करना)
Babylon	बेबीलोन
Birth right (Gen. 25:31)	पहिलौठे का अधिकार, जन्मसिद्ध अधिकार,
Blood Restoration	रक्त शोधन, रक्त संशोधन, रक्त शुद्धिकरण
Born again	नए सिरे से जन्म लेना, नया जन्म
Bread of the Presence	भेंट की रोटी

C-

Cain type, Abel type — कैन वर्गीय, हाबिल वर्गीय

Canaan (the promised land) बाईबल में कनान प्रतिज्ञा का देश कहलाता है जहाँ परमेश्वर अपना राज्य स्थापित करना चाहता था। मिस्र जहाँ इज़राएलियों ने ४०० वर्ष की दासता का दुख उठाया था शैतानी दुनिया कहा जाता है, इसलिए, कनान प्रतिज्ञा का देश है जो परमेश्वर के राज्य को दर्शाता है

Course to restore Canaan — कनान की प्राप्ति के लिए (परमेश्वर के राज्य को प्राप्त करने के लिए)

Canon	ईसाई मत के अधिनियम
Change of Blood Lineage	वंश-रक्त परिवर्तन
Central FigureCentral	प्रमुख=मुख्य, Figure=व्यक्ति (प्रमुख व्यक्ति) मुखिया, प्रधान, मुख्य नेता या व्यक्ति (central figures-प्रधान लोग)

Central Blessed Family	केंद्रीय धन्य परिवार
Ceremony of the settlement of the Eight Stages	आठ-चरण व्यवस्थापन संस्कारü
Christ of Second Advent Returning Christ	दूसरे आगमन का मसीह मसीह का पुनरागमन (लौटने वाले प्रभु)
Christology	ख्रीस्त-बोध
Collective sin	सामूहिक पाप (यह वह पाप है जिस का कोई व्यक्ति किसी समूह का सदस्य होने के कारण जिम्मेदार होता है)
Common base (to form a common base)	सहयोग करना, (co-operate) सहचार या साहचार्य स्थापित करना, (सहचारी=going together) सहयोग
Completion Stage Growth Stage Formation Stage	निष्पत्ति-चरण विकास-चरण गठन-चरण
Completed Testament Age Old Testament Age New Testament Age	परिपूरित नियम का युग पुराना नियम का युग नए नियम का युग
Condition (to make a condition)	भुगतान की शर्त, प्रतिबंध, अनुबंध भुगतान-शर्त या प्रतिबंध नियत करना
Condition of Indemnity or To make a condition of indemnity	क्षतिपूर्ति की शर्त, भुगतान शर्त क्षतिपूर्ति की शर्त रखना, या भुगता की शर्त भरना
Conditional Predestination	सशर्त पूर्वनियति
Cosmic-level restoration	लौकिक-स्तर पर पुनरुद्धार या पुनःस्थापन
Couples (36)	३६ वर-वधु

Creatorship	सृष्टिकर्त्ता पद (कर्ता = subject case)
Christians	मसीही, ईसाई
Christology(Academic study of Christ)	ख्रीस्त-बोध, मसीह का शैक्षिक अध्ययन
Crusade	ईसाइयों का धर्मयुद्ध, क्रूसयुद्ध

D-

Day of all things	सर्व-वस्तु दिवस
Day of atonement	प्रायश्चित्त का दिन
Direct lineage	प्रत्यक्ष वंश
Direct Dominion	सीधा प्रभुत्व
Direct and indirect Dominion	प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष प्रभुत्व
Dispensation	व्यवस्था
Dispensation of forty	चालीस का विधान
Dispensation to start	व्यवस्था को आरंभ करना
Divine Principle	दिव्य नियम (दिव्य—अलौकिक, दर्शनीय, रुहानी)
Divine Spirit	दिव्य आत्मा
Form Spirit	प्रारूप आत्मा (precursor)
Divine Nature	दिव्य लक्षण, दिव्य प्रकृति
Dual Characteristics	द्वैत अभिलक्षण, द्विक अभिलक्षण
God of dual Characteristics	द्वैत अभिलक्षणिक परमेश्वर

E-

Eldest Son	ज्येष्ठ पुत्र
Elder Son	जेठा पुत्र
Vitality Elements	प्राण तत्व
Life Elements	जीवन तत्व
Living Spirit Elements	सजीव आत्मिक तत्व
Embodiment of truth—	सत्य का मूर्त रूप—
(in image and in symbol)	(छवि में और प्रतीक में)
Intellect, Emotion and Will	बुद्धि, भाव और मनोबल (इच्छा शक्ति)
Enlightenment	प्रबोधन
Eschatology	अंतिम दिन संबंधी शिक्षा
Essence (world of essence)	तात्विक संसार
(world of phenomena)	वस्तुगत संसार
Exposition of Divine Principle	दिव्य नियम प्रतिपादन

F-

Fall	पतन, च्युति
Fallen	पतित, च्युत
Fallen Nature	पतित स्वभाव, पतित प्रकृति
Fall of man	मनुष्य का पतन
Fallen World	च्युत संसार, पतित संसार

Family Pledge	पारिवारिक वचन
Family Federation for World Peace and Unification	विश्व शांति परिवार संघ और एकीकरण
Feast of Passover	बिना ख़मीर की रोटी का पर्व (फसह का पर्व)
Filial-Piety	धर्मपरायणता, धर्मनिष्ठता
Son of filial piety	धर्मपरायण पुत्र, धर्मनिष्ठ पुत्र
First Blessing	पहला आशीर्वाद
Second Blessing	दूसरा आशीर्वाद
Third Blessing	तीसरा आशीर्वाद
First Primary Characteristics	पहला प्राथमिक-अभिलक्षण
Second Primary Characteristics	दूसरा प्राथमिक-अभिलक्षण
Third Primary Characteristics	तीसरा प्राथमिक-अभिलक्षण
Flood Judgement	जल-प्रलय न्याय
Ford of Jabbok	यब्बोक का घाट
Formation Stage	गठन-चरण
Growth Stage	विकास चरण
Completion Stage	निष्पत्ति-चरण
Formation Stage Resurrection	गठन-चरण पुनरुत्थान
Growth Stage Resurrection	विकास-चरण पुनरुत्थान
Completion Stage Resurrection	निष्पत्ति-चरण पुनरुत्थान
Form Spirit	प्रारूप-आत्मा (प्रारूप=precursor, outline, prototype)
Life Spirit	जीवात्मा
Divine Spirit	दिव्य आत्मा
Formula course	सूत्र-कार्यवाही, विधि कार्यवाही
Image course	छवि-कार्यवाही
Model course	नमूना कार्यवाही, मिसाल कार्यवाही, आदर्श पथ

Symbolic course	प्रतीकात्मक कार्यवाही, सांकेतिक कार्यवाही
Dispensation of forty for the separation of Satan	शैतान से अलग होने का चालीस का विधान
Foundation	नींव, आधार—base
Foundation of Faith	विश्वास की नींव
Foundation of Substance	वास्तविक नींव (Based on actual deeds, the actions) सार अंश, वास्तविक या मौलिक बात, गुणांक, नियम आधार, असलियत, जगत का मूल कारण
Four Position Foundation	चार-दशा-आधार दशा—भोग काल—Period or Time in life, endure, duration Position— दशा, स्थिति, स्थल, अवस्था.

G-

Garden of Eden	अदन की वाटिका
Give and take	लेन-देन, आदान-प्रदान
Give and take-action	आदान-प्रदान क्रिया
Godism	ईश्वरवाद
God Centered Kingship	दिव्य-केन्द्रित राजत्व
God's Will and the World	परमेश्वर की इच्छा और संसार
God's work of salvation	परमेश्वर के पुनरुद्धार के दैवी कार्य
God's providence of salvation is the providence of restoration	परमेश्वर के उद्धार का कार्य परमेश्वर के पुनरुद्धार की दैवी योजना है।
Godly children	धर्म की संतान
Good children	पवित्र बच्चे

Good and Evil	शुभाशुभ
Growing period	विकास-काल, बढ़ती की अवधि (काल)
Formation Stage	गठन-चरण
Growth Stage	विकास-चरण या संवृद्धि-चरण
Completion Stage	निष्पत्ति-चरण, सम्पूरित-चरण

H-

Headwing	प्रमुखवाद या शीर्षवाद
Heavenly fortune	स्वर्गीय भाग्य, दिव्य भाग्य
Hebraism	यहूदी वाद, हिब्रूवाद
Hellenism (Greek religion of devotion to one Another, based on exchange of gifts offering to receive blessing of God)	मानववाद = यूनानी मत (परस्पर कर्तव्य निबाहना, भेंट आदान-प्रदान के द्वारा परमेश्वर से आशीष पाना।)
Hereditary sin	अनुवांशिक पाप (जो पाप पूर्वजों से मिरास में प्राप्त किया)
Collective sin	सामूहिक पाप, या कोई सदस्य किसी समूह का हिस्सा हो
Personal sin	वह पाप जो हम स्वयं करते हैं
Original sin	मूल पाप (जो आदम और हव्वा से विरासत में मिला)
High Priest	महायाजक
History of Restoration	पुनरुद्धार का इतिहास
Historical Materialism	ऐतिहासिक भौतिकवाद
Holy Communion	प्रभु यीशु के स्मरण में पवित्र भोज (प्रभु-भोज)
Horizontal restoration through indemnity	क्षतिपूर्ति द्वारा क्षैतिज पुनरुद्धार

Horizontal indemnity conditions — क्षैतिज क्षतिपूर्ति की शर्तें

Horizontal Restoration — क्षैतिज पुनरुद्धार

History of re-creation — पुनर्निमाण का इतिहास

Human Portion of Responsibility — मनुष्य के हिस्से की जिम्मेदारी
(his portion of responsibility) — अपने अंश का दायित्व

Human history is the history of The providence of restoration — मानव इतिहास पुनरुद्धार की दैवी योजना का इतिहास है

Humanism — मानववाद

I-

Ideal World = Economically, Socially and Politically stable — आदर्श लोक—(Utopia)
आर्थिक, सामाजिक और राजनीति तौर पर दृढ़ü

Ideal World = with a meaning of True world — सत् लोक या यशस्वी लोक (नेक, भला)

Ideal kingdom — आदर्श राज्य (Utopia)

Ideal of Creation — सृष्टि का आदर्श (आदर्श=पूर्णता और प्रौढ़ता का नमूना)

Indemnity — क्षतिपूर्ति, हरजाना, प्रतिकार
To stop an action or in order to compensate for the loss, a counter action is taken
Compensation, Return, Making good — किसी कार्य के प्रभाव को रोकने या मिटाने के लिये अथवा उसका बदला चुकाने के लिये उसे मुकाबले में किया जाने वाला कार्य हरजाना, क्षतिपूर्ति, मुआवजा, भरपाई

Indemnity Condition — क्षतिपूर्ति की शर्त, भुगतान शर्त
To make a condition of indemnity — क्षतिपूर्ति की शर्त रखना, या भुगतान की शर्त भरना

Indemnity condition to remove fallen nature पतित प्रवृत्ति निकालने के लिए क्षतिपूर्ति की शर्त

Ideological war	वैचारिक युद्ध
Image representation	प्रतिमा निरूपण, छवि निरूपण
Image course	छवि कार्यवाही
Individual embodiment of truth	सत्य का व्यक्तिगत मूर्त रूप
(In image and symbol)	छवि और प्रतीक में (छवि के रूप में और प्रतीकात्मक रूप में या चिन्ह में)
Incense altar	धूप की वेदी
Internal Nature/ External form	आंतरिक प्रकृति/ बाह्य रूप
Interdependence, mutual prosperity and universally shared values	परस्पर निर्भरता, पारस्परिक समृद्धि और सार्वभौम सहभाजी मूल्य
Interreligious Federation for World Peace	विश्व शांति के लिये सर्व धर्म महा संघ

J-

Justification by works	कर्म द्वारा औचित्य
Justification through attendance	सेवा के द्वारा औचित्य
Judges (period of Judges)	न्यायियों की कालावधि

K-

King Soul, king David, king Solomon	राजा शाऊल, राजा दाऊद, राजा सुलेमान
Kingdom of God on earth	पृथ्वी पर परमेश्वर का राज्य
Kingdom of heaven	स्वर्ग का राज्य

Kingship	राजत्व
King Nebuchadnezzar of Babylon	बेबीलोन का राजा नबूकदनेस्सर
King Cyrus of Persia	फारस का राजा कुस्रू

I-

Individual sin	व्यक्तिगत पाप

L-

Lampstand	खड़ा-दीवट
Law and Order	विधान और व्यवस्था
Leaving proper position	उचित स्थान का परित्याग
Leftwing	वाम पंथी
Lentils	मसूर की दाल (उत्पत्ति २५:३४)
Levite (one of Jacob's son's lineage)	लेवी
Life Elements	जीवन मूल तत्व
Vitality Elements	प्राणशक्ति मूल तत्व
Living for the sake of others	दूसरों के लिये जीना
Existing for the sake of others	दूसरों के लिये जीवित रहना
Lineage, Lineal	वंशज, वंश, संतान, संतति, नस्ल
Logical Contradiction	तार्किक प्रतिवाद
Lord of Creation	सृष्टि का स्वामी

M-

Materialism	भौतिकवाद
Messiahship	मसीही-वृत्ति—वृत्ति—vocation, profession
Merit	सिद्धि (सफलता, कृतकार्यता)
Merit of the Age	युग का उपकार, युग की गुणवत्ता, युग का अनुग्रह
Age of Merit	अनुग्रह का युग
Mercy Seat (lid of the ark atonement cover)	प्रायश्चित का ढक्कन (वाचा के संदूक का ढक्कन)
Mind and Body	मन और तन या तन-मन
Mission	नियोग
Model course	प्रतिमान कार्यवाही, मिसाल कार्यवाही, आदर्श पथ
Symbolic course	प्रतीकात्मक कार्यवाही, सांकेतिक कार्यवाही
Formula course	सूत्र-कार्यवाही, विधि-कार्यवाही
Image course	प्रारूप-कार्यवाही (प्रारूप=pro-forma, outline, prototype, sketch, draft)
Mount Sinai	सीनै का पर्वत
Multiplying evil	बुराई फैलाना

O-

Object Partner	पात्र साझी
Substantial Object partner	वास्तविक पात्र साझी
Old Testament	पुराना नियम
New Testament	नया नियम
Completed Testament	परिपूरित नियम

Only begotten Son	इकलौता पुत्र
Organic body	कायिक देह
Origin	आदि, मूल, मौलिक, उद्गम, उत्पत्ति, स्रोत
Origin-division-union action	आदि-विभाजन-मिलन क्रिया
Origin of the universe	विश्व का उद्गम
Original man (Adam) (progenitor of human race)	मूल-पुरुष आदम मानव जाति का प्रजनक
Original Sin	मूल पाप, आदि पाप, मौलिक पाप, प्रारंभिक पाप
Original mind	मौलिक मन
Original nature	मौलिक या मूल प्रकृति (जन्मजात गुण या प्रकृति)
Original internal nature	मूल यांग
Original External nature	मूल यिन

P-

Plagues (Ten Plagues)	दस विपत्तियाँ, दस क्लेश
Parallels	समांतर, समानांतर
Age of symbolic parallels Age of image parallels Age of Substantial Parallels	प्रतीकात्मक समांतर युग छवि समांतर युग वास्तविक समांतर युग
Parental	पैतृक

Parents	माता-पिता
Parent ship	मूल पोत
Parentism	मात-पिता वाद
Phenomena (world of Phenomena)	वस्तुगत संसार
Essence (world of essence)	तात्विक संसार
Physical self	शारीरिक आत्म
Priest	याजक, पुरोहित
Priesthood	याजकाई, पुरोहिताई
Position	स्थिति, स्थल, दशा
Predestination	पूर्वनिर्धारण
Principle = established Truth	नियम, सिद्धाँत, विधान
Principles of Creation	सृष्टि के नियम
Principle of Predestination	पूर्वनियति का सिद्धांत
Principle of Restoration	पुनरुद्धार का नियम
Principle of Restoration through indemnity	क्षतिपूर्ति द्वारा पुनरुद्धार का नियम
Promised land	प्रतिज्ञा का देश
Protestant	रोमीय मत विरोधी दल
Protestant Reformation	ईसाई धर्म-शोधन-अभियान या आंदोलन
Providence	दैवी परियोजना (योजना)

Providence of God	परमेश्वर की दैवी परियोजना, भावी-योजना
Providence of Growth-stage resurrection	संवृद्धि-चरण पुनरुत्थान की दैवी योजना
Providence of Salvation (with meaning of Biblical Salvation)	ईश्वरीय उद्धार का कार्य
Providence of Restoration with the meaning of restoration of things (alternation, restoration, reversion of things)	प्रत्यावर्तन की दैवी योजना या पुनःस्थापन का दैवी प्रावधान
Providence of Restoration (With meaning of human regeneration, revitalization, revival, revivification, renaissance)	पुनरुद्धार का दैवी योजना
Providential Periods	दैवी कालावधि
Providential History	दैवी इतिहास
Providential course	दैवी कार्यवाही की योजना
Purpose of Creation (realizing) God's Purpose of Creation	सृष्टि का उद्देश्य (सृष्टि का सोद्देश्य साकार करना) विधाता का सृष्टि का उद्देश्य
Purpose of the whole Purpose of the self	सार्वजनिक सोद्देश्य आत्महित उद्देश्य

R-

Realm of Indirect dominion	अप्रत्यक्ष प्रभुता का क्षेत्र
Realize Ideal world	सत् लोक साकार करना
Reborn (second birth) (born again)	(पुनर्जीवन) (आध्यात्मिक रूप से पुनर्जीवित होना)

Rebirth	पुनर्जन्म
Re-creation	पुनर्निर्माण
Reincarnation	अवतरण, अवतार, पुनर्जन्म
Reformation	(धर्म-शोधन) ईसाई संप्रदाय परिशोधन आंदोलन, सुधार करना)
Resurrection,	पुनरुत्थान, मरे हुओं का जी उठना
Renaissance	पुनर्जागरण, नवजागरण, पुनरुद्धार, नवयुग, नवचेतना
Restored Adam	पुनर्वासित-आदम (लौट कर फिर से अपने स्थान पर आनेवाला)
Restoration (Returned, reversed, recurred)	पुनरुद्धार, प्रत्यावर्तन=लौटकर अपने स्थान पर वापस आना
Restoration To restore things to their original state. Bring back into existence	पुनरुद्धार, जिलाया जाना, जैसा पहले था वैसा कर देना पुनः या दोबारा स्थापित करना, जीर्णोद्धार पुनः चलन में लाना
Restoration (Deliverance, Salvation)	पुनरुद्धार, पापों से मुक्ति, मोचन, मोक्ष, विमोचन,
Restoration (Course of Restoration)	पुनरुद्धार की कार्यवाही
Restoration through Indemnity	क्षतिपूर्ति द्वारा पुनरुद्धार या (प्रत्यावर्तन)
Horizontal Restoration through Indemnity	क्षतिपूर्ति द्वारा क्षैतिज पुनरुद्धार
Restoration of all things	सर्व वस्तु जीर्णोद्धार
Restoration of Canaan	कनान की प्राप्ति (परमेश्वर के राज्य की पुनःस्थापना)
Reversing Dominion	स्वामित्व उलटना, विपर्यय प्रभुत्व, प्रभुत्व पलटना
Rightwing	रूढ़िवाद

Returning Lord	लौटने वाला प्रभु (पुनरावर्ती प्रभु)
Returning-Resurrection	पुनरावृत्ति-पुनरुत्थान

S-

Sacrificial offering	बलिदान संबंधी भेंट अर्पण करना
Sacrificial meal	मूर्तियों के सामने बलि किया हुआ भोजन
Second generation	दूसरी पीढ़ी
Separation from Satan	शैतान से असमाहार होना असमाहार (जैसे गेहूँ में से फूस का असमाहार होना) समाहार=मिलाप, मिश्रण, मिलन
Settlement:	अवस्थापन
Settlement day	व्यवस्था या निर्णय का दिन
Soul	जीवात्मा
Spirit world	परलोक, आत्मालोक
Stamen and Pistil	पुंकेसर और गर्भकेसर
Standard Measure	आदर्श परिमाण
Units of Measure	इकाई मूल्यांकन
Absolute Standard	पूर्ण मानदण्ड
Subject and Object	कर्ता और पात्र या कर्ता और कर्म
Subject Partner	कर्ता साझी
Object Partner	कर्म साझी
Substantial World	वस्तु जगत

Substantial Offering (Acceptable) (Acceptable Offering by proper relationship)	स्वीकार्य वास्तविक भेंट (यथायोग्य व्यवहार द्वारा भेंट)
Symbolic Offering	प्रतीकात्मक भेंट
Substantial parallels	वास्तविक समानांतर (जब एक युग की घटनाएं साम्य रूप से पिछले युग की घटनाओं से मिलती जुलती हों)
Substantial object partners	वास्तविक कर्म साझी
Stage—Steps	चरण
Substance: Element, essence, principle, और आकाश यह पाँचों तत्व)	वास्तविक तत्व— (पदार्थ, जल, पृथ्वी, वायु, तेज,
Symbol (Symbolic) (in image)	प्रतीक चिन्ह के रूप में (प्रतीकात्मक) (प्रतिमा में)
(In image and symbol)	(प्रतिमा के रूप में और प्रतीकात्मक रूप में या चिन्ह में)
Symbolic course	प्रतीकात्मक कार्यवाही, सांकेतिक कार्यवाही
Formula course	सूत्र-कार्यवाही, विधि कार्यवाही
Model course	अनुकारी कार्यवाही, मिसाल-कार्यवाही, आदर्श पथ

T-

<u>Testaments</u>	
Old Testament	पुराना नियम
New Testament	नया नियम
Completed Testament	सम्पूरित नियम
Thirty-eighth parallel	अड़तीस-समानांतर परिसीमा
The right of first son	पहले पुत्र का अधिकार
The right of Parents	माता-पिता का अधिकार
The right of kingship	राजत्व का अधिकार
Statehood	राजत्व

राजत्व—Sovereignty—	प्रभुसत्ता, प्रभुता
Three Subject thought	तीन विषय विचार
Three Objective Purpose	तीन वस्तुनिष्ठ प्रयोजन
Three Object Purpose	तीन-पात्र-प्रयोजन
Three Object Partners	तीन-पात्र-साझी
Three great blessing	तीन महान आशीर्वाद
Three Stages	तीन चरण
Three-stage process	तीन-चरण प्रक्रम
Transfiguration	रूपांतर
Tree of life	जीवन का वृक्ष
Fruit of the Tree of the knowledge of good and evil	भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल
Tribal Messiahship	जनजातीय मसीहा-वृत्ति
Trinity	पिता-पुत्र-पवित्र आत्मा
True Love	सत् प्रेम, सच्चा प्रेम सत्—ब्रह्म, सत्य, सज्जन, नित्य, स्थाई, शुद्ध, पवित्र, श्रेष्ठ The truth., Principle of True God, All pervading Spirit,
True Son	सत् पुत्र
True Children	सत् संतान, सत् संतति
True Person	सत् व्यक्ति
True man	सत् पुरुष
True Master	सत् स्वामी
True Teacher	सत् गुरु
True Family	सत् परिवार

True Parents	सद् वृत्त माता-पिता, सच्चे माता-पिता सद्-वृत्त=सत्यनिष्ठ, Vertical, Righteous, morally disposed, वृत्त = Absolute Circle
True Parent's day	सद् वृत माता-पिता दिवस
True Children's day	सत् संतति दिवस
Trinity	ट्रिनिटी (पिता-पुत्र-पवित्र आत्मा)
Trumpet	तुरही

U-

Unification	एकीकरण
Unification Principle	एकीकरण सिद्धाँत
Universal Law	विश्व विधान
Universal Prime Energy	सार्वभौमिक मूल ऊर्जा
Universal good	सर्व मंगल
Utopia	आदर्श-राज्य

V-

Vertical	लंब, लंबवत
Vertical Center	लंबवत केन्द्र
Vertical indemnity conditions	लंबवत क्षतिपूर्ति की शर्तें
Vitality Elements Life Elements	प्राण तत्व जीवन तत्व

Living Spirit Elements	सजीव आत्मिक तत्व
Visitation	ईश्वर का अनुग्रह या कोप, आत्मा द्वारा संपर्क, संपर्क

W-

World of Essence	तात्विक संसार
World of Phenomena	वस्तुगत संसार